فوائد القرآن الزكية

फ़वाइद उल क़ुरआन अज़् ज़किय्यह

(क़ुरआन के पवित्र लाभ)

सूरह फ़ातिह़ा
सूरह बक़रह

लेखकः

प्रोफेसर डॉक्टर ख़ालिद बिन ह़ामिद अल-ह़ाज़िमी
पूर्व प्रोफ़ेसर इस्लामिक यूनिवर्सीटि मदीना मुनव्वरा

हिंदी अनुवादः

साबिर हुसैन पुत्र मुहम्मद मुजीबुर रहमान

फ़वाइद उल क़ुरआन अज़् ज़किय्यह
(क़ुरआन के पवित्र लाभ)

सूरह फ़ातिह़ा
सूरह बक़रह

लेखकः

प्रोफेसर डॉक्टर ख़ालिद बिन ह़ामिद अल-ह़ाज़िमी

पूर्व प्रोफ़ेसर इस्लामिक यूनिवर्सीटि मदीना मुनव्वरा

हिंदी अनुवादः

साबिर हुसैन पुत्र मुहम्मद मुजीबुर रहमान

प्रस्तावना

हर प्रकार की प्रशंसा समस्त संसार के पालनहार अल्लाह के लिए है, तथा दुरूद व सलाम उतरे हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, और उनके परिवार वालों एवं उनके समस्त साथियों पर, स्तुतिगान के पश्चातः

मैं उस अल्लाह की प्रशंसा करता हूं जिसने स्पष्ट अरबी भाषा में क़ुरआन को अपने बंदे और रसूल, हमारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारा। उसने इसे नसीहत (उपदेश), शिफा (आरोग्य), मार्गदर्शन, रहमत (दया) और ईमानवालों के लिए शुभ सूचना बनाया, तथा इसे इनकार करने वाले काफिरों के लिए चेतावनी बनाया। सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह ने इसमें कोई टेढ़ापन नहीं रखा, इसे हर प्रकार की छेड़छाड़ और विकृति से सुरक्षित रखा।, तथा इसे संसार के लिए प्रकाश, ज्ञान, तर्क और प्रमाण बनाया।

अल्लाह तआला का अपने बंदे पर यह बड़ा अनुग्रह है कि उसे मार्गदर्शन प्रदान करे तथा उसे किसी लाभदायक एवं उपयोगी कार्य के लिए समर्पित करे, जिससे वह अपना समय और जीवन ऐसे कार्य में व्यतीत करे, जिसका उसे स्वयं भी लाभ हो और अन्य प्राणियों को भी उससे लाभ पहुंचे। संपूर्ण अनुग्रह प्रारंभ से अंत तक अल्लाह तआला का ही है, जिसने क़ुरआन की तालीम दी, कलम के द्वारा सिखाया, और इंसान को स्पष्ट बोलना सिखाया। उसे वह ज्ञान प्रदान किया जिसे वह नहीं जानता था और उसे वह सब कुछ सिखाया जो अल्लाह तआला ने अपने बंदों में से जिसे चाहा, उस पर खोल दिया, उसने इंसान को पढ़ने और लिखने का ज्ञान प्रदान किया, उसके लिए कलम और वह साधन बनाया जिससे लिखा जाए, अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿ٱلرَّحۡمَٰنُ ١ عَلَّمَ ٱلۡقُرۡءَانَ ٢ خَلَقَ ٱلۡإِنسَٰنَ ٣ عَلَّمَهُ ٱلۡبَيَانَ ٤﴾ (अत्यंत कृपाशील ने। शिक्षा दी क़ुर्आन की। उसी ने उत्पन्न किया मनुष्य को। सिखाया उसे साफ़-साफ़ बोलना।)। एक स्थान पर सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है: ﴿ٱقۡرَأۡ بِٱسۡمِ رَبِّكَ ٱلَّذِي خَلَقَ ١ خَلَقَ ٱلۡإِنسَٰنَ مِنۡ عَلَقٍ ٢ ٱقۡرَأۡ وَرَبُّكَ ٱلۡأَكۡرَمُ ٣ ٱلَّذِي عَلَّمَ بِٱلۡقَلَمِ ٤ عَلَّمَ ٱلۡإِنسَٰنَ مَا لَمۡ يَعۡلَمۡ ٥﴾ (अपने पालनहार के नाम से पढ़, जिसने पैदा किया। जिस ने मनुष्य को रक्त को लोथड़े से पैदा किया। पढ़, और तेरा पालनहार बड़ा दया वाला है। जिस ने लेखनी के द्वारा ज्ञान सिखाया। इन्सान को उसका ज्ञान दिया जिस को वह नहीं जानता था।) अतः हर प्रकार की प्रशंसा और धन्यवाद अल्लाह तआला के लिए है।

और यह भी अल्लाह तआला की तौफीक, अनुग्रह और कृपा है कि उसने मुझे इस महान कार्य के लिए मार्गदर्शन दिया, जिसे मैंने अपने रब के महिमामय व सम्मानित कलाम (वाणी) के लिए समर्पित कर दिया, क्योंकि मैंने अपने अंदर इस कार्य के प्रति प्रेम और उत्साह पाया, ताकि मैं क़ुरआन के ख़ज़ानों (कोषों) में से में से कुछ जान सकूं और उसकी महानता को समझ

सकूं। साथ ही, यह कार्य मैंने रब्बुल आलमीन (समस्त संसार के पालनहार अल्लाह) के पुण्य की इच्छा से, क़ुरआन की मिठास और सुंदरता के साथ आनंद उठाने के लिए, और इस महान ग्रंथ की उत्कृष्टता, प्रभावशाली अभिव्यक्ति, और प्रचुर लाभों से लाभान्वित होने की अभिलाषा से किया, जो ज्ञान का ऐसा स्रोत है जो कभी समाप्त नहीं होता। मैंने इस महान कार्य को आरंभ करने से पहले केवल दुआ और इस्तिख़ारा का सहारा लिया, जो मेरी लालसा और प्रेम को बढ़ाते रहे, फिर मैंने अल्लाह पर भरोसा किया, जो सबसे अधिक सामर्थ्यवान, ज्ञानी और दयालु है। मैंने उससे सफलता और मदद मांगी और अल्लाह के स्पष्ट ग्रंथ की प्रत्येक आयत की व्याख्या पढ़ना आरंभ किया। मैंने विद्वानों की गहन व्याख्याओं (तफ़्सीर की किताबों) से लाभ उठाया और उनके द्वारा प्राप्त ज्ञान से प्रेरणा ली। फिर मैंने लाभकारी बातें संकलित कीं और उन्हें आयतों के अर्थ और संकेतों के साथ संगठित किया, ताकि पाठक को अर्थ और संकेतों के बीच कोई विभाजन न महसूस हो।

मैंने तफ़सीर (व्याख्या) की किताबों से ऐसी बातें संकलित कीं जो लाभदायक हैं, तथा मैंने इस पुस्तक में फ़िक्ह (शरीअत के प्रावधानों) में प्रवेश नहीं करने का निर्णय किया, क्योंकि यह मेरे उद्देश्य का हिस्सा नहीं था। यदि मैंने कुछ उद्धरण लिए भी तो मैंने उसका श्रेय उसके मूल विद्वानों को दिया है।

अतः इस किताब की लाभकारी बातें केवल तफ़्सीर (व्याख्या) के पन्नों में लिखे गए विचारों का संग्रह और उद्धरण मात्र नहीं हैं। हालांकि, इसमें उस महान परिश्रम के अंश सम्मिलित हैं, जिन्हें मैंने उसके स्थान पर स्पष्ट किया है, किंतु मूलतः यह वे निष्कर्ष हैं जो मैंने अल्लाह तआला की कृपा से क़ुरआन -ए- मजीद की आयतों के संकेतों और अर्थों से प्राप्त किए हैं। साथ ही, विद्वानों के कथनों से जो मैंने समझा, विशेष रूप से उन महान विद्वानों की बातों से जो तफ़सीर के क्षेत्र में अद्वितीय हैं, जिन पर अल्लाह की रहमत और बरकत (दया एवं कल्याण) हो। मैं प्रार्थना करता हूं कि अल्लाह मुझे उन लोगों के साथ इकट्ठा करे जो नबियों, सच्चे ईमान वालों, शहीदों, हमारे माता-पिता, परिवारों और समस्त मुसलमानों में से हैं।

मैंने इस महान, अद्भुत एवं प्रभावशाली कार्य का आरंभ हिजरत के 1437वें वर्ष के शव्वाल महीने की 19 तारीख को की, जो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत से संबंधित है। यह तारीख ईसा मसीह अलैहिस्सलाम की पैदाइश (ईस्वी सन) के अनुसार 24 जुलाई 2016 के दिन के साथ मेल खाती है।

मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूं कि वह मुझे उन लोगों में सम्मिलित करे जिन्हें अज़ीज़ और रहमान (सर्वशक्तिशाली एवं महा दयालु) ने अपनी उस किताब की सेवा के लिए अनुग्रह प्रदान किया है, जिसे ज़िक्र, तत्वज्ञानी, स्पष्ट एवं पवित्र कहा गया है।

मैं प्रार्थना करता हूं कि वह मुझे अपनी पसंद और प्रसन्नता वाले कार्यों में सफल करे, इसे एक लाभकारी कार्य और क़यामत के दिन तक के लिए सदका-ए-जारिया (अनवरत जारी रहने वाला दान) बनाए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे इसे पूर्णता और संतोषजनक तरीके से पूरा करने की तौफीक़ प्रदान करे, मुझे सटीकता और सही मार्गदर्शन दे, इसे स्वीकार करे और इसके माध्यम से मेरे दर्जे एवं श्रेणी को उच्च करे। तथा इसे एक ऐसा कार्य बनाए जिसे वह स्वीकार करे और जो लाभकारी हो। निस्संदेह, वह बड़ा ही उदार और दयालु है।

तथा समस्त प्रशंसा अल्लाह रब्बुल आलमीन (समस्त संसार के पालनहार अल्लाह) के लिए है, और हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर दुरूद एवं सलाम का अवतरण हो।

लेखकः

प्रोफ़ेसर डॉ. खालिद बिन ह़ामिद बिन मुबारक अल-ह़ाज़मी

फ़वाइद उल क़ुरआन अज़् ज़किय्यह

सूरह फ़ातिहा के लाभ

सूरह फ़ातिहा के लाभ

أعوذ بالله من الشيطان الرجيم

﴿بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ۝١ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝٢ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ۝٣ مَٰلِكِ يَوْمِ ٱلدِّينِ ۝٤ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝٥ ٱهْدِنَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلْمُسْتَقِيمَ ۝٦ صِرَٰطَ ٱلَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ ٱلْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا ٱلضَّآلِّينَ ۝٧﴾ [سورة الفاتحة: ١-٧].

अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम

(बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम। अल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। अर्रह़मानिर्रह़ीम। मालिकि यौमिद्दीन। इय्याका नअबुदु व इय्याका नस्तईन। इह्दिनस्स़िरात़ल मुस्तक़ीम। स़िरात़ल्लज़ीना अन्अम्ता अलैहिम। ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ालीन)।

अनुवादः (अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपाशील तथा दयावान है। समस्त प्रकार की प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का रब (पालनहार) है। जो अत्यंत कृपाशील एवं दयावान है। जो प्रतिकार (बदले) के दिन का मालिक है। (हे अल्लाह) हम केवल तुझ को ही पूजते हैं तथा केवल तुझी से सहायता माँगते हैं। हमें सुपथ (सीधा मार्ग) दिखा। उन का मार्ग जिन पर तू ने पुरस्कार किया उन का नहीं जिन पर तेरा प्रकोप हुआ, एवं न ही उनका जो कुपथ (गुमराह) हो गए))। सूरह फ़ातिह़ाः 1-7।

सूरह फातिहा का आरंभ बिस्मिल्लाह को इस की एक आयत मानते हुए इस से किया गया है। अल्लाह तआला फ़रमाता हैः (بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम) ताकि बिस्मिल्लाह, जिस का आरंभ अल्लाह के नाम से होता है, उस के द्वारा अल्लाह की किताब क़ुरआन की सर्वप्रथम एवं सबसे महान सूरह की शुरुआत हो, जो बिस्मिल्लाह के महत्व एवं इसकी उच्चता को दर्शाता है, इसका पाठ हर महत्वपूर्ण कार्य को आरंभ करने के पूर्व किया जाता है। इसमें अल्लाह के तीन नाम हैं: अल्लाह, अर्रह़मान तथा अर्रह़ीम, जो अल्लाह की दया, कृपा और उदारता के गुण दर्शाते हैं, जिस ने समस्त संसार को अपनी छत्र छाया में लिया हुआ है। और जब कोई मुसलमान इस सूरह के द्वारा अपना कार्य आरंभ करता है तो वास्तव में वह सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह के उन नामों के द्वारा आरंभ कर रहा होता है जिन के द्वारा अल्लाह ने प्रार्थना करने का आदेश दिया है, जैसाकि सूरह आराफ़ में वर्णित हैः ﴿وَلِلَّهِ ٱلْأَسْمَآءُ

﴿الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا﴾ अनुवादः (उसी के लिए सुंदर नाम हैं, अतः तुम उन नामों के द्वारा अल्लाह को पुकारा करो)। सूरह आराफ़ः 180।

तो इस प्रकार भक्त ने उस चीज़ के द्वारा सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह से प्रार्थना की जिस के द्वारा अल्लाह ने अपनी पवित्र पुस्तक का आरंभ किया है। मानो पाठक इसका आरंभ यों करता हैः मैं बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के द्वारा इस का आरंभ कर रहा हूँ। यह महान सूरह, तौहीद -ए- अस्मा व सिफ़ात को प्रमाणित करती है।

बिस्मिल्लाह के पश्चात अल्लाह की प्रशंसा का उल्लेख है ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾, अल्लाह तआला का कथन (الْحَمْدُ لِلَّهِ अल्हम्दु लिल्लाहि) यह सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह की सम्पूर्ण प्रशंसा है, तथा परमप्रधान अल्लाह का धन्यवाद है, जो इस के योग्य है, क्योंकि वह हर प्रकार की प्रशंसा एवं धन्यवाद और शुक्र का पात्र है। सूरह का आरंभ, जो कि अल्लाह की किताब की शुरुआत है, इस कथन के द्वारा (﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾, अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन) करना, मुस्लिम को सिखाता है कि सभी प्रशंसा एवं स्तुति केवल अल्लाह के लिए है, और वही प्रशंसा के योग्य है, एवं यह बंदे का कर्तव्य है कि वह अल्लाह की उसी प्रकार प्रशंसा करे जैसा उसने अपनी महान पुस्तक में स्वयं को सराहा है, तथा अपने भक्तों को इस के बारे में सूचना दी है। इस आयत से यह भी विदित होता है कि अल्लाह प्रत्येक वस्तु का स्वामी एवं शासक है, और वह अपनी इच्छा अनुसार किसी भी वस्तु का निर्माण और संचालन कर सकता है, जिस प्रकार वह चाहे, जब वह चाहे।

तथा (رَبِّ الْعَالَمِينَ, रब्बिल आलमीन) वाक्यांश यह बताता है कि वह समस्त दुनिया का स्वामी है: इंसानों की दुनिया, फरिश्तों की दुनिया, जिन्नों की दुनिया, जानवरों की दुनिया, पौधों की दुनिया, तथा वह आकाशों एवं पृथ्वी का स्वामी है, वह प्रत्येक उस वस्तु का मालिक है जो इस दुनिया में है, और उसके अतिरिक्त कोई सृष्टिकर्ता नहीं है, इस प्रकार इस सूरह फ़ातिहा में तौहीद-ए-रुबूबियत (रब की एकता) की पुष्टि की गई है।

यह बात मुसलमान के लिए यह समझने के महत्व को दर्शाती है कि मिल्कियत (स्वामित्व) का वास्तविक अर्थ क्या है, साथ ही इस स्वामित्व को अल्लाह तआला का माना जाए, तथा यह कि इंसान जो कुछ भी रखता है, वह केवल अल्लाह तआला की ओर से एक सौंपा गया अमानत और इनायत (अनुग्रह) है, जो उसकी इच्छा के अधीन है। यहां तक कि उसके बंदों में से कोई मालिक भी अपनी अधीनता में आई चीज़ों पर अल्लाह की इच्छा के बिना कोई अधिकार या नियंत्रण नहीं रख सकता, वह न कुछ बेच सकता है, न तोहफे में दे सकता है, न स्थानांतरित कर सकता है, न किसी उद्देश्य को पूरा कर सकता है, और न ही किसी

बात को रोक सकता है, जब तक कि अल्लाह तआला की इच्छा न हो। इस प्रकार, बंदा अपनी इच्छानुसार कार्य करता है, किंतु उसकी इच्छा अल्लाह तआला की इच्छा के अधीन होती है। जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने बंदों का मार्गदर्शन सूरतुल-कह्फ़ में किया हैः ﴿وَلَا تَقُولَنَّ لِشَاْىۡءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ۝٢٣ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُۚ﴾ (किसी चीज़ के बारे में यह मत कहो कि मैं इसे कल करूंगा, सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे)। इस बात का एहसास इंसान को अल्लाह के सामने झुकने और उसकी दासता स्वीकारने में मदद करता है। जब इंसान यह समझ लेता है कि वह खुद कुछ नहीं कर सकता और हर चीज़ अल्लाह की मर्जी के अधीन है, तो वह अल्लाह की ओर पलटता है तथा जो वास्तविक स्वामी है उस से प्रार्थना करता है, वह समस्त मामलों में (رب العالمين, रब्बिल आलमीन) सारे संसार का स्वामी है, चाहे छोटा हो या बड़ा। तथा इस प्रकार से अल्लाह तआला के लिए तौह़ीद -ए- रुबूबियत पुष्टि होती है, अतः रह़मत (दया), मग़्फ़िरत (क्षमा याचना) तथा सहायता मांगना ये सब उसी से किया जाएगा जो इस का स्वामी, आविष्कारक एवं प्रबंधक है अर्थात अल्लाह।

इसके बाद की आयत में अल्लाह की स़िफ़ात (विशेषताओं) में ﴿ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ﴾ (अर-रह़मान अर-रह़ीमः अति दयालु अत्यंत कृपालु) आते हैं, जो अल्लाह के नामों में से दो नाम हैं, तथा उसकी असीम दया और करुणा को दर्शाते हैं, जो एक मोमिन (आस्तिक) में आशा और प्रेम के पहलू को प्रेरित करता है, और रह़मान एवं रह़ीम अल्लाह के लिए प्रेम को जगाती है, जिसने अपने महान और उदार नामों से अपने आप को विशेषित किया है, यह बंदे के अंदर अल्लाह के पास जो कुछ भी है, उसकी आशा रखने की प्रवृत्ति को बढ़ाती है, क्योंकि 'रह़ीम' नाम में 'रह़मतः दया' की विशेषता शामिल है, और यह आस्तिक की आशा को अल्लाह की रह़मत में मजबूत करता है। इमाम क़ुर्तुबि रह़िमहुल्लाह कहते हैं: जब अल्लाह ने 'रब्बुल-आलमीन' की विशेषता के साथ स्वयं को दर्शाया, जो डराने वाली थी, तो इस के साथ 'रह़मान रह़ीम' को जोड़ दिया, जो प्रेरणा देने वाली थी, ताकि उसकी विशेषताएँ डर और आशा के बीच संतुलित हों, जिस से उसकी आज्ञाकारिता में आसानी हो और उसे रोकने में सक्षम हो।[1] जैसा कि सूरह अल-ह़िजर में हैः ﴿نَبِّئۡ عِبَادِيٓ أَنِّيٓ أَنَا ٱلۡغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ۝٤٩ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ ٱلۡعَذَابُ ٱلۡأَلِيمُ ۝٥٠﴾ (मेरे बंदों को बताओ कि मैं बहुत ही क्षमाशील और दयावान हूँ, और मेरा अज़ाब (यातना) बहुत ही दर्दनाक (कष्टदायक) है)। यह बात शिक्षण, दावत और नेतृत्व के क्षेत्र में, विशेषकर प्रबंधन एवं इसके समान क्षेत्रों में, यह शिक्षा देती है कि कार्यान्वयन की शक्ति और उसमें दृढ़ता के साथ दूसरों के प्रति दया का संतुलन बनाए रखना कितना महत्वपूर्ण है। यह संतुलन स्वीकृति और कार्य के सफल निष्पादन को सुनिश्चित करता है। यह एक ऐसा संतुलन है जो प्रेम और

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 98)।

सम्मान (अथवा भय और आदर) के बीच सामंजस्य स्थापित करता है, जिससे मानसिक स्थिरता और आपसी व्यवहार में संतुलन पैदा होता है।

इसी प्रकार इस सूरह में यह स्पष्ट किया गया है कि अल्लाह तआला अंतिम दिन (क़यामत के दिन) का मालिक है ﴿مَٰلِكِ يَوۡمِ ٱلدِّينِ﴾ (मालिकि यौमिद्दीन), इसमें अल्लाह तआला की महानता का वर्णन किया गया है कि वह क़यामत के दिन का स्वामी है, तथा उस दिन की याद दिलाई गई है, जिस दिन कोई आत्मा किसी अन्य आत्मा के लिए कुछ भी करने की शक्ति नहीं रखेगी, जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरह इन्फ़ितार में फ़रमाया है: ﴿يَوۡمَ لَا تَمۡلِكُ نَفۡسٞ لِّنَفۡسٖ شَيۡـٔٗاۖ وَٱلۡأَمۡرُ يَوۡمَئِذٖ لِّلَّهِ﴾ (उस दिन कोई भी आत्मा किसी अन्य आत्मा के लिए कुछ भी करने की शक्ति नहीं रखेगी, तथा हर मामला उस दिन अल्लाह के अधीन होगा), यह मुसलमान को यह याद रखने के महत्व को दर्शाता है कि वह दिन आने वाला है, विशेष रूप से जब वह इस आयत की प्रतिदिन अपनी नमाजों में दसियों बार तिलावत करता है, ताकि यह उसे हर समय याद रहे। इससे उसका आचरण और सोच शुद्ध होगी, जो उसे हर भलाई की ओर प्रेरित करेगी और हर पाप से बचाएगी। इसके बाद, क़ुरआन का अनुक्रम अल्लाह तआला की इबादत में ईमानदारी की मांग करता है, जो कि शिर्क से मुक्त होनी चाहिए (إِيَّاكَ نَعۡبُدُ इय्याका नअबुदु) अर्थात, केवल अल्लाह की इबादत की जाए, न कि किसी अन्य की, अतः बंदा अपने रब के समक्ष यह इकरार करता है कि वह उसी एक अकेले की पूजा करेगा, इस के पश्चात वह इसके लिए आवश्यक चीज़ें सीखता है जैसे कि वह सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह को छोड़ कर किसी अन्य की किसी भी प्रकार की उपासना नहीं करेगा, इस के पश्चात कि उसने केवल अल्लाह तआला के लिए उबूदियत (पूज्य) होने का इकरार कर लिया है अपने इस कथन के द्वारा (إِيَّاكَ نَعۡبُدُ इय्याका नअबुदु) अर्थातः हम तेरी ही उपासना करते हैं, बल्कि उस ने यह इकरार भी किया है कि जिन चीज़ों का अधिकार केवल अल्लाह के पास है उन चीज़ों में वह केवल अल्लाह से ही सहायता मांगेगा (وَإِيَّاكَ نَسۡتَعِينُ, व इय्याका नस्तईन, हम तुझ से ही सहायता चाहते हैं) यद्यपि इस्तिआनत (सहायता) उबूदियत अर्थातः उपासना (إِيَّاكَ نَعۡبُدُ इय्याका नअबुदु) के अंदर शामिल है, परंतु इस का उल्लेख अलग से करना इस की महत्ता को दर्शाता है, तथा दुआ, आशा, भय एवं प्रेम से इस का संबंध बताता है जोकि पूजा का सार है, क्योंकि आशा उस से सहायता चाहना है जिस से आशा रखी जा रही है, भय उस से सहायता चाहना है जिस से भय खाया जा रहा है कि वह उस को दण्डित न करे तथा इस्तिआनत अर्थात मदद चाहना यह दुआ का एक रूप है कि जिस से आशा रखी जाती है कि वह लाभदायक वस्तुओं की प्राप्ति एवं हानिकारक वस्तुओं से दूरी में उस की सहायता करे, इस्तिआनत अर्थात मदद लेना उन लोगों की ओर रुख करना होता है जिन्हें हम अपने मददगार और आश्रय के रूप में पसंद करते हैं, इस्तिआनत उस

पर भरोसा करना होता है जिस से सहायता मांगी जा रही है, तथा यह अनिवार्य है कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से इस्तिआनत न चाही जाए। यह इस महान सूरह के अर्थों को समझने के महत्व को दर्शाता है, जिसमें हमारे रब और सृष्टिकर्ता की महानता और महिमा को उजागर किया गया है। इसके लाभों में से एक यह है कि इस महान आयत ने तौहीद-ए-उलूहियत (अर्थात अल्लाह की इबादत के लिए विशिष्टता) को शामिल किया है, क्योंकि केवल वही इबादत के योग्य है और उसके सिवाय कोई भी सच्चा इबादत के योग्य नहीं है।

फिर क़ुरआन का पवित्र संदर्भ हिदायत की दुआ और अल्लाह तआला से मार्गदर्शन की प्रार्थना की ओर बढ़ता है ﴿ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴾ (इह्दिनस्सिरातल मुस्तक़ीम, अर्थातः हमें सीधा मार्ग दिखा), तथा यह बंदे का अपने रब एवं सृष्टिकर्ता से एक महान वस्तु का प्रश्न करना है कि वह उसे सीधा मार्ग दिखाए, और वह इस प्रकार कि उसे ख़ैर व कल्याण की ओर मार्गदर्शन दे, तथा इस पर उस की सहायता करे, और इस पर उसे दृढ़ रखे। जो इस बात को प्रमाणित करता है कि बंदा हिदायत एवं मार्गदर्शन के लिए अल्लाह का मोहताज है, अतः बंदे के लिए अनिवार्य है कि वह अल्लाह से गिड़गिड़ा कर सही मार्ग की ओर मार्गदर्शन की प्रार्थना करे, तथा यह दुआ करे कि अल्लाह उसे इस पर उसे दृढ़ रखे, क्योंकि मार्ग बहुतेरे हैं जो उसे अपनी ओर बुला रहे होते हैं, किंतु इन मार्गों में से केवल एक मार्ग ही मार्ग ऐसा है जो सीधा एवं सही है, तथा वह मार्ग (الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ सिरात -ए- मुस्तक़ीम) है, यह वह मार्ग हो जो बंदों को उन चीज़ों के द्वारा अल्लाह तक पहुँचाता है जिन्हें अल्लाह पसंद करता है एवं उस से राज़ी होता है, यही वह मार्ग है जो बंदों को अल्लाह तआला के स्वर्ग तक ले जाता है, यह इस बात की मांग करता है कि बंदा अल्लाह के दीन, इस्लाम पर चले, जिस की विशेषता यह बताई गई है (صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ स़िरात़ल्लज़ीना अन्अम्ता अलैहिम) उन लोगों का मार्ग जिन पर अल्लाह तआला ने अपना अनुग्रह किया नबियों, शहीदों, सि़द्दीक़ों एवं स़ालेहीन में से, इस के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं, इसके सिवा कोई सीधा रास्ता नहीं, क्योंकि अल्लाह तआला ने इसके अतिरिक्त अन्य मार्गों के सीधे होने का इनकार किया है, तथा जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब (क्रोध) उतरा उनका एवं जो लोग गुमराह हो गए, जैसा कि अल्लाह का कथन है (غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम) जिन्होंने ह़क़ (सत्य) को पहचाना तथा उसे छोड़ दिया एवं इस से अभिप्राय यहूदी हैं, तथा इसी प्रकार से (وَلَا الضَّالِّينَ वलज़्ज़ाल्लीन) जिन्होंने अज्ञानता एवं पथभ्रष्टता के कारण ह़क़ को छोड़ दिया, तथा इस से अभिप्राय नस़ारा (ईसाई) एवं इन जैसे अन्य लोग हैं।

इस महान सूरह के लाभों में से यह भी है कि यह रुक़्या (मंतर) है जिसके द्वारा रोगियों का उपचार किया जाता है, जैसाकि ह़दीस़ में आया है कि एक स़हाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने यात्रा के दौरान एक व्यक्ति को यह पढ़ कर दम किया तो अल्लाह तआला ने उस को निरोग कर दिया,

लौटने के पश्चात उन लोगों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस की सूचना दी तो आपने फ़रमायाः "उसे कैसे पता चला कि यह रुक़्या (मंतर) है"[1] तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबी अबू सईद बिन मुअल्ला से कहा था (क्या मैं तुमको मस्जिद से निकलने के पूर्व क़ुरआन की सब से महान सूरह न सिखा दूँ?) सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः आपने मेरा हाथ पकड़ा, जब हम निकलने के लगे तो मैंने कहाः हे अल्लाह के रसूल, आप ने कहा था कि मैं तुम को क़ुरआन की सब से महान सूरह के विषय में बताऊँगा, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "﴿ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَـٰلَمِينَ﴾ (अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन) यह सबअ -ए- मसानी (अर्थात इस की सात आयतें बारंबार दोहराई जाती हैं) एवं वह क़ुरआन -ए- अज़ीम है जो मुझे प्रदान किया गया है"।[2]

इस सूरह के महान लाभों में से एक वह भी है जिस का उल्लेख हदीस -ए- क़ुदसी में हुआ है कि सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह फ़रमाता हैः "मैंने नमाज़ को अपने तथा अपने बंदों के मध्य विभाजित कर दिया है, आधा मेरे लिए है तथा आधा मेरे बंदे के लिए है, और मेरा बंदा जो माँगता है वह उसे मिलता है... बंदा कहता है (ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَـٰلَمِينَ अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन) तो अल्लाह कहता हैः मेरे बंदे ने मेरी प्रशंसा की, तथा मेरे बंदे के लिए वह है जो वह माँगे, जब बंदा कहता है (ٱلرَّحْمَـٰنِ ٱلرَّحِيمِ अर्रहमानिर्रहीम) तो अल्लाह कहता हैः मेरे बंदे ने मेरा स्तुतिगान किया, तथा मेरे बंदे के लिए वह है जो वह माँगे, जब वह कहता है (مَـٰلِكِ يَوْمِ ٱلدِّينِ मालिकि यौमिद्दीन) तो अल्लाह कहता हैः मेरे बंदे ने मेरी महिमा का गुणगान किया, तथा यह मेरे लिए है, एवं यह आयत मेरे एवं मेरे बंदे के मध्य आधा-आधा विभाजित है, जब बंदा कहता है (إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ इय्याका नअबुदु व इय्याका नस्तईन) तो अल्लाह कहता है यह मेरे एवं मेरे भक्त के बीच है, तथा मेरे बंदे के लिए वह है जो वह माँगे, एवं सूरह का अंत मेरे बंदे के लिए है, बंदा कहता है (صِرَٰطَ ٱلَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ ٱلْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا ٱلضَّآلِّينَ, इह्दिनस्सिरताल मुस्तक़ीम, सिरातल्लज़ीना अन्अम्ता अलैहिम ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ालीन) (तो अल्लाह कहता हैः) यह मेरे बंदे के लिए है, तथा मेरे बंदे के लिए वह है जो वह माँगे"।[3]

(2) बुख़ारी (3/ 342) हदीस संख्या (5007)।

(3) बुख़ारी (3/ 342) हदीस संख्या (5006)।

(1) इब्न -ए- माजह (2/ 1243-1244) हदीस संख्या (3784)।

फ़वाइद उल क़ुरआन अज़् ज़किय्यह

सूरह बक़रह के लाभ

सूरह बक़रह के लाभ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

﴿الٓمٓ ١ ذَٰلِكَ ٱلۡكِتَٰبُ لَا رَيۡبَۛ فِيهِۛ هُدٗى لِّلۡمُتَّقِينَ ٢ ٱلَّذِينَ يُؤۡمِنُونَ بِٱلۡغَيۡبِ وَيُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَمِمَّا رَزَقۡنَٰهُمۡ يُنفِقُونَ ٣
وَٱلَّذِينَ يُؤۡمِنُونَ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡكَ وَمَآ أُنزِلَ مِن قَبۡلِكَ وَبِٱلۡأٓخِرَةِ هُمۡ يُوقِنُونَ ٤ أُوْلَٰٓئِكَ عَلَىٰ هُدٗى مِّن رَّبِّهِمۡۖ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ
ٱلۡمُفۡلِحُونَ ٥﴾

बिस्लमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(अलिफ़ लाम मीम। ज़ालिकल् किताबु ला रैबा फ़ीहि हुदल् लिल्मुत्तक़ीन। अल्लज़ीना युअमिनूना बिमा उन्ज़िला इलैका व मा उन्ज़िला मिन् क़ब्लिका व बिल् आख़िरति हुम यूक़िनून। उलाइका अला हुदम् मिर् रब्बिहिम व उलाइका हुमुल मुफ़्लिहून।)

अनुवादः (अलिफ़, लाम, मीम। यह पुस्तक है, जिस में कोई संशय (संदेह) नहीं, उन को सीधी डगर दिखाने के लिए है, जो (अल्लाह से) डरते हैं। जो ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, तथा नमाज़ की स्थापना करते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है, उस में से दान करते हैं। तथा जो आप (नबी) पर उतारी गई (पुस्तक-क़ुरआन) तथा आप से पूर्व उतारी गई (पुस्तकों) पर ईमान रखते हैं, तथा आख़िरत (परलोक) पर भी विश्वास रखते हैं। वही अपने पालनहार की बताई सीधी डगर पर हैं, तथा वही सफल होंगे)।

क़ुरआन -ए- करीम की दूसरी सूरह का आरंभ तीन हुरूफ़ -ए- मुक़त्तिआत के द्वारा किया गया है, जिसका अर्थ जानने में मानव बुद्धि असमर्थ है, ताकि इन तीन हुरूफ़ (अक्षरों) के समक्ष वह अचंभित खड़ा रहे, उसे समझ में न आए कि आख़िर यह है क्या, तथा यह ऐसी शैली है जो इस के पूर्व कभी नहीं सुनी गई, किसी के मन-मस्तिष्क में इस प्रकार की शैली की कल्पना भी नहीं आई होगी, यह क़ुरआन में अल्लाह के भेदों में से एक भेद है, हम इस पर ईमान लाते हैं, तथा जिस प्रकार आया है उसी प्रकार इस का पाठ करते हैं, तथा यह उन शब्दों में है जिसकी व्याख्या नहीं की जा सकती है।

इस के लाभों में से यह है कि, यह इसका पाठ करने वालों के लिए परीक्षा एवं आज़माइश के रूप में है, जहाँ तक इस के लाभों को जानने की बात है तो, बहुतेरे विद्वानों ने कहा है किः हमारे ऊपर अनिवार्य है कि हम इस के संबंध में बात करें तथा इस के लाभों को खोजें।[1]

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 109)।

उन लाभों में से एक यह है कि इस के द्वारा लोगों का ध्यानाकर्षण किया जाता है, क़ुतरुब अरब के बारे में कहते हैं: ये लोग क़ुरआन सुन कर भागा करते थे, किंतु जब उन्होंने ﴿الٓمٓ﴾ (अलिफ़ लाम मीम) एवं ﴿الٓمٓصٓ﴾ (अलिफ़ लाम मीम स़ाद) सुना तो इन शब्दों ने उन्हें अचंभित कर दिया, जब ये लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने चुप हो गए तो आपने उन के समक्ष क़ुरआन का पाठ किया ताकि वो इसे सुनें तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन के ऊपर तर्क स्थापित कर दें।[1]

जब ये हुरूफ़ -ए- मुक़त्तिआत उतरे तो ये लोग अचंभित रह गए, क्योंकि उन्हें ऐसी शैली में संबोधित किया गया था जिस को वो समझते ही नहीं थे, ताकि वे क़ुरआन को सुनें, क्योंकि मानव स्वभाव है कि वह उन चीज़ों को ध्यानपूर्वक सुनता है जिस का अर्थ वह नहीं जानता है, तो मानो यह प्रसार का एक माध्यम है, परंतु इस का कोई अर्थ होना आवश्यक है ताकि वह दूसरों को भी इसे सिखा सके, एवं संबोधित व्यक्ति के समक्ष भी इसे ज्ञात होना चाहिए, अतः यह वाक्य समस्त अक्षरों को अपने अंदर सम्मिलित किए हुए है[2], यह मन में ज्ञान अर्जित करने की लालसा जागृत करता है, तथा ध्यान आकर्षित करने का महत्त्व उस संदर्भ में है जिसे सिखाना और बताना है, और इसे सुनने वाले को यह अनुभूति कराना है कि वह इसे सुनने का मोहताज है, ताकि वह उसमें समाहित ज्ञान और जानकारी, सलाह या अन्य जो भी उसे प्रवाहित किया जा रहा है, को सम्यक् रूप से आत्मसात् कर सके।

सूरह बक़रह की शुरूआती आयतों का एक लाभ यह है कि इस का आरंभ ही क़ुरआन -ए- करीम में संदेह एवं शक न करने से किया गया है ﴿ذَٰلِكَ ٱلْكِتَٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيهِ﴾ (ज़ालिकल् किताबु ला रैबा फ़ीहि) ताकि इस इनकार के बाद क़ुरआन में निहित व्यापकता की पुष्टि की जाए, ﴿هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ﴾ (हुदल् लिल् मुत्तक़ीन) तथा संदेह एवं शक के इनकार के पश्चात हिदायत एवं मार्गदर्शन को प्रमाणित करना मन को उसे सुनने की ओर लगाने का कार्य करता है, एवं यदि आप इसे सुनेंगे तो निश्चित रूप से इस की ओर आकर्षित होंगे, क्योंकि इस में वास्तविकता, सद् व्यवहार एवं भलाई की बातें हैं, इसी प्रकार शब्दों की संरचनाओं की सुंदरता और उनके कथनों की चमत्कारिक विशेषता भी इस के अंदर है, परंतु जिस के हृदय में अहंकार हो तो उसे मार्गदर्शन एवं हिदायत नहीं मिल सकती।

शैख़ इब्न -ए- सअदी रहिमहुल्लाह कहते हैं किः “उस की ओर से संदेह एवं भ्रम का इनकार करना, अनिवार्य रूप से इस के विपरीत अर्थ को प्रमाणित करता है, जोकि यक़ीन एवं

---

(2) अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 109)।

(3) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़्सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 17)।

विश्वास है, यह पुस्तक इल्म -ए- यक़ीन पर आधारित है, तथा यह बड़ा लाभदायक नियम है कि इनकार से अभिप्राय इस की प्रशंसा करना है"।[1]

तथा इस के लाभों में से यह भी है जिसे इसे सिखाने, समझाने एवं मार्गदर्शन देने का कार्य किया जाएगा उस के मन से संदेह, भ्रम एवं शक का निवारण हो, ताकि उस की बुद्धि एवं मस्तिष्क ख़ैर, भलाई एवं कल्याण को अधिग्रहित करने के लिए साफ रहे। इसी प्रकार से यह बयान करना जो इस बात की पुष्टि करता है कि आमंत्रण देने वाला (दाई), शिक्षक, उपदेशक एवं मार्गदर्शक जिस की ओर लोगों को मार्गदर्शन दे रहा है वह लोगों की तुलना में इस का अधिक ज्ञानी होता है। सूरह का आरंभ ऐसी चीज़ ﴿الٓمٓ﴾ (अलिफ़ लाम मीम) से हुआ जिसे जानने से ये लोग विवश थे, ताकि उन को समझ में आ जाए कि यह पुस्तक किसी मनुष्य का कारनामा नहीं है, न ही उस रसूल की ओर से है जिन्हें इस के साथ भेजा गया है जोकि हमारे सम्मानित नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, अपितु यह सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह की ओर से है, जो परोक्ष एवं प्रत्यक्ष सभी को जानता है।

यह सम्मानित आयत विभिन्न प्रकार के महान अर्थों को शामिल है, तथा जो बेहद सटीक और चमत्कृत चीज़ों पर आधारित है, क्योंकि बुद्धि इस के समक्ष विवश हो जाती है, इस में यदि विभिन्न आयतों पर अलग-अलग ढंग से ठहरा जाए तो विभिन्न अर्थ देता है (ذَٰلِكَ ٱلْكِتَٰبُ ज़ालिकल् किताबु) (لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ ला रैबा फ़ीहि हुदल् लिल् मुत्तक़ीन) (ذَٰلِكَ ٱلْكِتَٰبُ لَا رَيْبَ ज़ालिकल् किताबु ला रैबा) (فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ फ़ीहि हुदल् लिल् मुत्तक़ीन) (ذَٰلِكَ ٱلْكِتَٰبُ لَا رَيْبَ فِيهِ ज़ालिकल् किताबु ला रैबा फ़ीहि) (هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ हुदल् लिल् मुत्तक़ीन), तथा इस प्रकार अलग-अलग ढंग से ठहरने पर सब भिन्न-भिन्न अर्थ दे रहा है, जिस को तफ़्सीर (व्याख्या) की पुस्तकों में देखा जा सकता है, यह क़ुरआन -ए- करीम के भाषाई चमत्कारों में से एक है, जहाँ केवल वक़्फ़[2] (ठहराव) एवं इब्तिदा (आरंभ) के बदलने से ही पाठ ने आपस में जुड़े हुए अर्थ दिए हैं, ताकि अर्थ एवं आश्य पूर्ण रूपेण समझ में आए। पाक व पवित्र है वह अल्लाह जिस ने ऐसी महान पुस्तक उतारी, तथा जिस के द्वारा मानव एवं दानव सभी को चैलेंज किया।

अल्लाह तआला के इस कथन ﴿هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ﴾ (हुदल् लिल् मुत्तक़ीन) में विशेष रूप से मुत्तक़ी लोगों का उल्लेख किया गया है, क्योंकि वही इसे स्वीकार करते हैं और इसके द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं, जिस के कारण वे मुत्तक़ी (परहेज़गार) बन जाते हैं। इस प्रकार, जो व्यक्ति

(2) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान (1/ 31)।

(3) लिखावट में किसी वाक्य या वाक्यों के बीच का अंतराल जिसे नुक़्ते या शोशे इत्यादि से स्पष्ट अर्थात अभिव्यक्त किया जाता है

इस किताब को खुले दिल से स्वीकार करता है, उसकी बातें मानता है, और इसके मार्गदर्शन का पालन करता है, उसे तक़वा प्राप्त होता है। अतः यह किताब उन मुत्तक़ीन (परहेज़गारों, तपस्वियों) के लिए मार्गदर्शन है जो इसे स्वीकार करते हैं और इसके मार्गदर्शन से लाभ उठाते हैं।(1)

इस के लाभों में से एक यह भी हैः विवरण को संक्षेप में प्रस्तुत करने के बाद विस्तार देना। जब मुत्तक़ीन (अल्लाह से डरने वाले) का उल्लेख किया गया, जो अल्लाह तआला द्वारा उतारे गए मार्गदर्शन से लाभ उठाते हैं, तो उनके तक़वा की बुनियादी विशेषताओं का विवरण दिया गया। ये विशेषताएँ हैं: ग़ैब (अदृश्य सत्य) पर ईमान, नमाज़ को क़ायम करना, अल्लाह तआला द्वारा प्रदान की गई रोज़ी में से खर्च करना, हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारी गई चीज़ों पर ईमान, पहले के नबियों पर उतारी गई चीज़ों पर ईमान, मौत के बाद के जीवन (आख़िरत, परलोक) पर यक़ीन, अल्लाह तआला फ़रमाता हैः ﴿ٱلَّذِينَ يُؤۡمِنُونَ بِٱلۡغَيۡبِ وَيُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَمِمَّا رَزَقۡنَٰهُمۡ يُنفِقُونَ ٣ وَٱلَّذِينَ يُؤۡمِنُونَ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡكَ وَمَآ أُنزِلَ مِن قَبۡلِكَ وَبِٱلۡأٓخِرَةِ هُمۡ يُوقِنُونَ ٤﴾ (जो ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, तथा नमाज़ की स्थापना करते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है, उस में से दान करते हैं। तथा जो आप (नबी) पर उतारी गई (पुस्तक, क़ुरआन) तथा आप से पूर्व उतारी गई (पुस्तकों) पर ईमान रखते हैं, तथा आख़िरत (परलोक) पर भी विश्वास रखते हैं।)।

सारांश के बाद विस्तार देने के अनेक महत्वपूर्ण लाभ होते हैं। क्योंकि सारांश में उस विषय के बारे में जानने की उत्सुकता पैदा होती है, जो संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है, तथा मुख़ातब (संबोधित व्यक्ति) को पूरी बात को एक बार में नहीं बताया जाता। यह तरीका समझने और ग्रहण करने में सरल और तेज़ सिद्ध होता है। फिर उसके बाद विस्तार से जानकारी दी जाती है, जो शिक्षा और प्रशिक्षण की विधियों में बहुत फायदेमंद है। इस तरीके से शिक्षा की शुरुआत संक्षेप में की जाती है, फिर विस्तार से समझाया जाता है, क्योंकि यह ज्ञान प्राप्त करने में दिलचस्पी और उत्तेजना पैदा करता है। यही तरीका तक़रीर (भाषण) और दावत (प्रचार) के क्षेत्र में भी प्रभावी होता है।

ग़ैब (अदृश्य सत्य) पर ईमान को बाकी ईमान के हिस्सों और कार्यों पर प्रभाव डालने के कारण पहले स्थान पर रखा गया है। ग़ैब पर ईमान एक ऐसी मानसिक स्वीकृति है जो दृष्टि और श्रवण से परे है। यह वह अनमोल उपहार है जिसे यदि किसी को दिया जाता है, तो उसे

---

(1) इस संबंध में इमाम क़ुर्तुबी ने अपनी पुस्तक "अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन" (1/ 108-113) में लिखा है, तथा इब्नुल जौज़ी ने "ज़ादुल मसीर फ़ी इल्मित् तफ़्सीर" (1/ 18-19) और इब्न -ए- सअदी ने तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान (1/ 31-32)।

सबसे बड़ी नेमत दी जाती है, और इसके बाद की सभी नेमतें इसी पर निर्भर करती हैं। इसलिए, यह स्वीकार करना किसी भी व्यक्ति के लिए आसान होता है, और यदि इसे स्वीकार करने में कठिनाई होती है, तो इसका मतलब है कि उस पर पूरी तरह से अमल करना कठिन हो सकता है।

इस के फ़ायदों में से एक यह है कि अल्लाह सर्वशक्तिमान ने उनके लिए जीविका का ज़िक्र किया है, और सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा है ﴿وَمِمَّا رَزَقۡنَٰهُمۡ يُنفِقُونَ﴾ (और हमने उन्हें जो कुछ दिया है उसमें से वे ख़र्च करते हैं) तथा यह नहीं कहा है, (और जो कुछ उन्होंने कमाया है उसमें से वे ख़र्च करते हैं), ताकि व्यक्ति को यह एहसास हो सके कि जीविका सर्वशक्तिमान अल्लाह की ओर से एक इनाम है, और इसके लिए प्रयास करना माध्यम अपनाने के अध्याय में से है, कितने ऐसे लोग है जिन्होंने जीविका के कारण को अपनाया परंतु उन्होंने केवल थोड़ा सा लाभ उठाया है, और कितने ही लोग ऐसे हैं जिन्होंने जीविका के साधनों को अपना कर बहुत सारा कल्याण पाया, जो उसके प्रयास से कहीं अधिक था, तथा इसकी पुष्टि सूरह अल-ज़ारियात में सर्वशक्तिमान अल्लाह के इस कथन से होती है ﴿وَفِي ٱلسَّمَآءِ رِزۡقُكُمۡ وَمَا تُوعَدُونَ ٢٢﴾ (और आकाश में आपके रिज़्क़ (आजीविका) प्रावधान है और जो आपसे वादा किया गया है)। तथा अल्लामा इब्न -ए- सअदी रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः सर्वशक्तिमान अल्लाह ने सामान्य बातों के उल्लेख के पश्चात आख़िरत पर विश्वास रखने का उल्लेख किया है, क्योंकि यह रुचि दिलाने, डराने एवं कार्य करने के लिए प्रेरित करने हेतु सबसे बड़ा कारक है[1], तथा जो कोई भी अंतिम दिन (आख़िरत के दिन) पर ईमान रखेगा वह उस कार्य करने की तैयारी करेगा जो अपेक्षित है।

ये आयतें बंदे से जो अपेक्षा की जाती है उसके लिए अत्यंत उत्तम ढंग से प्रेरित करती हैं, तथा यही सफलता है ﴿وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُفۡلِحُونَ﴾ (और वही सफल हैं), यह उस चीज़ को प्राप्त करने का मार्ग है जिसे संबोधित व्यक्ति चाहता तथा पसंद करता है, साथ ही यह उससे बचने एवं मुक्ति पाने का तरीका है जिससे वह डरता तथा घबराता है।

फिर, अल्लाह ने पवित्र पुस्तक में निहित सफलता और कामयाबी के तरीकों का उल्लेख करने के बाद, काफिरों की विशेषताओं को बयान किया है।

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ سَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ ءَأَنذَرۡتَهُمۡ أَمۡ لَمۡ تُنذِرۡهُمۡ لَا يُؤۡمِنُونَ ٦ خَتَمَ ٱللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمۡ وَعَلَىٰ سَمۡعِهِمۡۖ
وَعَلَىٰٓ أَبۡصَٰرِهِمۡ غِشَٰوَةٞۖ وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيمٞ ٧ وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَقُولُ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَبِٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِ وَمَا هُم بِمُؤۡمِنِينَ ٨

(1) तैसीरुल करीमिर्रह़मान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान (1/ 34)।

يُخَٰدِعُونَ ٱللَّهَ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ ٱللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌۢ بِمَا كَانُواْ يَكْذِبُونَ ﴿١٠﴾﴾ [سورة البقرة:٦-١٠].

अनुवादः (वास्तव में जो काफ़िर हो गए, उन्हें आप सावधान करें या न करें, वह ईमान नहीं लाएंगे। अल्लाह ने उन के दिलों तथा कानों पर मुहर लगा दी है, और उन की आँखों पर पर्दे पड़े हैं, तथा उन्हीं के लिए घोर यातना है। और कुछ लोग कहते हैं कि हम अल्लाह तथा आख़िरत पर ईमान ले आए, जब कि वह ईमान नहीं रखते। वह अल्लाह को तथा जो ईमान लाए उन्हें धोखा देते हैं, जब कि वह स्वयं अपने आप को धोखा देते हैं, परंतु वह इसे समझते नहीं। उन के दिलों में रोग है, जिसे अल्लाह ने और अधिक कर दिया, तथा उन के लिए झूठ बोलने के कारण दुखदायी यातना है)।

सर्वशक्तिमान अल्लाह ने ईमान (विश्वास) तथा तक़्वा (पवित्रता) रखने वाले एवं इबादत (पूजा) करने वाले लोगों की विशेषताओं और फ़ौज (कामयाबी) के द्वारा उनकी सफलता की व्याख्या करने के बाद, उन कृतघ्न, अहंकारी और जिद्दी काफिरों की स्थिति का उल्लेख किया है, जिन लोगों की जिद और अहंकार इस हद तक पहुंच गए कि इनकार और अहंकार के कारण वे ईमान से विमुख हो गए, तथा चेतावनी एवं सावधानी भी उनके लिए लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकी, अल्लाह तआला फ़रमाता हैः ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ﴾ अनुवादः (वास्तव में जो काफ़िर हो गए, उन्हें आप सावधान करें या न करें, वह ईमान नहीं लाएंगे)।

इसके लाभों में से एक यह है कि कुछ लोग सत्य को उस समय भी स्वीकार नहीं करते जब वह आकाश के बीच में सूर्य की तरह स्पष्ट दिखाई दे रहा हो, उपदेशक को दूसरों की अपेक्षा इसमें व्यस्त नहीं रहना चाहिए, और स्वयं को उस अहंकारी के साथ व्यस्त नहीं रखना चाहिए जो सत्य के स्पष्ट होने और प्रकट होने के बाद भी सत्य को स्वीकार करने में अहंकारी है, क्योंकि अल्लाह ने उसके दिल, उसके कान एवं आँख पर मुहर लगा दी है, उसके अहंकार और स्पष्ट सत्य से विमुख होने के कारण, तथा वे जिद्दी काफिर हैं। यह अहंकार और सत्य को स्वीकार न करने के ख़तरे का प्रमाण है। यही अहंकार वह चीज़ है जो बंदे से सर्वशक्तिमान अल्लाह की उदारता और दान को रोकता है।

बल्कि, अल्लाह ने उनसे सीखने के स्रोतों का लाभ भी रोक दिया है, जोकि ये हैं: हृदय जिसके द्वारा मनुष्य समझता है, तथा कान जिसके द्वारा वह सुनी जाने वाली चीज़ों को सुनता है, और वह दृष्टि जिसके द्वारा वह उन चीज़ों को देखता है जो देखी जाती हैं ﴿خَتَمَ ٱللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ

﴿وَعَلَىٰ سَمۡعِهِمۡۖ وَعَلَىٰٓ أَبۡصَٰرِهِمۡ غِشَٰوَةٞۖ﴾ अनुवादः (अल्लाह ने उन के दिलों तथा कानों पर मुहर लगा दी है, और उन की आँखों पर पर्दे पड़े हैं)।

अहंकार बड़े मामलों में हो सकता है, जैसे इस्लाम, आस्था और सच्चाई को स्वीकार न करना जिसके बारे में कोई संदेह नहीं है, या यह उस से कम किसी चीज़ में भी हो सकता है, अतः जो सच्चाई के स्रोतों से सच्चाई को स्वीकार करने से इंकार कर सकता है, तो अल्लाह उस से उस वस्तु को रोक सकता है जिस के कारण वह अहंकार दिखा रहा है। जैसे कोई व्यक्ति किसी कमजोर पर उसकी कमजोरी के कारण घमंड करता है, तो अल्लाह तआला उस कमजोर को उसकी आवश्यकता के समय उसी व्यक्ति के पास ला सकता है, और किसी दिन उसे उस पर हुकूमत भी दे सकता है, चाहे वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में हो। यह इस बात का संकेत है कि विनम्रता की क़ीमत और स्थान को समझना कितना ज़रूरी है, क्योंकि विनम्रता अच्छे कर्मों को प्रेरित करती है, मानसिक शांति को स्थापित करती है, अच्छाई को आकर्षित करती है, और सत्य को स्वीकार करने तथा उस पर अमल करने में मदद करती है। जिस प्रकार ईमानवाले सफल होते हैं, उसी प्रकार अविश्वासी हारे हुए होते हैं, जिन्हें यातना दी जाती है, जैसा कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा (وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيمٞ उनके लिए बड़ी सजा है), अतः पुरस्कार मोमिनों के लिए है, तथा यातना काफ़िरों के लिए है।

फिर अल्लाह तआला ने लोगों के कुछ प्रकार का उल्लेख किया है, जोकि मुनाफ़िक़ीन अर्थात पाखंडी हैं, ये लोग जो छिपाते हैं उसके विपरीत प्रकट करते हैं (وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَقُولُ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَبِٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِ وَمَا هُم بِمُؤۡمِنِينَ) अनुवादः (और कुछ लोग कहते हैं कि हम अल्लाह तथा आख़िरत पर ईमान ले आए, जब कि वो ईमान नहीं रखते)। तथा वे लोग अपने इस पाखण्ड आधारित कार्य के द्वारा धोखा देते हैं (يُخَٰدِعُونَ ٱللَّهَ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَمَا يَخۡدَعُونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمۡ وَمَا يَشۡعُرُونَ) अनुवादः (वह अल्लाह को तथा जो ईमान लाए उन्हें धोखा देते हैं, जब कि वह स्वयं अपने आप को धोखा देते हैं, परंतु वह इसे समझते नहीं)।

धोखा तब होता है जब आप दूसरों को जो आप छिपा रहे हैं उसके अलावा किसी और बात का विश्वास दिलाते हैं।(1) किसी सृजित प्राणी के लिए धन्य और परमप्रधान अल्लाह को धोखा देना संभव नहीं है, क्योंकि उस से कुछ भी छिपा नहीं है, सब कुछ उसके लिए खुला है। अल्लाह तआला को धोखा देने से अभिप्राय है अल्लाह तआला के धर्म को धोखा देना, क्योंकि वे ईमान का प्रदर्शन करते हैं और उसके विपरीत छिपा कर रखते हैं, इसी प्रकार से उस के रसूल

(1) अनवार अल-तंज़ील व असरार अंत-तावील, लेखकः अल-बैज़ावी, (1/25)।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को धोखा देने का अर्थ है धर्म को धोखा देना, दीन -ए- इस्लाम को प्रकट कर के तथा कुफ़्र को छिपा कर।

मुनाफ़िक़, धोखेबाज होता है। वह अपनी मूर्खता के कारण सोचता है कि उसने दूसरों को धोखा दिया है, जबकि उसने खुद को धोखा दिया होता है (وَمَا يَخۡدَعُونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمۡ) (और वे किसी को नहीं बल्कि खुद को धोखा देते हैं)। इमाम अल-कुर्तुबी कहते हैं: अर्थात, धोखे का परिणाम उन्हीं के साथ धोखा के रूप में फलित होता है। धोखा उन्हीं को दिया जाता है जो उसे अंदर से नहीं जानता हो, परंतु जो भीतर की बात जानता है, तो जो कोई उसके साथ छल करता है, वह अपने आप को ही धोखा देता है। इससे पता चलता है कि पाखंडियों ने अल्लाह को नहीं पहचाना, क्योंकि यदि वे अल्लाह को जानते तो उन्हें पता होता कि अल्लाह को धोखा नहीं दिया जा सकता।[1] क्योंकि सर्वशक्तिमान अल्लाह उनके और उनके रहस्यों से तथा बंदा अपने दिल में क्या छिपा कर रखता है, और वह अपने भविष्य में किस प्रकार का धोखा एवं कार्य करेगा, अल्लाह तआला सभी से अवगत है, इसके बावजूद, उन्हें नहीं लगता कि इस तरह वे खुद को धोखा दे रहे हैं, जैसा कि धन्य और सर्वोच्च अल्लाह ने कहा हैः (وَمَا يَخۡدَعُونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمۡ وَمَا يَشۡعُرُونَ) (जब कि वह स्वयं अपने आप को धोखा देते हैं, परंतु वह इसे समझते नहीं)। किसी व्यक्ति को यह जाने बिना कि लोगों को उसके घृणित कार्यों, विश्वासों और व्यवहार के बारे में पता है, लोगों के बीच घूमना सबसे घृणित कार्य है। वह सोचता है कि लोगों को उसकी सच्चाई जानने से बचने के लिए उसने कपड़े पहने रखे हैं, जबकि वह अपने व्यवहार और दृष्टिकोण में नग्न होता है, जिसे सर्वशक्तिमान अल्लाह लोगों को उसके बारे में कुछ समय बाद भी प्रकट करता है, या सर्वशक्तिमान अल्लाह शीघ्र ही उसकी सच्चाई का खुलासा कर देता है। जैसा कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने सूरह फातिर में कहा हैः ﴿وَلَا يَحِيقُ ٱلۡمَكۡرُ ٱلسَّيِّئُ إِلَّا بِأَهۡلِهِۦ﴾ अनुवादः (और नहीं घेरता है बुरा षड्यंत्र परंतु अपने करने वाले को ही)।

अपने व्यवहार में लोगों के विभिन्न प्रकार होते हैं, उनमें से कुछ जिद्दी और अहंकारी होते हैं ﴿سَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ ءَأَنذَرۡتَهُمۡ أَمۡ لَمۡ تُنذِرۡهُمۡ لَا يُؤۡمِنُونَ﴾ (चाहे आप उन्हें चेतावनी दें या नहीं, वे ईमान नहीं लाएगें), और कुछ धोखेबाज हैं, (يُخَٰدِعُونَ ٱللَّهَ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ) (वे अल्लाह और मोमिनों को धोखा देते हैं) और ये दो प्रकार आस्था और इस्लाम के स्तर पर हो सकते हैं, या लोगों के बीच व्यवहार के क्षेत्र में उससे कुछ कम स्तर पर हो सकते हैं। कुछ ऐसे लोग होते हैं जो जिद्दी होते हैं, और ऐसे लाखों लोग हैं जो दूसरों द्वारा स्वीकृत किए जाने के लिए प्रयास करते हैं, लेकिन वे

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 137)।

जो प्रकट करते हैं उसके विपरीत कुछ छिपाते हैं। ये दोनों ही सबसे ख़राब और सबसे अपमानजनक नैतिकताओं में से हैं।

सत्य को अस्वीकार करने वाले अहंकारी के लिए अल्लाह की सज़ा संसार और परलोक दोनों स्थान पर है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा है: (خَتَمَ ٱللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ وَعَلَىٰٓ أَبْصَٰرِهِمْ غِشَٰوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ) (अल्लाह ने उनके हृदयों और उनके कानों तथा आँखों पर मुहर लगा दी है, और उनके लिए बड़ी यातना है)।

इस महान आयतों के लाभों में से एक यह है कि ये हृदय के रोग को स्पष्ट करते हैं ﴿فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ ٱللَّهُ مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌۢ بِمَا كَانُوا۟ يَكْذِبُونَ ١٠﴾ (उन के दिलों में रोग है, जिसे अल्लाह ने और अधिक कर दिया, तथा उन के लिए झूठ बोलने के कारण दुखदायी यातना है)। उन लोगों का रसूलों को एवं जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा गया था उस को झुठलाना, ह़क़ को रद्द करना, उस में संदेह करना, इन सब कार्यों ने उन के बीमार दिल को और बीमार कर दिया, अतः इस प्रकार उसका रोग बढ़ता ही गया, अतः अल्लाह ने उन लोगों को यह दण्ड दिया कि उनके हृदय के रोग को और बढ़ा दिया, जो इस बात का लाभ देती है कि मानव उन मार्गों से बचे जो उसे सत्य को झुठलाने के मार्ग पर ले जाता है, तथा संदेह उत्पन्न करता है, वह इस प्रकार कि आदमी अल्लाह की शरण माँगे तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो कुछ उतारा गया उस का पालन कर के पनाह माँगे, तथा ये दोनों क़ुरआन एवं ह़दीस़ हैं।

जिस प्रकार एक आदमी अपने शरीर को रोग से बचाने के लिए कारण व माध्यम अपनाता है उसी प्रकार उसे अपने दिल को हृदय के रोग से बचाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए, अल्लाह हमारे दिलों को संदेह के रोग से बचा कर रखे, अल्लाह ने इस से हमें सावधान किया है, जैसाकि अल्लाह तआला ने सूरह स़फ़्फ़ में कहा हैः ﴿فَلَمَّا زَاغُوٓا۟ أَزَاغَ ٱللَّهُ قُلُوبَهُمْ﴾ (फिर जब वह टेढ़े ही रह गए तो टेढ़े कर दिए अल्लाह ने उन के दिल)। तथा जो व्यक्ति मार्गदर्शन चाहता है उस के मार्गदर्शन में वृद्धि की जाती है, जैसाकि अल्लाह तआला ने सूरह मर्यम में कहा हैः ﴿وَيَزِيدُ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ٱهْتَدَوْا۟ هُدًى﴾ (तथा अल्लाह उन्हें जो सुपथ हों मार्गदर्शन में अधिक कर देता है)।

धर्म के आदेशों का पालन करने के लाभों में से एक यह है कि अल्लाह अपने अनुयायियों की प्रार्थनाओं को सुनता और उनका उत्तर देता है, और जो कुछ उनके दिल में छिपा है, उसे प्रकट कर देता है। यह अल्लाह का वरदान है उनके लिए जो सच्चे दिल से अल्लाह

पर विश्वास रखते हैं। अल्लाह ही उन के दिलों के भीतर की बात जानता है, और जो कुछ धरती और आकाश में है, वह उस पर दृष्टि रखता है।

﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١١﴾ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشْعُرُونَ ﴿١٢﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَٰكِن لَّا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾﴾

(और जब उनसे कहा जाता है कि धरती में फसाद न करो, तो वे कहते हैं, 'हम तो बस सुधार करने वाले हैं।' सावधान हो जाओ! निस्संदेह, वही लोग फसाद फैलाने वाले हैं, लेकिन वे समझते नहीं हैं। और जब उन से कहा जाता है कि जैसे और लोग ईमान लाए तुम भी ईमान लाओ, तो कहते हैं कि क्या मूर्खों के समान हम भी विश्वास कर लें? सावधान! वही मूर्ख हैं, परंतु वह जानते नहीं)।

फिर अल्लाह ने मुनाफिकों की वास्तविक स्थिति और उनकी मनःस्थिति को प्रकट किया, जो फसाद को सुधार का नाम देते हैं ﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١١﴾﴾ (और जब उनसे कहा जाता है कि धरती में फसाद न करो, तो वे कहते हैं, 'हम तो बस सुधार करने वाले हैं'), वे अपने पाखण्ड आधारित उपद्रव को सुधार समझते हैं, तथा यह उनकी अपनी सोच होती है एवं उनके अपनी तरफ से गढ़ी हुई बात है।

तो अल्लाह तआला ने सात आसमान के ऊपर से उनके धोखे और छल को स्पष्ट कर दिया ﴿أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشْعُرُونَ ﴿١٢﴾﴾ (सावधान हो जाओ! निस्संदेह, वही लोग फसाद फैलाने वाले हैं, लेकिन वे समझते नहीं हैं), ये लोग वास्तव में फसाद फैलाने वाले लोग हैं, किंतु उन्हें इस का भान नहीं होता अपने अहंकार, कुफ़्र, घमण्ड एवं द्वेष के कारण, अतः वे यह समझते हैं कि वे जो कर रहे हैं वही ठीक एवं सही है।

इस आयत के लाभों में से यह है कि जिद्दी व्यक्ति उस पर विचार नहीं करता, जिस पर चर्चा हो रही है। वह केवल यह सोचता है कि उसे अपने तर्कों का प्रतिकार कैसे करना है। जब उनसे कहा गया, ﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ﴾ (धरती में बिगाड़ न डालो), क्योंकि उनके कामों में मुनाफिकत, कुफ़्र, गुनाह और मोमिनों के रहस्यों को दुश्मनों को बताना शामिल है, तो उन्होंने कहा, ﴿إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ﴾ (हम तो सुधारक हैं), यह उनके द्वारा की जा रही बुराइयों को सुधार का रंग देने का तरीका था।

इस का एक लाभ यह भी है कि मुनाफिक और जिद्दी व्यक्ति अपने बुरे कर्मों का बोध नहीं रखता, बल्कि उसे इस प्रकार से सही ठहराता है कि वह खुद को ही सही मानने का भ्रम पैदा कर लेता है। उसे यह अहसास नहीं होता कि उसके कृत्य और उसकी बुराइयों का पर्दाफाश हो चुका है। वह अपने झूठ में छिपा रहता है, यह सोचते हुए कि उसकी मुनाफकत और धूर्तता छिपी हुई हैं, जबकि उसकी बुराई और पाखंड नेक और सच्चे लोगों के लिए स्पष्ट और उजागर होती हैं।

इसके लाभों में से यह भी है कि एक सुधारक की विशेषताओं में सुनना, ध्यान देना, विचार और चिंतन शामिल हैं, ताकि वह सच्चाई और सुधार का सही मार्ग पहचान सके और उस पर काम कर सके। एक सच्चे आस्थावान व्यक्ति को सुधार की सच्चाई पर जिद नहीं करनी चाहिए, बल्कि उसे स्वीकार करना चाहिए, वह जानता है कि बुराई सुधार के खिलाफ है, चाहे यह बुराई आस्था, उपासना, नैतिकता, या सामाजिक, पेशेवर और पारिवारिक व्यवहार में हो, वह इसे नहीं अपनाता, बल्कि सच्चाई के मार्ग पर चलकर इससे बचता है, और इसमें किसी प्रकार की जिद या अहंकार नहीं करता।

जमीन का बिगाड़ सिर्फ उसकी मिट्टी, पानी और हवा को नुकसान पहुँचाना नहीं है, बल्कि यह उन पापों से भी होता है जो अल्लाह तआला के गुस्से को भड़काते हैं। जब जमीन पापों से भ्रष्ट हो जाती है, तो अल्लाह उन्हें उनके बुरे कर्मों की सजा देता है। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरह अल-आराफ़ में फ़रमाया: ﴿وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٦﴾﴾ (और अगर बस्ती वाले ईमान लाते और तक़्वा अपनाते, तो हम उनके ऊपर आसमान से और ज़मीन से बरकतों के दरवाजे खोल देते, लेकिन उन्होंने झुठलाया, तो हमने उनके कर्मों की सजा दी)।

इसी तरह जिद्दी और मुनाफिक सुधार को मूर्खता और पागलपन कहता है ﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ﴾ (और जब उनसे कहा गया, जैसा लोग ईमान लाए हैं, वैसे ही तुम भी ईमान लाओ, तो वे कहते हैं: क्या हम भी उसी तरह ईमान लाएं जैसे मूर्ख लोग ईमान लाए हैं?) उन्होंने सच्चे ईमान वालों और सुधारकों को मूर्ख कहा, जबकि मूर्ख वह है जिसका दिमाग हल्का हो और जो सही तरीके से व्यवहार और योजना बनाने में असमर्थ हो। वे अहंकार का प्रदर्शन करते हुए यह बात प्रश्न के रूप में कहते हैं ﴿أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ﴾ (क्या हम भी उसी तरह ईमान लाएं जैसे मूर्ख लोग ईमान लाए हैं?) इस प्रकार उनके दिलों और दिमागों में यह जम गया कि वे ही सही हैं और ईमान वाले मूर्ख एवं भ्रष्ट हैं। यह इस बात का संकेत है कि जिनके दिल और दिमाग अंधकार में डूब गए हैं, वे अपनी बुराई को सुधार और प्रगति मानते हैं, झूठे और धोखा देने वाले बहानों के साथ। यह दर्शाता है कि बहस और विचार-विमर्श में

स्पष्टता और सावधानी की अहमियत कितनी है, ताकि दूसरे की बातों को सही तरीके से समझा जा सके और मुनाफिकों और जिद्दी लोगों के गलत आचरण से बचा जा सके।

जिद्दी और विरोधी व्यक्ति अपनी सही बात को मूर्खता, अज्ञानता और भ्रष्टता से सम्बोधित करता है, जबकि उसे अपने ही बुरे कर्म और विचारों का बोध नहीं होता। यह उसके घमंड और कुफ्र के कारण होता है ﴿أَلَآ إِنَّهُمۡ هُمُ ٱلسُّفَهَآءُ وَلَٰكِن لَّا يَعۡلَمُونَ﴾ (देखो, वे ही मूर्ख हैं, परंतु वे जानते नहीं हैं)।

अल्लाह तआला ने उन्हें जवाब दिया कि वे ही असली मूर्ख हैं: ﴿أَلَآ إِنَّهُمۡ هُمُ ٱلسُّفَهَآءُ﴾ (देखो, वे ही मूर्ख हैं)। अल्लाह ने उन्हें यह भी कहा कि वे यह नहीं जानते कि वे मूर्ख हैं: ﴿وَلَٰكِن لَّا يَعۡلَمُونَ﴾ (लेकिन वे यह नहीं जानते), और उनके धोखेबाज़ एवं भ्रष्ट आचरण के बारे में अल्लाह तआला ने यह नहीं कहा कि वे नहीं जानते, बल्कि यह कहा कि वे इस बात का एहसास नहीं करते कि वे खुद को धोखा दे रहे हैं और वे भ्रष्ट हैं: ﴿وَمَا يَخۡدَعُونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمۡ وَمَا يَشۡعُرُونَ﴾ (वे अपने आप को ही धोखा दे रहे हैं, लेकिन वे इसका एहसास नहीं करते)।

क़ुरआन की यह शैली भाषा की बारीकी और साहित्यिक गहराई को दर्शाती है, जो वर्णन और वर्णित वस्तु के बीच गहरे और सटीक संबंध तथा सूक्ष्म अंतर को दर्शाती है। यह इस सूक्ष्म अंतर को उजागर करती है कि "अहसास न होना" और "ज्ञान न होना" में क्या फर्क है। क्योंकि "सफ़ाहत" (मूर्खता) का अर्थ है, अक्ल का हल्कापन और योजना बनाने या सही निर्णय लेने की क्षमता का अभाव। इसलिए, उनके कार्यों का सबसे सटीक वर्णन "ज्ञान न होना" है, क्योंकि वे उस कारण से वंचित हैं, जो समझदारी और सोचने की योग्यता प्रदान करता है। उनके कार्य ऐसे व्यक्ति के कार्यों के समान हैं, जो हिदायत पाने की समझ रखने वाली अक्ल से वंचित है, और यह उनके मूर्ख स्वभाव के कारण है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे उस बुनियादी समझ से वंचित हैं, जो उनके ऊपर दायित्व और ज़िम्मेदारी लागू होने का आधार बनती है, जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरह अल-मुल्क में फ़रमाया है: ﴿وَقَالُواْ لَوۡ كُنَّا نَسۡمَعُ أَوۡ نَعۡقِلُ مَا كُنَّا فِيٓ أَصۡحَٰبِ ٱلسَّعِيرِ ۝١٠﴾ (उन्होंने कहा: अगर हम सुनते या समझते होते, तो हम दहकती आग वालों में न होते)। उनकी कमी सही बोध की कमी से सम्बंधित है, न कि आदेश का कारण बनने वाली बोध की कमी से। और बोध का सम्बन्ध समझ और महसूस करने की क्षमता से है।

वे इस भ्रम में रहते हैं कि वे अपने मुनाफिकत वाले धोखे से दूसरों को धोखा दे रहे हैं, परंतु वे इस बात का एहसास नहीं रखते कि वे स्वयं भ्रष्ट हैं। वे अपने धोखे और भ्रष्टाचार में लगातार बढ़ते रहते हैं, और वे इस बात का एहसास नहीं कर पाते कि उनके धोखे और भ्रष्टाचार

को अन्य लोग समझ चुके हैं। यह उन लोगों की सबसे बुरी स्थिति है, हम इस से अल्लाह की पनाह मांगते हैं, कि व्यक्ति अपनी भ्रष्टता और धोखे के प्रति संवेदनशीलता खो दे। वह धोखा देता है और भ्रष्ट कार्य करता है, यह मानते हुए कि वह बुद्धिमान और चतुर है, जबकि वास्तव में उसका धोखा और भ्रष्टाचार स्पष्ट है।

जब मुनाफिक और जिद्दी लोग ईमान वालों को मूर्ख कहते हैं, ﴿أَنُؤۡمِنُ كَمَآ ءَامَنَ ٱلسُّفَهَآءُۗ﴾ (क्या हम भी उसी तरह ईमान लाएं जैसे मूर्ख लोग ईमान लाए हैं?) तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि सत्य, भलाई, और सुधार और उनके समर्थकों को इसी तरह की विशेषणों से सम्बोधित किया जाता है, चाहे वह किसी भी युग और समय में हो, जैसे झुठलाने वाले और द्वेष करने वाले करते हैं। इसलिए, ईमान वाले को चाहिए कि वह अपने आप को इस बात के लिए तैयार रखे कि वह अपने धर्म के दुश्मनों से नफरत भरी बातें सुनेगा, और उसे समझदारी से उनसे निपटना चाहिए। उसे इस बात के लिए भी तैयार रहना चाहिए कि जब वह झूठे आरोप सुने, तो वह समझदारी से निपटे। क्योंकि यह मानव समाज में अच्छे और बुरे के बीच के अंतर की वास्तविकता है। अल्लाह अपनी शक्ति से उनके निफ़ाक़ और कुफ़्र को विनाश में बदल सकता है, लेकिन उसकी बुद्धिमानी और सहनशीलता ने उसकी रचनाओं के साथ उसकी योजनाओं को इस तरह संचालित किया है।

﴿وَإِذَا لَقُواْ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ قَالُوٓاْ ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَوۡاْ إِلَىٰ شَيَٰطِينِهِمۡ قَالُوٓاْ إِنَّا مَعَكُمۡ إِنَّمَا نَحۡنُ مُسۡتَهۡزِءُونَ ١٤ ٱللَّهُ
يَسۡتَهۡزِئُ بِهِمۡ وَيَمُدُّهُمۡ فِي طُغۡيَٰنِهِمۡ يَعۡمَهُونَ ١٥﴾

(तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए, और जब अकेले में अपने शैतानों (प्रमुखों) के साथ होते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो मात्र परिहास कर रहे हैं। अल्लाह उन से परिहास कर रहा है, तथा उन्हें उन के कुकर्मों में बहकने का अवसर दे रहा है)।

क़ुरआन की महानता यह बताती है कि मुनाफिकों का धोखा कैसा है: ﴿وَإِذَا لَقُواْ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ قَالُوٓاْ ءَامَنَّا﴾ (जब वे ईमान वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं: 'हम ईमान लाए'), ﴿وَإِذَا خَلَوۡاْ إِلَىٰ شَيَٰطِينِهِمۡ قَالُوٓاْ إِنَّا مَعَكُمۡ إِنَّمَا نَحۡنُ مُسۡتَهۡزِءُونَ﴾ (और जब वे अपने शैतानों के साथ अकेले होते हैं, तो कहते हैं: 'हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो केवल मजाक कर रहे हैं)। जब वे अपने शैतानों के पास वापस जाते हैं और उनसे अकेले में मिलते हैं, तो वे ईमान वालों से बरी हो जाते हैं और अपने शैतानों के प्रति वफादारी जताते हैं, चाहे वे उनके नेता हों या जिन्नात अथवा ज्योतिषी। 'शैतान' शब्द का अर्थ दूर होना है, जो ईमान और भलाई से दूर होने वाले सभी व्यक्तियों को अपने अंदर

समाहित किए हुआ है। बाकी अल्लाह ही बेहतर जानता है।[1] यह क़ुरआन की भाषा की बारीकी है कि एक शब्द में कई अर्थ समाहित होते हैं। (شَيَٰطِينِهِمۡ) शब्द ने उन सभी व्यक्तियों को समाहित कर लिया है जो शैतानों के कृत्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

क़ुरआन की एक और सूक्ष्मता यह है कि उसने ईमान वालों से उनकी मुलाकात को 'लिक़ा' (मुलाकात) कहा, जबकि शैतानों के साथ उनकी मुलाकात को 'ख़ल्वत' (अकेलापन) कहा ﴿وَإِذَا لَقُواْ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ﴾ (और जब वे ईमान वालों से मिलते हैं), ﴿وَإِذَا خَلَوۡاْ إِلَىٰ شَيَٰطِينِهِمۡ﴾ (और जब वे अपने शैतानों के साथ अकेले होते हैं), यह दर्शाता है कि ईमान वालों की स्थिति स्पष्ट है और उनमें कोई छुपाव नहीं है, उनके पास गोपनीय शत्रुता नहीं होती है, उनकी मुलाकातें खुल्लम-खुल्ला होती हैं, परंतु जब ये लोग अपने शैतानों से मिलते हैं, तो वे एकांत में यह सुनिश्चित करते हैं कि कोई भी उनके साथ न हो या उन्हें न देखे, विशेषकर कोई भी मोमिन व्यक्ति। यह स्पष्ट रूप से उनकी दोगली प्रवृत्ति को दर्शाता है, और यह क़ुरआन के महान स्पष्ट भाषा शास्त्र और सूक्ष्म अभिव्यक्ति की सटीकता को प्रकट करता है।

इन पवित्र आयतों से यह ज्ञात होता है कि कपटी लोगों का व्यवहार एक स्थापित सिद्धांत पर आधारित है। यह सिद्धांत यह है कि वे बाहरी रूप में मोमिनों से सहमति दिखाते हैं, लेकिन अंदरूनी तौर पर उनका विरोध करते हैं तथा उनसे शत्रुता रखते हैं, और गुप्त रूप से मोमिनों के दुश्मनों के साथ खड़े रहते हैं। यह आवश्यक बनाता है कि ऐसे लोगों से सावधान और सतर्क रहा जाए, क्योंकि उनकी सहमति की जो भी ऊपरी झलकियां दिखती हैं, वे छल-कपट से बाहर नहीं होतीं। जो व्यक्ति अल्लाह को धोखा देने की कोशिश करता है, वह दूसरों को धोखा देने में कहीं अधिक माहिर और सफल होगा।

यह तरीका, शैतानी तरीका है, जैसा कि अल्लाह तआला ने उनके बारे में कहा है: ﴿وَإِذَا خَلَوۡاْ إِلَىٰ شَيَٰطِينِهِمۡ قَالُوٓاْ إِنَّا مَعَكُمۡ﴾ (और जब वे अपने शैतानों के पास अकेले होते हैं तो कहते हैं, हम तुम्हारे साथ हैं)। अल्लाह ने उन्हें उनके कर्मों के आधार पर वर्णित किया है, जिससे यह पता चलता है कि इंसान को उसके आचरण और स्वभाव से वर्णित किया जाता है। अल्लाह ने उन लोगों को शैतान कहा है जिनके पास वे जाते हैं, क्योंकि उनका तरीका शैतानी है। यह अल्लाह की ओर से उनका खुलासा है ताकि मोमिन सत्य को स्पष्ट रूप से जान सकें और उन लोगों से सावधान रहें जिनका तरीका पाखंड है। इस प्रकार मोमिन इस शैतानी तरीके से दूर रह सकता है, जैसा कि ह़दीस़ में चेतावनी दी गई है, दो-मुंह वाले व्यक्ति के बारे में, जो एक समूह के पास एक चेहरे से जाता है और दूसरे समूह के पास दूसरे चेहरे से। पैग़ंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु

(2) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 145)।

अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैः "तुम सबसे बुरा उन लोगों को पाओगे, जो दो चेहरे वाले होते हैं, जो एक समूह के पास एक चेहरे से जाते हैं और दूसरे समूह के पास दूसरे चेहरे से"[1]। यह वह व्यक्ति होता है जो प्रत्येक दल से वह बात कहता है जो उन्हें प्रसन्न करे।

इस के लाभों में से एक यह है कि औचित्य और कारण हर भटकाव के साथ रहते हैं, ताकि गुमराह व्यक्ति अपने लिए और दूसरों के लिए अपने भ्रष्टाचार और गुमराही को उचित ठहरा सके ﴿وَإِذَا خَلَوْاْ إِلَىٰ شَيَٰطِينِهِمْ قَالُوٓاْ إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُونَ﴾ (तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए, और जब अकेले में अपने शैतानों (प्रमुखों) के साथ होते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो मात्र परिहास कर रहे हैं), तो मुनाफिकों ने अपने शैतानों से कहा और औचित्य प्रस्तुत किया कि उनका ईमानवालों के साथ व्यवहार केवल मज़ाक और उपहास के लिए है, जबकि वे अपने शैतानों के साथ मित्रता, सहायता और समूह में हैं। लेकिन अल्लाह तआला उनकी स्थिति को जानता है और उन्हें तुरंत दंडित नहीं करता, क्योंकि अल्लाह तआला सहनशील है। वह उन्हें उनके विद्रोह में ढील देता है और फिर उन्हें शक्तिशाली और सक्षम होकर पकड़ लेता है। जैसा कि अल्लाह ने कहा हैः ﴿ٱللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَٰنِهِمْ يَعْمَهُونَ ١٥﴾ (अल्लाह उन से परिहास कर रहा है, तथा उन्हें उन के कुकर्मों में बहकने का अवसर दे रहा है), अर्थात, वह उनसे बदला लेता है, उन्हें दंडित करता है और उनका मज़ाक उड़ाता है, और उनके उपहास का बदला देता है। उसने दंड को पाप का नाम दिया है, यह विद्वानों के बीच आम तौर पर स्वीकार्य मत है।[2]

यह सिखाता है कि एक मुसलमान को सतर्क रहना चाहिए और इस बात से धोखा नहीं खाना चाहिए कि अल्लाह तआला अत्याचारी को उसके अत्याचार में ढील देता है। साथ ही, उन्हें यह भी नहीं सोचना चाहिए कि जालिमों को नष्ट करने और उन पर विजय प्राप्त करने के लिए अल्लाह से तुरंत कार्रवाई की अपेक्षा करें, जैसा कि अल्लाह ने सूरह आले-इमरान में कहा है: ﴿لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ فِي ٱلْبِلَٰدِ ١٩٦ مَتَٰعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ ٱلْمِهَادُ ١٩٧﴾ काफिरों का धरती में इधर-उधर घूमना तुम्हें धोखा न दे। यह तो बस थोड़े समय का लाभ है, फिर उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है)।

इसी प्रकार, पाप के संदर्भ में भी, अल्लाह तआला के दंड से सावधान रहना चाहिए। पापी को यह सोचकर धोखा नहीं खाना चाहिए कि अल्लाह उसे उसकी गलतियों पर तुरंत सजा नहीं देता, और इसलिए वह अपने पापों में डूबा रहे।

(2) बुख़ारी (2/ 503) संख्या (3494)।

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 145)।

अल्लाह तआला सहनशील है, लेकिन जब वह पकड़ता है तो शक्तिशाली और समर्थ के रूप में पकड़ता है। इसलिए, एक सच्चा ईमानवाला यह समझता है कि अत्याचारी और पापी को दंड देने में जो देरी हो रही है, वह अल्लाह की योजना का हिस्सा है। पापी पर अल्लाह का ढील देना, उसे चेतने तथा संभल जाने हेतु अवसर प्रदान करना है।

﴿ أُولَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ٱشۡتَرَوُاْ ٱلضَّلَٰلَةَ بِٱلۡهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت تِّجَٰرَتُهُمۡ وَمَا كَانُواْ مُهۡتَدِينَ ﴿١٦﴾ مَثَلُهُمۡ كَمَثَلِ ٱلَّذِي
ٱسۡتَوۡقَدَ نَارٗا فَلَمَّآ أَضَآءَتۡ مَا حَوۡلَهُۥ ذَهَبَ ٱللَّهُ بِنُورِهِمۡ وَتَرَكَهُمۡ فِي ظُلُمَٰتٖ لَّا يُبۡصِرُونَ ﴿١٧﴾ صُمُّۢ بُكۡمٌ عُمۡيٞ فَهُمۡ لَا يَرۡجِعُونَ
﴿١٨﴾ أَوۡ كَصَيِّبٖ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ فِيهِ ظُلُمَٰتٞ وَرَعۡدٞ وَبَرۡقٞ يَجۡعَلُونَ أَصَٰبِعَهُمۡ فِيٓ ءَاذَانِهِم مِّنَ ٱلصَّوَٰعِقِ حَذَرَ ٱلۡمَوۡتِۚ وَٱللَّهُ مُحِيطُۢ
بِٱلۡكَٰفِرِينَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ ٱلۡبَرۡقُ يَخۡطَفُ أَبۡصَٰرَهُمۡۖ كُلَّمَآ أَضَآءَ لَهُم مَّشَوۡاْ فِيهِ وَإِذَآ أَظۡلَمَ عَلَيۡهِمۡ قَامُواْۚ وَلَوۡ شَآءَ ٱللَّهُ لَذَهَبَ
بِسَمۡعِهِمۡ وَأَبۡصَٰرِهِمۡۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ﴿٢٠﴾ ﴾ [سورة البقرة:١٦-٢٠].

(यह वे लोग हैं जिन्होंने सीधी डगर (सुपथ) के बदले गुमराही (कुपथ) खरीद ली। परंतु उन के व्यापार में लाभ नहीं हुआ, और न उन्होंने सीधी डगर पाई। उन की दशा उन के जैसी है, जिन्होंने अग्नि सुलगाई, और जब उन के आस-पास उजाला हो गया, तो अल्लाह ने उन का उजाला छीन लिया, तथा उन्हें ऐसे अंधेरे में छोड़ दिया जिन में उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता। वह गूँगे, बहरे, अंधे हैं, अतः अब वह लौटने वाले नहीं। अथवा (उन की दशा) आकाश की वर्षा के समान है, जिस में अंधेरे और कड़क तथा विद्युत हो, वह कड़क के कारण मृत्यु के भय से अपने कानों में उंगलियां डाल लेते हैं, और अल्लाह काफ़िरों को अपने नियंत्रण में लिए हुए है। विद्युत उन की आँखों को उचक लेने के समीप हो जाती है, जब उन के लिए चमकती है तो उस के उजाले में चलने लगते हैं, और जब अंधेरा हो जाता है तो खड़े रह जाते हैं, और यदि अल्लाह चाहे तो उन के कानों को बहरा, और उन की आँखों को अंधा कर दे, निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है)।

फिर पवित्र क़ुरआन का संदर्भ उनका वर्णन करने तथा उनके हालात को स्पष्ट करने की ओर जाता है, ﴿ أُولَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ٱشۡتَرَوُاْ ٱلضَّلَٰلَةَ بِٱلۡهُدَىٰ ﴾ अर्थात (वे लोग जिन्होंने सीधी डगर (सुपथ) के बदले गुमराही (कुपथ) खरीद ली)। तो ऐसे लोगों ने हिदायत (मार्गदर्शन) के ऊपर गुमराही को वरीयता दी, तथा हिदायत को गुमराही की कीमत के रूप में चुकाया। उनकी इस स्थिति का जो सटीक वर्णन किया गया है, उसमें उनकी करतूत को गुमराही ख़रीदने के रूप में चित्रित किया गया है और हिदायत को ख़रीदारी का मूल्य बताया गया है। तो इसके बाद कौन सा बड़ा घाटा हो सकता है? और इस मूर्खता के बाद कौन सी बड़ी मूर्खता हो सकती है? ख़रीदारी का अर्थ है मूल्य का भुगतान करना, और मूल्य उसी का दिया जाता है जिसे इंसान पसंद करता है। और जो दिया जा रहा है, या जिसके बदले ख़रीदा जा रहा है, वह ख़रीदार की नज़र में सस्ता और कम

मूल्यवान होता है। इस प्रकार, यह दर्शाता है कि दुनिया और आख़िरत (परलोक) दोनों में होने वाले विनाशकारी घाटे का स्तर कितना अधिक है। फिर अल्लाह ने इस व्यापार का परिणाम बताया: ﴿فَمَا رَبِحَت تِّجَٰرَتُهُمۡ﴾ (तो उनका व्यापार लाभकारी नहीं हुआ), यह एक घाटे वाला व्यापार है, क्योंकि उनके इस कार्य में ऐसी हिदायत नहीं थी जो उन्हें ईमान को ख़रीदने में सक्षम बना सके। इसके विपरीत, ईमान वाले लोग अल्लाह के साथ अपने व्यापार में लाभ उठाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि विवरण और उसकी सटीकता शिक्षा, मार्गदर्शन, और निर्देशन में कितना महत्वपूर्ण है। साथ ही, विचारों की सही और सजीव अभिव्यक्ति के लिए अर्थों का चित्रात्मक और सटीक चयन कितना उपयोगी होता है।

फिर अल्लाह तआला ने पाखंडी (मुनाफ़िकों) की स्थिति को समझाने के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया: ﴿مَثَلُهُمۡ كَمَثَلِ ٱلَّذِي ٱسۡتَوۡقَدَ نَارٗا فَلَمَّآ أَضَآءَتۡ مَا حَوۡلَهُۥ ذَهَبَ ٱللَّهُ بِنُورِهِمۡ وَتَرَكَهُمۡ فِي ظُلُمَٰتٖ لَّا يُبۡصِرُونَ﴾ (उन की दशा उन के जैसी है, जिन्होंने अग्नि सुलगाई, और जब उन के आस-पास उजाला हो गया, तो अल्लाह ने उन का उजाला छीन लिया, तथा उन्हें ऐसे अंधेरे में छोड़ दिया जिन में उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता)।

अल्लाह ने पाखंडी लोगों की स्थिति को इस प्रकार एक उदाहरण के माध्यम से समझाया, ताकि जो भी सत्य और मार्गदर्शन चाहता है, वह उससे सबक ले। उदाहरण प्रस्तुत करना, ज्ञान और समझ को स्पष्ट करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह सत्य और स्थिति को इस तरह से व्यक्त करता है कि उसे पूरी तरह और स्पष्टता से समझा जा सके। अल्लामा अल-बैज़ावी रहमतुल्लाहि अलैह ने कहा है: "यह हृदय पर अधिक प्रभाव डालता है और विरोधी को अधिक समाप्त करने वाला होता है"।[1]

मुनाफ़िकों (पाखंडियों) का उदाहरण उन लोगों जैसा है जो कुफ़्र (अधर्म) के अंधकार में थे, जैसे कोई व्यक्ति घने अंधकार में हो और उसने आग जलाई ताकि उसकी रौशनी से उस अंधेरी रात के अंधकार को दूर कर सके जिसमें वह फंसा हुआ है। फिर उसने वह प्राप्त किया जिसकी उसे तलाश थी, तथा वह अल्लाह का धर्म (इस्लाम) है, जो कुफ़्र के अंधकार को हर क्षेत्र में दूर कर देता है, चाहे वह अक़ीदा (आस्था), इबादत, नैतिकता या जीवन के अन्य मामलों से संबंधित हो। उन्होंने अल्लाह के धर्म से उसी प्रकार लाभ उठाया, जैसे आग की रौशनी से लाभ मिलता है। उन्होंने इस धर्म की सच्चाई को उसके नूर (प्रकाश) के माध्यम से जाना, जैसे आग की रौशनी से वस्तुओं की वास्तविकता को देखा जाता है, परंतु उनकी इच्छाओं और शंकाओं ने उन पर काबू पा लिया, और उन्होंने ईमान (विश्वास) के बदले निफ़ाक़ (पाखंड) को

(1) अनवार उल तन्ज़ील व असरार उल तावील, लेखकः अल-बैज़ावी (1/ 30)।

अपना लिया। नतीजतन, अल्लाह ने उनका नूर उनसे छीन लिया, जैसे उस आग की रौशनी बुझा दी जाती है जो वे जलाते थे, इसके बाद, कुफ़्र के अंधकार ने उन्हें घेर लिया, तो उनकी स्थिति इस प्रकार हो गई: ﴿صُمٌّۢ بُكۡمٌ عُمۡيٞ فَهُمۡ لَا يَرۡجِعُونَ﴾ (वह गूँगे, बहरे, अंधे हैं, अतः अब वह लौटने वाले नहीं)। इसका अर्थ यह है कि वे उस स्थान और ईमान की स्थिति पर वापस नहीं लौट सकते जहाँ वे पहले थे। अंधकार ने उनकी दृष्टि छीन ली है, वे कुछ नहीं देख सकते। गूंगे होने के कारण वे कुछ बोल भी नहीं सकते ताकि कोई उनकी बात सुन सके। इस प्रकार, वे अपनी पिछली स्थिति एवं ईमान की ओर लौटने में पूरी तरह असमर्थ हो गए। मुनाफ़िकों का यही हाल है, जो उन्होंने ईमान के बदले कुफ़्र और निफ़ाक़ को अपनाकर चुना, और उनका कुफ़्र तथा उनका शैतानों से मोहब्बत, उन लोगों की स्थिति के समान है जिनके बारे में यह उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

अल्लाह तआला के इस कथन ﴿كَمَثَلِ ٱلَّذِي ٱسۡتَوۡقَدَ نَارٗا﴾ (-उन की दशा- उन के जैसी है, जिन्होंने अग्नि सुलगाई) में (اسْتَوْقَدَ) का अर्थ है (أَوْقَدَ) "आग जलाना"। यहां (اسْتَوْقَدَ) "जिसने आग जलाई" एकवचन में आया है, जबकि आगे (ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ) "तो अल्लाह ने उनका नूर छीन लिया", बहुवचन में आया है, इमाम क़ुर्तुबी रहमतुल्लाहि अलैह ने इसका कारण यह बताया है किः आग जलाने वाला एक व्यक्ति था, जिसने समूह के लिए आग जलाई थी, तथा जब रोशनी समाप्त हो गई, तो उसका प्रभाव पूरे समूह पर पड़ा।[1] यह शैली अधिक स्पष्ट और प्रभावी है, विशेष रूप से बात की सटीकता और अनुशासन को दर्शाने में। क़ुरआन की भाषा में यह गहराई और सटीकता का उत्कृष्ट उदाहरण है। अर्थों की सूक्ष्मताओं में से एक वह है जिसका उल्लेख इमाम इब्न -ए- कसीर रहमतुल्लाहि अलैह ने अल्लाह तआला के इस कथन (ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ) (अल्लाह ने उनका नूर छीन लिया) के बारे में किया है कि इस से अभिप्राय है, अल्लाह ने उनसे वह चीज़ छीन ली जो उनके लिए लाभकारी थी अर्थात नूर (प्रकाश), लेकिन उनके लिए जो हानिकारक था जैसे जलन और धुआं उसे छोड़ दिया। अल्लाह के इस कथनः (وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ) (और उन्हें अंधेरों में छोड़ दिया) का अर्थ है कि वे संदेह, कुफ़्र, और निफ़ाक़ के अंधकार में हैं। (لَا يُبْصِرُونَ) (वे नहीं देखते) का मतलब है कि वे भलाई के रास्ते की ओर मार्गदर्शन प्राप्त नहीं कर सकते और न ही उसे पहचान सकते हैं। इसके साथ ही (صُمٌّ) (वे बहरे हैं) का अर्थ है कि वे भलाई की बातें नहीं सुनते। (بُكْمٌ) (वे गूंगे हैं) का मतलब है कि वे अपने लिए लाभदायक बातें नहीं बोलते। (عُمْيٌ) (वे अंधे हैं) का मतलब है

(2) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 148)।

कि वे भटकाव और अंधेपन की स्थिति में हैं, जिससे उनकी अंतर्दृष्टि पूरी तरह क्षीण हो चुकी है।[1]

इससे यह शिक्षा मिलती है कि जो व्यक्ति ईमान के नूर (प्रकाश) को जानता है, उसे चाहिए कि वह इस उदाहरण से लाभ उठाए और इस नूर को अपने दिल, कर्म, और इंद्रियों में सुरक्षित रखे। इसे वह इबादत (उपासना) और आज्ञापालन के माध्यम से संरक्षित करे और उन कारणों से बचे, जो ईमान की कमजोरी और उसके क्षय का कारण बनते हैं, ताकि वह ईमान के प्रकाश को न खो दे, जैसा कि अहंकारी मुनाफ़िक़ (पाखंडी) ने खो दिया। ईमान का नूर बुझना उसी प्रकार है जैसे आग का प्रकाश बुझ जाना। जब यह नूर बुझ जाता है, तो शैतान, जो अलग-अलग रूपों और भटकाने की अलग-अलग रणनीतियों में माहिर है, उसे अपनी ओर खींच लेता है। इसके साथ ही, इंसान को खुद पर गर्व (अहंकार) करने से बचना चाहिए, क्योंकि यह घमंड की ओर ले जाता है। यह भी आवश्यक है कि वह अन्य ईमान वालों की इबादत और उनके ईमान में कमियाँ निकालने से बचे। उन्हें अज्ञानता के कारण हंसी का पात्र न बनाए। इसके बजाय, उसे इस बात पर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए कि वह सही रास्ते पर है और अन्य लोगों को समझाने, उनकी मदद करने और शिक्षा देने का प्रयास करना चाहिए, बिना उन्हें नीचा दिखाए। इसी प्रकार, किसी को भी अपनी ईमानदारी, इबादत, या अन्य किसी भी अच्छाई पर घमंड नहीं करना चाहिए, जो अल्लाह ने उसे प्रदान किया है। उसे यह समझना चाहिए कि यह सब अल्लाह की ओर से है, न कि उसकी अपनी शक्ति या प्रयास का परिणाम है। साथ ही, अल्लाह की दी हुई नेमतों (अनुकंपाओं) को गुनाहों (पापों) में बदलने से बचना चाहिए, क्योंकि यह अल्लाह के गुस्से का कारण बनता है।

फिर अल्लाह तआला एक और उदाहरण प्रस्तुत करता है उस पाखंडी के लिए जो सत्य (ह़क़) की आवाज़ और अल्लाह की आयतों को सुनने से घृणा करता है: ﴿أَوۡ كَصَيِّبٖ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ فِيهِ ظُلُمَٰتٞ وَرَعۡدٞ وَبَرۡقٞ يَجۡعَلُونَ أَصَٰبِعَهُمۡ فِيٓ ءَاذَانِهِم مِّنَ ٱلصَّوَٰعِقِ حَذَرَ ٱلۡمَوۡتِۚ وَٱللَّهُ مُحِيطُۢ بِٱلۡكَٰفِرِينَ﴾ (अथवा (उन की दशा) आकाश की वर्षा के समान है, जिस में अंधेरे और कड़क तथा विद्युत हो, वह कड़क के कारण मृत्यु के भय से अपने कानों में उंगलियां डाल लेते हैं, और अल्लाह काफ़िरों को अपने नियंत्रण में लिए हुए है)।

तो उनका उदाहरण, जो अल्लाह की आयतों से मुंह मोड़ते हैं और सत्य (ह़क़) की आवाज़ सुनने से भागते हैं, उस व्यक्ति के समान है जिस पर ऐसा बारिश वाला तूफ़ान आ पड़ा हो जिसमें रात का अंधेरा, बादलों का अंधकार, बारिश की छाया, गर्जन की आवाज़ और बिजली की चमक शामिल हो। वह इन सब से भयभीत हो जाता है। इसी प्रकार, जब वह

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 56)।

अल्लाह की आयतें सुनता है, तो वह उससे डर जाता है, जैसे कोई मौत के डर से अपनी उंगलियां अपने कानों में डाल लेता है।[1] और अल्लाह इनकार करने वालों को हर ओर से घेरने वाला है। जैसाकि अल्लाह तआला ने कहा है: ﴿وَٱللَّهُ مُحِيطُۢ بِٱلۡكَٰفِرِينَ﴾ (और अल्लाह काफ़िरों को अपने नियंत्रण में लिए हुए है)। इसका अर्थ यह है कि उनमें से कोई भी अल्लाह से बच नहीं सकता। अल्लाह उन्हें क़यामत के दिन एकत्र करेगा। (الإحاطة, अल-एहातह) का एक अर्थ (الإهلاك, अल-इहलाक) विनाश भी होता है, जैसाकि क़ुरआन में है: ﴿وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِۦ﴾ (अंततः उस के फलों को घेर लिया गया) अर्थातः नष्ट कर दिया गया।[2] यह शब्द (الإحاطة, अल-एहातह) अल्लाह के सर्वज्ञानी एवं सर्वशक्तिमान होने को भी दर्शाता है, तथा सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह जो चाहता है (वही होता है) जिससे वे किसी भी दिशा से बच नहीं सकते। यह इस बात की ओर भी इशारा करता है कि अल्लाह की आयतें सुनने पर वे जिस भय और आतंक का अनुभव करते हैं, वह उनके कुफ़्र (अधर्म) की स्थिति के कारण है, जिसके लिए अल्लाह ने काफ़िरों को चेतावनी दी है।

यह इस बात का भी संकेत देता है कि ईमान, दृष्टि, श्रवण और अन्य अनुकंपाओं (नेमतों) की सराहना और संरक्षण आवश्यक है, ताकि इन्हें छीना न जाए और व्यक्ति इनसे वंचित न हो जाए। इन नेमतों को उसी उद्देश्य के लिए उपयोग करना चाहिए जिसके लिए वे बनाई गई हैं। यहां केवल शारीरिक रूप से इन नेमतों के खोने का संकेत नहीं है, बल्कि यह भी है कि यदि इन्हें सत्य की ओर से उपेक्षित किया गया या उससे मुंह मोड़ा गया, तो वे अर्थहीन हो जाएंगी।

जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: ﴿فَأَصَمَّهُمۡ وَأَعۡمَىٰٓ أَبۡصَٰرَهُمۡ﴾ (तो अल्लाह ने उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आंखें अंधी कर दीं)। ﴿أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ طَبَعَ ٱللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمۡ وَسَمۡعِهِمۡ وَأَبۡصَٰرِهِمۡۖ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡغَٰفِلُونَ ١٠٨﴾ (ये वो लोग हैं जिनके दिलों, कानों और आंखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है, और वही लोग ग़फलत में पड़े हुए हैं)। ﴿وَنُقَلِّبُ أَفۡـِٔدَتَهُمۡ وَأَبۡصَٰرَهُمۡ كَمَا لَمۡ يُؤۡمِنُواْ بِهِۦٓ أَوَّلَ مَرَّةٖ وَنَذَرُهُمۡ فِي طُغۡيَٰنِهِمۡ يَعۡمَهُونَ ١١٠﴾ (हम उनके दिलों और आंखों को फेर देंगे, क्योंकि उन्होंने पहली बार उस पर ईमान नहीं लाया, और हम उन्हें उनकी सरकशी में भटकने देंगे)।

(2) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान (1/ 41), लेखकः इब्न -ए- सअदी।
(3) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़्सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 35)।

इसलिए, एक सच्चे ईमान वाले को चाहिए कि वह अपनी आत्मा को सीधे रास्ते पर चलने के लिए तैयार करे और अल्लाह तआला से इस्तिक़ामत (दृढता) एवं स्थिरता की प्रार्थना करे। जैसा कि उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं: "अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली दुआ यह थीः ऐ दिलों को फेरने वाले (अल्लाह)!, मेरे दिल को अपने धर्म पर स्थिर रख"।[1]

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِي خَلَقَكُمۡ وَٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ٢١ ٱلَّذِي جَعَلَ لَكُمُ ٱلۡأَرۡضَ فِرَٰشٗا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءٗ وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗ فَأَخۡرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزۡقٗا لَّكُمۡۖ فَلَا تَجۡعَلُواْ لِلَّهِ أَندَادٗا وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ٢٢ وَإِن كُنتُمۡ فِي رَيۡبٖ مِّمَّا نَزَّلۡنَا عَلَىٰ عَبۡدِنَا فَأۡتُواْ بِسُورَةٖ مِّن مِّثۡلِهِۦ وَٱدۡعُواْ شُهَدَآءَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ ٢٣ فَإِن لَّمۡ تَفۡعَلُواْ وَلَن تَفۡعَلُواْ فَٱتَّقُواْ ٱلنَّارَ ٱلَّتِي وَقُودُهَا ٱلنَّاسُ وَٱلۡحِجَارَةُۖ أُعِدَّتۡ لِلۡكَٰفِرِينَ ٢٤ وَبَشِّرِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ أَنَّ لَهُمۡ جَنَّٰتٖ تَجۡرِي مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُۖ كُلَّمَا رُزِقُواْ مِنۡهَا مِن ثَمَرَةٖ رِّزۡقٗا قَالُواْ هَٰذَا ٱلَّذِي رُزِقۡنَا مِن قَبۡلُۖ وَأُتُواْ بِهِۦ مُتَشَٰبِهٗاۖ وَلَهُمۡ فِيهَآ أَزۡوَٰجٞ مُّطَهَّرَةٞۖ وَهُمۡ فِيهَا خَٰلِدُونَ ٢٥﴾ [سورة البقرة: ٢١-٢٥].

(हे लोगो! केवल अपने उस पालनहार की इबादत (वंदना) करो, जिस ने तुम्हें तथा तुम से पहले वाले लोगों को पैदा किया, इसी में तुम्हारा बचाव है। जिस ने धरती को तुम्हारे लिए बिछौना तथा गगन को छत बनाया, और आकाश से जल बरसाया, फिर उस से तुम्हारे लिए प्रत्येक प्रकार के खाद्य पदार्थ उपजाए, अतः जानते हुए भी उस के साझी न बनाओ। और यदि तुम्हें उस (क़ुरआन) में कुछ संदेह हो जो हम ने अपने भक्त पर उतारा है, तो उस के समान कोई सूरह ले आओ, और अपने समर्थकों को भी, जो अल्लाह के सिवा हों, बुला लो, यदि तुम सच्चे हो। और यदि यह न कर सको, तथा कर भी नहीं सकोगे, तो उस अग्नि (नरक) से बचो जिस का ईंधन मानव तथा पत्थर होंगे जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। हे नबी! उन लोगों को शुभ सूचना दीजिए, जो ईमान लाए, तथा सदाचार किये कि उन के लिए ऐसे स्वर्ग हैं जिन में नहरें बह रही होंगी. जब उन का कोई भी फल उन्हें दिया जाएगा तो कहेंगेः यह तो वही है जो इस से पहले हमें दिया गया, और उन्हें समरूप फल दिए जाएंगे, तथा उन के लिए उन में निर्मल पत्नियां होंगी, और वह उन में सदावासी होंगे)।

फिर महान कुरआनी संदर्भ एक महत्वपूर्ण संदेश की ओर अग्रसर होता है, जो अल्लाह तआला का समस्त मानवता को दिया गया आह्वान है कि वे उसकी इबादत करें ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِي خَلَقَكُمۡ﴾ (ऐ लोगों! अपने रब की इबादत करो, जिसने तुम्हें पैदा किया)। यह

(1) सुनन तिर्मिज़ी (5/ 503) हदीस़ संख्या (3522)।

महान आयत इस आह्वान से शुरू होती है कि अल्लाह तआला सभी इंसानों को संबोधित करता है। यह संबोधन "﴿يَٰٓأَيُّهَا﴾ ऐ लोगों!" के रूप में है, जो एक महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान आकर्षित करता है, और वह है उसकी इबादत ﴿ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ﴾ (अपने रब की इबादत करो)। इस से संबोधन शैली का महत्व स्पष्ट होता है, जो जागरूकता उत्पन्न करता है और संबोधित व्यक्तियों को चिन्हित करता है। यहां अल्लाह तआला ने समस्त इंसानों को संबोधित किया है। कुछ विद्वानों का मानना है कि उसने काफिरों को संबोधित किया है, जबकि अन्य का मानना है कि यह सभी इंसानों के लिए है। जो यह मानते हैं कि यह सभी के लिए है, उनके अनुसार यह ईमानवालों को इबादत को जारी रखने और काफिरों को इबादत शुरू करने के लिए निर्देशित करता है।[1] यह इस बात का संकेत देता है कि व्यापक और महत्वपूर्ण संबोधन सभी संबंधित और अन्य लोगों के लिए हो सकता है। यह इस उद्देश्य से होता है कि गैर-संबोधित लोग भी समझें कि संबंधित लोगों को क्या संदेश दिया गया है, ताकि वे इबादत में निरंतरता, शांति, ज्ञान और समझ विकसित कर सकें। साथ ही, संबंधित लोगों के लिए यह एक स्पष्ट निर्देश, चेतावनी और मार्गदर्शन का माध्यम बन सके।

और कारण बताने के तरीकों में से एक यह है कि आदेश के बाद कारण प्रस्तुत किया जाए। जैसे कि जब अल्लाह तआला ने समस्त मानव जाति को अपनी इबादत (पूजा) करने का आदेश दिया, ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ﴾ (ऐ लोगों! अपने रब की इबादत करो)। तो अल्लाह ने इसके उचित होने का कारण भी बताया कि केवल वही इबादत के योग्य क्यों है। इसका कारण यह है कि वही है जिसने अपनी नेमतों से तुम्हारी परवरिश की और तुम्हें शून्य से पैदा किया। अल्लाह तआला ने अपने पालनहार होने के तर्क से आदेश को और अधिक पुष्ट किया, जैसे कि उसने फ़रमाया है ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ﴾ (हे लोगों, अपने पालनहार की इबादत करो)। यहाँ अगर पाठक केवल ﴿ٱعۡبُدُواْ﴾ (ऊअबुदू) (इबादत करो) शब्द पर रुक जाए, तो इस आदेश का पूरा अर्थ ﴿رَبَّكُمُ﴾ (अपने पालनहार) शब्द के बिना अधूरा रहेगा।

और इसी तरह, आयत-ए-करीमा में लक्ष्य को स्पष्ट किया गया है कि: यह लक्ष्य तुम्हारी भलाई और लाभ से जुड़ा हुआ है, ऐ लोगो, ﴿لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ﴾ (ताकि तुम तक़वा (परहेज़गारी) इख़्तियार करो), क्योंकि जिसने तक़वा हासिल कर लिया, उसने दोनों जहानों में सफलता प्राप्त कर ली, जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरह अन् नबा में फ़रमाया है, ﴿إِنَّ لِلۡمُتَّقِينَ مَفَازًا ٣١﴾ (निश्चय ही परहेज़गारों के लिए सफलता है)। इसमें एक शैक्षिक, शिक्षाप्रद और दावत से संबंधित

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 157)।

महत्वपूर्ण संदेश है कि इंसान को उसकी भलाई और लाभ के पहलुओं को स्पष्ट करना चाहिए, ताकि वह इसे समझ सके या उस कार्य को करने के लिए प्रेरित हो। ऐसा करने से वह कार्य करने के लिए उत्साहित होता है, क्योंकि मानव स्वभावतः लाभ और भलाई की ओर आकर्षित होता है।

इस पाठ में सात कारणों का उल्लेख किया गया है, जो इस प्रकार हैं:

पहला कारण: यह कि वह (अल्लाह) ﴿رَبَّكُمُ﴾ (तुम्हारा रब है), अर्थात वह जिसने अपनी नेमतों से तुम्हारा पालन-पोषण किया।

दूसरा कारण: वही है ﴿خَلَقَكُمْ﴾ (जिसने तुम्हें पैदा किया), अर्थात तुम्हें शून्य से अस्तित्व में लाया।

तीसरा कारण: उसने ﴿وَٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ﴾ उन लोगों को भी पैदा किया जो तुमसे पहले थे, अर्थात उन्हें भी शून्य से अस्तित्व में लाया।

चौथा कारण: उसने धरती को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया ताकि तुम इस पर बैठ सको, सो सको और चल सको। जैसा कि फ़रमाया ﴿ٱلَّذِى جَعَلَ لَكُمُ ٱلۡأَرۡضَ فِرَٰشٗا﴾ (जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया)।

पाँचवां कारण: उसने आसमान को तुम्हारे ऊपर एक गुम्बद के रूप में बनाया। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है ﴿وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءٗ﴾ (तथा गगन को छत बनाया)।

छठा कारण: उसने पानी बरसाया, जिसके द्वारा धरती को जीवन मिलता है और वह खेती उगाती है, जिससे इंसान, जानवर और अन्य जीव भोजन करते हैं। ﴿وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗ فَأَخۡرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ﴾ (और आकाश से जल बरसाया, फिर उस से प्रत्येक प्रकार के खाद्य पदार्थ उपजाए)।

सातवां कारण: उसने फल को तुम्हारे लिए रोज़ी बनाया। ﴿فَأَخۡرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزۡقٗا لَّكُمۡۖ﴾ (और उससे तुम्हारे लिए फल को रोज़ी बनाया)।

यद्यपि जानवर और अन्य जीव भी धरती की उपज खाते हैं, फिर भी यह इंसान के लिए विशेष रूप से उल्लेख किया गया है, क्योंकि इंसान वह प्राणी है जिसे इस सब का उपयोग करने और उसका लाभ उठाने के लिए सक्षम बनाया गया। जैसा कि अल्लाह ने सूरह लुक़मान में

फ़रमाया है: ﴿أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ ٱللَّهَ سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلْأَرْضِ﴾ (क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमानों और धरती की हर चीज़ को तुम्हारे अधीन कर दिया है?)

यह सात कारण हैं, जो केवल एकमात्र अल्लाह की उपासना करने का दायित्व आप पर डालते हैं, जिसका कोई साझीदार नहीं है। ये सभी महान, अद्भुत और अपार कृपा हैं, जिनकी महानता चकित कर देने वाली है, और जो कोई भी इन पर विचार करता है, वह स्तब्ध रह जाता है। यदि कोई अपने शरीर की रचना और उसकी संरचना पर चिंतन करे, तो वह अपनी आँखों की देखने की क्षमता, सुनने की शक्ति, बुद्धि, समझ, अंगों की गति, और इनकी अद्भुत रचना से दंग रह जाएगा। यदि वह पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाली इस निरंतरता पर विचार करे, तो यह उसे विस्मित कर देगा, जो केवल अल्लाह की इच्छा से ही थम सकता है। यदि वह धरती की विशालता, उसके खुले मैदानों, घाटियों और पहाड़ों के बीच बने रास्तों पर ध्यान लगाए, और यह देखे कि पानी उन्हीं रास्तों के बीच से बहकर समुद्रों की ओर जाता है, तो यह उसे हैरान कर देगा। यदि वह आकाश पर ध्यान लगाए, उसमें चलने वाले बादलों और उनसे गिरने वाली वर्षा पर विचार करे, तो वह उस महान सृष्टिकर्ता को समझेगा, जो उपासना के योग्य केवल वही है। यदि वह वर्षा और उससे उगने वाले पौधों के बीच संबंध पर विचार करे, तो यह उसे इस तथ्य से अभिभूत कर देगा कि अल्लाह ही सृष्टिकर्ता है और उसी की उपासना की जानी चाहिए। यदि वह पौधों की ऊँचाइयों, उनकी आकृतियों, उनके आकारों और उनकी सुंदरता पर ध्यान लगाए, और उनके फलों की विविधता, उनके आकार, स्वाद और रंगों पर विचार करे, तो यह उसे चकित कर देगा। बल्कि, यदि कोई केवल एक ही फल की बनावट पर ध्यान करे, तो उसका मन विचारों से भर जाएगा, उसका हृदय ईमान की ओर झुक जाएगा, उसकी जीभ शुक्र और प्रशंसा के शब्द कहेगी, और उसके अंग अल्लाह की आज्ञा का पालन करने में लग जाएँगे।

फिर इस स्पष्ट और अद्भुत तर्क के बाद, जो अल्लाह तआला की महान सृष्टि की ओर ध्यान आकर्षित करता है, अल्लाह तआला इंसान को आदेश देता है कि वह किसी को भी उसका समकक्ष न ठहराए, और न ही इबादत का कोई हिस्सा उसे अर्पित करे, क्योंकि इबादत केवल उसी के लिए है, जो (अल्लाह) तबारक व तआला (कल्याणकारी एवं सर्वोच्च) है। अल्लाह फ़रमाता है: ﴿فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ﴾ (अतः अल्लाह के लिए किसी को समकक्ष न बनाओ, जबकि तुम जानते हो)।

इस तर्कसंगत और प्रभावी व्याख्या के बाद, जिसने अल्लाह की इबादत को सिद्ध किया और हर प्रकार के अज्ञान व रुकावट को दूर कर दिया, ख़ितब -ए- रब्बानी (ईश्वरीय वाणी) अब उस ओर बढ़ती है जो उसके पैग़ंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारी गई,

अर्थात् पवित्र क़ुरआन। यह इस उद्देश्य से है कि जो लोग इसे सुनने, स्वीकारने और समझने में संकोच करते हैं, उनके मन से ये बाधाएँ हटा दी जाएँ।

अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَإِن كُنتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ﴾ (और यदि तुम्हें उस (क़ुरआन) में कुछ संदेह हो जो हम ने अपने भक्त पर उतारा है, तो उस के समान कोई सूरह ले आओ, और अपने समर्थकों को भी, जो अल्लाह के सिवा हों, बुला लो, यदि तुम सच्चे हो)।

यह आयत उन लोगों को संबोधित करती है जिनके दिलों में क़ुरआन के बारे में संदेह और शंका है, उनसे कहा गया है कि वे अपनी फ़स़ाहत और बलाग़त (अर्थात् वाक्पटुता और साहित्यिक श्रेष्ठता) के साथ, जो अरबी भाषा में उनके लिए प्रसिद्ध है, क़ुरआन जैसी केवल एक सूरह प्रस्तुत करें।

साथ ही, उन्हें अनुमति दी गई कि वे अपनी सहायता के लिए अल्लाह के सिवा जिसे चाहें बुला लें, चाहे वह उनके साथी हों या समर्थक। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَادْعُوا شُهَدَاءَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ﴾ (और अपने समर्थकों को भी, जो अल्लाह के सिवा हों, बुला लो)।

तो यदि वे वास्तव में सच्चे हैं और उन्हें केवल संदेह ही रोक रहा है, तो उन्हें क़ुरआन जैसी एक सूरह लानी चाहिए, ताकि उनका संदेह और शंका दूर हो जाए और वे ईमान ले आएं। लेकिन यदि उनकी रुकावट का कारण घमंड है, तो यह इस बात का प्रमाण है कि वे सच्चाई को जानते हैं और वह उनके सामने स्पष्ट हो चुकी है, इसके बावजूद, उनकी ज़िद और अहंकार उन्हें सत्य स्वीकार करने से रोक रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि ईमान (विश्वास), इबादत, शिक्षा, और दावत (प्रचार) को स्वीकार करने में बाधाएँ या तो ज़िद और अहंकार की वजह से होती हैं, या फिर अज्ञानता की वजह से। यह अज्ञानता या तो शुद्ध संदेह के रूप में हो सकती है, जोकि सूचना की सत्यता के बारे में संदेह हो सकता है, साधारण अज्ञानता हो सकती है, या जटिल और गहरी अज्ञानता हो सकती है। इसलिए, एक शिक्षक या दाई (प्रचारक) को चाहिए कि वह इन बाधाओं को पहचाने। क्या यह अज्ञानता और असमर्थता के कारण है या फिर यह ज़िद और अहंकार के कारण है? इसके आधार पर, वह व्यक्ति के साथ उसी प्रकार का व्यवहार करे जो उसकी स्थिति के लिए उपयुक्त हो।

इस रब्बानी (ईश्वरीय) व्याख्या से प्राप्त लाभों में से है: श्रोता के मन से संदेह, अर्थात शंका को दूर करने का महत्व और उसके मन में इसकी संभावनाओं को समझना। इससे यह दायित्व बनता है कि दाई (प्रचारक) उस शंका या संदेह को दूर करे जो आमंत्रित व्यक्ति के मन में हो सकता है। यह इस बात को भी प्रमाणित करता है कि शिक्षा और दावत (प्रचार) के लिए

ज्ञान का होना अत्यंत आवश्यक है और मद्ऊ अर्थात आमंत्रित व्यक्ति की स्थिति को समझना भी अनिवार्य है।

इस के लाभों में से एक यह भी है किः यह चुनौती दो कालों (समय) को सम्मिलित करती है, जिनके अलावा कोई तीसरा नहीं है: वर्तमान ﴿فَإِن لَّمۡ تَفۡعَلُواْ﴾(यदि तुम ऐसा न कर सको), और भविष्य ﴿وَلَن تَفۡعَلُواْ﴾(और तुम कभी ऐसा नहीं कर सकोगे)। यह चुनौती इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि वे क़ुरआन जैसी एक सूरह लाने में सक्षम नहीं होंगे, न वर्तमान में और न ही भविष्य में। इब्न -ए- कसीर रहिमहुल्लाह कहते हैं: "(لن, 'कभी नहीं') भविष्य के लिए दृढ़ निषेध का सूचक है, अर्थात तुम ऐसा कभी नहीं कर सकोगे। यह एक और मोअजिज़ा (चमत्कार) है, क्योंकि इसमें अल्लाह ने निश्चित और अटल रूप से भविष्यवाणी की है, बिना किसी भय या संकोच के, कि क़ुरआन का मुकाबला करना किसी के लिए भी संभव नहीं होगा, न वर्तमान में और न ही अनंत भविष्य में"।[1]

अल्लाह तआला ने मक्का और मदीना में कई बार उन्हें चुनौती दी, हालांकि उनकी शत्रुता तथा धर्म के प्रति उनकी घृणा बड़ी कठोर थी। इसके बावजूद, वे ऐसा नहीं कर सके। इसी कारण अल्लाह तआला ने कहा है: ﴿فَإِن لَّمۡ تَفۡعَلُواْ وَلَن تَفۡعَلُواْ﴾ (और यदि यह न कर सको, तथा कर भी नहीं सकोगे)।[2]

फिर इस चुनौती के बाद, परिणाम की चेतावनी दी गई, अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿فَإِن لَّمۡ تَفۡعَلُواْ وَلَن تَفۡعَلُواْ فَٱتَّقُواْ ٱلنَّارَ ٱلَّتِي وَقُودُهَا ٱلنَّاسُ وَٱلۡحِجَارَةُۖ أُعِدَّتۡ لِلۡكَٰفِرِينَ﴾ (और यदि यह न कर सको, तथा कर भी नहीं सकोगे, तो उस अग्नि (नरक) से बचो जिस का ईंधन मानव तथा पत्थर होंगे जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है)।

यह इस बात को दर्शाता है कि शिक्षा और दावत (प्रचार) में हमेशा पूरी स्पष्टता और सही जानकारी देने के बाद ही चेतावनी दी जानी चाहिए, ताकि जो लोग अज्ञानता या आलस्य के कारण सत्य से विमुख हो रहे हैं, उन्हें सही मार्ग पर लाया जा सके।

इसके अतिरिक्त, एक और लाभ यह है कि अल्लाह तआला ने काफिरों के लिए जो दंड निर्धारित किया है, उसके बाद मुसलमानों के लिए जो पुरस्कार तैयार किया है, उसका संतुलन दर्शाया है। अल्लाह तआला कहता है: ﴿وَبَشِّرِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ أَنَّ لَهُمۡ جَنَّٰتٖ

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 63)।
(1) पिछला संदर्भ (1/ 63)।

تَجْرِي مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَـٰرُ ۖ كُلَّمَا رُزِقُوا۟ مِنْهَا مِن ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوا۟ هَـٰذَا ٱلَّذِى رُزِقْنَا مِن قَبْلُ ۖ وَأُتُوا۟ بِهِۦ مُتَشَـٰبِهًا ۖ وَلَهُمْ فِيهَآ أَزْوَٰجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۖ وَهُمْ فِيهَا خَـٰلِدُونَ ﴾ (हे नबी! उन लोगों को शुभ सूचना दीजिए, जो ईमान लाए, तथा सदाचार किये कि उन के लिए ऐसे स्वर्ग हैं जिन में नहरें बह रही होंगी. जब उन का कोई भी फल उन्हें दिया जाएगा तो कहेंगेः यह तो वही है जो इस से पहले हमें दिया गया, और उन्हें समरूप फल दिए जाएंगे, तथा उन के लिए उन में निर्मल पत्नियां होंगी, और वह उन में सदावासी होंगे)।

इस आयत का आरंभ ﴿وَبَشِّرِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟﴾ (और ईमान लाने वालों को शुभ समाचार दें) से होता है, जो इस बात को प्रमाणित करती है कि भविष्य के सुखद समाचार देने के लिए "बशारत" या उसके समकक्ष शब्दों का उपयोग करना कितना महत्वपूर्ण है। ये शब्द श्रोता को मानसिक और भावनात्मक रूप से तैयार करते हैं, क्योंकि ये एक खुशी देने वाली सूचना होती है, जो व्यक्ति के मन में अत्यधिक आनंद और संतोष का प्रभाव डालती है।

एक महान लाभ यह है कि जन्नत, उसके फलों, नदियों, ईमान के स्तरों और अच्छे कार्यों के बारे में अत्यधिक विस्तार से बचते हुए संक्षिप्त रूप से सभी विवरण प्रस्तुत किए गए हैं। इस प्रकार, पाठक प्रत्येक विवरण को महसूस करता है, और यह क़ुरआन के शब्दों की बलाग़ी (रचनात्मक और प्रभावशाली) चमत्कारिता को दर्शाता है। इसके अलावा, इसमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि ईमान और अच्छे कार्य, जो अल्लाह की कृपा और दया से मुसलमान को जन्नत में प्रवेश दिलाते हैं, कितने महत्वपूर्ण हैं।

फिर इस आयत में उत्सुकता और आकर्षण का तत्व जोड़ा गया है, जो ﴿وَبَشِّرِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟﴾ (और ईमान लाने वालों को शुभ समाचार दें) से शुरू होकर जन्नत का वर्णन करता है। इसमें जन्नत के बाग़ों का वर्णन है, जिनके नीचे नदियाँ बह रही होंगी, और वहाँ जो फल दिए जाएंगे, जब भी उन्हें किसी फल में से दिया जाएगा, तो वे कहेंगेः "यह वही है जो हमें पहले दिया गया था", अर्थात वह फल रंग में समान होगा, किंतु स्वाद एवं मज़ा में भिन्न होगा। वे जब भी फल प्राप्त करेंगे, और कहेंगे, "यह पहले जैसा है", तो फिर फरिश्ते उन्हें कहेंगे, "खाओ, रंग तो समान है, परंतु स्वाद में भिन्नता है"।[1] इसके बाद, उन्हें जन्नत में पवित्र और निर्दोष पत्नियां मिलेंगी। फिर इस महत्वपूर्ण सत्य को बताया गया है कि "वे उसमें हमेशा रहेंगे", अर्थात वे हमेशा के लिए जन्नत में रहेंगे, जिसमें कोई मृत्यु नहीं होगी।

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 66)।

इस से यह स्पष्ट होता है कि ईमान और अच्छे कार्यों का परिणाम, अर्थात अल्लाह की जन्नत प्राप्त करना, कितना महत्वपूर्ण है, जैसा कि आयत में है: ﴿وَبَشِّرِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ أَنَّ لَهُمۡ جَنَّٰتٖ تَجۡرِي مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُۖ﴾ (हे नबी! उन लोगों को शुभ सूचना दीजिए, जो ईमान लाए, तथा सदाचार किये कि उन के लिए ऐसे स्वर्ग हैं जिन में नहरें बह रही होंगी)।

﴿۞ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَسۡتَحۡيِۦٓ أَن يَضۡرِبَ مَثَلٗا مَّا بَعُوضَةٗ فَمَا فَوۡقَهَاۚ فَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ فَيَعۡلَمُونَ أَنَّهُ ٱلۡحَقُّ مِن رَّبِّهِمۡۖ وَأَمَّا ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ فَيَقُولُونَ مَاذَآ أَرَادَ ٱللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلٗاۘ يُضِلُّ بِهِۦ كَثِيرٗا وَيَهۡدِي بِهِۦ كَثِيرٗاۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِۦٓ إِلَّا ٱلۡفَٰسِقِينَ ٢٦ ٱلَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهۡدَ ٱللَّهِ مِنۢ بَعۡدِ مِيثَٰقِهِۦ وَيَقۡطَعُونَ مَآ أَمَرَ ٱللَّهُ بِهِۦٓ أَن يُوصَلَ وَيُفۡسِدُونَ فِي ٱلۡأَرۡضِۚ أُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡخَٰسِرُونَ ٢٧﴾ [سورة البقرة:٢٦-٢٧].

(अल्लाह मच्छर अथवा उस से तुच्छ चीज़ से उपमा देने से नहीं लजाता, जो ईमान लाए वह जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से उचित है, और जो काफ़िर (विश्वासहीन) हो गए वह कहते हैं कि अल्लाह ने इस से उपमा दे कर क्या निश्चय किया है? अल्लाह इस से बहुतों को गुमराह (कुपथ) करता है, और बहुतों को मार्गदर्शन देता है, तथा जो अवज्ञाकारी है, उन्हीं को कुपथ करता है। जो अल्लाह से पक्का वचन करने के बाद उसे भंग कर देते हैं, तथा जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है उसे तोड़ते हैं, और धरती में उपद्रव करते हैं, यही लोग क्षति में पड़ेंगे)।

सईद ने क़तादा से वर्णित किया है: "अल्लाह सच्चाई को बयान करने में झिझक महसूस नहीं करता, चाहे वह किसी छोटी या बड़ी चीज़ का उल्लेख हो।" जब अल्लाह ने अपनी किताब में मक्खी और मकड़ी का उल्लेख किया, तो गुमराह लोगों ने कहा: " इन तुच्छ चीज़ों का ज़िक्र करने का अल्लाह का क्या उद्देश्य है?" तो अल्लाह ने यह आयत उतारी:[1] ﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَسۡتَحۡيِۦٓ أَن يَضۡرِبَ مَثَلٗا مَّا بَعُوضَةٗ فَمَا فَوۡقَهَاۚ﴾ (अल्लाह मच्छर अथवा उस से तुच्छ चीज़ से उपमा देने से नहीं लजाता)।

यह उदाहरण देने के महत्व को स्पष्ट करता है, ताकि ज्ञान को श्रोता तक प्रभावी ढंग से पहुंचाया जा सके। व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि उसे उदाहरण देने में संकोच नहीं करना चाहिए, भले ही वह उदाहरण किसी की दृष्टि में छोटा या तुच्छ प्रतीत हो, क्योंकि उद्देश्य ज्ञान का प्रसार है। इसी प्रकार, व्यक्ति को दूसरों तक सत्य को पहुंचाने में भी संकोच नहीं करना

(1) पिछला संदर्भ (1/ 67)।

चाहिए, बशर्ते वह इसे उचित और विविध विधियों से प्रस्तुत करे, जो लक्ष्य और उद्देश्य को पूर्ण करें।

एक अन्य लाभ यह है कि घमंडी व्यक्ति सत्य और उसकी विधियों एवं उद्देश्यों को तुच्छ समझकर उनकी आलोचना करता है। वह सत्य को अधूरी व्याख्या और उपेक्षा के माध्यम से हीन दिखाने की कोशिश करता है, ताकि स्वयं को संतुष्ट कर सके। साथ ही, वह लोगों के विचारों को बदलने के लिए शंका और संदेह का बीज बोने का प्रयास करता है, सत्य का उपहास और उसका मजाक उड़ाकर।

इससे यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह अपने भक्तों के प्रति सत्य को उन तक पहुंचाने में कितना कृपालु है तथा वह बंदों का कितना ध्यान रखता है। वह अपनी शिक्षा और संदेश को पहुंचाने के लिए विभिन्न विधियों का उपयोग करता है, जैसे कि पैगंबरों का भेजा जाना, चमत्कारों का प्रदर्शन, स्पष्ट व्याख्या, और ऐसी विविध विधियों को अपनाना जो उद्देश्य और लक्ष्य को पूरा करें।

इसी प्रकार, यह क़ुरआन की शिक्षण और दावत (प्रचार) की पद्धति में गहराई से चिंतन करने का महत्व बताता है। क़ुरआन द्वारा अपनाई गई विधियों को समझकर उन्हें स्पष्टता और विश्वास दिलाने के लिए उपयोग करना चाहिए।

और इसके लाभों में से यह है कि सत्य के प्रति लोग दो प्रकार के होते हैं: एक प्रकार वह है जो सत्य को स्वीकार करता है, और दूसरा प्रकार वह है जो हठ करता है तथा विरोध करता है। ﴿فَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۖ وَأَمَّا ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَيَقُولُونَ مَاذَآ أَرَادَ ٱللَّهُ بِهَـٰذَا مَثَلًا﴾ (जो ईमान लाए वह जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से उचित है, और जो काफ़िर (विश्वासहीन) हो गए वह कहते हैं कि अल्लाह ने इस से उपमा दे कर क्या निश्चय किया है?)।

और इससे यह समझ में आता है कि सुधारक, प्रचारक, विद्वान और शिक्षक को इस विविधता और असहमति के प्रति स्वयं को तैयार करना चाहिए। यदि इस प्रकार की स्वीकृति और अस्वीकृति अल्लाह के एक महान संदेश, एक महान पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के माध्यम से हो सकती है, तो यह आम लोगों और उनसे कम महत्व के मसलों या विभिन्न और विविध सांसारिक मामलों के संदर्भ में भी स्वाभाविक है।

और इससे यह भी समझ में आता है कि एक सच्चा ईमान वाला व्यक्ति सत्य और सही बात को देखकर हठधर्मी नहीं करता। वह अपने पुराने गलत विचार या समझ को छोड़ देता है,

सत्य को स्वीकार करता है और उसे अपनाता है, क्योंकि सत्य को अस्वीकार करना हठधर्मी काफिरों की विशेषता है।

सत्य को वे लोग स्वीकार करते हैं और उससे मार्गदर्शन पाते हैं जो सही मार्ग पर हैं, जबकि, पापी लोग (फ़ासिक़) इसे अस्वीकार करते हैं, जिनकी पहचान अल्लाह के वचन को तोड़ने, उन संबंधों को तोड़ने से होती है जिनके जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया, और धरती में फसाद फैलाने से होती है। अल्लाह ने फ़रमाया है: ﴿يُضِلُّ بِهِۦ كَثِيرًا وَيَهْدِى بِهِۦ كَثِيرًاۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِۦٓ إِلَّا ٱلْفَـٰسِقِينَ ﴿٢٦﴾ ٱلَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ ٱللَّهِ مِنۢ بَعْدِ مِيثَـٰقِهِۦ وَيَقْطَعُونَ مَآ أَمَرَ ٱللَّهُ بِهِۦٓ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِى ٱلْأَرْضِۚ أُو۟لَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلْخَـٰسِرُونَ ﴿٢٧﴾﴾ (अल्लाह इस से बहुतों को गुमराह (कुपथ) करता है, और बहुतों को मार्गदर्शन देता है, तथा जो अवज्ञाकारी है, उन्हीं को कुपथ करता है। जो अल्लाह से पक्का वचन करने के बाद उसे भंग कर देते हैं, तथा जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है उसे तोड़ते हैं, और धरती में उपद्रव करते हैं, यही लोग क्षति में पड़ेंगे)।

और इससे यह स्पष्ट होता है कि सत्य के कारण लोग दो वर्गों में विभाजित हो जाते हैं: वे जो अल्लाह की आयतों और उनके पैगंबरों द्वारा लाए गए सत्य के माध्यम से मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं, तथा वे जो पापी और हठधर्मी हैं। इस कारण से पापियों के मार्ग इस प्रकार होते हैं: वचनों और संधियों को तोड़ना, एवं उन संबंधों को तोड़ना जिनको जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया है, जैसे रिश्तेदारी और पारिवारिक संबंध। कहा गया है कि यह हर उस चीज़ को शामिल है जिसे जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया है, तथा रिश्तेदारी भी इसका एक हिस्सा है।(1) साथ ही, उनका मार्ग धरती में कुफ्र, पाप, और लोगों को कुफ्र की ओर बुलाकर फसाद फैलाना है।(2) ये ही असली घाटा उठाने वाले वाले हैं, क्योंकि उन्होंने आखिरत को खो दिया है, जो ईमान वालों के लिए सुख एवं इनाम तथा काफिरों के लिए दंड का स्थान है।

﴿كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِٱللَّهِ وَكُنتُمْ أَمْوَٰتًا فَأَحْيَـٰكُمْۖ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾ هُوَ ٱلَّذِى خَلَقَ لَكُم مَّا فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ ٱسْتَوَىٰٓ إِلَى ٱلسَّمَآءِ فَسَوَّىٰهُنَّ سَبْعَ سَمَـٰوَٰتٍۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾﴾ [سورة البقرة:٢٨-٢٩].

(तुम अल्लाह का इंकार कैसे कर सकते हो? जब कि पहले तुम निर्जीव थे, फिर उस ने तुम को जीवन दिया, फिर तुम को मृत्यु देगा, फिर तुम्हें (परलोक में) जीवन प्रदान करेगा, फिर तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे। वही है जिस ने धरती में जो भी है, सब को तुम्हारे लिए

---

(2) अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 171)।

(1) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़्सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 44)।

उत्पन्न किया, फिर आकाश की ओर आकृष्ट हुआ, तो बराबर सात आकाश बना दिए, और वह प्रत्येक चीज़ का जानकार है)।

इस आयत का आरंभ काफिरों से एक तर्कपूर्ण और ठहरावपूर्ण प्रश्न के साथ होता है, जो उनके द्वारा अल्लाह के इनकार पर आपत्ति प्रकट करता है। यह प्रश्न उन्हें इस तथ्य पर विचार करने को बाध्य करता है कि वे पहले अस्तित्व में नहीं थे, शून्य थे, फिर अल्लाह ने उन्हें पैदा किया। वे छोटे बच्चे के रूप में जन्मे, फिर जीवन व्यतीत किया, जितना अल्लाह ने उनके लिए निर्धारित किया, और फिर उनकी मृत्यु हुई, जैसे अन्य लोगों की मृत्यु होती है। यह प्रश्न एक ऐसी सच्चाई पर आधारित है जिसे कोई भी इनकार नहीं कर सकता। इसके बाद आयत ने एक और सत्य को स्पष्ट किया, जो है मृत्यु के बाद पुनर्जीवन (पुनरुत्थान)। यह सच्चाई पहली वास्तविकताओं से जुड़ी हुई है: शून्यता, फिर सृजन, और फिर मृत्यु। जिसने मनुष्य को शून्य से पैदा किया, उसे जीवन दिया, और एक समय तक जीवित रखा, वही उसे पुनः जीवित करने में सक्षम है। पुनर्जीवन उस अल्लाह के लिए कठिन नहीं है जिसने अपनी सृष्टि को शून्य से आरंभ किया।

यह प्रतिपादक शिक्षण विधि की महानता को दर्शाता है, जिसमें श्रोता को उस सच्चाई की ओर लौटाया जाता है जिसे वह जानता है और अस्वीकार नहीं कर सकता। यह एक संवादात्मक जाँच भी है जो बुद्धिमान व्यक्ति को उन बातों की ओर सजग करती है जिन्हें वह भूल सकता है या अनदेखा कर सकता है। जैसे कि श्रोता का मन कहता है: 'हाँ, मैं पहले जीवन में नहीं था, फिर जिसने मुझे उत्पन्न किया, उसने मुझे जीवन दिया, और जैसे वह अन्य लोगों को मारता है, वैसे ही मुझे भी मार देगा। इस प्रकार जिसने मुझे उत्पन्न किया, वह मुझे पुनः उत्पन्न करने में सक्षम है, जिससे उस पर विश्वास करना और उसकी उपासना करना आवश्यक हो जाता है।' अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝٢٨﴾ (तुम अल्लाह का इंकार कैसे कर सकते हो? जब कि पहले तुम निर्जीव थे, फिर उस ने तुम को जीवन दिया, फिर तुम को मृत्यु देगा, फिर तुम्हें (परलोक में) जीवन प्रदान करेगा, फिर तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे)।

यह प्रश्नात्मक शैली, जो एक कथनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया गया है, विचारशीलता को उत्तेजित करती है। यह न केवल दिमाग को चिंतन के लिए प्रेरित करती है, बल्कि दिल को भी सोचने पर मजबूर करती है कि कैसे यह स्पष्ट सत्य एक समझदार व्यक्ति के दिमाग से गायब हो सकता है। यह इस बात को प्रमाणित करता है कि यह शैली मानसिक प्रक्रियाओं को सही दिशा में मार्गदर्शन देने के लिए महत्वपूर्ण है। यह शैली श्रोता को उन सच्चाइयों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर करती है जिन्हें वह पहले से जानता है और स्वीकार करता है। फिर, उनसे

जुड़े अन्य पहलुओं की ओर उसे धीरे-धीरे उन्मुख किया जाता है, ताकि वह उन उद्देश्यों तक पहुंच सके जिन्हें प्रवचनकर्ता उसे समझाना चाहता है।

और इसके बाद की आयत ने अस्तित्व और जीवन की सच्चाई को और भी पुख्ता किया, और यह दिखाया कि अल्लाह की विशाल शक्ति के सामने कुछ भी कठिन नहीं है, जो बताता है कि ईमान का होना और कुफ्र का त्याग करना आवश्यक है। अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿هُوَ ٱلَّذِى خَلَقَ لَكُم مَّا فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا﴾ (वही है जिस ने धरती में जो भी है, सब को तुम्हारे लिए उत्पन्न किया)। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस पृथ्वी पर जो कुछ भी है, वह उसी ने उत्पन्न किया है जिसने हमें उत्पन्न किया। इसके बाद पुनर्जीवन और मृत्यु की स्थिति पर विचार करने की बात आती है, साथ ही, यह भी ध्यान आकर्षित किया गया है कि पृथ्वी पर और उसमें जो भी नियामत (अनुग्रह) हैं, वे सभी लोगों के लिए हैं। यह श्रोताओं को यह सोचने पर मजबूर करता है कि उनके अस्तित्व और उनकी ज़रूरतों के बीच एक सामंजस्य है। यह पृथ्वी पर मौजूद चीजों और मनुष्य की उनकी ज़रूरतों के बीच सामंजस्य को दर्शाता है, यहाँ तक कि मनुष्य की तात्कालिक या विलासितापूर्ण ज़रूरतें, जैसे स्वाद में विविधता, भी पूरी होती हैं। उदाहरण के रूप में, खजूर के फल को लिया जा सकता है, जो विभिन्न प्रकार के होते हैं, और उनकी मिठास, रंग, आकार और बनावट में विभिन्नता होती है। यहाँ तक कि एक ही पेड़ से उत्पन्न होने वाले खजूर के फलों में भी यह विविधता होती है। यह दर्शाता है कि अल्लाह ने इन सभी चीजों को अत्यधिक सूक्ष्मता और विविधता के साथ उत्पन्न किया है, ताकि मनुष्य की सभी भौतिक और भावनात्मक ज़रूरतों को पूरा किया जा सके।

यहां पर आयत में पृथ्वी पर मौजूद अनगिनत नियामतों का संक्षेप में उल्लेख किया गया है, क्योंकि वास्तविक स्थिति में यह संक्षिप्त रूप से बड़ी और महत्वपूर्ण सच्चाइयों को व्यक्त करता है। इन सच्चाइयों के बारे में विस्तार से विवरण देने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अल्लाह ने पहले ही अन्य आयतों में इन नियामतों के बारे में विस्तार से बताया है। यहाँ संक्षेप में बताया गया है ताकि श्रोता या पाठक इन महान सच्चाइयों पर ध्यान दे और उनका महत्व समझे।

इस कुरआनी आयत में महान सत्य को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने की एक प्रभावी शैली दिखाई देती है, जो श्रोता का ध्यान आकर्षित करने के लिए है। इसमें विवरण में न जाकर केवल महत्वपूर्ण बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है, ताकि श्रोता का ध्यान किसी विशेष विषय पर केंद्रित रहे और वह विस्तार में जाकर पृथ्वी पर होने वाली घटनाओं जैसे कि उगना, सूखना, मरना, और फिर पानी के द्वारा जीवन की पुनः प्राप्ति आदि में न खो जाए। इसके बजाय, ध्यान मुख्य सत्य और उन पर विचार करने पर रखा गया है।

यह शैली, विशेष रूप से संवाद या चर्चा के दौरान, बड़े और महत्वपूर्ण तथ्यों को बिना किसी जटिलता के स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में मदद करती है। यह उस समय और परिस्थिति में उपयोगी होती है जब हमें संक्षिप्त और सार्थक तरीके से मुख्य बातें व्यक्त करनी होती हैं, ताकि विचारों में उलझन न हो और मर्म तक आसानी से पहुँचा जा सके।

इसके बाद, जब श्रोता या पाठक इन विचारों को समझता है, तो उसे एक और बड़े सत्य की ओर मार्गदर्शन किया जाता है: आकाश और उसकी संरचना का उद्देश्य, जैसा कि अल्लाह ने कहा है: ﴿ثُمَّ ٱسْتَوَىٰٓ إِلَى ٱلسَّمَآءِ فَسَوَّىٰهُنَّ سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ﴾ (फिर वह आकाश की ओर आकृष्ट हुआ, तो बराबर सात आकाश बना दिए, और वह प्रत्येक चीज़ का जानकार है)। यह आयत यह दर्शाती है कि अल्लाह ने आकाश को अपनी योजना के अनुसार व्यवस्थित किया और उसे सात आकाशों के रूप में परिपूर्ण किया, और यह सारी सृष्टि उसके असीम ज्ञान और शक्ति के अधीन है।

यहाँ पर क्रमिक रूप से संबोधन और चेतावनी दी गई है ताकि अंततः ईमान तक पहुँचा जा सके। पहले यह बताया गया कि इंसान पहले कुछ नहीं था, फिर उसे उत्पन्न किया, फिर वह उसे मृत्यु देगा जैसे वह दूसरों को मृत्यु देता है, और फिर उसे जीवित करेगा, और सभी को उसी की ओर लौटना है। फिर पृथ्वी और उसमें जो कुछ है, उसका निर्माण बताया गया, और यह कि यह सब इंसान की ज़रूरतों के अनुसार है। इसके बाद यह कहा गया कि जिसने उसे और पृथ्वी को उत्पन्न किया, वही वह है जिसने आकाशों को भी उत्पन्न किया। और अंत में यह बताया गया कि आकाश सात हैं, जैसा कि सर्वज्ञानी सर्वसूचित अल्लाह ने इस के बारे में बताया है।

फिर आयत का समापन अल्लाह के इस वचन से हुआ है: ﴿وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ﴾ (और वह प्रत्येक चीज़ का जानकार है)। यहाँ पर अल्लाह ने सृष्टि के निर्माण और उसकी सर्वशक्तिमानता के सत्य को स्थापित करने के बाद यह बताया कि वह व्यापक ज्ञान वाला है, उसका ज्ञान किसी भी चीज़ को जानने में असमर्थ नहीं है, कोई भी चीज़ उसकी जानकारी से ओझल नहीं रह सकती।

यह आयत इस बात को स्पष्ट करती है कि इंसान का अस्तित्व, जो पहले कुछ नहीं था, फिर उसे उत्पन्न किया गया और फिर उसकी मृत्यु के बाद, और पृथ्वी पर जो कुछ भी है, इन सब पर विचार करना, एक सशक्त संकेत है कि यह सब सृष्टिकर्ता अल्लाह के द्वारा किया गया है।

यह आयत यह भी दर्शाती है कि अल्लाह के प्रति ईमान और उसकी इबादत कितनी महत्वपूर्ण है, और इबादत केवल उसी के लिए होनी चाहिए, जो उसकी महानता और भव्यता

के योग्य है। साथ ही, यह आयत सोच और विचार करने की अहमियत को भी बताती है, और यह कि संवाद और तर्क में क्रमबद्धता, और सुनने वाले की स्थिति को समझना कितना आवश्यक है, ताकि उसे सच्चाई और उससे भी बड़ी सच्चाई की ओर मार्गदर्शन किया जा सके।

यह आयत अल्लाह की अपनी सृष्टि के प्रति दया और कृपा को दर्शाती है, क्योंकि उसने उन्हें सबसे अच्छे और प्रभावी तरीकों से संबोधित किया, और उनके लिए पृथ्वी और उसमें जो कुछ भी है, उसे उत्पन्न किया, और उसे उनके अधीन कर दिया। उसने उनकी आवश्यकताओं और पृथ्वी पर मौजूद चीजों के बीच सामंजस्य स्थापित किया, ताकि उन्हें किसी चीज़ की आवश्यकता हो, तो वह पृथ्वी पर मौजूद हो, यह सब अल्लाह की निःस्वार्थ कृपा और सृजन की निशानियाँ हैं, जो उसकी महानता और सत्ता को प्रमाणित करती हैं। तो अल्लाह के लिए ही प्रशंसा एवं धन्यवाद है। हे अल्लाह हम तुझ से सच्चाई पर स्थिर रहने और सफलता की दुआ करते हैं।

﴿وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي ٱلْأَرْضِ خَلِيفَةًۖ قَالُوٓاْ أَتَجْعَلُ فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ ٱلدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَۖ قَالَ إِنِّيٓ أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝٣٠ وَعَلَّمَ ءَادَمَ ٱلْأَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى ٱلْمَلَٰٓئِكَةِ فَقَالَ أَنۢبِـُٔونِي بِأَسْمَآءِ هَٰٓؤُلَآءِ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ۝٣١ قَالُواْ سُبْحَٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَآۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْحَكِيمُ ۝٣٢ قَالَ يَٰٓـَٔادَمُ أَنۢبِئْهُم بِأَسْمَآئِهِمْۖ فَلَمَّآ أَنۢبَأَهُم بِأَسْمَآئِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّيٓ أَعْلَمُ غَيْبَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ۝٣٣﴾ [سورة البقرة: ٣٠-٣٣].

और (हे नबी! याद करें) जब आपके पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक ख़लीफ़ा बनाने जा रहा हूँ, वह बोलेः क्या तू उस में उसे बनाएगा जो उस में उपद्रव करेगा, तथा रक्त बहाएगा? जब कि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं? (अल्लाह ने) कहाः जो मैं जानता हूँ वह तुम नहीं जानते। और उस ने आदम को सभी नाम सिखा दिए, फिर उन को फ़रिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया, और कहाः मुझे इन के नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो? सब ने कहाः तू पवित्र है, हम तो उतना ही जानते हैं, जितना तू ने हमें सिखाया है, वास्तव में तू अति ज्ञानी तत्वज्ञ है। (अल्लाह ने) कहाः हे आदम! इन्हें इन के नाम बताओ, और आदम ने जब उन के नाम बता दिए तो (अल्लाह ने) कहाः क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आकाशों तथा धरती की क्षिप्त बातों को जानता हूँ, तथा तुम जो बोलते और मन में रखते हो, सब जानता हूँ?)।

यह आयतें आदम अलैहिस्सलाम की सृष्टि की शुरुआत एवं उत्पत्ति की जानकारी प्रदान करती हैं। यह क़ुरआन की उन गूढ़ और अदृश्य सत्यताओं को स्पष्ट करती हैं, जिन्हें केवल

अल्लाह ही जानता है, और यह इंसान को बताती हैं कि उसकी सृष्टि कैसे शुरू हुई और उसके बारे में अल्लाह ने अपने फ़रिश्तों को क्या सूचना दी तथा उसके बाद क्या हुआ। यह अल्लाह की ओर से इंसान के लिए एक कृपा और आशीर्वाद है, क्योंकि वह उन्हें उनकी सृष्टि से पहले फ़रिश्तों से उनके बारे में चर्चा को याद दिला रहा है ﴿وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي ٱلْأَرْضِ خَلِيفَةً﴾ और (हे नबी! याद करें) जब आपके पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक ख़लीफ़ा बनाने जा रहा हूँ)। इस उपकार का उल्लेख करते हुए तथा इस आयत का अर्थ बताते हुए इब्न -ए- कसीर[1] रहिमहुल्लाह ने कहा है कि: ﴿إِنِّي جَاعِلٌ فِي ٱلْأَرْضِ خَلِيفَةً﴾ "ख़लीफा" का मतलब है, एक ऐसा समुदाय जो एक-दूसरे के स्थान पर आता रहेगा, एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी।

यह आयतें हमें यह सिखाती हैं कि फरिश्तों को केवल वही ज्ञान है, जो अल्लाह ने उन्हें दिया है, जैसा कि अल्लाह ने फरिश्तों से कहा: ﴿إِنِّيٓ أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ﴾ (मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते)। इसी प्रकार, फरिश्ते भी अपने ज्ञान के सीमित होने का इक़रार करते हुए कहते हैं: ﴿قَالُوا۟ سُبْحَٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْحَكِيمُ﴾ (सब ने कहा: तू पवित्र है। हम तो उतना ही जानते हैं, जितना तू ने हमें सिखाया है, वास्तव में तू अति ज्ञानी तत्वज्ञ है)।

इन आयतों से यह पता चलता है कि अल्लाह तआला अपनी मर्जी से अपनी मख़लूक़ (सृष्टि) में से जिसे चाहे चुनता है और उसे विशेष अधिकार देता है, जैसे कि उसने आदम अलैहिस्सलाम को उन नामों का ज्ञान दिया जो उसने फरिश्तों को नहीं दिया था। यह अल्लाह का फ़ज़्ल (अनुग्रह) है जो वह जिसे चाहे उसे प्रदान करता है। ﴿وَعَلَّمَ ءَادَمَ ٱلْأَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى ٱلْمَلَٰٓئِكَةِ فَقَالَ أَنۢبِـُٔونِى بِأَسْمَآءِ هَٰٓؤُلَآءِ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٣١﴾ قَالُوا۟ سُبْحَٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٣٢﴾ قَالَ يَٰٓـَٔادَمُ أَنۢبِئْهُم بِأَسْمَآئِهِمْ ۖ فَلَمَّآ أَنۢبَأَهُم بِأَسْمَآئِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّىٓ أَعْلَمُ غَيْبَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٣٣﴾﴾ (और उस ने आदम को सभी नाम सिखा दिए, फिर उन को फ़रिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया, और कहा: मुझे इन के नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो? सब ने कहा: तू पवित्र है। हम तो उतना ही जानते हैं, जितना तू ने हमें सिखाया है, वास्तव में तू अति ज्ञानी तत्वज्ञ है। (अल्लाह ने) कहा: हे आदम! इन्हें इन के नाम बताओ, और आदम ने जब उन के नाम बता दिए तो (अल्लाह ने) कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आकाशों तथा धरती की क्षिप्त बातों को जानता हूँ, तथा तुम जो बोलते और मन में रखते हो, सब जानता हूँ?)।

(1) तफ़सीरुल क़ुरआनिल अज़ीम (1/ 72)।

आदम अलैहिस्सलाम तथा उनके बाद उनकी संतान को नामों का ज्ञान देना अल्लाह तआला की ओर से एक बड़ी कृपा तथा मनुष्य के लिए एक विशेष अनुग्रह है ﴿وَعَلَّمَ ءَادَمَ ٱلْأَسْمَآءَ كُلَّهَا﴾ (और उसने आदम को सब नाम सिखाए), अर्थात चीजों के नाम और उनके अभिप्राय। अल्लाह ने उन्हें शब्द और उनके अर्थ सिखाए, अर्थात संज्ञाएं और उनके अर्थ, यहाँ तक कि छोटी और बड़ी वस्तुओं के नामों तक, जैसे कि छोटी और बड़ी थाली।

यह मनुष्य पर अनिवार्य करता है कि वह इस कृपा का आभार व्यक्त करे: अस्तित्व की कृपा और ज्ञान की कृपा। और यह कि अल्लाह तआला ही वह है जिसने उसे यह ज्ञान प्रदान किया, इसलिए वह अपने ज्ञान पर अहंकार न करे, क्योंकि यह विशेषता अल्लाह की ओर से है, जिसमें समझ, याददाश्त, व्याख्या, निष्कर्ष और अनुप्रयोग शामिल हैं। यदि अल्लाह तआला की यह कृपा न होती, तो मनुष्य अपने ज्ञान, विकास और नवाचार में इस स्थिति में न होता।

इन आयतों से यह भी पता चलता है कि फरिश्ते अल्लाह की तस्बीह और तक़दीस करते हैं और उस की नाफरमानी नहीं करते। और उनमें वह भ्रष्टाचार नहीं होता जो इंसानों में होता है। अल्लाह तआला ने उनके बारे में कहा है: ﴿قَالُوٓا۟ أَتَجْعَلُ فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ ٱلدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۖ قَالَ إِنِّىٓ أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ﴾ (वह बोलेः क्या तू उस में उसे बनाएगा जो उस में उपद्रव करेगा, तथा रक्त बहाएगा? जब कि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं? तो अल्लाह ने कहाः ﴿قَالَ إِنِّىٓ أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ﴾ (अल्लाह ने कहाः जो मैं जानता हूँ वह तुम नहीं जानते)।

इन पवित्र आयतों से यह पता चलता है कि फरिश्तों को अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम की रचना से पहले यह जानकारी दी थी कि मनुष्यों में भ्रष्टाचार, हत्या, लूट, अत्याचार और अविश्वास होगा। लेकिन अल्लाह तआला यह भी जानता था कि मनुष्यों में अंबिया, नेक लोग, सत्यवादी, उपासक और शहीद भी होंगे।

यह आयतें फरिश्तों के अल्लाह से बातचीत में उनके शिष्टाचार को भी दर्शाती हैं, जहां उन्होंने कहा: ﴿لَا عِلْمَ لَنَآ إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَآ﴾ (हमें कोई ज्ञान नहीं है, सिवाय जो तू ने हमें सिखाया है)। इसके बाद उन्होंने अल्लाह की महिमा का बखान किया तथा यह स्वीकार किया कि वे केवल उतना ही जानते हैं जितना अल्लाह ने उन्हें सिखाया है, ﴿إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْحَكِيمُ﴾ (तू ही सर्वज्ञ, सर्वबुद्धिमान है)।

यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि जब वह किसी चीज़ को न समझ सके तो कहे: "अल्लाहु तआला आलम (सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह ही बेहतर

जानता है)।" और वह ऐसी चीज़ पर बोलने से बचे जिसके बारे में उसे जानकारी न हो, ताकि वह सम्मानित फ़रिश्तों (देवदूतों) के सद्गुणों को अपनाने की कोशिश कर सके। इसी प्रकार, यह इस बात का महत्व भी दिखाता है कि अज्ञानता या किसी समस्या के समय अल्लाह तआला के प्रति आदर और सम्मान बनाए रखना चाहिए।

इन आयतों से यह सिद्ध होता है कि जो कुछ भी उसके ज्ञान और दृष्टि में नहीं आता है, चाहे वह आकाशों और पृथ्वी में सृष्टि से संबंधित हो, वह अल्लाह तआला के ज्ञान से ओझल नहीं होता। बल्कि अल्लाह तआला उन बातों को भी जानता है जो उसकी मख़लूक़ (सृष्टि) प्रकट करती है और जो वे छिपाती और गुप्त रखती है। अल्लाह तआला का कथन है: ﴿أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّيٓ أَعْلَمُ غَيْبَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ﴾ ((अल्लाह ने) कहाः क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आकाशों तथा धरती की क्षिप्त बातों को जानता हूँ, तथा तुम जो बोलते और मन में रखते हो, सब जानता हूँ?)।

अल्लाह तआला के ज्ञान की यह समझ, अल्लाह से डरने, उसका भय रखने, आत्मनिरीक्षण करने और हर छोटे और बड़े मामले में उसी की शरण लेने की मांग करती है, ताकि हर प्रकार की बुराई दूर हो सके या कोई भी भलाई प्राप्त की जा सके।

﴿وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبَىٰ وَٱسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٣٤﴾ وَقُلْنَا يَٰٓـَٔادَمُ ٱسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ ٱلْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ ٱلشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٣٥﴾ فَأَزَلَّهُمَا ٱلشَّيْطَٰنُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ ۖ وَقُلْنَا ٱهْبِطُوا۟ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ وَلَكُمْ فِى ٱلْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَٰعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾ فَتَلَقَّىٰٓ ءَادَمُ مِن رَّبِّهِۦ كَلِمَٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٣٧﴾ قُلْنَا ٱهْبِطُوا۟ مِنْهَا جَمِيعًا ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّى هُدًى فَمَن تَبِعَ هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَآ أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٣٩﴾﴾
[سورة البقرة:٣٤-٣٩].

(और जब हम ने फ़रिश्तों से कहाः आदम को सज्दा करो, तो इब्लीस के सिवा सबने सज्दा किया, उसने इन्कार तथा अभिमान किया और काफ़िरों में से हो गया। और हमने कहाः हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो तथा इसमें से जिस स्थान से चाहो, मनमानी खाओ और इस वृक्ष के समीप न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे। तो शैतान ने दोनों को उससे भटका दिया और जिस (सुख) में थे, उससे उन्हें निकाल दिया और हमने कहाः तुम सब उससे उतरो, तुम एक-दूसरे के शत्रु हो और तुम्हारे लिए धरती में रहना तथा एक निश्चित अवधि[1] तक उपभोग्य है। फिर आदम ने अपने पालनहार से कुछ शब्द सीखे, तो उसने उसे

(2) अर्थात अपनी निश्चित आयु तक सांसारिक जीवन के संसाधन से लाभान्वित होना है।

क्षमा कर दिया। वह बड़ा क्षमी दयावान[1] है। हमने कहाः इस से सब उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरा मार्गदर्शन आये, तो जो मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेंगे, उनके लिए कोई डर नहीं होगा और न वे उदासीन होंगे। तथा जो अस्वीकार करेंगे और हमारी आयतों को मिथ्या कहेंगे, तो वही नारकी हैं और वही उसमें सदावासी होंगे)।

इन आयतों से यह स्पष्ट होता है कि इस मानव का अल्लाह तआला के समक्ष एक विशिष्ट स्थान है, क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को आदेश दिया कि वे आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करें, ताकि आदम अलैहिस्सलाम को सम्मानित किया जा सके और अल्लाह तआला की इबादत का इज़हार हो सके, क्योंकि अल्लाह की आज्ञा का पालन करना उसकी इबादत का अभिन्न अंग है। इन आयतों से यह भी ज्ञात होता है कि फ़रिश्तों ने अपने रब के आदेश को बिना किसी तर्क-वितर्क के पूरी तरह मान लिया, क्योंकि वे वही करते हैं जो उन्हें आदेश दिया जाता है। यह इस बात को रेखांकित करता है कि अल्लाह तआला की आज्ञा का पालन बिना किसी बौद्धिक विवाद के करना चाहिए। साथ ही, यह दिखाता है कि अल्लाह के वचनों (वह्य) को मानव बुद्धि से ऊपर रखना चाहिए, क्योंकि अल्लाह के वचनों में पूर्णता है, जबकि मानव बुद्धि सीमित है। इन आयतों में यह भी बताया गया है कि इबलीस ने घमंड और अहंकार के कारण सज्दा करने से इनकार कर दिया, और उसकी यह अवज्ञा उसे काफ़िरों में शामिल कर गई। जबकि बाकी फ़रिश्तों ने अपने रब की आज्ञा का पालन किया और सम्मानितों में शामिल हुए। जैसा कि अल्लाह का फरमान है: ﴿وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبَىٰ وَٱسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ ٱلْكَٰفِرِينَ﴾ (और जब हम ने फ़रिश्तों से कहाः आदम को सज्दा करो, तो इब्लीस के सिवा सबने सज्दा किया, उसने इन्कार तथा अभिमान किया और काफ़िरों में से हो गया)।

अहंकार (घमंड) भलाई के मार्ग में रुकावट है, क्योंकि यह इंसान को उसकी भलाई, सफलता और मुक्ति से दूर कर देता है। इसका उदाहरण उन लोगों में देखा जा सकता है, जिन्होंने रसूलों (संदेशवाहकों) को देखा, सत्य प्रमाण उनके सामने प्रस्तुत किए गए, फिर भी उन्होंने अहंकार के कारण सत्य को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। इसी तरह, क़ुरैश के कुछ काफिरों और अन्य लोगों ने भी अहंकार किया, जबकि वे सत्य को पहचानते थे। उन्होंने हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, उनके जीवन और आचरण को परखा और

(1) आयत का भावार्थ यह है कि आदम ने कुछ शब्द सीखे और उन के द्वारा क्षमा याचना की, तो अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। आदम के उन शब्दों की व्याख्या भाष्यकारों ने इन शब्दों से की हैः "आदम तथा ह़व्वा दोनों ने कहाः हे हमारे पालनहार! हम ने अपने प्राणों पर अत्याचार कर लिया और यदि तू ने हमें क्षमा और हम पर दया नहीं की, तो हम क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे।

यह जाना कि आपकी नुबुव्वत से पहले और बाद में आपकी सत्यनिष्ठा, उत्तम गुण, श्रेष्ठ आचरण और विनम्रता कैसी थी। इसके बावजूद, वे घमंड के कारण सत्य का इनकार करते रहे।

इन आयतों में अल्लाह तआला के लिए कलाम (बोलने की विशेषता) को सिद्ध किया गया है। यह भी स्पष्ट किया गया है कि आदेश देना और निषेध करना केवल अल्लाह तआला का अधिकार है। वह जो कुछ करता है, उस के लिए उससे कोई प्रश्न नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह सर्वोच्च और महिमामय है, जबकि उसके बंदों से उनके कर्मों के बारे में पूछा जाएगा और उन्हें उनके कार्यों का हिसाब देना होगा। साथ ही, यह भी बताया गया है कि अल्लाह तआला की ह़िकमत (प्रज्ञा) असीम और परिपूर्ण है, जिसके आधार पर वह आदेश देता और रोकता है। इसके विपरीत, उसकी मख़लूक़ (सृष्टि) का ज्ञान सीमित और अपूर्ण है। इसलिए, अल्लाह तआला की हिकमत को समझने के लिए उसके आदेशों का पालन करना और विनम्रता अपनाना आवश्यक है।

इन आयतों से यह स्पष्ट होता है कि आदम अलैहिस्सलाम और उनकी पत्नी का मूल निवास जन्नत था। यह बात यह सुनिश्चित करती है कि जो व्यक्ति अल्लाह तआला की आज्ञा का पालन करेगा, ईमान लाएगा और नेक कर्म करेगा, वह मृत्यु के बाद जन्नत में लौटेगा। ﴿وَقُلْنَا يَـٰٓـَٔادَمُ ٱسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ ٱلْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا﴾ (और हमने कहाः हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो तथा इसमें से जिस स्थान से चाहो, मनमानी खाओ)।

इसी प्रकार, इन आयतों से जन्नत में खाने–पीने की सुविधा और उसकी व्यापकता सिद्ध होती है। जन्नत का खाना आनंददायक, सुखद और संतोषजनक होगा। साथ ही, इसमें स्वतंत्र रूप से घूमने–फिरने और वहाँ की सभी नेमतों का आनंद लेने की आज़ादी भी स्पष्ट होती है, जैसा कि कहा गया है: ﴿وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا﴾ (तथा इसमें से जिस स्थान से चाहो, मनमानी खाओ)।

इन आयतों में यह स्पष्ट किया गया है कि अल्लाह तआला की हिकमत (प्रज्ञा) यह थी कि उसने अपने बंदों की परीक्षा ली। आदम अलैहिस्सलाम की परीक्षा इस बात से ली गई कि उन्हें उस वृक्ष से दूर रहने का आदेश दिया गया था, जिसके बारे में कहा गया: ﴿وَلَا تَقْرَبَا هَـٰذِهِ ٱلشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ ٱلظَّـٰلِمِينَ﴾ (और इस वृक्ष के समीप न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे)। इन आयतों में परीक्षा के परिणाम और उसके प्रतिफल को सामान्य रूप से भी स्पष्ट किया गया है: ﴿فَتَكُونَا مِنَ ٱلظَّـٰلِمِينَ﴾ (अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे), यह दर्शाता है कि बंदे का अपने रब की अवज्ञा करना वास्तव में उसका अपने ऊपर अत्याचार है।

इसलिए, बंदे पर यह अनिवार्य है कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करे और अवज्ञा बचे।

इसके अलावा, यह भी स्पष्ट किया गया है कि यदि निषेध का कारण समझ में न भी आए, तब भी उस पर सवाल न करना चाहिए, क्योंकि अल्लाह की हिकमत सम्पूर्ण और असीम है।

इन आयतों में यह भी बताया गया है कि शैतान इंसान का शत्रु है, जो तब से इंसान के पीछे पड़ा है, जब अल्लाह तआला ने हमारे पहले पिता, आदम अलैहिस्सलाम, को पैदा किया था, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: ﴿فَأَزَلَّهُمَا ٱلشَّيۡطَٰنُ عَنۡهَا فَأَخۡرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِۖ﴾ (तो शैतान ने दोनों को उससे भटका दिया और जिस (सुख) में थे, उससे उन्हें निकाल दिया)। इससे यह सिद्ध होता है कि शैतान की यह दुश्मनी केवल आदम अलैहिस्सलाम तक सीमित नहीं रही, बल्कि उनके बाद आने वाली उनकी संतान को भी शैतान का शत्रु मानना चाहिए। इसलिए, इंसान को शैतान की फुसफुसाहट (वसवसा) और उसकी बहकाने वाली चालों से बचना चाहिए, जो उन्हें जन्नत से बाहर करने और भटकाने के लिए होती हैं।

अल्लाह तआला ने उस अवज्ञा का दण्ड देते हुए फ़रमाया: ﴿وَقُلۡنَا ٱهۡبِطُواْ بَعۡضُكُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوّٞۖ﴾ (और हमने कहाः तुम सब उससे उतरो, तुम एक-दूसरे के शत्रु हो)। यह आयत इस बात को स्पष्ट करती है कि जन्नत दुश्मनी और घृणा का स्थान नहीं है, बल्कि वह सुख और आनंद का स्थान है। जहाँ तक धरती का सवाल है, तो यह दुश्मनी और संघर्ष का स्थान है। इन आयतों के माध्यम से इंसान पर यह प्रमाणित किया गया कि उसका असली दुश्मन शैतान है। शैतान की शैतानी शक्तियों में एक यह भी है कि वह इंसान को धोखे में डालता है, उसे पाप को आकर्षक बनाकर उसका पालन करने के लिए उकसाता है, जिससे वह जन्नत से दूर हो जाए। यही कारण है कि इंसान को शैतान से सावधान रहना चाहिए, ताकि वह उसे जन्नत से दूर न कर दे, जैसा कि उसने आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत से बाहर किया था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: ﴿وَقُلۡنَا ٱهۡبِطُواْ بَعۡضُكُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوّٞۖ وَلَكُمۡ فِي ٱلۡأَرۡضِ مُسۡتَقَرّٞ وَمَتَٰعٌ إِلَىٰ حِينٖ﴾ (हमने कहाः तुम सब उससे उतरो, तुम एक-दूसरे के शत्रु हो और तुम्हारे लिए धरती में रहना तथा एक निश्चित अवधि तक उपभोग्य है।)।

अल्लाह तआला का कथनः ﴿وَلَكُمۡ فِي ٱلۡأَرۡضِ مُسۡتَقَرّٞ وَمَتَٰعٌ إِلَىٰ حِينٖ﴾ (और तुम्हारे लिए धरती में रहना तथा एक निश्चित अवधि तक उपभोग्य है), इस बात का प्रमाण है कि इंसान और शैतान का धरती पर ठिकाना और जीवन एक सीमित समय के लिए है, अर्थात एक निश्चित अवधि तक। यह अवधि हर व्यक्ति के जीवन के अंत (मृत्यु) तक और पूरी मानवता के लिए क़यामत तक सीमित है। यह जीवन धरती पर एक अस्थायी ठिकाना है, जो अल्लाह तआला के निर्धारित समय तक रहेगा। इस दौरान, अल्लाह तआला ने धरती पर ﴿وَمَتَٰعٌ إِلَىٰ حِينٖ﴾ "मताअ" (उपभोग्य)

दिया है, जिसमें खाने-पीने, पहनने, जीवन और अन्य सुख-सुविधाओं का आनंद शामिल है। यह सब कुछ निश्चित समय तक है, जो अल्लाह तआला के नियमानुसार है।(1)

और इसके लाभों में से एक यह भी है कि सांसारिक जीवन एक सीमित अवधि तक का सुख है, और यदि ऐसा है, तो मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह इस जीवन में उपलब्ध चीजों का आनंद उठाए, लेकिन उसे इस प्रकार उपयोग करे कि यह परलोक के सुख का माध्यम बन जाए, तथा सांसारिक सुखों को स्वर्ग के आनंद की ओर ले जाने वाला मार्ग समझे, क्योंकि यह दुनिया एक अस्थायी स्थान है, जो केवल एक निश्चित समय तक के लिए है।

और वाक्यांश ﴿إِلَىٰ حِينٍ﴾ (एक समय तक) मन को ठहरने पर मजबूर कर देता है। यह इंगित करता है कि यह दुनिया "मताअ (उपभोग्य)" है, लेकिन केवल एक समय तक। यह भी कि यह दुनिया कर्म का स्थान है, लेकिन केवल एक समय तक। और शैतान उसका शत्रु है, लेकिन केवल एक समय तक। तो उसे शैतान को केवल एक समय तक के लिए शत्रु समझना चाहिए और धैर्य रखना चाहिए, केवल एक समय तक। और उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करने में भी धैर्य रखना चाहिए, केवल एक समय तक। अतः अल्लाह का यह कथन ﴿إِلَىٰ حِينٍ﴾ (एक समय तक) शक्ति, आशा, और एक मार्ग बन जाए, जिसके द्वारा हर बाधा को पार कर जन्नत का रास्ता हासिल किया जा सके। जैसा कि क़ुरआन में है: ﴿وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ﴾ (और तुम्हारे लिए धरती में रहना तथा एक निश्चित अवधि तक उपभोग्य है)।

फिर, अल्लाह की रहमत और उसकी देखभाल इंसान का पीछा करती है और उसे हर ओर से घेरे रहती है, जैसा कि क़ुरआन में कहा गया है: ﴿فَتَلَقَّىٰ آدَمُ مِن رَّبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ﴾ (फिर आदम ने अपने पालनहार से कुछ शब्द सीखे, तो उसने उसे क्षमा कर दिया। वह बड़ा क्षमी दयावान है)। हालांकि आदम अलैहिस्सलाम ने गलती की थी, फिर भी अल्लाह तआला इस इंसान पर रहम करता है और उससे अत्यंत कोमलता से पेश आता है। आदम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से वे वचन सीखे, जिनमें उन्होंने कहा: ﴿قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا﴾ "रब्बना ज़लमना अंफुसना" (हे हमारे पालनहार! हमने अपनी आत्मा पर अत्याचार किया है), और अपनी गलती को स्वीकार किया और अल्लाह से माफी मांगी। अल्लाह ने उनकी तौबा स्वीकार कर ली।(2) ﴿فَتَابَ عَلَيْهِ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ﴾ (तो (अल्लाह ने) उसे क्षमा कर दिया, वह बड़ा क्षमी

(2) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 219)।

(1) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान (1/ 53)।

दयावान है)। यह रहमत, देखभाल, अनुग्रह और यह सम्मान जो अल्लाह ने इंसान को दिया है, इसके बदले में बंदे पर यह अनिवार्य है कि वह अपने पालनहार और सृजनकर्ता से प्रेम करे, जिसने उसे अनगिनत नेमतें और असाधारण देखभाल प्रदान की है। उसने उसे सम्मानित किया और हर प्रकार की भलाई से नवाज़ा है।

फिर अल्लाह तआला इस आयत के अंत में अपनी दो महान विशेषताओं को स्पष्ट करता है: ﴿إِنَّهُۥ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ﴾ "इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम" (वह बड़ा क्षमी दयावान है)। अल्लाह तआला यह बताता है कि वह तौबा स्वीकार करने वाला है, उस व्यक्ति के लिए जो तौबा करता है, क्षमा मांगता है और उसकी ओर लौटता है। और वह अत्यंत दयालु है। जिसकी ये विशेषताएँ हैं, उससे यह अपेक्षा की जाती है कि बंदा उससे तौबा करे और उसकी ओर लौट आए। उसकी रहमत की आशा रखे, उसके प्रति समर्पण करे, और यह सब प्रेम, उसकी उदारता और रहमत की लालसा के साथ हो। साथ ही, उसके दंड और उसकी दी हुई नेमतों के छिन जाने के भय के कारण भी।

इन पवित्र आयतों से यह पता चलता है कि "उतरने" (हबूत) का आदेश ऊंचाई से नीचे की ओर था, अर्थात स्वर्ग से धरती पर। इस उतरने के माध्यम से धरती पर इंसान और जिन्न दोनों की जिंदगी संभव हुई। इसका कारण शैतान द्वारा आदम अलैहिस्सलाम को बहकाना था, जिसके परिणामस्वरूप वह उस वृक्ष का फल खा बैठे, जिससे मना किया गया था। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: ﴿قُلْنَا ٱهْبِطُوا۟ مِنْهَا جَمِيعًا﴾ "कुल्ना इह्बितू मिन्हा जमीअन" (हमने कहा, तुम सब यहाँ से नीचे उतर जाओ)।

अल्लाह तआला की रहमत उसके बंदों का लगातार पीछा करती है, वह उन से वादा करता है, और उसका वादा सत्य है। वह उनके पास मार्गदर्शन भेजता है, चाहे वह रसूल हों या किताबें, जो सही मार्ग और सीधा रास्ता स्पष्ट करती हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّى هُدًى فَمَن تَبِعَ هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَـٰتِنَآ أُو۟لَـٰٓئِكَ أَصْحَـٰبُ ٱلنَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَـٰلِدُونَ ﴿٣٩﴾﴾ (फिर यदि तुम्हारे पास मेरा मार्गदर्शन आये, तो जो मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेंगे, उनके लिए कोई डर नहीं होगा और न वे उदासीन होंगे। तथा जो अस्वीकार करेंगे और हमारी आयतों को मिथ्या कहेंगे, तो वही नारकी हैं और वही उसमें सदावासी होंगे)।

फिर, अल्लाह तआला की दया का एक और पहलू यह है कि उसने यह स्पष्ट कर दिया कि जो उसके मार्गदर्शन का अनुसरण करेगा, उसका क्या हाल होगा और उसका अंजाम क्या होगा। ऐसा व्यक्ति न तो डरेगा और न ही दुखी होगा। वह न वर्तमान में किसी चीज़ से

डरेगा और न भविष्य को लेकर चिंतित होगा। न ही वह उन चीज़ों पर दुख करेगा जो बीत चुकी हैं और समाप्त हो गई हैं, ताकि उसकी जिंदगी में कोई खलल न आए। क्योंकि भय और दुख इंसान के लिए दर्द, घबराहट और चिंता का कारण होते हैं। भय का संबंध वर्तमान और भविष्य से होता है, जबकि दुख का संबंध उन चीज़ों से होता है जो पहले घट चुकी हैं, जिन पर इंसान पछताता है और खेद व्यक्त करता है।

अल्लाह की शरीअत वही मार्गदर्शन है जो मानवता को बुराई से बचाता है और उन्हें भलाई प्रदान करता है, बशर्ते कि वे अल्लाह के मार्गदर्शन का पालन करें और उसकी आज्ञाओं का अनुसरण करें। लेकिन जो लोग कुफ़्र करते हैं और अल्लाह के मार्गदर्शन और उसकी आयतों को झुठलाते हैं, उनका अंजाम जहन्नम है, जिस में वे हमेशा रहेंगे।

यह महान सृष्टिकर्ता, जो सब कुछ का मालिक है, अपने बंदों को अपने मार्गदर्शन और हिदायत की ओर बुलाता है, उन्हें स्पष्ट रूप से समझाता है और राह दिखाता है। वह तौबा स्वीकार करता है, क्षमा करता है और उन लोगों को माफ करता है जो उसकी ओर लौटते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। वह अपनी दया और अनुग्रह से अपने बंदों पर कृपा करता है। अल्लाह अपने बंदों का और उनके पास जो कुछ है, सबका मालिक है। इसलिए, यह उसके बंदे का फर्ज़ बनता है कि वह दूसरों के प्रति रहमदिल, मार्गदर्शक, क्षमाशील और दयालु बने। विशेष रूप से उनके साथ, जो उसके जैसे ही अल्लाह के बंदे हैं। क्योंकि वह उनका मालिक नहीं है, बल्कि स्वयं अल्लाह का एक बंदा है, जैसा कि वे हैं।

फिर इन पवित्र आयतों का अंत उन लोगों के लिए अल्लाह के वादे के साथ होता है जो कुफ़्र करते हैं और उसकी आयतों को झुठलाते हैं: ﴿وَٱلَّذِينَ كَفَرُواْ وَكَذَّبُواْ بِـَٔايَٰتِنَآ أُوْلَٰٓئِكَ أَصۡحَٰبُ ٱلنَّارِۖ هُمۡ فِيهَا خَٰلِدُونَ ٣٩﴾ (तथा जो अस्वीकार करेंगे और हमारी आयतों को मिथ्या कहेंगे, तो वही नारकी हैं और वही उसमें सदावासी होंगे)। यह चेतावनी और अल्लाह की ओर से एक कड़ी धमकी है, जो अपने वादे के खिलाफ नहीं करता। इसका उद्देश्य यह है कि इंसान कुफ़्र से सावधान रहे और उसे अपनाने के नतीजे से बचे। क्योंकि इसका अंजाम एक बड़ी हानि है, जिसका परिणाम हमेशा के लिए जहन्नम में रहना है।

﴿يَٰبَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ ٱذۡكُرُواْ نِعۡمَتِيَ ٱلَّتِيٓ أَنۡعَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ وَأَوۡفُواْ بِعَهۡدِيٓ أُوفِ بِعَهۡدِكُمۡ وَإِيَّٰيَ فَٱرۡهَبُونِ ٤٠ وَءَامِنُواْ
بِمَآ أَنزَلۡتُ مُصَدِّقٗا لِّمَا مَعَكُمۡ وَلَا تَكُونُوٓاْ أَوَّلَ كَافِرِۭ بِهِۦۖ وَلَا تَشۡتَرُواْ بِـَٔايَٰتِي ثَمَنٗا قَلِيلٗا وَإِيَّٰيَ فَٱتَّقُونِ ٤١ وَلَا تَلۡبِسُواْ
ٱلۡحَقَّ بِٱلۡبَٰطِلِ وَتَكۡتُمُواْ ٱلۡحَقَّ وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ٤٢ وَأَقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُواْ ٱلزَّكَوٰةَ وَٱرۡكَعُواْ مَعَ ٱلرَّٰكِعِينَ ٤٣

﴿ أَتَأْمُرُونَ ٱلنَّاسَ بِٱلْبِرِّ وَتَنسَوْنَ أَنفُسَكُمْ وَأَنتُمْ تَتْلُونَ ٱلْكِتَٰبَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٤٤﴾ وَٱسْتَعِينُوا۟ بِٱلصَّبْرِ وَٱلصَّلَوٰةِ ۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى ٱلْخَٰشِعِينَ ﴿٤٥﴾ ٱلَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَٰقُوا۟ رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَٰجِعُونَ ﴿٤٦﴾ ﴾ [سورة البقرة: ٤٠-٤٦].

(हे बनी इस्राईल![1] मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैंने तुमपर किया तथा मुझसे किया गया वचन पूरा करो, मैं तुम्हें अपना दिया वचन पूरा करूँगा तथा मुझी से डरो। तथा उस (क़ुर्आन) पर ईमान लाओ, जो मैंने उतारा है, वह उसका प्रमाणकारी है, जो तुम्हारे पास है और तुम, सबसे पहले इसके निवर्ती न बन जाओ तथा मेरी आयतों को तनिक मूल्य पर न बेचो और केवल मुझी से डरो। तथा सत्य को असत्य से न मिलाओ और न सत्य को जानते हुए छुपाओ। तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो तथा झुकने वालों के साथ झुको (रुकू करो) क्या तुम, लोगों को सदाचार का आदेश देते हो और अपने-आपको भूल जाते हो? जबकि तुम पुस्तक (तौरात) का अध्ययन करते हो! क्या तुम समझ नहीं रखते। तथा धैर्य और नमाज़ का सहारा लो, निश्चय नमाज़ भारी है, परन्तु विनीतों पर (भारी नहीं)। जो समझते हैं कि उन्हें अपने पालनहार से मिलना है और उन्हें फिर उसी की ओर (अपने कर्मों का फल भोगने के लिए) जाना है।

इसके बाद, क़ुरआन के इस संदर्भ में अल्लाह तआला बनी इस्राईल और उन पर अपनी दया के बारे में चर्चा करता है। यह संबोधन सीधा, याद दिलाने वाला और स्पष्ट करने वाला है, जो न केवल बनी इस्राईल के लिए है, बल्कि ईमान वालों और अन्य लोगों के लिए भी है। इसमें अल्लाह ने अपने उपकारों का उल्लेख किया और उन्हें उनके नबी याक़ूब (अलैहिस्सलाम), जो इस्राईल के नाम से जाने जाते हैं, की ओर संदर्भित किया। अल्लाह तआला ने इस संदर्भ में बनी इस्राईल पर अपनी व्यापक नेमतों का उल्लेख किया और उनसे संपूर्ण वफादारी की मांग की, ताकि उन्हें बिना किसी कमी के उनका पूरा प्रतिदान दिया जा सके। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿يَٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱذْكُرُوا۟ نِعْمَتِىَ ٱلَّتِىٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا۟ بِعَهْدِىٓ أُوفِ بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّٰىَ فَٱرْهَبُونِ ﴿٤٠﴾﴾ (हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैंने तुमपर किया तथा मुझसे किया गया वचन पूरा करो, मैं तुम्हें अपना दिया वचन पूरा करूँगा तथा मुझी से डरो)। यह संबोधन "يا या" (हे) के साथ हुआ, जो उन्हें ध्यान देने और सुनने की ओर बुलाता है। इसके बाद उन्हें उनके नबी याक़ूब अलैहिस्सलाम की ओर जोड़ा गया ﴿يَٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ﴾ (हे बनी

(1) इस्राईल आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पौत्र याक़ूब अलैहिस्सलाम की उपाधि है। इस लिये उन की संतान को बनी इस्राईल कहा गया है। यहाँ उन्हें यह प्रेरणा दी जा रही है कि क़ुर्आन तथा अन्तिम नबी को मान लें, जिस का वचन उन की पुस्तक "तौरात" में लिया गया है। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो पुत्र इस्माईल तथा इस्हाक़ हैं। इस्हाक़ की संतान से बहुत से नबी आये, परन्तु इस्माईल अलैहिस्सलाम के गोत्र से केवल अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आये।

इस्राईल!), जो इस्राईल के नाम से प्रसिद्ध हैं। अल्लाह ने उन्हें इस सम्मान और कोमलता के साथ संबोधित किया, फिर अल्लाह ने उन्हें अपनी वे नेमतें याद दिलाईं जिन्हें वे अच्छी तरह जानते हैं, और जिनका उल्लेख आगे की आयतों में विस्तार से आएगा। जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿ٱذۡكُرُواْ نِعۡمَتِيَ ٱلَّتِيٓ أَنۡعَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ﴾ (मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैंने तुमपर किया था)।

इसके बाद, जब अल्लाह तआला उन्हें अपनी उन नेमतों की याद दिलाता है जिन्हें वे अच्छी तरह जानते हैं, तो वह उन्हें आदेश देता है कि वे उस वादे को पूरा करें जो उन्होंने अल्लाह से किया था: ﴿وَأَوۡفُواْ بِعَهۡدِيٓ﴾ (और मेरे साथ किए गए वादे को पूरा करो)। इसके बदले में अल्लाह तआला उन्हें उनके लिए किए गए वादे को पूरा करने का भरोसा देता है: ﴿وَأَوۡفُواْ بِعَهۡدِيٓ أُوفِ بِعَهۡدِكُمۡ﴾ (ताकि मैं तुम्हारे साथ किए गए वादे को पूरा करूं)। यहां पर अल्लाह तआला के संबोधन की कोमलता और करुणा प्रकट होती है। अल्लाह का यह संवाद धीरे–धीरे प्रभावशाली और आकर्षक ढंग से प्रगति करता है। शुरुआत "या" (हे) के साथ हुई, जो उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए है। इसके बाद अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल को अपनी नेमतों की याद दिलाई और उन्हें आदेश दिया कि वे अपने वादे को पूरा करें। इस वादे को पूरा करने का प्रतिफल यह होगा कि अल्लाह तआला भी उनके साथ किए गए वादे को पूरा करेगा।

यह बात हमें समझाती है कि शिक्षा, संवाद और आमंत्रण (दावा) में क्रमबद्धता और कोमलता का कितना महत्व है। विचारों को सुधारने और जागरूकता पैदा करने में ऐसा क्रमिक दृष्टिकोण न केवल प्रभावी होता है, बल्कि उन लोगों को भी उनकी निष्क्रियता से बाहर निकालता है जो अनजान या लापरवाह हैं। अल्लाह के इस संबोधन में कोई कठोरता या आक्रामकता नहीं थी। यह हमें सिखाता है कि जब कोई सलाह दे, तो वह आलोचना या आक्रमण से शुरुआत न करे, बल्कि ऐसे तरीके अपनाए जो सुनने वाले में रुचि और सकारात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करें। साथ ही, दूसरों से बातचीत में कोमलता और अपनापन अपनाने का महत्व स्पष्ट होता है। यदि अल्लाह तआला अपने बंदों को इतनी कोमलता और सम्मान के साथ संबोधित करता है, तो इंसानों के बीच भी आपसी संबोधन में यह तरीका अपनाना और अधिक आवश्यक हो जाता है। यह दूसरों के दिलों को जीतने और उन्हें सही राह पर लाने का सबसे प्रभावी तरीका है।

इस आयत के लाभों में से है कि यह एक व्यापक मार्गदर्शन प्रस्तुत करती है, जिसके बाद उसको विस्तार दिया जाता है। व्यापक ज्ञान श्रोता और संबोधित व्यक्ति को आगे आने वाले विवरणों को जानने के लिए आकर्षित करता है। यह शैली विचारशीलता, ध्यान और

सच्चाई की ओर लौटने के लिए प्रेरित करती है, जिसे अपनाया और अमल में लाया जाना चाहिए। साथ ही, नेमतों की याद दिलाने से समझदार व्यक्ति के दिल में उपकारकर्ता के प्रति शर्म और कृतज्ञता की भावना उत्पन्न होती है, जो उसे मार्गदर्शन को सुनने, स्वीकारने और उस पर अमल करने की प्रेरणा देती है, लेकिन जिनके दिल में बीमारी और हठ है, वे इस प्रभाव से वंचित रहते हैं।

और बनी इस्राईल के विवरण के उल्लेख में यह प्रमाण मिलता है कि हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सच्चे नबी हैं। क्योंकि आपने मक्का में एक उम्मी[1] व्यक्ति के रूप में जीवन व्यतीत किया, न पढ़ सकते थे और न लिख सकते थे। इसके बावजूद, अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसे तथ्यों का उल्लेख कराया जो बनी इस्राईल पहले से जानते थे। यह किसी पूर्व जानकारी के बिना संभव नहीं था। इसके अलावा, इस भाषण का पिछले धर्म के मानने वालों के लिए निर्देश होना इस बात का प्रमाण है कि क़ुरआन और इस्लाम का संदेश संपूर्ण मानव जाति के लिए है। यह उन लोगों के लिए भी है, जिनके पास पहले से रसूल भेजे गए थे, जैसे बनी इस्राईल।

इस आयत में बनी इस्राईल को अल्लाह की व्यापक नेमतों की याद दिलाई गई और उनसे उस वचन को पूरा करने की मांग की गई जो उनके रब ने उनसे लिया था। यह वचन अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाने और उसकी शरीअत को स्थापित करने का था, ताकि वे अल्लाह तआला से अपना पूरा प्रतिफल प्राप्त कर सकें।

फिर, उन्हें अल्लाह से डरने और उससे खौफ रखने का आदेश दिया गया, क्योंकि डर और खौफ आज्ञाकारिता को अनिवार्य कर देते हैं। ﴿وَإِيَّىٰ فَٱرْهَبُونِ﴾ (तथा मुझी से डरो)।

फिर अल्लाह तआला बनी इस्राईल से फ़रमाता है: ﴿وَءَامِنُوا۟ بِمَآ أَنزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوٓا۟ أَوَّلَ كَافِرٍۭ بِهِۦ ۖ وَلَا تَشْتَرُوا۟ بِـَٔايَٰتِى ثَمَنًا قَلِيلًا وَإِيَّٰىَ فَٱتَّقُونِ ﴿٤١﴾﴾ (उस (क़ुर्आन) पर ईमान लाओ, जो मैंने उतारा है, वह उसका प्रमाणकारी है, जो तुम्हारे पास है और तुम, सबसे पहले इसके निवर्ती न बन जाओ तथा मेरी आयतों को तनिक मूल्य पर न बेचो और केवल मुझी से डरो)। अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल को आदेश दिया कि वे उस क़ुरआन पर ईमान लाएं, जिसे अल्लाह ने उतारा है। यह वही क़ुरआन है जो उनके पास मौजूद किताबों (तौरात और इंजील) की पुष्टि करता है, उनके विपरीत नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पिछली आसमानी

(1) वह व्यक्ति जो न तो पढ़ सकता है और न ही लिख सकता है, उसे अरबी भाषा में उम्मी कहा जाता है, मुस्लिम विद्वानों ने इसके अन्य अर्थ भी बताए हैं।

किताबों के आधार पर अहले किताब क़ुरआन की सच्चाई को पहचानते हैं, इसलिए, यह उनके लिए एक निशानी है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सच्चे नबी हैं और उन्हें अल्लाह तआला ने अपना रसूल बनाकर भेजा है।

फिर, जब उनके सामने सत्य स्पष्ट हो गया और यह सच्चाई उनके लिए सुनिश्चित हो गई, तो अल्लाह तआला ने उन्हें इसके इनकार से मना किया: ﴿وَلَا تَكُونُوٓاْ أَوَّلَ كَافِرِۭ بِهِۦ﴾ (और इसके पहले इनकार करने वाले न बनो)। यह संवाद में क्रमबद्धता और सत्य की स्थापना का उदाहरण है। इसके बाद, उन्हें आदेश दिया गया कि वे दुनिया के तुच्छ लाभों को अल्लाह की आयतों पर प्राथमिकता न दें: ﴿وَلَا تَشۡتَرُواْ بِـَٔايَٰتِي ثَمَنٗا قَلِيلٗا وَإِيَّٰيَ فَٱتَّقُونِ﴾ (तथा मेरी आयतों को तनिक मूल्य पर न बेचो और केवल मुझी से डरो)। अल्लाह तआला ने उन्हें चेतावनी दी कि उसकी आयतों को किसी भी तुच्छ मूल्य पर न बदलें, क्योंकि अल्लाह की आयतों के मुकाबले हर मूल्य अत्यंत तुच्छ और नगण्य है, और हर मूल्य अल्लाह की आयतों पर ईमान के मुकाबले बहुत तुच्छ है, क्योंकि अल्लाह की आयतें सबसे ऊंची और सबसे महान हैं।

और इससे यह स्पष्ट होता है कि संवाद की शैली में विविधता अपनाई गई है, वचन पूरा करने, अल्लाह से डरने और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारे गए क़ुरआन पर ईमान लाने की याद दिलाने के माध्यम से। इसे स्पष्ट प्रमाण द्वारा पुष्ट किया गया कि यह (क़ुरआन) उनके पास मौजूद पुस्तकों के विपरीत नहीं, बल्कि उनकी पुष्टि करता है। फिर उन्हें अल्लाह की आयतों को तुच्छ मानने से मना किया गया, जबकि सत्य उनके लिए स्पष्ट हो चुका था। इसके उदाहरण में यह बताया गया कि अपने भ्रमित लाभों को अल्लाह की आयतों और उसके प्रमाणों पर प्राथमिकता देना ऐसा है मानो उन्हें मामूली मूल्य पर बेच दिया गया हो। अपनी इच्छाओं और कल्पनाओं को अल्लाह की आयतों पर प्राथमिकता देना वास्तव में तुच्छ मूल्य देना है। यह बताता है कि अल्लाह की नेमतें अत्यंत कीमती हैं। एक सच्चा ईमान वाला कभी भी उन पर ऐसे कार्य को प्राथमिकता नहीं देगा जो उनसे टकराव रखता हो, यह सोचकर कि इससे उसे लाभ होगा। अल्लाह की आयतें इतनी महान हैं कि उन्हें तुच्छ मूल्य पर बेचना अनुचित है। उनके मुकाबले हर चीज़ नगण्य और तुच्छ है, चाहे उस की अल्लाह के वादों, चेतावनियों या स्वर्गों (हमेशा की जन्नतों) से तुलना की जाए।

फिर अल्लाह तआला उन्हें एक महत्वपूर्ण आदेश देता है इस आयत में: ﴿وَإِيَّٰيَ فَٱرۡهَبُونِ﴾ (और केवल मुझी से डरो)। क्योंकि अल्लाह से डर (तक़्वा) आज्ञाकारिता को अनिवार्य करता है, और यह आदेश देता है कि अल्लाह की आयतों पर ईमान को किसी

तुच्छ मूल्य से पहले रखा जाए। यदि कोई तुच्छ मूल्य चुना जाता है, तो यह इस बात का संकेत है कि दिलों से तक़्वा (अल्लाह का डर) चला गया है।

इसमें यह संकेत मिलता है कि तक़्वा (अल्लाह का डर) आज्ञाकारिता (ताअत) को अनिवार्य करता है, और तक़्वा की कमी से अपराध (गुनाह) होता है। एक व्यक्ति अपनी तक़्वा को इस बात से पहचान सकता है कि वह अल्लाह की कितनी आज्ञाओं का पालन करता है, वह अपनी नाफरमानी से कितना डरता है, और वह अल्लाह की दया और कृपा की प्राप्ति की कितनी आशा रखता है।

फिर अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल को सच को झूठ से मिलाने और सच को छुपाने से मना किया। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَلَا تَلْبِسُوا۟ ٱلْحَقَّ بِٱلْبَٰطِلِ وَتَكْتُمُوا۟ ٱلْحَقَّ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾﴾ (तथा सत्य को असत्य से न मिलाओ और न सत्य को जानते हुए छुपाओ)। यह आयत इस बात को स्पष्ट करती है कि उन्हें सच का ज्ञान था और वे उसे पूरी तरह से जानते थे। क्योंकि सच और झूठ को मिलाना केवल वही कर सकता है जो दोनों को सही तरीके से जानता हो। यह उनके लिए एक साक्ष्य था कि वे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत की सच्चाई को जानते थे, जैसे वे खुद को पहचानते थे, क्योंकि उनके पास वही सत्य था जो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा लाए गए संदेश से मेल खाता था।

यह इस बात को दर्शाता है कि जो व्यक्ति सत्य को जानता है, उसे सच को झूठ से मिलाने या उसे लोगों से छुपाने से बचना चाहिए, ताकि वह कोई ऐसा लाभ प्राप्त करने की कोशिश न करे जो वास्तव में उसके लिए सही न हो।

फिर, निर्देश और स्पष्टता में क्रमबद्धता के साथ इबादतों (पूजाओं) को अंजाम देने का आदेश दिया गया: ﴿وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ وَٱرْكَعُوا۟ مَعَ ٱلرَّٰكِعِينَ ﴿٤٣﴾﴾ (तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो तथा झुकने वालों के साथ झुको (रुकू करो))। यहां एक बार नमाज़ (प्रार्थना) का उल्लेख किया गया और दूसरी बार रुकूअ का आदेश दिया गया है, जो इसके महत्व को दोहराने और पुष्टि करने के लिए है। इस शैली में शब्दों का पुनरावृत्ति से बचते हुए, अर्थ को और बढ़ाया गया है। इस ढंग से यह दिखाया गया है कि कोई समग्र कार्य विशेष हिस्सों के साथ किया गया हो, तो वह कार्य पूरी तरह से शामिल होता है, क्योंकि पूरा कार्य तभी पूरा होता है जब हर हिस्सा पूरा किया जाता है। यही उदाहरण नमाज़ के बारे में

भी दिया गया, जैसे कि सज्दा (साष्टांग दंडवत) का उल्लेख किया जाता है, यह यह नहीं कहा जाता कि केवल सज्दा करना पर्याप्त है, बल्कि प्रार्थना को पूरी तरह से अंजाम देना आवश्यक है, जैसा कि सूरह अल–फुरक़ान में है: ﴿وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ﴿٦٤﴾﴾ (और वे जो अपने रब के लिए रात्रि में सज्दा और क़याम करते हैं)।

फिर उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों के संदर्भ में एक नकारात्मक (आलोचनात्मक) स्वर आता है, कि वे दूसरों को नेकी का हुक्म देते हैं, लेकिन खुद उस पर अमल नहीं करते। इसमें यह भी शामिल है कि वे उस पर अमल नहीं करते जो नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर आए ﴿أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنسَوْنَ أَنفُسَكُمْ﴾ (क्या तुम, लोगों को सदाचार का आदेश देते हो और अपने-आपको भूल जाते हो?)। क्योंकि यह नेकी का हिस्सा है कि वे उस पर अमल करें जो नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर आए। मदीना के यहूदी उन लोगों से, जिनसे उनका रिश्ता था और जो मदीना के मुसलमान हो चुके थे, कहा करते थे: "तुम उसी पर कायम रहो जिस पर तुम हो, और इस व्यक्ति (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आदेशों का पालन करो, क्योंकि उनकी बात सच्ची है।" इस व्यक्ति से उनका इशारा नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर था। वे दूसरों को इस बात का हुक्म देते थे, लेकिन खुद उस पर अमल नहीं करते थे।(1)

इससे यह पता चलता है कि व्यक्ति को भलाई का आदेश देने के साथ स्वयं भी उस पर अमल करना चाहिए, या जब कोई उसे भलाई का आदेश दे तो उसे करने से इंकार नहीं करना चाहिए। अल्लाह ने ऐसे कार्य को उस व्यक्ति के समान बताया है जो समझ नहीं रखता, जैसा कि (क़ुरआन में) कहा गया है: ﴿أَفَلَا تَعْقِلُونَ﴾ (क्या तुम समझ नहीं रखते), इस प्रकार, ऐसा व्यक्ति न तो समझ रखता है और न ही अपनी बुद्धि से लाभ उठाता है।

इससे यह ज्ञात होता है कि सत्य और भलाई को समझने और उसे स्वीकार करने में विवेक और विनम्रता का होना अत्यंत आवश्यक है। साथ ही, अपने अहंकार को दबाना भी महत्वपूर्ण है। जो व्यक्ति सत्य और भलाई को जानता है लेकिन उसे अपनाता नहीं, या उसका आदेश देता है लेकिन स्वयं उस पर अमल नहीं करता, वह उस व्यक्ति के समान है जो समझ नहीं रखता, अर्थात ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि से कोई लाभ नहीं उठा पाता।

फिर, अल्लाह तबारक व त'आला ने सत्य के पालन और भलाई के कार्यों को अंजाम देने में सबसे उत्तम सहायक चीज़ की ओर मार्गदर्शन किया, और वह है सब्र (धैर्य) तथा नमाज़

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 248)।

की स्थापना। अल्लाह त'आला ने फ़रमाया: ﴿وَٱسْتَعِينُواْ بِٱلصَّبْرِ وَٱلصَّلَوٰةِۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى ٱلْخَٰشِعِينَ ۝٤٥﴾ (तथा धैर्य और नमाज़ का सहारा लो, निश्चय नमाज़ भारी है, परन्तु विनीतों पर (भारी नहीं)। यह इस बात को दर्शाता है कि सब्र एक महान साधन है, जो सत्य पर स्थिरता, उसे स्वीकार करने और निरंतरता के साथ उस पर डटे रहने में सहायता प्रदान करता है, क्योंकि आत्मा को अपनी इच्छाओं के विरुद्ध सब्र करने की आवश्यकता होती है, इसी तरह इंसान और जिन्न के शैतानों के खिलाफ सब्र के माध्यम से आज्ञाकारिता पर डटे रहना और पाप से दूर रहना आवश्यक होता है। नमाज़ का भी महान प्रभाव होता है, क्योंकि यह अल्लाह त'आला से मदद प्राप्त करने और भलाई की ओर अग्रसर होने और बुराई को दूर करने में सहायता करती है। लेकिन यह नमाज़ उन लोगों पर कठिन और भारी होती है जो अल्लाह के सामने विनम्र और झुके हुए नहीं हैं, जबकि, जिनके दिल अल्लाह के लिए झुके हुए हैं, उनके लिए नमाज़ न कठिन होती है और न भारी। यह दर्शाता है कि जो लोग विनम्र नहीं होते, उन्हें नमाज़ का पालन भारी लगता है और यह उनके लिए कठिन होती है।

ख़ुशूअ का अर्थ है अल्लाह तबारक व त'आला के लिए डर, शांति, विनम्रता धारण करना तथा हृदय का झुकना। यह दर्शाता है कि अल्लाह त'आला के बाद सबसे उत्तम साधन, जिससे एक मुसलमान सहायता प्राप्त कर सकता है, वह सब्र (धैर्य) और नमाज़ है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह तरीक़ा था कि जब उन्हें कोई कठिनाई पेश आती, तो वे तुरंत नमाज़ की ओर आकर्षित होते। आदरणीय हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु त'आला अन्हु ने फ़रमाया: "जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कोई परेशानी या मुश्किल पेश आती, तो आप नमाज़ पढ़ा करते थे"।[1]

﴿يَٰبَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱذْكُرُواْ نِعْمَتِيَ ٱلَّتِيٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ۝٤٧ وَٱتَّقُواْ يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَٰعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝٤٨ وَإِذْ نَجَّيْنَٰكُم مِّنْ ءَالِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوٓءَ ٱلْعَذَابِ يُذَبِّحُونَ أَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْۚ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَآءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝٤٩ وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ ٱلْبَحْرَ فَأَنجَيْنَٰكُمْ وَأَغْرَقْنَآ ءَالَ فِرْعَوْنَ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ۝٥٠﴾ [سورة البقرة:٤٧-٥٠].

(हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैंने तुम पर किया और ये कि तुम्हें संसार वासियों पर प्रधानता दी थी। तथा उस दिन से डरो, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम नहीं आयेगा और न उसकी कोई अनुशंसा (सिफ़ारिश) मानी जायेगी और न उससे कोई अर्थदण्ड लिया जायेगा और न उन्हें कोई सहायता मिल सकेगी। तथा (वह समय याद करो)

(1) मुसनद अह़मद (38/ 330) संख्या (23299)।

जब हमने तुम्हें फ़िरऔनियों से मुक्ति दिलाई। वे तुम्हें कड़ी यातना दे रहे थे; वे तुम्हारे पुत्रों को वध कर रहे थे तथा तुम्हारी नारियों को जीवित रहने देते थे। इसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से कड़ी परीक्षा थी। तथा (याद करो) जब हमने तुम्हारे लिए सागर को फाड़ दिया, फिर तुम्हें बचा लिया और तुम्हारे देखते-देखते फ़िरऔनियों को डुबो दिया)।

इन आयतों में बार-बार बनी इस्राईल को पुकारने और ध्यान आकर्षित करने के माध्यम से उन नेमतों की याद दिलाई गई है जो अल्लाह तआला ने उन्हें अता की थीं। यह इस बात का संकेत भी देता है कि ईमान वालों को यह सिखाया जा रहा है कि उनसे पहले की उम्मतों के साथ क्या हुआ। इन में से एक यह है कि बनी इस्राईल को पूरे जहान वालों पर फज़ीलत (श्रेष्ठता) दी गई थी, जैसा कि क़ुरआन में आया है: ﴿وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ﴾ (मैंने तुम्हें संसार वासियों पर प्रधानता दी थी)। इससे एक और अहम सच्चाई निकलती है, वह यह किः अगर यह क़ुरआन अल्लाह तआला के अलावा किसी और का होता, तो बनी इस्राईल को यह नहीं कहा जाता कि अल्लाह ने तुम्हें सारे जहान वालों पर फज़ीलत दी। ऐसा कहना उनके लिए तारीफ और सम्मान का सबब बनता है। यह स्पष्ट करता है कि यह वचन वास्तव में अल्लाह का ही है और यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सच्चे हैं। वे अपनी इच्छानुसार नहीं बोलते, बल्कि यह वही है जो उन के ऊपर वह्य (आकाशवाणी) के रूप में उतारा गया है और वे इसे वैसे ही पहुंचाते हैं, जैसे उन पर उतारा गया।

इस कुरआनी संदर्भ से यह स्पष्ट होता है कि नसीहत, डराने और अवज्ञा के परिणामों से सचेत करने के लिए बार-बार याद दिलाने की अहमियत बहुत अधिक है। इसके माध्यम से यह भी संकेत मिलता है कि हठधर्मिता और सत्य को स्वीकार करने से इनकार करना कितना विनाशकारी हो सकता है।

और अल्लाह तआला उन्हें अपने और भी अधिक फज़्ल और इनआमात याद दिलाता है, जैसे कि अल्लाह तआला ने उनके समय के सभी लोगों पर उन्हें श्रेष्ठ बनाया। कुछ ने कहा है कि उन्हें समस्त संसार पर श्रेष्ठ बनाया गया क्योंकि उनके बीच कई नबी भेजे गए। इसके बाद तक़्वा का आदेश दिया गया, जो नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके लाए हुए संदेश को स्वीकारने और ईमान लाने की ओर ले जाता है। यह आदेश उस दिन की याद दिलाकर दिया गया है जब हर व्यक्ति को उसके कर्मों का हिसाब देना होगा: ﴿وَاتَّقُوا يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ شَيْئًا﴾ (तथा उस दिन से डरो, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम नहीं आयेगा)। इसमें उस दिन की भयावहता की ओर संकेत है, जब कोई किसी को लाभ नहीं पहुंचा सकेगा, सिवाय अपने कर्मों के, जहाँ ना कोई मित्र, न कोई करीबी, न कोई कमज़ोर, न कोई ताकतवर

इस में सक्षम होगा कि वह किसी और के काम से लाभ उठा सके। हर व्यक्ति को अपने ही कामों का हिसाब देना होगा, सिवाय उन पर जिनके लिए अल्लाह तआला चाहे।

फिर अल्लाह तआला इस दिन की एक और महत्वपूर्ण बात स्पष्ट करता है: ﴿وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَٰعَةٌ﴾ (और न उसकी कोई अनुशंसा (सिफ़ारिश) मानी जायेगी), अर्थात किसी की भी शफाअत (सिफ़ारिश) स्वीकार नहीं की जाएगी। ये वो काफ़िर आत्माएँ हैं जिनके गुनाह इतने बड़े हैं कि उनके लिए अल्लाह तआला का माफ़ करना और उनकी शफाअत को क़बूल करना संभव नहीं है। ﴿وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ﴾ (और न उस से कोई अर्थदण्ड लिया जायेगा), अर्थात कोई भी प्रायश्चित या फ़िदया स्वीकार नहीं किया जाएगा। ﴿وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ﴾ (और न उन्हें कोई सहायता मिल सकेगी), अर्थात कोई भी उन की न तो मदद कर सकेगा और न उन्हें कोई सहारा मिलेगा। यह सज़ा उन लोगों के लिए है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान नहीं लाए और जो उनके द्वारा लाए गए संदेश को नकारते रहे, यहाँ तक कि जो आकाशीय धर्मों के अनुयायी थे, उनके लिए भी। यह शफाअत से संबंधित है, और इसके प्रकारों का विवरण धार्मिक क़िताबों में किया गया है।

यह एक क्रमबद्धता के रूप में आया है, जो दुनिया के बाद के अंतिम दिन की ओर इंगित करता है। उस दिन को उसकी विशेषताओं के माध्यम से व्यक्त किया गया है, जो व्यक्ति के कर्मों से संबंधित है। उस दिन किसी के लिए दूसरों से सहायता प्राप्त करना, किसी के द्वारा बचाव पाना, या अपने आपको किसी भी प्रकार के फिदया (मुआवजे) से बचाना संभव नहीं होगा। यह स्थिति बंदे के लिए डर और आत्म-परीक्षण की आवश्यकता उत्पन्न करती है। उसे याद रखना चाहिए कि उस दिन की भयावहता से बचने और खुद को बचाने के लिए केवल अल्लाह तआला पर ही भरोसा करना चाहिए। न तो कोई कबीला, न कोई वंश, न कोई प्रतिष्ठा, और न ही यह तथ्य कि वह किसी नेक व्यक्ति या नबी की संतति है, उस दिन काम आएगा। व्यक्ति को हर प्रकार के संबंधों और भरोसे को छोड़कर, केवल अल्लाह तआला से ही अपना नाता जोड़ना चाहिए।

और यह शिक्षा तथा दावत (आमंत्रण) की दृष्टि से यह लाभ देता है कि शिक्षा और उपदेश में शुरुआत अल्लाह की दी गई नेमतों की याद दिलाने से होनी चाहिए, क्योंकि यह स्वाभाविक और संतुलित स्वभाव वाले व्यक्तियों में उस अनुग्रही दाता के प्रति शर्म और कृतज्ञता उत्पन्न करता है, इसके बाद उन बातों की याद दिलाई जानी चाहिए जो भलाई और सत्य को स्वीकारने तथा निष्कपटता की प्रेरणा देती हैं, अंत में, डराने की बात करनी चाहिए ताकि यह शिक्षा और उपदेश का समापन प्रभावशाली हो।

भयभीत करने के पश्चात, अल्लाह तआला पुनः नेमतों की याद दिलाता है, जो अल्लाह की रहमत और इस बात को दर्शाता है कि अल्लाह इंसान को सही रास्ते पर लाना और उसे तौबा की ओर प्रेरित करना चाहता है। इसलिए अल्लाह अलग-अलग, क्रमबद्ध तरीकों से उपदेश देता है, न ही उबाऊ विस्तार से और न ही अर्थ को हानि पहुंचाने वाले संक्षेप में। इससे बड़ी रहमत और क्या हो सकती है जो अल्लाह की महानता और उनकी खूबसूरत विशेषताओं को दर्शाती है। फिर, अल्लाह उन्हें फिरऔन से मिली मुक्ति की नेमत याद दिलाता है। अल्लाह ने उन्हें फिरऔन के अत्याचार और अपमान से बचाया, जैसा कि क़ुरआन में कहा गया है: ﴿وَإِذْ نَجَّيْنَٰكُم مِّنْ ءَالِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوٓءَ ٱلْعَذَابِ﴾ (तथा (वह समय याद करो) जब हमने तुम्हें फ़िरऔनियों से मुक्ति दिलाई। वे तुम्हें कड़ी यातना दे रहे थे), फिरऔन ने उन्हें अत्यंत कठिन कार्यों में लगाकर अपमानित किया और सताया।[1] यह फिरऔन से उन्हें जो कष्ट पहुँचे, उसका संक्षिप्त विवरण है ताकि वे पूरी घटना को समझ सकें। इसके बाद विस्तारपूर्वक उन घटनाओं और विवरणों को प्रस्तुत किया जाता है, जो उनके उद्धारकर्ता और सहायक (अल्लाह) के प्रति उनका आभार व्यक्त करने की आवश्यकता को स्पष्ट करते हैं।, जैसा कि अल्लाह कहता है: ﴿يُذَبِّحُونَ أَبْنَآءَكُمْ﴾(वे तुम्हारे पुत्रों को वध कर रहे थे) तो इससे बढ़कर कौन सी विपत्ति हो सकती है, जिससे अल्लाह ने आपको बचाया? बल्कि ﴿وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْ﴾ (तथा तुम्हारी नारियों को जीवित रहने देते थे)। अर्थात वे आपकी बेटियों को सेवा और अपमान के लिए जीवित छोड़ देते थे।[2] तो अल्लाह तबारक व तआला ने उन्हें फिरऔन से मुक्ति की नेमत याद दिलाई, जिसने उन्हें अपमानित किया, कष्ट पहुंचाया और उनके बेटों का रक्त बहाया ﴿وَفِى ذَٰلِكُم بَلَآءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ﴾ (इसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से कड़ी परीक्षा थी।)। इस मुक्ति में अल्लाह तआला की ओर से महान उपकार था।

निश्चित रूप से शैली में बदलाव, विविधता और पुनरावृत्ति, मनुष्य के विवेक को प्रेरित करने और सोच-विचार को उद्दीप्त करने का साधन है। यह सभी निर्देशों में शामिल प्रोत्साहन और चेतावनी को इस तरह प्रस्तुत करता है कि मनुष्य अपनी समझ का प्रयोग करे तथा सही मार्ग पर लौट आए।

और यहाँ मनुष्य को अपनी आत्मा का मार्गदर्शन करने की आवश्यकता होती है। जब वह इसे सही दिशा में ले जाने की कोशिश करे, तो उसे अल्लाह की दी हुई अनगिनत कृपाओं को याद करना चाहिए और उनका स्मरण कराना चाहिए। उसे यह भी याद करना चाहिए कि

---

(2) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़सीर (1/ 65)।

(1) पूर्वोक्त संदर्भ।

अल्लाह तआला ने उसे कितनी विपत्तियों, रोगों और परीक्षाओं से बचाया है, उसकी कितनी समस्याओं को हल किया है, और उसके शत्रुओं की नजरों से उसे कितनी बार छुपा लिया है।

उसे यह भी याद रखना चाहिए कि अल्लाह ने उसकी सुरक्षा, सम्मान, संपत्ति और धर्म को कितनी बार सुरक्षित रखा है। और उसे उस दिन का स्मरण करना चाहिए, जब किसी का कार्य किसी अन्य के लिए लाभदायक नहीं होगा और न ही कोई किसी को सहारा देने के लिए आगे आएगा। स्मरण के सभी पहलू और आनंद के सभी क्षेत्र आत्मा को सत्य की ओर वापस लाने का माध्यम हैं, अल्लाह तआला की अनुमति से।

फिर अल्लाह तबारक व तआला (महान और उच्च) अपनी अन्य महान और चमत्कारी कृपाओं का उल्लेख करते हुए कहता है: ﴿وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ ٱلْبَحْرَ فَأَنجَيْنَٰكُمْ وَأَغْرَقْنَآ ءَالَ فِرْعَوْنَ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ۝٥٠﴾ (तथा (याद करो) जब हमने तुम्हारे लिए सागर को फाड़ दिया, फिर तुम्हें बचा लिया और तुम्हारे देखते-देखते फ़िरऔनियों को डुबो दिया)। तो पहली कृपा: समुद्र का विभाजन, अर्थात उसे चीरकर मार्ग बनाना। दूसरी अद्भुत कुरआनी कृपा: उनका समुद्र के दोनों भागों के बीच से गुजरना। तीसरी कृपा: उन्हें फिरऔन से बचाना। चौथी कृपा: फिरऔन का डूबना। पाँचवीं कृपा: इन सबका अपनी आँखों से देखना, समुद्र का विभाजन, शत्रु का डूबना, और अपनी रक्षा, सलामती तथा विजय।

यह महान आयत अल्लाह तआला की कृपाओं और उसकी अनंत शक्तियों को स्पष्ट करती है, जिसके सामने कोई भी प्राणी कभी भी टिक नहीं सकता। यह दर्शाती है कि अल्लाह घमंडी, अत्याचारी और ज़ालिम को नष्ट करने में पूरी तरह सक्षम है और वह उसे पकड़ने के लिए पूरी तरह तैयार है, जब अल्लाह पकड़ता है, तो वह शक्ति और सामर्थ्य के साथ पकड़ता है। इससे यह शिक्षा मिलती है कि अल्लाह तआला की शक्ति के सामने किसी भी प्रकार की हठधर्मिता और घमंड का परिणाम भयावह हो सकता है। यह आयत यह भी बताती है कि अल्लाह अत्याचार से पीड़ित व्यक्ति की सहायता करने में सक्षम है। उसे केवल अल्लाह पर निर्भर रहना चाहिए, जो सबल और पराक्रमी है। इससे यह प्रकट होता है कि अल्लाह तआला की विशेषताओं में शक्ति, सामर्थ्य, सहायता और दया शामिल हैं। अल्लाह इस बात में भी सक्षम है कि वह घटनाओं को उन प्राकृतिक नियमों के विपरीत भी चला सकता है जिन्हें उसने स्वयं स्थापित किया है। साथ ही, वह कमजोरों को शक्ति देने और उनके शत्रुओं को नष्ट करने में समर्थ है। यह सब अल्लाह तआला से प्रेम करने, उससे डरने और उस पर भरोसा करने का कारण बनता है। क्योंकि अल्लाह तआला के लिए न तो धरती पर और न ही आकाश में कुछ भी असंभव है।

﴿وَإِذۡ وَٰعَدۡنَا مُوسَىٰٓ أَرۡبَعِينَ لَيۡلَةٗ ثُمَّ ٱتَّخَذۡتُمُ ٱلۡعِجۡلَ مِنۢ بَعۡدِهِۦ وَأَنتُمۡ ظَٰلِمُونَ ۝٥١ ثُمَّ عَفَوۡنَا عَنكُم مِّنۢ بَعۡدِ ذَٰلِكَ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُونَ ۝٥٢ وَإِذۡ ءَاتَيۡنَا مُوسَى ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡفُرۡقَانَ لَعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُونَ ۝٥٣﴾ [سورة البقرة: ٥١-٥٣].

(तथा (याद करो) जब हमने मूसा को (तौरात प्रदान करने के लिए) चालीस रात्रि का वचन दिया, फिर उनके पीछे तुमने बछड़े को (पूज्य) बना लिया और तुम अत्याचारी थे। फिर हमने इसके पश्चात् तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकि तुम कृतज्ञ बनो। तथा (याद करो) जब हमने मूसा को पुस्तक (तौरात) तथा फ़ुर्क़ान[1] प्रदान किया, ताकि तुम सीधी डगर पा सको)।

इसके बाद बयान का रुख एक अन्य घटना की ओर मुड़ता है, जो इस्राईलियों से हुई, जबकि उन पर लगातार कृपाओं की वर्षा हो रही थी। उन्होंने अल्लाह तआला को छोड़कर बछड़े की पूजा की। अल्लाह तआला ने फरमाया: ﴿وَإِذۡ وَٰعَدۡنَا مُوسَىٰٓ أَرۡبَعِينَ لَيۡلَةٗ ثُمَّ ٱتَّخَذۡتُمُ ٱلۡعِجۡلَ مِنۢ بَعۡدِهِۦ وَأَنتُمۡ ظَٰلِمُونَ ۝٥١﴾ (तथा (याद करो) जब हमने मूसा को (तौरात प्रदान करने के लिए) चालीस रात्रि का वचन दिया, फिर उनके पीछे तुमने बछड़े को (पूज्य) बना लिया और तुम अत्याचारी थे)। यह घटना उनके धर्म में विचलन और शैतान द्वारा बहकाए जाने का प्रमाण है, जो उनकी अधीरता और अल्लाह के आज्ञापालन में असमर्थता के कारण हुआ। अल्लाह ने मूसा से चालीस रातों का वादा किया था ताकि उन्हें तौरात प्रदान की जा सके। लेकिन वे इस अवधि के समाप्त होने तक सब्र न कर सके और अल्लाह के अलावा बछड़े की पूजा करने लगे, जबकि वे तौरात के अवतरण की कृपा की प्रतीक्षा कर रहे थे। यह घटना स्पष्ट करती है कि अधीरता और गलत तरीके अपनाने से वांछित परिणाम प्राप्त करने का प्रयास कितना हानिकारक हो सकता है, जैसे कि ह़राम तरीकों से रोज़ी कमाना, धोखा देना, रिश्वत लेना आदि। ये सब इंसान की अपने प्रति की गई ज़ुल्म की मिसालें हैं। आयत के अंत में अल्लाह तआला ने इसे उनके अपने ऊपर किए गए अत्याचार के रूप में वर्णित किया है: ﴿ثُمَّ ٱتَّخَذۡتُمُ ٱلۡعِجۡلَ مِنۢ بَعۡدِهِۦ وَأَنتُمۡ ظَٰلِمُونَ﴾ (फिर उसके बाद तुमने बछड़े को अपना इष्ट बना लिया और तुम अन्यायी हो)। यह बछड़ा वही था जिसे सामरी ने सोने से बनाया था।

फिर भी, अल्लाह तआला ने उन्हें क्षमा कर दिया: ﴿ثُمَّ عَفَوۡنَا عَنكُم مِّنۢ بَعۡدِ ذَٰلِكَ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُونَ ۝٥٢﴾ (फिर हमने इसके पश्चात् तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकि तुम कृतज्ञ बनो)। यह अल्लाह तआला की महान क्षमाशीलता को दर्शाता है, ताकि इंसान अपने पालनहार का शुक्रिया अदा करे, जिसने उसे क्षमा किया और उसके लिए तौबा और प्रायश्चित का द्वार खोल दिया। यह शुक्रिया अदा करना आवश्यक बनाता है, जो अल्लाह तआला के प्रति आज्ञापालन

(1) फ़ुरक़ान का अर्थ विवेककारी है, अर्थात जिस के द्वारा सत्यासत्य में अन्तर और विवेक किया जाये।

में विश्वास और कर्म के साथ प्रकट होना चाहिए। साथ ही, जीभ को अल्लाह की स्तुति और प्रशंसा से तर होना चाहिए, क्योंकि वही है जिसने अनगिनत कृपाओं से नवाज़ा और नवाज़ता रहता है। केवल वही इन कृपाओं के लिए धन्यवाद और प्रशंसा का हकदार है।

और अल्लाह तआला की कृपाओं में वृद्धि यह भी है कि उन्होंने मूसा को किताब और फ़ुरक़ान प्रदान की, ताकि वे उसके माध्यम से मार्गदर्शन प्राप्त करें और उस रास्ते को पहचानें जो अल्लाह तआला और उसकी प्रसन्नता तक पहुँचाता है ﴿وَإِذْ ءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿٥٣﴾﴾ (तथा (याद करो) जब हमने मूसा को पुस्तक (तौरात) तथा फ़ुर्क़ान प्रदान किया, ताकि तुम सीधी डगर पा सको)।

अल्लाह तआला द्वारा अपने नबियों पर उतारी गई किताबें महान कृपाएँ हैं, जिनका दर्जा उच्च और महत्व अत्यधिक है। इनमें से एक है तौरात, जिसका उद्देश्य मूसा अलैहिस्सलाम के अनुयायियों को मार्गदर्शन प्रदान करना था। यह मुसलमान के लिए इस बात पर ध्यान देने का कारण बनता है कि पूर्ववर्ती उम्मतों (समुदायों) की घटनाओं से सबक ले और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे, जिसने हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर क़ुरआन करीम जैसी कृपा प्रदान की।

﴿وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِۦ يَٰقَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنفُسَكُم بِٱتِّخَاذِكُمُ ٱلْعِجْلَ فَتُوبُوٓا۟ إِلَىٰ بَارِئِكُمْ فَٱقْتُلُوٓا۟ أَنفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِندَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٥٤﴾ وَإِذْ قُلْتُمْ يَٰمُوسَىٰ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى ٱللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ ٱلصَّٰعِقَةُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ﴿٥٥﴾ ثُمَّ بَعَثْنَٰكُم مِّنۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٦﴾ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ ٱلْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ ٱلْمَنَّ وَٱلسَّلْوَىٰ ۖ كُلُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقْنَٰكُمْ ۖ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٥٧﴾﴾ [سورة البقرة: ٥٤-٥٧].

(तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहाः तुमने बछड़े को पूज्य बनाकर अपने ऊपर अत्याचार किया है, अतः तुम अपने उत्पत्तिकार के आगे क्षमा याचना करो, वो ये कि आपस में एक-दूसरे को वध करो। इसी में तुम्हारे उत्पत्तिकार के समीप तुम्हारी भलाई है। फिर उसने तुम्हारी तौबा स्वीकार कर ली। वास्तव में, वह बड़ा क्षमाशील, दयावान् है। तथा (याद करो) जब तुमने मूसा से कहाः हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे, जब तक हम अल्लाह को आँखों से देख नहीं लेंगे, फिर तुम्हारे देखते-देखते तुम्हें कड़क ने धर लिया (जिससे सब निर्जीव हो कर गिर गये)। फिर (निर्जीव होने के पश्चात्) हमने तुम्हें जीवित कर दिया, ताकि तुम हमारा

उपकार मानो। और हमने तुमपर बादलों की छाँव की तथा तुमपर 'मन्न' और 'सलवा'[1] उतारा, तो उन स्वच्छ चीज़ों में से, जो हमने तुम्हें प्रदान की हैं, खाओ और उन्होंने हम पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वे स्वयं अपने ऊपर ही अत्याचार कर रहे थे)।

इन आयतों में अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी कौम के बीच के व्यवहार का उल्लेख किया है, जहाँ मूसा अलैहिस्सलाम उन्हें आदेश देते हैं और वे उनके प्रति प्रतिक्रिया देते हैं। मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी कौम को बताया कि उन्होंने अपनी आत्माओं पर अत्यधिक अत्याचार किया है। इस अन्याय को स्पष्ट करते हुए अल्लाह तआला ने उन्हें समझाया कि यह उनके द्वारा अल्लाह को छोड़कर बछड़े की पूजा करने के कारण हुआ है। ﴿وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِۦ يَٰقَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنفُسَكُم بِٱتِّخَاذِكُمُ ٱلْعِجْلَ﴾ (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहाः तुमने बछड़े को पूज्य बनाकर अपने ऊपर अत्याचार किया है)। इस आयत में एक विशेष शैली अपनाई गई है। पहले उनके ऊपर अत्याचार करने का निर्णय सुनाया गया: ﴿ظَلَمْتُمْ أَنفُسَكُم﴾ (तुमने अपने ऊपर अत्याचार किया है)। इसके बाद, इस निर्णय का कारण बताया गया: ﴿بِٱتِّخَاذِكُمُ ٱلْعِجْلَ﴾ (बछड़े को पूज्य बनाकर)। यह क्रम पाठक या श्रोता का ध्यान खींचने के लिए चुना गया है, ताकि उनका दिल निर्णय के कारण को जानने के लिए प्रवृत्त हो। इसमें भाषाई प्रभावोत्पादकता, मार्गदर्शक शैली, और उपदेशात्मक व शिक्षाप्रद पहलू मौजूद हैं। यह शैली यह बताती है कि किसी बात को समझाने और निर्देश देने में उचित तरीके से ध्यान आकर्षित करना कितना महत्वपूर्ण है, जिससे संदेश का उद्देश्य और अर्थ स्पष्ट हो सके।

फिर (अल्लाह) तबारक व तआला ने उन्हें उस महान पाप (शिर्क) से मुक्ति पाने का उपाय बताया, और वह उपाय है सच्चे दिल से अल्लाह से तौबा करना, जो उन्हें अस्तित्व में लाया तथा शून्य से पैदा किया। ﴿فَتُوبُوٓاْ إِلَىٰ بَارِئِكُمْ﴾ (अतः तुम अपने उत्पत्तिकार के आगे क्षमा याचना करो)। इब्न -ए- कसीर रहमतुल्लाह अलैहि ने इस आयत ﴿إِلَىٰ بَارِئِكُمْ﴾ के बारे में कहा है कि इसमें उनके अपराध की गंभीरता की ओर संकेत है, अर्थात, जिसने तुम्हें पैदा किया, उसी के साथ किसी और को पूजा में साझीदार बना दिया। यह इस बात को दर्शाता है कि शिर्क का अपराध कितना गंभीर है, उन्हें आदेश दिया गया: ﴿فَٱقْتُلُوٓاْ أَنفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِندَ بَارِئِكُمْ﴾ (आपस में एक-दूसरे को वध करो, इसी में तुम्हारे उत्पत्तिकार के समीप तुम्हारी भलाई है)। इससे यह सिद्ध होता है कि अल्लाह तआला का निर्णय सर्वोच्च है। वह जो चाहता है, निर्णय करता है, और उसके निर्णय को कोई पलट नहीं सकता। वह मालिक है, जो सवाल करता है लेकिन

(1) भाष्यकारों ने लिखा है कि "मन्न" एक प्रकार का अति मीठा स्वादिष्ट गोंद था, जो ओस के समान रात्रि के समय आकाश से गिरता था। तथा "सलवा" एक प्रकार के पक्षी थे, जो संध्या के समय सेना के पास हज़ारों की संख्या में एकत्र हो जाते, जिन्हें बनी इस्राईल पकड़ कर खाते थे।

उससे कोई सवाल नहीं किया जा सकता। जैसा कि अल्लाह ने सूरह अल-अंबिया में फ़रमाया है: ﴿لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُونَ ﴿٢٣﴾﴾ (वह जो करता है उससे सवाल नहीं किया जा सकता, लेकिन उनसे सवाल किया जाएगा)। यह आयत अल्लाह तआला की इस उम्मत के प्रति विशेष दया को भी प्रकट करती है, क्योंकि उन्हें इस अपराध (शिर्क) के प्रायश्चित के लिए अपनी जानें लेने का आदेश नहीं दिया गया, बल्कि तौबा, इसतिग़फ़ार (माफी माँगना), और उस पाप को छोड़ने का आदेश दिया गया। इसके बाद, अल्लाह तआला ने स्वयं को तौबा स्वीकार करने वाला और अत्यधिक दयालु बताया: ﴿فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ﴾ (फिर उसने तुम्हारी तौबा स्वीकार कर ली। वास्तव में, वह बड़ा क्षमाशील, दयावान् है)। अल्लाह तआला तौबा स्वीकार करने वाला और अत्यधिक दयालु है। ये दो महान कृपाएँ हैं, जो इस बात की मांग करती हैं कि इंसान अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे और उसकी वैसी ही प्रशंसा करे, जिस का वह हकदार है। इसीलिए, अल्लाह तआला ने उनके इतने बड़े अपराध के बावजूद उनकी तौबा स्वीकार कर ली।

फिर अल्लाह तआला इंसान की हठधर्मिता और ज़्यादती का उल्लेख करते हुए बनी इस्राईल का वर्णन करता है: ﴿وَإِذْ قُلْتُمْ يَٰمُوسَىٰ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى ٱللَّهَ جَهْرَةً﴾ (तथा (याद करो) जब तुमने मूसा से कहाः हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे, जब तक हम अल्लाह को आँखों से देख नहीं लेंगे)। उन्होंने अपने ईमान के लिए अल्लाह तआला को प्रत्यक्ष देखने की शर्त रखकर अपने अत्याचार और ज़्यादती की हद कर दी। इससे यह शिक्षा मिलती है कि ज़्यादती और गुमराही में बढ़ते चले जाना इंसान के स्वभाव में शामिल हो सकता है। अतः, इससे बचने के लिए सतर्क रहना आवश्यक है, क्योंकि अल्लाह तआला का दंड जब किसी कौम पर आता है, तो वह बहुत पीड़ादायक और गंभीर होता है। जैसा कि उनके दंड का वर्णन करते हुए अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿فَأَخَذَتْكُمُ ٱلصَّٰعِقَةُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ﴾ (फिर तुम्हारे देखते-देखते तुम्हें कड़क ने धर लिया (जिससे सब निर्जीव हो कर गिर गये)। फिर भी, अल्लाह तआला की शक्ति और दया से, उन्हें मृत्यु के बाद पुनः जीवन प्रदान किया गया ताकि वे अपनी उम्र पूरी कर सकें: ﴿ثُمَّ بَعَثْنَٰكُم مِّنۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ﴾ (फिर (निर्जीव होने के पश्चात्) हमने तुम्हें जीवित कर दिया, ताकि तुम हमारा उपकार मानो)। यह इस बात को दर्शाता है कि अल्लाह तआला महान और सर्वशक्तिमान है, और उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। इस तथ्य से डर और अल्लाह की आज्ञापालन की प्रेरणा मिलती है।

इसके बाद, अल्लाह तआला इंसान को शुक्र अदा करने का आदेश देता है: ﴿لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ﴾ (ताकि तुम शुक्र करो)। शायद इस पुनर्जीवन के बाद, तुम अल्लाह तआला का शुक्र

अदा करो, जिसने तुम्हें जीवन दिया ताकि तुम अपनी तय आयु पूरी कर सको। यह इस बात की ओर भी संकेत करता है कि अल्लाह का शुक्र अदा करना कितना महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से उस स्थिति में जब अल्लाह की कृपा पाप और कोताही के बावजूद प्राप्त हो। अल्लाह तआला अपने बंदे के साथ अपनी सहनशीलता और उदारता के अनुसार व्यवहार करता है, न कि उसके पाप और कोताही के आधार पर।

फिर अल्लाह ने ईमान वालों को सिखाया और बनी इस्राईल को उनके पूर्वजों पर हुई घटनाओं और उनके कर्मों की याद दिलाई। साथ ही यह भी बताया कि अल्लाह ने अपनी दया और हिकमत से उनके साथ कैसे व्यवहार किया, ताकि वे उसकी कृपाओं को समझें और यह जान लें कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत सत्य है और जो कुछ वह लेकर आए हैं, वह सच है। ﴿وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ ٱلْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ ٱلْمَنَّ وَٱلسَّلْوَىٰ﴾ (और हमने तुमपर बादलों की छाँव की तथा तुमपर 'मन्न' और 'सलवा' उतारा)। यह आयत उन्हें उनके पूर्वजों को प्राप्त कृपाओं की याद दिलाती है, जिन्हें उन्होंने अपनी हठधर्मिता और ज़्यादतियों के बावजूद प्राप्त किया। अल्लाह ने अपने हिकमत और रहमत के तहत उनके ऊपर बादलों का साया किया और मन्न और सलवा को उतारा। मन्न: एक मीठा पदार्थ है, जो शहद जैसा होता है। कुछ के अनुसार, यह हर वह आजीविका है जो बिना मेहनत के प्राप्त हो। सलवा: एक छोटा पक्षी, जिसे बटेर कहा जाता है।[1] कुछ के अनुसार, मन्न का अर्थ तरनजुबीन है, और कुछ कहते हैं कि यह कुंभी है, जिसे अल्लाह ने बनी इस्राईल के लिए उतारा। यह आयत बनी इस्राईल और अन्य लोगों के लिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत का प्रमाण है, क्योंकि क़ुरआन उन घटनाओं का वर्णन करता है जिन्हें बनी इस्राईल जानते थे, लेकिन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके बारे में क़ुरआन के उतरने से पहले नहीं जानते थे। इस आयत से यह भी पता चलता है कि अल्लाह ही सच्चा रिज़्क़ देने वाला है। जब वह किसी बंदे को रोज़ी देना चाहता है, तो वह इसे आसान और सरल तरीकों से प्रदान करता है। वही है जो बारिश भेजता है। वह अपने हुक्म से बादलों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाता है और इसे अपनी मख़लूक़ की ज़रूरत के मुताबिक उतारता है। जब बारिश वह कार्य पूरा कर लेती है, जिसके लिए उसे भेजा गया है, तो वह बिना किसी बाढ़ या नुकसान के समाप्त हो जाती है। इसके बाद, बादल अल्लाह के आदेश से दूसरी जगह की ओर बढ़ जाते हैं। पाक व पवित्र है वह सृष्टिकर्ता, जिसने समय, मात्रा, स्थान, और गति को निर्धारित किया।

फिर अल्लाह यह स्पष्ट करता है कि उन्होंने स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया अपनी अवज्ञा के कारण: ﴿وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ﴾ (और उन्होंने हमपर अत्याचार नहीं

(1) तैसीरुल करीमिर्रह़मान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 60)।

किया, परन्तु वे स्वयं अपने ऊपर ही अत्याचार कर रहे थे)। यह इस तथ्य को दर्शाता है और सिखाता है कि जो भी विपत्ति इंसान पर आती है, वह उसके अपने कर्मों और स्वयं पर किए गए अन्याय का परिणाम होती है।

﴿وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ
خَطَايَاكُمْ ۚ وَسَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ (٥٨) فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا
رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ (٥٩) ۞ وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِب بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ
فَانفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِن رِّزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ
مُفْسِدِينَ (٦٠) وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نَّصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ مِن بَقْلِهَا
وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ۖ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۚ اهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ
لَكُم مَّا سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ
اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ (٦١)﴾ [سورة البقرة:٥٨-٦١].

(और (याद करो) जब हमने कहा कि इस बस्ती में प्रवेश करो, फिर इसमें से जहाँ से चाहो, मनमानी खाओ और उसके द्वार में सज्दा करते (सिर झुकाये) हुए प्रवेश करो और क्षमा-क्षमा कहते जाओ, हम तुम्हारे पापों को क्षमा कर देंगे तथा सुकर्मियों को अधिक प्रदान करेंगे। फिर इन अत्याचारियों ने जो बात इनसे कही गयी थी, उसे दूसरी बात से बदल दिया। तो हमने इन अत्याचारियों पर आकाश से इनकी अवज्ञा के कारण प्रकोप उतार दिया। तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लिए जल की प्रार्थना की, तो हमने कहाः अपनी लाठी पत्थर पर मारो। तो उससे बारह सोते फूट पड़े और प्रत्येक परिवार ने अपने पीने के स्थान को पहचान लिया। अल्लाह का दिया खाओ और पिओ और धरती में उपद्रव करते न फिरो। तथा (याद करो) जब तुमने कहाः हे मूसा! हम एक प्रकार का खाना सहन नहीं करेंगे। तुम अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हमारे लिए धरती की उपज; साग, ककड़ी, लहसुन, प्याज़, दाल आदि निकाले। (मूसा ने) कहाः क्या तुम उत्तम के बदले तुच्छ मांगते हो? तो किसी नगर में उतर पड़ो, जो तुमने मांगा है, वहाँ वह मिलेगा! और उनपर अपमान तथा दरिद्रता थोप दी गयी और वे अल्लाह के प्रकोप के साथ फिरे। ये इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र कर रहे थे और नबियों की अकारण हत्या कर रहे थे। ये इसलिए कि उन्होंने अवज्ञा की तथा (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया)।

संदर्भ अभी भी अहले किताब को उनके पूर्वजों की घटनाओं की याद दिलाने और उन्हें शिक्षित करने के बारे में है। यह क़ुरआन के माध्यम से उन्हें उन सच्चाइयों को याद दिलाता है, जिन्हें वे पहले से जानते हैं। इससे यह पता चलता है कि प्रमाण और तर्क का कितना महत्व है

और सही मार्गदर्शन और भलाई की ओर निर्देश देने में याद दिलाने की क्या भूमिका है। सच्चाइयों को याद दिलाने के द्वारा इंसान की बुद्धि और भावनाओं दोनों को प्रेरित किया जा सकता है, ताकि वह अल्लाह की दी गई कृपा के प्रति अपने कर्तव्य को सही ढंग से समझ सके।

अल्लाह तआला ईमान वालों और दूसरों को सूचना दे रहा है, साथ ही यहूदियों को उनके पूर्वजों की घटनाओं की याद दिलाता है और यह स्पष्ट करता है कि अल्लाह ने उनके साथ अपनी कृपा का व्यवहार कैसे किया। जब उन्होंने जिहाद (धर्मयुद्ध) को त्याग दिया और इससे इनकार किया, तो उन्हें सज़ा के तौर पर तीह (में भटकने) की सज़ा दी गई। लेकिन जब यह अवधि समाप्त हो गई, तो अल्लाह ने उन्हें बैतुल मक़दिस (यरूशलेम) में प्रवेश करने का आदेश दिया। यह इब्न -ए- कसीर रहिमहुल्लाह के अनुसार अधिक सही मना गया है।[1] फिर अल्लाह तआला ने उनकी सज़ा के बाद अपनी रहमत को स्पष्ट किया, और उन्हें तीह (में भटकने) से उबारकर बस्ती में प्रवेश करने का आदेश दिया, ताकि वे वहाँ समृद्धि और पूर्ण आशीर्वाद पाएँ। ﴿قُلْنَا ٱدْخُلُوا۟ هَٰذِهِ ٱلْقَرْيَةَ فَكُلُوا۟ مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا﴾ (हमने कहा कि इस बस्ती में प्रवेश करो, फिर इसमें से जहाँ से चाहो, मनमानी खाओ)। यह बताता है कि अल्लाह ने उन्हें एक ऐसी भूमि में प्रवेश करने का आदेश दिया जो हर दिशा से समृद्ध और भरपूर थी। इस आयत से यह भी पता चलता है कि वह भूमि कितनी बरकत वाली और विलासपूर्ण जीवन प्रदान करने वाली थी। इसके बाद, अल्लाह ने उन्हें एक विशेष रूप से विनम्रता और आज्ञापालन के साथ प्रवेश करने का तरीका बताया: ﴿وَٱدْخُلُوا۟ ٱلْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا۟ حِطَّةٌ﴾ (और उसके द्वार में सज्दा करते (सिर झुकाये) हुए प्रवेश करो और हित़्ता (क्षमा-क्षमा) कहते जाओ)। वाक्यांश ﴿سُجَّدًا﴾ (सुज्जदन): झुकने, आज्ञापालन और इबादत के रूप में सिर झुकाने का प्रतीक है, तथा वाक्यांश ﴿حِطَّةٌ﴾ (हित़्ततुन): यह अल्लाह से उनके पापों को माफ करने की याचना का संकेत है। इससे पता चलता है कि अल्लाह के सामने विनम्रता और उसकी दी हुई शरीअत का पालन करना कितना महत्वपूर्ण है। यह भी स्पष्ट होता है कि आज्ञापालन और शुक्राने (धन्यवाद) के साथ तौबा से कृपा और समृद्धि प्राप्त होती है। इसके विपरीत, हठधर्मिता, अवज्ञा, और विद्रोह का परिणाम दुनिया और आख़िरत दोनों में भयावह होता है। हालांकि इन आयतों में बनी इस्राईल की घटनाओं का वर्णन है, लेकिन यह ईमान वालों के लिए एक नसीहत है, ताकि वे दूसरों की गलतियों से सीखें और उनसे बचें।

अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट किया कि यदि वे बस्ती में प्रवेश करते हैं जैसा कि आदेश दिया गया था, तो उनके पाप माफ कर दिए जाएंगे, और इसके साथ ही उनका प्रतिफल और भी

---

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 102)।

बढ़ा दिया जाएगा ﴿نَّغۡفِرۡ لَكُمۡ خَطَٰيَٰكُمۡۚ وَسَنَزِيدُ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾ (हम तुम्हारे पापों को क्षमा कर देंगे तथा सुकर्मियों को अधिक प्रदान करेंगे)।

लेकिन कुछ लोग अल्लाह की नेमतों का इंकार करते हुए उसे कुफ्र में बदल देते हैं, और ऐसा करना बहुत बड़ा खतरा है, जिससे बचने की जरूरत है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿فَبَدَّلَ ٱلَّذِينَ ظَلَمُواْ قَوۡلًا غَيۡرَ ٱلَّذِي قِيلَ لَهُمۡ﴾ (फिर इन अत्याचारियों ने जो बात इनसे कही गयी थी, उसे दूसरी बात से बदल दिया।)। और इसके बावजूद, कुछ लोग ऐसा करते हैं कि वे अल्लाह के आदेशों को बदल देते हैं और नाफ़र्मानी में लग जाते हैं, जो हमेशा कहीं न कहीं हो सकता है। ऐसे लोग जिनका वर्णन ज़ुल्म करने वाले के रूप में किया गया है, वे अल्लाह की नेमतों को कुफ्र और नाश में बदल देते हैं। उदाहरण स्वरूप: कुछ लोग धन की नेमत को अत्यधिक खर्च और बर्बादी में बदल देते हैं। कुछ लोग अपनी सेहत का उपयोग नाफ़र्मानी में करते हैं। कुछ लोग संतान की नेमत का इस्तेमाल अल्लाह की आज्ञाओं से विमुख होकर करते हैं, या उन्हें नाफ़र्मानी में लगा देते हैं। इसके अलावा, कुछ लोग निर्धारित इबादतों को बदलकर अपने मनमाने तरीकों से करते हैं, जो अल्लाह की इच्छाओं के विपरीत होते हैं। इस तरह के लोगों के लिए अल्लाह की सज़ा तय है, जैसा कि अल्लाह फ़रमाता है: ﴿فَبَدَّلَ ٱلَّذِينَ ظَلَمُواْ قَوۡلًا غَيۡرَ ٱلَّذِي قِيلَ لَهُمۡ فَأَنزَلۡنَا عَلَى ٱلَّذِينَ ظَلَمُواْ رِجۡزٗا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ بِمَا كَانُواْ يَفۡسُقُونَ ٥٩﴾ (फिर इन अत्याचारियों ने जो बात इनसे कही गयी थी, उसे दूसरी बात से बदल दिया। तो हमने इन अत्याचारियों पर आकाश से इनकी अवज्ञा के कारण प्रकोप उतार दिया)। फिर अल्लाह तआला ने उन्हें उनके फ़िस्क़ (बुरे कर्मों) के कारण सजा दी। इसका मतलब यह है कि हमें अल्लाह के आदेशों में बदलाव और नाफ़र्मानी से बचना चाहिए, क्योंकि अल्लाह के पास आकाशों और ज़मीन की तमाम फौजें हैं। उनका दंड स्वास्थ्य, रोज़ी-रोटी, चिंताओं, अपमान और अन्य प्रकार की सज़ाओं के रूप में हो सकता है। इसलिए हमें अल्लाह के आदेशों को समझकर और उन पर अमल करते हुए अपने जीवन को सही दिशा में रखना चाहिए, ताकि हम किसी भी प्रकार की सज़ा से बच सकें।

फिर अल्लाह तआला अपने नेक बंदों पर अपनी नेमतें और दया बढ़ाते हुए, यह बताता है कि जब मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम के लिए पानी की दुआ की, तो अल्लाह तआला ने बिना किसी कठिनाई, प्रयास या परेशानियों के पानी प्रदान किया। जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿وَإِذِ ٱسۡتَسۡقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوۡمِهِۦ فَقُلۡنَا ٱضۡرِب بِّعَصَاكَ ٱلۡحَجَرَۖ فَٱنفَجَرَتۡ مِنۡهُ ٱثۡنَتَا عَشۡرَةَ عَيۡنٗاۖ﴾ (तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लिए जल की प्रार्थना की, तो हमने कहाः अपनी लाठी पत्थर पर मारो। तो उससे बारह सोते फूट पड़े)। यह घटना इस बात को दर्शाती है कि सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का अनुग्रह प्रदान करने का तरीका अत्यंत सरल और सहज

है, और जो भी चाहता है, अल्लाह बिना किसी कष्ट या मुश्किल के उसे प्रदान करता है। बस मूसा अलैहिस्सलाम ने पत्थर को अपनी छड़ी से मारा और उससे बारह स्रोत फूट पड़े, यह उनकी क़ौम के लिए एक बड़ा मोजिज़ा (चमत्कारी घटना) था।

जैसा कि अल्लाह तआला के कथन से स्पष्ट होता है ﴿ٱسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِۦ﴾ (मूसा ने अपनी जाति के लिए जल की प्रार्थना की)। जैसा कि अल्लाह तआला के शब्द 'इसतिस्का' से यह स्पष्ट होता है कि किसी वस्तु की मांग करने से पहले अल्लाह तआला की ओर रुख करना चाहिए। क्योंकि 'ٱسْتَسْقَىٰ इसतिस्का' का मतलब है पानी मांगना, और वह जो सब चीज़ों का स्वामी है, वही समस्त वस्तुओं को नियंत्रित करता है। कोई भी काम तभी सरल होता है जब अल्लाह तआला उसे आसान बना दे। और अल्लाह तआला का यह अनुग्रह था कि उसने बारह स्त्रोत दिए, जो कि बनी इस्राइल की बारह क़बीलों की संख्या के बराबर थे, ताकि हर क़बीला अपना पानी जान सके, यह सब अल्लाह के ज्ञान, हिकमत एवं सामर्थ्य से था ﴿فَٱنفَجَرَتْ مِنْهُ ٱثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ﴾ (तो उससे बारह सोते फूट पड़े और प्रत्येक परिवार ने अपने पीने के स्थान को पहचान लिया)। फिर अल्लाह तआला ने इन नेमतों से कैसे और किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए, यह स्पष्ट किया, अर्थात वे इस पानी से पियें और जो कुछ भी अल्लाह ने उन्हें दिया है, उसे खाएं, बिना किसी प्रकार के भ्रष्टाचार या बिगाड़ के ﴿كُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ مِن رِّزْقِ ٱللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا۟ فِى ٱلْأَرْضِ مُفْسِدِينَ﴾ (खाओ और पिओ तथा धरती में उपद्रव करते न फिरो)। और अल्लाह तआला ने अपनी महिमा में खाने-पीने के संसाधनों को अपनी ओर से निहित किया है: ﴿كُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ مِن رِّزْقِ ٱللَّهِ﴾ (अल्लाह के दिए हुए रिज़्क़ में से खाओ और पियो)। इससे यह स्पष्ट होता है कि सृष्टि के पास जो भी खाने-पीने की चीज़ें हैं, वे अल्लाह तआला की ओर से हैं। इससे यह आवश्यक होता है कि सभी जीवों को यह याद रखना चाहिए कि यह सब अल्लाह तआला का दिया हुआ है। इसलिए भोजन और पेय को अपनी मेहनत का फल मानकर नहीं, बल्कि अल्लाह तआला की कृपा, उसकी मौजूदगी और उसके अनुग्रह से जोड़कर देखना चाहिए, क्योंकि वह ही सब कुछ देने वाला और कृपा करने वाला है, और उसी के द्वारा यह सब उत्पन्न और साधनयुक्त किया गया है। पवित्र आयत में भ्रष्टाचार से मना करने का यह तात्पर्य है कि जिन पर अल्लाह तआला ने अपनी नेमतों की वर्षा की है, उन्हें चाहिए कि वे उन नेमतों का उपयोग पाप और पृथ्वी तथा उसके निवासियों को भ्रष्ट करने में न करें।

फिर उसके बाद, जब वे मन्न और सलवा से ऊब गए, और मिस्र में अपनी पिछली ज़िंदगी को याद किया, तो उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम से यह दुआ करने को कहा कि अल्लाह तआला उनके लिए उस भूमि से वह चीज़ें उगाए जो वे खाते थे। अल्लाह तआला का फरमान

है: ﴿وَإِذْ قُلْتُمْ يَٰمُوسَىٰ لَن نَّصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَٰحِدٍ فَٱدْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنۢبِتُ ٱلْأَرْضُ مِنۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا﴾ (तथा (याद करो) जब तुमने कहाः हे मूसा! हम एक प्रकार का खाना सहन नहीं करेंगे। तुम अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हमारे लिए धरती की उपज; साग, ककड़ी, लहसुन, प्याज़, दाल आदि निकाले)। यह इस बात को दर्शाता है कि इंसान बहुत जल्दी ऊब जाता है, भले ही उसे धरती पर सबसे मीठा और स्वादिष्ट भोजन क्यों न दिया जाए, जैसा कि उन्हें मन्न और सलवा दिया गया था, इसके बावजूद, उन्होंने पृथ्वी से उगने वाली चीज़ों की मांग की। यह इस बात पर जोर देता है कि धैर्य और आत्म-संयम कितना महत्वपूर्ण है, ताकि इंसान वास्तविक भलाई और नेमत की पहचान कर सके। इंसान को विविधता के आकर्षण में नहीं बहकना चाहिए, बल्कि उसे अल्लाह की दी हुई नेमतों की महानता और महत्व को समझते हुए उनकी क़द्र करनी चाहिए और आत्म-उन्नति की ओर बढ़ना चाहिए। इंसान को यह समझना चाहिए कि उसकी आत्मा जल्दी थक जाती है और उसे हमेशा नई चीज़ों की चाह रहती है। लेकिन जब वह उन चीज़ों को प्राप्त कर लेता है, तो उसे तृप्ति नहीं मिलती। ऐसी स्थिति से बाहर आने के लिए आत्म-निर्माण और आत्म-शिक्षा की जरूरत है, ताकि आत्मा को शांत और संतुलित किया जा सके और उसे उच्च उद्देश्य की ओर प्रेरित किया जा सके।

इसलिए, मनुष्य यदि अपने मानव स्वभाव को और अपनी अधीरता को समझे, जो हमेशा किसी ऐसी चीज़ की तलाश में रहता है जो उसके पास नहीं है, तो उसे अपनी आत्मा को संयमित करना होगा, उसे अपनी आत्मा को नीच स्वभाव से ऊँचे और पवित्र स्वभाव की ओर उठाना होगा, उसे हर नई चीज़ के पीछे नहीं भागना चाहिए, क्योंकि वह आखिरकार उस से भी ऊब जाएगा। जब इंसान इस स्वभाव को समझेगा, तो उसे अपनी प्रतिक्रिया में सुधार लाना होगा। लेकिन जो व्यक्ति समझदार है और जिसे अल्लाह ने अपने आत्मा को संयमित करने की शक्ति दी है, जैसे कि मूसा अलैहिस्सलाम को, वह इस तरह के अनुरोध पर जवाब देगा, ﴿أَتَسْتَبْدِلُونَ ٱلَّذِى هُوَ أَدْنَىٰ بِٱلَّذِى هُوَ خَيْرٌ﴾ (क्या तुम उत्तम के बदले तुच्छ मांगते हो?)। यह एक आश्चर्यजनक प्रश्न है, क्योंकि यह ताज्जुब की बात है कि जब अल्लाह ने उन्हें उत्तम और बेहतरीन आशीर्वाद दिया, तो वे कमतर चीज़ की मांग क्यों कर रहे हैं। यह इस बात को भी स्पष्ट करता है कि जो किसी समुदाय का नेतृत्व करता है, उसे उनका मार्गदर्शन करना चाहिए, और यदि वे किसी गलती पर हैं तो उन्हें समझाना चाहिए। साथ ही, उसे यह अधिकार है कि वह सवाल उठाए और इसे नकारे। फिर मूसा अलैहिस्सलाम ने उनसे कहा, ﴿ٱهْبِطُوا۟ مِصْرًا فَإِنَّ لَكُم مَّا سَأَلْتُمْ﴾ (तो किसी नगर में उतर पड़ो, जो तुमने मांगा है, वहाँ वह मिलेगा!)। फिर जब उन्होंने ओछी (और तुच्छ) चीज़ की इच्छा जताई, तो मूसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें यह निर्देश

दिया कि वे मिस्र में जाएं। कहा जाता है कि यहाँ "मिस्र" से तात्पर्य नगरों में से कोई भी नगर था, क्योंकि जो कुछ उन्होंने माँगा था, वह पृथ्वी के हर कोने में उपलब्ध था।[1]

इन तमाम नेमतों के बावजूद, जो अल्लाह तआला ने उनके लिए सहज कर दीं, और उन्हें उस अपमान और जिल्लत से निकाला जिसमें वे डूबे हुए थे, साथ ही इतनी सारी निशानियाँ देखने के बावजूद, उनके सब्र की कमी, बार-बार हठ करने और नाफरमानी करने के कारण अल्लाह तआला ने उन पर जिल्लत थोप दी। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ ٱلذِّلَّةُ وَٱلْمَسْكَنَةُ وَبَآءُو بِغَضَبٍ مِّنَ ٱللَّهِ﴾ (और उनपर अपमान तथा दरिद्रता थोप दी गयी और वे अल्लाह के प्रकोप के साथ फिरे)। इस आयत में अल्लाह तआला ने उनके ऊपर सज़ा के विभिन्न रूप स्पष्ट किए, शारीरिक अपमान, दिलों की मोहताजी और अल्लाह की नाराज़गी।[2] कुछ विद्वानों ने जिल्लत का अर्थ लिया है नीचता और गरीबी से। ऐसा कोई यहूदी नहीं मिलेगा, चाहे वह कितना ही अमीर क्यों न हो, जिसके ऊपर गरीबी, झुकाव और अपमान के चिह्न प्रकट न होते हों।[3] यह बात उनके कपड़ों के डिज़ाइन से भी ज़ाहिर होती है, जो यह आभास दिलाते हैं कि वे फटे हुए हैं, जबकि वास्तव में वे नए बनाए गए होते हैं। यह स्थिति ईमान वालों को सतर्क करती है कि उन्हें यहूदियों की नकल करने से बचना चाहिए, क्योंकि वे गरीबी का दिखावा करते हैं, जबकि असल में वे अमीर होते हैं। साथ ही, उनकी उस प्रवृत्ति से भी बचना चाहिए जो अल्लाह तआला की नेमतों और रहमतों के प्रति हठधर्मी, अहंकार और कृतघ्नता प्रकट करती है। वे नेमतों से ऊबते हैं और उनका शुक्र अदा नहीं करते। यह उनके निम्न स्वभाव को दर्शाता है। इसके विपरीत, एक सच्चे ईमान वाले को चाहिए कि वह अपने आप को ऊँचा उठाए और अपने स्वभाव को एक इबादतगुज़ार, शुक्रगुज़ार और अल्लाह तआला की नेमतों की कद्र करने वाले के स्तर तक पहुँचाए। क्योंकि अल्लाह की सज़ा बहुत सख़्त है। जिन्होंने नाफरमानी की, वे (باءوا) अल्लाह के ग़ज़ब के साथ लौटे।

फिर अल्लाह तआला ने उन पर सज़ा उतारने का कारण स्पष्ट किया, जो जिल्लत, मोहताजी और अल्लाह के ग़ज़ब के साथ उनकी वापसी के रूप में प्रकट हुई। ﴿ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا۟ يَكْفُرُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ وَيَقْتُلُونَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا۟ وَّكَانُوا۟ يَعْتَدُونَ﴾ (ये इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र कर रहे थे और नबियों की अकारण हत्या कर रहे थे। ये इसलिए कि उन्होंने अवज्ञा की तथा (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया)।

---

(2) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 105-106)।

(3) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 63)।

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन (1/ 292)।

पापों ने अल्लाह तआला का ग़ज़ब उनके लिए अनिवार्य कर दिया। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि पापों से बचना चाहिए, क्योंकि वे अल्लाह तआला के ग़ज़ब को आकर्षित करते हैं। अल्लाह तआला करम फरमाने वाला और रहमत करने वाला है। वह आज्ञाकारी, शुक्रगुज़ार, और तौबा करने वाले बंदे को पसंद करता है, वह जो अल्लाह की ओर लौटता है, उसकी नेमतों की हिफ़ाज़त करता है, उन्हें न तो कम आंकता है और न ही उनके प्रति लापरवाही दिखाता है, जैसे फिज़ूलखर्ची या अन्य अनावश्यक कार्यों के ज़रिए। मोमिन को चाहिए कि वह नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूरी लगन और परिश्रम के साथ पाबंदी से पैरवी करे।

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَٱلَّذِينَ هَادُواْ وَٱلنَّصَٰرَىٰ وَٱلصَّٰبِـِٔينَ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْأَخِرِ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝٦٢﴾ [سورة البقرة:٦٢]

(वस्तुतः, जो ईमान लाये तथा जो यहूदी हुए और नसारा (ईसाई) तथा साबी, जो भी अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा और सत्कर्म करेगा, उनका प्रतिफल उनके पालनहार के पास है और उन्हें कोई डर नहीं होगा और न ही वे उदासीन होंगे)।

इसके बाद, अल्लाह तआला ने उन लोगों की स्थिति स्पष्ट की, जिन्होंने उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन किया और उसके निषेधों का पालन नहीं किया। उन्होंने जो सज़ा पाई, उसे भी बयान किया। साथ ही, अल्लाह तआला ने उन समुदायों की स्थिति को भी स्पष्ट किया, जिन्होंने उसके हुक्म का पालन किया और उसके नबियों पर ईमान लाए। इनमें पहले के ईमानदार समुदाय, यहूदी, ईसाई और साबिईन शामिल हैं। साबिईन या तो यहूदियों का एक गुट था या ईसाइयों का। इससे यह शिक्षा मिलती है कि अल्लाह तआला आज्ञाकारी बंदों को पुरस्कृत करता है और नाफरमानी करने वालों को सज़ा देता है ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَٱلَّذِينَ هَادُواْ وَٱلنَّصَٰرَىٰ وَٱلصَّٰبِـِٔينَ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْأَخِرِ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝٦٢﴾ (वस्तुतः, जो ईमान लाये तथा जो यहूदी हुए और नसारा (ईसाई) तथा साबी, जो भी अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा और सत्कर्म करेगा, उनका प्रतिफल उनके पालनहार के पास है और उन्हें कोई डर नहीं होगा और न ही वे उदासीन होंगे)।

उनके लिए अच्छा बदला (जन्नत) सुनिश्चित है। यही बात क़यामत तक जारी रहेगी। जो भी नबी-ए-उम्मी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पैरवी करेगा, उसके लिए अनंत खुशी और सफलता निश्चित है। ऐसे लोगों पर न तो भविष्य को लेकर कोई डर होगा और न ही

वे उस पर शोक करेंगे जिसे वे पीछे छोड़ते हैं।[1] यह अल्लाह तआला के न्याय का प्रमाण है। वह उन लोगों के साथ ज़ुल्म नहीं करता, जो अपने नबियों की हिदायत पर चलते हैं, जिन्हें उनकी ओर भेजा गया था। उन्होंने अल्लाह पर, आख़िरत के दिन पर ईमान लाया और नेक अमल किए।

हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भेजे जाने के बाद, अल्लाह ने उनके माध्यम से सभी पुराने धर्मों को रद्द (नस्ख़) कर दिया। अब किसी से इस्लाम के अलावा कोई अन्य धर्म स्वीकार नहीं किया जाएगा, जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरह आल-इमरान में फ़रमाया है: ﴿ وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ ٱلْإِسْلَٰمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِى ٱلْءَاخِرَةِ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٨٥﴾ ﴾ (और जो कोई इस्लाम के अलावा कोई और दीन (धर्म) चाहेगा, तो वह उससे हरगिज़ स्वीकार नहीं किया जाएगा, और आख़िरत में वह नुक़सान उठाने वालों में से होगा)।

﴿ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَٰقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ ٱلطُّورَ خُذُوا۟ مَآ ءَاتَيْنَٰكُم بِقُوَّةٍ وَٱذْكُرُوا۟ مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُم مِّنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۖ فَلَوْلَا فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُۥ لَكُنتُم مِّنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ ٱلَّذِينَ ٱعْتَدَوْا۟ مِنكُمْ فِى ٱلسَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا۟ قِرَدَةً خَٰسِـِٔينَ ﴿٦٥﴾ فَجَعَلْنَٰهَا نَكَٰلًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾ ﴾ [سورة البقرة:٦٣-٦٦].

(और (याद करो) जब हमने तूर (पर्वत) को तुम्हारे ऊपर करके तुमसे वचन लिया कि जो हमने तुम्हें दिया है, उसे दृढ़ता से पकड़ लो और उसमें जो (आदेश-निर्देश) हैं, उन्हें याद रखो; ताकि तुम यातना से बच सको। फिर उसके बाद तुम मुकर गये, तो यदि तुमपर अल्लाह की अनुग्रह और दया न होती, तो तुम क्षतिग्रस्तों में हो जाते। और तुम उन्हें जानते ही हो, जिन्होंने शनिवार के बारे में (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया, तो हमने कहा कि तुम तिरस्कृत बंदर हो जाओ। फिर हमने उसे, उस समय के तथा बाद के लोगों के लिए चेतावनी और अल्लाह से डरने वालों के लिए शिक्षा बना दिया)।

क़ुरआन की आयतें फिर से बनी इस्राईल की स्थिति को स्पष्ट करती हैं। इनमें यह बयान किया गया है कि अल्लाह तआला ने उनके ऊपर तूर (पर्वत) को उठा लिया और उनसे एक गंभीर और पक्का वादा लिया। यह वादा इस बात का था कि वे तौरात को अपनाएँगे, उसे पढ़ेंगे और उस पर अमल करेंगे, पूरे जोश, मेहनत और सब्र के साथ। उन्हें आदेश दिया गया था कि वे अल्लाह के हुक्मों का पालन करें, ताकि वे अल्लाह के अज़ाब से बच सकें और मुत्तक़ी

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 107)।

(परहेज़गार) लोगों में शामिल हो जाएँ।[1] अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَإِذۡ أَخَذۡنَا مِيثَٰقَكُمۡ وَرَفَعۡنَا فَوۡقَكُمُ ٱلطُّورَ خُذُواْ مَآ ءَاتَيۡنَٰكُم بِقُوَّةٖ وَٱذۡكُرُواْ مَا فِيهِ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ٦٣﴾ (और (याद करो) जब हमने तूर (पर्वत) को तुम्हारे ऊपर करके तुमसे वचन लिया कि जो हमने तुम्हें दिया है, उसे दृढ़ता से पकड़ लो और उसमें जो (आदेश-निर्देश) हैं, उन्हें याद रखो; ताकि तुम यातना से बच सको)।

यह अल्लाह तआला की ओर से बनी इस्राईल के लिए एक नसीहत है और दूसरों के लिए एक शिक्षा, ताकि वे अपने पूर्वजों के हालात से सबक लें। यह बात दावत (इस्लामी प्रचार) और तरबियत (शिक्षा और प्रशिक्षण) के लिए याद दिलाने की अहमियत को भी उजागर करती है। साथ ही, यह स्पष्ट करती है कि सच्चाइयों को बयान करना कितना ज़रूरी है, क्योंकि इससे इंसान को वह प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलता है जो उसे अल्लाह की आज्ञा पालन की ओर ले जाता है और पाप से बचने के लिए आगाह करता है।

मीसाक़ (वचन) लेने के द्वारा इसकी अहमियत ज़ाहिर होती है, विशेष रूप से अल्लाह तआला के साथ, जो हर चीज़ का सृष्टिकर्ता और मालिक है। इसी तरह, तूर (पर्वत) को उठाने की घटना अल्लाह तआला की महान शक्ति को दर्शाती है। यह भी उसकी रहमत का प्रमाण है कि उसने अपने बंदों को डराने के लिए ऐसे अद्भुत तरीकों का उपयोग किया, जिससे इंसान स्तब्ध हो जाए। पर्वत को उनके ऊपर उठाया गया, और यदि अल्लाह की रहमत न होती तो वे इसी से नष्ट हो जाते। इस बयान से यह भी स्पष्ट होता है कि अल्लाह के दीन (इस्लाम) को पूरे जोश और मेहनत के साथ अपनाना कितना आवश्यक है। साथ ही, इसे सीखने, दूसरों को सिखाने और इसे तमाम मख़लूक़ात (सृष्टियों) के बीच फैलाने की भी अहमियत समझ में आती है। इस तरह, एक मुसलमान अल्लाह तआला के ग़ज़ब से बच सकता है और उसे वह तक़्वा (परहेज़गारी) प्राप्त हो सकती है जो उसे दोनों जहानों की भलाई दिलाती है।

इसके बावजूद कि उनसे वचन लिया गया था और उन्होंने पर्वत को अपने ऊपर उठाया हुआ देखा, वे फिर भी मुकर गए, जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया है: ﴿ثُمَّ تَوَلَّيۡتُم مِّنۢ بَعۡدِ ذَٰلِكَۖ﴾ (फिर भी तुमने इसके बाद मुंह मोड़ लिया)। लेकिन इस सब के बावजूद, अल्लाह तआला का करम बहुत बड़ा है, जैसा कि उसने फ़रमाया: ﴿فَلَوۡلَا فَضۡلُ ٱللَّهِ عَلَيۡكُمۡ وَرَحۡمَتُهُۥ لَكُنتُم مِّنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ﴾ (तो यदि तुमपर अल्लाह की अनुग्रह और दया न होती, तो तुम क्षतिग्रस्तों में हो जाते)। यह इस बात का संकेत है कि अल्लाह तआला की अपनी बंदों पर रहमत और कृपा अत्यंत महान है। अगर यह कृपा और रहमत न होती, तो लोग हानि का शिकार हो जाते। और किसी भी गुनहगार को तौबा करने का अवसर न मिलता। अल्लाह तआला की कृपा और रहमत में यह भी शामिल

(1) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 65)।

है कि उसने अपने नबियों को भेजा, और उनके बीच में अंतिम नबी, हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा।

यह महान ब्रह्मांडीय घटना इस बात को दर्शाती है कि कायनात (ब्रह्मांड) में होने वाली घटनाएँ, जैसे भूकंप, ज्वालामुखी, बाढ़, सूर्य और चंद्रग्रहण, दुर्घटनाएँ और युद्ध, ये सब संसार के लिए अल्लाह की निशानियाँ हैं। ये घटनाएँ इंसानों को अल्लाह की ताकत, उसकी योजना और उसकी चेतावनियों की याद दिलाती हैं। यह सब क़ायनात में होने वाली सजीव निशानियाँ हैं, जो इंसान को जागरूक करती हैं और उसे अल्लाह के आदेशों की तरफ़ लौटने की प्रेरणा देती हैं।

फिर आयतें उन लोगों की कहानी का ज़िक्र करती हैं जिन्होंने सब्त (शनिवार) के दिन उल्लंघन किया। अल्लाह तआला ने उन पर ग़ज़ब किया और उन्हें बंदर बना दिया। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: ﴿وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ۝٦٥﴾ (और तुम उन्हें जानते ही हो, जिन्होंने शनिवार के बारे में (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया, तो हमने कहा कि तुम तिरस्कृत बंदर हो जाओ)। यह कहानी पूरी तरह से सूरह अल-आ'राफ़ में विस्तार से बयान की गई है, लेकिन यहाँ इस कहानी का संक्षेप में ज़िक्र किया गया है। कहानी को संक्षेप में प्रस्तुत करने में एक प्रकार की दिलचस्पी और उत्तेजना होती है, जो पाठक को इसकी और अधिक जानकारी जानने की इच्छा पैदा करती है। इसमें यह भी सिखाया गया है कि पापों का कितना ख़तरनाक असर हो सकता है, और अल्लाह तआला की सज़ा कितनी तेज़ और अचूक होती है। कभी-कभी, सज़ा ऐसे तरीक़े से आती है, जो उस गुनहगार के मन-मस्तिष्क में भी नहीं आ सकता। उदाहरण के तौर पर, उन लोगों को बंदर बना दिया गया, जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा: ﴿كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ﴾ (तुम तिरस्कृत बंदर हो जाओ)। तो वे हीन और अपमानित बंदरों में बदल गए।

कभी-कभी पाप वास्तव में पापी को अपमानित करने का कारण बन सकता है, इसलिए, एक ईमानदार व्यक्ति को पापों के खतरों से बचने के लिए सतर्क रहना चाहिए और अल्लाह तआला से सफलता, मदद और सही मार्गदर्शन की दुआ करनी चाहिए।

फिर अल्लाह तआला यह स्पष्ट करता है कि उसने शनिवार के दिन पाप करने वालों की सज़ा को दूसरों के लिए एक शिक्षा और संदेश बना दिया, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝٦٦﴾ (फिर हमने उसे, उस समय के तथा बाद के लोगों के लिए चेतावनी और अल्लाह से डरने वालों के लिए शिक्षा बना दिया)। यह इस बात को दर्शाता है कि जब किसी पर अल्लाह तआला की सज़ा या हद लागू

होती है, तो वह पापी के लिए दंड होती है, लेकिन यह दूसरों के लिए भी एक शिक्षा (इबरत) बन जाती है। इससे लोग धर्म की सच्चाई और अल्लाह के आदेशों का पालन करने का महत्व समझ सकते हैं, और यह उन लोगों के लिए एक चेतावनी है जो अल्लाह के खिलाफ़ जाते हैं। साथ ही, यह "मौइज़त" (उपदेश) भी उन परहेज़गारों (मुत्तक़ी) के लिए है ﴿وَمَوۡعِظَةٗ لِّلۡمُتَّقِينَ﴾, ताकि वे इस से एवं अन्य प्रकार के पापों से दूर रहें। इस उपदेश से उन्हें पापों से बचने के लिए सतर्कता और हिफाज़त की शिक्षा प्राप्त होती है, जिससे वे अधिक ईमानदार बनते हैं।

﴿وَإِذۡ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوۡمِهِۦٓ إِنَّ ٱللَّهَ يَأۡمُرُكُمۡ أَن تَذۡبَحُواْ بَقَرَةٗۖ قَالُوٓاْ أَتَتَّخِذُنَا هُزُوٗاۖ قَالَ أَعُوذُ بِٱللَّهِ أَنۡ أَكُونَ مِنَ
ٱلۡجَٰهِلِينَ ٦٧ قَالُواْ ٱدۡعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَۚ قَالَ إِنَّهُۥ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٞ لَّا فَارِضٞ وَلَا بِكۡرٌ عَوَانُۢ بَيۡنَ ذَٰلِكَۖ
فَٱفۡعَلُواْ مَا تُؤۡمَرُونَ ٦٨ قَالُواْ ٱدۡعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا لَوۡنُهَاۚ قَالَ إِنَّهُۥ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٞ صَفۡرَآءُ فَاقِعٞ
لَّوۡنُهَا تَسُرُّ ٱلنَّٰظِرِينَ ٦٩ قَالُواْ ٱدۡعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ إِنَّ ٱلۡبَقَرَ تَشَٰبَهَ عَلَيۡنَا وَإِنَّآ إِن شَآءَ ٱللَّهُ لَمُهۡتَدُونَ ٧٠
قَالَ إِنَّهُۥ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٞ لَّا ذَلُولٞ تُثِيرُ ٱلۡأَرۡضَ وَلَا تَسۡقِي ٱلۡحَرۡثَ مُسَلَّمَةٞ لَّا شِيَةَ فِيهَاۚ قَالُواْ ٱلۡـَٰٔنَ جِئۡتَ بِٱلۡحَقِّۚ فَذَبَحُوهَا
وَمَا كَادُواْ يَفۡعَلُونَ ٧١ وَإِذۡ قَتَلۡتُمۡ نَفۡسٗا فَٱدَّٰرَٰٔتُمۡ فِيهَاۖ وَٱللَّهُ مُخۡرِجٞ مَّا كُنتُمۡ تَكۡتُمُونَ ٧٢ فَقُلۡنَا ٱضۡرِبُوهُ بِبَعۡضِهَاۚ كَذَٰلِكَ
يُحۡيِ ٱللَّهُ ٱلۡمَوۡتَىٰ وَيُرِيكُمۡ ءَايَٰتِهِۦ لَعَلَّكُمۡ تَعۡقِلُونَ ٧٣﴾ [سورة البقرة:٦٧-٧٣].

(तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहाः अल्लाह तुम्हें एक गाय वध करने का आदेश देता है। उन्होंने कहाः क्या तुम हमसे उपहास कर रहे हो? (मूसा ने) कहाः मैं अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मूर्खों में से हो जाऊँ। वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिए निवेदन करो कि हमें बता दे कि वह गाय कैसी हो? (मूसा ने) कहाः वह (अर्थातःअल्लाह) कहता है कि वह न बूढ़ी हो और न बछिया हो, इसके बीच आयु की हो। अतः जो आदेश तुम्हें दिया जा रहा है, उसे पूरा करो। वे बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिए निवेदन करो कि हमें उसका रंग बता दे। (मूसा ने) कहाः वह कहता है कि पीले गहरे रंग की गाय हो, जो देखने वालों को प्रसन्न कर दे। वे बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिए निवेदन करो कि हमें बताये कि वह किस प्रकार की हो? वास्तव में, हम गाय के बारे में दुविधा में पड़ गये हैं और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम (उस गाय का) पता लगा लेंगे। मूसा बोलेः वह कहता है कि वह ऐसी गाय हो, जो सेवा कार्य न करती हो, न खेत (भूमि) जोतती हो और न खेत सींचती हो, वह स्वस्थ हो और उसमें कोई धब्बा न हो। वे बोलेः अब तुमने उचित बात बताई है। फिर उन्होंने उसे वध कर दिया। जबकि वे समीप थे कि ये काम न करें। और (याद करो) जब तुमने एक व्यक्ति की हत्या कर दी तथा एक-दूसरे पर (दोष) थोपने लगे और अल्लाह को उसे व्यक्त करना था, जिसे तुम छुपा रहे थे। अतः हमने कहा कि उसे (निहत व्यक्ति के शव को) उस (गाय) के किसी भाग से मारो। इसी

प्रकार अल्लाह मुर्दों को जीवित करेगा और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है; ताकि तुम समझो)।

फिर आयतें मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम के बीच घटित एक घटना का वर्णन करती हैं, जिसमें बनी इस्राईल के एक व्यक्ति की हत्या का मामला सामने आया था। इस हत्या को लेकर उनमें आपस में विवाद और आरोप-प्रत्यारोप होने लगे। हर कोई दूसरे को दोषी ठहराने लगा, और मामला इतना बढ़ गया कि उनके बीच बड़ा संघर्ष और फसाद खड़ा होने का ख़तरा पैदा हो गया। ऐसे में अल्लाह तआला ने उनकी इस उलझन को दूर कर दिया और विवाद को सुलझाने का मार्ग दिखाया। मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से कहा कि क़ातिल का पता लगाने के लिए एक गाय का वध करो[1] ﴿وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِۦٓ إِنَّ ٱللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تَذْبَحُوا۟ بَقَرَةً﴾ (तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहाः अल्लाह तुम्हें एक गाय वध करने का आदेश देता है)।

फिर इस घटना का विवरण उनकी हठधर्मी को उजागर करता है, जब उन्होंने अपने नबी से, जो उन्हें अल्लाह के आदेशों को बता रहे थे, तर्क-वितर्क और विरोध किया। ﴿قَالُوٓا۟ أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا﴾ (क्या तुम हमसे उपहास कर रहे हो?)। उनके लिए मूसा (अलैहिस्सलाम) का आदेश मानना अनिवार्य था, क्योंकि वह अल्लाह तआला की ओर से उनके नबी और रसूल थे। वह न तो झूठ बोल सकते थे और न ही मज़ाक कर सकते थे, क्योंकि नबी के बारे में ऐसा सोचना कदापि उचित नहीं है, विशेष रूप से जब वह उन से यह कह रहे थे ﴿إِنَّ ٱللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تَذْبَحُوا۟ بَقَرَةً﴾ (अल्लाह तुम्हें एक गाय वध करने का आदेश देता है)। उन्होंने यह नहीं कहा कि "मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि एक गाय ज़बह करो," बल्कि यह कहा कि यह आदेश अल्लाह तआला की ओर से है। यह बात इस ओर इशारा करती है कि नबियों के बारे में अच्छा गुमान रखना अनिवार्य है और अल्लाह तआला के आदेशों को मानना ज़रूरी है, चाहे वे हमारी समझ और तर्क के अनुसार स्पष्ट हों या हमारी बुद्धि उनकी हिकमत को पूरी तरह न समझ सके। इसलिए, अल्लाह के आदेशों को मानने में तर्क-वितर्क या अपनी इच्छाओं को प्राथमिकता देने के बजाय, पूर्ण आज्ञापालन और विनम्रता आवश्यक है। मूसा अलैहिस्सलाम ने उनके जवाब में कहा। ﴿أَعُوذُ بِٱللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ ٱلْجَٰهِلِينَ﴾ (मैं अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मूर्खों में से हो जाऊँ)। मूसा (अलैहिस्सलाम) के उत्तर से यह बात स्पष्ट होती है कि अच्छे गुमान को बनाए रखने के लिए नरम और शिष्ट भाषा का उपयोग करना चाहिए। इससे यह भी पता चलता है कि बुद्धिमान व्यक्ति अज्ञानियों की तरह व्यवहार नहीं करता और न ही उनका सा उत्तर देता है,

(1) तैसीरुल करीमिर्रह़मान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 66)।

बल्कि वह सत्य के अनुकूल बात करता है और असत्य को दूर करता है। अज्ञानी वह होता है जो गंभीर और महत्वपूर्ण परिस्थितियों में उपहास करता है, और यह दर्शाता है कि ऐसी स्थितियों में मूर्खता या अज्ञानता के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। मूसा अलैहिस्सलाम के कथन ﴿ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴾ (मैं अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मूर्खों में से हो जाऊँ) से यह भी शिक्षा मिलती है कि अल्लाह तआला से पनाह मांगने का महत्व यह है कि यह नफ़्स से दुश्मनी और अन्याय को दूर करता है, या यदि व्यक्ति पर ऐसे गुणों का आरोप लगाया जाए जिनसे वह दूर हो, तो उन्हें भी नकार देता है। अल्लाह से पनाह मांगना बंदे के लिए एक ताक़त है, जिससे वह शक्ति प्राप्त करता है।

जब मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से यह बात कही, तो उन्होंने जवाब दिया, ﴿ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ ﴾ (वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिए निवेदन करो कि हमें बता दे कि वह गाय कैसी हो?)। वे केवल यह जानने पर संतुष्ट नहीं हुए कि एक गाय ज़बह करनी है, बल्कि इसके विवरण के बारे में कठोरता और तर्क-वितर्क करने लगे। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उन से कहा ﴿إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ بَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴾ (वह न बूढ़ी हो और न बछिया हो, इसके बीच आयु की हो। अतः जो आदेश तुम्हें दिया जा रहा है, उसे पूरा करो) इसका मतलब था कि गाय न तो बहुत बूढ़ी होनी चाहिए और न ही बिल्कुल छोटी, बल्कि उनकी उम्र मध्यम होनी चाहिए। इसके साथ ही मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उन्हें ताकीद की कि वे वही करें जो आदेश दिया गया है। इसमें यह शिक्षा है कि बिना आवश्यकता के सवालों में पड़कर काम को कठिन नहीं बनाना चाहिए, क्योंकि ज़रूरत से ज़्यादा सवाल कठिनाई का कारण बन सकते हैं। लेकिन उन्होंने फिर भी मूसा (अलैहिस्सलाम) के आदेश का पूरी तरह पालन नहीं किया और कहा ﴿قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ﴿٦٩﴾ ﴾ (वे बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिए निवेदन करो कि हमें उसका रंग बता दे। (मूसा ने) कहाः वह कहता है कि पीले गहरे रंग की गाय हो, जो देखने वालों को प्रसन्न कर दे)। फिर भी वे और अधिक तर्क-वितर्क करते रहे और बोले ﴿قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا ﴾ (वे बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिए निवेदन करो कि हमें बताये कि वह किस प्रकार की हो? वास्तव में, हम गाय के बारे में दुविधा में पड़ गये हैं और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम (उस गाय का) पता लगा लेंगे। मूसा बोलेः वह कहता है कि वह ऐसी गाय हो, जो सेवा कार्य न करती हो, न खेत (भूमि) जोतती हो और न खेत सींचती हो, वह स्वस्थ हो और उसमें कोई धब्बा न हो)। मूसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें समझाया कि वह गाय न तो खेती में हल चलाने का काम करती हो और न ही पानी

निकालने के लिए उपयोग की जाती हो, और वह हर प्रकार के दोषों से मुक्त हो। यह सुनकर उन्होंने कहा ﴿قَالُواْ ٱلۡـَٔـٰنَ جِئۡتَ بِٱلۡحَقِّۚ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُواْ يَفۡعَلُونَ﴾ (वे बोलेः अब तुमने उचित बात बताई है। फिर उन्होंने उसे वध कर दिया। जबकि वे समीप थे कि ये काम न करें)। उनके कथन ﴿ٱلۡـَٔـٰنَ جِئۡتَ بِٱلۡحَقِّۚ﴾ (अब तुमने उचित बात बताई है) से यह प्रतीत होता है कि इससे पहले वे जो कुछ बताया जा रहा था, उसे सत्य मानने से इनकार कर रहे थे। यह घटना उनकी हठधर्मी और ज़िद को दर्शाती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मार्ग सरलता और सहूलत को अपनाने का था। जब भी हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दो विकल्प दिए गए, तो आपने हमेशा आसान और सरल विकल्प को चुना, ताकि यह मुसलमानों के लिए एक आदर्श बन सके और उनकी ज़िन्दगी में सहजता और सरलता को बढ़ावा मिले। यह उनका व्यवहारिक तरीका था जो हमें अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देता है।

फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उन्हें आदेश दिया कि वे एक हड्डी लें और उसे मृत व्यक्ति पर मारें। उन्होंने ऐसा किया, जिससे मृत व्यक्ति की आत्मा वापस लौट आई और उसने अपने क़ातिल का नाम बताया। इस के पश्चात वह फिर से मृत हो गया जैसा वह पहले था।[1] इस प्रकार, अल्लाह तआला ने उनके छुपाए गए क़ातिल को प्रकट कर दिया। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَإِذۡ قَتَلۡتُمۡ نَفۡسٗا فَٱدَّٰرَٰٔتُمۡ فِيهَاۖ وَٱللَّهُ مُخۡرِجٞ مَّا كُنتُمۡ تَكۡتُمُونَ ٧٢﴾ (और (याद करो) जब तुमने एक व्यक्ति की हत्या कर दी तथा एक-दूसरे पर (दोष) थोपने लगे और अल्लाह को उसे व्यक्त करना था, जिसे तुम छुपा रहे थे)। इसमें उनके लिए और सभी के लिए यह प्रमाण है कि अल्लाह तआला मृत्यु और जीवन का मालिक है, और वह किसी भी चीज़ से अप्रतिबंधित है। अल्लाह तआला जिस तरह चाहे वैसा करता है, और यह दिखाता है कि अल्लाह तआला के लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है। अल्लाह ने मृत व्यक्ति को गाय की हड्डी से जीवित किया, जबकि वह चाहता तो अपनी शक्ति से केवल "كن, कुन" (हो जा) कहकर उसे जीवित कर सकता था। यह बात इस बात को प्रमाणित करती है कि अल्लाह तआला की विधियों का पालन करना आवश्यक है, जबकि वह हर चीज़ पर पूर्ण रूप से सक्षम है। यह घटना यह भी स्पष्ट करती है और अहल-ए-किताब के लिए प्रमाण प्रस्तुत करती है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की नुबुव्वत सत्य है, और यह क़ुरआन सच्चा है, क्योंकि वह उन घटनाओं को उजागर करता है जो उनसे पहले घट चुकी थीं, जबकि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) न तो पढ़ सकते थे और न लिख सकते थे।

---

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 112)।

इससे यह भी एक महत्वपूर्ण लाभ सामने आता है, जो सूरह अल-बक़रह (जिसका अर्थ गाय होता है) तथा इस अद्भुत घटना के बीच संबंध से संबंधित है। यह घटना अल्लाह तआला की शक्ति का एक स्पष्ट प्रमाण है, जो मृत्यु के बाद जीवित करने और मृत व्यक्ति को बोलने की क्षमता का प्रदर्शन करती है। यह दर्शाती है कि अल्लाह तआला के पास यह अधिकार है कि वह जिसे चाहे और जैसे चाहे जीवन दे, और वह अपनी इच्छानुसार किसी भी कारण से यह कार्य कर सकता है। इस घटना में, मृत व्यक्ति को गाय की हड्डी से छूने पर उसकी आत्मा वापस लौट आई, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह तआला के आदेश से कोई भी कारण कार्य कर सकता है। इस प्रकार, यह सूरह अल-बकरह का नाम ठीक ही रखा गया, क्योंकि यह घटना अल्लाह तआला की शक्तियों को स्पष्ट रूप से उजागर करती है। सच्चाई यह है कि हर आदेश और कार्य अल्लाह तआला के द्वारा होता है, और वह अपने आदेशों में किसी को भी किसी भी रूप में शेष रख सकता है।

﴿ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُم مِّنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِىَ كَٱلْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ وَإِنَّ مِنَ ٱلْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ ٱلْأَنْهَٰرُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ ٱلْمَآءُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ ٱللَّهِ ۗ وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٤﴾﴾ [سورة البقرة:٧٤]

(फिर ये (निशानियाँ देखने) के बाद तुम्हारे दिल पत्थरों के समान या उनसे भी अधिक कठोर हो गये; क्योंकि पत्थरों में कुछ ऐसे होते हैं, जिनसे नहरें फूट पड़ती हैं और कुछ फट जाते हैं और उनसे पानी निकल आता है और कुछ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं और अल्लाह तुम्हारे करतूतों से निश्चेत नहीं है)।

यह पवित्र आयत इस बात को स्पष्ट करती है कि बनी इस्राईल के लोगों के दिल कैसे कठोर हो गए, जबकि उन्होंने अद्भुत चमत्कार देखे थे, जो दिल को हिला देने वाले और अल्लाह के आदेशों और निर्देशों को स्वीकार करने वाले थे। अल्लाह तआला ने उनके साथ अनेक कृपाएँ कीं, जैसे उन पर मन्न और सलवा उतारना, उन्हें फिरऔन के ज़ुल्म से बचाना, उनके दुश्मनों को उनके सामने डुबो देना, और उन्हें पवित्र भूमि में दाखिल करना। ये सारी घटनाएँ अल्लाह से प्रेम करने और उसकी आज्ञा का पालन करने का कारण बननी चाहिए थीं। समुद्र के विभाजन और फिरऔन के डूबने, पर्वत को उनके ऊपर उठाने और मृत व्यक्ति को जीवित करने जैसे चमत्कार उनके लिए भय, आज्ञापालन और समर्पण का कारण बनने चाहिए थे। लेकिन, इन सभी स्पष्ट और अनिवार्य प्रमाणों के बावजूद, उनके दिल कठोर हो गए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُم مِّنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِىَ كَٱلْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ﴾ (फिर ये (निशानियाँ देखने) के बाद तुम्हारे दिल पत्थरों के समान या उनसे भी अधिक कठोर हो गये)।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कुछ बुद्धियां सत्य को स्वीकार नहीं करतीं, चाहे वे कितने ही प्रमाण और तर्क देख लें। कुछ दिल ऐसे होते हैं जो न तो उन पर की गई कृपाओं से प्रभावित होते हैं और न ही उन्हें डराने वाले कारणों से। अगर वे कभी समर्पण करते भी हैं, तो वह केवल अस्थायी होता है, और जल्द ही वे अपने पहले के विचलित मार्ग पर लौट जाते हैं। अल्लाह तआला की महान कृपा यह है कि उसने ईमानवालों पर केवल भलाई का मार्ग दिखाने और दूसरों का मार्गदर्शन करने की जिम्मेदारी डाली है। किसी को यह जिम्मेदारी नहीं दी गई कि वह किसी के दिल को बदलकर उसे मजबूर कर के आज्ञाकारी बनाए। यह विशेषता केवल अल्लाह के हाथ में है। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरह अल-क़सस में फ़रमाया है: ﴿إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَآءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِٱلْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾﴾ (तुम जिसे चाहो उसे हिदायत नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है, उसे हिदायत देता है)। (सूरह अल-क़सस: 56)।

यह आयत इस बात को दर्शाती है कि जब दिल कठोर हो जाता है और उसकी कठोरता बढ़ जाती है, तो वह सत्य को स्वीकार नहीं करता। बल्कि उसकी कठोरता पत्थरों की कठोरता से भी अधिक हो जाती है। यहाँ तक कि पत्थर भी इस कठोर दिल की तुलना में अधिक संवेदनशील होते हैं। ﴿وَإِنَّ مِنَ ٱلْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ ٱلْأَنْهَٰرُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ ٱلْمَآءُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ ٱللَّهِ ۗ﴾ (क्योंकि पत्थरों में कुछ ऐसे होते हैं, जिनसे नहरें फूट पड़ती हैं और कुछ फट जाते हैं और उनसे पानी निकल आता है और कुछ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं)। तो पत्थरों में ऐसे भी होते हैं जिनसे नदियाँ और झरने फूटते हैं, और कुछ अल्लाह तआला के भय से चकनाचूर हो जाते हैं, जैसे त़ूर पर्वत जब अल्लाह तआला की जलाली शक्ति प्रकट हुई। और जैसे उहुद पर्वत कांपने और हिलने लगा जब हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा आप के स़हाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम आप के साथ उस पर चढ़े। ﴿وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ ٱللَّهِ ۗ﴾ (और कुछ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं)।

तथा जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरह अल-हश्र में फ़रमाया: ﴿لَوْ أَنزَلْنَا هَٰذَا ٱلْقُرْءَانَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُۥ خَٰشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ ٱللَّهِ ۚ﴾ (यदि हमने इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतारा होता, तो तुम उसे अल्लाह के भय से झुकता और फटता हुआ देखते)। और जैसे त़ूर पर्वत को अल्लाह तआला की जलाली शक्ति प्रकट होने पर चूर-चूर कर दिया गया: ﴿فَلَمَّا تَجَلَّىٰ رَبُّهُۥ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُۥ دَكًّا﴾ (फिर जब उस का पालनहार पर्वत की ओर प्रकाशित हुआ तो उसे चूर-चूर कर दिया)। और उहुद पर्वत का कांपना जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस पर चढ़े, इसी प्रकार खजूर के तने का रोना। इस प्रकार, कुछ पत्थर उन मनुष्यों के दिलों से बेहतर होते हैं, जिन्होंने अल्लाह को सत्य जानने के बावजूद भी उस पर ईमान नहीं लाया।

फिर यह पवित्र आयत इस बात पर समाप्त होती है कि अल्लाह तआला अपनी महानता को स्पष्ट करता है और इस भ्रम को दूर करता है जो प्राणियों में हो सकती है। ﴿وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُونَ﴾ (और अल्लाह तुम्हारे करतूतों से निश्चेत नहीं है)। अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात से उस ग़फ़लत (असावधानी) को दूर कर दिया, जो इंसानों का स्वभाव है। यह प्रशंसा की शैली है जिसमें विरोधी गुण का निषेध किया गया है, जो पूर्णता की प्रशंसा को स्पष्ट करता है। इस प्रकार की अभिव्यक्ति, जिसमें कमी का निषेध किया गया है, अल्लाह की पूर्णता का प्रमाण है। अल्लाह तआला पूर्ण है और हर प्रकार की कमी से पाक है। उसके ज्ञान से कुछ भी छुपा नहीं है, चाहे वह इंसानों के रहस्य हों, उनके दिलों में छिपी नीयतें हों, या वह बातें जो वे ज़ाहिर करते हैं। यह सब अल्लाह के लिए स्पष्ट और प्रकट है। अल्लाह तआला महान और सर्वोच्च है।

﴿۞ أَفَتَطۡمَعُونَ أَن يُؤۡمِنُواْ لَكُمۡ وَقَدۡ كَانَ فَرِيقٞ مِّنۡهُمۡ يَسۡمَعُونَ كَلَٰمَ ٱللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُۥ مِنۢ بَعۡدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمۡ يَعۡلَمُونَ ۝٧٥ وَإِذَا لَقُواْ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ قَالُوٓاْ ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَا بَعۡضُهُمۡ إِلَىٰ بَعۡضٖ قَالُوٓاْ أَتُحَدِّثُونَهُم بِمَا فَتَحَ ٱللَّهُ عَلَيۡكُمۡ لِيُحَآجُّوكُم بِهِۦ عِندَ رَبِّكُمۡۚ أَفَلَا تَعۡقِلُونَ ۝٧٦ أَوَلَا يَعۡلَمُونَ أَنَّ ٱللَّهَ يَعۡلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعۡلِنُونَ ۝٧٧﴾ [سورة البقرة:٧٥-٧٧].

(क्या तुम आशा रखते हो कि (यहूदी) तुम्हारी बात मान लेंगे, जबकि उनमें एक गिरोह ऐसा था, जो अल्लाह की वाणी (तौरात) को सुनता था और समझ जाने के बाद जान-बूझ कर उसमें परिवर्तण कर देता था? तथा जब वे ईमान वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम भी ईमान लाये और जब एकान्त में आपस में एक-दूसरे से मिलते हैं, तो कहते हैं कि तुम उन्हें वो बातें क्यों बताते हो, जो अल्लाह ने तुमपर खोली हैं? इसलिए कि प्रलय के दिन तुम्हारे पालनहार के पास इसे तुम्हारे विरुध्द प्रमाण बनायें? क्या तुम समझते नहीं हो? क्या वे नहीं जानते कि वे जो कुछ छुपाते तथा व्यक्त करते हैं, वो सब अल्लाह जानता है?)।

फिर संवाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की ओर मुड़ता है। इसमें एक प्रश्नात्मक शैली अपनाई गई है, जो यहूदियों के उस समूह के इस्लाम स्वीकारने की आशा पर हैरत प्रकट करती है, जो मदीना में रहते थे। ﴿أَفَتَطۡمَعُونَ أَن يُؤۡمِنُواْ لَكُمۡ﴾ (क्या तुम आशा रखते हो कि (यहूदी) तुम्हारी बात मान लेंगे)।

यह इस बात को दर्शाता है कि ईमानवालों में दूसरों को इस्लाम की ओर बुलाने का कितना उत्साह था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की यह इच्छा थी कि यहूदी इस्लाम स्वीकार कर लें, यह इस बात का प्रमाण है कि काफ़िरों को जहन्नम से बचाने की चाहत उन्हें छोड़ देने और उनकी दावत को नज़रअंदाज़ करने से अधिक

महत्वपूर्ण है। खासतौर पर ईमानवालों को, क्योंकि वे दावत के सबसे ज़्यादा हक़दार हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि दूसरों के लिए भलाई चाहना, उनके इस्लाम स्वीकारने के माध्यम से, उनकी कुफ़्र की हालत में बने रहने से अधिक प्राथमिकता रखता है। अल्लाह तआला का यह मार्गदर्शन इस बात को भी स्पष्ट करता है कि ईमानवाले यहूदियों के इस समूह की असलियत को पूरी तरह नहीं समझते थे, जब तक कि अल्लाह ने इसे उनके लिए स्पष्ट नहीं किया। इसके साथ ही, यह दूसरों को मार्गदर्शन देने की समग्र इच्छा पर बल देता है। अन्सार (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने यहूदियों के इस्लाम कबूल करने के लिए उत्सुकता दिखाई क्योंकि उनके बीच एक गठबंधन और पड़ोसी होने का संबंध था।[1] यह अन्सार की अपने पड़ोसियों और संधियों के प्रति निष्ठा को दर्शाता है। लेकिन अल्लाह तआला वह सच्चाई जानता है जिसे मनुष्य नहीं जानता, केवल अल्लाह के ज्ञान से ही वह सत्य प्रकट होता है।

आयत ने उनके इस्लाम की सत्यता को स्पष्ट कर दिया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿۞أَفَتَطْمَعُونَ أَن يُؤْمِنُوا۟ لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلَـٰمَ ٱللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُۥ مِنۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ٧٥﴾ (क्या तुम आशा रखते हो कि (यहूदी) तुम्हारी बात मान लेंगे, जबकि उनमें एक गिरोह ऐसा था, जो अल्लाह की वाणी (तौरात) को सुनता था और समझ जाने के बाद जान-बूझ कर उसमें परिवर्तण कर देता था?)। इस आयत ने उनके ईमान को संदिग्ध करने का कारण स्पष्ट किया, यह बताते हुए कि उनके पूर्वजों में से एक समूह ऐसा था, जो अल्लाह के शब्दों को सुनने के बाद उन्हें बदल देता था, हालांकि उन्होंने ﴿عَقَلُوهُ﴾ उन्हें समझा और जाना भी था। यह इस बात को दर्शाता है कि उनके पूर्वजों ने सत्य को पहचाना, लेकिन फिर भी उन्होंने उसका विरोध किया। तो फिर आप कैसे इन लोगों के इस्लाम को लेकर उम्मीदें रख सकते हैं, जब उन्होंने सत्य को पहचानने के बावजूद उसे नकारा।

यह इस बात को स्पष्ट करता है कि हर व्यक्ति जो सत्य को नकारता है, वह उस से अनजान नहीं होता, बल्कि कुछ लोग सत्य को जानते हुए भी उसे जान-बूझकर नकारते हैं और उसका विकृत रूप प्रस्तुत करते हैं। यह बताता है कि इंसान को अपने दिल में किसी भी प्रकार की घृणा, अहंकार और इच्छाओं से बचने की आवश्यकता है, क्योंकि ये भावनाएँ उसे सत्य को स्वीकार करने से रोकती हैं। अगर ये भावनाएँ इंसान को जीवन के सबसे बड़े सत्य को नकारने के लिए प्रेरित कर सकती हैं, तो वे उस व्यक्ति को छोटी चीजों जैसे व्यापार, पेशेवर संबंधों, सार्वजनिक और निजी प्रशासन में भी भ्रमित कर सकती हैं, जहाँ लोगों के फायदे जुड़े होते हैं। इसलिए अहंकार, जलन और इच्छाओं से बचना बहुत जरूरी है, क्योंकि ये शैतानों का हथियार होते हैं, चाहे वे इंसान के हों या जिन्न के।

---

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन (2/ 3)।

फिर अल्लाह तआला मुनाफ़िकों की स्थिति को ईमान वालों के साथ स्पष्ट करता है और उनके आपसी मतभेदों को भी उजागर करता है ﴿وَإِذَا لَقُوا۟ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ قَالُوٓا۟ ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ قَالُوٓا۟ أَتُحَدِّثُونَهُم بِمَا فَتَحَ ٱللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوكُم بِهِۦ عِندَ رَبِّكُمْ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٧٦﴾ (तथा जब वे ईमान वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम भी ईमान लाये और जब एकान्त में आपस में एक-दूसरे से मिलते हैं, तो कहते हैं कि तुम उन्हें वो बातें क्यों बताते हो, जो अल्लाह ने तुमपर खोली हैं? इसलिए कि प्रलय के दिन तुम्हारे पालनहार के पास इसे तुम्हारे विरुध्द प्रमाण बनायें? क्या तुम समझते नहीं हो?)। अल्लाह तआला मुनाफ़िकों की स्थिति का वर्णन करते हुए बताता है कि वे ईमान वालों के सामने ईमान का दिखावा करते हैं, लेकिन जब आपस में मिलते हैं, तो वे मुसलमानों से कहे गए अपने उन बयानों का इनकार करते हैं, जिनमें उन्होंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत और इस्लाम की सत्यता को स्वीकार किया था। वे अपने इस विरोधाभास को इस प्रकार तर्कसंगत ठहराते हैं कि इस्लाम की सत्यता को मान लेने से उनके खिलाफ़ दलील पेश की जाएगी, और मुसलमान इसे अल्लाह के सामने उनके विरुद्ध गवाही के रूप में इस्तेमाल करेंगे। इससे यह पता चलता है कि वे असल में सत्य के अज्ञानी नहीं हैं, बल्कि जानबूझकर अज्ञानता और मूर्खता का प्रदर्शन करते हैं। अल्लाह तआला उनके बारे में फ़रमाता है: ﴿أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ٧٧﴾ (क्या वे नहीं जानते कि वे जो कुछ छुपाते तथा व्यक्त करते हैं, वो सब अल्लाह जानता है?) यह एक प्रश्न के रूप में किया गया तिरस्कार है, जो उनकी स्थिति को उजागर करता है। यह उन्हें डांटने और फटकारने का संकेत देता है।

यह इस बात को स्पष्ट करता है कि अल्लाह तआला का असीम ज्ञान और जागरूकता हर चीज़ पर है, चाहे इंसान उसे प्रकट करे या छुपाए। अल्लाह से कुछ भी छुपा नहीं है। इसके अलावा, पिछली आयतें यह बताती हैं कि मुनाफ़िकों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वे इस्लाम का प्रदर्शन करते हैं, जबकि उनके दिल में कुफ़्र छुपा होता है। इससे ईमान वालों के लिए यह सबक निकलता है कि वे काफ़िरों के छल-कपट से सतर्क रहें और उनके जैसे व्यवहार या चरित्र को अपनाने से बचें, क्योंकि ये मुनाफ़िक वाले एवं शैतानी तरीके हैं।

﴿وَمِنْهُمْ أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ ٱلْكِتَٰبَ إِلَّآ أَمَانِىَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ٧٨ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ يَكْتُبُونَ ٱلْكِتَٰبَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَٰذَا مِنْ عِندِ ٱللَّهِ لِيَشْتَرُوا۟ بِهِۦ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَوَيْلٌ لَّهُم مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُم مِّمَّا يَكْسِبُونَ ٧٩ وَقَالُوا۟ لَن تَمَسَّنَا ٱلنَّارُ إِلَّآ أَيَّامًا مَّعْدُودَةً ۚ قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِندَ ٱللَّهِ عَهْدًا فَلَن يُخْلِفَ ٱللَّهُ عَهْدَهُۥٓ ۖ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ٨٠ بَلَىٰ مَن كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَٰطَتْ بِهِۦ خَطِيٓـَٔتُهُۥ فَأُو۟لَٰٓئِكَ

أَصۡحَٰبُ ٱلنَّارِۖ هُمۡ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٨١﴾ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ أُوْلَٰٓئِكَ أَصۡحَٰبُ ٱلۡجَنَّةِۖ هُمۡ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٨٢﴾﴾ [سورة البقرة:٧٨-٨٢].

(तथा उनमें कुछ अनपढ़ हैं, वे पुस्तक (तौरात) का ज्ञान नहीं रखते, परन्तु निराधार कामनायें करते तथा केवल अनुमान लगाते हैं। तो विनाश है उनके लिए जो अपने हाथों से पुस्तक लिखते हैं, फिर कहते हैं कि ये अल्लाह की ओर से है, ताकि उसके द्वारा तनिक मूल्य खरीदें! तो विनाश है उनके अपने हाथों के लेख के कारण! और विनाश है उनकी कमाई के कारण! तथा उन्होंने कहा कि हमें नरक की अग्नि गिनती के कुछ दिनों के सिवा स्पर्श नहीं करेगी। (हे नबी!) उनसे कहो कि क्या तुमने अल्लाह से कोई वचन ले लिया है कि अल्लाह अपना वचन भंग नहीं करेगा? बल्कि तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बातें करते हो, जिनका तुम्हें ज्ञान नहीं। क्यों नहीं, जो भी बुराई कमायेगा तथा उसका पाप उसे घेर लेगा, तो वही नारकीय हैं और वही उसमें सदावासी होंगे। तथा जो ईमान लायें और सत्कर्म करें, वही स्वर्गीय हैं और वे उसमें सदावासी होंगे)।

अल्लाह तआला यह स्पष्ट कर रहा है कि अहले किताब में से कुछ लोग अनपढ़ हैं, जो लिखना-पढ़ना नहीं जानते और अल्लाह द्वारा उतारी गई किताब के वास्तविक अर्थ से अनभिज्ञ हैं। वे केवल अपनी इच्छाओं के अनुसार अल्लाह से उम्मीदें रखते हैं और वास्तविक ज्ञान के बिना केवल अनुमान और अटकलें लगाते हैं। यह इस बात की गंभीरता को दर्शाता है कि किसी व्यक्ति को अल्लाह की किताब के बारे में बिना ज्ञान के कुछ नहीं कहना चाहिए। यह कहना कि यह संभव नहीं है, यह गलत है, यह जायज़ है, या यह ह़राम है, बिना किसी ठोस ज्ञान के सिर्फ अपने समझने के भ्रम और अपनी राय को सही मानते हुए बोलना घातक हो सकता है।

यह आलोचना उसके विपरीत पक्ष की प्रशंसा का संकेत देती है, अर्थात ज्ञान। यह ज्ञान के साथ बात करने की आवश्यकता को भी रेखांकित करती है और विद्वानों तथा रब्बानी (ईश्वरीय) ज्ञान रखने वालों के महत्व को दर्शाती है, जो ज्ञान और समझ के आधार पर बोलते हैं, न कि अपने कल्पित विचारों और अनुमानों के आधार पर।

यह निंदा उसके विपरीत की प्रशंसा को इंगित करती है, जो कि ज्ञान है, और इसी तरह ज्ञान के साथ बात करने का महत्व भी। यह विद्वानों और धर्मपरायण ज्ञानियों की श्रेष्ठता को दर्शाता है, जो ज्ञान और समझ के साथ बातें करते हैं, ना कि अपने अनुमान और भ्रम के आधार पर। यह बताता है कि कुछ लोग अल्लाह के धर्म के बारे में बिना ज्ञान के बातें करते हैं, जिससे सावधान रहना आवश्यक है। मुसलमान को अल्लाह से यह दुआ करनी चाहिए कि वह बिना ज्ञान के कुछ न कहे। उसे बिना ज्ञान वाले से फतवा नहीं लेना चाहिए, और न ही किसी बिना ज्ञान वाले की धार्मिक मामलों में सलाह सुननी चाहिए। अल्लाह तआला के इस कथन से यह

निष्कर्ष निकलता है: ﴿وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ﴾ (वे केवल अनुमान लगाते हैं) कि अनुमान ज्ञान नहीं है, बल्कि यह भ्रम और अनुमान है, और इस पर तब तक भरोसा नहीं किया जा सकता जब तक कि ज्ञान द्वारा सत्यापन नहीं हो जाता, जो किसी चीज़ की सच्चाई को निश्चित रूप से समझना है।

फिर अल्लाह तआला उन लोगों को चेतावनी देता है जो किताब को परिवर्तित करते हैं और उसे बदल कर कुछ और लिखते हैं, फिर उसे अल्लाह की ओर से बताते हैं और झूठा दावा करते हैं कि यह अल्लाह की मर्जी है ﴿فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَٰذَا مِنْ عِندِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا﴾ (तो विनाश है उनके लिए जो अपने हाथों से पुस्तक लिखते हैं, फिर कहते हैं कि ये अल्लाह की ओर से है, ताकि उसके द्वारा तनिक मूल्य खरीदें)। इब्न -ए- कसीर रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: ये यहूदियों का एक और वर्ग है, जो झूठ और धोखे से लोगों को गुमराही की ओर बुलाता है और अल्लाह तआला पर झूठ गढ़ता है, साथ ही नाजायज़ तरीके से लोगों का माल खाता है।(1) हालाँकि यह वाकया बनी इसराईल के बारे में है, लेकिन उनके किस्सों में नसीहत और इस रवैये से बचने की चेतावनी है, क्योंकि इंसानों में ऐसे लोग हो सकते हैं जो इनकी तरह का रवैया अपनाएँ।

फिर अल्लाह तआला ने उनके लिए अपने अज़ाब की धमकी बयान की। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: ﴿فَوَيْلٌ لَّهُم مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُم مِّمَّا يَكْسِبُونَ﴾ (तो विनाश है उनके अपने हाथों के लेख के कारण! और विनाश है उनकी कमाई के कारण)। अरबी भाषा के "वैल"शब्द का अर्थ होता है विनाश और तबाही। कुछ विद्वानों ने कहा है कि यह जहन्नम की तह में बहने वाला गाढ़ा मवाद (पस) है। एक अन्य मत के अनुसार यह जहन्नम की एक घाटी है, जिसमें अगर पहाड़ों को डाला जाए तो वे पिघल जाएँ। हदीस़ में आता है: "वैल, जहन्नम की एक घाटी है, जिसमें काफ़िर चालीस साल तक गिरता रहेगा, इससे पहले कि वह उसकी गहराई तक पहुँचे"।(2)

इस आयत में उनके द्वारा किए गए दो बड़े अपराधों और उनके परिणामस्वरूप होने वाली सजा का उल्लेख किया गया है, जैसे कि अल्लाह तआला ने स्पष्ट किया। पहला: ﴿فَوَيْلٌ لَّهُم مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ﴾ (विनाश है उनके अपने हाथों के लेख के कारण!) और दूसरा: ﴿وَوَيْلٌ

(2) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 121)।

(1) तिर्मिज़ी (5/ 299-300) हदीस़ संख्या (3164), यह हदीस़ ज़ईफ़ (कमज़ोर) है, ज़ईफ़ उल जामेअ, हदीस़ संख्या (6148), किंतु ज़ईफ़ हदीस़ पर तरग़ीब व तरहीब (प्रोत्साहन और डराने-धमकाने)के अध्याय में अमल किया जा सकता है।

﴿ لَّهُم مِّمَّا يَكْسِبُونَ ﴾ (और विनाश है उनकी कमाई के कारण!)। इसमें केवल अल्लाह तआला पर झूठ बोलने की गंभीरता और अल्लाह की आयतों से व्यक्तिगत लाभ उठाने की भी गंभीरता बताई गई है।

यह इंगित करता है और स्पष्ट करता है कि विद्वान एक महान और भारी जिम्मेदारी उठाते हैं, लेकिन इसके बदले में उनकी अल्लाह तआला के पास उच्च स्थिति होती है। जिम्मेदारी जितनी बड़ी होती है, इनाम भी उतना ही बड़ा होता है, और अल्लाह, जो धनी और दयालु है, वह विद्वान की मेहनत और उनकी उच्च स्थिति को नहीं भूलता जो क़ुरआन करीम और नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुनन की अमानत और सम्मान को उठाते हैं।

फिर अल्लाह तआला उन लोगों का कारण और तर्क बताता है जो अल्लाह की आयतों के साथ खिलवाड़ करते हैं, और इस तर्क के जरिए वे खुद को सही साबित करने की कोशिश करते हैं, ताकि वे अल्लाह की आयतों से कुछ स्वार्थ प्राप्त कर सकें। अल्लाह उन लोगों का उल्लेख करते हुए फ़रमाता है कि ﴿ وَقَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَةً ﴾ (उन्होंने कहा कि हमें नरक की अग्नि गिनती के कुछ दिनों के सिवा स्पर्श नहीं करेगी)। इससे यह स्पष्ट होता है कि इंसान कभी-कभी अपने किए गए कामों के लिए खुद को बहाने और तर्क देकर सही ठहराने की कोशिश करता है, जो अक्सर झूठ और धोखाधड़ी होते हैं। फिर चाहे वह तर्क कितनी भी छोटी अवधि के लिए हो, क्या इंसान उसे सच में सही ठहरा सकता है? लेकिन अल्लाह तआला इस तर्क को झूठा ठहराते हुए फ़रमाता है: ﴿ قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِندَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَن يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ ۖ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾ بَلَىٰ مَن كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨١﴾ ﴾ (हे नबी!) उनसे कहो कि क्या तुमने अल्लाह से कोई वचन ले लिया है कि अल्लाह अपना वचन भंग नहीं करेगा? बल्कि तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बातें करते हो, जिनका तुम्हें ज्ञान नहीं। क्यों नहीं, जो भी बुराई कमायेगा तथा उसका पाप उसे घेर लेगा, तो वही नारकीय हैं और वही उसमें सदावासी होंगे)।

और यह इस बात को व्यक्त करता है कि इंसान को केवल ज्ञान के आधार पर बोलना चाहिए, और अपने लिए ऐसे बहाने और तर्क नहीं बनाने चाहिए जो ह़राम को जायज ठहराने के लिए हों, और अल्लाह की आयतों को थोड़े से मूल्य पर न बेचें। क्योंकि अल्लाह की चीज़ सर्वोत्तम है, और उसका मूल्य जन्नत है, जो उसे लेने वाले को मिलेगा, बशर्ते वे अल्लाह के आदेशों के अनुसार उसे लें। जैसा कि अल्लाह तआला ने अल्लाह को झुठलाने वाले के दण्ड का उल्लेख करने के बाद फ़रमाया है ﴿ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨٢﴾ ﴾ (तथा जो ईमान लायें और सत्कर्म करें, वही स्वर्गीय हैं और वे उसमें

सदावासी होंगे)। यह उस ईमानदार व्यक्ति का पुरस्कार है जो आदेशों का पालन करता है और अल्लाह की आयतों को थोड़े से मूल्य पर नहीं बेचता। इसलिए वह अल्लाह पर झूठ नहीं बोलेगा, न ही उसकी सजा और दंड को हल्के में लेगा। हे अल्लाह, हमें अपने अज़ाब और सजा से बचा ले, तथा हमें अपनी किताब और धर्म में बिना ज्ञान के कुछ कहने से सुरक्षित रख।

﴿وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَٰقَ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا ٱللَّهَ وَبِٱلْوَٰلِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِى ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينِ وَقُولُوا۟ لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنكُمْ وَأَنتُم مُّعْرِضُونَ ﴿٨٣﴾﴾ [سورة البقرة:٨٣].

(और (याद करो) जब हमने बनी इस्राईल से दृढ़ वचन लिया कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वंदना) नहीं करोगे तथा माता-पिता के साथ उपकार करोगे और समीपवर्ती संबंधियों, अनाथों, दीन-दुखियों के साथ और लोगों से भली बात बोलोगे तथा नमाज़ की स्थापना करोगे और ज़कात दोगे, फिर तुममें से थोड़े के सिवा सबने मुँह फेर लिया और तुम (अभी भी) मुँह फेरे हुए हो)।

पवित्र आयत यह स्पष्ट करती है कि अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल के लोगों से पक्का वादा लिया कि वे केवल उसी की उपासना करेंगे और उसके साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराएंगे। और वे माता-पिता, संबंधियों, अनाथों, और गरीबों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे, और लोगों से अच्छी बात करेंगे, अच्छाई का आदेश देंगे और बुराई से मना करेंगे, और नम्रता और अच्छे संवाद के साथ पेश आएंगे। और वे नमाज़ कायम करेंगे और ज़कात देंगे। जैसा कि पवित्र आयत में बताया गया है। यह महान आयत यह भी दर्शाती है कि अल्लाह तआला के नियम धर्म के मूलभूत सिद्धांतों को शामिल होते हैं, जो उसकी उपासना और उसके एकत्व पर आधारित हैं, और शिर्क (साझीदारी) को नकारते हैं ﴿لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا ٱللَّهَ﴾ (अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वंदना) नहीं करोगे) यह स्पष्ट करता है कि उपासना केवल अल्लाह के लिए ही होनी चाहिए, उसके साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराया जाना चाहिए। और यह अच्छे आचरण और दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करने को भी शामिल करता है, ﴿وَبِٱلْوَٰلِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِى ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينِ وَقُولُوا۟ لِلنَّاسِ حُسْنًا﴾ (तथा माता-पिता के साथ उपकार करोगे और समीपवर्ती संबंधियों, अनाथों, दीन-दुखियों के साथ और लोगों से भली बात बोलोगे) यह आयत यह भी बताती है कि अल्लाह तआला की शरीअत में इबादत (धार्मिक कृत्य) भी शामिल है, जिनमें प्रमुख हैं: नमाज़ (सलात) तथा जकात (दान) ﴿وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ﴾ (तथा नमाज़ की स्थापना करोगे और ज़कात दोगे)।

यह आयत यह स्पष्ट करती है कि अल्लाह तआला का हक और ईमान का सही आधार तौह़ीद है, जो केवल तभी पूरा होता है जब इंसान अल्लाह तआला की इबादत (पूजा) को केवल और केवल उसी के लिए, बिना किसी साझीदार के, अदा करता है। यह आयत यह भी बताती है कि इस तौह़ीद और सही इबादत का पालन करना यह भी सुनिश्चित करता है कि इंसान अंबिया (पैगंबरों) पर विश्वास करे, तथा उनके द्वारा लाए गए संदेशों (किताबों) को स्वीकार करे, और उन किताबों को लाने वाले पाक फरिश्तों (दूतों) पर यकीन करे। इस प्रकार, सही और शुद्ध इबादत और तौह़ीद में ये सभी आस्था के सिद्धांत शामिल होते हैं। आयत का एक और महत्वपूर्ण संदेश यह है कि शिर्क (अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराना) जो तौह़ीद के विपरीत है, बेहद खतरनाक है। अल्लाह तआला की इबादत केवल उसे ही समर्पित करनी चाहिए, किसी भी तरह का साझीदार न जोड़ते हुए ﴿لَا تَعۡبُدُونَ إِلَّا ٱللَّهَ﴾ (अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वंदना) नहीं करोगे) क्योंकि शिर्क करने वाले ने तौह़ीद को पूरी तरह से अस्वीकार किया है, जो कि अल्लाह के आदेश के खिलाफ है।

फिर यह महान आयत माता-पिता के अधिकार को स्पष्ट करती है, जो कि सर्वव्यापी भलाई है, और इसके सभी पहलुओं और गुणों को शामिल करती है। 'इहसान' शब्द ने इसके सभी विवरणों की पूर्ति की है, जो इसके विपरीत किसी भी बात, कर्म या उपेक्षा को रोकता है। इस से यह स्पष्ट होता है कि 'इहसान' दयालुता से अधिक व्यापक है, जो न्याय से ऊपर है, बल्कि सम्मान में अधिकता की ओर जाता है। न्याय अनिवार्य है और 'इहसान' न्याय से अधिक है और सम्मान में अधिकता की ओर ले जाता है। इसलिए, माता-पिता के प्रति 'इहसान' अनिवार्य हो गया है। यह अल्लाह तआला के आदेश और उसके नियम द्वारा किया गया है, ताकि बच्चे अपने अधिकतम स्तर तक पहुँच सकें। यह दर्शाता है कि माता-पिता के अधिकारों को उनकी पूर्णता में अधिकता के साथ निष्पादित करना चाहिए, जिसमें कोई सीमा नहीं होनी चाहिए। विशेष रूप से, यह आदेश अल्लाह, सृजनकर्ता और कृपालु द्वारा आया है। इसमें माता-पिता का सम्मान और उनकी विशेष देखभाल शामिल है। यह इस्लाम की नैतिकता और माता-पिता के प्रति भलाई में उसके महान मार्गदर्शन को दर्शाता है। यह धर्म की पूर्णता और इसकी नैतिकता में से है, और अल्लाह तआला की दया, आशीर्वाद और कृपा का हिस्सा है। इसमें अल्लाह के इस क़ुरआन का एक चमत्कारिक बयान और उसके संदेश की क्षमता है। यह आयत अपने शब्दों में कई महान अर्थों को कम से कम शब्दों में व्यक्त करती है। पवित्र आयत ने माता-पिता के अधिकारों की महानता को स्पष्ट किया है, क्योंकि माता-पिता को संबंधियों में से विशिष्ट किया गया है, हालांकि वे उनमें शामिल हैं। इसके अलावा, माता-पिता के अधिकारों को संबंधियों और दूसरों से पहले रखा गया है। इससे प्राथमिकताओं की महत्वपूर्णता और व्यवस्था स्पष्ट होती है।

पवित्र आयत ने कुल मिलाकर संबंधियों के अधिकारों को स्पष्ट किया है, जो समझदार लोगों के लिए स्पष्ट है कि उनके विभिन्न स्तर होते हैं, जिससे सामान्य बयान की आवश्यकता होती है और विवरण की जरूरत नहीं होती। फिर नैतिक अच्छाई अनाथों और गरीबों तक फैलती है, और फिर सभी लोगों के साथ ﴿وَقُولُوا۟ لِلنَّاسِ حُسْنًا﴾ (और लोगों से अच्छी बात करो), जिसमें सभी नैतिक अच्छाइयां शामिल हैं और बुरी नैतिकताओं को छोड़ना है। इसमें दूसरों के अधिकारों की रक्षा करना भी शामिल है, क्योंकि यह भलाई का हिस्सा है, और उसे छोड़ना या उन पर अत्याचार करना भलाई के विपरीत है। अनाथों और गरीबों को विशेषकर लोगों में से चुनना और उन्हें प्राथमिकता देना उनकी महत्वपूर्णता और देखभाल के महत्व को दर्शाता है, क्योंकि अल्लाह की शरीअत ने विशेष ध्यान देकर उनकी ओर ध्यान आकर्षित किया है, जिससे विशेष ध्यान का संकेत मिलता है। और उन्हें विशेष रूप से चुनने का कारण यह है कि वे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में अक्षम हैं, जैसे कि भोजन, पेय, दिशा-निर्देश और देखभाल। यह आयत अपने महान बयान में और इसके संकेतों में संक्षिप्तता में चमत्कारी है, जो कम से कम शब्दों में विधायी प्रावधानों के प्रकारों को शामिल करती है।

फिर अल्लाह तआला ने नमाज़ कायम करने का आदेश दिया, जो कि बंदे और उसके रब के बीच की उपासना है ﴿وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ﴾ (तथा नमाज़ की स्थापना करोगे) इसके बाद ज़कात का आदेश दिया, जो अल्लाह के लिए उपासना है, लेकिन इसका निर्वाह बंदों के बीच होता है ﴿وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ﴾ (और ज़कात दोगे) यह अल्लाह की ओर से प्रदान किए गए व्यक्ति और उसकी बुद्धिमानी से आवश्यकता वाले व्यक्ति के बीच का व्यावहारिक संबंध और सहानुभूति है। यह विधि और इस व्यापकता में समाहित भलाई और दया, यह सब दर्शाता है कि यह केवल अल्लाह तआला की ओर से ही हो सकता है। जिसमें उसके आदेश और विधान की सूक्ष्मताओं का विस्तृत विवरण है, जो सहज प्रवृत्तियों से मेल खाता है, और उसके शब्दों और उनके संकेतों की स्पष्टता में शामिल उद्देश्य को पूरी व्यापकता और सटीकता से व्यक्त करता है।

फिर अल्लाह तआला बनी इस्राईल के लोगों की स्थिति को स्पष्ट करते हैं कि कैसे उन्होंने इस शरीअत के मूल सिद्धांतों को लागू किया ﴿ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنكُمْ وَأَنتُم مُّعْرِضُونَ﴾ (फिर तुममें से थोड़े के सिवा सबने मुँह फेर लिया और तुम (अभी भी) मुँह फेरे हुए हो) उन्होंने अपने वचन का पालन नहीं किया, सिवाय कुछ के। इसमें उनके बाद आने वालों के लिए एक स्पष्टता और चेतावनी है कि वे उनके जैसे न बनें। यह एक सीधी उपदेशात्मक दिशा भी है, जिसे व्यक्ति सुनते या पढ़ते ही समझ सकता है।

﴿وَإِذۡ أَخَذۡنَا مِيثَٰقَكُمۡ لَا تَسۡفِكُونَ دِمَآءَكُمۡ وَلَا تُخۡرِجُونَ أَنفُسَكُم مِّن دِيَٰرِكُمۡ ثُمَّ أَقۡرَرۡتُمۡ وَأَنتُمۡ تَشۡهَدُونَ
(٨٤) ثُمَّ أَنتُمۡ هَٰٓؤُلَآءِ تَقۡتُلُونَ أَنفُسَكُمۡ وَتُخۡرِجُونَ فَرِيقٗا مِّنكُم مِّن دِيَٰرِهِمۡ تَظَٰهَرُونَ عَلَيۡهِم بِٱلۡإِثۡمِ وَٱلۡعُدۡوَٰنِ
وَإِن يَأۡتُوكُمۡ أُسَٰرَىٰ تُفَٰدُوهُمۡ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيۡكُمۡ إِخۡرَاجُهُمۡۚ أَفَتُؤۡمِنُونَ بِبَعۡضِ ٱلۡكِتَٰبِ وَتَكۡفُرُونَ
بِبَعۡضٖۚ فَمَا جَزَآءُ مَن يَفۡعَلُ ذَٰلِكَ مِنكُمۡ إِلَّا خِزۡيٞ فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَاۖ وَيَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ يُرَدُّونَ إِلَىٰٓ أَشَدِّ ٱلۡعَذَابِۗ وَمَا
ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُونَ (٨٥) أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ٱشۡتَرَوُاْ ٱلۡحَيَوٰةَ ٱلدُّنۡيَا بِٱلۡأٓخِرَةِۖ فَلَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمُ ٱلۡعَذَابُ وَلَا هُمۡ يُنصَرُونَ
(٨٦)﴾ [سورة البقرة:٨٤-٨٦].

(तथा (याद करो) जब हमने तुमसे दृढ़ वचन लिया कि आपस में रक्तपात नहीं करोगे और न अपनों को अपने घरों से निकालोगे। फिर तुमने स्वीकार किया और तुम उसके साक्षी हो। फिर तुम वही हो, जो अपनों की हत्या कर रहे हो तथा अपनों में से एक गिरोह को उनके घरों से निकाल रहे हो और पाप तथा अत्याचार के साथ उनके विरुध्द सहायता करते हो और यदि वे बंदी होकर तुम्हारे पास आयें, तो उनका अर्थदण्ड चुकाते हो, जबकि उन्हें निकालना ही तुमपर ह़राम (अवैध) था, तो क्या तुम पुस्तक के कुछ भाग पर ईमान रखते हो और कुछ का इन्कार करते हो? फिर तुममें से जो ऐसा करते हों, तो उनका दण्ड क्या है, इसके सिवा कि सांसारिक जीवन में अपमान तथा प्रलय के दिन अति कड़ी यातना की ओर फेरे जायें? और अल्लाह तुम्हारे करतूतों से निश्चेत नहीं है! उन्होंने ही आख़िरत (परलोक) के बदले सांसारिक जीवन ख़रीद लिया। अतः उनसे यातना मंद नहीं की जायेगी और न उनकी सहायता की जायेगी)।

पवित्र आयत स्पष्ट करती है कि अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल के लोगों से पक्के वादे लिए कि वे एक-दूसरे का खून नहीं बहाएंगे और एक-दूसरे को उनके घरों से बाहर नहीं निकालेंगे। फिर उन्होंने इस वचन को स्वीकार किया, और इसके प्रति अपनी स्वीकृति दी, और स्वयं पर गवाह बने। यह उनके धर्म का मूल है।

फिर अल्लाह तआला ने यहूदियों की स्थिति को स्पष्ट किया जो पैग़ंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय मदीना में थे, और वे किस प्रकार युद्ध का सामना कर रहे थे, तथा किताब का उल्लंघन करने के लिए उनकी निंदा की। वे औस और खज़रज के साथ युद्ध में थे, जो इस्लाम कबूल करने के बाद अंसार बन गए थे और पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मदद करते थे। औस और खज़रज जाहिलियत के समय मूर्तिपूजक थे और उनके बीच कई युद्ध होते थे। मदीना के यहूदियों की तीन जनजातियाँ थीं: बनू क़ैनुक़ा और बनू नज़ीर, जो खज़रज के सहयोगी थे, और बनू क़ुरैज़ा, जो औस के सहयोगी थे। जब उनके बीच युद्ध होता था, तो हर समूह अपने सहयोगी के साथ लड़ता था, और इस प्रकार एक यहूदी दूसरे यहूदी को मार सकता था, जो उनके धर्म और उनकी किताब के अनुसार ह़राम था। वे उन्हें उनके घरों

से निकालते थे और जो कुछ भी उसमें होता था उसे लूट लेते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَٰقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ أَنفُسَكُم مِّن دِيَٰرِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنتُمْ تَشْهَدُونَ ٨٤﴾ (तथा (याद करो) जब हमने तुमसे दृढ़ वचन लिया कि आपस में रक्तपात नहीं करोगे और न अपनों को अपने घरों से निकालोगे। फिर तुमने स्वीकार किया और तुम उसके साक्षी हो) फिर जब युद्ध समाप्त हो जाता था, तो वे कैदियों को छुड़ाते थे, जैसा कि तोराह के अनुसार था।[1] इस प्रकार वे तोराह के अनुसार कैदियों को छुड़ाने में सहमत होते थे, लेकिन युद्ध और खून बहाने में उसका उल्लंघन करते थे, और एक-दूसरे को उनके घरों से निकालते थे। ﴿ثُمَّ أَنتُمْ هَٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُونَ أَنفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا مِّنكُم مِّن دِيَٰرِهِمْ تَظَٰهَرُونَ عَلَيْهِم بِٱلْإِثْمِ وَٱلْعُدْوَٰنِ وَإِن يَأْتُوكُمْ أُسَٰرَىٰ تُفَٰدُوهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ﴾ (फिर तुम वही हो, जो अपनों की हत्या कर रहे हो तथा अपनों में से एक गिरोह को उनके घरों से निकाल रहे हो और पाप तथा अत्याचार के साथ उनके विरुध्द सहायता करते हो और यदि वे बंदी होकर तुम्हारे पास आयें, तो उनका अर्थदण्ड चुकाते हो, जबकि उन्हें निकालना ही तुमपर ह़राम (अवैध) था)। इसमें युद्ध समाप्त होने के बाद कैदियों को छुड़ाने की निंदा है, जबकि उन्हें निकालना उनके लिए ह़राम था। और एक-दूसरे को मारना।

यह अल्लाह तआला की महान शरीअत को दर्शाता है जो खून बहाने से बचाती है, बिना किसी न्यायपूर्ण कारण के, और समाज के सामंजस्य को बिगाड़ने से रोकती है। यह कमजोरों पर अत्याचार करने, उनके धन को हड़पने, उन्हें उनके घरों से निकालने और उनके परिवार को तबाह करने से मना करती है, जो उनके बिखराव का कारण बन सकता है।

यह अल्लाह के धर्म में हस्तक्षेप के खतरों और पापों को भी दर्शाता है, जिसमें कुछ को लागू करना और कुछ को छोड़ देना शामिल है। वे अपनी इच्छानुसार कुछ को लागू करते हैं और कुछ को छोड़ देते हैं, और यह कार्य यहूदियों के अज्ञानी लोगों का तरीका है ﴿أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ ٱلْكِتَٰبِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ﴾ (तो क्या तुम पुस्तक के कुछ भाग पर ईमान रखते हो और कुछ का इन्कार करते हो?)।

क़ुरआन ﴿تَقْتُلُونَ أَنفُسَكُمْ﴾ (तुम अपने आप को मारते हो) शब्द का उपयोग करता है, जो पाठक और श्रोता के दिल को छूता है, यह इस प्रकार कि जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को बिना किसी न्यायपूर्ण कारण के मारता है, तो मानो वह अपने आप को मारता है, क्योंकि निर्दोष आत्मा की हत्या करना, जिसे अल्लाह ने ह़राम किया है, एक महान पाप है। इब्न

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 125)।

-ए- कस़ीर रह़िमहुल्लाह कहते हैं: यह इसलिए है क्योंकि एक ही धर्म के लोग एक आत्मा के समान होते हैं[1], जैसा कि पैग़ंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया है: "तुम देखोगे कि ईमान वाले अपनी दया, प्रेम और सहानुभूति में एक शरीर के समान हैं; जब एक अंग को दर्द होता है, तो पूरा शरीर नींद न आने और बुखार से पीड़ित होता है"।[2]

शब्द ﴿تَقۡتُلُونَ أَنفُسَكُمۡ﴾ (तुम अपने आप को मारते हो) एक प्रभावशाली संकेत है, क्योंकि एक ही धर्म के लोग एक शरीर के समान होते हैं। जब किसी को बिना किसी न्यायपूर्ण कारण के मारा जाता है, तो यह मानो हत्यारा अपने शरीर के अंगों को मारता है। यह कैसे उचित हो सकता है? इसलिए, मुसलमानों का कर्तव्य है कि वे अपने आप को एक शरीर के रूप में देखें। यह कठिन है कि कोई व्यक्ति अपने शरीर को काटे और उसे टुकड़ों में बांटे, या इस शरीर को टुकड़ों में बांटने का प्रयास करे ताकि यह विरोधी दलों में बदल जाए, जो एक-दूसरे से लड़ते हैं और खून, धन और सम्मान को हलाल करते हैं।

यहाँ, अल्लाह की पुस्तक क़ुरआन के पाठक को इस सटीक अभिव्यक्ति और क़ुरआन के स्पष्टीकरण की महानता महसूस होती है, जो इस विनाशकारी अपराध को उजागर करता है, जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा है: ﴿وَتُخۡرِجُونَ فَرِيقٗا مِّنكُم﴾ (और तुम अपने समूह का एक हिस्सा निकालते हो)। ﴿مِّنكُم﴾ (तुम अपने में से) शब्द यह स्पष्ट करता है कि यह समूह के भाग को निकालना है, जैसे कि उन्होंने अपने ही शरीर के अंग को काट दिया, फिर इस अंग के खिलाफ पाप और अत्याचार में सहयोग करते हैं, जो इस अंग के साथ एक ह़राम (निषिद्ध) कार्य है। दिल को प्रभावित करने के लिए इससे अधिक प्रभावशाली और गहन विवरण क्या हो सकता है, जो इस अभिव्यक्ति में समाहित अर्थों के साथ दिल से जुड़ता है।

यह अल्लाह तआला की ओर से उनके लिए और अन्य लोगों के लिए एक स्पष्ट संकेत है कि यह क़ुरआन अल्लाह का वचन है और जो कुछ इसमें है, वह सत्य है। यह उनके और दूसरों के लिए प्रमाण है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वास्तव में अल्लाह के रसूल और नबी हैं, क्योंकि वह उन विवरणों के बारे में बता रहे हैं जो उनके अपने तौरेत में मौजूद हैं। यह स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह की ओर से सत्य संदेश प्राप्त हुआ है।

और इसमें एक लाभ यह है कि जब किसी व्यक्ति को उसकी अपनी जानकारियों के आधार पर सच्चाई का सामना कराया जाता है, और उसे इनकार करने का अवसर नहीं दिया

---

(2) पिछला संदर्भ (1/ 125)।

(1) बुख़ारी (4/ 93) ह़दीस़ संख्या (6011)।

जाता, तो यह उसकी स्थिति को कमजोर कर देता है और उस पर तर्क को साबित करने की ताकत बढ़ा देता है। क़ुरआन -ए- करीम इस बात को इस तरह से प्रस्तुत करता है, जैसे कि वह वास्तविकता को स्पष्ट करता है और उसके किए गए अपराध को निंदा करता है: ﴿أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ ٱلْكِتَٰبِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ﴾ (क्या तुम किताब के एक हिस्से पर ईमान लाते हो और दूसरे हिस्से को नकारते हो?) फिर यह सवाल इस दिशा में अग्रसर होता है कि जो ऐसा करेगा, उसे क्या सजा दी जाएगी। फिर अल्लाह तआला इसका उत्तर देता है: ﴿فَمَا جَزَآءُ مَن يَفْعَلُ ذَٰلِكَ مِنكُمْ﴾ (तो ऐसा करने वाले का क्या बदला होगा?) सिवाय इसके कि वह दुनिया में शर्मिंदगी और अपमान का शिकार होगा, और फिर क़ियामत के दिन उसे सबसे कठोर सजा दी जाएगी।" इस प्रकार, पहले तो दुनिया में अपमान और बेइज़्ज़ती का सामना करना होगा, जिसे लोग जानेंगे, और फिर क़ियामत के दिन उसका सामना भयंकर यातना से होगा।

यह दर्शाता है कि दुनिया में अपमान एक प्रकार की सज़ा है, क्योंकि यह व्यक्ति को शर्म और बुरी प्रतिष्ठा से पीड़ित करता है, जिससे वह समाज में कष्ट उठाता है। यह अल्लाह तआला की सज़ा से सावधान रहने की महत्वपूर्णता को दो तरीके से स्पष्ट करता है: दुनिया में अपमान के द्वारा, और आखिरत में सबसे कठिन दंड द्वारा। दुनिया में, अल्लाह तआला पापी को शर्मनाक अपमान के साथ अपमानित करता है, जो उसका पीछा करता है, उसकी जिंदगी को भ्रमित करता है और उसकी शांति को बाधित करता है, जिससे वह दुनिया में सुख से वंचित हो जाता है, और आखिरत में उसे दंडित किया जाएगा। फिर अल्लाह तआला ने आयत को इस प्रकार समाप्त किया ﴿وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ﴾ (और अल्लाह तुम्हारे करतूतों से निश्चेत नहीं है!) अल्लाह तआला ने अपनी महिमा की गाफ़िलता को नकारा है, जो रचना को प्रभावित करती है। यहाँ गाफ़िलिन (بِغَٰفِلٍ) का नकरह (अनिश्चयवाचक संज्ञा) महिमा और पूर्णता का संकेत है, जैसे कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: ﴿لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ﴾ 'उसे न तो ऊंघ आती है और न ही नींद।' कितना सुन्दर है अल्लाह की यह पुस्तक।

फिर अल्लाह तआला उन लोगों की विशेषताओं का वर्णन करता है जो ऐसा करते हैं ﴿أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ٱشْتَرَوُا۟ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا بِٱلْءَاخِرَةِ﴾ (उन्होंने ही आख़िरत (परलोक) के बदले सांसारिक जीवन ख़रीद लिया) ये कर्म उन लोगों की विशेषताएँ हैं जो दुनिया को आखिरत पर प्राथमिकता देते हैं, और जो दुनिया को आखिरत के बदले खरीदते हैं, जैसा कि वे दुनिया की अस्थायी जिंदगी को हमेशा की जिंदगी के बदले खरीद रहे हैं। इससे बड़ी कोई क्षति नहीं हो सकती कि एक ज्ञानी और जानकार व्यक्ति यह कीमत चुकाता है, इसमें कोई अज्ञानता नहीं होती। इस

विवरण के साथ, पवित्र आयत समझदार लोगों के दिमाग को उत्तेजित करती है कि वे ऐसा न करें।

इससे एक विश्वासयोग्य व्यक्ति को पापों के सामने विचारशील बनना चाहिए, क्योंकि ये पाप केवल दुनिया के लिए आखिरत के अधिकार से चुकाए जाते हैं। इससे बड़ी कोई क्षति नहीं हो सकती, खासकर जब यह संदर्भ व्यापार के रूप में आता है, क्योंकि यह आखिरत के लिए व्यापार है, जिस में लाभ और हानि होती है। फिर अल्लाह तआला उन लोगों की सजा का वर्णन करता है जिनका यह कार्य था ﴿فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ ٱلْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ﴾ (अतः उनसे यातना मंद नहीं की जायेगी और न उनकी सहायता की जायेगी)। और यह कड़ी चेतावनियों में से है, ﴿فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ ٱلْعَذَابُ﴾ और न ही उन्हें कोई बचाने वाला होगा, न ही किसी और के द्वारा उन्हें इस अपमानजनक सजा से बचाया जाएगा ﴿وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ﴾ (न उनकी सहायता की जायेगी)।

﴿وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْكِتَٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ بِٱلرُّسُلِ ۖ وَءَاتَيْنَا عِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ٱلْبَيِّنَٰتِ وَأَيَّدْنَٰهُ بِرُوحِ ٱلْقُدُسِ ۗ أَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُولٌۢ بِمَا لَا تَهْوَىٰٓ أَنفُسُكُمُ ٱسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا۟ قُلُوبُنَا غُلْفٌۢ ۚ بَل لَّعَنَهُمُ ٱللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتَٰبٌ مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا۟ مِن قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَلَمَّا جَآءَهُم مَّا عَرَفُوا۟ كَفَرُوا۟ بِهِۦ ۚ فَلَعْنَةُ ٱللَّهِ عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٨٩﴾ بِئْسَمَا ٱشْتَرَوْا۟ بِهِۦٓ أَنفُسَهُمْ أَن يَكْفُرُوا۟ بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ بَغْيًا أَن يُنَزِّلَ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ ۖ فَبَآءُو بِغَضَبٍ عَلَىٰ غَضَبٍ ۚ وَلِلْكَٰفِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٩٠﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ءَامِنُوا۟ بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ قَالُوا۟ نُؤْمِنُ بِمَآ أُنزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَآءَهُۥ وَهُوَ ٱلْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۗ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنۢبِيَآءَ ٱللَّهِ مِن قَبْلُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٩١﴾ ۞ وَلَقَدْ جَآءَكُم مُّوسَىٰ بِٱلْبَيِّنَٰتِ ثُمَّ ٱتَّخَذْتُمُ ٱلْعِجْلَ مِنۢ بَعْدِهِۦ وَأَنتُمْ ظَٰلِمُونَ ﴿٩٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَٰقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ ٱلطُّورَ خُذُوا۟ مَآ ءَاتَيْنَٰكُم بِقُوَّةٍ وَٱسْمَعُوا۟ ۖ قَالُوا۟ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأُشْرِبُوا۟ فِى قُلُوبِهِمُ ٱلْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُم بِهِۦٓ إِيمَٰنُكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٩٣﴾﴾
[سورة البقرة:٨٧-٩٣].

(तथा हमने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की और उसके पश्चात् निरन्तर रसूल भेजे और हमने मर्यम के पुत्र ईसा को खुली निशानियाँ दीं और रूहुल क़ुदुस(1) द्वारा उसे समर्थन दिया, तो क्या जब भी कोई रसूल तुम्हारी अपनी मनमानी के विरुध्द कोई बात तुम्हारे पास

(1) रूहुल क़ुदुस से अभिप्रेत फ़रिश्ता जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं।

लेकर आया, तो तुम अकड़ गये, अतः कुछ नबियों को झुठला दिया और कुछ की हत्या करने लगे? तथा उन्होंने कहा कि हमारे दिल तो बंद हैं। बल्कि उनके कुफ़्र (इन्कार) के कारण अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। इसीलिए उनमें से बहुत थोड़े ही ईमान लाते हैं। और जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक पुस्तक (क़ुर्आन) आ गयी, जो उनके साथ की पुस्तक का प्रमाणकारी है, जबकि इससे पूर्व वे स्वयं काफ़िरों पर विजय की प्रार्थना कर रहे थे, तो जब उनके पास वह चीज़ आ गयी, जिसे वे पहचान भी गये, फिर भी उसका इन्कार कर दिया, तो काफ़िरों पर अल्लाह की धिक्कार है। अल्लाह की उतारी हुई (पुस्तक क़ुर्आन) का इन्कार करके बुरे बदले पर इन्होंने अपने प्राणों को बेच दिया, इस द्वेष के कारण कि अल्लाह ने अपना प्रदान (प्रकाशना), अपने जिस भक्त पर चाहा, उतार दिया। अतः वे प्रकोप पर प्रकोप के अधिकारी बन गये और ऐसे काफ़िरों के लिए अपमानकारी यातना है। और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो उतारा है, उस पर ईमान लाओ, तो कहते हैं: हम तो उसी पर ईमान रखते हैं, जो हम पर उतरा है और इसके सिवा जो कुछ है, उसका इन्कार करते हैं। जबकि वह सत्य है और उसका प्रमाण्कारी है, जो उनके पास है। कहो कि फिर इससे पूर्व अल्लाह के नबियों की हत्या क्यों करते थे, यदि तुम ईमान वाले थे तो? तथा मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ लेकर आये। फिर तुमने अत्याचार करते हुए बछड़े को पूज्य बना लिया। फिर उस दृढ़ वचन को याद करो, जो हमने तुम्हारे ऊपर तूर (पर्वत) को उठाकर लिया। (हमने कहाः) पकड़ लो, जो हमने दिया है तुम्हें दृढ़ता से और सुनो। तो उन्होंने कहाः हमने सुना और अवज्ञा की। और उनके दिलों में बछड़े का प्रेम पिला दिया गया, उनकी अवज्ञा के कारण। (हे नबी!) आप कह दीजियेः बुरा है वह जिसका आदेश दे रहा है तुम्हें तुम्हारा ईमान, यदि तुम ईमान वाले हो)।

अल्लाह तआला बनी इस्राईल पर यह उपकार जता रहा है कि उसने उनके पास अपने कलीम (अर्थात जिन से अल्लाह बात करता था) मूसा अलैहिस्सलाम को भेजा। इसके बाद उनके पास निरंतर रसूल भेजे, यहाँ तक कि उनके नबियों की श्रृंखला ईसा अलैहिस्सलाम पर समाप्त की, जिनका समर्थन और सहायता अल्लाह ने रुहुल क़ुदुस (अर्थात जिब्रील अलैहिस्सलाम) के माध्यम से की।[1] ﴿وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْكِتَٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ بِٱلرُّسُلِ ۖ وَءَاتَيْنَا عِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ٱلْبَيِّنَٰتِ وَأَيَّدْنَٰهُ بِرُوحِ ٱلْقُدُسِ ۗ﴾ (तथा हमने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की और उसके पश्चात् निरन्तर रसूल भेजे और हमने मर्यम के पुत्र ईसा को खुली निशानियाँ दीं और रूहुल क़ुदुस द्वारा उसे समर्थन दिया)।

यह अल्लाह तआला का बनी इस्राईल पर उपकार है कि उसने उनके पास मूसा अलैहिस्सलाम को नबी बनाकर भेजा। फिर उनके पास निरंतर रसूल भेजे गए, और उनके अंतिम

(1) तैसीरुल करीमिर्रह़मान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 75)।

नबी ईसा अलैहिस्सलाम थे। क़ुरआन की यह आयत इस बात को स्पष्ट करती है कि अल्लाह जिसे चाहता है, अपनी मदद और विशेष अनुकंपा से सशक्त करता है। इसी के अंतर्गत, उसने ईसा अलैहिस्सलाम को फ़रिश्ते जिब्रील अलैहिस्सलाम के माध्यम से सहायता प्रदान की।

फिर अल्लाह तआला बनी इस्राईल का महान रसूलों के साथ व्यवहार स्पष्ट करता है। ﴿أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ﴾ (तो क्या जब भी कोई रसूल तुम्हारी अपनी मनमानी के विरुध्द कोई बात तुम्हारे पास लेकर आया, तो तुम अकड़ गये, अतः कुछ नबियों को झुठला दिया और कुछ की हत्या करने लगे?)।

यह इस बात को स्पष्ट करता है कि बनी इस्राईल में ऐसे लोग थे जिन्होंने रसूलों को झुठलाया, बल्कि उनमें से कुछ ने तो नबियों की हत्या तक कर डाली। इसका कारण उनका अहंकार और अपने से भिन्न मार्गदर्शन लाने वालों के प्रति घमंड था, क्योंकि वह मार्गदर्शन उनकी इच्छाओं के अनुकूल नहीं था। इससे यह सिद्ध होता है कि इच्छा-प्रेरित व्यवहार (हवस) अहंकार और घमंड को जन्म देता है, जो सत्य को स्वीकार करने से रोकता है। यह वर्णन और चेतावनी लोगों के लिए है कि वे हवस की खतरनाक प्रवृत्तियों से बचें, जो इंसान को मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अंतिम नबी और रसूल, के मार्ग का अनुसरण करने से रोक सकती हैं।

फिर अवज्ञा, कुफ़्र और भटकाव का कारण दोहराया है, जैसा कि अल्लाह तआला के इस कथन में है: ﴿وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ﴾ (तथा उन्होंने कहा कि हमारे दिल तो बंद हैं) अर्थात हमारे दिल ढंके हुए हैं जिस के कारण वह समझ नहीं सकते [1], अर्थात हम समझ नहीं सकते और न ही मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।[2] यह इस बात को स्पष्ट करता है कि झूठे बहाने बनाना, जब इंसान अपनी इच्छाओं के पीछे चलता है, कितने खतरनाक हो सकते हैं। अल्लाह तआला उनके बारे में कहता है: ﴿بَل لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ﴾ (बल्कि उनके कुफ़्र (इन्कार) के कारण अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। इसीलिए उनमें से बहुत थोड़े ही ईमान लाते हैं) अर्थात, अल्लाह तआला ने उन्हें उनके कुफ़्र के कारण भलाई और अपनी रहमत से दूर कर दिया। नतीजतन, उनमें से बहुत कम लोग ईमान लाते हैं।[3] और कहा गया है कि उनका ईमान बहुत ही कमज़ोर और नाममात्र का होता है।[4]

---

(2) अल-जलालैन (13)।

(3) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 128)।

(4) पिछला संदर्भ।

(1) अल-जलालैन (13)।

क़ुरआन में बनी इस्राईल की स्थिति का यह वर्णन आत्मा को इस रास्ते पर चलने से चेतावनी और भय प्रदान करता है, जिसकी परिणति अल्लाह तआला की रह़मत से वंचित किए जाने में होती है। अल्लाह के बाद उसके लिए कोई आश्रय या सहारा नहीं है।

तो, बनी इस्राईल का उनके नबियों के साथ व्यवहार स्पष्ट करने के बाद, अल्लाह तआला उनके उस किताब के साथ व्यवहार को बयान करता है जिसे उसने अपने नबी मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَلَمَّا جَآءَهُمۡ كِتَٰبٞ مِّنۡ عِندِ ٱللَّهِ مُصَدِّقٞ لِّمَا مَعَهُمۡ﴾ (और जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक पुस्तक (क़ुर्आन) आ गयी, जो उनके साथ की पुस्तक का प्रमाणकारी है)। इस आयत के हिस्से में इस बात की पुष्टि होती है कि क़ुरआन, जो अल्लाह तआला ने अपने नबी मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा, वह उनके पास मौजूद तौरात की सच्चाई को प्रमाणित करता है और उससे विरोधाभास नहीं रखता। यह उनके लिए इस नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत की सच्चाई और उस किताब की सत्यता का स्पष्ट प्रमाण है जिसे वह अपने रब की ओर से लेकर आए हैं। साथ ही, क़ुरआन में उन्हें वे वास्तविकताएँ समझाई जाती हैं जिन्हें वे तौरात में जानते हैं, क्योंकि वे इस नबी के आने से पहले उसके ज़रिये अपने दुश्मनों पर मदद मांगते थे।

वे उन लोगों से कहते थे जो उनसे युद्ध करते थे: “अंतिम समय में एक नबी भेजा जाएगा, और हम उसके साथ मिलकर तुम्हें उसी तरह मारेंगे जैसे आद और इरम को मारा गया”।[1] यही बात अल्लाह तआला के इस कथन का अर्थ है: ﴿وَكَانُواْ مِن قَبۡلُ يَسۡتَفۡتِحُونَ عَلَى ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ﴾ (जबकि इससे पूर्व वे स्वयं काफ़िरों पर विजय की प्रार्थना कर रहे थे) लेकिन जब वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम प्रकट हुए, जिन्हें वे पहचान चुके थे, तब उन्होंने उनका इनकार कर दिया। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿فَلَمَّا جَآءَهُم مَّا عَرَفُواْ كَفَرُواْ﴾ (तो जब उनके पास वह चीज़ आ गयी, जिसे वे पहचान भी गये, फिर भी उसका इन्कार कर दिया) इसका परिणाम वही हुआ जो अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿فَلَعۡنَةُ ٱللَّهِ عَلَى ٱلۡكَٰفِرِينَ﴾ (तो काफ़िरों पर अल्लाह की धिक्कार है) अर्थात, उनके कुफ़्र के कारण उन्हें अल्लाह की रह़मत से निकाल बाहर किया गया।

फिर अल्लाह तआला उनके रवैये का मूल्यांकन "بِئۡسَ" (बेअसा) शब्द के माध्यम से करता है, जो पूर्ण निंदा का संकेत देता है, जैसे "نِعۡمَ" (निअमा) पूर्ण प्रशंसा का संकेत है। [2]

---

(2) पिछला संदर्भ।

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 20)।

अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿بِئۡسَمَا ٱشۡتَرَوۡاْ بِهِۦٓ أَنفُسَهُمۡ أَن يَكۡفُرُواْ بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ﴾ (अल्लाह की उतारी हुई (पुस्तक क़ुर्आन) का इन्कार करके बुरे बदले पर इन्होंने अपने प्राणों को बेच दिया) इस आयत में उनके कर्मों की निंदा का विस्तृत वर्णन है, जिसे उन्होंने अपनाया। उन्होंने अपने लिए सबसे बुरे को चुना, और इस पर संतुष्ट हुए, और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा अल्लाह द्वारा उतारी गई क़ुरआन की सच्चाई, समर्थन और मदद से इनकार किया।(1) वे पैग़ंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने से इनकार करते हैं क्योंकि वे इस बात से ईर्ष्या करते हैं कि अल्लाह ने यह क़ुरआन और यह धर्म उनके अलावा किसी और पर उतारा। उनके इनकार का कारण उनका घमंड और ईर्ष्या था, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: ﴿بِئۡسَمَا ٱشۡتَرَوۡاْ بِهِۦٓ أَنفُسَهُمۡ أَن يَكۡفُرُواْ بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ بَغۡيًا أَن يُنَزِّلَ ٱللَّهُ مِن فَضۡلِهِۦ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنۡ عِبَادِهِۦۖ﴾ (बहुत बुरा है वह जो उन्होंने अपनी आत्माओं के लिए चुना कि उन्होंने उस चीज़ का इनकार किया जिसे अल्लाह ने उतारा, केवल इस कारण कि अल्लाह अपना अनुग्रह अपने जिन बंदों पर चाहता है, उन पर उतारता है।)

आम मामलों में यह समझना आवश्यक है कि अल्लाह तआला जब किसी कार्य, प्रबंधन, सभा, या जीवन के किसी क्षेत्र में किसी और को नेतृत्व देता है, तो इसे स्वीकार करना और प्रसन्न रहना महत्वपूर्ण है। समझदार व्यक्ति यह नहीं सोचता कि अधिकार और योग्यता केवल उसी में सीमित है या यह विशेष रूप से उसी का हक है। बल्कि वह इसे वहां देखता है जहां अल्लाह तआला इसे रखता है। यदि ऐसा न हो, तो ईर्ष्या, विभाजन, और दूसरों के प्रति घृणा और तिरस्कार के अंधकार में आत्मा गिर सकती है, जिससे समाज विघटन, संघर्ष और बर्बादी का शिकार हो सकता है। यह एक अत्यंत निंदनीय विशेषता है। यदि यह अल्लाह तआला के आज्ञापालन में हस्तक्षेप कर सकती है, तो यह जीवन के अन्य मामलों में भी निश्चित रूप से प्रभाव डालेगी। इसलिए इस दोष से सावधान रहना चाहिए, क्योंकि यह भलाई को रोकने और बुराई को आकर्षित करने वाली प्रवृत्ति है, चाहे वह धर्म के मामले में हो या सांसारिक मामले में।

इसी कारण मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इनकार करने वाले लोग आखिरत में घाटे में रहे। यह उनकी जलन और अहंकार का नतीजा था कि पैग़ाम उन्हें नहीं दिया गया। उन्होंने इस तथ्य को नजरअंदाज कर दिया कि अल्लाह तआला जिसे चाहे अपने बंदों में से चुनकर यह संदेश देता है। अल्लाह तआला ने इन लोगों के नुकसान के बारे में कहा: ﴿فَبَآءُو بِغَضَبٍ عَلَىٰ غَضَبٖۚ وَلِلۡكَٰفِرِينَ عَذَابٞ مُّهِينٞ﴾ (अतः वे प्रकोप पर प्रकोप के अधिकारी बन गये और ऐसे काफ़िरों के लिए अपमानकारी यातना है)।

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 129)।

तो उन्होंने तौरात को नष्ट करके अल्लाह तआला के ग़ज़ब (प्रकोप) को आमंत्रित किया और एक और ग़ज़ब इस कारण से कि उन्होंने अल्लाह तआला द्वारा उसके नबी और रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारी गई चीज़ (क़ुरआन) का इनकार किया।[1]

और इसी प्रकार उनके लिए ऐसा अपमानजनक और छोटा कर देने वाला अज़ाब है जो उनके लिए जिल्लत (नीचता) और बेइज़्ज़ती को समेटे हुए है।

यह बात स्पष्ट करती है कि अल्लाह तआला अपनी हिकमत (ज्ञान और विवेक) से जिसे चाहता है चुनता है, जिसे चाहता है आगे बढ़ाता है और जिसे चाहता है पीछे करता है। यह हमें यह सिखाता है कि जीवन के हर मामले में अल्लाह तआला के प्रति विनम्रता रखनी चाहिए। किसी वक्ता, इमाम, नेता, या सच्चे प्रमुख को तुच्छ नहीं समझना चाहिए, बल्कि भलाई के कामों में सहायक और समर्थक बनना चाहिए, और बुराई को रोकने का प्रयास करना चाहिए। इसके साथ अल्लाह तआला के प्रति विनम्रता बनाए रखनी चाहिए, सत्य का समर्थन करते हुए उसे दूसरों तक पहुंचाना चाहिए, और अल्लाह तआला की हिकमत को स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि वही चुनता है और वही जिम्मेदारी सौंपता है।

फिर अल्लाह तआला उनके व्यवहार की वास्तविकताओं को स्पष्ट करते हुए फ़रमाता है: ﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ءَامِنُوا۟ بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ قَالُوا۟ نُؤْمِنُ بِمَآ أُنزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَآءَهُۥ وَهُوَ ٱلْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ﴾ (और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो उतारा है, उस पर ईमन लाओ, तो कहते हैं: हम तो उसीपर ईमान रखते हैं, जो हमपर उतरा है और इसके सिवा जो कुछ है, उसका इन्कार करते हैं। जबकि वह सत्य है और उसका प्रमाण्कारी है, जो उनके पास है)।

तो उनका हठ धर्म (सत्य को न मानने का रवैया) उन्हें टालमटोल और चालाकियों का सहारा लेने पर मजबूर कर देता है। जब यहूदियों और उनके जैसे अन्य लोगों से अल्लाह तआला द्वारा उनके नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारी गई चीज़ (क़ुरआन) पर ईमान लाने की बात की जाती है, तो वे: ﴿وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَآءَهُۥ﴾ (और इसके सिवा जो कुछ है, उसका इन्कार करते हैं) अर्थात, वे तौरात और इंजील के अलावा, जो कुछ बाद में आया, उसका इनकार करते हैं। जबकि क़ुरआन वही है जो उनके पास मौजूद किताब की पुष्टि करता है, और उसमें इस नबी, इस महान और आदरणीय नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी मौजूद है।

(1) पिछला संदर्भ (1/ 129)।

और यहां पर यह सवाल उठता है: ﴿قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنبِيَاءَ اللَّهِ مِن قَبْلُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ﴾ (कहो कि फिर इससे पूर्व अल्लाह के नबियों की हत्या क्यों करते थे, यदि तुम ईमान वाले थे तो?) अगर तुम सचमुच अपनी बात में सच्चे हो कि तुम उन चीज़ों पर ईमान रखते हो जो तुम्हारे पास उतारी गई हैं, तो फिर तुमने उन नबियों को क्यों कत्ल किया जो तुम्हारे पास तौरात की पुष्टि लेकर आए?

यह बात इस तथ्य को उजागर करती है कि किसी इनकार करने वाले (मुन्किर) के लिए दलील स्थापित करना बहुत महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही, यह इस बात की अहमियत को भी दर्शाती है कि एक दाई (इस्लाम का संदेश देने वाला) के पास ऐसा ज्ञान होना चाहिए जिससे वह इनकार करने वाले से बहस कर सके और उसे सही राह पर वापस ला सके। इसके अलावा, यह जानना भी जरूरी है कि जिस व्यक्ति को दावत दी जा रही है, उसकी स्थिति, उसके पास मौजूद विचार और उसकी गलतफहमियां क्या हैं, ताकि दाई उन्हें सही तरीके से जवाब दे सके और उसके पास मौजूद झूठ और भ्रम को गलत साबित कर सके।

फिर उन्हें यह याद दिलाना दोहराया जाता है कि उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम के साथ क्या किया था, जब वे उनके पास स्पष्ट चमत्कार लेकर आए। उन्होंने बछड़े को अपना लिया और उसे अल्लाह तआला के अलावा पूजना शुरू कर दियाः ﴿وَلَقَدْ جَاءَكُم مُّوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ وَأَنتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٩٢﴾﴾ (तथा मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ लेकर आये। फिर तुमने अत्याचार करते हुए बछड़े को पूज्य बना लिया)।

इनकार करने वालों के सामने उनके पुराने कर्मों को बार-बार याद दिलाने का उद्देश्य यह है कि उन्हें दलील से चुप कर दिया जाए, ताकि वे समझें कि प्रमाण उनके खिलाफ बार-बार स्थापित हो रहे हैं और उन पर दलील पूरी हो चुकी है। इसके बाद उनके पास कोई बहाना या चालाकी नहीं बचती, जिससे वे बच सकें। इससे या तो वे अपनी हठधर्मिता से बाज आएंगे, या फिर अपने हठ पर डटे रहेंगे और अपने विरोधी रवैये में आगे बढ़ेंगे।

फिर उन्हें उनके पूर्वजों को दिए गए दंडात्मक भय के बारे में याद दिलाया जाता है, जब उनके ऊपर तूर पर्वत को उठाया गया था, फिर भी उन्होंने नाफरमानी की और बछड़े की पूजा की। अल्लाह तआला ने कहा: ﴿وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا ۖ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُم بِهِ إِيمَانُكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٩٣﴾﴾ (फिर उस दृढ़ वचन को याद करो, जो हमने तुम्हारे ऊपर तूर (पर्वत) को उठाकर लिया। (हमने कहाः) पकड़ लो, जो हमने दिया है तुम्हें दृढ़ता से और सुनो। तो उन्होंने कहाः हमने सुना और अवज्ञा की। और उनके दिलों में बछड़े का प्रेम पिला दिया

गया, उनकी अवज्ञा के कारण। (हे नबी!) आप कह दीजियेः बुरा है वह जिसका आदेश दे रहा है तुम्हें तुम्हारा ईमान, यदि तुम ईमान वाले हो)।

इस प्रकार यह आयत उनके झूठे ईमान की निंदा करके समाप्त होती है, और यह कहती है कि यह ईमान कितना बुरा है जो वे दावा करते हैं, जबकि वे झूठ और चालाकियों में लिप्त हैं।

इस से स्पष्ट होता है कि कुछ लोग झूठे ईमान का दावा करते हैं, और इसके आधार पर वे झूठ बोलते हैं जिन्हें वे सच मानते हैं। साथ ही, यह इस बात को भी उजागर करती है कि अल्लाह तआला के आदेशों को तुच्छ समझना और अवज्ञा करना गंभीर बात है। यह यह भी बताता है कि कुछ लोग इतने हठधर्मी होते हैं कि उन्हें आयतें और चेतावनियाँ भी कोई लाभ नहीं पहुंचातीं। दाई चाहे जितना भी प्रयास करें, उनका उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता यदि लोग हठीले और घमंडी हैं। इसलिए, दाई और सलाहकार को यह समझना चाहिए कि किसी भी स्थिति के लिए खुद को तैयार करना आवश्यक है, जब वे अल्लाह तआला की ओर दावत दे रहे हों। वे अपनी जिम्मेदारी निभाएं और इस कार्य को छोड़ने का विचार न करें, क्योंकि कुछ लोग वही स्वीकार करेंगे जैसा कि पहले के सहाबा और उनके बाद के लोग स्वीकार कर चुके हैं, और कुछ लोग ऐसे होंगे जो इसे अस्वीकार करेंगे और घमंड करेंगे।

﴿قُلْ إِن كَانَتْ لَكُمُ ٱلدَّارُ ٱلْـَٔاخِرَةُ عِندَ ٱللَّهِ خَالِصَةً مِّن دُونِ ٱلنَّاسِ فَتَمَنَّوُا۟ ٱلْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَـٰدِقِينَ ﴿٩٤﴾ وَلَن يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌۢ بِٱلظَّـٰلِمِينَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ ٱلنَّاسِ عَلَىٰ حَيَوٰةٍ وَمِنَ ٱلَّذِينَ أَشْرَكُوا۟ ۚ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِۦ مِنَ ٱلْعَذَابِ أَن يُعَمَّرَ ۗ وَٱللَّهُ بَصِيرٌۢ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾﴾ [سورة البقرة:٩٤-٩٦].

((हे नबी!) आप कह दीजियेः यदि तुम्हारे लिये विशेष है परलोक का घर सारे लोगों को छोड़कर, तो तुम कामना करो मौत की, यदि तुम सत्यवादी हो। और वे कदापि उसकी कामना नहीं करेंगे, उनके कर्तूतों के कारण और अल्लाह अत्याचारियों से अधिक सूचित है। तुम इन्हें, सबसे बढ़कर जीने का लोभी पाओगे और मिश्रणवादियों से (भी)। इनमें से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे एक-एक हज़ार वर्ष की आयु मिल जाये। ह़ालाँकि ये (लम्बी) आयु भी उसे यातना से बचा नहीं सकती और अल्लाह देखने वाला है जो वे कर रहे हैं)।

आयतों का संदर्भ अब भी यहूदियों के मामले पर है, ताकि उनके खिलाफ दलीलें पेश की जा सकें और उनके अलावा अन्य लोग इससे नसीहत और सबक ले सकें। यह सबक ईमान और अल्लाह तआला के धर्म और उसके नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सही व्यवहार की विधि को समझाने में सहायक है। यह व्यक्ति को यह भी समझने का अवसर देता है कि अल्लाह तआला ने अपनी रहमत से क्या कुछ उतारा है, उसकी दयालुता कितनी व्यापक है, और उसने पापी को तौबा (पश्चाताप) करने और सत्य की ओर लौटने के लिए कितना अवसर

दिया है। हो सकता है कि कोई व्यक्ति अपनी इच्छाओं से जाग जाए और सत्य की ओर पलट आए, और किताब और सुन्नत को मजबूती से थाम ले। इस आयत में उनके झूठे ईमान के दावे पर स्पष्ट प्रमाण और खंडन है, जो उनकी हठधर्मिता को उजागर करता है। ﴿قُلْ إِن كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِندَ اللَّهِ خَالِصَةً مِّن دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ﴾ ((हे नबी!) आप कह दीजियेः यदि तुम्हारे लिये विशेष है परलोक का घर सारे लोगों को छोड़कर, तो तुम कामना करो मौत की, यदि तुम सत्यवादी हो) तो अगर आपके लिए जन्नत केवल आपके लिए ही है और दूसरों के लिए नहीं, जैसा कि आपने दावा किया है कि केवल यहूदी या ईसाई ही जन्नत में प्रवेश करेंगे, और आग आपको कुछ दिनों के लिए ही छूएगी ﴿فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ﴾ (तो तुम कामना करो मौत की, यदि तुम सत्यवादी हो) यह एक प्रकार का मुबाहला (बद्दुआ की चुनौती) थी उनके और पैग़ंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बीच। इसके बाद उन के पास केवल दो विकल्प बचते हैं: या तो वे अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाएं, या मृत्यु की कामना करें जो उन्हें जन्नत तक पहुंचाएगा जैसा कि वे दावा करते हैं। उनके मृत्यु की कामना न करने में उनकी झूठी बातों का प्रमाण है, क्योंकि अगर वे सच्चे होते तो मृत्यु की कामना करते ताकि अपनी सच्चाई साबित कर सकें। लेकिन उन्होंने इससे इनकार कर दिया, और इस प्रकार यह हर किसी पर स्पष्ट हो गया कि वे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरोधी हैं।[1] अल्लाह तआला ने स्पष्ट किया कि वे जानते हैं कि वे झूठ पर हैं और उनके कर्म और विश्वास भी गलत हैं, यही कारण है कि वे कभी मौत की कामना नहीं करेंगे। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَلَن يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ﴾ (और वे कदापि उसकी कामना नहीं करेंगे, उनके कर्तूतों के कारण और अल्लाह अत्याचारियों से अधिक सूचित है)।

यह इस बात को स्पष्ट करता है कि कुछ लोग धार्मिक मामलों में हठ करते हैं, जबकि वे जानते हैं कि वे गलत हैं। तो यह कैसे संभव नहीं होगा कि ऐसा व्यवहार दुनियावी मामलों में भी हो, जो धर्म के मामलों से कहीं हल्के हैं? यह तो बहुतायत में होता है। इसलिए, आलिम (ज्ञानी) और दाई (संदेशवाहक) को चाहिए कि वे अपने विरोधियों से उचित व्यवहार करें और ठोस दलीलें प्रस्तुत करें, जिनसे बचना असंभव हो, ताकि दूसरों को इस बात का ज्ञान हो सके कि हठधर्मी व्यक्ति धार्मिक या दुनियावी मामलों में सत्य को दबाने की कोशिश कर रहा है। साथ ही, यह भी समझ लेना चाहिए कि कुछ लोग घमंड और अहंकार के कारण सत्य और सही बात का इनकार करते हैं।

(1) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 78)।

फिर अल्लाह तआला स्पष्ट करता है कि वे केवल मौत की कामना न करने तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि वे जीवन के प्रति अत्यधिक लोभी हैं ﴿وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ ٱلنَّاسِ عَلَىٰ حَيَوٰةٍ وَمِنَ ٱلَّذِينَ أَشْرَكُوا۟ ۚ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ﴾ (तुम इन्हें, सबसे बढ़कर जीने का लोभी पाओगे और मिश्रणवादियों से (भी)। इनमें से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे एक-एक हज़ार वर्ष की आयु मिल जाये)। इस आयत ने उनकी मौत से अत्यधिक घृणा को स्पष्ट कर दिया है, और यह भी कि वे संसार में लंबा जीवन पाने की कामना करते हैं, जैसा कि मूर्तिपूजक करते हैं, या उनसे भी अधिक। हर एक यहूदी चाहता है कि वह एक हज़ार साल तक जीवित रहे, क्योंकि उसने जो बुरे कर्म किए हैं और जो बुराई वह भविष्य में देखता है, उसके कारण वह मौत से बचना चाहता है। यही वजह है कि वे कभी मौत की कामना नहीं करेंगे, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَلَن يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۗ﴾ (और वे कदापि उसकी कामना नहीं करेंगे, उनके कर्तूतों के कारण) वे अपने बुरे कर्मों के कारण, जो उन्होंने आख़िरत के लिए आगे भेजे हैं, कभी भी मौत की कामना नहीं करेंगे। किंतु, लंबे जीवन की कामना दंड से नहीं बचा सकती। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِۦ مِنَ ٱلْعَذَابِ أَن يُعَمَّرَ ۗ وَٱللَّهُ بَصِيرٌۢ بِمَا يَعْمَلُونَ﴾ (हालाँकि ये (लम्बी) आयु भी उसे यातना से बचा नहीं सकती और अल्लाह देखने वाला है जो वे कर रहे हैं)।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मृत्यु से डरना और जीवन का लोभ करना दंड के डर के कारण है। यह आयत स्पष्ट करती है कि चाहे जीवन कितना भी लंबा हो, अंततः उसका अंत होगा, और लंबे जीवन से न तो हिसाब बच सकता है और न ही सज़ा। इससे यह समझ में आता है कि एक ईमानदार व्यक्ति को जीवन से प्यार केवल इसलिए करना चाहिए ताकि वह अधिक से अधिक नेक कार्य कर सके और अल्लाह तआला से मिलने की तैयारी में आज्ञापालन और इस्तिग़फ़ार (पश्चाताप) में लगा रहे।

यह क़ुरआन -ए- करीम की सत्यता की भी पुष्टि करता है, जिसने उनके हृदय में छिपे झूठ, घमंड, सत्य को पहचानने और उसे छोड़ने की प्रवृत्ति को प्रकट किया। यह स्पष्ट दलीलों और निर्णायक प्रमाणों के साथ साबित करता है। यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत (पैग़म्बरी) की सत्यता को भी प्रमाणित करता है, जिनके पास यह चमत्कारी किताब है।

﴿قُلْ مَن كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيلَ فَإِنَّهُۥ نَزَّلَهُۥ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ ٱللَّهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٧﴾ مَن كَانَ عَدُوًّا لِّلَّهِ وَمَلَـٰٓئِكَتِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَىٰلَ فَإِنَّ ٱللَّهَ عَدُوٌّ لِّلْكَـٰفِرِينَ ﴿٩٨﴾﴾ [سورة البقرة:٩٧-٩٨].

((हे नबी) कह दो कि जो व्यक्ति जिब्रील का शत्रु है, (तो रहे)। उसने तो अल्लाह की अनुमति से इस संदेश (क़ुर्आन) को आपके दिल पर उतारा है, जो इससे पूर्व की सभी पुस्तकों का प्रमाणकारी तथा ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन एवं (सफलता) का शुभ समाचार है। जो अल्लाह तथा उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों और जिब्रील तथा मीकाईल का शत्रु हो, तो अल्लाह (उन) काफ़िरों का शत्रु है)।

अभी भी यहूदियों की ही चर्चा चल रही है, यहाँ यह आयत स्पष्ट करती है कि उनमें से कुछ फ़रिश्तों से दुश्मनी रखते थे।

तफ़सीर में हैः इमाम अबू जअफ़र बिन जरीर अत-तबरी रहमतुल्लाह अलैह ने कहा है: “सभी विद्वानों ने इस पर सहमति व्यक्त की है कि यह आयत बनी इसराईल के यहूदियों को उत्तर स्वरूप नाज़िल हुई थी, क्योंकि उन्होंने दावा किया था कि जिब्रील उनके दुश्मन हैं, जबकि मीकाईल उनके मित्र हैं”।[1] यह भी कहा गया है कि इसका कारण यह था कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ प्रश्न पूछे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें इस शर्त पर उत्तर दिया कि वे इस्लाम स्वीकार करेंगे। उन्होंने कहाः ठीक है। फिर जब उन्होंने प्रश्न पूछे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें उत्तर दे दिया, तो उनके पास ईमान लाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा। फिर उन्होंने पूछा: आपका साथी (वली) कौन सा फ़रिश्ता है? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उत्तर दिया: “मेरा साथी जिब्रील है, और अल्लाह ने कभी भी कोई नबी नहीं भेजा, मगर जिब्रील उसका साथी रहा है”। उन्होंने कहा: “अगर आपका साथी कोई और फ़रिश्ता होता, तो हम आपका अनुसरण करते तथा आपको सच्चा मानते”।[2] उन्होंने कहा: “यह वही है जो युद्ध और लड़ाई लेकर आता है, यह हमारा दुश्मन है”।[3] यहाँ तक कि जिब्रील अलैहिस्सलाम भी उनके घृणा और दुश्मनी से नहीं बच सके। यह उनके घोर उद्दंडता, घोर कुफ़्र और हठधर्मिता को दर्शाता है, जो इस हद तक पहुँच गया कि वे सत्य को पहचानने के बाद भी इसे नकारते रहे। यह आयत इन यहूदियों की नैतिकता और चरित्र को भी उजागर करती है। अल्लाह तआला ने उनके खराब और गंदे चरित्र, उनके नीच स्वभाव और विश्वासघात वाली प्रवृत्ति की वास्तविकता को प्रकट किया। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि मुसलमानों को उन नैतिकताओं से लाभ उठाना चाहिए जिन्हें अल्लाह ने उनके बारे में उजागर किया, ताकि मुसलमान उनकी चालों से भ्रमित न हों या उन पर भरोसा न करें।

---

(2) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 133)।

(3) पिछला संदर्भ (1/ 134)।

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 26)।

इसके बाद अल्लाह तआला क़ुरआन के उतारने की महानता को स्पष्ट करता है, और कहता है: ﴿فَإِنَّهُۥ نَزَّلَهُۥ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ ٱللَّهِ﴾ (उसने तो अल्लाह की अनुमति से इस संदेश (क़ुर्आन) को आपके दिल पर उतारा है) यह साबित करता है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल पर उतारा। यह इस बात का प्रमाण है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम का दर्जा और सम्मान अत्यधिक है, क्योंकि वही क़ुरआन को सीधे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल पर लाए। और दिल का विशेष रूप से इस कार्य के लिए चुना जाना इस बात का संकेत है कि दिल शरीर के अंगों में सबसे उच्च स्थान रखता है, जैसा कि ह़दीस़ में भी आया है।

इमाम क़ुर्तबी रहमतुल्लाह अलैह ने कहा है कि दिल वह स्थान है जहाँ ज्ञान और विचार का संग्रह होता है।[1] क़ुरआन का नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल पर उतारा जाना क़ुरआन की महानता और सम्मान को दर्शाता है। और यह भी प्रमाण है कि जिस पर क़ुरआन उतारा गया है, अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, उनकी भी महानता और ऊँचाई है। तथा अल्लाह तआला के फ़रमान में हैः ﴿نَزَّلَهُۥ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ ٱللَّهِ﴾ (उसने तो अल्लाह की अनुमति से इस संदेश (क़ुर्आन) को उतारा है)। यह इस बात का संकेत है कि जो कुछ भी इस संसार में होता है, वह केवल अल्लाह के आदेश से ही होता है, और सब कुछ उसकी सत्ता, शक्ति और क़ुदरत से नियंत्रित होता है।

फिर पवित्र आयत क़ुरआन की कुछ विशेषताओं को स्पष्ट करती है, प्रथमः ﴿مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ﴾: अर्थात क़ुरआन तौरेत (और उससे पहले की किताबों) के सत्यापन के रूप में है, और इसमें उन किताबों के विपरीत कुछ नहीं है। द्वियीतः "وَهُدًى": क़ुरआन एक मार्गदर्शन (हिदायत) है, जो इसे अपनाने वाले को दोनों दुनियाओं (लोक-परलोक) की सफलता की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है, और उसे स्वर्ग की ओर ले जाता है। तृतीयः "وبشرى للمؤمنين": क़ुरआन ईमान वालों को स्वर्ग (जन्नत) की शुभकामनाएं देने वाला है।

तो फिर क़ुरआन करीम से बढ़कर कौन सा किताब हो सकता है, जो अच्छाई और सुधार की ओर मार्गदर्शन करता है, और ईमानवालों को स्वर्ग की शुभकामनाओं से आनंदित करता है, अल्लाह तआला की अनुमति से।

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 370)।

और अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿مَن كَانَ عَدُوًّا لِّلَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَجِبۡرِيلَ وَمِيكَىٰلَ فَإِنَّ ٱللَّهَ عَدُوٌّ لِّلۡكَٰفِرِينَ ٩٨﴾ (जो अल्लाह तथा उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों और जिब्रील तथा मीकाईल का शत्रु हो, तो अल्लाह (उन) काफ़िरों का शत्रु है)।

अल्लाह ने इस आयत में सामान्य रूप से फ़रिश्तों का उल्लेख किया है, फिर विशेष रूप से जिब्राईल और मीकाईल का उल्लेख किया। यह विशेष रूप से आम पर विशेष को संलग्न करने के रूप में है, क्योंकि संदर्भ में उनके समर्थन में है, जहां यहूदियों ने कहा: जिब्राईल हमारा दुश्मन है क्योंकि वह युद्ध और हत्या को लाता है, और मीकाईल हमारा मित्र है क्योंकि वह पौधों और बारिश के लिए जिम्मेदार है। सच्चाई यह है कि जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) भी हिदायत को लाते हैं, वह वह हैं जो नबियों पर किताबें लेकर आते हैं, जिसमें क़ुरआन भी शामिल है। अल्लाह ने इस पवित्र आयत में उनके जवाब में कहा, जो स्पष्ट करती है कि जो कोई अल्लाह, उनके फ़रिश्तों, उनके रसूलों, जिब्राईल और मीकाईल का दुश्मन है, तो अल्लाह उसके लिए दुश्मन हैं। इस महान आयत ने उनके कुफ़्र (अविश्वास) को भी स्थापित किया है ﴿فَإِنَّ ٱللَّهَ عَدُوٌّ لِّلۡكَٰفِرِينَ﴾ (तो अल्लाह (उन) काफ़िरों का शत्रु है)। इसलिए, यह उन लोगों पर भी लागू होता है जो उनकी तरह व्यवहार करते हैं। यह आम तौर पर फ़रिश्तों के सम्मान को दर्शाता है और विशेष रूप से जिब्राईल और मीकाईल के सम्मान को, और रसूलों का सम्मान, और यह कि उनके साथ दुश्मनी कफ्र है और उनमें ईमान लाना अनिवार्य है। यह भी दर्शाता है कि घमंड और बिना ज्ञान के अल्लाह के बारे में बोलना बहुत खतरनाक है।

﴿وَلَقَدۡ أَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ ءَايَٰتِۭ بَيِّنَٰتٖۖ وَمَا يَكۡفُرُ بِهَآ إِلَّا ٱلۡفَٰسِقُونَ ٩٩ أَوَكُلَّمَا عَٰهَدُواْ عَهۡدٗا نَّبَذَهُۥ
فَرِيقٞ مِّنۡهُمۚ بَلۡ أَكۡثَرُهُمۡ لَا يُؤۡمِنُونَ ١٠٠ وَلَمَّا جَآءَهُمۡ رَسُولٞ مِّنۡ عِندِ ٱللَّهِ مُصَدِّقٞ لِّمَا مَعَهُمۡ نَبَذَ فَرِيقٞ مِّنَ
ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ كِتَٰبَ ٱللَّهِ وَرَآءَ ظُهُورِهِمۡ كَأَنَّهُمۡ لَا يَعۡلَمُونَ ١٠١ وَٱتَّبَعُواْ مَا تَتۡلُواْ ٱلشَّيَٰطِينُ عَلَىٰ مُلۡكِ
سُلَيۡمَٰنَۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيۡمَٰنُ وَلَٰكِنَّ ٱلشَّيَٰطِينَ كَفَرُواْ يُعَلِّمُونَ ٱلنَّاسَ ٱلسِّحۡرَ وَمَآ أُنزِلَ عَلَى ٱلۡمَلَكَيۡنِ
بِبَابِلَ هَٰرُوتَ وَمَٰرُوتَۚ وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنۡ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَآ إِنَّمَا نَحۡنُ فِتۡنَةٞ فَلَا تَكۡفُرۡۖ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنۡهُمَا مَا
يُفَرِّقُونَ بِهِۦ بَيۡنَ ٱلۡمَرۡءِ وَزَوۡجِهِۦۚ وَمَا هُم بِضَآرِّينَ بِهِۦ مِنۡ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذۡنِ ٱللَّهِۚ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمۡ وَلَا
يَنفَعُهُمۡۚ وَلَقَدۡ عَلِمُواْ لَمَنِ ٱشۡتَرَىٰهُ مَا لَهُۥ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ مِنۡ خَلَٰقٖۚ وَلَبِئۡسَ مَا شَرَوۡاْ بِهِۦٓ أَنفُسَهُمۡۚ لَوۡ
كَانُواْ يَعۡلَمُونَ ١٠٢ وَلَوۡ أَنَّهُمۡ ءَامَنُواْ وَٱتَّقَوۡاْ لَمَثُوبَةٞ مِّنۡ عِندِ ٱللَّهِ خَيۡرٞۖ لَّوۡ كَانُواْ يَعۡلَمُونَ ١٠٣﴾
[سورة البقرة:٩٩-١٠٣].

(और (हे नबी!) हमने आप पर खुली आयतें उतारी हैं और इनका इन्कार केवल वही लोग करेंगे, जो कुकर्मी हैं। क्या ऐसा नहीं हुआ है कि जब कभी उन्होंने कोई वचन दिया, तो

उनके एक गिरोह ने उसे भंग कर दिया? बल्कि इनमें बहुतेरे ऐसे हैं, जो ईमान नहीं रखते। तथा जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक रसूल, उस पुस्तक का समर्थन करते हुए, जो उनके पास है, आ गया, तो उनके एक समुदाय ने जिनहें पुस्तक दी गयी, अल्लाह की पुस्तक को ऐसे पीछे डाल दिया, जैसे वे कुछ जानते ही न हों। तथा सुलैमान के राज्य में शैतान जो मिथ्या बातें बना रहे थे, उनका अनुसरण करने लगे। जबकि सुलैमान ने कभी कुफ़्र (जादू) नहीं किया, परन्तु कुफ़्र तो शैतानों ने किया, जो लोगों को जादू सिखा रहे थे तथा वे उन बातों का (अनुसरण करने लगे) जो बाबिल (नगर) के दो फ़रिश्तों; हारूत और मारूत पर उतारी गयीं, जबकि वे दोनों किसी को जादू नहीं सिखाते, जब तक ये न कह देते कि हम केवल एक परीक्षा हैं, अतः, तू कुफ़्र में न पड़। फिर भी वे उन दोनों से वो चीज़ सीखते, जिसके द्वारा वे पति और पत्नी के बीच जुदाई डाल दें और वे अल्लाह की अनुमति बिना इसके द्वारा किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते थे, परन्तु फिर भी ऐसी बातें सीखते थे, जो उनके लिए हानिकारक हों और लाभकारी न हों और वे भली-भाँति जानते थे कि जो इसका ख़रीदार बना, परलोक में उसका कोई भाग नहीं तथा कितना बुरा उपभोग्य है, जिसके बदले वे अपने प्राणों का सौदा कर रहे हैं यदि वे जानते होते! और यदि वे ईमान लाते और अल्लाह से डरते, तो अल्लाह के पास इसका जो प्रतिकार (बदला) मिलता, वह उनके लिए उत्तम होता, यदि वे जानते होते)।

अल्लाह तआला अपने नबी (दूत) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कह रहा है ﴿وَلَقَدْ أَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ءَايَٰتٍۭ بَيِّنَٰتٍ ۖ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ إِلَّا ٱلْفَٰسِقُونَ ٩٩﴾ (और (हे नबी!) हमने आप पर खुली आयतें उतारी हैं और इनका इन्कार केवल वही लोग करेंगे, जो कुकर्मी हैं)। यह अल्लाह तआला की ओर से उसके पवित्र क़ुरआन की एक प्रमाणिक सराहना है, जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि उसकी आयतें स्पष्ट और स्पष्ट हैं। इनमें हर किसी पर प्रमाण स्थापित होता है, चाहे वह उसे पढ़े, सुने या उसके बारे में सूचित किया जाए। इसमें जो सत्य है, वह स्पष्ट रूप से मौजूद है: आदेश और निषेध, शरीअत और हिकमत, पुरस्कार और दंड, और यह स्पष्ट संकेत कि यह किताब अल्लाह तआला से है। इसमें पुरानी उम्मतों के किस्से भी हैं, जो उनके पैग़म्बरों के साथ उनके संबंधों और उनके द्वारा किए गए कार्यों को स्पष्ट करते हैं, साथ ही साथ वे संकेत जो इसके दिव्य होने को प्रमाणित करते हैं। और यह इस से भी पुष्टि करता है कि यह किताब जो पहले की किताबों के साथ संगत है, और उनमें कोई विरोधाभास नहीं है। इस प्रकार, इसका तात्पर्य यह है कि जो इस किताब के साथ आया, वह अल्लाह का पैग़ंबर और उसका रसूल है, अर्थात उसकी आज्ञा का पालन करना, उसकी सहायता करना, उसका अनुसरण करना और उसे प्रेम करना अनिवार्य है। और इस प्रकार, जो इस स्पष्ट और स्पष्ट सत्य का इंकार करता है, वह काफिर है, क्योंकि वह उस मार्ग से बाहर निकल चुका है जो उसे अपनाना चाहिए था।

अल्लाह तआला फ़रमाता है ﴿أَوَكُلَّمَا عَٰهَدُوا۟ عَهْدًا نَّبَذَهُۥ فَرِيقٌ مِّنْهُم﴾ (क्या ऐसा नहीं हुआ है कि जब कभी उन्होंने कोई वचन दिया, तो उनके एक गिरोह ने उसे भंग कर दिया?)।

यह यहूदियों द्वारा संधियों को बार-बार तोड़ने का वर्णन है। 'कुल्लमा' शब्द दोहराव को दर्शाता है, यह स्पष्ट करता है कि उन्होंने कई बार संधियाँ कीं और फिर तोड़ दीं। अल्लाह तआला ने उन्हें उनकी सच्चाई के अनुसार वर्णित किया है कि उनमें से ज्यादातर का ईमान नहीं है, ﴿بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ﴾ (बल्कि इनमें बहुतेरे ऐसे हैं, जो ईमान नहीं रखते) यह स्पष्ट करता है कि ईमान व्यक्ति को उसके द्वारा की गई संधियों का पालन करने के लिए बाध्य करता है, अल्लाह तआला के भय और उसके दंड के डर से। ईमान की अनुपस्थिति व्यक्ति को हर अवसर पर संधि तोड़ने के लिए स्वतंत्र बनाती है। जबकि ईमान संधियों को तोड़ने से रोकता है और पापों से दूर करता है।

फिर अल्लाह तआला यहूदियों की एक और विशेषता बताते हैं, जो है सत्य को अस्वीकार करना जिसे वे जानते हैं, और अल्लाह की किताब को छोड़ देना जिसमें सत्य है, जैसे कि उन्होंने कुछ भी नहीं सीखा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾﴾ (तथा जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक रसूल, उस पुस्तक का समर्थन करते हुए, जो उनके पास है, आ गया, तो उनके एक समुदाय ने जिनहें पुस्तक दी गयी, अल्लाह की पुस्तक को ऐसे पीछे डाल दिया, जैसे वे कुछ जानते ही न हों)।

इस पवित्र आयत के संकेतों में से एक यह है कि क़ुरआन उनके पास जो किताब है उसे खंडन नहीं करता, बल्कि उसकी पुष्टि करता है, फिर भी वे इसे छोड़ देते हैं और नबी -ए- उम्मी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के बावजूद इसे अस्वीकार करते हैं, जैसे कि उन्होंने उसमें कोई सत्य नहीं देखा। फिर वे जादूगरों का अनुसरण करते हैं, जैसा कि अगली आयत में स्पष्ट होगा।

यह दर्शाता है कि यहूदी केवल संधियों को तोड़ते नहीं हैं, बल्कि सत्य को छिपाते हैं जिसे वे जानते हैं। यह संदर्भ इस बात का भी संकेत देता है कि जो किताब का कुछ हिस्सा लेता है और जो उसे नहीं चाहता उसे नजरअंदाज करता है, वह कुछ पर ईमान लाता है और कुछ पर कफ्र करता है। यह दर्शाता है कि जब कोई व्यक्ति सत्य को छोड़ देता है, तो वह झूठ का अनुसरण करता है, और जब वह सुन्नत को छोड़ देता है, तो वह बिदअत को अपनाता है, और जब वह सच्चाई को छोड़ देता है, तो वह झूठ को अपनाता है। अल्लाह तआला ने कहा: ﴿وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُو الشَّيَاطِينُ عَلَىٰ مُلْكِ سُلَيْمَانَ﴾ (तथा सुलैमान के राज्य में शैतान जो मिथ्या बातें बना रहे थे, उनका अनुसरण करने लगे) जहां शैतानों ने लोगों के लिए जादू निकाला, और उन्होंने दावा किया कि सुलैमान अलैहिस्सलाम ने इसका इस्तेमाल किया था, तथा इसी के द्वारा उन्हें महान

राज्य प्राप्त हुआ। किंतु उनका यह कहना झूठ है, बल्कि अल्लाह तआला ने उन्हें निर्दोष बताया है[1] सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है: ﴿وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَٰنُ وَلَٰكِنَّ ٱلشَّيَٰطِينَ كَفَرُواْ يُعَلِّمُونَ ٱلنَّاسَ ٱلسِّحْرَ﴾ (जबकि सुलैमान ने कभी कुफ़्र (जादू) नहीं किया, परन्तु कुफ़्र तो शैतानों ने किया, जो लोगों को जादू सिखा रहे थे) यह दर्शाता है कि काफिर अपने साथी को कफ़्र, उसके साधनों और तरीकों को सिखाने के लिए उत्सुक होता है, जैसा कि शैतान करते हैं, और यह भी दर्शाता है कि शैतान मनुष्य को भटकाने और झूठ बोलने में उत्सुक होते हैं। इस प्रकार, यह भी स्पष्ट होता है कि कोई भी व्यक्ति शैतान के झूठे आरोपों और घृणित गवाहियों से बच नहीं सकता। यहां तक कि अल्लाह के नबी सुलैमान अलैहिस्सलाम पर भी यह झूठी आफवाह फैलायी गई कि उनकी शक्ति जादू के कारण है। यह दर्शाता है कि हर व्यक्ति, विशेष रूप से वह जो किसी प्रकार का आशीर्वाद या विशेष शक्ति रखता है, उसे ईर्ष्यालु और झूठे आरोप लगाने वालों से तकलीफ मिलती है। ऐसे लोग हमेशा आशीर्वाद और अच्छे गुणों को गलत तरीके से व्याख्यायित करते हैं, और उन पर बुरा आरोप लगाते हैं।

इस के लाभों में से एक यह है कि अल्लाह तआला ने सुलैमान अलैहिस्सलाम को कुफ़्र तथा जादू के उपयोग से पाक रखा है। अल्लाह के इस कथन ﴿وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَٰنُ﴾ (और सुलैमान ने कुफ़्र नहीं किया) में संकेत है कि जादू कुफ़्र है।

यह आयत नबी सुलैमान अलैहिस्सलाम को काफ़िर होने से पूरी तरह से बरी करती है, क्योंकि अल्लाह ने उनके ऊपर किसी भी प्रकार के कुफ़्र का आरोप नहीं लगाया है, जिससे यह सिद्ध होता है कि वे कुफ़्र से मुक्त हैं, बल्कि एक सच्चे और मुरसल (प्रेषित) नबी हैं। यहाँ तक कि नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी जादू, कविता और भविष्यवाणी का आरोप लगाया गया, तो उनसे कमतर विद्वानों, भक्तों और सज्जनों का क्या कहना।

इसके अतिरिक्त, आयत ने स्पष्ट किया कि शैतान जादू सिखाते हैं। अल्लाह तआला ने कहा: ﴿وَلَٰكِنَّ ٱلشَّيَٰطِينَ كَفَرُواْ يُعَلِّمُونَ ٱلنَّاسَ ٱلسِّحْرَ﴾ (परन्तु कुफ़्र तो शैतानों ने किया, जो लोगों को जादू सिखा रहे थे)। इमाम क़ुरतबी ने अल्लाह तआला के इस कथन ﴿وَمَآ أُنزِلَ عَلَى ٱلْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَٰرُوتَ وَمَٰرُوتَ﴾ की व्याख्या करते हुए कहा है: "(मा) यहाँ नकारात्मक है, तथा (वाव) का अत़्फ़ (संयोजन) ﴿وَمَآ أُنزِلَ عَلَى ٱلْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَٰرُوتَ وَمَٰرُوتَ﴾ पर है, यहाँ वाक्य में तक़दीम व ताख़ीर (आगे-पीछे एवं पुनर्रचना), असल में वाक्य इस प्रकार होगा:

(1) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखक: इब्न -ए- सअदी (1/ 81)।

(وفي الكلام تقديم وتأخير، والتقدير: وما كفر سـليمان وما أنزل على الملكين، ولكن الشـياطين كفروا، يعلمون الناس السـحر ببابل هاروت وماروت، فهاروت وماروت بدل من الشياطين. هذا أولى ما حملت عليه الآية من التأويل. وأصح ما قيل فيها)

अर्थातः सुलैमान ने कफ्र नहीं किया और जो दो फ़रिश्तों पर बबेल में उतरा, हारूत और मारूत, बल्कि शैतान काफिर थे, वे बाबेल में हारूत और मारूत के माध्यम से लोगों को जादू सिखाते थे।' हारूत और मारूत, शयातीन से बदल है, यह आयत के सबसे उचित और सही तात्पर्यों में से एक है।(1) तथा अली रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं किः "जो दो फ़रिश्तों पर उतारा गया,' अर्थात फ़रिश्ते लोगों को जादू से सचेत करते हुए सिखाते थे, न कि उन्हें जादू की शिक्षा देते थे। वे कहते थे: 'ऐसा मत करो, और इस प्रकार के छल का उपयोग मत करो जिससे व्यक्ति और उसकी पत्नी के बीच विभाजन हो जाए"। ज़ज्जाज का कहना: 'यह वह कथन है जिस पर अधिकांश भाषा और दृष्टिकोण वाले लोग सहमत हैं। तथा इसका अर्थ है कि वे मना करने के बाद लोगों को सिखाते थे, कह कर: ऐसा मत करो, और इस प्रकार के छल का उपयोग मत करो ताकि व्यक्ति और उसकी पत्नी के बीच विभाजन हो जाए।(2)

इस से यह पता चलता है कि परीक्षण इंसान के लिए एक प्रकार का इम्तिहान है, ताकि अल्लाह तआला उसे परखे, या तो वह इन परीक्षणों के सामने स्थिर रहता है और इनकी विविधता के बावजूद सत्य से भटकता नहीं, या वह सत्य से भटक जाता है। और अल्लाह तआला जिसे चाहे, जिस प्रकार चाहे, उसका इम्तिहान करता है, जैसे कि तालूत के साथ लोग नहर में परीक्षा से गुजरते थे। और जैसे कि सूअर का मांस खाने वाला, वह वही है जिसने सृष्टि की और वही है जिसने निषेध किया, जैसा कि अल्लाह तआला ने खुद के बारे में सूरह अल-अंबिया में फ़रमाया: ﴿لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُونَ ٢٣﴾ (वह जो करता है, उसके बारे में कोई उस से नहीं पूछ सकता, किंतु उन (लोगों) से पूछा जाएगा)।

फिर जो कोई भी इस वाक्य पर विचार करेगा, वह देखेगा कि यह बताता है कि जादू एक बहुत बड़ी बुरी चीज है, और वे दोनों जादू सीखने से चेतावनी दे रहे हैं। इसके बावजूद, कुछ लोग इसे सीखने के लिए तैयार होते हैं और इसमें विश्वास करते हैं, जो काफ़िर होने की दृढ़ता है। अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَآ إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ﴾

(वे दोनों किसी को जादू नहीं सिखाते, जब तक ये न कह देते कि हम केवल एक परीक्षा हैं, अतः, तू कुफ़्र में न पड़) और इसके फायदों में से यह है कि जादू काफ़िर होने का कारण है,

---

(2) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 35)।

(1) पिछला संदर्भ (1/ 37)।

और जादूगर और जादू एक परीक्षा है, और जो इसे सीखता है, वह अपने धर्म में फंस जाता है। यह फितनाओं के खतरों को दिखाता है और उनसे सावधान रहने की आवश्यकता को, बल्कि उनसे दूर रहने की आवश्यकता को बताता है, और यह कि फितनाएं एक परीक्षा और परीक्षण हैं। अल्लाह हमें और मुसलमानों को उनसे बचाए।

कुछ व्याख्याकारों (मुफ़्फ़सिरीन) ने कहा है कि यहूदियों ने बबेल की भूमि में स्थित दो फरिश्तों पर उतारे गए जादू का अनुसरण किया, जो कि इराक की भूमि में है। उन पर जादू अल्लाह के द्वारा उसके बंदों के लिए परीक्षा और परीक्षण के रूप में उतारा गया था, जिससे वे लोगों को जादू सिखाते थे।(1) यह सर्वमान्य है कि इसे किसी भी तरह से माना जाए। कुछ लोग, जैसा कि पहले बताया गया है, कहते हैं कि इसका अर्थ है: सुलैमान अलैहिस्सलाम ने कुफ्र नहीं किया और न ही जादू उन दो फरिश्तों पर उतारा गया जो जिब्राईल और मीकाईल हैं, बल्कि शैतान काफिर थे, वे बाबेल में हारूत और मारूत के माध्यम से लोगों को जादू सिखाते थे।(2)

वे उस से (जादू से) बुराई को सीखते हैं, अल्लाह तआला ने कहा: ﴿فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِۦ بَيْنَ ٱلْمَرْءِ وَزَوْجِهِۦ﴾ (फिर भी वे उन दोनों से वो चीज़ सीखते, जिसके द्वारा वे पति और पत्नी के बीच जुदाई डाल दें) यह दर्शाता है कि जादू का प्रभाव होता है, लेकिन वह अल्लाह की अनुमति के बिना नुकसान नहीं पहुंचा सकता। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: ﴿وَمَا هُم بِضَآرِّينَ بِهِۦ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ ٱللَّهِ﴾ (और वे अल्लाह की अनुमति बिना इसके द्वारा किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते थे) इससे यह सुनिश्चित होता है कि अल्लाह पर भरोसा और तवक्कुल जरूरी है, और यह कि किसी व्यक्ति को केवल वही नुकसान पहुंच सकता है जो अल्लाह की अनुमति से हो, इसलिए एक मोमिन अल्लाह पर भरोसा करके सुरक्षित रहता है और उसी से सहायता मांगता है, क्योंकि वही संरक्षक और शक्तिशाली है। इब्न सादी (रहिमहुल्लाह) कहते हैं: 'कारण, चाहे वे कितने भी प्रभावशाली हों, सदा अल्लाह तआला की क़ज़ा व क़दर के अधीन होते हैं।(3)

अल्लाह तआला यह स्पष्ट करता है कि यह जादू जो वे सीखते हैं, उनके धर्म को नुकसान पहुँचाता है और इसका कोई लाभ नहीं है जो इसके नुकसान की बराबरी कर सके ﴿وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ ۚ وَلَقَدْ عَلِمُوا۟ لَمَنِ ٱشْتَرَىٰهُ مَا لَهُۥ فِى ٱلْـَٔاخِرَةِ مِنْ خَلَٰقٍ﴾ (परन्तु फिर भी ऐसी बातें सीखते थे, जो उनके लिए हानिकारक हों और लाभकारी न हों और वे भली-

(2) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 81)।

(3) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 35), तथा तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 141)।

(4) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 82)।

भाँति जानते थे कि जो इसका ख़रीदार बना, परलोक में उसका कोई भाग नहीं)। और आयत यहूदियों को यह स्पष्ट करती है कि उन्होंने जादू को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करने के बजाय चुना, इसलिए उनके लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं है।(1)

तो उनकी जादू में रुचि उसी तरह है जैसे क्रेता (ख़रीदने वालों) की रुचि होती है, और इसका मूल्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण न करना है। तथा उन्हें पता था कि जिसने इसे अपनाया उसके लिए आखिरत में कोई अच्छा हिस्सा और भाग्य नहीं है। यह उनके दुस्साहस को दर्शाता है, और यह भी कि व्यक्ति कभी-खभी बुराई को जान रहा होता है फिर भी उसे अपनाता है तथा कभी-कभी अच्छाई को जानते बूझते भी छोड़ देता है।

फिर अल्लाह तआला इस काम और इस चयन की निंदा करता है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْاْ بِهِۦٓ أَنفُسَهُمْۚ لَوْ كَانُواْ يَعْلَمُونَ﴾ (तथा कितना बुरा उपभोग्य है, जिसके बदले वे अपने प्राणों का सौदा कर रहे हैं यदि वे जानते होते)। तथा 'बेअसा بئس बुरा है' शब्द अरबी में निंदा का पूर्णतया सूचक है जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है। यह अल्लाह तआला का उनके कार्यों की निंदा है, इसलिए उन्होंने अपनी जानों के साथ जो किया वह बहुत बुरा है ﴿لَوْ كَانُواْ يَعْلَمُونَ﴾ (यदि वे जानते होते) यह इंगित करता है कि इस चयन के साथ वे अज्ञानियों की स्थिति में हैं, जबकि वे जानते हैं कि जादू को ईमान पर चुनने के कारण उनके लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं है। यह उस समय के समान है जब किसी को भलाई का ज्ञान होता है और इसके विपरीत काम करता है, तो किसी समझदार व्यक्ति के गलत कार्य में कहा जाता है: 'अगर वह समझदार होता, तो ऐसा नहीं करता।' यहाँ वास्तविकता यह नहीं है कि वह समझदार नहीं है, क्योंकि अगर उसकी क्रिया समझदार के समान नहीं है, तो समझदारी उसके पास से हटा दी जाती है जैसे कि वह वास्तव में नहीं समझता, तो उसे दोष नहीं दिया जाएगा। इस प्रकार, उनका कार्य अज्ञानी का कार्य है, जबकि वे जानते हैं।

फिर अल्लाह तआला उस श्रेष्ठ चयन को स्पष्ट करता है जिसे उन्हें चुनना चाहिए था: ﴿وَلَوْ أَنَّهُمْ ءَامَنُواْ وَٱتَّقَوْاْ لَمَثُوبَةٌ مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ خَيْرٌۖ لَّوْ كَانُواْ يَعْلَمُونَ ١٠٣﴾ (और यदि वे ईमान लाते और अल्लाह से डरते, तो अल्लाह के पास इसका जो प्रतिकार (बदला) मिलता, वह उनके लिए उत्तम होता, यदि वे जानते होते) इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि उन्हें ईमान और अल्लाह तआला का डर चुनना चाहिए था, और अगर वे ऐसा करते तो उन्हें अल्लाह तआला की ओर से अच्छा प्रतिदान मिलता, जो दर्शाता है कि ईमान और तक़वा की स्थिति कैसी होती है, जिससे बंदे को अल्लाह तआला का प्रतिदान मिलता है। क्योंकि ईमान तक़वा की ओर ले

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 148)।

जाता है, और तक़्वा इंसान को अल्लाह तआला द्वारा ह़राम की गई चीजों से रोकता है, और अल्लाह तआला का डर और भय अनिवार्य बनाता है। इसलिए, जो अल्लाह से डरता है, वह उसका भय और डर करता है, ﴿لَوْ كَانُوا۟ يَعْلَمُونَ﴾ (यदि वे जानते होते) लेकिन उनके कार्य अज्ञानियों के समान हैं, क्योंकि वे जानते हुए भी उस सत्य के विपरीत कार्य करते हैं जिसे वे जानते हैं। अल्लाह तआला ने उनके बारे में पूर्व आयत में कहा ﴿وَلَقَدْ عَلِمُوا۟ لَمَنِ ٱشْتَرَىٰهُ مَا لَهُۥ فِى ٱلْءَاخِرَةِ مِنْ خَلَٰقٍ﴾ (वे भली-भाँति जानते थे कि जो इसका ख़रीदार बना, परलोक में उसका कोई भाग नहीं)। यह उनके घमंड और विरोध के कारण है जैसा कि अल्लाह तआला ने उन्हें पूर्व आयतों में वर्णित किया है: ﴿بِئْسَمَا ٱشْتَرَوْا۟ بِهِۦٓ أَنفُسَهُمْ أَن يَكْفُرُوا۟ بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ بَغْيًا أَن يُنَزِّلَ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ﴾ (क्या ही बुरा है वह जो उन्होंने अपनी जानों के साथ किया कि उन्होंने अल्लाह द्वारा उतारी गई बात को कफ़्र किया, जलन के कारण कि अल्लाह अपनी कृपा से जिसे चाहे उतारता है)। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: ﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ءَامِنُوا۟ بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ قَالُوا۟ نُؤْمِنُ بِمَآ أُنزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَآءَهُۥ وَهُوَ ٱلْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ﴾ (और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह द्वारा उतारी गई बात पर ईमान लाओ, तो वे कहते हैं: हम उस पर ईमान लाते हैं जो हम पर उतारा गया है, और वे इसे नकारते हैं जो इसके बाद है, जबकि यह सत्यापन करने वाला है जो उनके साथ है)।

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَقُولُوا۟ رَٰعِنَا وَقُولُوا۟ ٱنظُرْنَا وَٱسْمَعُوا۟ ۗ وَلِلْكَٰفِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾ مَّا يَوَدُّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ وَلَا ٱلْمُشْرِكِينَ أَن يُنَزَّلَ عَلَيْكُم مِّنْ خَيْرٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۗ وَٱللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِۦ مَن يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ ذُو ٱلْفَضْلِ ٱلْعَظِيمِ ﴿١٠٥﴾﴾ [سورة البقرة:١٠٤-١٠٥].

(हे ईमान वालो! तुम 'राइना' न कहो, 'उन्ज़ुरना' कहो और ध्यान से बात सुनो तथा काफ़िरों के लिए दुखदायी यातना है। अह्ले किताब में से जो काफ़िर हो गये तथा जो मिश्रणवादी हो गये, वे नहीं चाहते कि तुम्हारे पालनहार की ओर से तुमपर कोई भलाई उतारी जाये और अल्लाह जिसपर चाहे, अपनी विशेष दया करता है और अल्लाह बड़ा दानशील है)।

मुसलमान लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से "راعنا, राइना" कहा करते थे, अर्थात हमारी रिआयत करें, हमारी स्थिति पर ध्यान दें, तथा वे लोग इस का अर्थ सही लेते थे, परंतु यहूदियों ने इसका फायदा उठाया और उन्होंने यह शब्द उन उद्देश्यों के साथ इस्तेमाल किया जो नकारात्मक और अपमानजनक थे। इसलिए अल्लाह तआला ने उन्हें इस शब्द से मना किया और कहा: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَقُولُوا۟ رَٰعِنَا وَقُولُوا۟ ٱنظُرْنَا﴾ (हे ईमान वालो! तुम 'राइना' न कहो, 'उन्ज़ुरना' कहो) यहां यह बताया गया है कि यदि कोई चीज़ वैध

हो, लेकिन वह किसी ह़राम (निषिद्ध) काम की ओर ले जाती है, तो उस से भी मना किया गया है। इसमें यह भी शिक्षा दी गई है कि केवल अच्छे और शिष्ट शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए, और अपमानजनक या अशिष्ट शब्दों से बचना चाहिए, जो किसी गलत या अनुचित अर्थ की ओर इशारा कर सकते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿وَقُولُواْ انظُرْنَا﴾ ('उन्ज़ुरना' - हमारी ओर देखिए- कहो) उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यह यह शब्द पर्याप्त है, इसके बाद, ﴿وَاسْمَعُواْ﴾ (वसमऊ) है, इसमें आदेश दिया गया है कि सुनने का आदेश दिया गया है, लेकिन यह निर्दिष्ट नहीं किया गया कि क्या सुनना चाहिए, ताकि यह आदेश व्यापक हो, तथा इसमें क़ुरआन और सुन्नत दोनों की बातें शामिल हों, शब्द और अर्थ दोनों आधार पर। इस प्रकार, इसमें शिष्टाचार और आज्ञाकारिता की बात की गई है, जिसमें शब्दों और उनके सही अर्थों को स्वीकार कर उनका पालन करना चाहिए।[1]

इस से यह भी संकेत मिलता है कि शब्दों के गलत अर्थ लेने से तथा दूसरों को कष्ट पहुंचाने या उनका मजाक उड़ाने से बचना चाहिए, क्योंकि सदाचार एक धार्मिक आवश्यकता है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कुछ वैध चीज़ों को फ़ुक़हा द्वारा इसलिए रोका या मना किया गया है क्योंकि उनसे बुरे परिणाम या बिगाड़ उत्पन्न हो सकते हैं। अर्थात, किसी चीज़ को उसकी वास्तविकता के कारण नहीं, बल्कि उससे जुड़े या उत्पन्न होने वाले नुकसान के कारण रोका जाता है। इसलिए कहा जाता है: "साधनों का हुक्म उद्देश्यों के समान होता है।"

फिर अल्लाह तआला ने काफ़िरों को दर्दनाक सज़ा की चेतावनी दी: ﴿وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ (और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है)। इसके बाद यह स्पष्ट किया कि यहूदी और मुश्रिक मुसलमानों के प्रति कितनी गहरी दुश्मनी और ईर्ष्या रखते हैं: ﴿مَّا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُواْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلاَ الْمُشْرِكِينَ أَن يُنَزَّلَ عَلَيْكُم مِّنْ خَيْرٍ مِّن رَّبِّكُمْ﴾ (अह्ले किताब में से जो काफ़िर हो गये तथा जो मिश्रणवादी हो गये, वे नहीं चाहते कि तुम्हारे पालनहार की ओर से तुमपर कोई भलाई उतारी जाये)। यह दुश्मनी इस्लाम की भलाई से जुड़ी है, जो मुसलमानों को अल्लाह की ओर से मिली नेमतों और फज़लों के कारण है। "خَيْرٍ, कल्याण, भलाई" शब्द व्यापक है, जो क़ुरआन, सुन्नत, अच्छे आचरण, इबादतों, और समाज की स्थिति को आपसी झगड़ों से निकालकर भाईचारे, एकता, मोहब्बत, जीत, ताकत, और ऊंचे स्थान तक पहुंचाने जैसी अल्लाह की तमाम नेमतों को शामिल है। यह दर्शाता है कि मुसलमानों की भलाई काफ़िरों

(1) तैसीरुल करीमिर्रह़मान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 83)।

को नापसंद है। इसलिए, मुसलमानों पर यह अनिवार्य है कि वे अल्लाह का शुक्र अदा करें, उसकी नेमतों की कद्र करें और दुश्मनों से सावधान रहें, क्योंकि वे मुसलमानों के लिए भलाई नहीं चाहते। अल्लाह के इस बयान के आधार पर उनके साथ व्यवहार करना चाहिए।

अल्लाह तआला एक महान तत्व की व्याख्या करता है, अर्थात् अल्लाह ही अपनी दया और अनुग्रह के साथ जिसे चाहते हैं उसे विशेष बनाता है, सर्वाधिक दयालु अल्लाह ने फ़रमाया है: ﴿وَٱللَّهُ يَخۡتَصُّ بِرَحۡمَتِهِۦ﴾ (और अल्लाह जिसपर चाहे, अपनी विशेष दया करता है) यह भी इंगित करता है कि मुसलमान को अपने प्राप्त अनुग्रह को अल्लाह से जोड़ना चाहिए, जैसे कहें: 'अल्लाह के अनुग्रह से मुझे यह प्राप्त हुआ।' और 'उसके अनुग्रह से मैंने यह किया और प्राप्त किया।' उसे अपने विचारों या बुद्धिमत्ता से नहीं जोड़ना चाहिए। अल्लाह ही उसे बुद्धि और समझ प्रदान करते हैं, वह ही ज्ञान की राहों को सरल करते हैं, लेखन, समझ और स्मरण शक्ति को सुलभ बनाते हैं। अल्लाह ही व्यापार और लाभ को सरल बनाते हैं और अन्य सभी नेमतों को भी प्रदान करते हैं। प्रत्येक नेमत में यही होता है। फिर अल्लाह अपने अनुग्रह की विशालता को स्पष्ट करते हैं: ﴿وَٱللَّهُ ذُو ٱلۡفَضۡلِ ٱلۡعَظِيمِ﴾ (और अल्लाह बड़ा दानशील है) इससे यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह का अनुग्रह अत्यधिक है, उसकी कोई सीमा नहीं है। अतः मुसलमान को चाहिए कि वह उस से भलाई की याचना करें, जिसका अनुग्रह अत्यधिक है।

﴿ ۞ مَا نَنسَخۡ مِنۡ ءَايَةٍ أَوۡ نُنسِهَا نَأۡتِ بِخَيۡرٍ مِّنۡهَآ أَوۡ مِثۡلِهَآۗ أَلَمۡ تَعۡلَمۡ أَنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٌ ١٠٦ أَلَمۡ تَعۡلَمۡ أَنَّ ٱللَّهَ لَهُۥ مُلۡكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۗ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ مِن وَلِيّٖ وَلَا نَصِيرٍ ١٠٧ أَمۡ تُرِيدُونَ أَن تَسۡـَٔلُواْ رَسُولَكُمۡ كَمَا سُئِلَ مُوسَىٰ مِن قَبۡلُۗ وَمَن يَتَبَدَّلِ ٱلۡكُفۡرَ بِٱلۡإِيمَٰنِ فَقَدۡ ضَلَّ سَوَآءَ ٱلسَّبِيلِ ١٠٨﴾ [سورة البقرة:١٠٦-١٠٨].

(हम अपनी कोई आयत निरस्त कर देते अथवा भुला देते हैं, तो उससे उत्तम अथवा उसके समान लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जो चाहे, कर सकता है? क्या तुम ये नहीं जानते कि आकाशों तथा धरती का राज्य अल्लाह ही के लिए है और उसके सिवा तुम्हारा कोई रक्षक और सहायक नहीं है? क्या तुम चाहते हो कि अपने रसुल से उसी प्रकार प्रश्न करो, जैसे मूसा से प्रश्न किये जाते रहे? और जो व्यक्ति ईमान की नीति को कुफ़्र से बदल लेगा, तो वह सीधी डगर से विचलित हो गया)।

अल्लाह तआला अपनी हिकमत और अपने बंदों के साथ बर्ताव में क्रमिकता और लय को स्पष्ट करता है ताकि उन्हें क्रमबद्ध और निरंतर भलाई प्राप्त हो, जैसा कि वह फ़रमाता है: ﴿مَا نَنسَخۡ مِنۡ ءَايَةٍ أَوۡ نُنسِهَا نَأۡتِ بِخَيۡرٍ مِّنۡهَآ أَوۡ مِثۡلِهَآۗ﴾ (हम अपनी कोई आयत निरस्त कर देते अथवा भुला देते हैं, तो उससे उत्तम अथवा उसके समान लाते हैं) यह आयत स्पष्ट करती है कि

अल्लाह तआला कभी-कभी किसी आयत को हटा देता है या बदल देता है, अर्थात एक हुक्म को दूसरे हुक्म से बदल देता है। यह बदलाव और परिवर्तन कभी भूलवश नहीं होता, बल्कि यह उसकी हिकमत और ज्ञान के तहत होता है। कभी वह किसी आयत को बिल्कुल हटा देता है, जिससे वह दिलों से भी मिट जाती है, तथा इब्न -ए- कसीर ने उन कुछ रिवायतों का उल्लेख किया है जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने नबी से भुलवा दिया था[1],जिसके पीछे अल्लाह की हिकमत थी,

और दोनों परिस्थितियों में अपनी अधिक कृपा को स्पष्ट करते हुए: अर्थात, जब अल्लाह तआला किसी आयत को निरस्त या भुलवा देता है, तो वह उससे बेहतर या उसी समान भलाई भेजता है, जो उस आयत के हुक्म और लाभ में निहित होती है, ताकि इससे व्यक्ति के हित की पूर्ति हो सके। नस्ख़ (निरस्त करना) हमेशा उस भलाई के लिए होता है, जिसे अल्लाह तआला जानता है। पहले जो आयत थी, वह प्रारंभ में उचित थी, और फिर नई आयत अल्लाह के कृपा से और भी बेहतर होती है। यह अल्लाह तआला की रहमत और हिकमत है, जो वह अपने बंदों के मामले में ध्यान में रखते हुए तय करता है। यह अल्लाह तआला की विशेषता है कि वह अपने बंदों की भलाई को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेते हैं, क्योंकि वह मालिक हैं और उनका यह अधिकार है। और फिर भी वह उससे बेहतर या समान भलाई भेजते हैं। यह सब अल्लाह तआला की महानता और पवित्रता का प्रमाण है।

और यह साबित करता है कि विद्वान किसी विषय पर फतवा या फैसला नहीं दे सकते जब तक कि वे अल्लाह की किताब और उस के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत से नासिख़ और मनसूख़ को न जान लें। और जो बिना इस ज्ञान के इन मामलों में हाथ डालता है, वह गलती करता है और अपनी अज्ञानता में प्रवेश करता है।

अल्लाह तआला एक महान बात की ओर संकेत करता है ﴿أَلَمۡ تَعۡلَمۡ أَنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٌ﴾ (क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जो चाहे, कर सकता है?) यह एक प्रश्न के रूप में पुष्टि है: क्या तुम स्वीकारते नहीं कि अल्लाह हर चीज़ पर सक्षम हैं? इसलिए तुम नासिख (रद्द करने वाले) के विषय में कोई संदेह या आपत्ति नहीं कर सकते। यह उन यहूदियों के जवाब में है जो काबा की दिशा में परिवर्तन का इनकार करते थे, या अन्य किसी चीज़ का जिसे वे अस्वीकारते थे। ﴿أَلَمۡ تَعۡلَمۡ أَنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٌ﴾ (क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जो चाहे, कर सकता है?) तो, हे संदेह करने वाले, हे झुठलाने वाले और हे पाखंडी! अल्लाह तआला की क़ुदरत को पहचानो। अल्लाह की शक्ति और कुदरत के बीच ऐसा क्या हो सकता है जो उसे

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 154-155)।

उसके इच्छित हुक्म को बदलने से रोक सके? आयतें अल्लाह की तरफ़ से हैं, उनका बदलना (नस्ख) भी उसी की तरफ़ से है, और हुक्म का निर्धारण भी उसी की तरफ़ से होता है।

एक सच्चे मोमिन का हाल यह होता है कि जब वह अल्लाह तआला का यह कथन सुनता है: ﴿أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ﴾ (क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जो चाहे, कर सकता है?) तो वह कहता है: हाँ, मेरे रब, मैंने जान लिया।

फिर यह महत्वपूर्ण प्रश्न दोहराया जाता है: ﴿أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ ٱللَّهَ لَهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ﴾ (क्या तुम ये नहीं जानते कि आकाशों तथा धरती का राज्य अल्लाह ही के लिए है) जिसके पास आकाश और पृथ्वी का साम्राज्य है, उसका हुक्म वही होता है जो वह चाहता है, और वह अपनी कृपा से जिसे चाहता है उसे सम्मानित करता है, वह सर्वशक्तिमान और महान है, उसका हुक्म हर चीज़ पर होता है। जो जानता है कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है और उसके पास आकाश और पृथ्वी का साम्राज्य है, उसे कहना चाहिए: 'मैंने सुना, जाना और पालन किया, मेरे रब।' और अल्लाह के हुक्म और प्रबंध पर आपत्ति नहीं करनी चाहिए। इससे हमें यह भी पता चलता है कि यह तर्कपूर्ण शैली और इसका मानसिक और विचारशील प्रभाव मार्गदर्शन और शिक्षा में कितना महत्वपूर्ण है।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَمَا لَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ مِن وَلِىٍّ وَلَا نَصِيرٍ﴾ (और उसके सिवा तुम्हारा कोई रक्षक और सहायक नहीं है?) यह आयत सभी को चेतावनी देती है जो अल्लाह की प्रज्ञा और उसके शरीअत पर आपत्ति करते हैं कि उनके लिए अल्लाह के सिवाय कोई वली और मददगार नहीं है। अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा वली और मददगार नहीं है। ऐ अल्लाह! तू ही हमारा संरक्षक है और तू ही हमारा सहायक है। तेरी मदद के बिना कोई विजय संभव नहीं। तू जिसे अपनी सरपरस्ती में ले ले, वह कभी अपमानित नहीं हो सकता, और तू जिससे दुश्मनी कर ले, वह कभी इज्जत नहीं पा सकता।

फिर अल्लाह तआला सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ व्यवहार में एक महत्वपूर्ण अदब सिखाता है। अल्लाह तआला उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसी चीज़ों के बारे में सवाल करने से रोकता है जो अभी हुई नहीं हैं ﴿أَمْ تُرِيدُونَ أَن تَسْـَٔلُوا۟ رَسُولَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوسَىٰ مِن قَبْلُ﴾ (क्या तुम चाहते हो कि अपने रसुल से उसी प्रकार प्रश्न करो, जैसे मूसा से प्रश्न किये जाते रहे?)। यह एक नकारात्मक पूछताछ है ताकि वे जानें कि यह यहूदियों की तरह का तरीका है जो मूसा से पूछा करते थे। यह एक नकारात्मक पूछताछ है ताकि वे जानें कि यह यहूदियों की तरह का तरीका है जो मूसा से पूछा करते थे। तथा ह़दीस़ में है "मुझे छोड़ दो जब तक मैं तुम्हें छोड़ कर रखूँ। क्योंकि जो लोग

तुमसे पहले थे, वे अपने पैग़म्बरों से अत्यधिक प्रश्न करने और उनके आदेशों का विरोध करने के कारण नष्ट कर दिए गए। तो जब मैं तुम्हें किसी चीज़ का आदेश दूँ, तो अपनी क्षमता के अनुसार उसका पालन करो। और जब मैं तुम्हें किसी चीज़ से रोक दूँ, तो उससे पूरी तरह बचो"।(1)

यह ह़दीस़ सवाल पूछने की मनाही की वजह को स्पष्ट करती है। यह दर्शाती है कि इंसान का दिमाग अकेले बिना अल्लाह के दिए हुए शरीअत के मार्गदर्शन के अधूरा है, क्योंकि यही शरीअत उसे सही दिशा में ले जाती है और उसकी भलाई का साधन बनती है। ह़दीस़ में यह बताया गया है कि अत्यधिक सवाल उठाने से मतभेद उत्पन्न होते हैं। हो सकता है कि एक व्यक्ति कोई सवाल पूछे, दूसरा उस पर अलग अंदाज़ा लगाए और तीसरा उसमें कुछ और जोड़ दे, जिससे विवाद खड़ा हो जाए। अल्लाह तआला अपने बंदों की ज़रूरतों से पूरी तरह वाकिफ हैं। उसने कोई ऐसा भला मार्ग नहीं छोड़ा है जिस की ओर अपने भक्तों का मार्गदर्शन न कर दिया हो तथा कोई ऐसा बुरा मार्ग नहीं छोड़ा है जिस से अपने भक्तों को उसने सावधान न कर दिया हो, अतः प्रश्नों का उत्तर देने में अधीरता का प्रदर्शन करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

कुछ मामलों में सवाल न करना ही बेहतर होता है, जैसा कि ह़ज्ज के बारे में एक स़ह़ाबी ने पूछा, "हर साल, ऐ अल्लाह के रसूल?" यह सुनकर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चुप्पी साधी, यहाँ तक कि तीन बार उन्होंने पूछा, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "यदि मैंने हाँ कह दिया होता, तो यह फ़र्ज़ हो जाता, और तुम इसे पूरा नहीं कर पाते"।(2)

इससे यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह तआला के आदेशों और मनाहियों में एक बड़ी भलाई और गहरी हिकमत है, जिसे इंसान हमेशा समझ नहीं सकता। इसलिए, अल्लाह के आदेश और मनाही को स्वीकार करते हुए इंसान को कहना चाहिए, "मैंने सुन लिया और मान लिया।" यदि हिकमत समझ में आ जाए तो यह एक बड़ी नेमत है, और यदि समझ में न आए, तो भी केवल अच्छी बातें ही कहनी चाहिए।

इस आयत से यह भी पता चलता है कि बनी इस्राईल ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से बड़े ही हटधर्मी वाले तथा विरोधात्मक सवाल पूछे थे, जैसा कि इस सूरत में पहले बयान हुआ। उन्होंने यहाँ तक कहा कि वे अल्लाह को स्पष्ट रूप से देखना चाहते हैं।

---

(2) मुस्लिम (2/ 975) ह़दीस़ संख्या (1337)।

(3) मुस्लिम (2/ 975) ह़दीस़ संख्या (1337)।

इब्न -ए- सअदी रहमतुल्लाहि अलैह ने फ़रमाया कि यहाँ सवाल करने की मनाही उन सवालों के लिए है जो हटधर्मी और विरोध की नीयत से हों। लेकिन शिक्षा और मार्गदर्शन के लिए सवाल करना एक सराहा जाने वाला काम है।[1]

और कुछ मुफ़स्सिरीन (व्याख्याता) ने इसके लिए दलीलें पेश कीं, जैसे कि अल्लाह तआला का यह इरशादः "يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلْخَمْرِ وَٱلْمَيْسِرِ" (वे आप से शराब और जुए के बारे में पूछते हैं), तथा अल्लाह तआला का यह कथनः "يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلْأَهِلَّةِ" (वे आपसे चाँद के घटने-बढ़ने के बारे में पूछते हैं), तथा सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान रब का यह फ़रमानः "وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلْيَتَـٰمَىٰ" (वे आप से अनाथों के बारे में पूछते हैं), तथा इब्न -ए- अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि उन्होंने कहा: "मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों से बेहतर कोई क़ौम नहीं देखी। उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से केवल 13 सवाल पूछे, और ये सभी सवाल क़ुरआन में मौजूद हैं। वे केवल उन्हीं बातों के बारे में सवाल करते थे जो उनके लिए फ़ायदेमंद होतीं"।[2]

यह बात इस ओर संकेत करती है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उन सवालों से बचने का दृढ़ संकल्प किया जिनसे अल्लाह ने मना किया था। उन्होंने अपने सवाल केवल उन चीज़ों तक सीमित रखे जो उन्हें उनके दीन की समझ और शिक्षा में मदद करें। इब्न -ए- अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने उनके इन गिने-चुने सवालों की प्रशंसा की, क्योंकि उन्होंने इन्हें हठधर्मी या तर्क-वितर्क की सीमा तक नहीं पहुँचाया।

यह बात यह भी स्पष्ट करती है कि सवाल पूछने में अदब और मर्यादा बनाए रखना कितना महत्वपूर्ण है। इंसान को केवल वही सवाल पूछने चाहिए जो उसे लाभ पहुँचाए या उसके अज्ञान और बुराई को दूर करे। वह ऐसे सवालों से बचे जो उसके लिए निरर्थक हों या जिनसे कोई व्यावहारिक लाभ न हो।

फिर अल्लाह तआला चेतावनी देते हुए और सचेत करते हुए फ़रमाता है: ﴿وَمَن يَتَبَدَّلِ ٱلْكُفْرَ بِٱلْإِيمَٰنِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ ٱلسَّبِيلِ﴾ (और जो व्यक्ति ईमान की नीति को कुफ़्र से बदल लेगा, तो वह सीधी डगर से विचलित हो गया)।

यह आयत यह स्पष्ट करती है कि ईमान की कीमत और उसका स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि ईमान एक मजबूत किला और सीधा रास्ता है। जो व्यक्ति इसे इंकार कर

(2) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 84-85)।

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 28)।

के कुफ़्र (अविश्वास) का रास्ता अपनाता है, वह सीधा रास्ता खो बैठता है। काफ़िर का रास्ता गुमराही और भटकाव का है, जबकि ईमान वह सीधा रास्ता है जो अल्लाह के रज़ा (संतुष्टि) तक पहुँचाता है और जिसे स्वर्ग (जन्नत) में प्रवेश का मार्ग बनाता है, जिसकी चौड़ाई आकाश और पृथ्वी के बराबर है।

यह भी इस बात की ओर इशारा करता है कि यदि किसी व्यक्ति को अल्लाह ने कोई नेमत (संपत्ति) दी है, तो उसे उस नेमत को ग़लत कामों में न खर्च करना चाहिए। जैसे कि कोई व्यक्ति अगर अपनी आजीविका (रिज़्क) को फिजूलखर्ची (इस्राफ़) में खर्च करता है, या उसे अल्लाह की आज्ञाओं से हटकर उपयोग करता है, या फिर उसे घमंड और अभिमान में बदलता है, तो यह उसकी नेमत का सही इस्तेमाल नहीं होगा। इसका मतलब यह है कि हमें दी गई नेमतों का सही तरीके से, अल्लाह की रज़ा और आज्ञा के अनुसार इस्तेमाल करना चाहिए।

﴿وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ لَوْ يَرُدُّونَكُم مِّنۢ بَعْدِ إِيمَٰنِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِندِ أَنفُسِهِم مِّنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ ٱلْحَقُّ ۖ فَٱعْفُوا۟ وَٱصْفَحُوا۟ حَتَّىٰ يَأْتِىَ ٱللَّهُ بِأَمْرِهِۦٓ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٩﴾ وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا۟ لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ ٱللَّهِ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٠﴾ وَقَالُوا۟ لَن يَدْخُلَ ٱلْجَنَّةَ إِلَّا مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصَٰرَىٰ ۗ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوا۟ بُرْهَٰنَكُمْ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿١١١﴾ بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُۥ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُۥٓ أَجْرُهُۥ عِندَ رَبِّهِۦ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١١٢﴾ وَقَالَتِ ٱلْيَهُودُ لَيْسَتِ ٱلنَّصَٰرَىٰ عَلَىٰ شَىْءٍ وَقَالَتِ ٱلنَّصَٰرَىٰ لَيْسَتِ ٱلْيَهُودُ عَلَىٰ شَىْءٍ وَهُمْ يَتْلُونَ ٱلْكِتَٰبَ ۗ كَذَٰلِكَ قَالَ ٱلَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَٱللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ فِيمَا كَانُوا۟ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١١٣﴾﴾ [سورة البقرة:١٠٩-١١٣].

(अहले किताब में से बहुत-से चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान लाने के पश्चात् अपने द्वेष के कारण तुम्हें कुफ़्र की ओर फेंक दें। जबकि सत्य उनके लिए उजागर हो गया। फिर भी तुम क्षमा से काम लो और जाने दो। यहाँ तक कि अल्लाह अपना निर्णय कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे, कर सकता है। तथा तुम नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो और जो भी भलाई अपने लिए किये रहोगे, उसे अल्लाह के यहाँ पाओगे। तुम जो कुछ कर रहे हो, अल्लाह उसे देख रहा है। तथा उन्होंने कहा कि कोई स्वर्ग में कदापि नहीं जायेगा, जब तक यहूदी अथवा नसारा (ईसाई) न हो। ये उनकी कामनायें हैं। उनसे कहो कि यदि तुम सत्यवादी हो, तो कोई प्रमाण प्रस्तुत करो। क्यों नहीं? जो भी स्वयं को अल्लाह की आज्ञा पालन के लिए समर्पित कर देगा तथा सदाचारी होगा, तो उसके पालनहार के पास उसका प्रतिफल है और उनपर कोई भय नहीं होगा और न वे उदासीन होंगे। तथा यहूदियों ने कहा कि ईसाईयों के पास कुछ नहीं और ईसाईयों ने कहा कि यहूदियों के पास कुछ नहीं है। जबकि वे धर्म पुस्तक पढ़ते हैं। इसी जैसी बात उन्होंने भी कही,

जिनके पास धर्म पुस्तक का कोई ज्ञान नहीं। ये जिस विषय में विभेद कर रहे हैं, उसका निर्णय अल्लाह प्रलय के दिन उनके बीच कर देगा)।

अल्लाह तआला मुसलमानों के लिए उन अहल -ए- किताब की स्थिति को बयान कर रहा है जो उनके साथ होते हैं, तथा जो वे अपने दिल में मुसलमानों के छिपा कर रखते हैं ﴿وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُدُّونَكُم مِّنۢ بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِندِ أَنفُسِهِم مِّنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ﴾ (अहले किताब में से बहुत-से चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान लाने के पश्चात् अपने द्वेष के कारण तुम्हें कुफ़्र की ओर फेंक दें। जबकि सत्य उनके लिए उजागर हो गया)। अल्लाह तआला स्पष्ट कर रहा है कि अहले किताब मुसलमानों के प्रति जलन रखते हैं, और यह जलन वे तब तक नहीं समझ पाते जब तक अल्लाह उन्हें इसकी सच्चाई न दिखा दे। जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया ﴿مِّنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ﴾ (उसके बाद जब सत्य उनके लिए स्पष्ट हो चुका)। इसका अर्थ यह है कि उन्होंने जान लिया है कि मुसलमान सत्य पर हैं, उनका नबी सच्चा है, और अल्लाह की किताब भी सच्ची है। यदि ऐसा न होता तो वे ईमान की नेमत पर जलते नहीं, क्योंकि जलन केवल नेमत पर होती है। इसी तरह, आयत स्पष्ट करती है कि वे मुसलमानों को फिर से काफ़िर बनाने की कोशिश करते हैं। इससे यह समझ में आता है कि अहले किताब मुसलमानों को उनके धर्म से दूर करने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे, चाहे वह शंकाओं को उठाकर हो, और उनकी कोशिश यह भी होगी कि मुसलमानों के अंदर इच्छाओं और वासनाओं को भड़काएं, जो उसे कमजोर कर दें और उसके धर्म से दूर कर दें। इसी तरह, वे ऐसी बातें फैलाएंगे जो मुसलमान को उसके धर्म से भागने पर मजबूर करें, उसके प्रति लापरवाह बनाएं और उसे धर्म से बाहर निकाल दें। इससे यह समझ में आता है कि अल्लाह तआला ने उनकी मंशाओं को स्पष्ट करके मुसलमानों को सतर्क रहने की आवश्यकता पर बल दिया है।

फिर अल्लाह तआला उनके साथ व्यवहार की विधि का आदेश देता है: ﴿فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ﴾ (तो माफ कर दो और दरगुजर करो यहाँ तक कि अल्लाह का आदेश आ जाए)। और इमाम इब्न -ए- कसीर रहिमहुल्लाह ने उल्लेख किया है कि यह आयत हत्या (काफिरों से युद्ध) के हुक्म से मंसूख (रद्द) हो गई।(1)

यह व्यवहार में प्रज्ञा को प्रदर्शित करता है, क्योंकि अल्लाह तआला ने क्षमा करने और माफ़ करने का आदेश दिया है जब तक कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मदीना में

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 158)।

मुसलमानों के खिलाफ उनकी साजिश के बाद लड़ाई का समय न आ जाए। इस प्रकार, क्षमा और प्रतीक्षा के बाद उनके खिलाफ सबूत कायम हो गया। ताकि वे सही रास्ते पर आ सकें, लेकिन वे नबी और मुसलमानों के खिलाफ साजिश करते रहे। फिर अल्लाह तआला मोमिनों को यह बताता है कि उन्होंने जो कुछ भी मोमिनों के प्रति निश्चित किया है, वह असलियत में सत्य है। ﴿إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٖ قَدِيرٞ﴾ (निश्चय अल्लाह जो चाहे, कर सकता है) अर्थात अल्लाह हर चीज़ पर पूरी तरह सक्षम है। वह ईमान वालों की मदद करने में सक्षम है, लेकिन अल्लाह तआला की परंपरा यह है कि कारणों, समय, और साधनों का होना आवश्यक है, जैसे विजय प्राप्त करने के साधन, उसका समय, उसकी रूपरेखा और उसके कारण ﴿حَتَّىٰ يَأۡتِيَ ٱللَّهُ بِأَمۡرِهِۦٓۗ﴾ (यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ जाए)।

﴿حَتَّىٰ يَأۡتِيَ ٱللَّهُ بِأَمۡرِهِۦٓۗ﴾ पर ध्यान देने वाला इसे ईमान वाले के लिए शक्ति का स्रोत पाएगा। वह धैर्य सब्र करेगा ﴿حَتَّىٰ يَأۡتِيَ ٱللَّهُ بِأَمۡرِهِۦٓۗ﴾ और मेहनत करता है तथा निराश नहीं होता ﴿حَتَّىٰ يَأۡتِيَ ٱللَّهُ بِأَمۡرِهِۦٓۗ﴾ यदि वह बीमार हो जाए, तो इलाज करवाता है ﴿حَتَّىٰ يَأۡتِيَ ٱللَّهُ بِأَمۡرِهِۦٓۗ﴾ और हर मामले में कारणों का सहारा लेता है ﴿حَتَّىٰ يَأۡتِيَ ٱللَّهُ بِأَمۡرِهِۦٓۗ﴾ यह एक ऐसी शक्ति है जो ईमान वाले को उसके हर मामले में दृढ़ता प्रदान करती है ﴿حَتَّىٰ يَأۡتِيَ ٱللَّهُ بِأَمۡرِهِۦٓۗ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ﴾ (यहाँ तक कि अल्लाह अपना निर्णय कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे, कर सकता है)।

फिर अल्लाह तआला नमाज़ क़ायम करने और ज़कात अदा करने का आदेश देता है: ﴿وَأَقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُواْ ٱلزَّكَوٰةَۚ وَمَا تُقَدِّمُواْ لِأَنفُسِكُم مِّنۡ خَيۡرٖ تَجِدُوهُ عِندَ ٱللَّهِۗ﴾ (तथा तुम नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो और जो भी भलाई अपने लिए किये रहोगे, उसे अल्लाह के यहाँ पाओगे।)। यह अल्लाह का मुसलमानों को स्पष्ट आदेश है कि वे नमाज़ और ज़कात की अदायगी का विशेष ध्यान रखें। अल्लाह तआला यह भी स्पष्ट करता है कि इंसान द्वारा किया गया हर भलाई का काम उसी के लिए है, और वह इसे अल्लाह के पास सुरक्षित पाएगा। यह दर्शाता है कि मुसलमान की भलाई अल्लाह के पास बर्बाद नहीं होती है, बल्कि वह इसे अपने रब के पास पूर्ण रूप में पाएगा। फिर अल्लाह तआला आयत को इन शब्दों पर समाप्त करता है: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ بِمَا تَعۡمَلُونَ بَصِيرٞ﴾ (तुम जो कुछ कर रहे हो, अल्लाह उसे देख रहा है।)।

अल्लाह तआला आयत को इन शब्दों पर समाप्त करता है: "निःसंदेह, अल्लाह तुम्हारे हर कार्य को देख रहा है।" वह हर व्यक्ति और उसके कर्मों को देखता है।

इसमें एक संदेश यह भी है कि जो भी भलाई का कार्य इंसान इस दुनिया में करता है, वह व्यर्थ नहीं जाता, बल्कि उसे आख़िरत में पूर्ण रूप से प्राप्त होगा। यहाँ 'भलाई' शब्द भलाई के सभी प्रकारों को समाहित करता है, और 'में से' शब्द इस बात की ओर संकेत करता है कि छोटे से छोटे भलाई का कार्य भी अल्लाह के पास सुरक्षित मिलेगा। वह सब कुछ देखता है, जो कोई भी करता है, चाहे वह राई के दाने के बराबर या उससे भी छोटा हो। इस कुरआनिक संदर्भ में मोमिनों को यह प्रोत्साहन मिलता है कि उनकी भलाई का कार्य दुनिया में बर्बाद नहीं होगा, बल्कि वे इसे अपनी आख़िरत में संपूर्ण रूप में पाएंगे। 'خير ख़ैर, भलाई' शब्द सभी प्रकार की भलाइयों का संकेत देता है, जिससे यह शब्द सभी प्रकार और क्षेत्रों की भलाइयों को शामिल करता है। 'من मिन, से' शब्द भलाई के हिस्सों को इंगित करता है, अर्थात जो भी आप भलाई के किसी भी भाग या प्रकार को प्रस्तुत करेंगे, आप उसे अल्लाह के पास पाएंगे, ﴿تَجِدُوهُ عِندَ ٱللَّهِ﴾ (उसे अल्लाह के यहाँ पाओगे)।

अल्लाह तआला अहल -ए- किताब के झूठ एवं उनके द्वारा सत्य को पलटने का उल्लेख कर रहा है ﴿وَقَالُوا۟ لَن يَدْخُلَ ٱلْجَنَّةَ إِلَّا مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصَٰرَىٰ ۗ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ﴾ (तथा उन्होंने कहा कि कोई स्वर्ग में कदापि नहीं जायेगा, जब तक यहूदी अथवा नसारा (ईसाई) न हो। ये उनकी कामनायें हैं)। उनका यह गुमान है कि स्वर्ग में केवल वही जाएंगे, उनके सिवा कोई अन्य स्वर्ग में नहीं जाएगा, यदि दूसरे अर्थों में कहा जाए तो उनके अनुसार स्वर्ग में जाने के लिए यहूदी होना आवश्यक है यहूदियों के अनुसार जबकि नस़ारा के अनुसार उसका नस़ारा होना आवश्यक है, उनमें से प्रत्येक यह समझता है कि स्वर्ग केवल उन्ही का है, तथा वे वासत्विकता को नहीं देखते, और अगर वह सच्चाई को जान भी जाता है, तो वह उसे छोड़ देता है क्योंकि झूठ ने उसे घेर लिया है, और उसे अपने समुदाय और आस्था के लोगों से डर है, सिवाय उन लोगों के जो सच्चाई को अपने इच्छाओं पर प्राथमिकता देते हैं। यह उन लोगों की स्थिति को उजागर करता है जो अपने आप को धोखा देते हैं। फिर अल्लाह तआला यह स्पष्ट करते हैं कि उन यहूदियों और ईसाइयों की स्थिति केवल इच्छाओं की स्थिति है ﴿تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ﴾ जो यह स्पष्ट करता है कि बिना सच्चाई के इच्छाओं का कोई मूल्य नहीं है, सिवाय प्रमाण, तर्क और सबूत के। अल्लाह तआला ने कहा: ﴿قُلْ هَاتُوا۟ بُرْهَٰنَكُمْ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ﴾ (कहो, अपना प्रमाण लाओ यदि तुम सच्चे हो)। प्रमाण वह है जिसे झूठा, जिद्दी, अहंकारी, और गलत तर्क देने वाला पेश नहीं कर सकता। क्योंकि उनके पास जो प्रमाण उनकी किताबों में है, वह उन्हें अनपढ़ नबी का अनुसरण करने की बाध्यता देता है जब उनका संदेश आता है, जैसा कि क़ुरआन ने उनकी तौरात की पुष्टि की है। यह स्पष्ट करता है कि जन्नत दावे, नामकरण या संबंधित होने से प्राप्त नहीं होती, बल्कि सच्चाई के पालन से होती है, जैसा कि अल्लाह तआला ने आदेश दिया है। इसलिए, यह तर्क इस बात को सिद्ध करता है कि यह धर्म हर मामले में प्रमाण

और तर्क पर आधारित है। जो धर्म से भटके हुए हैं, उनके पास अपने झूठ को साबित करने के लिए कोई सही प्रमाण नहीं है। इसलिए वे अपने विरोधियों को गालियाँ देते हैं और उन पर आरोप लगाते हैं, न कि प्रमाण और तर्क से, क्योंकि उनके पास कोई प्रमाण नहीं है।

फिर अल्लाह तआला उनके दावों का खंडन करता है: ﴿ بَلَىٰ ﴾ 'बिलकुल नहीं, जैसा तुम दावा करते हो, वैसा नहीं है, बल्कि जिसने अल्लाह के लिए अपने चेहरे को समर्पित किया और वह भला है।' जन्नत उन्हीं लोगों के लिए है जिन्होंने अपने कार्यों में अल्लाह के लिए समर्पण और ईमानदारी दिखाई, और अपने दिल से अपने रब की ओर रुख किया। और जो भला कार्य करता है। इमाम क़ुर्तुबि ने कहा: चेहरा इसलिए विशेष रूप से उल्लेखित है क्योंकि यह मानव का सबसे सम्मानित हिस्सा है।[1] यही वे लोग हैं जिनके लिए जन्नत है। ﴿ بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُۥ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُۥٓ أَجْرُهُۥ عِندَ رَبِّهِۦ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١١٢﴾ ﴾ (जो भी स्वयं को अल्लाह की आज्ञा पालन के लिए समर्पित कर देगा तथा सदाचारी होगा, तो उसके पालनहार के पास उसका प्रतिफल है और उनपर कोई भय नहीं होगा और न वे उदासीन होंगे) उनका इनाम जन्नत है, और वे उस डर से सुरक्षित हैं जो उन्हें डराता है, और उन्हें कभी भी दुख नहीं होगा। क्योंकि जो चीज़ मनुष्य को परेशानी में डालती है, वह है आने वाले और वर्तमान का डर, और जो अवसर उनसे छूट गए हैं उस पर दुख और अफसोस। और इन सभी चिंताओं को जन्नत में समाप्त कर दिया जाएगा, तो न कोई डर होगा और न कोई दुख ﴿ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١١٢﴾ ﴾ बल्कि स्थायी आनंद होगा। हे अल्लाह, हमें जन्नत प्रदान कर और जो हमें उससे निकट ले जाए, वह बातें और कार्य करने का अनुग्रह प्रदान कर।

इस से यह समझ आता है कि जो ऐसा नहीं होगा वह नरक वासियों में से होगा,

कोई भी मुक्ति नहीं है, सिवाय अल्लाह के लिए इखलास (सच्चे विश्वास) और पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसरण (पैग़ंबर की राह पर चलने) के।

फिर अल्लाह तआला यहूदियों और ईसाइयों के बारे में कहता है: ﴿ وَقَالَتِ ٱلْيَهُودُ لَيْسَتِ ٱلنَّصَـٰرَىٰ عَلَىٰ شَىْءٍ وَقَالَتِ ٱلنَّصَـٰرَىٰ لَيْسَتِ ٱلْيَهُودُ عَلَىٰ شَىْءٍ وَهُمْ يَتْلُونَ ٱلْكِتَـٰبَ ﴾ (तथा यहूदियों ने कहा कि ईसाईयों के पास कुछ नहीं और ईसाईयों ने कहा कि यहूदियों के पास कुछ नहीं है। जबकि वे धर्म पुस्तक पढ़ते हैं)।

(2) अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 52)।

अल्लाह तआला ने अहले किताब की स्थिति को स्पष्ट किया, जहां यहूदियों और ईसाइयों के बीच द्वेष, विरोधाभास और दुश्मनी थी, जबकि वे तोराह और इंजील की शिक्षाओं को जानते थे। तोराह और इंजील का अपने समय में आदेश था, लेकिन उन्होंने द्वेष और कुफ्र के साथ एक-दूसरे का मुकाबला किया।[1] वे तौरात और इंजील पढ़ते थे। यही स्थिति उनके बीच थी जब वे सभी बनी इस्राईल से थे, तो उनका नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की वंशज थे, के साथ उनका क्या हाल होगा। इससे यह भी प्रकट होता है कि द्वेष और दुश्मनी का मार्ग उन पर ज्ञान होने के बावजूद विरोधाभासी है। अल्लाह तआला ने यह प्रमाणित किया कि वे इसे पढ़ते हैं। यह प्रकट करता है कि यदि मनुष्य अल्लाह से डरता नहीं है, तो वह सच्चाई को झूठा ठहराता है, और अपने आत्म-सम्मान और गलतियों का समर्थन करता है, जीतने और अपनी स्थिति पर गर्व करने के प्यार के कारण। यह कुछ आत्माओं की स्थिति को उजागर करता है जिनसे व्यक्ति को सावधान रहना चाहिए, ताकि वह उसी स्थिति में न गिरे जिसमें वे गिरे थे। इच्छाएँ और शैतान मनुष्य को सच्चाई से भ्रमित कर सकते हैं, फिर वह अपने गलत मार्ग पर गर्व करता है और अपनी इच्छाओं के अनुसार तर्क निकालता है। सच और झूठ में कोई सुरक्षित ठिकाना नहीं है सिवाय दुआ, तकवा, और अल्लाह की पुस्तक और उसके नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के माध्यम से पकड़ने के।

इन दो श्रेणियों: यहूदी और ईसाई के साथ, अल्लाह तआला ने तीसरी श्रेणी का भी उल्लेख किया: ﴿كَذَٰلِكَ قَالَ ٱلَّذِينَ لَا يَعۡلَمُونَ مِثۡلَ قَوۡلِهِمۡۚ﴾ (इसी जैसी बात उन्होंने भी कही, जिनके पास धर्म पुस्तक का कोई ज्ञान नहीं)

इमाम क़ुर्तुबि (रहिमहुल्लाह) कहते हैं: अधिकांश विद्वानों के अनुसार, ये अरब के काफ़िर हैं क्योंकि उनके पास किताब नहीं है।[2] इस प्रकार, अहले किताब इस पद्धति में अज्ञानियों के समान हैं, जो अरब के काफ़िर हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि यदि ज्ञान और समझ के साथ अल्लाह तआला का तकवा और आज्ञाकारिता नहीं होती है, तो इच्छाएँ इसे नियंत्रित कर लेती हैं, और ज्ञान का मालिक भी एक अज्ञानी जैसा हो जाता है क्योंकि उसने अपने ज्ञान का लाभ नहीं उठाया। बल्कि वह सच्चाई और उसके लोगों के खिलाफ झूठ का समर्थन करता है, केवल अपनी इच्छाओं के कारण ﴿فَٱللَّهُ يَحۡكُمُ بَيۡنَهُمۡ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ فِيمَا كَانُواْ فِيهِ يَخۡتَلِفُونَ﴾ (ये जिस विषय में विभेद कर रहे हैं, उसका निर्णय अल्लाह प्रलय के दिन उनके बीच कर देगा)।

---

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 160)।

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 52)।

यह बयान अल्लाह तआला की ओर से मुसलमानों को इस खतरनाक मार्ग से बचने की चेतावनी देता है, जो कि पार्टीबाजी, फिर द्वेष और तकफीर (काफ़िर कहने का आरोप) की ओर ले जाता है, और इससे मुसलमानों और निर्दोषों के खून बहाने का परिणाम होता है। इसका कारण ज्ञान की कमी है, जो धर्म के अज्ञानता की ओर ले जाता है, और फिर उसे अल्लाह तआला के इरादे और मार्गदर्शन के विपरीत समझने और व्याख्या करने की कोशिश करता है।

यह बात लोगों के बीच व्यवहार में भी शामिल होती है, जहां वह दूसरों पर अत्याचार को सही ठहराता है, लेन-देन और व्यवहार में भ्रष्टाचार और लोगों के हितों को नुकसान पहुंचाने के लिए अपनी इच्छाओं और शैतान की सजावट के तहत बुरे कार्यों को सही ठहराता है, या अपनी आत्म-रक्षा के लिए अत्याचार और अतिक्रमण को सही ठहराता है, जो लोगों के बीच दुश्मनी और फूट को बढ़ावा देता है। यह सब कुछ किताब और सुन्नत के विपरीत है।

क़ुरआन की आयतों का अनुसरण करने वाला व्यक्ति प्रस्तुति की उत्तेजना, मन को खोलने और इसे आत्म-केंद्रितता से दूर करने, सामान्य दृष्टिकोण और सार्वजनिक हित की ओर ले जाने की पद्धति पाता है, और यह चेतावनी देता है कि अज्ञानता और इच्छाओं की बुराइयों और सच्चाई पर अतिक्रमण के खतरों से बचें। इच्छाएँ और अहंकार धार्मिक और सामाजिक खतरों की ओर ले जाते हैं, और अतिक्रमण और अहंकार को उत्तेजित करते हैं जो द्वेष, फिर संघर्ष और विभाजन की ओर ले जाते हैं।

यह पुष्टि करता है कि उम्मत के लाभ की एकता में है, और इसकी एकता आत्म-केंद्रितता और स्वार्थ से बचने पर निर्भर करती है। यह इच्छाओं और अहंकार से मुक्त रहने, सच्चे ईमान और तकवा को प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण को मजबूत करने की आवश्यकता को इंगित करता है, अल्लाह तआला की इच्छा को वास्तव में जानने के माध्यम से, और उसे ईमानदारी से पालन करने के माध्यम से, और नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुसरण के माध्यम से।

﴿وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن مَّنَعَ مَسَٰجِدَ ٱللَّهِ أَن يُذْكَرَ فِيهَا ٱسْمُهُۥ وَسَعَىٰ فِى خَرَابِهَآ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَن يَدْخُلُوهَآ إِلَّا خَآئِفِينَ ۚ لَهُمْ فِى ٱلدُّنْيَا خِزْىٌ وَلَهُمْ فِى ٱلْءَاخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَلِلَّهِ ٱلْمَشْرِقُ وَٱلْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا۟ فَثَمَّ وَجْهُ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾﴾ [سورة البقرة:١١٤-١١٥].

(और उससे बड़ा अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह की मस्जिदों में उसके नाम का वर्णन करने से रोके और उन्हें उजाड़ने का प्रयत्न करे? उन्हीं के लिए योग्य है कि उसमें डरते हुए प्रवेश करें, उन्हीं के लिए संसार में अपमान है और उन्हीं के लिए आख़िरत (परलोक) में घोर

यातना है। तथा पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं; तुम जिधर भी मुख करो, उधर ही अल्लाह का मुख है और अल्लाह विशाल अति ज्ञानी है)।

अल्लाह तआला मस्जिद की महानता, पवित्रता और उसका स्थान और महत्व स्पष्ट करता है ﴿وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن مَّنَعَ مَسَٰجِدَ ٱللَّهِ أَن يُذْكَرَ فِيهَا ٱسْمُهُۥ وَسَعَىٰ فِى خَرَابِهَآ﴾ (और उससे बड़ा अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह की मस्जिदों में उसके नाम का वर्णन करने से रोके और उन्हें उजाड़ने का प्रयत्न करे?) उन लोगों से अधिक ज़ालिम कोई नहीं जो अल्लाह के बन्दों को मस्जिदों में उसका ज़िक्र करने से रोकते हैं, चाहे वह नमाज़ के ज़रिए हो, एतिकाफ़ के ज़रिए हो या अन्य इबादतों के ज़रिए हो। और जो मस्जिदों को उजाड़ने का प्रयास करते हैं, चाहे वह तोड़-फोड़ और बर्बादी के माध्यम से हो, या उसमें ऐसी चीज़ें फेंकना जिन्हें वहाँ फेंकना अनुचित हो।

इस के लाभों में से एक यह है कि यह निर्देश की शैली अत्यधिक आश्चर्यजनक है कि यदि अल्लाह के घर पर आक्रमण करने से बढ़कर कोई अन्य अत्याचार है, जिसमें लोगों को उसमें अल्लाह का ज़िक्र करने से रोका जाता है, या मस्जिदों को तोड़-फोड़ और अपमानित किया जाता है। इस शैली में चेतावनी और भय का संकेत होता है, साथ ही मस्जिदों में अल्लाह के ज़िक्र की महत्ता का संकेत भी होता है। इसके विपरीत, जो लोग मस्जिदों का ख्याल रखते हैं, उन्हें उच्च स्थान और महान स्थान प्राप्त होता है। अल्लाह तआला ने जो मस्जिदों के रखरखाव को नहीं करने वालों पर अत्याचार की विशेषता को निर्दिष्ट किया है, वह सबसे बड़ा और सबसे भयानक अत्याचार है। इमाम क़ुर्तुबि (रहिमहुल्लाह) ने असबाब -ए-नुज़ूल और उस संदर्भ में अन्य बातों को स्पष्ट करने के बाद कहा: मंशा यह है कि हर मस्जिद का मना करना न्याय के दिन तक लागू होता है, और यह सही है क्योंकि शब्द व्यापक है और यह बहुवचन के रूप में आया है।[1]

फिर अल्लाह तआला इस अपराध का परिणाम बताता है: ﴿أُو۟لَٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَن يَدْخُلُوهَآ إِلَّا خَآئِفِينَ ۚ لَهُمْ فِى ٱلدُّنْيَا خِزْىٌ وَلَهُمْ فِى ٱلْءَاخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾ (उन्हीं के लिए योग्य है कि उसमें डरते हुए प्रवेश करें, उन्हीं के लिए संसार में अपमान है और उन्हीं के लिए आख़िरत (परलोक) में घोर यातना है) उन लोगों के लिए सबसे उपयुक्त यह है कि वे इनमें प्रवेश नहीं करें और उन्हें इनमें प्रवेश करने से रोक दिया जाए, क्योंकि उन्होंने जो नुकसान और रोक-थाम की है। इस प्रकार, जो लोग इस प्रकार की रोक-थाम और विध्वंस करते हैं, उनका दुनिया में इनाम डर और अपमान है। अगर मुस्लिम उन्हें नियंत्रित करते हैं और यह उनके नियंत्रण में आ जाती

(2) अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 53)।

है, तो काफ़िर इनमें प्रवेश नहीं कर सकते, और अगर वे प्रवेश करते हैं, तो वे मुस्लिमों द्वारा निकाले जाने और सजा से डरते हैं।(1)

इससे यह प्रकट होता है कि मस्जिदों को नुकसान पहुंचाने वाले का मामला कितना गंभीर और बड़ा है। अल्लाह तआला इसे उनसे निकाल लेता है जैसे उन्होंने काबा को मक्का में मुश्रिकों से निकाला, जिन्होंने उसमें मूर्तियों के साथ विध्वंस किया था। अल्लाह तआला ने अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए मक्का को विजय करवाया, और मुश्रिक भयभीत हो गए। इसी तरह, उमर बिन खत्ताब (रजियल्लाहु अन्हु) ने बैतुल मुकद्दस को विजय किया, अल्लाह तआला ने अबरहा और उसके साथियों को काबा को गिराने के प्रयास में सजा दी थी।

आख़िरत के दण्य के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾ (उन्हीं के लिए संसार में अपमान है और उन्हीं के लिए आख़िरत (परलोक) में घोर यातना है)।

इससे यह प्रकट होता है कि मस्जिदों के साथ खिलवाड़, उन्हें बाधित करने या अपमानित करने और उस व्यक्ति के लिए अल्लाह के गुस्से का डर होना चाहिए जो ऐसा करता है। इसके विपरीत, मस्जिदों की देखभाल और उनकी हर प्रकार से निर्माण की महत्ता है, जैसे कि उन्हें बनाना, उनकी मरम्मत करना, उनकी स्थापना करना, और उनमें नमाज़, एतिकाफ़, और क़ुरआन की तिलावत और हिफ़्ज़ करना, और हर वह चीज़ जो अल्लाह के ज़िक्र में शामिल होती है। और क़िबला तथा उसकी सीमा के संदर्भ में, अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ﴾ (तथा पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं) ये महान कुरआनी आयतें इस बयान के साथ शुरू होती हैं कि दिशाओं का मालिक कौन है, ताकि सुनने वाले को यह समझ में आ जाए कि यह अल्लाह तआला का ही अधिकार है। और पहला बयान पूरब और पश्चिम के मालिक के निर्धारण से संबंधित था, और वह अल्लाह तआला हैं। यह एक शिक्षाप्रद और व्याख्यानात्मक क्रम है, जिससे क़ुरआन के ज्ञान और अल्लाह तआला के उद्देश्य की सुंदरता का प्रदर्शन होता है, एक अत्यधिक सुंदर शैली में। पूरब और पश्चिम को उन्हें जोड़ने से सम्मान मिलता है। वह जिसे चाहता है उसे सम्मानित करता है। उस ने अपने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पहले बैतुल मक्दिस की ओर रुख करने का आदेश दिया, फिर इसे अपने पवित्र घर (काबा) की ओर रुख करने में बदल दिया। इस प्रकार, काबा मुस्लिमों का क़िबला बन गया।

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 54)।

पूरी दुनिया का मालिक अल्लाह है, इसलिए उन्हें दिशा देने का अधिकार है जैसा वह चाहता है, जैसे वह चाहता है और जब वह चाहता है, और उनके निर्णय का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। फिर अल्लाह तआला कहता है: ﴿فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ﴾ (तुम जिधर भी मुख करो, उधर ही अल्लाह का मुख है) अर्थात अल्लाह तआला जिस दिशा में तुम्हें आदेश देता है, तुम उस दिशा में मुख करते हो। जैसे कि नमाज़ और क़िबला की ओर बलि करना, तथा मल-मूत्र त्याग के समय क़िबला की ओर मुख न करना ﴿إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾﴾ (निस्संदेह अल्लाह विशाल अति ज्ञानी है) वह अपने ज्ञान में विशाल है और अपने बंदों के धर्म में वृद्धि करता रहता है, जो उन्हें चाहिए होता है, और उनके लिए कोई कठिनाई नहीं करता।

यह आयत विद्वानों और फुक़हा के विचारों को गहराई से प्रेरित करती है और विभिन्न परिस्थितियों में क़िबला की ओर रुख कर नमाज़ अदा करने के नियमों को समझने में कई पहलुओं को खोलती है। चाहे क़िबला का ज्ञान न हो, बादलों की वजह से अंधेरा हो, या नमाज़ नफ्ल (ऐच्छिक) हो या फ़र्ज़ (अनिवार्य), यहां तक कि अगर नमाज़ी को नमाज़ पूरी करने के बाद पता चले कि उसने क़िबला का गलत निर्धारण किया था और समय अभी बाकी हो, तो यह सवाल उठता है कि क्या उसे नमाज़ दोबारा पढ़नी चाहिए या नहीं। ﴿فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ۚ﴾ (तुम जिधर भी मुख करो, उधर ही अल्लाह का मुख है) की व्याख्या ने विद्वानों के बीच गहन विचार-विमर्श और दलीलों के संग्रह को प्रेरित किया। इस आयत ने उनके ज्ञान को विस्तारित किया और उनके बीच बहस और चर्चा के माध्यम से कई लाभ प्रदान किए। जो कोई इन मुद्दों पर फिक़्ह का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है, उसे तफ़सीर और फिक़्ह की किताबों का अध्ययन करना चाहिए, जहां इन आयतों और इस्लामी कानून पर आधारित विस्तृत चर्चा मिलती है।

﴿وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ بَل لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَّهُ قَانِتُونَ ﴿١١٦﴾ بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿١١٧﴾ وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ ۗ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ۘ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ ۗ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿١١٨﴾﴾
[سورة البقرة:١١٦-١١٨].

(तथा उन्होंने कहा कि अल्लाह ने कोई संतान बना ली। वह इससे पवित्र है। आकाशों तथा धरती में जो भी है, वह उसी का है और सब उसी के आज्ञाकारी हैं। वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है। जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है, तो उसके लिए बस ये

आदेश देता है कि "हो जा।" और वह हो जाती है। तथा उन्होंने कहा जो ज्ञान नहीं रखते कि अल्लाह हमसे बात क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई आयत क्यों नहीं आती? इसी प्रकार की बात इनसे पूर्व के लोगों ने कही थी। इनके दिल एक समान हो गये। हमने उनके लिए निशानियाँ उजागर कर दी हैं, जो विश्वास रखते हैं)।

फिर क़ुरआन का बयान ईसाइयों और उनके समान यहूदियों की स्थिति पर वापस आता है, उनके झूठ और उनके खालिक की विशेषताओं पर उनकी धृष्टता के बारे में ﴿وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا﴾ (तथा उन्होंने कहा कि अल्लाह ने कोई संतान बना ली), क्योंकि ईसाइयों ने कहा: मसीह अल्लाह का बेटा है, यहूदियों ने कहा: उज़ैर अल्लाह का बेटा है, और मुशरिकों ने कहा: फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियां हैं। इस से बुरा ऐसा कौन सा दृश्य होगा जो इस से अधिक घृणित होगा कि बन्दे अल्लाह तआला के लिए बेटे का दावा करें। कैसे अल्लाह पर झूठ बोले सकते हैं, जबकि वह कहता है: ﴿لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝٣﴾ (न उसने जन्म दिया, न उसे जन्म दिया गया) यह स्पष्ट करता है कि यदि इंसान अपने व्यवहार, ज्ञान और सोच को नियंत्रित नहीं करता है, तो वह बड़े भटकावों में पड़ सकता है, जिससे व्यक्ति को प्रार्थना करनी चाहिए जैसा कि हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किया करते थे: 'हे दिलों के बदलने वाले, मेरे दिल को अपने धर्म पर स्थिर रख'।

उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रजियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा: 'आप सबसे अधिक क्या दुआ करते हैं?' उन्होंने कहा: 'हे दिलों के बदलने वाले, मेरे दिल को अपने धर्म पर स्थिर रख।' और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: 'हे उम्मे सलमा: कोई इंसान नहीं है जिसका दिल अल्लाह की उंगलियों में से दो उंगलियों के बीच न हो। जिसे वह चाहे स्थिर रखता है और जिसे वह चाहे पलट देता है।'

फिर अल्लाह तआला अपनी पवित्रता की घोषणा करता है: ﴿سُبْحَانَهُ﴾ 'महिमा उसकी हो,' यह ताज्जुब और निर्दोषता और झूठ का खंडन करता है। ﴿اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا﴾ (उसने एक बेटा लिया)। फिर अल्लाह तआला अपने महान राज्य को स्पष्ट करता है, जो उनके झूठ का खण्डन करता है: ﴿بَل لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ﴾ (बल्कि जो कुछ आकाशों और धरती में है वह उसका है)।

जिसके पास यह संपूर्ण राज्य है, जो कुछ भी उसमें है, उसके अस्तित्व से उत्पन्न हुआ है, वह सहायक के रूप में बेटे की आवश्यकता नहीं है। बल्कि सब कुछ उसकी ताकत और इच्छा के तहत है: ﴿كُلٌّ لَّهُ قَانِتُونَ﴾ (सब उसके आज्ञाकारी हैं) जिसके पास सब कुछ है, और

उसका राज्य उसके अधीन है, उसकी शक्ति और प्रबंधन के अधीन है, और उसके ज्ञान के बिना कुछ भी नहीं होता है, वह सभी कमियों से मुक्त है, और इसलिए, वह सम्पूर्ण तथा उसी के लिए सम्पूर्णता है।

यह संदर्भ क़ुरआन में तर्क की महान पद्धति को स्पष्ट करता है, जहां पहले काफ़िरों की बातें स्पष्ट की जाती हैं, फिर अल्लाह तआला स्वयं को उन बातों से पवित्र करार देता है जो उन्होंने कही: ﴿سُبۡحَٰنَهُۥۖ﴾ (वह पवित्र है) फिर अपनी महान सृष्टि और राज्य को स्पष्ट करता है, तत्पश्चात अपने महान सत्ता और नियंत्रण को स्पष्ट करता है ﴿كُلّٞ لَّهُۥ قَٰنِتُونَ﴾ (सब उसी के आज्ञाकारी हैं)। इस प्रकार, जो आयत को पढ़ता है और उसे सुनता है, वह मकसद को समझता है और उसे पूरी संतुष्टि प्राप्त होती है, जो कभी भी उसके मन में कोई संदेह नहीं छोड़ती। महिमा हो महान अल्लाह की।

फिर अगली आयत अल्लाह की महानता और उसकी शक्ति का और अधिक वर्णन करती है: ﴿بَدِيعُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ﴾ (आकाशों और पृथ्वी के रचयिता) वह वही है जिसने आकाशों और पृथ्वी को अद्वितीय बनाया, क्योंकि उनका कोई पूर्व रूप नहीं था। उसकी सभी सृष्टि इसी प्रकार की है। अल्लाह की शक्ति को स्पष्ट करने के लिए उसने कहा: ﴿وَإِذَا قَضَىٰٓ أَمۡرٗا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ﴾ (जब वह किसी चीज़ का फ़ैसला करता है, तो बस उसे कहता है "हो जा" और वह हो जाती है)। इससे बड़ी शक्ति क्या हो सकती है। यह अल्लाह को पवित्र और सम्मानित करने का कारण है, और लगातार उसका ज़िक्र करने और अच्छे के लिए प्रार्थना करने और बुराई से बचने का कारण है, क्योंकि वह वह है जिसे कुछ भी असंभव नहीं है, और सब कुछ उसके 'کن हो जा' के माध्यम से पूरा होता है।

फिर अल्लाह तआला बताता है कि कितने मूर्ख लोग है, चाहे अहले किताब हों या अरब के मुशरिक, जो सवाल उठाते हैं: ﴿وَقَالَ ٱلَّذِينَ لَا يَعۡلَمُونَ لَوۡلَا يُكَلِّمُنَا ٱللَّهُ أَوۡ تَأۡتِينَآ ءَايَةٞۗ﴾ (तथा उन्होंने कहा जो ज्ञान नहीं रखते कि अल्लाह हमसे बात क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई आयत क्यों नहीं आती?) वे कहते हैं: 'क्यों नहीं अल्लाह हमसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुबुव्वत के बारे में बात करता ताकि हम जान सकें कि वह नबी हैं, और उन पर विश्वास करें। या हमारे पास एक निशानी आ जाए जो उनकी नुबुव्वत की पहचान हो।[1] यह एक प्रकार की तर्कहीनता है तथा सच्चाई की खोज का नहीं बल्कि अज्ञानता और जिद

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 64)।

का प्रदर्शन है। अल्लाह तआला इसका उत्तर देते हुए फ़रमाता है: ﴿كَذَٰلِكَ قَالَ ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِهِم مِّثۡلَ قَوۡلِهِمۡ﴾ (इसी प्रकार की बात इनसे पूर्व के लोगों ने कही थी। इनके दिल एक समान हो गये) यह जिद्दी काफिरों का मार्ग है जिन्होंने अतीत में सच्चाई का विरोध किया, जैसे मूसा के लोगों ने कहा: 'और जब तुमने कहा, हे मूसा, हम विश्वास नहीं करेंगे जब तक कि हम अल्लाह को स्पष्ट रूप से नहीं देख लेते।' यह घटना की पुनरावृत्ति और समानता को दर्शाता है। जो बीते समय में हुआ है, वह आज भी हो सकता है। अल्लाह ने कहा: 'उनके दिल समान हो गए।' यह बताता है कि कुछ दिल बुराई में समान होते हैं और पुराने और नए दोनों समय में दोहराए जाते हैं। इसी प्रकार, ऐसे दिल भी होते हैं जो आज्ञाकारिता और सच्चाई के पालन में समान होते हैं। जो चीज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में मार्गदर्शन के लिए उपयुक्त थी, वह हर समय के लिए उपयुक्त है। जो सच्चाई चाहता है, वह हर समय में इससे मार्गदर्शन प्राप्त करता है, और जो जिद्दी और तर्कहीन है, वह हर पीढ़ी में ऐसा ही रहेगा। इसीलिए इमाम मालिक ने कहा: 'इस उम्मत के अंतिम भाग को सुधारने का उपाय वही है जो इसके पहले भाग को सुधारने का था।' फिर अल्लाह तआला बताता है कि जिन निशानियों से विश्वास उत्पन्न होता है, वे पहले ही स्पष्ट की जा चुकी हैं: ﴿قَدۡ بَيَّنَّا ٱلۡأٓيَٰتِ لِقَوۡمٖ يُوقِنُونَ﴾ (हमने उनके लिए निशानियाँ उजागर कर दी हैं, जो विश्वास रखते हैं)। इब्न -ए- सअदी रहिमहुल्लाह) ने कहा है: 'हर यकीन वाला अल्लाह की स्पष्ट आयतों से परिचित हो गया है, जिससे उसे यकीन प्राप्त होता है और सभी शंकाएं और संदेह दूर हो जाते हैं।'(1)

हर रसूल स्पष्ट निशानियों और आयतों के साथ आए, जो यह साबित करती हैं कि वे अल्लाह के नबी और रसूल हैं। और उनमें से अंतिम हमारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) थे, जो स्पष्ट निशानियों के साथ आए। इसलिए, इतनी बड़ी संख्या में लोग इस्लाम में शामिल हुए और यह धर्म जीवों के बीच फैल गया। लेकिन जिद्दी और तर्कहीन व्यक्ति अपने कठोरता के मामले में उस मार्ग की खोज करता है जो केवल उसे हानि पहुंचाता है। यह कठोरता की विधियों से दूर रहने के महत्व को दर्शाता है जो व्यक्ति को उसके जीवन और पुनरुत्थान के मामलों में भलाई से दूर ले जाती है। इससे यह भी पता चलता है कि कठोरता की विधियों से व्यक्ति सच्चाई से दूर हो जाता है, और वह उन लोगों के साथ अपने संबंधों में उलझता है जिनके साथ वह संलग्न होता है, और संभवतः वह उन लोगों से अलग हो जाता है जिनके साथ वह संलग्न होता है, और वह आलोचना, संदेह और सतर्कता का कारण बनता है। यह स्पष्ट करता

(1) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 90)।

है कि मांगों और सवालों में कठोरता व्यक्ति के लिए सामाजिक बातचीत में भी भलाई नहीं लाती, जिनके साथ वह संलग्न होता है।

﴿ إِنَّآ أَرۡسَلۡنَٰكَ بِٱلۡحَقِّ بَشِيرٗا وَنَذِيرٗاۖ وَلَا تُسۡـَٔلُ عَنۡ أَصۡحَٰبِ ٱلۡجَحِيمِ ﴿١١٩﴾ وَلَن تَرۡضَىٰ عَنكَ ٱلۡيَهُودُ وَلَا ٱلنَّصَٰرَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمۡۗ قُلۡ إِنَّ هُدَى ٱللَّهِ هُوَ ٱلۡهُدَىٰۗ وَلَئِنِ ٱتَّبَعۡتَ أَهۡوَآءَهُم بَعۡدَ ٱلَّذِي جَآءَكَ مِنَ ٱلۡعِلۡمِ مَا لَكَ مِنَ ٱللَّهِ مِن وَلِيّٖ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٢٠﴾ ٱلَّذِينَ ءَاتَيۡنَٰهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ يَتۡلُونَهُۥ حَقَّ تِلَاوَتِهِۦٓ أُوْلَٰٓئِكَ يُؤۡمِنُونَ بِهِۦۗ وَمَن يَكۡفُرۡ بِهِۦ فَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡخَٰسِرُونَ ﴿١٢١﴾ يَٰبَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ ٱذۡكُرُواْ نِعۡمَتِيَ ٱلَّتِيٓ أَنۡعَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ وَأَنِّي فَضَّلۡتُكُمۡ عَلَى ٱلۡعَٰلَمِينَ ﴿١٢٢﴾ وَٱتَّقُواْ يَوۡمٗا لَّا تَجۡزِي نَفۡسٌ عَن نَّفۡسٖ شَيۡـٔٗا وَلَا يُقۡبَلُ مِنۡهَا عَدۡلٞ وَلَا تَنفَعُهَا شَفَٰعَةٞ وَلَا هُمۡ يُنصَرُونَ ﴿١٢٣﴾ ﴾ [سورة البقرة:١١٩-١٢٣].

((हे नबी!) हमने आपको सत्य के साथ शुभ सूचना देने तथा सावधान करने वाला बनाकर भेजा है और आपसे नारकियों के विषय में प्रश्न नहीं किया जायेगा। (हे नबी!) आपसे यहूदी तथा ईसाई सहमत (प्रसन्न) नहीं होंगे, जब तक आप उनकी रीति पर न चलें। कह दो कि सीधी डगर वही है, जो अल्लाह ने बताई है और यदि आपने उनकी आकांक्षाओं का अनुसरण किया, इसके पश्चात कि आपके पास ज्ञान आ गया, तो अल्लाह (की पकड़) से आपका कोई रक्षक और सहायक नहीं होगा। और हमने जिन्हें पुस्तक प्रदान की है और उसे वैसे पढ़ते हैं, जैसे पढ़ना चाहिये, वही उसपर ईमान रखते हैं और जो उसे नकारते हैं, वही क्षतिग्रस्तों में से हैं। हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैंने तुमपर किया है और ये कि तुम्हें (अपने युग के) संसार-वसियों पर प्रधानता दी थी। तथा उस दिन से डरो, जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कुछ काम नहीं आयेगा और न उससे कोई अर्थदण्ड स्वीकार किया जायेगा और न उसे कोई अनुशंसा (सिफ़ारिश) लाभ पहुँचायेगी और न उनकी कोई सहायता की जायेगी)।

फिर अल्लाह तआला मुहम्मदी रिसालत की वास्तविकता को अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को संबोधित करते हुए इस प्रकार स्पष्ट करता है: ﴿ إِنَّآ أَرۡسَلۡنَٰكَ بِٱلۡحَقِّ بَشِيرٗا وَنَذِيرٗاۖ وَلَا تُسۡـَٔلُ عَنۡ أَصۡحَٰبِ ٱلۡجَحِيمِ ﴿١١٩﴾ ﴾ ((हे नबी!) हमने आपको सत्य के साथ शुभ सूचना देने तथा सावधान करने वाला बनाकर भेजा है और आपसे नारकियों के विषय में प्रश्न नहीं किया जायेगा)।

मुहम्मदी रिसालत की वास्तविकता को स्पष्ट करती है जो कि हर एक व्यक्ति के लिए है।

पहली वास्तविकता: वह अल्लाह तआला के रसूल हैं: ﴿ إِنَّآ أَرۡسَلۡنَٰكَ ﴾ (निस्संदेह, हमने आपको भेजा है)। इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा है, क्योंकि रसूल को भेजने वाला उसका चयन करता है, और यह एक उच्च और सम्माननीय स्थान है। इसमें यह

भी है कि उन्होंने इस संदेश को पहुँचाने की जिम्मेदारी उठाई, और वे अल्लाह तआला द्वारा समर्थित हैं। इसमें बहुत सारी मूल्यवान विशेषताएँ और अच्छाइयाँ शामिल हैं।

दूसरी वास्तविकता: उनके संदेश की सामग्री सत्य है: ﴿إِنَّآ أَرۡسَلۡنَٰكَ بِٱلۡحَقِّ﴾ (निस्संदेह, हमने आपको सत्य के साथ भेजा है)। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो लेकर आए, वह अल्लाह तआला के पास से सत्य है, इसमें कोई संदेह नहीं है। क़ुरआन करीम सत्य है, और उनकी सुन्नत सत्य है। 'सत्य के साथ' का शब्द सब कुछ सही और पूर्णता का संकेत देता है, और किसी भी दोष और कमी से मुक्त है। जो व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा लाए गए क़ुरआन करीम और सुन्नत को ध्यान से देखता है, वह पाता है कि वे एक ऐसी शरीअत हैं जो पूरी तरह से सत्य हैं। उनके उद्देश्य सत्य हैं, उनके तरीके सत्य हैं, उनकी विधियाँ सत्य हैं, उनका सुगमता सत्य है, और वे स्वाभाविकता के साथ सामंजस्य में हैं। वे एक हिदायत हैं, जो केवल भलाई का आदेश देती हैं और केवल बुराई से मना करती हैं। यह मार्गदर्शन का तरीका स्पष्ट करती हैं, भलाई को प्राप्त करने और बुराई को दूर करने का तरीका। और यह कि मनुष्य इस स्थायी और स्पष्ट मार्गदर्शन की तरह कुछ भी नहीं ला सकता, जो हर समय और हर स्थान के लिए उपयुक्त है। और वह जो लोग मानव निर्मित कानूनों से प्राप्त करते हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी बदलते रहते हैं, वे उनमें गलतियों और कमियों को देखते हैं, और उनमें जो दोष और कमियां होती हैं, और जो वे सुरक्षा, समृद्धि, भाईचारे और सहयोग को प्राप्त नहीं कर पाते। और वह अनगिनत कमियां जो उनमें होती हैं।

तीसरी वास्तविकता: यह संदेश बशारत अर्थात एक शुभ सूचना है। इसलिए, वह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ﴿بَشِيرٗا﴾ 'शुभ सूचना देने वाले' हैं, जो जन्नत और स्थायी सुख का शुभ समाचार देते हैं।

चौथी वास्तविकता: यह संदेश एक इन्ज़ार अर्थात चेतावनी है। इसलिए, वह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ﴿وَنَذِيرٗاۖ﴾ 'चेतावनी देने वाले' हैं, जो पापियों को नरक की आग से सावधान करते हैं।

पांचवीं वास्तविकता: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उन लोगों के बारे में जिम्मेदार नहीं हैं जिन्होंने इनकार किया है: ﴿وَلَا تُسۡـَٔلُ عَنۡ أَصۡحَٰبِ ٱلۡجَحِيمِ﴾ 'और आप से नर्क के निवासियों के बारे में नहीं पूछा जाएगा।'

इसमें यह है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास हिदायत की तौफीक का अधिकार नहीं है, बल्कि उन्हें मार्गदर्शन का अधिकार दिया गया है। जो अपने इनकार पर अड़े रहते हैं, उनके लिए हिदायत की तौफीक का अधिकार नहीं है। इस प्रकार, वह उनके कार्यों और

उनके नर्क में जाने के बारे में जिम्मेदार नहीं हैं। इब्न अल-जौज़ी (रहिमहुल्लाह) ने कहा: 'आपसे उनके बारे में नहीं पूछा जाएगा, क्योंकि वे एक बड़े मामले में हैं,' और यह उनके महत्वपूर्ण मामले की वृद्धि को दर्शाता है। और जहीम (नरक) आग है, और कहा गया है कि जब आग की ज्वाला बढ़ती है।[1]

इस आयत ने अपनी संपूर्णता में अपने महान संदेश को कम शब्दों में अत्यंत स्पष्टता के साथ व्यक्त किया है। इसका व्याख्यान एक क्रमबद्ध शैली में प्रस्तुत किया गया है। इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा लाई गई बात को एक ही शब्द में संक्षिप्त रूप में व्यक्त किया गया है, अर्थात "بالحق सत्य"। यह "الحق सत्य" दो मुख्य बातों को समेटे हुए है: स्वर्ग की खुशखबरी उन लोगों के लिए जो आज्ञापालन करते हैं। इसे एक शब्द "बशीर" (खुशखबरी देने वाला) में व्यक्त किया गया। आगाह करना उन लोगों को जो अवज्ञा करते हैं, और यह दंड की चेतावनी है। इसे एक शब्द "نذيرا (नज़ीर" (डराने वाला) में प्रस्तुत किया गया। आगे, इसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिम्मेदारी को स्पष्ट किया कि आप उन लोगों के लिए जवाबदेह नहीं हैं जो कुफ़्र करते हैं या उनके कार्यों के लिए। उनका मामला दोज़ख में फेंके जाने के लिए है, और यह सज़ा के प्रकार को दर्शाता है। इसे अल्लाह तआला के इस कथन में समेटा गया: ﴿وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ﴾ (और आप से जहन्नमी लोगों के बारे में सवाल नहीं किया जाएगा।)

इससे पहले, आयत ने अपनी शुरुआत में ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिम्मेदारी और पद को दो शब्दों में स्पष्ट किया है: ﴿إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ﴾ (हमने आपको भेजा है।) इससे यह स्पष्ट होता है कि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। इससे अधिक प्रभावी और संक्षिप्त बयान की कल्पना करना भी कठिन है।

फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और ईमान वालों को यहूदियों और नसारा के रुख को स्पष्ट किया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَلَن تَرْضَىٰ عَنكَ ٱلْيَهُودُ وَلَا ٱلنَّصَٰرَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ﴾ (यहूदी और ईसाई आपसे कभी संतुष्ट नहीं होंगे, जब तक कि आप उनके धर्म का अनुसरण न करें) इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए यह स्पष्ट किया गया है कि उनका उद्देश्य यह नहीं है कि वे ईमान ले आएंगे, बल्कि यह महज़ उनकी हठधर्मिता का परिणाम है।[2] साथ ही, इस आयत में यह एक चमत्कारिक बयान है जो उनके दिलों की उस स्थिति को उजागर करता है कि वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने की कोई वास्तविक इच्छा नहीं रखते। और वे (यहूदी और ईसाई) इस बात की

(2) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़्सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 121-122)।

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 64-65)।

उम्मीद रखते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके धर्म का अनुसरण करें। हालांकि, यह इस तथ्य को नकारता नहीं कि उनके कुछ लोग इस्लाम में प्रवेश कर चुके थे, जैसे कि महान सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन सल्लाम रज़ियल्लाहु अन्हु। लेकिन आयत में अभिप्राय आम तौर पर यहूदियों और ईसाइयों के समूह से है। ह़दीस़ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह कथन आया है: لو آمن بي عشرة من اليهود لآمن بي اليهود [1] (अगर यहूदियों में से दस लोग मुझ पर ईमान ले आते, तो सारे यहूदी मुझ पर ईमान ले आते)। इससे अभिप्राय यह है कि अगर उनके बड़े और प्रभावशाली लोग ईमान लाते, तो उनके प्रभाव के कारण अन्य लोग भी ईमान ले आते। लेकिन अल्लाह तआला की हर मामले में एक विशेष हिकमत (तत्व) होती है।

यह आयत यह स्पष्ट करती है कि उनका (यहूदियों और ईसाइयों का) ईमान लाना असंभव है, जब तक कि आप उनके धर्म का अनुसरण न करें: ﴿حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ﴾ (यहूदी और ईसाई आपसे कभी संतुष्ट नहीं होंगे, जब तक कि आप उनके धर्म का अनुसरण न करें)। कई फ़ुक़हा (इस्लामी विद्वानों) ने अल्लाह तआला के इस फ़रमानः ﴿حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ﴾ से यह निष्कर्ष निकाला है कि समस्त कुफ़्र (अधर्म) एक ही धर्म है, क्योंकि आयत में "मिल्लत" (धर्म) को एकवचन में उल्लेख किया गया है।[2] यहाँ यहूदी और ईसाइयों के धर्म को मिलाकर ﴿مِلَّتَهُمْ﴾ कहा गया है, यह दर्शाने के लिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के बाद केवल इस्लाम ही अल्लाह के यहाँ स्वीकार्य धर्म है।

फिर अल्लाह तआला अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश देते हैं कि वे उनसे और अन्य लोगों से कहें: ﴿قُلْ إِنَّ هُدَى ٱللَّهِ هُوَ ٱلْهُدَىٰ﴾ (कह दो कि अल्लाह का मार्गदर्शन ही वास्तविक मार्गदर्शन है) यह एक स्पष्ट और निश्चित बयान है कि मार्गदर्शन केवल अल्लाह के मार्गदर्शन में निहित है। इससे यह सिद्ध होता है कि इसके अलावा जो कुछ भी है, वह मिथ्या है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माध्यम से जो मार्गदर्शन आया, उसने पहले के सभी धर्मों और पद्धतियों को रद्द कर दिया। इसी प्रकार, इंसानों द्वारा गढ़े गए हर नियम और विचार भी भटकाव हैं, क्योंकि वास्तविक मार्गदर्शन केवल वही है जो अल्लाह तआला ने अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर प्रकट किया है। जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमायाः ﴿وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ ٱلْإِسْلَٰمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ﴾ (और जो इस्लाम के अलावा कोई अन्य धर्म अपनाएगा, उससे वह हरगिज़ स्वीकार नहीं किया जाएगा)।

(2) बुख़ारी (3/ 80) ह़दीस़ संख्या (3841)।

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 168)।

जो व्यक्ति वाक्य ﴿قُلْ إِنَّ هُدَى ٱللَّهِ هُوَ ٱلْهُدَىٰ﴾ पर ध्यान देता है, वह पाता है कि यह वाक्य एक ईमान वाले के लिए शक्ति का स्रोत है। इससे वह हर गुमराही पर रुक कर कह सकता है: ﴿قُلْ إِنَّ هُدَى ٱللَّهِ هُوَ ٱلْهُدَىٰ﴾ (अल्लाह का मार्गदर्शन ही वास्तविक मार्गदर्शन है)। हर बिदअत (नवाचार) के सामने वह कहेगा: ﴿قُلْ إِنَّ هُدَى ٱللَّهِ هُوَ ٱلْهُدَىٰ﴾। हर नैतिक भटकाव के सामने वह कहेगा: ﴿قُلْ إِنَّ هُدَى ٱللَّهِ هُوَ ٱلْهُدَىٰ﴾। हर वासनात्मक आकर्षण के सामने वह कहेगा: ﴿قُلْ إِنَّ هُدَى ٱللَّهِ هُوَ ٱلْهُدَىٰ﴾। यह वाक्य एक मूल सिद्धांत, प्रकाश और हथियार बन जाता है, जिससे ईमान वाला स्वयं को शैतान के प्रलोभन से बचा सकता है। वह अल्लाह तआला से मार्गदर्शन और स्थिरता की दुआ करता है। साथ ही, यह वाक्य दूसरों को याद दिलाने और इस पर तर्क देने के लिए भी उपयोगी है। वह इसे अल्लाह की किताब और उनके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के माध्यम से हर गुमराही को खारिज करने के लिए प्रस्तुत करता है।

फिर अल्लाह तआला यह स्पष्ट करता है कि यहूदी और ईसाई अपनी इच्छाओं के अनुयायी हैं ﴿وَلَئِنِ ٱتَّبَعْتَ أَهْوَآءَهُم مِّنۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ ٱلْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ ٱللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ﴾ (और यदि आपने उनके मनमाने विचारों का पालन किया, उस ज्ञान के बाद जो आपके पास आया है, तो आपके लिए अल्लाह के विरुद्ध न कोई सहायक होगा और न कोई मददगार) यह आयत यह प्रमाणित करती है कि वे लोग अपनी इच्छाओं के अधीन हैं। ﴿وَلَئِنِ ٱتَّبَعْتَ أَهْوَآءَهُم﴾ और इसमें यहूदियों और ईसाइयों की इच्छाओं का अनुसरण करने और उनकी समानता अपनाने की सख्त मनाही है, विशेष रूप से उनके तौर-तरीकों में। यह संबोधन हालांकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए है, लेकिन उनकी उम्मत भी इसमें शामिल है, क्योंकि शब्द के सामान्य अर्थ को महत्व दिया जाता है न कि विशेष कारण को, अर्थात शब्द के व्यापक अर्थ को आधार माना जाता है न कि विशेष परिस्थिति में अवतरण होने के कारण उसे उसी तक सीमित कर दिया जाता है।[1] इब्न -ए- कसीर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि कहते हैं: इसमें यहूदियों और ईसाइयों के तौर-तरीकों का अनुसरण करने के विरुद्ध सख्त धमकी और चेतावनी है, जबकि किताब और सुन्नत से उन्हें इसका ज्ञान हो चुका हो। हालांकि यह संबोधन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को है, किंतु इसका आदेश उनकी उम्मत के लिए भी है।[2]

(2) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 91)।

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 168)।

यह संबोधन नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किया गया है, जो इस बात को दर्शाता है कि निषेध कितना महान और गंभीर है। जब किसी जिम्मेदारी का बोझ उठाने वाले बड़े व्यक्ति को किसी आदेश या निषेध के माध्यम से संबोधित किया जाता है, तो यह उस मामले की गंभीरता को दर्शाता है, भले ही ऐसा होना उनसे असंभव हो। जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है: "उस ज़ात (अस्तित्व, अल्लाह) की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है! यदि मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा भी चोरी करती, तो मैं उसका भी हाथ काट देता"।[1] इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के धर्म को लागू करने में कितने दृढ़ और प्रतिबद्ध थे, भले ही वह दंड उनके सबसे करीब के व्यक्ति को क्यों न मिलता, हालांकि, अल्लाह तआला की पनाह है, फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा जैसी पवित्र महिला से ऐसा कोई अपराध होना असंभव है।

और अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है: ﴿ٱلَّذِينَ ءَاتَيۡنَٰهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ يَتۡلُونَهُۥ حَقَّ تِلَاوَتِهِۦٓ أُوْلَٰٓئِكَ يُؤۡمِنُونَ بِهِۦ﴾ (जिन लोगों को हमने किताब दी, वे उसे उस प्रकार पढ़ते हैं जैसा कि उसे पढ़ने का हक़ है। वही लोग उस पर ईमान रखते हैं) जो लोग उस किताब का पूरा हक़ अदा करते हुए उसका पालन करते हैं जिसे अल्लाह तआला ने नाज़िल किया है, वे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाएंगे। यह इसलिए कि उनके पास किताब के अंदर जो ईमान है, और उसमें जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वर्णन, उनके गुण और उनके पैग़ंबर होने का आदेश है, वह उन्हें उनका अनुसरण करने, उनकी मदद करने और उनका समर्थन करने के लिए प्रेरित करता है। यह सत्य उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने की ओर ले जाता है।[2] सत्य का अनुसरण व्यक्ति को सत्य की ओर ले जाता है, जबकि इच्छाओं का अनुसरण उसे गुमराही की ओर खींच लेता है। इसीलिए सत्य को पहचानना और उससे जुड़े रहना आवश्यक है, और इच्छाओं और उनके अनुयायियों से बचना अनिवार्य है। इच्छाओं का अनुसरण बिदअत को जन्म देता है, और एक बिदअत दूसरी बिदअत को जन्म देती है, यहाँ तक कि गुमराहियों का सिलसिला बढ़ता जाता है, और व्यक्ति सत्य से भटककर गुमराही में चला जाता है। हम अल्लाह से उसकी पनाह माँगते हैं। इसी तरह नैतिक भ्रष्टाचार भी और अधिक नैतिक पतन की ओर ले जाता है, यहाँ तक कि अनैतिकता सामान्य व्यवहार बन जाती है।

इसी प्रकार, अच्छाई से चिपके रहना और उसे अपनाना अधिक अच्छाई की ओर ले जाता है, जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है: "आदमी हमेशा सत्य

---

(2) बुख़ारी (3/ 153) ह़दीस़ संख्या (4304)।

(3) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखक: इब्न -ए- कस़ीर (1/ 169)।

बोलता है और सत्य का पालन करता रहता है, यहाँ तक कि वह अल्लाह के पास सच्चे व्यक्ति के रूप में लिखा जाता है"।[1]

फिर अल्लाह तबारक व तआला ने उन लोगों के परिणाम को स्पष्ट किया जो उसका इंकार करते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَمَن يَكْفُرْ بِهِۦ فَأُولَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْخَٰسِرُونَ﴾ (और जो लोग इससे इंकार करेंगे, वही लोग घाटे में हैं)। अतः आज वास्तविक धर्म केवल वही धर्म है जिसे अल्लाह तआला ने अपने बंदे और रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल किया है।

फिर अल्लाह तआला ने बनी इस्राइल को याद दिलाने हेतु दोहराया है: ﴿يَٰبَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱذْكُرُوا۟ نِعْمَتِىَ ٱلَّتِىٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّى فَضَّلْتُكُمْ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿١٢٢﴾ وَٱتَّقُوا۟ يَوْمًا لَّا تَجْزِى نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنفَعُهَا شَفَٰعَةٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿١٢٣﴾﴾ (हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैंने तुमपर किया है और ये कि तुम्हें (अपने युग के) संसार-वसियों पर प्रधानता दी थी। तथा उस दिन से डरो, जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कुछ काम नहीं आयेगा और न उससे कोई अर्थदण्ड स्वीकार किया जायेगा और न उसे कोई अनुशंसा (सिफ़ारिश) लाभ पहुँचायेगी और न उनकी कोई सहायता की जायेगी)।

इससे पूर्व इस अध्याय के आरंभ में ही इस्राइल की संतानों को उन अनुग्रहों की याद दिलाई गई थी, जिन्हें सर्वशक्तिमान अल्लाह ने उन पर बरसाया था। यहाँ इसे दोहराया गया है ताकि निरक्षर नबी के अनुगमन हेतु प्रेरित किया जा सके, जिसकी विशिष्टताएँ, वर्णन, आदेश और समुदाय की स्थितियाँ उनकी पुस्तकों में उल्लिखित हैं। उन्हें इस सच्चाई को छिपाने और धर्म तथा संसार की अनुग्रहों को छिपाने से चेताया गया है। उन्हें अपने अरबी चचेरे भाइयों से उस दानशीलता पर ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए जो अल्लाह ने उन्हें अंतिम नबी को उनमें भेजकर प्रदान की है। ईर्ष्या उन्हें पैग़ंबर की अवज्ञा, उन्हें झुठलाने और उनके अनुकरण से विमुख न करे। अल्लाह की दुआएँ और सलाम उन पर क़यामत तक बनाए रखें।[2]

क़ुरआन में इस पुनरावृत्ति से यह स्पष्ट होता है कि स्मरण का महत्व अत्यधिक है, और इसकी पुनरावृत्ति में कई लाभ हैं। उनमें से प्रमुख यह है कि यह प्रमाण की पुनर्स्थापना करता है, क्योंकि मानव आत्मा को पुनः स्मरण की आवश्यकता होती है, ताकि वह सलाह को स्वीकार कर सके। और जो लोग पालन करते हैं, उनके लिए यह स्मरण सुरक्षा और उपचार के लिए है,

(2) मुस्लिम (4/ 2013) ह़दीस़ संख्या (2607)।

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 169)।

जिससे उन्हें विचलन, कमजोरी और भूलने से बचाया जा सके। चाहे व्यक्ति कितना भी प्रगति कर ले, उसे स्मरण की आवश्यकता हमेशा बनी रहती है।

क़ुरआन में बार-बार पुनरावृत्तियाँ कुछ निर्देशों को दोहराती हैं, जैसे इस आयत को, और कुछ नए संदर्भों के साथ उदाहरणों की प्रस्तुति भी होती है, जैसे क़ुरआन की कहानियों में। इससे पाठक या सुनने वाले को उन घटनाओं से जोड़ने में मदद मिलती है, और ज्ञान पर ज्ञान जुड़ता है, जिससे समझ और सोच को एक नई दिशा मिलती है।

﴿ ۞ وَإِذِ ٱبۡتَلَىٰٓ إِبۡرَٰهِـۧمَ رَبُّهُۥ بِكَلِمَٰتٖ فَأَتَمَّهُنَّۖ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامٗاۖ قَالَ وَمِن ذُرِّيَّتِيۖ قَالَ لَا يَنَالُ عَهۡدِي ٱلظَّٰلِمِينَ ١٢٤ وَإِذۡ جَعَلۡنَا ٱلۡبَيۡتَ مَثَابَةٗ لِّلنَّاسِ وَأَمۡنٗا وَٱتَّخِذُواْ مِن مَّقَامِ إِبۡرَٰهِـۧمَ مُصَلّٗىۖ وَعَهِدۡنَآ إِلَىٰٓ إِبۡرَٰهِـۧمَ وَإِسۡمَٰعِيلَ أَن طَهِّرَا بَيۡتِيَ لِلطَّآئِفِينَ وَٱلۡعَٰكِفِينَ وَٱلرُّكَّعِ ٱلسُّجُودِ ١٢٥ وَإِذۡ قَالَ إِبۡرَٰهِـۧمُ رَبِّ ٱجۡعَلۡ هَٰذَا بَلَدًا ءَامِنٗا وَٱرۡزُقۡ أَهۡلَهُۥ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ مَنۡ ءَامَنَ مِنۡهُم بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِۖ قَالَ وَمَن كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُۥ قَلِيلٗا ثُمَّ أَضۡطَرُّهُۥٓ إِلَىٰ عَذَابِ ٱلنَّارِۖ وَبِئۡسَ ٱلۡمَصِيرُ ١٢٦ ﴾ [سورة البقرة:١٢٤-١٢٦].

(और (याद करो) जब इब्राहीम की उसके पालनहार ने कुछ बातों से परीक्षा ली और वह उसमें पूरा उतरा, तो उसने कहा कि मैं तुम्हें सब इन्सानों का इमाम (धर्मगुरु) बनाने वाला हूँ। (इब्राहीम ने) कहाः तथा मेरी संतान से भी। (अल्लाह ने कहाः) मेरा वचन उनके लिए नहीं, जो अत्याचारी हैं। और (याद करो) जब हमने इस घर (अर्थातःकाबा) को लोगों के लिए बार-बार आने का केंद्र तथा शांति स्थल निर्धारित कर दिया तथा ये आदेश दे दिया कि 'मक़ामे इब्राहीम' को नमाज़ का स्थान बना लो तथा इब्राहीम और इस्माईल को आदेश दिया कि मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) तथा एतिकाफ़ करने वालों और सज्दा तथा रुकू करने वालों के लिए पवित्र रखो। और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पालनहार से प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! इस छेत्र को शांति का नगर बना दे तथा इसके वासियों को, जो उनमें से अल्लाह और अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखे, विभिन्न प्रकार की उपज (फलों) से आजीविका प्रदान कर। (अल्लाह ने) कहाः तथा जो काफ़िर है, उसे भी मैं थोड़ा लाभ दूंगा, फिर उसे नरक की यातना की ओर बाध्य कर दूँगा और वह बहुत बुरा स्थान है)।

अल्लाह तआला अपने नबी और ख़लील इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में सूचना दे रहा है: ﴿وَإِذِ ٱبۡتَلَىٰٓ إِبۡرَٰهِـۧمَ رَبُّهُۥ بِكَلِمَٰتٖ فَأَتَمَّهُنَّۖ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامٗاۖ﴾ (और (याद करो) जब इब्राहीम की उसके पालनहार ने कुछ बातों से परीक्षा ली और वह उसमें पूरा उतरा, तो उसने कहा कि मैं तुम्हें सब इन्सानों का इमाम (धर्मगुरु) बनाने वाला हूँ)। यह आयत इस बात से शुरू होती है कि पैग़ंबरी एक जिम्मेदारी है जिसे निभाने की परीक्षा होती है। यह इब्राहीम अलैहिस्सलाम की परीक्षा है, अर्थात अल्लाह तआला ने उन्हें आदेशों और निषेधों के माध्यम से आज़माया तथा

उनकी परीक्षा ली। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَإِذِ ٱبۡتَلَىٰٓ إِبۡرَٰهِـۧمَ رَبُّهُۥ بِكَلِمَٰتٖ﴾ (और (याद करो) जब इब्राहीम की उसके पालनहार ने कुछ बातों से परीक्षा ली) यह "बातें" शरीअत, अवामिर (आदेश) तथा नवाही (निषेध) हैं, एवं इस के संबंध में विद्वानों के विभिन्न मत हैं।[1]

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि नबी संदेश का पालन करने की परीक्षा में होता है, तो जिनके पास यह संदेश भेजा गया है, वे भी अपने विश्वास, पूजा और समग्र शरीअत का पालन करने की परीक्षा में होते हैं। इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति जो इस शरीअत का पालन करने के लिए बाध्य है, वह इस परीक्षा में होता है कि क्या वह इसका पालन करता है या इससे भटकता है, ताकि वह अपने योग्य पुरस्कार और सज़ा प्राप्त कर सके। प्रत्येक व्यक्ति परीक्षा में होता है, और परीक्षा का प्रमुख प्रकार यह है कि वह अल्लाह के धर्म को ग्रहण करता है और उसे अपनाता है या उसे छोड़ देता है। उदाहरण के लिए, पिता उन बच्चों, पत्नी और नौकरों के प्रति जिम्मेदार होता है जिन्हें अल्लाह ने उसकी अधीनता में रखा है, और इसी प्रकार माता भी होती है। शासक अपनी प्रशासनिक जिम्मेदारियों की परीक्षा में होता है कि वह ईमानदारी से काम करता है या धोखा देता है और अन्याय करता है।

यदि शासक न्यायपूर्ण होता है, तो वह उन सात लोगों में से एक होता है जिन्हें क़ियामत के दिन अल्लाह की छत्रछाया में रखा जाएगा, जैसा कि ह़दीस़[2] में बताया गया है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों के कारण परीक्षा में होता है: "तुममें से प्रत्येक व्यक्ति निगहबान है और अपनी प्रजा के लिए जिम्मेदार है"।[3] यहाँ तक कि व्यक्ति स्वयं अपने ऊपर अल्लाह के आदेशों और निषेधों का पालन करने की जिम्मेदारी निभाता है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सभी आदेशों का पालन किया और इसे पूरा किया, जैसा कि अल्लाह ने उनके बारे में कहा है: "फअत्तमहुन्ना" (उन्होंने इसे पूरा किया)। इस पूर्णता की महत्वपूर्ण स्थिति के कारण, इसे पहले बयान किया गया है, इससे पहले कि तकलीफ़ का विवरण दिया जाए, जो है: ﴿إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامٗا﴾ (मैं तुम्हें सब इन्सानों का इमाम (धर्मगुरु) बनाने वाला हूँ)।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अल्लाह के आदेश एक परीक्षा हैं, ताकि यह ज्ञात हो सके कि कौन उसका पालन करता है और कौन अवज्ञा करता है, उनके लिए प्रमाण स्थापित करते हुए। उनके पालन और अवज्ञा के स्तर विभिन्न हैं, और इसी प्रकार प्रतिफल और दंड भी विभिन्न होते हैं, यहाँ तक कि (पुल) स़िरात़ को पार करने में भी। यह इस बात को दर्शाता है कि

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 170)।

(3) बुख़ारी (1/ 219) ह़दीस़ संख्या (660)।

(1) बुख़ारी (2/ 222) ह़दीस़ संख्या (2558)।

अल्लाह के आदेशों को पूरा करने के लिए मेहनत करना और उससे सहायता और स्थिरता की प्रार्थना करना कितना महत्वपूर्ण है।

अल्लाह ताआला के इस कथन में ﴿إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا﴾ (मैं तुम्हें सब इन्सानों का इमाम (धर्मगुरु) बनाने वाला हूँ) इस बात का संकेत है कि लोग धर्म में तुम्हारा अनुसरण करेंगे, जो कि मार्गदर्शन है, अर्थात अल्लाह का मार्गदर्शन। यह एक महान और सम्मानित स्थान है। जब भी कोई व्यक्ति भलाई में लोगों के लिए नेता बनता है, तो उसके अनुयायियों की संख्या के अनुसार उसका प्रतिफल बढ़ जाता है, उनके पुण्यों में किसी प्रकार की कमी नहीं होती, जैसा कि ह़दीस़ में कहा गया है: "जो व्यक्ति इस्लाम में एक अच्छा कार्य प्रारंभ करता है, उसके लिए उसका प्रतिफल होगा, और उसके बाद जो भी इसका पालन करेगा, उसके लिए भी प्रतिफल होगा, बिना उनके पुण्यों में किसी कमी के"।[1] और महत्व के कारण, अल्लाह ने हमें इसका अनुसरण करने के लिए निर्देशित किया है, जैसा कि उसने रहमान के भक्तों की विशेषताओं के बारे में कहा है, सूरा अल-फुरकान में: ﴿وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿٧٤﴾﴾ (जो कहते हैं, 'हे हमारे पालनहार, हमें हमारे जीवनसाथी और संतान से शीतलता प्रदान कर, और हमें धर्मभक्तों के लिए इमाम बना)। इसका यह तात्पर्य है कि किसी को धर्म और नैतिकता के अनुपालन में सावधानी बरतनी चाहिए, और उन लोगों के प्रति सतर्क रहना चाहिए जो कुछ आदेशों और निषेधों में ढिलाई करते हैं, खासकर गैर-मुसलमानों की नकल करने में, क्योंकि उनकी नकल करना अनुचित है।

इस सम्मानजनक स्थान के महत्व और इसके लाभ के कारण, इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी संतानों के लिए अपने पालनहार से यह स्थान माँगा: ﴿قَالَ وَمِن ذُرِّيَّتِي﴾ ((इब्राहीम ने) कहाः तथा मेरी संतान से भी)। जिससे यह संकेत मिलता है कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) अपने धर्म की भलाई और अपनी संतानों की भलाई के प्रति चिंतित थे। कि अल्लाह की आज्ञाकारिता जारी रहे, उसका धर्म जारी रहे, और उसकी संतानों में मार्गदर्शन और नेतृत्व जारी रहे। इसका यह भी संकेत मिलता है कि उसकी संतानों को भी धर्म की भलाई का ध्यान रखना चाहिए, ताकि अल्लाह के मार्ग को ऊंचा और स्थायी बनाए रख सके, और अपनी संतानों को सुधारने का प्रयास करना चाहिए ताकि वे अन्य लोगों के लिए धर्म में अनुकरणीय और मार्गदर्शक बनें। इसका यह भी अर्थ है कि कम से कम स्थिति में कोई भी व्यक्ति गैर-मुसलमानों का अनुकरण न करे, क्योंकि उनकी नकल करना अनुचित है, और वह बुराई में एक उदाहरण न बने।

(1) मुस्लिम (2/ 704-705) ह़दीस़ संख्या (1017)।

अल्लाह तआला ने हमें यह शिक्षा दी है, जैसा कि सूरह अल-फ़ुरक़ान में कहा गया है: ﴿وَٱلَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَمًا﴾ (और जो कहते हैं: 'हे हमारे रब! हमें हमारे पतियों और संतान से आँखों की ठंडक दे, और हमें डर रखने वालों का इमाम बना)।

अल्लाह ने अपने प्रिय और नबी इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की याचिका का उत्तर दिया, अपने इस कथन के द्वारा: ﴿قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي ٱلظَّٰلِمِينَ﴾ (मेरा वचन उनके लिए नहीं, जो अत्याचारी हैं)। जिससे उन्होंने केवल उस कारण को स्पष्ट किया जो इस मांग की पूर्ति में बाधक है, और इस बाधा के स्पष्ट करने में अल्लाह ताआला का उद्देश्य और दया है। इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति जो धर्म का पालन करता है, वह दूसरों के लिए एक उदाहरण और आदर्श बन सकता है, सिवाय उस व्यक्ति के जो अपने आप पर अत्याचार करता है, बुराई और अल्लाह के मार्ग से भटककर, वह इस उच्च स्थान को प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि वह भलाई में लोगों के लिए मार्गदर्शक नहीं बन सकता। तो यही बुराई है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बच्चों को मार्गदर्शन पर शिक्षित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि वे धर्मपरायणों के लिए एक नेता बन सकें, और धर्म, भलाई, आचरण, और सही मार्गदर्शन में उनका अनुकरण किया जा सके, अल्लाह की इच्छा से।

अल्लाह प्राचीन घर की कुछ विशेषताओं के बारे में कहता है: ﴿وَإِذْ جَعَلْنَا ٱلْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا﴾ (जब हमने इस घर (अर्थातःकाबा) को लोगों के लिए बार-बार आने का केंद्र तथा शांति स्थल निर्धारित कर दिया) इस पवित्र घर में, अल्लाह ने अपने भक्तों के लिए धार्मिक और लौकिक उद्देश्यों को निहित किया है। पहली विशेषता यह है कि यह " مَثَابَةً मसाबतन" है, अर्थात लोग इसमें बार-बार आते हैं, अपने धार्मिक और लौकिक लाभ प्राप्त करने के लिए। इसमें हज, उमरा, और तवाफ है, और व्यापारिक लाभ भी है, जैसे कि शीतकालीन और ग्रीष्मकालीन व्यापार यात्रा। दूसरी विशेषता "وَأَمْنًا अमनन" है, जिसमें हर व्यक्ति अपने धर्म और दुनिया के मामलों में सुरक्षित महसूस करता है। मक्का के निवासियों ने इसे महान महत्व दिया, यहाँ तक कि अज्ञानता के समय में भी, यहाँ तक कि कोई व्यक्ति अपने पिता के हत्यारे को पाता था, तब भी उसे नहीं डराता था। इसकी महानता और बढ़ी जब पैग़ंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भेजा जाना हुआ। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि इस पवित्र घर का सम्मान करना महत्वपूर्ण है, इसे पूजा के लिए जाने और इसकी सुरक्षा को बनाए रखने के लिए।

तीसरी विशेषता यह है कि अल्लाह ने इब्राहीम के स्थान को नमाज़ की जगह बनाया, जैसा कि अल्लाह ने कहा है: ﴿وَٱتَّخِذُواْ مِن مَّقَامِ إِبۡرَٰهِـۧمَ مُصَلًّىۖ﴾ (तथा ये आदेश दे दिया कि 'मक़ामे इब्राहीम' को नमाज़ का स्थान बना लो)। इमाम क़ुरतबी रहिमहुल्लाह के अनुसार, यह वह स्थान है जहां तवाफ करने वाले दो रकअत नमाज़ अदा करते हैं।(1) यह विशेषता पैगंबरों के पिता और एकता के नेता इब्राहीम अलैहिस्सलाम के स्थान को सम्मान देती है।

फिर अल्लाह यह स्पष्ट करता है कि उसने इब्राहीम और उसके पुत्र इस्माइल को एक महान कार्य करने का आदेश दिया, जैसा कि अल्लाह कहता है: "और हमने इब्राहीम और इस्माइल को आदेश दिया कि 'मेरे घर को तवाफ करने वालों, इतिकाफ करने वालों, और रुकू और सिजदा करने वालों के लिए पवित्र बनाओ।'"

पवित्र बनाने का आदेश सामान्य रूप में आया है, जिसका मतलब है: इसे भौतिक और आध्यात्मिक अपवित्रता से, जैसे मूर्तियों, अशुद्धियों, गंदगी, शिर्क, कुफ्र, और पापों से पवित्र बनाना। ताकि यह तवाफ करने वालों, इतिकाफ करने वालों, और नमाज़ पढ़ने वालों के लिए स्वच्छ हो।

यह अल्लाह के पवित्र घर की महानता और तवाफ करने वालों, इतिकाफ करने वालों, और नमाज़ पढ़ने वालों के लिए ऊँचा स्थान दर्शाता है। इसी प्रकार, अल्लाह ने जिन इबादतों का आदेश दिया है, उनका भी ऊँचा स्थान है, जिसके लिए इस घर की देखभाल की जानी चाहिए। शेख इब्न -ए- सअदी रहिमहुल्लाह कहते हैं: "तवाफ को इसलिए प्राथमिकता दी गई है क्योंकि इसका संबंध सीधे मस्जिद-ए-ह़राम से है"।(2)

यह आवश्यक है कि मस्जिदों को नमाज़ पढ़ने वालों और इबादत में ध्यान लगाने वालों के लिए हर उस चीज़ से शुद्ध किया जाए जो उन्हें तकलीफ पहुंचाए, उनका ध्यान भटकाए, या उन्हें नमाज़ और इतिकाफ़ से रोक दे। क्योंकि मस्जिदों की शुद्धता का कारण सभी मुसलमानों की मस्जिदों के लिए सामान्य रूप से लागू होता है। इसमें यह भी फायदेमंद है कि जो लोग इस कार्य को अंजाम देंगे, उन्हें इसका पुण्य मिलेगा, क्योंकि यह वही आदेश है जिसे अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दिया था। इसी प्रकार, जो हदीसें मस्जिदों की शुद्धता और सुगंध के लिए आदेश देती हैं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस संबंध में देखभाल करने की आदत पर आधारित हैं, वे भी इसका प्रमाण हैं।

(2) अल् जामेअ लि अह़कामिल क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 77)।

(1) तैसीरुल करीमिर्रह़मान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 94)।

अल्लाह के इस कथन में देखा जा सकता है: ﴿أَن طَهِّرَا بَيْتِيَ﴾ (कि मेरे घर को पवित्र रखो) अल्लाह तआला ने इसे ﴿بَيْتِيَ﴾ "मेरा घर" कहकर विशेषता दी है। यह एक महान सम्मान और प्रतिष्ठा है। इससे यह संकेत मिलता है कि अल्लाह के आदेशों का पालन करने वाला विश्वासी वही करेगा जो अल्लाह ने महान घोषित किया है, इसलिए इस घर का सम्मान और प्रतिष्ठा की जानी चाहिए ताकि यह उच्च स्थान बनाए रखा जाए।

शैख़ इब्न -ए- सअदी (रहिमहुल्लाह) इसके लाभों के बारे में कहते हैं: "यह दिखाता है कि इब्राहीम और इस्माईल अलैहिमस्सलाम ने इसे पवित्र बनाने में बहुत ध्यान दिया, क्योंकि यह अल्लाह का घर है। उन्होंने अपने प्रयास किए और अपनी सारी क्षमता इसमें झोंक दी। इसी तरह, यह जुड़ाव सम्मान और प्रतिष्ठा का संकेत है, तथा इस से यह भी प्रमाणित होता है कि यह इज़ाफ़त (संयोजन, संबंध) इसलिए है ताकि लोगों के हृदय इस और आकर्षित हों"।[1]

फिर यह आयत हमारे पिता इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की चिंता और ईमानदारी को दर्शाती है: ﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ رَبِّ ٱجْعَلْ هَـٰذَا بَلَدًا ءَامِنًا وَٱرْزُقْ أَهْلَهُۥ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ مَنْ ءَامَنَ مِنْهُم بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْـَٔاخِرِ﴾ और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पालनहार से प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! इस छेत्र को शांति का नगर बना दे तथा इसके वासियों को, जो उनमें से अल्लाह और अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखे) यह मांग इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दूरदृष्टि और चिंता को दर्शाती है, क्योंकि उन्होंने केवल अपने लिए नहीं सोचा, बल्कि इस घर के निवासियों और सभी आगंतुकों के लिए सुरक्षा मांगी ताकि जो इसमें हैं और जो इसे देखने आते हैं, वे सभी शांति प्राप्त कर सकें।

काफिरों के बारे में अल्लाह तआला कहता है: ﴿قَالَ وَمَن كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُۥ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُۥٓ إِلَىٰ عَذَابِ ٱلنَّارِ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ﴾ ((अल्लाह ने) कहाः तथा जो काफ़िर है, उसे भी मैं थोड़ा लाभ दूंगा, फिर उसे नरक की यातना की ओर बाध्य कर दूँगा और वह बहुत बुरा स्थान है)। अल्लाह का आशीर्वाद सभी पर है, चाहे वह विश्वासी हो या अविश्वासी, पापी हो या धार्मिक, क्योंकि काफिरों को थोड़े समय का लाभ मिलता है: "और जिसने इनकार किया, उसे थोड़ी देर का लाभ दूंगा," जबकि मुसलमान आशीर्वाद का उपयोग अल्लाह की आज्ञाकारिता में करते हैं और स्वर्ग में प्रवेश पाते हैं, और काफिर थोड़े समय का आनंद लेते हैं, फिर अल्लाह उन्हें आग की यातना में डाल देगा और यह बहुत बुरा स्थान है जो काफिरों के लिए है।[2]

(2) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 94)।

(1) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 94)।

﴿وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَٰهِـۧمُ ٱلْقَوَاعِدَ مِنَ ٱلْبَيْتِ وَإِسْمَٰعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَٱجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِن ذُرِّيَّتِنَآ أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَٱبْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا۟ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿١٢٩﴾ وَمَن يَرْغَبُ عَن مِّلَّةِ إِبْرَٰهِـۧمَ إِلَّا مَن سَفِهَ نَفْسَهُۥ ۚ وَلَقَدِ ٱصْطَفَيْنَٰهُ فِى ٱلدُّنْيَا ۖ وَإِنَّهُۥ فِى ٱلْءَاخِرَةِ لَمِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿١٣٠﴾ إِذْ قَالَ لَهُۥ رَبُّهُۥٓ أَسْلِمْ ۖ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿١٣١﴾ وَوَصَّىٰ بِهَآ إِبْرَٰهِـۧمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ يَٰبَنِىَّ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰ لَكُمُ ٱلدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٣٢﴾ أَمْ كُنتُمْ شُهَدَآءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ ٱلْمَوْتُ إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِنۢ بَعْدِى قَالُوا۟ نَعْبُدُ إِلَٰهَكَ وَإِلَٰهَ ءَابَآئِكَ إِبْرَٰهِـۧمَ وَإِسْمَٰعِيلَ وَإِسْحَٰقَ إِلَٰهًا وَٰحِدًا وَنَحْنُ لَهُۥ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُم مَّا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْـَٔلُونَ عَمَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١٣٤﴾﴾ [سورة البقرة:١٢٧-١٣٤].

(और (याद करो) जब इब्राहीम और इस्माईल इस घर की नींव ऊँची कर रहे थे तथा प्रार्थना कर रहे थेः हे हमारे पालनहार! हमसे ये सेवा स्वीकार कर ले। तू ही सब कुछ सुनता और जानता है। हे हमारे पालनहार! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना तथा हमारी संतान से एक ऐसा समुदाय बना दे, जो तेरा आज्ञाकारी हो और हमें हमारे (हज्ज की) विधियाँ बता दे तथा हमें क्षमा कर। वास्तव में, तू अति क्षमी, दयावान् है। हे हमारे पालनहार! उनके बीच उन्हीं में से एक रसूल भेज, जो उन्हें तेरी आयतें सुनाये और उन्हें पुस्तक (क़ुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) की शिक्षा दे और उन्हें शुध्द तथा आज्ञाकारी बना दे। वास्तव में, तू ही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है। तथा कौन होगा, जो ईब्राहीम के धर्म से विमुख हो जाये, परन्तु वही जो स्वयं को मूर्ख बना ले? जबकि हमने उसे संसार में चुन लिया तथा आख़िरत (परलोक) में उसकी गणना सदाचारियों में होगी। तथा (याद करो) जब उसके पालनहार ने उससे कहाः मेरा आज्ञाकारी हो जा। तो उसने तुरन्त कहाः मैं विश्व के पालनहार का आज्ञाकारी हो गया। तथा इब्राहीम ने अपने पुत्रों को तथा याक़ूब ने, इसी बात पर बल दिया कि हे मेरे पुत्रो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए ये धर्म (इस्लाम) निर्वाचित कर दिया है। अतः मरते समय तक तुम इसी पर स्थिर रहना। क्या तुम याक़ूब के मरने के समय उपस्थित थे; जब याक़ूब ने अपने पुत्रों से कहाः मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम किसकी इबादत (वंदना) करोगे? उन्होंने कहाः हम तेरे तथा तेरे पिता इब्राहीम और इस्माईल तथा इस्हाक़ के एकमात्र पूज्य की इबादत (वंदना) करेंगे और उसी के आज्ञाकारी रहेंगे। ये एक समुदाय था, जो जा चुका। उन्होंने जो कर्म किये, वे उनके लिए हैं तथा जो तुमने किये, वे तुम्हारे लिए और उनके किये का प्रश्न तुमसे नहीं किया जायेगा)।

फिर क़ुरआनी संदर्भ काबा के निर्माण की प्रक्रिया, और इब्राहीम और इस्माइल द्वारा अल्लाह की ओर प्रार्थना और निवेदन की ओर बढ़ता है: ﴿وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَٰهِـۧمُ ٱلْقَوَاعِدَ مِنَ ٱلْبَيْتِ وَإِسْمَٰعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿١٢٧﴾﴾ (और (याद करो) जब इब्राहीम और इस्माईल

इस घर की नींव ऊँची कर रहे थे तथा प्रार्थना कर रहे थेः हे हमारे पालनहार! हमसे ये सेवा स्वीकार कर ले। तू ही सब कुछ सुनता और जानता है) आयत उस स्थिति का वर्णन करती है जब इब्राहीम और इस्माइल अलैहिमस्सलाम काबा की नींव उठाते समय प्रार्थना कर रहे थे कि अल्लाह उनकी इस आज्ञाकारिता को स्वीकार करे। यह इस बात को दर्शाता है कि हर मोमिनों (विश्वासियों) को अपनी पूजा और सभी प्रकार की आज्ञाकारिता के कार्यों के लिए अल्लाह से स्वीकृति की प्रार्थना करनी चाहिए, और यह नहीं मानना चाहिए कि उन्होंने इसे पूर्णता और संपूर्णता के साथ पूरा किया है और इसे स्वीकार किया गया है। क्योंकि कोई नहीं जानता कि उसका कार्य किस प्रकार का अंत होगा।

इब्न -ए- कसीर रहिमहुल्लाह कहते हैं: "वे एक अच्छे कार्य में लगे हुए थे, और वे अल्लाह से इसे स्वीकार करने की प्रार्थना कर रहे थे"। और वह वह्ब बिन वर्द से भी यही वर्णित है कि उन्होंने इस आयत को पढ़ा और फिर रो पड़े और कहने लगे: "हे अल्लाह के मित्र, आप अल्लाह के घर की नींव उठा रहे हैं और आप चिंतित हैं कि इसे आपसे स्वीकार किया जाएगा या नहीं"।

यह वही स्थिति है जिसका वर्णन अल्लाह तआला ने सूरतुल-मुमिनून में ईमानदार और सच्चे लोगों के बारे में किया: ﴿وَٱلَّذِينَ يُؤۡتُونَ مَآ ءَاتَواْ وَّقُلُوبُهُمۡ وَجِلَةٌ﴾ (और वे लोग जो (अल्लाह के रास्ते में) देते हैं और उनके दिल डरे हुए होते हैं)। अर्थात, वे अपनी दी हुई सदक़ा, खर्च और रिश्तेदारी निभाने के बावजूद चिंतित रहते हैं कि कहीं अल्लाह उनकी इन भलाईयों को अस्वीकार न कर दे।[(1)]

फिर इब्राहीम और इस्माइल अलैहिमस्सलाम कहते हैं: ﴿رَبَّنَا وَٱجۡعَلۡنَا مُسۡلِمَيۡنِ لَكَ﴾ (हे हमारे पालनहार! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना) अर्थात हमें आज्ञाकारी और समर्पित मुस्लिम बना। वे अल्लाह से स्थिरता और ईमान और अच्छे कार्यों में निरंतरता की प्रार्थना कर रहे हैं। इसका लाभ यह है कि मोमिनों को अल्लाह से स्थिरता की प्रार्थना करनी चाहिए, और आज्ञाकारिता में घमंड नहीं करना चाहिए, बल्कि आज्ञाकारिता के समय स्वीकृति की प्रार्थना करनी चाहिए, और अल्लाह से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उन्हें सत्य पर स्थिर रखे और उससे न हटने दे। जैसे इब्राहीम दुआ किया करते थे तथा हमारे नबी मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) प्रार्थना करते हुए कहते थे: "हे दिलों को बदलने वाले, मेरे दिल को अपने धर्म पर स्थिर रख"।[(2)(3)] बल्कि इस से आगे बढ़ कर इब्राहीम और इस्माईल अलैहिमस्सलाम की प्रार्थना

(2) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 181)।

(3) तिर्मिज़ी (5/ 503) हदीस़ संख्या (3522)।

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 87)। संक्षिप्त रूप में।

उनकी संतानों के लिए भी होती है: ﴿ رَبَّنَا وَٱجۡعَلۡنَا مُسۡلِمَيۡنِ لَكَ وَمِن ذُرِّيَّتِنَآ أُمَّةٗ مُّسۡلِمَةٗ ﴾ (हे हमारे पालनहार! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना तथा हमारी संतान से एक ऐसा समुदाय बना दे, जो तेरा आज्ञाकारी हो) यह हमें संतानों के लिए प्रार्थना का उदाहरण देता है, और यह कि बेटा अपने पिता के साथ अच्छे कार्यों में भाग ले, जैसे इस्माईल अपने पिता के साथ भाग लेते थे, और उनसे सीखते थे और उनका अनुकरण करते थे। प्रार्थना जारी रहती है: ﴿وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبۡ عَلَيۡنَآۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴾ (और हमें हमारे (हज्ज की) विधियाँ बता दे तथा हमें क्षमा कर, वास्तव में, तू अति क्षमी, दयावान् है)। वे अल्लाह से यह प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें हज के धार्मिक कृत्य और उनके उपायों को दिखाए, और कहा गया कि सभी आवश्यक पूजा के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, क्योंकि धार्मिक कृत्य उपासना के कार्य हैं।(1) फिर वे अल्लाह के नामों और विशेषताओं के माध्यम से उससे प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें क्षमा करे, क्योंकि वह क्षमा करने वाला और दयालु है। इसका यह संकेत मिलता है कि अल्लाह के नामों और विशेषताओं के माध्यम से प्रार्थना करना महत्वपूर्ण है, तथा उस के अतिरिक्त अन्य मख़लूक़ से प्रार्थना नहीं करनी चाहिए। इब्राहीम और इस्माईल अलैहिमस्सलाम एक उपासना कार्य में होने के बावजूद अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना कर रहे थे, क्योंकि इंसान चाहे कितना भी कार्य करे, उसमें कमी रह जाती है। यदि यह अल्लाह के मित्र की स्थिति है जिसे उसने चुना, और उनके साथ उनके बेटे, जो क्षमा की प्रार्थना कर रहे थे, तो अन्य का क्या होगा।

प्रार्थना जारी रहती है: ﴿ رَبَّنَا وَٱبۡعَثۡ فِيهِمۡ رَسُولٗا مِّنۡهُمۡ يَتۡلُواْ عَلَيۡهِمۡ ءَايَٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ وَيُزَكِّيهِمۡۚ إِنَّكَ أَنتَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ ١٢٩ ﴾ (हे हमारे पालनहार! उनके बीच उन्हीं में से एक रसूल भेज, जो उन्हें तेरी आयतें सुनाये और उन्हें पुस्तक (क़ुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) की शिक्षा दे और उन्हें शुध्द तथा आज्ञाकारी बना दे)। यह प्रार्थना हमारे पिता इब्राहीम अलैहिस्सलाम की चिंता को दर्शाती है कि उनमें से एक रसूल को भेजा जाए। अल्लाह ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की प्रार्थना को स्वीकार किया और उनमें नबी और रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा, जो इस्माईल बिन इब्राहीम की संतानों में से थे, जैसा कि उन्होंने कहा: "मैं अपने पिता इब्राहीम की दुआ हूँ, तथा सब से अंत में जिन्होंने मेरे आने की शुभ सूचना दी, वह ईसा इब्न - ए- मरियम (अलैहिस्सलाम) थे।"(2)

---

(2) पिछला संदर्भ।

(3) अहमद (36/ 595-596) ह़दीस़ संख्या (22261) तथा अस-सिलसिला अस़-स़हीहह (1546), लेखकः अलबानी।

प्रार्थना में रसूल की भूमिका का विवरण मौजूद है: ﴿يَتۡلُواْ عَلَيۡهِمۡ ءَايَٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ وَيُزَكِّيهِمۡۚ﴾ वह आयतों को शब्दशः पढ़ें, या करें तथा दूसरों को भी याद कराएं[1], ﴿ٱلۡكِتَٰبَ﴾ से अभिप्राय क़ुरआन है, तथा ﴿وَٱلۡحِكۡمَةَ﴾ से अभिप्राय सुन्नत है। तथा उन्हें पवित्र करे, अच्छे कार्यों की शिक्षा और बुरे कार्यों से दूर रहने के द्वारा।[2] यह विद्वानों की भूमिका को भी दर्शाता है, जो नबियों के वारिस हैं, और यह कि धर्म की शिक्षा में क़ुरआन की तिलावत, समझ और अनुप्रयोग शामिल हैं, और इसी प्रकार सुन्नत की शिक्षा, समझ और अनुप्रयोग भी शामिल है।

तथा इसी प्रकार, आज्ञाकारिता और अल्लाह के प्रति ईमानदारी के द्वारा आत्मा की पवित्रता और शुद्धि की प्रक्रिया को लागू करने के लिए, जो हर उस चीज़ पर लागू होती है जिसे अल्लाह पसंद करता है और उससे प्रसन्न होता है। आत्मा को उन सभी चीजों से शुद्ध करना जो अल्लाह के मार्ग और उसकी इच्छा के विपरीत हैं।

शिक्षा की नींव संक्षिप्त रूप में इस प्रकार हैं: अभ्यास, स्पष्टता और मौखिक स्पष्टीकरण। शिक्षा के लिए समझ और निष्कर्ष निकालने की क्षमता का विकास आवश्यक है, जो सभी आवश्यक उपकरणों को सीखने के बाद न्याय करने के प्रयास से आता है। इसी प्रकार, इच्छाशक्ति को मजबूत करना और उसे कार्य और अनुप्रयोग के लिए सक्रिय करना आवश्यक है, ताकि इसे सुस्पष्ट किया जा सके।

फिर अल्लाह कहता है: ﴿وَمَن يَرۡغَبُ عَن مِّلَّةِ إِبۡرَٰهِـۧمَ إِلَّا مَن سَفِهَ نَفۡسَهُۥۚ﴾ (तथा कौन होगा, जो ईब्राहीम के धर्म से विमुख हो जाये, परन्तु वही जो स्वयं को मूर्ख बना ले?)। जो भी इब्राहीम के धर्म से विमुख हो, उसने अपनी आत्मा को अपमानित किया और उसे मूर्खता में डाल दिया। कहा जाता है: उसने किसी चीज़ में रुचि ली अगर उसने उसे चाहा। और उससे विमुख हुआ अगर उसने उसे छोड़ दिया। इसलिए, जो व्यक्ति अल्लाह के धर्म और उसकी शरीअत को जानने के बाद, उसे छोड़कर किसी और चीज़ को अपनाता है, उसकी स्थिति उस मूर्ख और अज्ञानी की तरह होती है जो प्रकाश और भलाई को देखकर उसे छोड़ देता है, और उसे उससे कम चीज़ के साथ बदल देता है। और यह बुद्धि से संबंधित सबसे नीच गुणों में से एक है, जो स्पष्ट सत्य के विपरीत चलता है।

---

(2) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 95)।

(1) पिछला संदर्भ (1/ 95)।

और इस वाक्य में: ﴿إِلَّا مَن سَفِهَ نَفۡسَهُۥۚ﴾ (केवल वही जिसने अपनी आत्मा को मूर्खता में डाल दिया), इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति स्वयं को नुकसान पहुंचा सकता है, जिससे वह अपनी आत्मा का अपमान, अपमान और कमजोरी का कारण बनता है, और उसे सत्य और भलाई से दूर ले जाता है। क्योंकि मूर्खता से बचाव नहीं है, और अच्छाई को छोड़कर बुराई में प्रवेश करना होता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि व्यक्ति अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार है, क्योंकि वह अपनी आत्मा का प्रबंधक है। दूसरी ओर, वह अल्लाह की सहायता से अपनी आत्मा को भलाई और सुधार की ओर ले जाता है, अपनी क्षमताओं का विकास करता है, पाप से संयमित रहता है, आज्ञाकारिता और कठिनाइयों के बावजूद धैर्यवान रहता है, और भलाई और सुधार के मार्गों में आने वाली बाधाओं को पार करने का प्रयास करता है।

फिर अल्लाह इस महान नबी की स्थिति को दुनिया और आखिरत में स्पष्ट करता है, और कहता है: ﴿وَلَقَدِ ٱصۡطَفَيۡنَٰهُ فِي ٱلدُّنۡيَاۖ وَإِنَّهُۥ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ لَمِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ﴾ (जबकि हमने उसे संसार में चुन लिया तथा आख़िरत (परलोक) में उसकी गणना सदाचारियों में होगी) अल्लाह ने उसे अपने प्राणियों में से चुना, और उसे वह करने के लिए सक्षम बनाया जो उसे पसंद है और जिससे वह प्रसन्न है। और आखिरत में, वह नेक लोगों में से है, और नेक व्यक्ति वही है जो अल्लाह के महान पुरस्कार का विजेता होता है। और "चयन" का मतलब है उसे बाकी लोगों में से चुनना, अल्लाह ने जिसे चुना, उसे प्यार करने और विशेष ध्यान देने का संकेत देना। और यह दिखाता है कि अल्लाह के चुने हुए व्यक्ति का सम्मान और उसे प्यार करना बाकी लोगों के लिए अनिवार्य है।

और जैसा कि अल्लाह के इस कथन में है: ﴿وَإِنَّهُۥ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ لَمِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ﴾ (तथा आख़िरत (परलोक) में उसकी गणना सदाचारियों में होगी) यह पुष्टि करता है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम की स्थिति और स्थान के बारे में और यह कि वह अल्लाह के द्वारा महान पुरस्कार और स्थान पाने वालों में से है।

फिर अल्लाह स्पष्ट करता है कि इब्राहीम ने अल्लाह के आदेशों का कितनी जल्दी पालन किया: ﴿إِذۡ قَالَ لَهُۥ رَبُّهُۥٓ أَسۡلِمۡۖ قَالَ أَسۡلَمۡتُ لِرَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾ (तथा (याद करो) जब उसके पालनहार ने उससे कहाः मेरा आज्ञाकारी हो जा। तो उसने तुरन्त कहाः मैं विश्व के पालनहार का आज्ञाकारी हो गया) उन्होंने तुरंत अल्लाह के आदेश का पालन किया। इस आयत का संदर्भ यह संकेत देता है कि अल्लाह का एक शब्द ﴿أَسۡلِمۡۖ﴾ "समर्पण करो" विभिन्न अर्थों और संकेतों को दर्शाता है: इसमें अल्लाह के प्रति आज्ञाकारिता, समर्पण, अनुप्रयोग, विनम्रता, एकेश्वरवाद और उपासना शामिल हैं। एक शब्द ने उन सभी संकेतों को समाहित कर लिया जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए अपेक्षित थे, और यह स्पष्ट बयान की चमत्कारिक भाषा में से

है। इसी प्रकार, आयत ने इब्राहीम की त्वरित प्रतिक्रिया और स्वीकृति को एक शब्द में ﴿أَسْلَمْتُ﴾ "मैंने समर्पण किया" में स्पष्ट किया, बिना किसी हिचकिचाहट के, जो सभी स्वीकृति, आज्ञाकारिता और अनुपालन के अर्थों को समाहित करता है, यहां तक कि जब उसे अपने बेटे की हत्या का आदेश दिया गया था, उसने हिचकिचाहट नहीं की या व्याख्या नहीं की या सोचने में समय नहीं लिया, बल्कि हत्या की प्रक्रिया को तुरंत आरंभ कर दिया, सिवाय इसके कि महान और दयालु अल्लाह ने उसे महान बलिदान द्वारा बचा लिया। यह एक आज्ञाकारी व्यक्ति के लिए एक आदर्श और मॉडल प्रस्तुत करता है, ताकि मुसलमान भी अल्लाह के आदेशों और निषेधों के साथ ऐसा ही करे। वह अल्लाह की आज्ञाकारिता में हिचकिचाहट नहीं करता और न ही उसे इच्छाओं के अधीन करता है। अल्लाह के इस कथन ﴿أَسْلَمْتُ﴾ "मैंने पूरे संसार के पालनहार के लिए समर्पण किया" में, निश्छल एकेश्वरवाद (तौह़ीद) का दर्शन है, न कि किसी और के लिए समर्पण करना, या किसी और को उसके साथ साझेदारी में लेना, बल्कि केवल पूरे संसार के पालनहार के लिए। ताकि तौह़ीद -ए- उलूहियत एवं तौह़ीद रुबूबियत का पालन हो, चुनाँचे अल्लाह के इस कथन ﴿لِرَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ﴾ में तौह़ीद -ए- रुबूबियत की पुष्टि है कि अल्लाह हर चीज़ का प्रभु और मालिक है, तथा इस कथन ﴿أَسْلَمْتُ﴾ में तौह़ीद -ए- उलूहियत की पुष्टि है, तथा इस कथन ﴿لِرَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ﴾ में आत्मसमर्पण की सीमा का निर्धारण करना है, कि उनका समर्पण केवल अल्लाह के लिए है। इसका मतलब है कि उसकी सभी उपासना, डर, प्रेम, आशा, आज्ञाकारिता, जीवन, मृत्यु, विश्वास और पूजा केवल अल्लाह के लिए हैं, और किसी और के लिए नहीं, जैसा कि आयत ने स्पष्ट किया है।

इसलिए शब्द ﴿أَسْلَمْتُ﴾ "मैंने समर्पण किया" ने सभी चीजों को समाहित कर लिया जो एक बंदे को अपने प्रभु के लिए करना चाहिए, और कुछ भी नहीं छोड़ा, और यह भी क़ुरआन की चमत्कारिक भाषा की स्पष्टता में से है, जिसने अल्लाह की इच्छा को पूरी तरह से समाहित कर लिया है, जैसा कि वह चाहता और पसंद करता है।

और इब्राहीम की अपनी संतानों और अल्लाह के धर्म के निरंतरता की चिंता जारी रहती है, जैसा कि अल्लाह इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का अपनी संतानों के साथ मामले को स्पष्ट करता है: ﴿وَوَصَّىٰ بِهَآ إِبْرَٰهِـۧمُ بَنِيهِ﴾ (तथा इब्राहीम ने अपने पुत्रों को इस की वसीयत की) और अल्लाह ने उसकी प्रार्थना को स्वीकार किया, और उसके बेटे इस विधि का पालन करते रहे, यहां तक कि उसका पोता याक़ूब बिन इसहाक बिन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) भी अपने बेटों को उसी बात की शिक्षा देता है जो इब्राहीम ने दी थी, अल्लाह कहता है: ﴿وَيَعْقُوبُ يَٰبَنِيَّ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰ لَكُمُ ٱلدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ﴾ (और याक़ूब ने कहा, 'हे मेरे बेटों, निस्संदेह

अल्लाह ने तुम्हारे लिए धर्म चुना है, इसलिए केवल मुसलमान होते हुए ही मरना)। यह इस शिक्षाप्रद विधि को दर्शाता है, अल्लाह की चयन और धर्म की महान कृपा को स्पष्ट करता है, और उन्हें धर्म के लिए चयन करने के महत्व को याद दिलाता है, और उन्हें मृत्यु की याद दिलाता है, जो दिल को इस धर्म को पकड़ने की ओर प्रेरित करता है। लेकिन उनकी याद दिलाना मृत्यु के समाप्ति के बारे में था, ताकि इसका प्रभाव और मजबूत हो, और उनकी मृत्यु और अंत इस्लाम पर हो। जैसा कि शेख इब्न सादी (रहिमहुल्लाह) कहते हैं: "जो किसी चीज़ पर जीता है, वह अल्लाह की इच्छा से उसी पर मरता है, और जो किसी चीज़ पर मरता है, वह उसी पर पुनर्जीवित होता है।(1)

फिर अल्लाह कहता है: ﴿أَمۡ كُنتُمۡ شُهَدَآءَ إِذۡ حَضَرَ يَعۡقُوبَ ٱلۡمَوۡتُ إِذۡ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعۡبُدُونَ مِنۢ بَعۡدِيۖ قَالُواْ نَعۡبُدُ إِلَٰهَكَ وَإِلَٰهَ ءَابَآئِكَ إِبۡرَٰهِـۧمَ وَإِسۡمَٰعِيلَ وَإِسۡحَٰقَ إِلَٰهٗا وَٰحِدٗا وَنَحۡنُ لَهُۥ مُسۡلِمُونَ ١٣٣﴾ (क्या तुम याक़ूब के मरने के समय उपस्थित थे; जब याक़ूब ने अपने पुत्रों से कहाः मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम किसकी इबादत (वंदना) करोगे? उन्होंने कहाः हम तेरे तथा तेरे पिता इब्राहीम और इस्माईल तथा इस्हाक़ के एकमात्र पूज्य की इबादत (वंदना) करेंगे और उसी के आज्ञाकारी रहेंगे)। इमाम क़ुरतुबी (रहिमहुल्लाह) कहते हैं: यह भाषण उन यहूदियों और ईसाइयों के लिए है, जो इब्राहीम की संतानों पर उन चीजों को आरोपित करते हैं जो उन्होंने अपने बेटों को नहीं सिखाईं, और जो यहूदी और ईसाई धर्म पर थे। अल्लाह ने उनके इस कथन को झुठलाया और उन्हें यहूदी और ईसाई धर्म का पालन करने से रोका, और कहा, 'क्या तुम याकूब के पास उपस्थित थे? और तुमने जाना कि उसने क्या सिखाया?' अर्थात, तुम उपस्थित नहीं थे, बल्कि तुम झूठ गढ़ते हो। "अम" का मतलब है बल्कि। "शहादत" का मतलब है गवाह। और ﴿حَضَرَ يَعۡقُوبَ ٱلۡمَوۡتُ﴾ का अर्थ है जब उनके ऊपर मृत्यु का प्रभाव प्रकट हुआ तथा लगा अब उनकी मृत्यु होने वाली है।(2)

उनके बेटों ने उन्हें इस उत्तर से संतुष्ट किया, कि वे एकेश्वरवाद पर हैं जिसमें अल्लाह के साथ कोई साझेदारी नहीं है। तथा उन्होंने कहाः ﴿وَنَحۡنُ لَهُۥ مُسۡلِمُونَ﴾ (हम उसी के आज्ञाकारी रहेंगे) जिसमें एकेश्वरवाद और हर उस चीज़ के प्रति समर्पण शामिल है जो अल्लाह की ओर से आई है: विश्वास, उपासना और आचरण। उनका उत्तर हर भलाई को समाहित करता है और हर विपरीत संभावना को रोकता है। इससे इस धर्म के प्रति पिता की चिंता और इसकी निरंतरता, और संतानों की धार्मिकता प्रकट होती है, जो अल्लाह के धर्म पर स्थिर रहते हैं, यहां तक कि जीवन के अंतिम क्षणों में। और हमारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने भी इसी

(2) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 97)।
(1) अल् जामेअ लि अहकामिल क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 93)। संक्षिप्त रूप में।

प्रकार, अपने जीवन के अंतिम क्षणों में नमाज़ और अपने दासों की देखभाल की नसीहत दी, और देखा कि उनके साथी अबू बक्र सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे।

इससे यह स्पष्ट होता है कि माता-पिता, विद्वान और प्रचारक को इस्लाम के मामलों का ध्यान रखना चाहिए, विशेष रूप से अपनी संतानों के बारे में जो उनकी जिम्मेदारी में हैं। उन्हें उनकी चिंता करनी चाहिए और इस धर्म की चिंता करनी चाहिए। और इसमें यहूदियों और ईसाइयों की उपज की भी पहचान होती है, और यह उनके पूर्वजों के प्रति उनके झूठ को उजागर करता है। और यह आयत स्पष्ट करती है कि याकूब (अलैहिस्सलाम) ने अपने बेटों को यहूदियत और ईसाइयत की शिक्षा नहीं दी थी। फिर अल्लाह इसे इस कथन से समाप्त करता है: ﴿تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُم مَّا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ١٣٤﴾ (ये एक समुदाय था, जो जा चुका। उन्होंने जो कर्म किये, वे उनके लिए हैं तथा जो तुमने किये, वे तुम्हारे लिए और उनके किये का प्रश्न तुमसे नहीं किया जायेगा)। यह स्पष्ट करता है कि हर किसी का अपना कार्य होता है। और तुम उनके कार्यों के लिए उत्तरदायी नहीं हो। इसलिए, आवश्यक है कि तुम अपने मामलों में ध्यान दो और देखो कि तुम क्या कर रहे हो और क्या कमा रहे हो।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है: कि दुराग्रही को सत्य, मार्ग और हकीकत को स्पष्ट किया जाता है, और उसके दावों का उत्तर दिया जाता है। यदि वह इसे स्वीकार करता है, तो ठीक, अन्यथा उसके लिए वही है जो उसने कमाया है। किसी के लिए मार्गदर्शन की अनुग्रह करना संभव नहीं है, बल्कि उसके लिए केवल अच्छे और सही मार्ग का संकेत करना पर्याप्त है।

﴿وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ تَهْتَدُوا ۗ قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ١٣٥ قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ١٣٦ فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنتُم بِهِ فَقَدِ اهْتَدَوا ۖ وَّإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ ۖ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ١٣٧ صِبْغَةَ اللَّهِ ۖ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۖ وَنَحْنُ لَهُ عَابِدُونَ ١٣٨ قُلْ أَتُحَاجُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ١٣٩ أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ۗ قُلْ أَأَنتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللَّهُ ۗ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَتَمَ شَهَادَةً عِندَهُ مِنَ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ١٤٠ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُم مَّا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ١٤١﴾ [سورة البقرة:١٣٥-١٤١].

(और वे कहते हैं कि यहूदी हो जाओ अथवा ईसाई हो जाओ, तुम्हें मार्गदर्शन मिल जायेगा। आप कह दें, नहीं! हम तो एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर हैं और वह मिश्रणवादियों में से नहीं था। (हे मुसलमानो!) तुम सब कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाये तथा उसपर जो

(क़ुर्आन) हमारी ओर उतारा गया और उसपर जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब तथा उनकी संतान की ओर उतारा गया और जो मूसा तथा ईसा को दिया गया तथा जो दूसरे नबियों को, उनके पालनहार की ओर से दिया गया। हम इनमें से किसी के बीच अन्तर नहीं करते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं। तो यदि वे तुम्हारे ही समान ईमान ले आयें, तो वे मार्गदर्शन पा लेंगे और यदि विमुख हों, तो वे विरोध में लीन हैं। उनके विरुध्द तुम्हारे लिए अल्लाह बस है और वह सब सुनने वाला और जानने वाला है। तुम सब अल्लाह के रंग (स्वभाविक धर्म) को ग्रहण कर लो और अल्लाह के रंग से अच्छा किसका रंग होगा? हम तो उसी की इबादत (वंदना) करते हैं। (हे नबी!) कह दो कि क्या तुम हमसे अल्लाह के (एक होने के) विषय में झगड़ते हो, जबकि वही हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है? फिर हमारे लिए हमारा कर्म है और तुम्हारे लिए तुम्हारा कर्म है और हम तो बस उसी की इबादत (वंदना) करने वाले हैं।(हे अह्ले किताब!) क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब तथा उनकी संतान यहूदी या ईसाई थी? उनसे कह दो कि तुम अधिक जानते हो अथवा अल्लाह? और उससे बड़ा अत्याचारी कौन होगा, जिसके पास अल्लाह का साक्ष्य हो और उसे छुपा दे? और अल्लाह तुम्हारे करतूतों से अचेत तो नहीं है। ये एक समुदाय था, जो जा चुका। उनके लिए उनका कर्म है तथा तुम्हारे लिए तुम्हारा कर्म है। तुमसे उनके कर्मों के बारे में प्रश्न नहीं किया जायेगा)।

फिर आयत का संदर्भ अहल -ए- किताब की ओर वापस आता है, जहां यह महान आयत यहूदियों और ईसाइयों के अभिमान को स्पष्ट करती है, और यह उल्लेख करती है कि उन्होंने सत्य को अस्वीकार कर दिया जब यह उनके लिए स्पष्ट हो गया। बल्कि यह मामला इतना बढ़ गया कि यहूदी और ईसाई नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनके साथ के मोमिनों को यहूदी और ईसाई धर्म में आने के लिए बुला रहे थे। इससे पता चलता है कि असत्य के लोग स्पष्ट सत्य का अनुसरण नहीं कर सकते हैं, और वे सत्य के लोगों से अपेक्षा कर सकते हैं कि वे अपने असत्य का पालन करें, जबकि वे अपने असत्य को जानते हैं, और दावा करते हैं कि यही मार्गदर्शन है: ﴿وَقَالُوا۟ كُونُوا۟ هُودًا أَوْ نَصَـٰرَىٰ تَهْتَدُوا۟﴾ (और वे कहते हैं कि यहूदी हो जाओ अथवा ईसाई हो जाओ, तुम्हें मार्गदर्शन मिल जायेगा) यहाँ सत्य और उसकी वास्तविकता की घोषणा के महत्व की आवश्यकता है, इसलिए अल्लाह तआला नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहता है: उन्हें कहें: ﴿بَلْ مِلَّةَ إِبْرَٰهِـۧمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ﴾ (आप कह दें, नहीं! हम तो एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर हैं और वह मिश्रणवादियों में से नहीं थे) इससे पता चलता है कि यह धर्म इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के धर्म का विस्तार है, और अल्लाह का धर्म स्थिरता और शुद्ध एकेश्वरवाद "حَنِيفًا ۖ हनीफ़न" है तथा बहुदेववाद और बिदअत नहीं है। यह दर्शाता है कि नवाचार (बिदअत) और बहुदेववाद (शिर्क) धर्म को समुदाय से बाहर निकाल देते हैं, और बहुदेववादी अपने बहुदेववाद के कारण, जो एकेश्वरवाद के सार

के विपरीत है, इस्लाम से बाहर हो जाता है। अल्लाह के इस कथन में: ﴿بَلۡ مِلَّةَ إِبۡرَٰهِـۧمَ حَنِيفٗاۖ﴾ असत्य के सामने स्थिरता का प्रमाण है। आयत ने मिल्लत की पुष्टि की है तथा बहुदेववाद का निषेध किया है: ﴿بَلۡ مِلَّةَ إِبۡرَٰهِـۧمَ حَنِيفٗاۖ وَمَا كَانَ مِنَ ٱلۡمُشۡرِكِينَ﴾ (बल्कि इब्राहीम का धर्म, एकेश्वरवादी था और वह बहुदेववादी नहीं थे)। इस से यह स्पष्ट होता है कि बहुदेववाद एक कमी और अपमान है, क्योंकि यह अल्लाह की इच्छा के विपरीत है।

फिर अल्लाह उन्हें और अन्य लोगों को और स्पष्ट निर्देश देता है: ﴿قُولُوٓاْ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيۡنَا وَمَآ أُنزِلَ إِلَىٰٓ إِبۡرَٰهِـۧمَ وَإِسۡمَٰعِيلَ وَإِسۡحَٰقَ وَيَعۡقُوبَ وَٱلۡأَسۡبَاطِ وَمَآ أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَآ أُوتِيَ ٱلنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمۡ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ أَحَدٖ مِّنۡهُمۡ وَنَحۡنُ لَهُۥ مُسۡلِمُونَ ١٣٦﴾ ((हे मुसलमानो!) तुम सब कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाये तथा उसपर जो (क़ुर्आन) हमारी ओर उतारा गया और उसपर जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब तथा उनकी संतान की ओर उतारा गया और जो मूसा तथा ईसा को दिया गया तथा जो दूसरे नबियों को, उनके पालनहार की ओर से दिया गया। हम इनमें से किसी के बीच अन्तर नहीं करते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं) इस धर्म का आधार अल्लाह पर विश्वास और हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित क़ुरआन और सुन्नत पर विश्वास करना है, अल्लाह के कथन के अनुसार: ﴿وَأَنزَلَ ٱللَّهُ عَلَيۡكَ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ﴾ (और अल्लाह ने तुम पर किताब और हिकमत उतारी), और रसूलों और उन पर अवतरित किताबों पर विश्वास करना, और उनमें भेद न करना, और अल्लाह के लिए समर्पण करना।

इस से यह भी लाभ मिलता है कि यह धर्म उन चीजों का विस्तार है जो पूर्व रसूलों ने लाई थीं, इसलिए मुसलमान अल्लाह पर विश्वास करता है और हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित चीजों पर और पूर्व रसूलों पर अवतरित चीजों पर विश्वास करता है।

इससे इस्लाम की स्पष्टता का पता चलता है, और यह कि यह अल्लाह द्वारा पूर्व में अवतरित चीजों की पुष्टि करता है, और यह कि इस्लाम का धर्म सभी रसूलों का सम्मान करता है, और उनमें से किसी को भी कम नहीं करता। और यह विश्वास का मूल है। जो उनमें से किसी को कम करता है, उसने अपना ईमान समाप्त कर लिया।

फिर उस शर्त का उल्लेख है जिस के द्वारा उन पर हुक्म लगाया जाएगा ﴿فَإِنۡ ءَامَنُواْ بِمِثۡلِ مَآ ءَامَنتُم بِهِۦ فَقَدِ ٱهۡتَدَواْۖ﴾ (यदि वे तुम्हारे ही समान ईमान ले आयें, तो वे मार्गदर्शन पा लेंगे) यह दिखाता है कि मार्गदर्शन इस शुद्ध इस्लामिक धर्म में ही निहित है। यह भी दिखाता है कि जो मार्गदर्शन हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके साथ के मोमिनों का

था, उसके अलावा कोई दूसरा मार्गदर्शन नहीं है। इससे यह साबित होता है कि हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धर्म के अलावा सभी धर्म झूठे हैं।

इसलिए, यदि वे उस पर विश्वास नहीं करते जिस पर आप हैं, तो वे अपने विवाद, तर्क-वितर्क और दुश्मनी में बने रहेंगे। अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ﴾ (तथा यदि वे विमुख हों, तो वे विरोध में लीन हैं) इस से पता चलता है कि उनके मुड़ने में मतभेद का होना और उसकी सच्चाई है, और उनके इस धर्म से मुड़ने का मतलब तर्क-वितर्क, दुश्मनी और विरोध है। लेकिन अल्लाह ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और मोमिनों को स्पष्ट किया है कि वह इन दुराग्रहियों से उनकी रक्षा करेगा, क्योंकि वह सब कुछ सुनता है और जानता है: ﴿وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ﴾ (और यदि विमुख हों, तो वे विरोध में लीन हैं। उनके विरुध्द तुम्हारे लिए अल्लाह बस है और वह सब सुनने वाला और जानने वाला है) यदि वे उस सत्य से मुँह मोड़ते हैं जो तुम्हें दिया गया है, तो वे तुम्हारे साथ विवाद और विरोध में हैं। अल्लाह उन्हें तुम्हारे लिए पर्याप्त करेगा, उनके विवाद, विरोध और विरोध के खिलाफ। वह तआला सुनता है और जानता है कि तुम और वे किस स्थिति में हैं। अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपना वादा पूरा किया, जहां उनके विरोधियों में से कई मारे गए, और बनू नज़ीर को निष्कासित कर दिया गया।

इससे अल्लाह के नामों और विशेषताओं को जानने के महत्व का पता चलता है, जिनमें से एक है: ﴿السَّمِيعُ الْعَلِيمُ﴾ (सब सुनने वाला, सब जानने वाला) जो मुसलमान को अल्लाह से डरने और उससे शर्म करने की याद दिलाता है, जो हर एक की स्थिति को सुनता और जानता है। यह मुसलमान को सिखाता है कि वह केवल उसी पर विश्वास करे, उसी से मदद मांगे, उसी से सहायता मांगे और केवल उसी पर भरोसा करे जो उसकी स्थिति को हर समय सुनता और जानता है: ﴿وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ﴾ (और वह सब सुनने वाला, सब जानने वाला है)।

फिर अल्लाह अपने धर्म का विवरण देता है कि यह सबसे अच्छा धर्म है, और इससे बेहतर कोई धर्म नहीं है: ﴿صِبْغَةَ اللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً﴾ (तुम सब अल्लाह के रंग (स्वभाविक धर्म) को ग्रहण कर लो और अल्लाह के रंग से अच्छा किसका रंग होगा?) इस आयत की शुरुआत ﴿صِبْغَةَ اللَّهِ﴾ "अल्लाह का रंग" से होती है, जो यह परिभाषित करती है और पुष्टि करती है कि यही अल्लाह का धर्म है, फिर एक चुनौतीपूर्ण सवाल किया जाता है, जो विश्वास और मान्यता का कारण बनता है: ﴿وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً﴾ "और अल्लाह के रंग से बेहतर कौन हो सकता है।" क्या इस धर्म से बेहतर कोई धर्म है, एकेश्वरवाद, उपासना, सहूलियत और आचरण में। इससे सामाजिक, पारिवारिक और पेशेवर सुख की प्राप्ति होती है,

और इसी तरह व्यक्ति का सुख भी, जो इसमें गुणों को स्थापित करता है जो केवल इस धर्म द्वारा ही हो सकता है, और जो इसे ध्यान से देखता है, यह सुनिश्चित करता है कि यह अल्लाह का धर्म है, जिस पर विश्वास करना और उसे मान्यता देना आवश्यक है, ताकि यह उसे आखिरत के सुख तक पहुंचाए, जो हर विश्वास करने वाले का लक्ष्य होता है।

फिर क़ुरआनी बयान एक प्रश्नवाचक स्वरूप में आता है: ﴿وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ ٱللَّهِ صِبْغَةً﴾ "और अल्लाह के रंग से बेहतर कौन हो सकता है," ताकि यह साबित किया जा सके कि इससे बेहतर कोई धर्म नहीं है। इसे सामने लाओ, इसका वर्णन करो और इसकी तुलना करो, ताकि तुम साबित कर सको कि कोई और इससे बेहतर है। अगर इसकी वास्तविकता अस्तित्व में नहीं है, जो कि सच्चाई है, तो तुम्हारे सामने केवल वही है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरा है।

फिर आयत के अंत में यह तय होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके साथ के मोमिनों इस धर्म के अनुसार अल्लाह की उपासना करते हैं: ﴿وَنَحْنُ لَهُۥ عَٰبِدُونَ﴾ (हम तो उसी की इबादत (वंदना) करते हैं)। इस परिणाम में यह पुष्टि है कि ﴿وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ ٱللَّهِ صِبْغَةً﴾ "अल्लाह के रंग से बेहतर कोई नहीं है" कि इस धर्म से बेहतर कुछ नहीं है। इससे यह समझा जाता है कि हम इस धर्म के प्रति प्रतिबद्ध हैं, और तुम्हारे मामले में, तुम्हारी इच्छा है, जो इस धर्म को चाहता है उसके लिए यह है, और जिसने मना किया, उस पर तर्क स्थापित हो गया है।

फिर अल्लाह अपने नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कहता है: यहूदियों और ईसाइयों से कहो: ﴿قُلْ أَتُحَآجُّونَنَا فِى ٱللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَآ أَعْمَٰلُنَا وَلَكُمْ أَعْمَٰلُكُمْ وَنَحْنُ لَهُۥ مُخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾﴾ ((हे नबी!) कह दो कि क्या तुम हमसे अल्लाह के (एक होने के) विषय में झगड़ते हो, जबकि वही हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है? फिर हमारे लिए हमारा कर्म है और तुम्हारे लिए तुम्हारा कर्म है और हम तो बस उसी की इबादत (वंदना) करने वाले हैं) क़ुरआन की कई आयतों के संदर्भ को देखने वाला पाएगा कि वे काफिर को सत्य की ओर सत्य से मारते हैं, तर्कपूर्ण तरीके से, उनके तर्कों का विश्लेषण करते हैं और सही को स्थापित करते हैं, बिना किसी शक और संदेह के, केवल वही जो हृदय में दुराग्रह और अभिमान रखते हैं।

इस आयत में: अल्लाह अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहता है कि वह किताब वालों से कहे: क्या तुम हमसे ﴿فِى ٱللَّهِ﴾ "अल्लाह के बारे में" विवाद करते हो, अल्लाह के धर्म में, यह दावा करते हुए कि तुम हमसे उसके प्रति अधिक योग्य हो, उनके दावे के अनुसार

कि वे अल्लाह के पुत्र और प्यारे हैं, और इसी तरह अपने पूर्वजों और उनकी किताबों के पुराने होने के कारण। क्या तुम हमसे विवाद करते हो जबकि हमारा और तुम्हारा पालनहार एक है? और हर कोई अपने कार्यों के लिए पुरस्कृत होगा, तो पुराने धर्म का क्या प्रभाव है। और हम उसकी उपासना में समर्पित हैं, इसलिए कोई भी उसके सृष्टि में से उसके करीब नहीं हो सकता सिवाय उसकी आज्ञाकारिता और ईमानदारी के। इससे अल्लाह के प्रति ईमानदारी के महत्व का पता चलता है, और उपासना के कार्य को हर उस चीज़ से मुक्त करना जो इसे अल्लाह के अलावा किसी और के प्रति झुकाता है, जैसे बहुदेववाद और दिखावा। इससे यह भी पता चलता है कि असत्य के लोगों के साथ तर्क-वितर्क अच्छे तरीके से होना चाहिए, न कि हिंसा और बल से: ﴿وَلَنَآ أَعۡمَـٰلُنَا وَلَكُمۡ أَعۡمَـٰلُكُمۡ﴾ "हमारे कार्य हमारे लिए और तुम्हारे कार्य तुम्हारे लिए।

फिर अल्लाह उनकी इस दावे को खारिज करता है कि अंबिया यहूदी या ईसाई थे: ﴿أَمۡ تَقُولُونَ إِنَّ إِبۡرَٰهِـۧمَ وَإِسۡمَـٰعِيلَ وَإِسۡحَـٰقَ وَيَعۡقُوبَ وَٱلۡأَسۡبَاطَ كَانُواْ هُودًا أَوۡ نَصَـٰرَىٰۗ﴾ ((हे अहले किताब!) क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम, इस्माईल, इस्ह़ाक़, याक़ूब तथा उनकी संतान यहूदी या ईसाई थी?) यह दावा केवल झूठ हो सकता है। और इस मामले में सच्चाई केवल अल्लाह की ओर से हो सकती है: ﴿قُلۡ ءَأَنتُمۡ أَعۡلَمُ أَمِ ٱللَّهُۗ﴾ (उनसे कह दो कि तुम अधिक जानते हो अथवा अल्लाह?) यह उनके लिए एक पुष्टि और निंदा का प्रश्न है, क्योंकि इस बयान ने दावे को दो बातों में सीमित कर दिया: या तो तुम कहो: अल्लाह अधिक जानता है। और इसलिए तुमने अपने आपको झूठा कहा, तो तुम्हें उससे वापस आना चाहिए। या तो तुम कहो: तुम अल्लाह से अधिक जानते हो, और यह असंभव है। तो तुम्हारे सामने केवल वही है जो अल्लाह कहता है। और अल्लाह ने अपने मित्र इब्राहीम के यहूदी या ईसाई होने को खारिज किया है, जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरह आल -ए- इमरान में कहा है: ﴿مَا كَانَ إِبۡرَٰهِيمُ يَهُودِيّٗا وَلَا نَصۡرَانِيّٗا وَلَٰكِن كَانَ حَنِيفٗا مُّسۡلِمٗا﴾ "इब्राहीम न तो यहूदी थे, न ईसाई, बल्कि एक सच्चे मुस्लिम थे।" इससे यह समझ आता है कि आमंत्रित व्यक्ति की स्थिति को जानना महत्वपूर्ण है, उसकी शंकाओं को जानना, और उस पर तर्क प्रस्तुत करने की विधि को जानना।

फिर एक और चरण आता है जो दावा प्रस्तुत करने और असत्य के लोगों के असत्य को खारिज करने की विधि को स्पष्ट करता है: ﴿وَمَنۡ أَظۡلَمُ مِمَّن كَتَمَ شَهَٰدَةً عِندَهُۥ مِنَ ٱللَّهِۗ﴾ "और उससे अधिक अन्यायी कौन हो सकता है जो अल्लाह की ओर से प्राप्त गवाही को छिपाता है?" क्या उससे अधिक अन्यायी कोई हो सकता है जो अल्लाह की ओर से आई गवाही को छिपाता है? यह उनके लिए एक पुष्टि और निंदा का प्रश्न है, क्योंकि वे जानते हैं कि उन्होंने अपनी किताबों में जो ज्ञान छिपाया है। हसन अल-बसरी कहते हैं: वे अल्लाह की किताब में पढ़ते थे जिसे अल्लाह ने उन्हें दी थी कि धर्म इस्लाम है, और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं,

और इब्राहीम, इस्माइल, इसहाक, याकूब और उनके पुत्र यहूदी या ईसाई नहीं थे। उन्होंने इसके लिए अल्लाह की गवाही दी और अपने आप पर अल्लाह के लिए स्वीकार किया, फिर उन्होंने अल्लाह की गवाही को छिपा दिया।(1) यह उनकी धार्मिक स्थिति का बयान है, ताकि मुसलमान उनके मामलों और स्वभाव को जान सके। और इसके साथ ही उन पर तर्क स्थापित करने के लिए, और यह जानने के लिए कि ज्ञान के लोग दुराग्रही और विरोधी पर तर्क स्थापित करने की विधि को कैसे लागू करें, और जिनके पास शंका हो उन्हें भी।

फिर इस अल्लाह के बयान के बाद, आयत की समाप्ति चेतावनी और धमकी के साथ होती है कि अल्लाह का ज्ञान तुम्हारे कार्यों को घेरे हुए है: ﴿وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُونَ﴾ (और अल्लाह तुम्हारे करतूतों से अचेत तो नहीं है) यह अल्लाह के पद की स्तुति को न्यूनता के निषेध के तरीके से दर्शाता है, और अल्लाह के ज्ञान की पुष्टि करता है, उसके ज्ञान और मख़लूक़ के कार्य का ज्ञान। और यह संकेत करता है कि जो मख़लूक़ के कार्यों से अज्ञानी नहीं है, मख़लूक़ को उससे डरना चाहिए, उसके ज्ञान की व्यापकता के कारण, और उसे उसके ज्ञान और शक्ति के कारण प्रार्थना करनी चाहिए, मख़लूक़ की आवश्यकता के लिए। फिर अल्लाह उन लोगों के साथ संबंध की सच्चाई की पुष्टि करता है जो पहले की उम्मतों में से थे: ﴿تِلۡكَ أُمَّةٞ قَدۡ خَلَتۡۖ لَهَا مَا كَسَبَتۡ وَلَكُم مَّا كَسَبۡتُمۡۖ وَلَا تُسۡـَٔلُونَ عَمَّا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ١٤١﴾ (ये एक समुदाय था, जो जा चुका। उनके लिए उनका कर्म है तथा तुम्हारे लिए तुम्हारा कर्म है। तुमसे उनके कर्मों के बारे में प्रश्न नहीं किया जायेगा) यह आयत पहले भी आई है। इससे यह पुष्टि होती है कि व्यक्ति के लिए केवल वंश का दावा पर्याप्त नहीं है, बल्कि कार्य ही उसकी सच्चाई और स्थिति को साबित करता है, और वह इसके लिए पुरस्कृत होता है, और प्रत्येक के लिए उसके द्वारा कमाया गया भलाई और बुराई, आज्ञाकारिता और अवज्ञा होता है।

﴿۞ سَيَقُولُ ٱلسُّفَهَآءُ مِنَ ٱلنَّاسِ مَا وَلَّىٰهُمۡ عَن قِبۡلَتِهِمُ ٱلَّتِي كَانُواْ عَلَيۡهَاۚ قُل لِّلَّهِ ٱلۡمَشۡرِقُ وَٱلۡمَغۡرِبُۚ يَهۡدِي مَن يَشَآءُ إِلَىٰ صِرَٰطٖ مُّسۡتَقِيمٖ ١٤٢ وَكَذَٰلِكَ جَعَلۡنَٰكُمۡ أُمَّةٗ وَسَطٗا لِّتَكُونُواْ شُهَدَآءَ عَلَى ٱلنَّاسِ وَيَكُونَ ٱلرَّسُولُ عَلَيۡكُمۡ شَهِيدٗاۗ وَمَا جَعَلۡنَا ٱلۡقِبۡلَةَ ٱلَّتِي كُنتَ عَلَيۡهَآ إِلَّا لِنَعۡلَمَ مَن يَتَّبِعُ ٱلرَّسُولَ مِمَّن يَنقَلِبُ عَلَىٰ عَقِبَيۡهِۚ وَإِن كَانَتۡ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى ٱلَّذِينَ هَدَى ٱللَّهُۗ وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَٰنَكُمۡۚ إِنَّ ٱللَّهَ بِٱلنَّاسِ لَرَءُوفٞ رَّحِيمٞ ١٤٣﴾ [سورة البقرة:١٤٢-١٤٣].

(शीघ्र ही मूर्ख लोग कहेंगे कि उन्हें जिस क़िबले पर वे थे, उससे किस बात ने फेर दिया? (हे नबी!) उन्हें बता दो कि पूर्व और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। वह जिसे चाहे, सीधी राह पर

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (194)।

लगा देता है। और इसी प्रकार हमने तुम्हें मध्यवर्ती उम्मत (समुदाय) बना दिया; ताकि तुम, सबपर साक्षी बनो और रसूल तुमपर साक्षी हों और हमने वह क़िबला जिसपर तुम थे, इसीलिए बनाया था, ताकि ये बात खोल दें कि कौन (अपने धर्म से) फिर जाता है और ये बात बड़ी भारी थी, परन्तु उनके लिए नहीं, जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान (अर्थात बैतुल मक़्दिस की दिशा में नमाज़ पढ़ने) को व्यर्थ कर दे, वास्तव में अल्लाह लोगों के लिए अत्यंत करुणामय तथा दयावान् है)।

फिर क़ुरआनी आयतों का संदर्भ उन मूर्खों के कथनों की ओर बदलता है जो क़िबला के दिशा परिवर्तन के बारे में कहते हैं, और यह स्पष्ट करता है कि अल्लाह ने उन पर क्या आदेश दिया, जहां क़िबला की दिशा पहले बैतुल मकदस की ओर थी, फिर अल्लाह के आदेश से मक्का में स्थित काबा की ओर बदल गई, जो अल्लाह का पवित्र शहर है। अल्लाह ने उनके बारे में कहा: ﴿سَيَقُولُ ٱلسُّفَهَآءُ مِنَ ٱلنَّاسِ مَا وَلَّىٰهُمۡ عَن قِبۡلَتِهِمُ ٱلَّتِي كَانُواْ عَلَيۡهَاۚ﴾ (शीघ्र ही मूर्ख लोग कहेंगे कि उन्हें जिस क़िबले पर वे थे, उससे किस बात ने फेर दिया?) अल्लाह ने क़िबला के परिवर्तन का विरोध करने वालों को मूर्ख कहा, जो कमजोर और असमर्थ बुद्धि वाले हैं, और वे मदीना के यहूदी हैं, और जो भी ऐसा कहते हैं। और मूर्ख से अभिप्राय है: असमर्थ एवं कमजोर बुद्धि वाले लोग, और उनकी सोच वासनाओं और तर्क से नियंत्रित होती है। और वे सभी हैं जिन्होंने क़िबला की दिशा के परिवर्तन का विरोध किया, चाहे वे किताब वाले हों या अन्य अरब, मुनाफिक या मुशरिक हों। हालांकि उनके पास समझने की बुद्धि है, जिससे वे वस्तुओं और सच्चाइयों को समझते हैं, लेकिन उनकी सोच वासना, अभिमान या जिद के द्वारा नियंत्रित होती है, जिससे उनकी सोच ऐसे व्यक्ति की तरह होती है जिसकी बुद्धि कम और कमजोर हो गई है, और उनकी स्थिति गैर-समझदार लोगों जैसी हो गई है, और उनकी सोच मूर्खों की सोच के समान हो गई है।

यह इस बात को दर्शाता है कि कुछ लोग घटनाओं का इस्तेमाल करके फसाद उत्पन्न करते हैं, चाहे वह उम्मत के स्तर पर हो या उसकी सामाजिक मंडलियों के विभिन्न स्तरों पर हो, वे लोगों से उसी तरह बात करते हैं जैसे उन लोगों ने बात की जो अल्लाह ने वर्णन किया है, जो कहते हैं: ﴿مَا وَلَّىٰهُمۡ عَن قِبۡلَتِهِمُ ٱلَّتِي كَانُواْ عَلَيۡهَاۚ﴾ (उन्हें जिस क़िबले पर वे थे, उससे किस बात ने फेर दिया?) वे इस सवाल से शक उत्पन्न करते हैं, और विचार उत्पन्न करते हैं जो यकीन को हिला देते हैं, और मुसलमानों की पंक्तियों में फसाद उत्पन्न करते हैं। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि एक ऐसा सवाल जो फसाद और बुराई उत्पन्न करता है, कितना खतरनाक हो सकता है, और फसाद उत्पन्न करने वाला सवाल बुराई पैदा कर सकता है। और सवाल बुराई और फसाद उत्पन्न कर सकता है, जिससे सवाल के परिणामों का ध्यान रखना चाहिए, और क्या वह भलाई या बुराई उत्पन्न करेगा। लेकिन अल्लाह ने आकाश और पृथ्वी के पालनहार ने उन्हें ऐसा जवाब

दिया जो उन्हें खामोश कर देता है, वह अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहता है: ﴿قُل لِّلَّهِ ٱلۡمَشۡرِقُ وَٱلۡمَغۡرِبُۚ﴾ (उन्हें बता दो कि पूर्व और पश्चिम सब अल्लाह के हैं) बुद्धिमान व्यक्ति जानता और समझता है कि जिसके पास पूर्व और पश्चिम का मालिकाना है, वह जो चाहे दिशा का परिवर्तन और अदला-बदली कर सकता है, तो समस्या कहाँ है? वह अपने राज्य और अपने सेवकों पर जो चाहे नियंत्रण करता है।

यह इस बात की खतरनाक स्थिति को दर्शाता है कि फसाद और शक उत्पन्न करने वाले सवाल को उठाना, विशेषकर घटनाओं के समय में, स्थिरताओं पर संदेह करने के माध्यम से, और स्थिति को उसकी वास्तविकता से हटाकर गैर-स्वाभाविक और अस्वीकार्य के रूप में प्रस्तुत करना, जिससे मूर्ख इसे अपनाते हैं, और दुश्मन इसका दुरुपयोग करते हैं। और लाभों में से एक यह है कि अल्लाह मोमिनों को वैज्ञानिक प्रतिक्रिया की विधि सिखाता है जो मूर्ख को रोकता है, गुमराह को जवाब देता है, और मोमिनों के ईमान को बढ़ाता है। और लाभों में से एक यह भी है कि फसाद उत्पन्न करने वालों को बुद्धिमानी और निष्पक्ष जवाब से जवाब देना महत्वपूर्ण है, ताकि लोग अपनी समझ में वापस आ सकें, और वह मूर्ख जो फसाद उत्पन्न करता है, उसे रोक सके। और लाभों में से एक यह भी है जो इमाम कुरतबी ने कहा: इसमें यह स्पष्ट प्रमाण है कि अल्लाह के आदेशों में नासिख और मंसुख (पहले के आदेश को बदलने वाले आदेश) होते हैं, और इस पर उम्मत का सर्वसम्मति है सिवाय उन लोगों के जो इसके विपरीत सोचते हैं। और इसमें यह भी है कि जिसने नासिख को नहीं सुना, वह पहले आदेश का पालन करता है जब तक कि वह इसे सुने। और इसमें यह भी प्रमाण है कि क़ुरआन नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर एक-एक करके उतरा था।[1] और इसमें यह भी है कि क़ुरआन ने उम्मत के मामलों का समाधान किया, और यह रहमत और करुणा के साथ उतरा, जिससे बुराई दूर होती है, और भलाई और लाभ आता है: ﴿إِنَّ هَٰذَا ٱلۡقُرۡءَانَ يَهۡدِي لِلَّتِي هِيَ أَقۡوَمُ﴾ "निश्चित रूप से यह क़ुरआन सबसे सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन करता है।"

फिर अल्लाह उस मार्गदर्शन और सफलता के मामले की ओर ध्यान दिलाता है: ﴿يَهۡدِي مَن يَشَآءُ إِلَىٰ صِرَٰطٖ مُّسۡتَقِيمٖ﴾ (वह जिसे चाहे, सीधी राह पर लगा देता है) और यह बताता है कि अल्लाह ही है जिसने इस उम्मत को इस क़िबला की ओर मार्गदर्शन किया। और इसमें यह भी है कि अल्लाह का शरीअत सीधा और सत्य मार्ग है, जिसमें कोई विकृति नहीं है। और मार्गदर्शन अल्लाह के हाथ में है, इसलिए व्यक्ति को इसे अल्लाह से प्रार्थना और उसके प्रसन्नता का पालन करके, और उसकी अधीनता से मांगना चाहिए।

---

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 102)।

फिर अल्लाह इस धर्म की कुछ विशेषताओं को स्पष्ट करता है जिसने इस उम्मत को अन्य उम्मतों से विशिष्ट बनाया। अल्लाह ने कहा: ﴿وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِّتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا﴾ (और इसी प्रकार हमने तुम्हें मध्यवर्ती उम्मत (समुदाय) बना दिया; ताकि तुम, सबपर साक्षी बनो और रसूल तुमपर साक्षी हों) इस सीधा धर्म के माध्यम से यह उम्मत मध्यस्थता के गुण से वर्णित हो गई। और इससे उम्मत की प्रशंसा और स्तुति होती है, इस धर्म के माध्यम से, जिसने उन्हें अल्लाह की ओर से यह वर्णन प्राप्त कराया, जो न्याय, चयन और अच्छा है। उम्मत को मध्यस्थता के गुण से वर्णित करना प्रशंसा और स्तुति है। तो क़ुरैश अरब के सबसे मध्यम कुल थे, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने समुदाय के बीच मध्यम थे।[1] काबा पृथ्वी के केंद्र में है, और ह़दीस़ में है: "सर्वोत्तम कार्य माध्यम मार्ग अपनाने में है"।[2]

और अल्लाह के इस कथन में: ﴿قَالَ أَوْسَطُهُمْ﴾ (उनके बीच वाले ने कहा) अर्थात उनके सबसे न्यायी और अच्छे व्यक्ति ने कहा।[3] यह दर्शाता है कि एक मोमिन विश्वासी अपने रचयिता अल्लाह का आभार प्रकट करे कि उसने उसे इस उम्मत का हिस्सा बनाया जिसे इस विशेषता के साथ वर्णित किया गया है, और वह इस शरीअत का पालन करे और इससे विचलित न हो, ताकि वह इसकी मध्यस्थता में बने रहे, और इस महान विशेषता से विचलित न हो। क्योंकि यह हर चीज़ में मध्यस्थ है, इससे कठिनाई दूर हो जाती है, और यह स्वाभाविकता के अनुरूप होता है, और इसी प्रकार इसके सिद्धांतों और उद्देश्यों में उदारता होती है, जो अच्छे आचरण को प्रोत्साहित करती है, और बुरे आचरण से रोकती है, और इसमें क्रमिकता की विशेषता होती है, और न्याय इसकी नींव होती है, और यह अन्याय को ह़राम करती है, और कोमलता का आदेश देती है।

और इस विशिष्टता के साथ इस्लाम के लोग लोगों पर गवाह बनते हैं। एक बार एक जनाजा गुजरा और सहाबा ने उसकी प्रशंसा की, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: "यह अनिवार्य हो गया।" और एक और जनाजा गुजरा, और उनमें से कुछ ने कहा: "बुरा आदमी", तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा: "यह अनिवार्य हो गया।"[4] तथा अललामा इब्नुल जौज़ी [5] रह़िमहुल्लाह ने कहा है: इसका अर्थ है: "ताकि तुम नबियों के लिए

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 196)।

(3) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़्सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 138)।

(4) पिछला संदर्भ (1/ 138)।

(5) मुस्लिम (2/ 655) ह़दीस़ संख्या (949), तिर्मिज़ी (5/ 503) ह़दीस़ संख्या (3522)।

(1) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़्सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 138)।

उन की उम्मतों के विरुद्ध गवाही दो" और अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह रिवायत किया है की: "एक नबी क़यामत के दिन आएंगे, और उसके साथ एक आदमी होगा, और एक नबी आएंगे और उसके साथ दो आदमी होंगे, और एक नबी आएंगे और उसके साथ उससे अधिक लोग होंगे। उनसे पूछा जाएगा: 'क्या तुम को संदेश दिया गया था?' वे कहेंगे: 'नहीं।' नबी से पूछा जाएगा: 'क्या आपने उन्हें संदेश दिया?' वह कहेंगे: 'हां।' उनसे पूछा जाएगा: 'कौन आपकी गवाही देगा?' वह कहेंगे: 'मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उसकी उम्मत।' वे गवाही देंगे कि रसूलों ने संदेश पहुँचा दिया था। उनसे पूछा जाएगा: 'आपको कैसे पता चला?' वे कहेंगे: 'हमारे नबी ने हमें बताया कि रसूलों ने संदेश पहुँचा दिया था।' हमने उसे सत्य माना। यही अल्लाह का यह कथन है: ﴿لِّتَكُونُواْ شُهَدَآءَ عَلَى ٱلنَّاسِ﴾ (ताकि तुम, सबपर साक्षी बनो) और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हारे कार्यों पर गवाह देंगे"। इससे गवाही की महत्ता, अच्छा बनने की महत्ता, और संदेश को पहुँचाने की महत्ता का पता चलता है। और लाभों में से एक यह है: कि गवाह की सराहना होती है, और जिसकी गवाही स्वीकार की जाती है, वह इस बात का प्रमाण है कि वह न्यायी और सराहा हुआ है। तो कैसा है, जबकि अल्लाह ने इस उम्मत को दूसरों पर गवाह बनाया है, उनके नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गवाही के साथ। यह एक महान और महत्वपूर्ण सम्मान है।

फिर अल्लाह क़िबला के परिवर्तन की हिकमत को स्पष्ट करता है: ﴿وَمَا جَعَلۡنَا ٱلۡقِبۡلَةَ ٱلَّتِي كُنتَ عَلَيۡهَآ إِلَّا لِنَعۡلَمَ مَن يَتَّبِعُ ٱلرَّسُولَ مِمَّن يَنقَلِبُ عَلَىٰ عَقِبَيۡهِۚ وَإِن كَانَتۡ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى ٱلَّذِينَ هَدَى ٱللَّهُۗ﴾ (और हमने वह क़िबला जिसपर तुम थे, इसीलिए बनाया था, ताकि ये बात खोल दें कि कौन (अपने धर्म से) फिर जाता है और ये बात बड़ी भारी थी, परन्तु उनके लिए नहीं, जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है) अल्लाह क़िबला के परिवर्तन के द्वारा परीक्षण और कठिनाई की बात करता है, ताकि यह पता चल सके कि कौन अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेशों का पालन करता है, और कौन अपने धर्म से फिर जाता है। और यह बड़ा परीक्षण था, क़िबला के परिवर्तन के साथ, सिवाय उनके जिन्होंने ईमानदारी से मार्गदर्शन प्राप्त किया, और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई को मान्यता दी, और उनके दिल ने हर उस चीज़ को स्वीकार किया जो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आदेश दिया या उससे निषेध किया, या इसे किसी और से प्रतिस्थापित किया।

इससे पता चलता है कि परीक्षण ही विश्वास का मापदंड है, जो साबित होता है और जो फिर जाता है, और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम कई स्थितियों में परखे गए, और उनके बाद के लोग भी परखे गए, जैसा कि अल्लाह ने इस मुबारक सूरह में कहा है: ﴿وَلَنَبۡلُوَنَّكُم بِشَيۡءٖ مِّنَ ٱلۡخَوۡفِ

﴿وَٱلۡجُوعِ وَنَقۡصٖ مِّنَ ٱلۡأَمۡوَٰلِ وَٱلۡأَنفُسِ وَٱلثَّمَرَٰتِۗ﴾ "और हम तुम्हें डर, भूख, धन, जीवन और फलों की कमी से परखेंगे।" इसलिए, इस से मोमिनों के निकट अल्लाह तआला की ज़रूरत पता चलती है ताकि वह उन्हें स्थिर रखे, जैसा कि अल्लाह ने क़िबला से संबंधित आयत में कहा है: ﴿إِلَّا عَلَى ٱلَّذِينَ هَدَى ٱللَّهُۗ﴾ (सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन दिया)। और यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ में से था: "हे दिलों को बदलने वाले, मेरे दिल को अपने धर्म पर स्थिर रख।"(1) इस के लाभों में से एक यह है कि इनको पहचानना अल्लाह के लिए कठिन नहीं है, जो अपने बंदों के दिलों को जानता है, और जो वे करेंगे उससे पहले जानता है, लेकिन उनके प्रति तर्क स्थापित करने के लिए, और अल्लाह इस ब्रह्मांड का संचालन और प्रबंधन अपने निर्धारित नियमों के अनुसार करता है।

इस के अन्य लाभों में से एक यह है कि क़िबला का परिवर्तन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत का प्रमाण है, क्योंकि यदि वह नबी नहीं होते तो वह क़िबला के परिवर्तन से बचते, ताकि वह विरोध का सामना न करें, और उसकी परिणामों से बच सकें, लेकिन वह अल्लाह के आदेशों का पालन करने वाला बंदा थे, भले ही वह कुछ लोगों के लिए कठिन हो। और लाभों में से एक यह है कि शरीअत के आदेश के सामने कोई तर्क या बहस का स्थान नहीं है, ﴿وَإِن كَانَتۡ لَكَبِيرَةً﴾ (और ये बात बड़ी भारी थी), यह उन दिलों के लिए कठिन है जो अधूरी बुद्धि के साथ शरीअत के पूर्ण आदेश का पालन करना चाहते हैं। और जो शरीअत के आदेश को अपनी इच्छा और अधूरी सोच के ऊपर रखते हैं, उन्हें यह कठिन नहीं होता, क्योंकि अल्लाह ने उन्हें इस आदेश से बाहर रखा: ﴿وَإِن كَانَتۡ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى ٱلَّذِينَ هَدَى ٱللَّهُۗ﴾ (और ये बात बड़ी भारी थी, परन्तु उनके लिए नहीं, जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है) उन लोगों ने आदेश का पालन किया और अपने दिल में कोई कठिनाई महसूस नहीं की, क्योंकि उन्होंने जाना कि आदेश अल्लाह का है, और उसे कोई विरोध नहीं कर सकता, जैसा कि अल्लाह ने सूरह अल-अंबिया में फ़रमाया है: ﴿لَا يُسۡـَٔلُ عَمَّا يَفۡعَلُ وَهُمۡ يُسۡـَٔلُونَ ٢٣﴾ (वह जो करता है उससे सवाल नहीं किया जा सकता, लेकिन उनसे सवाल किया जाएगा)। इसलिए, एक समर्पित व्यक्ति यह सवाल नहीं करेगा कि अल्लाह ने ऐसा क्यों किया, इसे पहले क्यों किया, उसे बाद में क्यों किया, इसे इस पर क्यों किया, इसे क्यों दिया और इसके दर्जे को क्यों उठाया, और इसे उससे क्यों छीन लिया? जबकि अन्य उससे अधिक इसके हकदार थे। यह बुराई का निमंत्रण है, और समर्पण के विपरीत है। इसलिए, बुद्धि को कभी भी आदेश के ऊपर नहीं रखा जाना चाहिए। और अल्लाह के आदेशों, कार्यों, उसके फैसले और उसकी क़िस्मत पर सवाल नहीं उठाया जाना चाहिए, उसकी महानता की स्तुति हो।

(1) बुख़ारी, हदीस़ संख्या (4487), स़हीह इब्न -ए- माजह, हदीस़ संख्या (3476) तथा उपरोक्त शब्द उन्ही के हैं।

फिर अल्लाह अपने बंदों के प्रति अपनी न्याय को स्पष्ट करता है, और वह ज्ञान और दया के साथ कहता है: ﴿وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَٰنَكُمْۚ﴾ "अल्लाह तुम्हारे ईमान को व्यर्थ नहीं करेगा" जो लोग बैतुल मकदस की ओर नमाज़ पढ़ते थे और काबा की ओर क़िबला के परिवर्तन से पहले मर गए, उनके इनाम को व्यर्थ नहीं करेगा। बरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है: कुछ लोग जो बैतुल मकदिस की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ा करते थे उन की मृत्यु हो गई। लोगों ने पूछा: उनका क्या मामला होगा? तब अल्लाह ने यह आयत अवतरित की: ﴿وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَٰنَكُمْۚ﴾ "अल्लाह तुम्हारे ईमान को व्यर्थ नहीं करेगा।" और सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) का यह सवाल इस मामले में उनकी गहरी चिंता और उनके धर्म के प्रति सटीक अनुसरण को दर्शाता है, और उनके उन मुस्लिम भाइयों के प्रति प्रेम को जो उनसे पहले मर चुके थे। इससे उनके बाद वालों को उनके भाइयों से प्रेम करने की महत्ता का पता चलता है, भले ही वे उनके साथ न रहे हों और न देखे हों, और उनके लिए रहमत की दुआ करें। और अल्लाह ने हमें यह सिखाया है, जैसा कि उसने सूरा अल-हशर में कहा: "और जो उनके बाद आएंगे कहेंगे: ﴿وَٱلَّذِينَ جَآءُو مِنۢ بَعۡدِهِمۡ يَقُولُونَ رَبَّنَا ٱغۡفِرۡ لَنَا وَلِإِخۡوَٰنِنَا ٱلَّذِينَ سَبَقُونَا بِٱلۡإِيمَٰنِ وَلَا تَجۡعَلۡ فِي قُلُوبِنَا غِلّٗا لِّلَّذِينَ ءَامَنُواْ رَبَّنَآ إِنَّكَ رَءُوفٞ رَّحِيمٌ ١٠﴾ (हे हमारे रब, हमारे और हमारे उन भाइयों के गुनाह माफ कर, जो हमसे पहले ईमान लाए। और हमारे दिलों में उन लोगों के लिए कोई द्वेष न रख, जिन्होंने ईमान लाया। हे हमारे रब, तू दयालु और कृपालु है)।

फिर अल्लाह इस आयत को अपनी दया और कृपा के बयान के साथ समाप्त करता है, जैसा कि उसने कहा: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ بِٱلنَّاسِ لَرَءُوفٞ رَّحِيمٞ﴾ (वास्तव में अल्लाह लोगों के लिए अत्यंत करुणामय तथा दयावान् है) तो यह अल्लाह की विशेषताओं में से एक है, कि वह अत्यंत कृपालु और दयालु है। "रऊफ" शब्द अपने अंदर अत्यंत महान अर्थों को अपने अंदर छुपाए हुए है, इन में से कुछ का उल्लेख इब्नुल जौज़ी रहि़महुल्लाह ने किया है: "रऊफ" का अर्थ अत्यंत दयालु होता है, और "रहमान" का अर्थ व्यापक दया होती है। "रऊफ" विशेष है, और "रहमान" व्यापक है।[(1)] और जब ये दोनों शब्द एक साथ एकत्र हो जाएं तो इस के अर्थ का आप अंदाज़ा लगा सकते हैं: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ بِٱلنَّاسِ لَرَءُوفٞ رَّحِيمٞ﴾ (वास्तव में अल्लाह लोगों के लिए अत्यंत करुणामय तथा दयावान् है) तो उसकी दया और कृपा के कारण उसने रसूलों को भेजा, किताबों को अवतरित किया, धरती को फैलाया, और उन्हें हर भलाई से भरा हुआ रिज़्क दिया, और उनके गुनाहों की सजा को जल्दी नहीं लाया, ताकि वे लौटें, समझें और तौबा करें। अगर ऐसा न होता तो किसी के भी पापों और अल्लाह की आज्ञाओं का पालन न करने की

(1) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़्सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 140)।

मात्रा के कारण धरती पर कोई नहीं बचता। और यह सब लोगों के लिए सामान्य है, तो जब यह मामला मोमिनों से संबंधित हो, तो वह अत्यंत कृपालु और दयालु है। अल्लाह के प्रति कृतघ्नता का कोई कारण नहीं है, क्योंकि वह अत्यंत कृपालु और दयालु है। कैसे कोई उससे साझेदारी कर सकता है जबकि वह अत्यंत कृपालु और दयालु है? कैसे कोई उसका शुक्र न करे जबकि वह अत्यंत कृपालु और दयालु है? कैसे कोई उसका ज़िक्र न करे और उसे महिमा न दे जबकि वह अत्यंत कृपालु और दयालु है? कैसे कोई उसके प्रति झुके न जबकि वह अत्यंत कृपालु और दयालु है? कैसे कोई उसे पुकारे न जबकि वह अत्यंत कृपालु और दयालु है? कैसे कोई उससे आशा न रखे जबकि वह अत्यंत कृपालु और दयालु है? कैसे कोई उसे सम्मानित न करे जबकि वह अत्यंत कृपालु और दयालु है? ﴿إِنَّ ٱللَّهَ بِٱلنَّاسِ لَرَءُوفٞ رَّحِيمٞ﴾ (वास्तव में अल्लाह लोगों के लिए अत्यंत करुणामय तथा दयावान् है)। स़ह़ीह़ ह़दीस़ में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक क़ैदी महिला को देखा, जो अपने बच्चे को अपने पेट से लगाकर दूध पिला रही थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या तुम सोचते हो कि यह महिला अपने बच्चे को आग में फेंक देगी?" हमने कहा: "नहीं, यह कैसे अपने बच्चे को अग्नि में फेंक सकती है?" तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: "अल्लाह अपने बंदों के प्रति उससे अधिक दयालु है जितना यह महिला अपने बच्चे के प्रति है।"(1)

﴿قَدۡ نَرَىٰ تَقَلُّبَ وَجۡهِكَ فِي ٱلسَّمَآءِۖ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبۡلَةٗ تَرۡضَىٰهَاۚ فَوَلِّ وَجۡهَكَ شَطۡرَ ٱلۡمَسۡجِدِ ٱلۡحَرَامِۚ وَحَيۡثُ مَا كُنتُمۡ فَوَلُّواْ وُجُوهَكُمۡ شَطۡرَهُۥۗ وَإِنَّ ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ لَيَعۡلَمُونَ أَنَّهُ ٱلۡحَقُّ مِن رَّبِّهِمۡۗ وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا يَعۡمَلُونَ ١٤٤ وَلَئِنۡ أَتَيۡتَ ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ بِكُلِّ ءَايَةٖ مَّا تَبِعُواْ قِبۡلَتَكَۚ وَمَآ أَنتَ بِتَابِعٖ قِبۡلَتَهُمۡۚ وَمَا بَعۡضُهُم بِتَابِعٖ قِبۡلَةَ بَعۡضٖۚ وَلَئِنِ ٱتَّبَعۡتَ أَهۡوَآءَهُم مِّنۢ بَعۡدِ مَا جَآءَكَ مِنَ ٱلۡعِلۡمِ إِنَّكَ إِذٗا لَّمِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ١٤٥﴾

((हे नबी!) हम आपके मुख को बार-बार आकाश की ओर फिरते देख रहे हैं। तो हम अवश्य आपको उस क़िबले (काबा) की ओर फेर देंगे, जिससे आप प्रसन्न हो जायें। तो (अब) अपने मुख मस्जिदे ह़राम की ओर फेर लो तथा (हे मुसलमानों!) तुम भी जहाँ रहो, उसी की ओर मुख किया करो और निश्चय अह्ले किताब जानते हैं कि ये उनके पालनहार की ओर से सत्य है और अल्लाह उनके कर्मों से असूचित नहीं है। और यदि आप अह्ले किताब के पास प्रत्येक प्रकार की निशानी ला दें, तब भी वे आपके क़िबले का अनुसरण नहीं करेंगे और न आप उनके क़िबले का अनुसरण करेंगे और न उनमें से कोई दूसरे के क़िबले का अनुसरण करेगा और यदि ज्ञान आने के पश्चात् आपने उनकी आकांक्षाओं का अनुसरण किया, तो आप अत्याचारियों में से हो जायेंगे)।

(1) बुख़ारी (4/ 91) ह़दीस़ संख्या (5999)।

फिर अल्लाह कहता है: ﴿قَدْ نَرَىٰ تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي ٱلسَّمَآءِ ۖ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَىٰهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ ٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا۟ وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُۥ ۗ﴾ ((हे नबी!) हम आपके मुख को बार-बार आकाश की ओर फिरते देख रहे हैं। तो हम अवश्य आपको उस क़िबले (काबा) की ओर फेर देंगे, जिससे आप प्रसन्न हो जायें। तो (अब) अपने मुख मस्जिदे ह़राम की ओर फेर लो) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपना चेहरा बार-बार आसमान की ओर उठाते थे, यह इंतजार करते हुए कि अल्लाह तआला क़िबला बदलने का हुक्म देगा। पहले आप लगभग सोलह या सत्रह महीने[1] बैतुल मक़दिस की ओर रुख करके नमाज़ पढ़ते रहे। फिर यह हुक्म आया कि क़िबला यहूदियों से अलग हो और मक्का मुअज़्ज़मा की ओर हो जाए, जो कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम का क़िबला था। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि इस्लाम की विशिष्टताओं पर गर्व करना और इसे काफ़िरों के धर्म, उनके रिवाजों और परंपराओं की नक़ल करने से बचाना चाहिए, विशेषकर ऐसे कार्य जिनमें कोई लाभ न हो या जो काफ़िरों की शक्ति और मनोबल को बढ़ाते हों, और जिनसे मुसलमानों का कोई फायदा न हो। अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल के हालात और उनकी तमन्नाओं को देखा और जाना। क़ुरआन की आयत: ﴿قَدْ نَرَىٰ تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي ٱلسَّمَآءِ﴾ इसका प्रमाण है कि अल्लाह अपने बंदों को देखता है। लेकिन इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्मान और उनकी मनोकामना पूरी होने की विशेषता बताई गई है। फिर आयत: ﴿فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَىٰهَا﴾ में बताया गया कि अल्लाह तआला ने आपको उस क़िबला की ओर मुख करने का आदेश दिया जिससे आप संतुष्ट हों। यह न केवल नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सम्मान है, बल्कि इस्लाम और मुसलमानों के लिए भी एक विशेष सम्मान और गौरव है। आगे बताया गया कि ﴿فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ ٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُۥ﴾ अर्थात "मुसलमान चाहे जहाँ भी हों, अपनी नमाज़ के दौरान मस्जिद-ए-ह़राम की ओर रुख करें। और जो लोग मस्जिद-ए-ह़राम के अंदर हों, वे काबा की ओर अपना चेहरा करें। यह अल्लाह तआला की ओर से मुसलमानों के लिए एक बहुत बड़ी और अनमोल नेमत है।

जहाँ तक नफ़्ल नमाज़ में मुसाफिर, अज्ञानियों और उन लोगों की बात है जो किसी कारण से क़िबला की दिशा जानने में असमर्थ हैं, उनकी स्थिति के बारे में फिक़्ह और तफ़सीर की किताबों में विस्तार से चर्चा की गई है।

फिर अल्लाह तआला यहूदियों और ईसाइयों का क़िबला बदलने के मामले में हाल बयान करता है: ﴿وَإِنَّ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَـٰبَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ﴾ (जिन्हें किताब दी गई है,

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 107)।

वे जानते हैं कि यह उनके रब की ओर से सत्य है) यह अल्लाह तआला की ओर से स्पष्ट बयान है, जो हर छिपी बात को जानता है। वह जानता है कि ये लोग यह सत्य छुपाते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के नबी और रसूल हैं। और इसलिए वे यह भी जानते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी इच्छा से कुछ नहीं बदलते, बल्कि अल्लाह के हुक्म से ही बदलाव करते हैं। इब्न -ए- कसीर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं: "यहूद, जिन्होंने तुम्हारा काबा की ओर रुख करना और बैतुल मक़दिस से मुंह मोड़ना नापसंद किया, वे जानते हैं कि अल्लाह तआला ने आपको काबा की ओर मोड़ा है। क्योंकि उनके ग्रंथों में उनके नबियों द्वारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुण और विशेषताएँ लिखी हुई हैं।"(1)

फिर अल्लाह तआला अपने बारे में एक महान सत्य को बयान करता है, जो ईमानवालों के अक़ीदे की बुनियाद है। फ़रमाता है: ﴿وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ﴾ (अल्लाह उनके कर्मों से बेखबर नहीं है) यह बयान इस बात को पुष्ट करता है कि अल्लाह तआला, जिसे इंसान भूल जाता है या नजरअंदाज करता है, उससे पूरी तरह पाक है। अल्लाह हर चीज़ का व्यापक ज्ञान और पूर्ण घेरा रखता है, जैसा कि क़ुरआन में फ़रमाता है: ﴿وَمَا يَعْزُبُ عَن رَّبِّكَ مِن مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي ٱلْأَرْضِ وَلَا فِي ٱلسَّمَآءِ وَلَآ أَصْغَرَ مِن ذَٰلِكَ وَلَآ أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَٰبٍ مُّبِينٍ﴾ फिर अल्लाह तआला यहूदियों और ईसाइयों के हठ और अड़ियल स्वभाव को बयान करता है: ﴿وَلَئِنْ أَتَيْتَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ بِكُلِّ ءَايَةٍ مَّا تَبِعُوا۟ قِبْلَتَكَ﴾ (अगर आप उन्हें हर तरह का प्रमाण दे दें, तब भी वे आपके क़िबला का अनुसरण नहीं करेंगे) मदीना और नजरान में रहने वाले अहल -ए- किताब का रवैया इसी बात का प्रमाण है। फिर अल्लाह फ़रमाता है: ﴿وَمَآ أَنتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ﴾ (आप उनकी क़िबला का अनुसरण नहीं करेंगे) यहूदियों का क़िबला बैतुल मक़दिस है, और ईसाइयों का क़िबला पूरब की ओर है, जो अपने नबी ईसा अलैहिस्सलाम के क़िबला बैतुल मक़दिस से भिन्न है। इस प्रकार वे खुद अपने क़िबला में एकमत नहीं हैं। तो वे अरब के नबी के क़िबला का अनुसरण क्यों करेंगे?

फिर अल्लाह तआला यह स्पष्ट करता है कि ये लोग अपनी इच्छाओं (अहवा) के गुलाम हैं, और जो कोई उनकी इच्छाओं का अनुसरण करेगा, वह अपनी आत्मा पर अत्याचार करने वाला होगा: ﴿وَلَئِنِ ٱتَّبَعْتَ أَهْوَآءَهُم مِّنۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ ٱلْعِلْمِ إِنَّكَ إِذًا لَّمِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾ यह उस सत्य के खिलाफ जाने की चेतावनी है जिसे अल्लाह तआला ने स्पष्ट किया है। जो इसे ठुकराएगा, वह ज़ालिमों में से होगा। यह संकेत करता है कि अल्लाह के आदेश का उल्लंघन करना कितना गंभीर है, और यह चेतावनी इसलिए और भी गंभीर हो जाती है क्योंकि यह सीधे

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 199)।

तौर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को संबोधित है। हालांकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी ऐसा कार्य नहीं कर सकते जो उन्हें ज़ालिम बनाए, लेकिन यह चेतावनी उनकी उम्मत के लिए है। यह चेतावनी तब दी गई जब अल्लाह तआला ने स्पष्ट ज्ञान प्रदान किया: ﴿مِّنۢ بَعۡدِ مَا جَآءَكَ مِنَ ٱلۡعِلۡمِ﴾ इससे यह सिद्ध होता है कि मना करना और चेतावनी देना हमेशा जानकारी देने के बाद ही होता है। साथ ही यह भी प्रमाणित होता है कि यह धर्म (इस्लाम) ज्ञान और महान सत्य पर आधारित है। इसमें शरीअत, इबादतें, ईमान, अच्छे आचरण, हर प्रकार की बीमारियों से शिफा और राहत, मज़बूत किला, ताकत और मज़बूत रस्सी (सहारा) मौजूद हैं। यह वही है जिसके द्वारा अल्लाह ने दिलों की गहराइयों को और उम्मतों की हालात को उजागर किया। इसमें ऐसे चमत्कार और स्पष्टता है जो सत्य और भलाई के मार्ग को साफ़ करती हैं। यह धर्म ऐसे गुणों और नेमतों से भरा हुआ है, जिन्हें सोचकर समझ पाना और कलम से लिख पाना असंभव है। इसीलिए हर प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है, वह तबारक और तआला (मंगलकारी तथा सर्वोच्च) है।

अल्लाह तआला के इस कथन: ﴿لَّمِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾ में प्रमाण है कि वे लोग (जो इस्लाम और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विरोध करते हैं) गुमराही और बड़े अन्याय में हैं। यह उनके विपरीत है, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और ईमान वालों के साथ हैं: मार्गदर्शन, सत्य, ज्ञान, स्पष्टता और महान धर्म। वे लोग गुमराही और बड़े अन्याय में हैं, और जो उनमें शामिल होगा, वह भी उन्हीं में गिना जाएगा। इसमें हर मुसलमान के लिए यहूदियत, नसरानियत (ईसाइयत) और उन सभी धर्मों से बचने का मार्गदर्शन है, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाए हुए धर्म के अलावा हैं।

क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने के बाद, अल्लाह तआला किसी अन्य धर्म को स्वीकार नहीं करेगा: ﴿مِّنۢ بَعۡدِ مَا جَآءَكَ مِنَ ٱلۡعِلۡمِ﴾ (यदि ज्ञान आने के पश्चात्)।

﴿ٱلَّذِينَ ءَاتَيۡنَٰهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ يَعۡرِفُونَهُۥ كَمَا يَعۡرِفُونَ أَبۡنَآءَهُمۡۖ وَإِنَّ فَرِيقٗا مِّنۡهُمۡ لَيَكۡتُمُونَ ٱلۡحَقَّ وَهُمۡ يَعۡلَمُونَ ١٤٦ ٱلۡحَقُّ مِن رَّبِّكَۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡمُمۡتَرِينَ ١٤٧ وَلِكُلّٖ وِجۡهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَاۖ فَٱسۡتَبِقُواْ ٱلۡخَيۡرَٰتِۚ أَيۡنَ مَا تَكُونُواْ يَأۡتِ بِكُمُ ٱللَّهُ جَمِيعًاۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ١٤٨﴾ [سورة البقرة:١٤٦-١٤٨].

(जिन्हें हमने पुस्तक दी है, वे आपको ऐसे ही पहचानते हैं, जैसे अपने पुत्रों को पहचानते हैं और उनका एक समुदाय जानते हुए भी सत्य को छुपा रहा है। सत्य वही है, जो आपके पालनहार की ओर से उतारा गया। अतः, आप कदापि संदेह करने वालों में न हों। प्रत्येक के लिए एक दिशा है, जिसकी ओर वह मुख कर हा है। अतः तुम भलाईयों में अग्रसर बनो। तुम

जहाँ भी रहोगे, अल्लाह तुम सभी को (प्रलय के दिन) ले आयेगा। निश्चय अल्लाह जो चाहे, कर सकता है)।

फिर अल्लाह तआला ऐसी सच्चाइयों को स्पष्ट करता है जो केवल वह्य (प्रकाशना) के माध्यम से ही जानी जा सकती हैं: ﴿ٱلَّذِينَ ءَاتَيۡنَٰهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ يَعۡرِفُونَهُۥ كَمَا يَعۡرِفُونَ أَبۡنَآءَهُمۡۖ وَإِنَّ فَرِيقٗا مِّنۡهُمۡ لَيَكۡتُمُونَ ٱلۡحَقَّ وَهُمۡ يَعۡلَمُونَ ١٤٦﴾ अहल-ए-किताब (यहूदी और ईसाई) जानते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबी हैं, क्योंकि उनके पास ऐसी विशेषताएँ और विवरण हैं जो उनकी अज्ञानता को पूरी तरह दूर कर देते हैं। यहां तक कि उनकी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में पहचान, उनके अपने बेटों के प्रति पहचान के समान है। यह कुरआनी वर्णन की सटीकता को दर्शाता है, जो किसी इंसान द्वारा जानी नहीं जा सकती, बल्कि केवल वह्य (ईश्वरीय प्रकाशना) के द्वारा। इसलिए, वे जानते हैं कि क़िबला (मक्का की दिशा) की सच्चाई वही (ईश्वरीय आदेश) है, और यह उनकी पूर्ण और निश्चित जानकारी है, जिसे कोई चीज झुठला नहीं सकती। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वह् (अल्लाह की प्रकाशना) के सिवा कुछ नहीं कहते।

फिर उनमें से एक समूह उस सत्य को छुपा देता है जिसे वे निश्चित रूप से जानते हैं। इससे पता चलता है कि द्वेष और घमंड इंसान को ज़िद, दुराग्रह और ज्ञात सत्य को छुपाने पर मजबूर कर सकता है। यह हर मुसलमान से मांग करता है कि वह इस गंभीर बीमारी की गंभीरता को समझे। जब इसका प्रभाव धर्म में इतना घृणित हो सकता है, तो सोचिए सामाजिक व्यवहार और अधिकारों के निर्वहन में इसका क्या प्रभाव होगा। यह इंसान को सत्य से मौन रहने या इसे छुपाने पर मजबूर कर सकता है, क्योंकि वह देखता है कि यह उसकी इच्छाओं से मेल नहीं खाता, या उसे ऐसे स्थान पर रखता है जो उसे पसंद नहीं।

इस गंभीर बीमारी से बचाव के लिए दो चीजें जरूरी हैं: अल्लाह तआला से इस बुराई से सुरक्षा की दुआ करना। अपने नफ्स (आत्मा) को विनम्रता और सत्य को स्वीकारने का अभ्यस्त बनाना। सत्य को स्वीकारने और इसके आगे झुकने की आदत डालना, और अपने नफ्स को उसके दुराचार में साथ न देना।

यह द्वेष, जो घमंड और ईर्ष्या से मिलकर बना है, अहल-ए-किताब को सत्य छुपाने पर उकसाता था, जिसे वे अल्लाह तआला की ओर से जानते थे: ﴿ٱلۡحَقُّ مِن رَّبِّكَۖ﴾ चाहे इसका मतलब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत हो या अल्लाह के घर (काबा) की दिशा की सच्चाई।

फिर अल्लाह तआला अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों को यह आश्वासन देता है कि वे जो रास्ता अपना रहे हैं वह सत्य है, और इसके विपरीत न चलने की हिदायत देता है: ﴿فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ ٱلْمُمْتَرِينَ﴾ अतः सत्य के साथ दृढ़ रहो, और यह जान लो कि तुम जिस मार्ग पर हो, वह सत्य और निश्चित ज्ञान पर आधारित है। इसके अलावा, यह आदेश हर प्रकार के शैतानी संदेह को दूर करने के लिए है, जो इंसान और जिन्न शैतानों द्वारा मुसलमान के दिल में पैदा किया जा सकता है। सत्य के विरुद्ध न चलने का आदेश, सत्य पर दृढ़ता के आदेश का संकेत देता है। यह मुसलमानों को अन्य धर्मों और उनके अनुयायियों के साथ मिलने-जुलने में भी सतर्क रहने का संदेश देता है।

फिर अल्लाह किताब वालों के मामले में निर्णय करता है, और सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह मुसलमानों को उनकी प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करने का निर्देश देता है: ﴿وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا﴾ "हर एक का एक लक्ष्य होता है, वह उसकी ओर मुड़ता है।" तो हर किसी की एक क़िबला है जिसकी ओर वह मुड़ता है, जिसका अर्थ है कि उनसे व्यस्त न रहो, क्योंकि वे तुम्हारे विरोधी हैं, और तुम्हें भलाई के कार्यों में तेजी से आगे बढ़ना चाहिए: ﴿فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ﴾ "भलाई में जल्दी करो।" और "﴿الْخَيْرَاتِ﴾भलाई" का मतलब इस्लाम द्वारा लाई गई विभिन्न प्रकार की भलाईयों का संग्रह है, जिसकी ओर वे तेजी से बढ़ते हैं जो इसकी वास्तविक कीमत और मूल्य को जानते हैं। और इस धर्म के कार्यों, कथनों और दिल के विश्वासों को "भलाईयों" के रूप में नाम देना, इसका मतलब है कि इस धर्म के सभी नियम भलाई हैं, जिन्हें मुस्लिमों को प्राप्त करने में तेजी करनी चाहिए।

और वाक्य ﴿فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ﴾ "भलाई में जल्दी करो" का मतलब है कि यह एक शक्ति है जो मोमिनों को हर स्थिति में मजबूत करती है। अगर उसे कंजूसी और लालच आती है, तो वह इसे ﴿فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ﴾ "भलाई में जल्दी करो" कहकर दूर करता है। अगर वह उपासना से सुस्ती करता है, तो वह इसे ﴿فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ﴾ "भलाई में जल्दी करो" कहकर मजबूत करता है। अगर वह सच्चाई कहने से रुकता है, तो वह कहता है: ﴿فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ﴾ "भलाई में जल्दी करो" " अगर उसे अपने मुस्लिम भाई से ईर्ष्या होती है, तो वह इसे ﴿فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ﴾ "भलाई में जल्दी करो" कहकर निकालता है। अगर वह भलाई और कमी के बीच संकोच करता है, तो वह ﴿فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ﴾ "भलाई में जल्दी करो" याद करता है। यह एक मजबूत आधार है जिससे हर बुराई को रोका जाता है, और हर भलाई की ओर बढ़ा जाता है।

फिर अल्लाह अपनी महान आयत के अंत में अपनी शक्ति को स्पष्ट करते हुए कहता है: ﴿أَيۡنَ مَا تَكُونُواْ يَأۡتِ بِكُمُ ٱللَّهُ جَمِيعًاۚ﴾ (तुम जहाँ भी रहोगे, अल्लाह तुम सभी को (प्रलय के दिन) ले आयेगा) अल्लाह यह आखिरी दिन की याद दिलाने के लिए कहता है, जिस दिन वह सभी को इकट्ठा करेगा, मुसलमानों और काफिरों को। यह अल्लाह के मार्गदर्शन का उद्दंडों के लिए चेतावनी और मोमिनों के लिए प्रोत्साहन है कि वे उस अंतिम दिन के लिए कार्य करें जब अल्लाह सभी सृष्टियों को इकट्ठा करेगा। इस के लाभों में से एक यह है कि: अल्लाह के इस कथन में: ﴿يَأۡتِ بِكُمُ ٱللَّهُ جَمِيعًاۚ﴾ (अल्लाह तुम सभी को (प्रलय के दिन) ले आयेगा) उसकी दिव्य शक्ति का प्रमाण है। और इसमें इंसानों के लिए किसी प्रकार की स्वतंत्रता का निषेध है, और छिपने की कोई चालाकी नहीं है। यह मृत्यु के बाद पुनरुत्थान और हिसाब का प्रमाण है, ताकि व्यक्ति यह जान सके कि वह अपने रब की ओर लौट रहा है। इसमें पाप से डर और आज्ञाकारिता का प्रोत्साहन है, तो इस कथन में: ﴿يَأۡتِ بِكُمُ ٱللَّهُ جَمِيعًاۚ﴾ डर और प्रोत्साहन एक साथ हैं।फिर अल्लाह कहता है: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ﴾ (निश्चय अल्लाह जो चाहे, कर सकता है)। इसमें अल्लाह तआला की सामर्थ्य का वर्णन और याद दिलाना है कि वह सृष्टि को फिर से इकट्ठा करने, पुनः निर्माण करने, क़यामत के दिन उठाने, हिसाब-किताब लेने और बदला देने पर सक्षम है।

﴿وَمِنۡ حَيۡثُ خَرَجۡتَ فَوَلِّ وَجۡهَكَ شَطۡرَ ٱلۡمَسۡجِدِ ٱلۡحَرَامِۖ وَإِنَّهُۥ لَلۡحَقُّ مِن رَّبِّكَۗ وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُونَ ١٤٩ وَمِنۡ حَيۡثُ خَرَجۡتَ فَوَلِّ وَجۡهَكَ شَطۡرَ ٱلۡمَسۡجِدِ ٱلۡحَرَامِۚ وَحَيۡثُ مَا كُنتُمۡ فَوَلُّواْ وُجُوهَكُمۡ شَطۡرَهُۥ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيۡكُمۡ حُجَّةٌ إِلَّا ٱلَّذِينَ ظَلَمُواْ مِنۡهُمۡ فَلَا تَخۡشَوۡهُمۡ وَٱخۡشَوۡنِي وَلِأُتِمَّ نِعۡمَتِي عَلَيۡكُمۡ وَلَعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُونَ ١٥٠﴾ [سورة البقرة:١٤٩-١٥٠].

(और आप जहाँ भी निकलें, अपना मुख मस्जिदे ह़राम की ओर फेरें। निःसंदेह ये आपके पालनहार की ओर से सत्य (आदेश) है और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से असूचित नहीं है। और आप जहाँ से भी निकलें, अपना मुख मस्जिदे ह़राम की ओर फेरें और (हे मुसलमानों!) तुम जहाँ भी रहो, अपने मुखों को उसी की ओर फेरो; ताकि उन्हें तुम्हारे विरुध्द किसी विवाद का अवसर न मिले, मगर उन लोगों के अतिरिक्त, जो अत्याचार करें। अतः उनसे न डरो। मुझी से डरो और ताकि मैं तुमपर अपना पुरस्कार (धर्म विधान) पूरा कर दूँ और ताकि तुम सीधी डगर पाओ)।

क़िब्ले (प्रार्थना की दिशा) के विषय में बातचीत जारी रखते हुए, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَمِنۡ حَيۡثُ خَرَجۡتَ فَوَلِّ وَجۡهَكَ شَطۡرَ ٱلۡمَسۡجِدِ ٱلۡحَرَامِۖ﴾ (और आप जहाँ भी निकलें, अपना मुख मस्जिदे ह़राम की ओर फेरें)।

यह काबे की ओर रुख करने का तीसरा हुक्म है। **पहला आदेश:** अल्लाह ने फ़रमाया:﴿قَدْ نَرَىٰ تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي ٱلسَّمَآءِ ۖ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَىٰهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ ٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ ۚ﴾ (हमने आसमान की तरफ़ आपका बार-बार चेहरा उठाना देखा। अब हम आपको वह क़िब्ला देंगे, जिससे आप संतुष्ट हो जाएंगे। तो अपना चेहरा मस्जिद-ए-ह़राम की तरफ़ कर लें)। यह आदेश पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उस ख़्वाहिश के संदर्भ में है, जो उन्होंने व्यक्त की थी। **दूसरा आदेश:** ﴿وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ ٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ ۖ وَإِنَّهُۥ لَلْحَقُّ مِن رَّبِّكَ ۗ﴾ (और जहां से भी आप निकलें, अपना चेहरा मस्जिद-ए-ह़राम की तरफ़ कर लें। और यह आपके रब की ओर से सत्य है)। यह आदेश यह स्पष्ट करता है कि काबे की तरफ़ रुख करना सत्य है, और यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इच्छा के साथ मेल खाता है, जो अल्लाह की इच्छा के अनुसार है। अल्लाह इससे प्रसन्न है। **तीसरा आदेश:** ﴿وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ ٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا۟ وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُۥ﴾ (और जहां से भी आप निकलें, अपना चेहरा मस्जिद-ए-ह़राम की तरफ़ करें। और तुम जहां कहीं भी हो, अपना चेहरा उसकी ओर करो)। यह आदेश मुसलमानों को आम तौर पर निर्देश देता है कि वे जहां भी हों, मस्जिद-ए-ह़राम की ओर अपना रुख करें। फिर यह आयत एक बड़ी उपयोगिता और महान परिणाम को स्पष्ट करती है, अर्थात: ﴿لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ﴾ (ताकि लोगों के पास तुम पर कोई दलील न रह जाए)। अल्लाह तआला ने इस क़िब्ला (काबा) के माध्यम से विरोधियों, विशेषकर यहूदियों की दलील को समाप्त कर दिया, जो इस बात का आधार बनाकर यह दावा करते थे कि पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनका क़िब्ला (बैतुल मुक़द्दस) की ओर रुख़ करके उनका अनुसरण करते हैं। जबकि वे जानते थे कि उनकी किताबों में यह दर्ज है कि उन्हें क़िब्ला इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ओर, अर्थात काबा की ओर मोड़ा जाएगा।

इसी तरह अरब के मुश्रिकों की दलील भी समाप्त हो गई, जब पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बैतुल मुक़द्दस से काबा, जो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का क़िब्ला है, की ओर रुख़ कर लिया। वे काबा का सम्मान करते थे और उन्हें यह पसंद आया कि पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने काबा की ओर रुख़ किया।(1)

इससे बहुत भला हुआ, क्योंकि अरब की दलील समाप्त हो गई, और यहूदियों के सामने स्पष्ट हो गया कि इस नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का क़िबला इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का क़िबला है, मक्का की ओर। और वह उनकी क़िबला का अनुयायी नहीं है। यह मोमिनों (विश्वासियों) के लिए धार्मिक शक्ति थी। और उन लोगों के लिए परीक्षा जिनके

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 201)।

दिल में बीमारी थी। अल्लाह के पास आदेश, निषेध और आदेश के बाद की हिकमत है। इस तरह, यहूदियों और अरब के मुशरिकों के पास कोई तर्क नहीं बचा, सिवाय उन लोगों के जिनके दिल में बीमारी थी, उन्होंने अपने आप पर अत्याचार किया और सत्य से भटक गए: ﴿لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ﴾ (ताकि उन्हें तुम्हारे विरुध्द किसी विवाद का अवसर न मिले, मगर उन लोगों के अतिरिक्त, जो अत्याचार करें) ऐसे लोगों से न डरो: ﴿فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي﴾ (अतः उनसे न डरो, मुझी से डरो) अपने किसी भी डर को केवल अल्लाह के लिए रखो। इसमें मोमिनों के लिए सांत्वना और आश्वासन है, उनसे कोई भय और डर नहीं, उनकी तुच्छ हरकतों और जिद्दीपन के कारण। और वे अपने इच्छाओं तक नहीं पहुँचेंगे, तो अपनी डर को सृष्टिकर्ता अल्लाह के लिए रखो। मोमिनों (विश्वासियों) का डर केवल अल्लाह से होना चाहिए, जो सभी मख़लूक़ों (सृष्टि) के डर को खत्म करता है। जब लोग अधिकार में होते हैं, अल्लाह उन्हें उनके अन्याय के कारण समर्थन देता है। अन्यायकारी अपने अन्याय के कारण अल्लाह से डरता है। और जब मोमिनों के पास तर्क होता है, तो वे केवल अल्लाह से डरते हैं। इसमें मोमिनों के लिए पुष्टि और ताक़त है। और यहूदियों पर उनकी विजय का संकेत है, क्योंकि जिनसे तुम न डरते हो, उनकी शक्ति से भी नहीं डरते, और तुम उन पर विजय प्राप्त करोगे।

इस के लाभों में से एक यह भी है कि दिशा-निर्देशों में क्रमबद्धता और मानसिक पहलुओं का उपचार, पुष्टि और पुनरावृत्ति के माध्यम से होता है, जैसा कि इमाम क़ुर्तुबी रह़िमहुल्लाह ने कहा है: यह काबा की दिशा का सामना करने और इसके महत्व पर जोर देने के लिए निर्देश का पुष्टि है, क्योंकि परिवर्तन की स्थिति उनके दिलों में बहुत मुश्किल थी।[1]

और विद्वानों द्वारा निकाले गए और समझे गए लाभों में से एक यह भी है, जैसा कि इब्न -ए- कस़ीर और अन्य ने उल्लेख किया है[2], वो ये हैं: यह आयत उन लोगों के लिए है जो काबा को देख सकते हैं। दूसरी आयत उन लोगों के लिए है जो मक्का में हैं लेकिन काबा से दूर हैं और इसे नहीं देख सकते। तीसरी आयत उन लोगों के लिए है जो अन्य देशों में हैं। जो काबा को देख सकते हैं, वे अपनी आँखों से उसकी दिशा का सामना करते हैं। जो मक्का में हैं, वे मस्जिद ह़राम की ओर मुड़ते हैं, और जो अन्य देशों में हैं, वे मक्का की ओर मुड़ते हैं।

इस क़िब्ला (काबा) के निर्धारण से एक महान और अनमोल नेमत पूरी हुई, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ﴾ "ताकि मैं अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दूँ और शायद तुम मार्गदर्शन प्राप्त करो।" इस्लाम के अनुयायियों के लिए काबा

(2) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 113)।

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 200)।

को क़िब्ला बनाना अल्लाह की एक महान नेमत थी, जिसे उसने अपनी दया और कृपा से पूरी किया। यह नेमत ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन और सफलता का एक ज़रिया बनी। इस महान आदेश ने अनगिनत नेमतों और आशीर्वादों का मार्ग प्रशस्त किया। इस क़िब्ला की नेमत को समझने की आवश्यकता है, क्योंकि यह पहला घर है जिसे इंसानों के लिए बनाया गया। यह घर अल्लाह ने कई विशेषताओं और आशीर्वादों से विभूषित किया है, जैसे कि इसमें नमाज़ का सवाब बढ़ा दिया जाता है, और ज़मज़म के पानी को पीने से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है। यह काबा इस्लाम के अनुयायियों के लिए एकता और समर्पण का केंद्र है।

﴿كَمَآ أَرۡسَلۡنَا فِيكُمۡ رَسُولٗا مِّنكُمۡ يَتۡلُواْ عَلَيۡكُمۡ ءَايَٰتِنَا وَيُزَكِّيكُمۡ وَيُعَلِّمُكُمُ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمۡ تَكُونُواْ تَعۡلَمُونَ ١٥١ فَٱذۡكُرُونِيٓ أَذۡكُرۡكُمۡ وَٱشۡكُرُواْ لِي وَلَا تَكۡفُرُونِ ١٥٢﴾ [سورة البقرة:١٥١-١٥٢].

(जिस प्रकार हमने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से एक रसूल भेजा, जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता तथा तुम्हें शुध्द आज्ञाकारी बनाता है और तुम्हें पुस्तक (क़ुर्आन) तथा ह़िक्मत (सुन्नत) सिखाता है तथा तुम्हें वो बातें सिखाता है, जो तुम नहीं जानते थे। अतः, मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूँगा और मेरे आभारी रहो और मेरे कृतघ्न न बनो)।

अल्लाह तआला ईमान वालों को अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भेजे जाने की नेमत की याद दिलाता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है ﴿كَمَآ أَرۡسَلۡنَا فِيكُمۡ رَسُولٗا مِّنكُمۡ يَتۡلُواْ عَلَيۡكُمۡ ءَايَٰتِنَا وَيُزَكِّيكُمۡ وَيُعَلِّمُكُمُ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمۡ تَكُونُواْ تَعۡلَمُونَ ١٥١ فَٱذۡكُرُونِيٓ أَذۡكُرۡكُمۡ وَٱشۡكُرُواْ لِي وَلَا تَكۡفُرُونِ ١٥٢﴾ (जिस प्रकार हमने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से एक रसूल भेजा, जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता तथा तुम्हें शुध्द आज्ञाकारी बनाता है और तुम्हें पुस्तक (क़ुर्आन) तथा ह़िक्मत (सुन्नत) सिखाता है तथा तुम्हें वो बातें सिखाता है, जो तुम नहीं जानते थे। अतः, मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूँगा और मेरे आभारी रहो और मेरे कृतघ्न न बनो)। जैसा कि मैंने तुम्हारे बीच एक रसूल को भेजा इस धर्म के आशीर्वाद के साथ, और तुम्हें उसकी सिखाई गई शिक्षा से अज्ञानता के बाद ज्ञान दिया। तो मुझे अपनी इबादत के साथ याद करो, जैसा कि मैंने तुम्हें आदेश दिया और तुम्हारे लिए नियम निर्धारित किए। मेरी दी गई इन महान नेमतों के लिए शुक्रगुज़ार बनो, और नाशुक्रेपन से नेमत का अनादर न करो। ﴿وَٱشۡكُرُواْ لِي وَلَا تَكۡفُرُونِ﴾ (और मेरा शुक्र अदा करो, और कृतघ्न मत बनो) इससे यह भी स्पष्ट होता है कि कफर के अर्थों में से एक नाशुक्रापन है। क्योंकि नाशुक्रेपन में नेमत के महत्त्व को अनदेखा करना और उसकी कद्र न करना शामिल है, जबकि शुक्रगुज़ारी मोमिनों में भलाई और उपकार के प्रति समझ विकसित करती है, और वह अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं। हर बार जब वह

नेमत का ध्यान करता है, तो वह अधिक संतोष, शांति और ख़ुशी प्राप्त करता है। अगर वह इस्लाम के आशीर्वाद और मुसलमान होने का ध्यान करता है, तो उसे जीवन की कठोरता और परीक्षणों से मुक्ति मिलती है। अगर वह संतानों के आशीर्वाद का ध्यान करता है, तो उसे धन की ज़रूरत और अन्य चिंताओं से राहत मिलती है। अगर वह स्वास्थ्य के आशीर्वाद को भूल जाता है, तो उसकी अनदेखी अन्य आशीर्वादों से भी अनदेखी करवा देती है, और उसे लालच की अंतहीन चिंताओं से घेर लेती है। इसलिए, इसका उपचार नेमत का एहसास करना है, जो शुक्रगुज़ारी की ओर ले जाती है, जिससे नेमतें स्थिर रहती हैं।

इस के लाभों में से एक यह भी है कि अल्लाह शुक्रगुज़ारों से प्यार करता है, और चाहता है कि उसके नेमत का असर उसके बंदों पर देखा जाए, उपासना के लिए, न कि अहंकार और अभिमान के लिए। इमाम इब्न कसीर रहिमहुल्लाह कहते हैं: अल्लाह अपने मोमिनों को उस नेमत का ध्यान दिलाता है, जो उसने उनके लिए भेजी, कि उसने उन्हें रसूल भेजा, जो उन्हें अल्लाह की आयतें सुनाता है, उन्हें शुद्ध करता है, उनके नैतिक दोषों और आत्मा की गंदगी और जाहिलिय्या के कर्मों से, और उन्हें अंधकार से उजाले में लाता है, और उन्हें किताब (क़ुरआन) और हिकमत (सुन्नत) सिखाता है, और उन्हें वह सिखाता है जो वे नहीं जानते थे।

तो वे इस संदेश की बरकत से वलियों की स्थिति में पहुंच गए, और विद्वानों की विशेषताओं में आ गए, वे सबसे गहरे ज्ञान वाले, सबसे पवित्र दिल वाले, सबसे कम दिखावा करने वाले, और सबसे सच्चे भाषा वाले बन गए।[1]

इससे यह भी स्पष्ट होता है कि जो अल्लाह का ज़िक्र करता है, अल्लाह उसे याद करता है। कुदसी ह़दीस़ में अल्लाह कहता है: "और मैं उसके साथ होता हूँ जब वह मेरा ज़िक्र करता है। यदि वह अपने मन में मेरा ज़िक्र करता है, तो मैं अपने मन में उसे याद करता हूँ। और यदि वह किसी सभा में मेरा ज़िक्र करता है, तो मैं उससे बेहतर सभा में उसका ज़िक्र करता हूँ।"[2]

दिल, ज़बान और कर्मों के माध्यम से अल्लाह का ज़िक्र करना, अनेकों महान लाभ और फायदे हैं। ह़दीस़ की किताबों में इसका विस्तार से वर्णन किया गया है, बल्कि कुछ विद्वानों ने इसके लिए विशेष अध्याय और किताबें भी लिखी हैं।

लाभों में से एक यह है कि ज़िक्र अल्लाह के विचार, दिल, ज़बान और कर्मों में एकता स्थापित करता है: ﴿فَاذْكُرُونِي﴾ (मुझे याद करो) ﴿وَاشْكُرُوا لِي﴾ (और मेरे आभारी रहो)

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 201)।

(1) बुख़ारी (4/ 384) ह़दीस़ संख्या (7405)।

अल्लाह के ज़िक्र से नेमत का ध्यान आता है, नेमत का ध्यान अल्लाह के ज़िक्र की ओर ले जाता है, और ज़िक्र से व्यक्ति शुक्रगुज़ारी की ओर बढ़ता है। और नेमत को भूलने से शुक्रगुज़ारी की अनदेखी होती है। और जहाँ तक अल्लाह तआला के साथ ज़िक्र (स्मरण) को जोड़ने की बात है, ﴿فَٱذۡكُرُونِيٓ﴾ (तुम मेरा स्मरण करो) के आदेश में अल्लाह की तौहीद (एकेश्वरवाद) को सुदृढ़ करना निहित है।अल्लाह के ज़िक्र से यह स्पष्ट होता है कि ज़िक्र अल्लाह की एकता की पुष्टि करता है, कि व्यक्ति अपने रब को उसकी नेमतों के लिए याद करता है, और यह नहीं भूलता कि सभी प्रकट कारणों के पीछे असल कारण अल्लाह ही है। व्यक्ति कहता है कि मैंने अल्लाह के फज़ल से यह प्राप्त किया, अल्लाह ने मेरे लिए अमुक व्यक्ति को भेजा जिसने मेरी मदद की, और अल्लाह ने अपनी कृपा से इस कार्य को सफल बनाया। इसी तरह व्यक्ति अपनी ज़बान पर यह ले आता है कि सभी कारण अल्लाह के फज़ल से हैं, और इसमें नेमत के देने वाले का शुक्र है कि उसने उसके लिए कारण स्थापित किए, और जिस व्यक्ति को अल्लाह ने इसका कारण बनाया उसकी सराहना है। इसी तरह शुक्रगुज़ारी में एकता की पुष्टि होती है: ﴿وَٱشۡكُرُواْ لِي﴾ (और मेरे आभारी रहो)।

अल्लाह के इस कथन में: ﴿وَٱشۡكُرُواْ لِي وَلَا تَكۡفُرُونِ﴾ (और मेरे आभारी रहो और मेरे कृतघ्न न बनो) एक शक्ति है जिससे मोमिनों को अल्लाह की नेमतों को देखने की शक्ति मिलती है, जिन्हें नाशुक्रे नहीं समझते। जब वह अपने इस्लाम को याद करता है, तो वह इस नेमत को महान समझता है, कि वह काफिरों में से नहीं है। इससे उसे हर ज़रूरत और कमी छोटी लगती है, और इस महान नेमत के सामने सभी चिंताएँ दूर हो जाती हैं। जब वह स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती को देखता है, तो वह इसे महान समझता है क्योंकि वह बीमारों में से नहीं है। इससे हर ज़रूरत या कमी या विपत्ति छोटी लगती है। और हर दिशा से उसे शांति, संतोष और खुशी प्राप्त होती है। इसी तरह हर नेमत में मोमिनों का यही हाल होता है।

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱسۡتَعِينُواْ بِٱلصَّبۡرِ وَٱلصَّلَوٰةِۚ إِنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ ١٥٣ وَلَا تَقُولُواْ لِمَن يُقۡتَلُ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ أَمۡوَٰتُۢۚ بَلۡ أَحۡيَآءٞ وَلَٰكِن لَّا تَشۡعُرُونَ ١٥٤ وَلَنَبۡلُوَنَّكُم بِشَيۡءٖ مِّنَ ٱلۡخَوۡفِ وَٱلۡجُوعِ وَنَقۡصٖ مِّنَ ٱلۡأَمۡوَٰلِ وَٱلۡأَنفُسِ وَٱلثَّمَرَٰتِۗ وَبَشِّرِ ٱلصَّٰبِرِينَ ١٥٥ ٱلَّذِينَ إِذَآ أَصَٰبَتۡهُم مُّصِيبَةٞ قَالُوٓاْ إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّآ إِلَيۡهِ رَٰجِعُونَ ١٥٦ أُوْلَٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ صَلَوَٰتٞ مِّن رَّبِّهِمۡ وَرَحۡمَةٞۖ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُهۡتَدُونَ ١٥٧﴾ [سورة البقرة:١٥٣-١٥٧].

(हे ईमान वालो! धैर्य तथा नमाज़ का सहारा लो, निश्चय अल्लाह धैर्यवानों के साथ है। तथा जो अल्लाह की राह में मारे जायें, उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वे जीवित हैं, परन्तु तुम (उनके जीवन की दशा) नहीं समझते। तथा हम अवश्य कुछ भय, भूक तथा धनों और प्राणों तथा खाद्य पदार्थों की कमी से तुम्हारी परीक्षा करेंगे और धैर्यवानों को शुभ समाचार सुना दो। जिनपर कोई

आपदा आ पड़े, तो कहते हैं कि हम अल्लाह के हैं और हमें उसी के पास फिर कर जाना है। इन्हीं पर इनके पालनहार की कृपायें तथा दया हैं और यही सीधी राह पाने वाले हैं)।

अल्लाह तबारक व तआला अपने मोमिन बंदों को उस शक्ति की ओर निर्देशित करता है जिससे वे जीवन की विभिन्न कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं, अल्लाह कहता है: ﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱسۡتَعِينُواْ بِٱلصَّبۡرِ وَٱلصَّلَوٰةِۚ إِنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ ١٥٣ ﴾ (हे ईमान वालो! धैर्य तथा नमाज़ का सहारा लो, निश्चय अल्लाह धैर्यवानों के साथ है)। अल्लाह अपने मोमिन बंदों को संबोधित करता है और उन्हें ईमान के द्वारा संबोधित करने ज़रिये बुलाता है: ﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ﴾ (हे ईमान वालो!) यह मोमिनों के लिए अल्लाह की ओर से एक महान सम्मान है, और उनके ईमान की पुष्टि है। कौन सी नेमत इस महान नेमत से बढ़कर हो सकती है? यह सब उनका ध्यान आकर्षित करने और उन्हें लाभकारी ज्ञान देने के लिए है। यह शिक्षा की दृष्टि से यह भी बताता है कि छात्रों और बुलाए गए लोगों को सबसे अच्छे नाम से पुकारना कितना महत्वपूर्ण है। अगर अल्लाह अपने बंदों को इस महान सम्मान के साथ बुलाता है, तो एक आदमी को अपने समान व्यक्ति के साथ कैसा होना चाहिए? इस के लाभों में से एक यह भी है कि "يا हे" के साथ संबोधन करना उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए है, जिससे वे पूरी तरह सुनें। क्योंकि संबोधन में महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान आकर्षित करने की क्षमता होती है, जिससे उसे गहनता से ध्यान देना आवश्यक होता है। यह दृष्टिकोण बुलाने और शिक्षित करने का प्रभावी तरीका है जो व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करता है।

अल्लाह तबारक व तआला मोमिनों को संबोधित करता है ताकि वह उन्हें वह सिखाए जो उनके लिए लाभकारी है, कि वे दो महत्वपूर्ण चीजों के द्वारा हर परिस्थिति में सहायता प्राप्त करें: ﴿ ٱسۡتَعِينُواْ بِٱلصَّبۡرِ وَٱلصَّلَوٰةِۚ ﴾ (धैर्य तथा नमाज़ का सहारा लो) अल्लाह ने किसी विशेष चीज का उल्लेख नहीं किया है जिससे सहायता प्राप्त करनी है, ताकि यह हर चीज़ में शामिल हो। इससे यह समझ में आता है कि किसी भी बुराई को दूर करने और किसी भी भलाई को प्राप्त करने के लिए इन दोनों से मदद लेनी चाहिए, क्योंकि इंसान की जरूरतें हमेशा दो रूपों में होती हैं: एक तो भलाई को प्राप्त करना और दूसरी बुराई से बचना। क्योंकि इंसान की ज़रूरतें लाभ लाने और बुराई को दूर करने के बीच होती हैं, उनके विभिन्न स्तरों के अनुसार। धैर्य के साथ सहायता प्राप्त करना इबादत की पूर्ति, भलाई की मांग या बुराई को दूर करने में होता है, या आत्मा को पाप से रोकने, या उसे अच्छे कर्म या कथन में लगाने, या उस चीज़ के खिलाफ धैर्य रखना जिसे आत्मा नापसंद करती है, या अन्य चीज़ों में जो धैर्य की आवश्यकता होती है। धैर्य से इच्छाशक्ति और सहनशक्ति को मजबूत करता है, और यह हर गतिविधि को प्रेरित करता है, आत्मा को शांति देता है, और निराशा और उस से जुड़ी सुस्ती और अक्षम्यता को दूर करता है

जो इंसान के जीवन के लिए विनाशकारी होती है। धैर्य महान पुरस्कार और इनाम से जुड़ा होता है, जैसा कि अल्लाह के इस कथन से स्पष्ट होता है ﴿إِنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ﴾ (निश्चय अल्लाह धैर्यवानों के साथ है) अगर धैर्य की केवल यही नेमत होती कि अल्लाह धैर्यवानों के साथ है, तो यह इसके सम्मान, ऊँचाई, शक्ति, समर्थन और विजय के लिए पर्याप्त होती।

दूसरी सहायता है: नमाज़। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने जब भी कोई महत्वपूर्ण और चिंता का मामला आता, तो उन्होंने नमाज़ का सहारा लिया। हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: "जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कोई महत्वपूर्ण मामला परेशान करता, तो वे नमाज़ पढ़ते।"(1) नमाज़ में बंदे और उसके रब के बीच का संबंध होता है। इसमें रुकू' में विनम्रता और सजदा में समर्पण होता है, और अल-फ़ातिहा और अन्य क़ुरआन की आयतों की तिलावत होती है। इसमें अल्लाह के लिए तस्बीह, ताहमिद और तकबीर होता है, और अल्लाह के सामने खड़े होते हैं। इसमें नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर दुरूद भेजना होता है, और साथ ही पैग़ंबर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर भी। इसमें दुआ करना होता है, और बंदा अपने रब के सबसे करीब होता है जब वह सज़दे में होता है। वास्तव में, यह एक सहायता है जो मोमिनों को उनकी सभी मामलों में मदद करती है, नमाज़ को उसके समय पर पढ़ना और सुन्नत नमाज़ें अदा करना, और जब भी कोई मामला सामने आए, तो नफ़ल नमाज़ पढ़ना।

फिर आयतें शहीद के हाल को बयान करने की ओर जाती हैं, जो अल्लाह की राह में शहीद हुए हैं: ﴿وَلَا تَقُولُوا۟ لِمَن يُقْتَلُ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ أَمْوَٰتٌۢ ۚ بَلْ أَحْيَآءٌ وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ ١٥٤﴾ (तथा जो अल्लाह की राह में मारे जायें, उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वे जीवित हैं, परन्तु तुम (उनके जीवन की दशा) नहीं समझते) क़ुरआन का यह बयान अल्लाह की ओर से शहीद को परिभाषित करता है कि जो अल्लाह के मार्ग में मारा जाता है, वह शहीद है। और यह भी स्पष्ट करता है कि शहीद अल्लाह के मार्ग में जीवित है, एक ऐसी जीवन जिसका हमें एहसास नहीं होता है। इससे अल्लाह के रास्ते में जिहाद के फज़ीलत और उन शहीदों की महानता का पता चलता है जिन्होंने अपने प्राणों को अल्लाह के लिए समर्पित किया, न कि दुनिया की लालसा में, न ही असत्य की रक्षा के लिए, न ही दिखावे के लिए, बल्कि अल्लाह के रास्ते में शहीद होने के लिए। इसलिए हमें नहीं सोचना चाहिए कि वे मृत हैं, बल्कि हमें विश्वास होना चाहिए कि जो शहीद अल्लाह के मार्ग में मरा है, वह जीवित है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "शहीदों की आत्माएँ हरे पक्षियों के रूप में जन्नत के फलों या जन्नत के पेड़ों से लटकी रहती हैं"।(2) यह क़ब्र की नेमत का प्रमाण है, तथा इसी प्रकार यह क़ब्र के अज़ाब का भी प्रमाण है।

---

(2) अहमद (38/ 330) हदीस़ संख्या (23299)।

(1) तिर्मिज़ी (4/ 151) हदीस़ संख्या (1641)।

लेकिन हम दुनिया में उनकी स्थिति को नहीं समझते। महान और बुद्धिमान अल्लाह की महानता को स्वीकार करते हैं, जिसके पास सभी मामलों का नियंत्रण है।

क़ुरआन के संदर्भों में दिशा-निर्देशों, आदेशों और निषेधों, स्पष्टीकरणों और प्रतिक्रियाओं में अद्वितीय परिवर्तन देखने को मिलते हैं, और इसके संदर्भों में एक महान, सुंदर और विस्मयकारी विविधता है, जिसे कान सुखद पाते हैं, दिल उससे हिल जाता है, और मन इसका विचार करता है और समझता है। आयतों के संदर्भ, शब्दों और वाक्य संरचनाओं में पाठक मिठास पाता है, जो मन को रोशनी देती है, दिल को उत्तेजित करती है, और आत्मा को आंदोलित करती है। अल्लाह की महानता का स्वीकार करना चाहिए, जिसने क़ुरआन के माध्यम से दिल और दिमाग को चमत्कृत किया है, और इसके बयान और सामग्री के माध्यम से इंसानों और जिन्नों को असहाय कर दिया है, और उससे हर चुनौती देने वाले को चुनौती दी है, चाहे वे एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न हों। पिछली आयत उस व्यक्ति की स्थिति के बारे में थी जो अल्लाह के रास्ते में मारा गया है, और उससे पहले की आयत में धैर्य और नमाज़ के माध्यम से मदद प्राप्त करने के बारे में था। फिर यहाँ का संदर्भ उस परीक्षा की ओर बढ़ता है जिस पर धैर्य और नमाज़ के साथ मदद प्राप्त की जाती है, एक अत्यंत सुंदर और रोचक स्थानांतरण में। अल्लाह के उस पुस्तक की महिमा मानें जिसने उस के बंदों को अचंभित कर दिया।

अल्लाह अपने बंदों को दुनिया में होने वाली स्थिति के बारे में सूचित करता है: ﴿ وَلَنَبۡلُوَنَّكُم بِشَيۡءٖ مِّنَ ٱلۡخَوۡفِ وَٱلۡجُوعِ وَنَقۡصٖ مِّنَ ٱلۡأَمۡوَٰلِ وَٱلۡأَنفُسِ وَٱلثَّمَرَٰتِۗ ﴾ (तथा हम अवश्य कुछ भय, भूक तथा धनों और प्राणों तथा खाद्य पदार्थों की कमी से तुम्हारी परीक्षा करेंगे) इसमें उस स्थिति का वर्णन है जिसमें मोमिनों का परीक्षण किया जाता है, जो यह स्पष्ट और समझाता है कि धैर्य और नमाज़ के माध्यम से सहायता प्राप्त करने की आयत का संबंध इस आयत से है, और साथ ही अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने की आयत से भी है, क्योंकि जिहाद में धैर्य की आवश्यकता होती है।

इस परीक्षण के बारे में सूचित करना मोमिनों को बताता है कि यह परीक्षण अल्लाह की ओर से है, जो उन्हें यह समझाता है कि इस दुनिया में उन्हें कौन सी परीक्षाएं और परीक्षण मिल सकते हैं, ताकि वे समझ सकें कि यह एक परीक्षा का घर है, जो इसके बाद है। हर परीक्षा का एक लक्ष्य और उद्देश्य होता है, और हर परिणाम के बाद सफल लोगों को उच्चतम स्तर तक पहुँचाता है। विश्वासी इस परीक्षा का सामना अल्लाह के ज्ञान और समझ के साथ करता है, ताकि वह उन परीक्षाओं का सामना करे जो उसके रब के ज्ञान के साथ संगत और उपयुक्त हो। परीक्षा का मूल यह है कि यह भलाई और बुराई दोनों में होती है, जैसा कि अल्लाह ने सूरह

अल-अंबिया में एक अन्य आयत में कहा: ﴿وَنَبۡلُوكُم بِٱلشَّرِّ وَٱلۡخَيۡرِ فِتۡنَةٗۖ﴾ (और हम तुम्हें बुराई और भलाई दोनों से परखेंगे)।

पवित्र आयत में यह बताया गया है कि परीक्षा में विविधता होती है: डिग्री और प्रकार के आधार पर, दूसरों के लिए प्रकट और दूसरों से छिपी हुई। उनमें से एक प्रकार है: भय, जैसा कि अल्लाह ने कहा: ﴿بِشَيۡءٖ مِّنَ ٱلۡخَوۡفِ﴾ "कुछ भय के साथ," यह पूरे भय के साथ नहीं है, इसलिए इसके लिए अल्लाह का शुक्र है। भय वह होता है जो इंसान को बेचैनी और अस्थिरता से ग्रसित कर देता है, जैसा कि युद्धों में हत्याओं, लूट और विस्थापन के कारण होने वाले डर और भय में होता है। भय किसी दुश्मन से हो सकता है या दुनिया के मामलों से, जैसे कि किसी प्रिय के खोने का डर, या किसी नापसंद चीज़ के आने का डर, या अन्य कारणों से जो सुरक्षा की भावना को रोकते हैं। इसमें सुरक्षा की नेमत की याद दिलाई जाती है, जो भय के विपरीत है, या जिसके न होने से भय की स्थिति समाप्त होती है, और जो अल्लाह का शुक्र और प्रशंसा अनिवार्य बनाता है। जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "तुम में से जो व्यक्ति अपने घर में सुरक्षित हो कर सुबह करे, उसका शरीर स्वस्थ हो, तथा उसके पास उस दिन की रोज़ी हो, तो मानो पूरी दुनिया उसके लिए समेट दी गई हो"।(1)

तथा उन प्रकारों में एक से जो आयत में उल्लेखित हैं: "وَٱلۡجُوعِ भूख" है जिसमें व्यक्ति अपने भूख को मिटाने के लिए आवश्यक भोजन और कृषि उत्पाद खो देता है, या उनकी परिवहन के साधनों का नुकसान हो जाता है, या उनकी कमी के कारण, या उसे लाने की अयोग्यता के कारण, या किसी महामारी के कारण होता है।

या किसी अन्य कारण से। और इस परिभाषित ह़दीस़ में इसके लिए कहा गया है (उसके पास दिन भर का आहार हो)। दूसरा प्रकार ﴿وَنَقۡصٖ مِّنَ ٱلۡأَمۡوَٰلِ وَٱلۡأَنفُسِ﴾ (और धन में कमी) इसलिये है कि इससे आवश्यकताओं या सौंदर्यपूर्ण इच्छाओं को पूरा करने की क्षमता कम होती है, और तीसरी किस्म (धन और जान में कमी) यह है कि किसी प्रियजन या रिश्तेदार की मृत्यु के कारण मनुष्य की आत्मा को तकलीफ होती है। और चौथी किस्म (फलों की कमी) का मतलब बेटों से है, क्योंकि वे दिल का फल होते हैं, और यह भी हो सकता है कि पौधों की कमी और आशीर्वाद की समाप्ति हो, और इन सभी को परीक्षण कहा गया है। जब एक मोमिन अल्लाह के इस बयान को समझता है, तो वह इसे अधिक स्वीकार करता है, और इससे निपटने के लिए एक बेहतर स्थिति और बुद्धिमत्ता के साथ होता है, और अन्य लोगों की तुलना में अधिक मानसिक शांति महसूस करता है।

(1) तिर्मिज़ी (4/ 456) ह़दीस़ संख्या (2346)।

इस बयान से अल्लाह अपने बंदों के दिलों में परीक्षा के समय शांति का बीज बोता है। अगर इसमें वह निर्देश भी शामिल हो जो अल्लाह ने परीक्षा के दौरान अपने बंदों को दिया है, तो उनकी स्थिति दुनिया और आख़िरत में बेहतर और श्रेष्ठ होगी। अल्लाह कहता है: ﴿وَبَشِّرِ ٱلصَّٰبِرِينَ ۝١٥٥ ٱلَّذِينَ إِذَآ أَصَٰبَتۡهُم مُّصِيبَةٞ قَالُوٓاْ إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّآ إِلَيۡهِ رَٰجِعُونَ ۝١٥٦﴾ (हऔर धैर्यवानों को शुभ समाचार सुना दो। जिनपर कोई आपदा आ पड़े, तो कहते हैं कि हम अल्लाह के हैं और हमें उसी के पास फिर कर जाना है) यह अल्लाह की ओर से एक शुभ समाचार है उस मुसलमान के लिए जो उस परीक्षा "مُّصِيبَةٞ मुसीबत" का सामना दो चीज़ों के साथ करता है: पहली: सब्र। और दूसरी: "إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّآ إِلَيۡهِ رَٰجِعُونَ हम अल्लाह के लिए हैं और हम उसी की ओर लौटेंगे" कहना। सब्र का मतलब है मुश्किल के समय में आत्मा को कोसने से रुकना। यह दिल की शांति है जो आत्मा पर आई होती है। यह शुभ समाचार इतनी महत्वपूर्ण है कि यह महान लाभ का संकेत देती है। "हम अल्लाह के लिए हैं और हम उसी की ओर लौटेंगे" कहने से हर उस व्यक्ति को शरण और सहारा मिलता है जिसने कोई मुसीबत झेली हो, क्योंकि "إِنَّا لِلَّهِ हम अल्लाह के लिए हैं" कहने से यह स्वीकार होता है कि वह अल्लाह का है। उसने रबूबीयत, उलोहीयत और शुद्ध एकेश्वरवाद को स्वीकार किया है, और यह कि ममलूक (बंदा) अल्लाह का है जिसने उसे बनाया है, और वह अल्लाह के फैसले और किस्मत पर आपत्ति नहीं करता है।

जैसा कि ह़दीस़ में है: "عدلٌ في قضاؤك मेरे बारे में तेरा निर्णय न्याय पर आधारित है।" और "وَإِنَّآ إِلَيۡهِ رَٰجِعُونَ हम उसी की ओर लौटेंगे" कहने से यह स्वीकार होता है कि अल्लाह की ओर लौटना है, जो मृत्यु के बाद पुनरुत्थान, इनाम और सज़ा, और जन्नत और जहन्नम को स्वीकार करता है। यह एक महान समर्थन है, जिसे अल्लाह ने अपने विश्वासियों को इस महान शक्ति के लिए निर्देशित किया है, जो हर मुसीबत का सामना करने के लिए सहायता करती है।

फिर अल्लाह तआला उस महान इनाम को स्पष्ट करते हैं जो इस दिव्य मार्ग पर चलने वालों को मिलता है, जैसा कि कहा गया है: ﴿أُوْلَٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ صَلَوَٰتٞ مِّن رَّبِّهِمۡ وَرَحۡمَةٞۖ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُهۡتَدُونَ ۝١٥٧﴾ (इन्हीं पर इनके पालनहार की कृपायें तथा दया हैं और यही सीधी राह पाने वाले हैं) ये सब्र करने वाले लोग अल्लाह तआला से तीन चीजें प्राप्त करते हैं: पहली: "عَلَيۡهِمۡ صَلَوَٰتٞ مِّن رَّبِّهِمۡ उन पर उनके रब की दुआ", अर्थात अल्लाह का माफ़ करना, उनका आशीर्वाद और उनकी इज्जत इस दुनिया और आख़िरत में। दूसरी: "وَرَحۡمَةٞۖ रह़मत", और रह़मत का मतलब है अनुग्रह, उन्हें वह देने जो उन्हें खुशी देता है और उनसे वह हटाने जो उन्हें नुकसान पहुंचाता है, और स्वर्ग में प्रवेश। तीसरी: "وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُهۡتَدُونَ और वे ही मार्गदर्शित हैं",

अर्थात वे अल्लाह के मार्ग पर चलने वाले होते, जो सफलता और पूर्णता के लिए सक्षम होते हैं, उनके विश्वास और सब्र के कारण। यह दिखाता है कि संकट के समय सब्र और संतुलन कितने महत्वपूर्ण हैं, और अल्लाह तआला कभी-कभी अपने विश्वासियों को उनके दर्जे बढ़ाने के लिए परीक्षा में डालते हैं। और कभी यह परीक्षा एक सजा हो सकती है या पापों की माफी का रास्ता हो सकती है। सब कुछ अल्लाह तआला के नियंत्रण में है, किसी भी रूप में और किसी भी तरीके से उनका आदेश और योजना होती है।

﴿ ۞ إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلْمَرْوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ ٱلْبَيْتَ أَوِ ٱعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ ٱللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾ ﴾ [سورة البقرة:١٥٨]

(बेशक सफ़ा तथा मरवा पहाड़ी अल्लाह (के धर्म) की निशानियों में से हैं। अतः जो अल्लाह के घर का हज या उमरह करे, तो उसपर कोई दोष नहीं कि उन दोनों का फेरा लगाये और जो स्वेच्छा से भलाई करे, तो निःसंदेह अल्लाह उसका गुणग्राही अति ज्ञानी है)।

फिर यह आयत सई (दौड़) के बारे में बयान करती है, जो सफा और मरवा के बीच की जाती है, ताकि उन मुसलमानों के संकोच को दूर किया जा सके जो सई को लेकर डरते थे, क्योंकि जाहिलियत में इन दोनों पहाड़ियों के बीच चक्कर लगाने के साथ पुतलों की पूजा की जाती थी। अल्लाह तआला ने कहा: ﴿إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلْمَرْوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ ٱلْبَيْتَ أَوِ ٱعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ ٱللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾﴾ (बेशक सफ़ा तथा मरवा पहाड़ी अल्लाह (के धर्म) की निशानियों में से हैं। अतः जो अल्लाह के घर का हज या उमरह करे, तो उसपर कोई दोष नहीं कि उन दोनों का फेरा लगाये और जो स्वेच्छा से भलाई करे, तो निःसंदेह अल्लाह उसका गुणग्राही अति ज्ञानी है) इस आयत में सफा और मरवा के बीच सई की शरीअत को स्पष्ट किया गया है। यहाँ दो लाभ हैं: पहला, ये दोनों अल्लाह की चिन्हों में से हैं, ﴿إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلْمَرْوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِ ۖ﴾ अर्थात ये धर्म के प्रतीक हैं। इस संदर्भ में सबसे पहले यह बताया गया है कि सफा और मर्वा इस्लाम के प्रकट प्रतीक हैं, और दूसरा: यह कि पूर्व-इस्लामी मूर्ति पूजा के डर को समाप्त करना। फिर अल्लाह ने सफा और मर्वा के सई को उमरा और हज के साथ जोड़ा है। यह शिक्षा की दृष्टि से यह भी बताता है कि गहरे अज्ञान को पहले दूर करना कितना महत्वपूर्ण है, ताकि शिक्षा प्राप्तकर्ता सही अर्थ में ज्ञान को स्वीकार कर सके। गहरा अज्ञान वह होता है जिसमें व्यक्ति किसी चीज या ज्ञान या ज्ञात को सही मायने में नहीं समझता।

इसके बाद अल्लाह तआला ने यह बताया कि सई, हज और उमरा के साथ जुड़ी हुई है, जैसा कि कहा गया है: ﴿فَمَنْ حَجَّ ٱلْبَيْتَ أَوِ ٱعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ﴾ (अतः जो

अल्लाह के घर का ह़ज या उमरह करे, तो उसपर कोई दोष नहीं कि उन दोनों का फेरा लगाये) यहाँ पर यह फैसला दिया गया है कि इसमें कोई पाप नहीं है, और जो लोग पूर्व-इस्लामी काल में मूर्तियों के सामने तवाफ करने के कारण इससे परहेज़ करते थे, उनके लिए कोई हर्ज नहीं है।(1) यह हज और उमरा के अनिवार्य कार्यों में से है। यह तात्पर्य है कि विषय के संदर्भ को समझना बहुत महत्वपूर्ण है, ताकि हमें सही अर्थ और आदेश को समझने में मदद मिले। इसका मतलब यह भी है कि अल्लाह तआला का आदेश सर्वोपरि है, और जो लोग नवीनीकरण, भ्रष्टाचार और कुफ्र के साथ अन्याय करते हैं, उनका इन धार्मिक कर्मों से कोई संबंध नहीं है। इस्लाम में हमें इन कार्यों को उसी रूप में अपनाना चाहिए जैसा कि अल्लाह ने आदेश दिया है, ताकि लोग इस धर्म की सच्चाई को समझ सकें।

फिर अल्लाह तआला हज और उमरा के लिए स्वेच्छा से जाने वालों के बारे में कहता है: ﴿وَمَن تَطَوَّعَ خَيۡرٗا فَإِنَّ ٱللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ﴾ (और जो स्वेच्छा से भलाई करे, तो निःसंदेह अल्लाह उसका गुणग्राही अति ज्ञानी है) यह बताता है कि हज और उमरा के लिए स्वेच्छा से जाना "خَيۡرٗا भलाई" इसमे उसके लिए अत्याधिक कल्याण है, और स्वेच्छा से किया गया काम वह है जो अनिवार्य कर्तव्यों से अधिक हो। इसमें बहुत अच्छा है, जो विश्वासी अल्लाह तआला से प्राप्त करता है, जो उसके काम के लिए महान इनाम के साथ आभार व्यक्त करता है। क्योंकि अल्लाह तआला का आभार उसके बंदे के प्रति उसकी आज्ञाकारिता पर इनाम देना है। इसमें यह संकेत भी है कि सिर्फ अनिवार्य कर्तव्यों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, बल्कि नफ्ल इबादतों की अधिकता से खुद को मजबूत करना चाहिए, क्योंकि यह उसके लिए अच्छा है जो अल्लाह तआला से प्राप्त होता है जिसने इसके इनाम को सबसे सुंदर शब्दों में उल्लेख किया: ﴿فَإِنَّ ٱللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ﴾ (तो निःसंदेह अल्लाह उसका गुणग्राही अति ज्ञानी है) वह जानता है कि आप उसकी आज्ञाकारिता से क्या बढ़ा रहे हैं, यह व्यर्थ नहीं जाएगा, बल्कि आपके लिए महान इनाम है। इससे यह भी सीखा जा सकता है कि अगर अल्लाह तआला अपने बंदे के लिए नफ्ल इबादतों का आभार व्यक्त करता है, तो अच्छा आचरण का संकेत यह भी है कि बंदा उन लोगों का आभार व्यक्त करे जिन्होंने उसे कुछ भलाई दी जो अनिवार्य नहीं थी। अल्लाह तआला की अपने बंदों के प्रति कृपा पर विचार करें, और कैसे वह उन्हें सबसे अच्छे शब्दों और सबसे अच्छे इनाम के साथ संबोधित करता है। अल्लाह की बंदों के प्रति कृपा एक-दूसरे के प्रति इंसानों की कृपा से अधिक है, बल्कि यह माँ की अपने बच्चे के प्रति कृपा से भी अधिक है जैसा कि ह़दीस़ में उल्लेखित है।

---

(1) तफसीर की किताबों में इस आयत और अन्य आयतों के अवतरण के कारणों के बारे में सब कुछ विस्तार से लिखा गया है, जैसे कि "अल-जामेअ लि अहकाम अल-कुरआन" इमाम क़ुर्तुबी द्वारा लिखित और "तफसीर अल-कुरआन अल-अजीम" इब्न -ए- कसीर द्वारा लिखित। जिन्हें जानकारी चाहिए, वे इन किताबों की ओर रुख कर सकते हैं।

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكۡتُمُونَ مَآ أَنزَلۡنَا مِنَ ٱلۡبَيِّنَٰتِ وَٱلۡهُدَىٰ مِنۢ بَعۡدِ مَا بَيَّنَّٰهُ لِلنَّاسِ فِي ٱلۡكِتَٰبِ أُوْلَٰٓئِكَ يَلۡعَنُهُمُ ٱللَّهُ وَيَلۡعَنُهُمُ ٱللَّٰعِنُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا ٱلَّذِينَ تَابُواْ وَأَصۡلَحُواْ وَبَيَّنُواْ فَأُوْلَٰٓئِكَ أَتُوبُ عَلَيۡهِمۡ وَأَنَا ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٦٠﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ وَمَاتُواْ وَهُمۡ كُفَّارٌ أُوْلَٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ لَعۡنَةُ ٱللَّهِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلنَّاسِ أَجۡمَعِينَ ﴿١٦١﴾ خَٰلِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمُ ٱلۡعَذَابُ وَلَا هُمۡ يُنظَرُونَ ﴿١٦٢﴾ وَإِلَٰهُكُمۡ إِلَٰهٞ وَٰحِدٞۖ لَّآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلرَّحۡمَٰنُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٦٣﴾ ﴾ [سورة البقرة:١٥٩-١٦٣].

(तथा जो हमारी उतारी हुई आयतों (अन्तिम नबी के गुणों) तथा मार्गदर्शन को, इसके पश्चात् कि हमने पुस्तक में उसे लोगों के लिए उजागर कर दिया है, छुपाते हैं, उन्हीं को अल्लाह धिक्कारता है तथा सब धिक्कारने वाले धिक्कारते हैं। जिन लोगों ने तौबा (क्षमा याचना) कर ली और सुधार कर लिया और उजागर कर दिया, तो मैं उनकी तौबा स्वीकार कर लूँगा तथा मैं अत्यंत क्षमाशील, दयावान् हूँ। वास्तव में, जो काफ़िर (अविश्वासी) हो गये और इसी दशा में मरे, तो वही हैं, जिनपर अल्लाह तथा फ़रिश्तों और सब लोगों की धिक्कार है। वह इस (धिक्कार) में सदावासी होंगे, उनसे यातना मंद नहीं की जायेगी और न उनको अवकाश दिया जायेगा। और तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है, उस अत्यंत दयालु, दयावान के सिवा कोई पूज्य नहीं)।

फिर अल्लाह तआला अपने पवित्र क़ुरआन में अहल-ए-किताब (यहूद व नस़ारा) के व्यवहार और आचारण के बारे में और अधिक स्पष्टता से बताता है, ताकि यह उनके खिलाफ एक प्रमाण बन सके और संभवतः वे मार्गदर्शन प्राप्त करें, तथा मुसलमानों को उनके आचरण से शिक्षा मिले। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكۡتُمُونَ مَآ أَنزَلۡنَا مِنَ ٱلۡبَيِّنَٰتِ وَٱلۡهُدَىٰ مِنۢ بَعۡدِ مَا بَيَّنَّٰهُ لِلنَّاسِ فِي ٱلۡكِتَٰبِ أُوْلَٰٓئِكَ يَلۡعَنُهُمُ ٱللَّهُ وَيَلۡعَنُهُمُ ٱللَّٰعِنُونَ ﴿١٥٩﴾ ﴾ (तथा जो हमारी उतारी हुई आयतों (अन्तिम नबी के गुणों) तथा मार्गदर्शन को, इसके पश्चात् कि हमने पुस्तक में उसे लोगों के लिए उजागर कर दिया है, छुपाते हैं, उन्हीं को अल्लाह धिक्कारता है तथा सब धिक्कारने वाले धिक्कारते हैं)।

इस आयत के संदर्भ में मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन की व्याख्या करने वाले विद्वान) कहते हैं कि भले ही यह आयत अहल-ए-किताब (यहूदी और ईसाई) के बारे में हो, लेकिन इसका आदेश हर उस व्यक्ति पर लागू होता है जो अल्लाह के उतारे हुए शब्दों को छुपाता है। अल्लाह तआला यह स्पष्ट करता है कि जो लोग वह बातें छुपाते हैं जो किताब में दी गई हैं (مِنَ ٱلۡبَيِّنَٰتِ وَٱلۡهُدَىٰ), जो धर्म की स्थापना के लिए और मानवता को अल्लाह की इच्छाओं तक पहुँचाने के लिए जरूरी हैं, तो वे लोग अल्लाह के शापित हैं। उनका शापित होना अर्थात अल्लाह की दया और कृपा से दूर किया जाना है, और साथ ही साथ शापित होने का यह मतलब है कि उन पर शाप करने वाले लोग (जैसे फरिश्ते और लोग) भी उन्हें शापित करेंगे। इसके अलावा, उन्हें

दूसरों द्वारा शापित किया जाएगा क्योंकि वे लोगों से वे महत्वपूर्ण और लाभकारी ज्ञान छुपाते हैं, जो उनके लिए अल्लाह की इबादत और आज्ञाओं को समझने और पालन करने में सहायक है। इमाम क़ुर्तबी ने कहा है कि आयत "जो हमने लोगों के लिए किताब में स्पष्ट किया है" में 'किताब' से तात्पर्य सभी किताबों से है, क्योंकि यह एक सामान्य शब्द (इस्म -ए- जिंस) है।(1)

यह ज्ञान को छुपाने के खतरों को स्पष्ट करता है, विशेषकर जब लोगों को इसकी आवश्यकता हो, और यह तब और भी बढ़ जाता है जब लोग इसके बारे में पूछते हैं। इसलिए ज्ञान को प्रकट करना और इसे लोगों के सामने स्पष्ट करना आवश्यक है, और यह भी स्पष्ट करना कि अल्लाह को क्या प्रसन्न करता है और क्या नहीं। किसी से भी संकोच किए बिना, और किसी को खुश करने के लिए कुछ भी छुपाए बिना, या किसी पाठ का अर्थ मोड़ने के बिना, या लोगों से लाभ प्राप्त करने के लिए, जो अल्लाह को प्रसन्न नहीं करता है। यह विद्वानों के ऊपर बड़ी जिम्मेदारी का संकेत है, अल्लाह उनकी मदद करे। और यह धार्मिक विद्वानों का समर्थन करने और सच्चाई के पक्ष में उनका साथ देने, और उनकी धार्मिक जिम्मेदारियों के लिए उनका सम्मान करने की आवश्यकता को भी दिखाता है।

लेकिन अल्लाह तआला की दया उन लोगों पर जारी रहती है जो अपने ग़ुनाह और कामों से तौबा करते हैं। अल्लाह तआला ने उन लोगों के बारे में कहा है, ﴿إِلَّا ٱلَّذِينَ تَابُوا۟ وَأَصْلَحُوا۟ وَبَيَّنُوا۟﴾ (जिन लोगों ने तौबा (क्षमा याचना) कर ली और सुधार कर लिया और उजागर कर दिया) यह तीन शर्तें हैं: पहली, तौबा का मतलब है कि जो वे पहले कर रहे थे, उससे वापस लौटना, और इसके लिए यह जरूरी है कि वे उस काम को छोड़ दें और भविष्य में फिर से उसे न करें। दूसरी शर्त है, जो कुछ उन्होंने बिगाड़ा है, उसे सुधारना, और इसके लिए यह हो सकता है कि उन्हें अपनी गलती को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करना पड़े और लोगों के सामने सच्चाई बतानी पड़े, साथ ही हर संभव प्रयास करके उन चीजों को सुधारना पड़े जिन्हें उन्होंने बिगाड़ा था। तीसरी शर्त है, स्पष्ट और बिना किसी संदेह के बयान देना। ﴿فَأُو۟لَٰٓئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ﴾ (तो मैं उनकी तौबा स्वीकार कर लूँगा) यह इस बात को दर्शाता है कि अल्लाह तआला अपने बंदों पर दयालु है, क्योंकि वह उस व्यक्ति से तौबा क़बूल करता है जो ग़लती करने के बाद वापिस लौटता है, गुनाह से रुकता है और अल्लाह से माफ़ी माँगता है। इस से बड़ी भलाई और क्या हो सकती है कि अल्लाह तआला अपने पापी भक्तों की तौबा को स्वीकार करता है।

यह इस बात को दर्शाता है और समझाता है कि जब कोई व्यक्ति अपनी भटकाव से वापस लौटता है, तो उसे सामाजिक स्वीकृति मिलनी चाहिए, और उसे ऐसे स्वीकार करना

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 125)।

चाहिए जैसे उसने कभी भी कोई गलती नहीं की हो। और उसे उसके पिछले कर्मों के लिए दोष नहीं देना चाहिए, क्योंकि अल्लाह ने उसकी तौबा को स्वीकार किया है। यह सामाजिक व्यवहार के दृष्टिकोण से बताता है कि माफी मांगने वाले को स्वीकार किया जाना चाहिए और उसे कठोरता से नहीं लेना चाहिए। यह भी बताता है कि जिसने गलती की है, चाहे उसे कोई और न जानता हो, उसे अल्लाह से तौबा करनी चाहिए और जो उसने किया है उसे सुधारना चाहिए। फिर यह आयत, जो महान निर्देश और पूर्ण करुणा से भरी हुई है, समाप्त होती है: ﴿وَأَنَا ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ﴾ (तथा मैं अत्यंत क्षमाशील, दयावान् हूँ) इसमें अल्लाह का बयान है कि वह तौबा स्वीकार करने वाला और दयालु है। इसलिए उसकी माफी और रहमत एक साथ तौबा करने वाले पर होती है, और रहमत तौबा करने वाले के लिए फज़ीलत की वृद्धि है। अल्लाह का धन्यवाद, जो सबसे बड़ा दयालु है।

फिर अल्लाह तआला उन लोगों की स्थिति को स्पष्ट करते हैं जिन्होंने काफ़िर बनना चुना और काफ़िर के रूप में मर गए: ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ وَمَاتُواْ وَهُمۡ كُفَّارٌ أُوْلَٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ لَعۡنَةُ ٱللَّهِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلنَّاسِ أَجۡمَعِينَ ١٦١ خَٰلِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمُ ٱلۡعَذَابُ وَلَا هُمۡ يُنظَرُونَ ١٦٢﴾ (वास्तव में, जो काफ़िर (अविश्वासी) हो गये और इसी दशा में मरे, तो वही हैं, जिनपर अल्लाह तथा फ़रिश्तों और सब लोगों की धिक्कार है। वह इस (धिक्कार) में सदावासी होंगे, उनसे यातना मंद नहीं की जायेगी और न ही उन्हें कोई मोहलत दी जाएगी) इस आयत में यह स्थिति स्पष्ट की गई है कि जिन्होंने इस्लाम के बजाय काफ़िर बनना चुना और काफ़िर के रूप में मर गए, अल्लाह उनकी रक्षा करे। इमाम इब्न -ए- सअदी रहमतुल्लाह अलैह ने इस आयत ﴿أُوْلَٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ لَعۡنَةُ ٱللَّهِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلنَّاسِ أَجۡمَعِينَ﴾ की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि: क्योंकि उनका काफ़िर होना एक स्थिर स्थिति बन गया, इसलिए उन पर लानत भी एक स्थिर स्थिति बन गई जो कभी समाप्त नहीं होगी, क्योंकि निर्णय उसकी वजह से होता है जो मौजूद है या अनुपस्थित है।[1]

फिर अल्लाह ने उनके अज़ाब को हमेशा के लिए स्थायी रूप में वर्णित किया, और यह कि उन्हें कोई राहत नहीं दी जाएगी और न ही उन्हें कोई मोहलत मिलेगी। यह दर्शाता है कि दुनिया तौबा और अल्लाह की ओर लौटने का समय है, और आख़िरत न्याय का दिन होगा। यह अल्लाह का बयान और चेतावनी है कि काफ़िर का अंत आग है, जो कि स्पष्ट वर्णन और चेतावनी है, और यह हर उस विचार को समाप्त करता है कि शायद उन्हें मोहलत दी जाएगी और वे न्याय के दिन लौट आएंगे। मामला बिल्कुल स्पष्ट है: ﴿وَلَا هُمۡ يُنظَرُونَ﴾ (और उन्हें कोई मोहलत नहीं दी जाएगी)।

(1) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान (1/ 123), लेखकः इब्न -ए- सअदी।

फिर संदर्भ इस बात को स्पष्ट करने के लिए आगे बढ़ता है कि बंदे को अपने रचयिता तबारक व तआला (सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह) के बारे में क्या जानना चाहिए: ﴿وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ١٦٣﴾ (और तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है, उस अत्यंत दयालु, दयावान के सिवा कोई पूज्य नहीं) यह महान आयत अल्लाह तआला की उस विशेषता को स्पष्ट करती है जिसे बंदे को जानना चाहिए, विश्वास करना चाहिए और इसके कई महान अर्थों को मानते हुए कार्य करना चाहिए। "وَإِلَٰهُكُمْ वह तुम्हारा उपास्य है," वही तुम्हारा पूज्य है, जिसे तुम उपासना के लिए मुड़ते हो, और इस प्रकार अल्लाह तआला के अलावा सभी पूज्य समाप्त हो जाते हैं। ﴿وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ﴾ (और तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है) यह उसकी एकता की पुष्टि करता है।

जहाँ तक इस वाक्य ﴿لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ﴾ "उसके सिवा कोई उपास्य नहीं" का सवाल है, यह नकारात्मक और सकारात्मक दोनों को समाहित करता है, यह कहकर कि सृष्टिकर्ता के सिवा कोई उपास्य नहीं है जिसे उसके सिवा हक़ से पूजा जाए। उसने हर उपास्य को नकार दिया, और प्रत्येक उपास्य को नकारते हुए, पुष्टि की कि तबारक व तआला (सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह) ही एकमात्र उपास्य है। इससे यह संकेत मिलता है कि बंदे को किसी भी उपासना को उसके लिए ही निर्देशित करना चाहिए, उसके लिए कोई साझेदार नहीं। इस प्रकार वही रब है, वही रचयिता है और वही प्रबंधक है, और प्रत्येक विशेषता जो भय, नम्रता, सहायता और आश्रय की आवश्यकता पर निर्भर करती है। फिर अल्लाह तबारक व तआला स्पष्ट करता है कि ﴿لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ﴾ (उस अत्यंत दयालु, दयावान के सिवा कोई पूज्य नहीं) यही हमारे रब तबारक व तआला की उस रहमत की विशेषता है, जो पूरे ब्रह्मांड को घेरती है। उसकी अपने बंदों के प्रति रहमत का प्रमाण यह है कि उसने पैगम्बरों को भेजा, किताबों को उतारा, और अपनी रहमत से आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, उसे उनके अधीन किया। वह अपने बंदों की तौबा को अपनी रहमत से स्वीकार करता है। यदि ऐसा नहीं होता, तो वह काफ़िर की तौबा को स्वीकार नहीं करता जब वह कुफ़्र छोड़ देता है, और उसकी तौबा को भी नहीं जब उसे संतान मिलती है। वह पवित्र है उन बातों से जो वे कहते और बताते हैं, और इसी तरह वह अन्य पापों में भी अपने बंदों की तौबा को स्वीकार करता है। अल्लाह तआला की वह रहमत जो सब कुछ को घेरती है, उसी अल्लाह के लिए हर प्रकार की प्रशंसा है।

अल्लाह तआला के इस कथन: ﴿لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ﴾ "उसके सिवा कोई उपास्य नहीं, वही रहमान, रहीम है," में यह बताया गया है कि उसके सिवा कोई रहमान, रहीम उपास्य नहीं है, जो इन नामों और विशेषताओं से सुसज्जित हो। इसलिए जो कुछ भी अल्लाह तआला के सिवा पूजा जाता है, वह वह रहमत नहीं रखता जो अल्लाह तआला की है, और वह उन

नामों और विशेषताओं से सुसज्जित नहीं हो सकता जिनसे रहमान सुसज्जित है। इस प्रकार, कोई और नहीं जो रहमान, रहीम देता है। और इसी प्रकार, इसमें अल्लाह तआला की एकता की पुष्टि है। अल्लाह तआला के लिए रहमान और रहीम नाम की पुष्टि भी है। इसलिए, यह आयत तौहीद के तीनों प्रकार को शामिल है, तौहीद -ए- रुबूबियत, तौहीद -ए- उलूहियत तथा तौहीद -ए- अस्मा व सिफ़ात।

﴿إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِن مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾﴾ [سورة البقرة:١٦٤]

(बेशक आकाशों तथा धरती की रचना में, रात तथा दिन के एक-दूसरे के पीछे निरन्तर आने-जाने में, उन नावों में, जो मानव के लाभ के साधनों को लिए, सागरों में चलती-फिरती हैं और वर्षा के उस पानी में, जिसे अल्लाह आकाश से बरसाता है, फिर धरती को उसके द्वारा, उसके मरण् (सूखने) के पश्चात् जीवित करता है और उसमें प्रत्येक जीवों को फैलाता है तथा वायुओं को फेरने में और उन बादलों में, जो आकाश और धरती के बीच उसकी आज्ञा के अधीन रहते हैं, (इन सब चीज़ों में) अगणित निशानियाँ (लक्षण) हैं, उन लोगों के लिए, जो समझ-बूझ रखते हैं)।

अल्लाह तआला अपने बंदों का ध्यान अपने महान साम्राज्य की ओर आकर्षित करता है, और इसमें मौजूद चमत्कारी निशानियों की ओर, जो उसकी रब्ब तथा उपास्य होने की ओर संकेत करती हैं, और यह कि वह सब कुछ का रचयिता, मालिक और अपनी हिकमत से उसमें कार्य करने वाला है। तबारक व तआला अपने बंदों को आसमान की ऊंचाई, उसकी सुक्ष्मता और व्यापकता की ओर ध्यान देने और चिंतन करने के लिए प्रेरित करते हैं, और उसमें मौजूद घूमते हुए और स्थिर सितारों की ओर, जिन्हें गिनने वाले गिन नहीं सकते। तो इसे इतनी सूक्ष्मता में किसने बनाया? क्या यह इस ब्रह्मांड का रचयिता नहीं है? क्या यह ब्रह्मांड का रब नहीं है? और यह पृथ्वी अपनी घनत्वता, नीचाई, ऊंचे पर्वतों, महासागरों, रेगिस्तानों, घाटियों और उसमें मौजूद लाभों के साथ है। तो किसने इस पृथ्वी को इस प्रकार बनाया और इसमें रास्तों और नालों के मार्ग बनाए? क्या यह ब्रह्मांड का मालिक और रचयिता नहीं है? फिर रात और दिन के अंतर पर विचार करें, यह आता है और यह चला जाता है, जो एक दूसरे के पीछे सटीक क्रम में आते-जाते हैं, न एक दूसरे से आगे बढ़ते हैं और न ही पीछे रहते हैं। कभी यह लंबा होता है और वह छोटा, कभी यह उससे लेता है और फिर यह एक दूसरे के साथ बदलते हैं। क्या यह अपने सृजन में मस्तिष्कीय नहीं है? क्या यह संचालित करने वाला नहीं है? क्या यह अल्लाह तबारक व तआला सबसे अच्छा रचयिता नहीं है? और इसी तरह समुद्रों की ओर ध्यान आकर्षित करें कि

कैसे उसने उन्हें जहाजों को लाने और ले जाने के लिए उपयुक्त बनाया, जो सामान और आजीविका लेकर एक स्थान से दूसरे स्थान जाते हैं, जो रहमान तबारक व तआला के विभिन्न उपहारों को ले जाते हैं। तो समुद्रों को किसने एक दूसरे से जोड़ा? किसने उनकी दूरियों का निर्धारण किया? किसने उन्हें भूमि से उचित दूरी पर रखा ताकि पानी भूमि पर न फैल जाए और उसे डुबो दे? क्या यह अल्लाह लतीफ़ रहमान रहीम नहीं है?

फिर अल्लाह तआला उस विचार की ओर ध्यान आकर्षित करता है जो बंदा अपनी इंद्रियों के माध्यम से देखता और महसूस करता है, और उसके लाभ और हानि को पहचानता है, जैसे आकाश और पृथ्वी के बीच बादलों का उतरना, जो धरती और लोगों को उनकी जरूरत के मुताबिक पानी देता है, और उन्हें लाभ पहुंचाने के अनुसार। फिर वह थोड़ा-थोड़ा हटता है ताकि हवाएं उसे अन्य स्थानों की ओर ले जा सकें। अगर बारिश निर्धारित मात्रा से अधिक हो जाए तो लोग, फसलें और जानवर नष्ट हो जाएंगे। तो किसने यह निर्धारित किया? क्या यह अपनी शक्ति से ब्रह्मांड का रचयिता नहीं है? फिर वह इस पानी से मर चुकी पृथ्वी को जीवित करता है, जिससे हरी घास उगती है और धरती हरी हो जाती है, और लोग इस उपहार से खुश होते हैं। उसने सवारी, सुंदरता और खाने के लिए जानवरों को पैदा किया और फैलाया है। फिर अल्लाह तबारक व तआला हवाओं के चिंतन की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं, जिसका प्रभाव बादलों को ले जाने और एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए देखा जाता है। इसी तरह वह धरती की मिट्टी को उठाती है जबकि व्यक्ति इन हवाओं को उनकी सूक्ष्मता के कारण नहीं देखता, केवल जब वे उसके चेहरे और त्वचा पर चलती हैं, तो वह उनकी कोमलता को महसूस करता है, या जो वे ले जाती हैं, या चलती हैं, या उखाड़ती हैं, उसे देखता है, तो वह उनके प्रभाव को देखता है लेकिन उन्हें नहीं देखता। और अल-हक तबारक व तआला उन्हें अपनी इच्छा से बदलता है, कभी वे रहमत के साथ आती हैं, कभी वे अज़ाब के साथ आती हैं, कभी वे बादलों के आने से पहले उन्हें खबर देती हैं, कभी वे उन्हें लाती हैं, कभी वे उन्हें इकट्ठा करती हैं, कभी वे उन्हें फैलाती हैं, और कभी वे उन्हें हटा देती हैं। फिर कभी ये उत्तर से आती हैं जिन्हें 'शामिया' कहते हैं, और कभी ये यमन की ओर से आती हैं, कभी 'सबा' जो पूर्व से आती हैं, और कभी 'दबूर' जो पश्चिम से आती हैं। तो किसने इन्हें इस प्रकार नियंत्रण किया और इन्हें इन दिशाओं में चलाया? क्या यह इस ब्रह्मांड का नियंत्रक और सृजनहार नहीं है? क्या यह सही उपासना का पात्र नहीं है? क्या यह रहमान रहीम नहीं है? तो उसकी हर सृष्टि इस बात की गवाही देती है कि वह अल्लाह तबारक व तआला है, हर चीज का सृजनहार और नियंत्रक।

आयत इस बयान के साथ समाप्त होती है कि: ﴿لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ﴾ (यह सब उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो अक्ल रखते हैं)। तो इस आयत में पहले से उल्लेख की गई सब बातें वे निशानियाँ और प्रमाण हैं जो तबारक व तआला की ओर संकेत करती हैं, उन लोगों के लिए

जो चिंतन और विचार करते हैं, फिर सोचते हैं और समझते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि इंसान के आस-पास के माहौल पर विचार और चिंतन करना कितना महत्वपूर्ण है, ताकि उसे अल्लाह तआला में विश्वास और उसकी आज्ञाकारिता प्राप्त हो सके।

यह इस बात की महत्ता को भी बताता है कि शैक्षणिक पाठ्यक्रमों, पाठों, और दावाह की विधियों में अल्लाह तआला की सृष्टि के चिंतन और विचार की प्रक्रिया को शामिल करना कितना महत्वपूर्ण है, जो कि पूरे ब्रह्मांड और इसमें मौजूद प्रत्येक चीज़ है, और जो उसके एकत्व का प्रमाण है।

﴿ وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ ٱللَّهِ ۖ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَشَدُّ حُبًّا لِّلَّهِ ۗ وَلَوْ يَرَى ٱلَّذِينَ ظَلَمُوٓا۟ إِذْ يَرَوْنَ ٱلْعَذَابَ أَنَّ ٱلْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾ إِذْ تَبَرَّأَ ٱلَّذِينَ ٱتُّبِعُوا۟ مِنَ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوا۟ وَرَأَوُا۟ ٱلْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ ٱلْأَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾ وَقَالَ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوا۟ لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا۟ مِنَّا ۗ كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ ٱللَّهُ أَعْمَٰلَهُمْ حَسَرَٰتٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا هُم بِخَٰرِجِينَ مِنَ ٱلنَّارِ ﴿١٦٧﴾ ﴾ [سورة البقرة:١٦٥-١٦٧].

(कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसका साझी बनाते हैं और उनसे, अल्लाह से प्रेम करने जैसा प्रेम करते हैं तथा जो ईमान लाये, वे अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं और क्या ही अच्छा होता, यदि ये अत्याचारी यातना देखने के समय जो बात जानेंगे, इसी समय जानते कि सब शक्ति तथा अधिकार अल्लाह ही को है और अल्लाह का दण्ड भी बहुत कड़ा है, (तो अल्लाह के सिवा दूसरे की पूजा अराधना नहीं करते।) जब ये दशा होगी कि जिनका अनुसरण किया गया वे अपने अनुयायियों से विरक्त हो जायेंगे और उनके आपस के सभी सम्बंध टूट जायेंगे। तथा जो अनुयायी होंगे, वे ये कामना करेंगे कि एक बार और हम संसार में जाते, तो इनसे ऐसे ही विरक्त हो जाते, जैसे ये हमसे विरक्त हो गये हैं! ऐसे ही अल्लाह उनके कर्मों को उनके लिए संताप बनाकर दिखाएगा और वे अग्नि से निकल नहीं सकेंगे)।

तो अल्लाह तआला ने इन महान आयतों के पिछले हिस्से में जो उसके महान साम्राज्य में शामिल निशानियों और प्रमाणों का विवरण दिया है, जो उसकी रब्ब और उपास्य होने की पुष्टि करते हैं, और यह कि वह सब कुछ का सृजनहार, मालिक और अपनी हिकमत से उसमें कार्य करने वाला है, उसके बावजूद कुछ लोग हैं जो उसे झुठलाते और उसके साथ साझीदार बनाते हैं: ﴿ وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَندَادًا ﴾ (कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसका साझी बनाते हैं)

मनुष्यों में से कुछ लोग जो अल्लाह तआला की वह्दानियत (एकता), रुबूबियत (पालनहार होने) तथा उलूहियत (उपास्य होने) के प्रमाणों को देखता एवं अनुभव करता है, इसके बावजूद वह दूसरों को अल्लाह का साझीदार बनाते हैं, और उसकी उपासना करते हैं: जैसे रजा (आशा), ख़ौफ़ (डर), ख़शीयत (भय), दुआ (प्रार्थना) एवं इस्तिग़ास़ा (फ़रियाद) इत्यादि करते हैं, मानो वे अल्लाह के समान और उसके प्रतिद्वंद्वी हों। वे अल्लाह को छोड़ कर उन्हें पूजते हैं, बल्कि उन माबूदों से अल्लाह से समान प्रेम करते हैं: ﴿وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ ٱللَّهِ﴾ (कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसका साझी बनाते हैं और उनसे, अल्लाह से प्रेम करने जैसा प्रेम करते हैं) यह कुछ लोगों के सोच में गड़बड़ी, विश्लेषण में गड़बड़ी, और निष्कर्ष में गड़बड़ी को स्पष्ट करता है, जो दूसरों के अंधानुकरण का परिणाम है, या उस परवरिश के कारण जो उन्हें मिली है, या उस बुद्धिमान शक्ति को अक्षम करने के कारण जो अल्लाह तआला ने अपने बंदों को दी है, यानी वह बुद्धि जो सोचती और निष्कर्ष निकालती है, और जो अल्लाह तबारक व तआला की ओर संकेत करती है।

फिर यह मामला इस स्तर तक पहुंच जाता है कि वे उन माबूदों से डरने लगते हैं, चाहे वे पेड़ हों, पत्थर हों, या अन्य पूजा स्थल हों, और उन्हें अल्लाह तआला की तुलना में अधिक प्यार करने लगते हैं। यह विचार विनिमय और दावाह में इस बहस की आवश्यकता को समझाता है, जिससे यह साबित होता है कि वे जो कर रहे हैं, उसमें गलती है।

यह भी बताता है कि हर सृष्टि अल्लाह तआला का भक्त है, तो कैसे एक सृष्टि दूसरी सृष्टि को उसके रचयिता के अलावा उपासना का साझेदार या पूज्य बना सकती है, जिसने उसके ध्यान को ब्रह्मांड की महान निशानियों की ओर आकर्षित किया? और जब हर सृष्टि में इच्छा की कमी है, तो कैसे एक सृष्टि दूसरी इच्छाहीन सृष्टि से अपनी रक्षा करने या उसे लाभ पहुंचाने की उम्मीद कर सकती है? यहां तक कि नबी भी अल्लाह तआला के बंदे हैं।

अल्लाह तआला सूरह आराफ़ में अपने नबी से कहता है: ﴿قُل لَّآ أَمۡلِكُ لِنَفۡسِي نَفۡعٗا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَآءَ ٱللَّهُۚ وَلَوۡ كُنتُ أَعۡلَمُ ٱلۡغَيۡبَ لَٱسۡتَكۡثَرۡتُ مِنَ ٱلۡخَيۡرِ وَمَا مَسَّنِيَ ٱلسُّوٓءُۚ﴾ (कहो, मैं अपनी आत्मा के लिए न तो कोई लाभ पहुंचा सकता हूँ और न ही कोई नुकसान, सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे। और अगर मैं ग़ैब जानता, तो मैं बहुत अच्छे काम करता और मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचता)। तो अगर नबी अपनी आत्मा के लिए न तो कोई लाभ और न ही कोई नुकसान पहुंचा सकते हैं, तो दूसरी सृष्टियाँ अपने लिए या दूसरों के लिए क्या कर सकती हैं?

फिर अल्लाह तआला उन लोगों के प्रेम और ईमान वाले लोगों के प्रेम के बीच का अंतर बताता है: ﴿وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَشَدُّ حُبّٗا لِّلَّهِۗ﴾ (तथा जो ईमान लाये, वे अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं) "أَشَدُّ अधिक" शब्द यह बताता है कि ईमान वाले लोग किसी भी चीज़ को अल्लाह से अधिक प्यार नहीं करते हैं। जो कुछ भी उससे कम है, वह प्रेम में भी उससे कम है। यह बताता है कि अल्लाह से प्रेम, उसकी शरीअत से प्रेम, और उसके प्रति समर्पण उसका अनुसरण करने और ईमान की निशानी है। वे उसकी अवज्ञा करने से घृणा करते हैं, और अपूर्ण उपासना करने से घृणा करते हैं, और उपासना करने की लालसा रखते हैं, क्योंकि जो किसी चीज़ से प्रेम करता है, वह उसकी लालसा करता है। और जो अल्लाह से प्रेम करता है, वह उसकी आज्ञा का पालन करता है और अवज्ञा और असफलता से शर्मिंदा होता है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि वह उसे इस हालत में देखे जो उसे पसंद नहीं है।

इसलिए ईमान वालों का अल्लाह से प्रेम उन्हें शिर्क और कमी से दूर रखता है। वे उसका सम्मान करते हैं, उस पर भरोसा करते हैं, और भय और आशा के साथ उसकी पूजा करते हैं। उसका प्रेम उनके दिलों पर हावी हो जाता है, वे किसी भी चीज़ को उससे अधिक प्रेम नहीं करते हैं, वे केवल उससे ही सहारा मांगते हैं, और केवल उसी की ओर रुख करते हैं, वे उसकी उपासना करते हैं और किसी को भी उसके साथ साझी नहीं बनाते।

अल्लाह का कथन ﴿وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَشَدُّ حُبّٗا لِّلَّهِۗ﴾ (तथा जो ईमान लाये, वे अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं) ईमान वाले की इच्छा को हर बाधा के सामने मजबूत करता है। यदि वह दो विकल्पों के सामने है, तो वह उस विकल्प को चुनता है जो इस कथन को पूरा करता है: ﴿وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَشَدُّ حُبّٗا لِّلَّهِۗ﴾ (तथा जो ईमान लाये, वे अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं) यदि वह किसी प्रलोभन के सामने है, तो वह इस कथन से शक्ति प्राप्त करता है: ﴿وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَشَدُّ حُبّٗا لِّلَّهِۗ﴾ (तथा जो ईमान लाये, वे अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं) यदि उसकी आत्मा उपासना करने से थक जाती है, तो वह इस कथन से उसे प्रोत्साहित करता है: ﴿وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَشَدُّ حُبّٗا لِّلَّهِۗ﴾ (तथा जो ईमान लाये, वे अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं) यदि उसकी इच्छाएँ उसे अल्लाह की नाराज़गी की ओर आकर्षित करती हैं, तो वह इस महान कथन से शक्ति प्राप्त करता है: ﴿وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَشَدُّ حُبّٗا لِّلَّهِۗ﴾ (तथा जो ईमान लाये, वे अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं) यदि वह किसी परीक्षा में फंस जाता है, तो वह इस कथन से इसे पार करता है: ﴿وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَشَدُّ حُبّٗا لِّلَّهِۗ﴾ (तथा जो ईमान लाये, वे अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं) और यदि दृष्टि भटक जाती है, तो उसे रहमान रहीम का यह कथन रोकता है: ﴿وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَشَدُّ حُبّٗا لِّلَّهِۗ﴾ (तथा जो ईमान

लाये, वे अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं) और यदि विचार विचलित होता है, तो उसे अपने सही मार्ग पर यह कथन लाता है: ﴿وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَشَدُّ حُبًّا لِّلَّهِ﴾ (तथा जो ईमान लाये, वे अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं) तो हर भटकाव की शक्ति को अल्लाह तआला के साथ मजबूत करता है, और हर झुकाव, इच्छा और अतिशयोक्ति पर अपने अल्लाह तआला के प्रति प्रेम को प्राथमिकता देता है, ताकि उसका अल्लाह तआला के प्रति प्रेम पर्वतों की तरह हो, जिसके साथ वह जीवन की परीक्षाओं का मुकाबला करता और उनसे जूझता है।

फिर अलीम ह़कीम (सर्वज्ञानी एवं तत्वज्ञानी) अल्लाह ने शिर्क को ज़ुल्म बताया, जैसे कि उसके इस कथन में है: ﴿وَلَوْ يَرَى ٱلَّذِينَ ظَلَمُوٓاْ إِذْ يَرَوْنَ ٱلْعَذَابَ﴾ (और क्या ही अच्छा होता, यदि ये अत्याचारी यातना देखने के समय जो बात जानेंगे) तो अल्लाह तबारक व तआला ने शिर्क को ज़ुल्म के रूप में वर्णित किया, जिससे शिर्क करने वाला अपने आप पर ज़ुल्म करता है। इसी तरह, शिर्क एक घना अंधकार है जो शिर्क करने वाले को नूर से रोकता है। जो लोग अपनी आत्माओं पर इस काम से अत्याचार करते हैं, जो उन्हें शिर्क के अंधकार में डालता है, यदि वे यातना को देखते, तो वे इसमें प्रवेश नहीं करते। यह संकेत करता है कि शिर्क एक ज़ुल्म और अंधकार है जो उसके साथी को नूर-ए-तौह़ीद और वह इबादत जो दिलों को रौशन करती है और आत्मा को सुकून देती है, से रोकता है।

शिर्क करने वाला अपने आप को एक अत्याचारी बनाता है जो सज़ा और बदला का हकदार होता है, जैसा कि अल्लाह ने अपने प्रेम के संदर्भ में बताया है, उसने फ़रमाया है: ﴿وَلَوْ يَرَى ٱلَّذِينَ ظَلَمُوٓاْ إِذْ يَرَوْنَ ٱلْعَذَابَ أَنَّ ٱلْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلْعَذَابِ﴾ (और क्या ही अच्छा होता, यदि ये अत्याचारी यातना देखने के समय जो बात जानेंगे, इसी समय जानते कि सब शक्ति तथा अधिकार अल्लाह ही को है और अल्लाह का दण्ड भी बहुत कड़ा है) यह एक धमकी और कड़ी चेतावनी है, जिससे दिल कांपते हैं। जब वे यातना को देखेंगे, तो वे उस समय जानेंगे कि सारी शक्ति अल्लाह की है। "جَمِيعًا सब" शब्द का आना यह स्पष्ट करने के लिए है कि सारी शक्ति केवल अल्लाह की है। मानव शक्ति कमजोर है, क्योंकि यह एक अधूरी शक्ति है, जो "جَمِيعًا सब" नहीं है। और उनके पूज्यों की ली गई शक्ति भी कमजोर और दुर्बल है, क्योंकि यह "جَمِيعًا सब" नहीं है। इसलिए, शिर्क करने वाला अपनी माबूदों के सामने बच सकता है और बहाना बना सकता है, लेकिन वह उस के सामने नहीं कर सकता जिसके पास सारी शक्ति है। वह उस शक्ति से अलग नहीं हो सकता: ﴿وَلَوْ يَرَى ٱلَّذِينَ ظَلَمُوٓاْ إِذْ يَرَوْنَ ٱلْعَذَابَ أَنَّ ٱلْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا﴾ (और क्या ही अच्छा होता, यदि ये अत्याचारी यातना देखने के समय जो बात जानेंगे, इसी समय जानते कि सब शक्ति तथा अधिकार अल्लाह ही को है)

फिर अल्लाह, जो सब कुछ जानने वाला और सब पर क़ाबू रखने वाला है, शिर्क करने वाले और ईमान वाले की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए तुलना करते हैं, ताकि यह चेतावनी और मार्गदर्शन बने। तो या तो संबोधित व्यक्ति सही रास्ते पर लौट आए, या फिर उसे वह सज़ा मिले जिसका अल्लाह तआला ने अपने कथन में वादा किया है:

﴿وَلَوْ يَرَى ٱلَّذِينَ ظَلَمُوٓا۟ إِذْ يَرَوْنَ ٱلْعَذَابَ أَنَّ ٱلْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلْعَذَابِ﴾ (और क्या ही अच्छा होता, यदि ये अत्याचारी यातना देखने के समय जो बात जानेंगे, इसी समय जानते कि सब शक्ति तथा अधिकार अल्लाह ही को है और अल्लाह का दण्ड भी बहुत कड़ा है) तो उन्होंने इस रब्बानी धमकी के माध्यम से जान लिया कि एक भयानक सज़ा, जिसे वे अपनी सख्ती के कारण सहन नहीं कर सकते, उनका इंतजार कर रही है, अगर वे शिर्क में रहना नहीं छोड़ते।

फिर संदर्भ अनुयायी और अनुगामी की स्थिति का विवरण देने के लिए आगे बढ़ता है। अल्लाह तआला ने कहा: ﴿إِذْ تَبَرَّأَ ٱلَّذِينَ ٱتُّبِعُوا۟ مِنَ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوا۟﴾ (जब ये दशा होगी कि जिनका अनुसरण किया गया वे अपने अनुयायियों से विरक्त हो जायेंगे) तो फरिश्ते उनसे बरी हो जाएंगे जिनकी पूजा की गई थी, और नेक लोग और रसूल भी बरी हो जाएंगे जिनकी कब्रों की पूजा की गई थी। जैसा कि अल्लाह तआला ने नबी ईसा मसीह के बारे में सूरह अल-माइदा में कहा: ﴿وَإِذْ قَالَ ٱللَّهُ يَٰعِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ءَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ ٱتَّخِذُونِى وَأُمِّىَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ ٱللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَٰنَكَ مَا يَكُونُ لِىٓ أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِى بِحَقٍّ﴾ (और जब अल्लाह कहेगा: हे ईसा, मरियम के बेटे, क्या तुमने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के अलावा दो उपास्य बना लो? वह कहेंगे: पवित्रता तुझी को है, मेरे लिए यह कहना सही नहीं है)।

तो वे लोग जिनकी अल्लाह के सिवा पूजा की गई, कभी यह नहीं चाहेंगे कि उन्हें उपास्य बनाया जाए। यह अल्लाह का न्याय है, क्योंकि वे जिनकी बिना इच्छा के पूजा की गई थी, खुद को इस पूजा से बरी कर देंगे। तो उनके कर्मों के कारण उन पर प्रमाण स्थापित हो जाएगा। ﴿وَرَأَوُا۟ ٱلْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ ٱلْأَسْبَابُ﴾ (और वे यातना देखेंगे और उनके सारे संबंध टूट जाएंगे)। तो उन्होंने अल्लाह की यातना को देख लिया और उनकी चालें, तर्क और बचाव के सभी साधन उनसे छूट गए, और उन्हें आग से बचने का कोई रास्ता नहीं मिला।

वे अनुयायी, अर्थात शिर्क करने वाले कहेंगे: ﴿وَقَالَ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوا۟ لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا۟ مِنَّا﴾ (तथा जो अनुयायी होंगे, वे ये कामना करेंगे कि एक बार और हम संसार में जाते, तो इनसे ऐसे ही विरक्त हो जाते, जैसे ये हमसे विरक्त हो गये हैं!) यहां वे दुनिया में लौटने

की इच्छा करेंगे ताकि वे अल्लाह की एकता की पुष्टि कर सकें, क्योंकि उन्होंने यातना को देख लिया। तो इस शिर्क और अन्यायपूर्ण उपासना पर पछतावा और खेद आता है। ﴿كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ ٱللَّهُ أَعۡمَٰلَهُمۡ حَسَرَٰتٍ عَلَيۡهِمۡۖ وَمَا هُم بِخَٰرِجِينَ مِنَ ٱلنَّارِ﴾ (ऐसे ही अल्लाह उनके कर्मों को उनके लिए संताप बनाकर दिखाएगा और वे अग्नि से निकल नहीं सकेंगे) तो आयतें उनके अंत को स्पष्ट करके समाप्त होती हैं, ताकि यह हर शिर्क करने वाले के लिए चेतावनी हो, और उन पर अल्लाह की सज़ा का प्रमाण हो, जो अपने कुफ़्र पर मर गए। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह एक काफ़िर के लिए सबसे बड़ा पछतावा है। यह एक महान क़ुरआनी नसीहत है, तो जो क़ुरआन की नसीहतों से नसीहत नहीं लेता, वह किस बात से नसीहत लेगा? हम अल्लाह तआला से उसकी सुरक्षा, मार्गदर्शन, सफलता और उसकी प्रसन्नता और मान्यता के कामों पर स्थिरता की दुआ करते हैं।

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ كُلُواْ مِمَّا فِي ٱلۡأَرۡضِ حَلَٰلٗا طَيِّبٗا وَلَا تَتَّبِعُواْ خُطُوَٰتِ ٱلشَّيۡطَٰنِۚ إِنَّهُۥ لَكُمۡ عَدُوّٞ مُّبِينٌ ١٦٨ إِنَّمَا يَأۡمُرُكُم بِٱلسُّوٓءِ وَٱلۡفَحۡشَآءِ وَأَن تَقُولُواْ عَلَى ٱللَّهِ مَا لَا تَعۡلَمُونَ ١٦٩﴾ [سورة البقرة:١٦٨-١٦٩].

(हे लोगो! धरती में जो ह़लाल (वैध) स्वच्छ चीज़ें हैं, उन्हें खाओ और शैतान की बताई राहों पर न चलो, वह तुम्हारा खुला शत्रु है। वह तुम्हें बुराई तथा निर्लज्जा का आदेश देता है और ये कि अल्लाह पर उस चीज़ का आरोप धरो, जिसे तुम नहीं जानते हो)।

अल्लाह तआला सभी लोगों को यह याद दिलाते और समझाते हैं कि धरती से निकलने वाली नेमतें उसकी इजाज़त और रह़मत से हैं: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ كُلُواْ مِمَّا فِي ٱلۡأَرۡضِ حَلَٰلٗا طَيِّبٗا﴾ (हे लोगो! धरती में जो ह़लाल (वैध) स्वच्छ चीज़ें हैं, उन्हें खाओ) इस आयत के इस अंश से यह संकेत मिलता है कि अल्लाह का रिज़्क सभी लोगों के लिए है, चाहे वे ईमान वाले हों या काफ़िर। "يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ हे लोगो" यह अल्लाह तबारक व तआला की उदारता का प्रमाण है, कि वही रोज़ी देने वाला है, जिसने अपनी दया, शक्ति और हिकमत से पृथ्वी को उगाने और उसमें से इंसान को आवश्यकता के अनुसार विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ निकालने के लिए बनाया। और यहां ध्यान आकर्षित किया गया है कि पृथ्वी से खाने का आदेश देकर, जो मात्रा और प्रकार में इंसान की आवश्यकता के अनुसार है, यह सवाल उठता है जो ईमान की ओर ले जाता है।

तो इंसान की ज़रूरत और अल्लाह तआला की नेअमत (अनुग्रह) के मध्य किसने यह मात्रात्मक और प्रकारात्मक संगति तय की है? किसने यह तय किया कि बंजर भूमि से पेड़ और विभिन्न आकार और प्रकार की वनस्पतियाँ निकले, पत्तियों और फलों में विविधता और भिन्नता के साथ? और स्वाद में विविधता, कुछ खट्टे होते हैं, कुछ मीठे स्वाद के होते हैं, और फिर हर स्वाद की अलग-अलग स्तर होते हैं, जबकि वे सभी एक ही भूमि और एक ही पानी से

निकले हैं। यह इंसान के चिंतन को प्रेरित करता है कि यह सब किसने निकाला और निर्धारित किया? तो निश्चित रूप से एक ऐसा स्रष्टा होना चाहिए जो शक्ति, क्षमता, बुद्धिमत्ता और दया का धनी हो, जिसने इस एक ही भूमि से इन विविध खाद्य पदार्थों को प्रदान किया, जिससे उस पर ईमान लाना, उसकी उपासना करना और उसे अकेले, बिना किसी साझेदार के मानना अनिवार्य हो जाता है।

और अल्लाह तआला ने इसे खाने के हुक्म को हलाल (حَلَٰلًا) करार दिया है, जो कि ह़राम के विपरीत है। हुक्म वही दे सकता है जिसे हुक्म देने का अधिकार हो। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि यह करीम और मेहरबान ख़ालिक ही है जिसने इस रिज़्क़ को उगाया और निकाला। उसने इसे तुम्हारे लिए हलाल (حَلَٰلًا) और पाक व पवित्र (طَيِّبًا) बनाया, यानी ऐसा जिसे खाने में कोई बुराई न हो। इसमें कोई शक नहीं कि इन नेमतों पर उसके शुक्रगुज़ार होना ज़रूरी है। हम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं कि उसने इतनी बड़ी और अनमोल नेमतें हमें दीं।

हलाल होने का मतलब यह भी है कि इसे ह़राम तरीक़ों से हासिल न किया जाए, जैसे चोरी करना, किसी का हक छीनना, या किसी ह़राम सौदे के ज़रिए इसे खाना। और पाक होने का मतलब यह है कि इसे उसकी असल हालत में ही खाया जाए, इसे हलाल और पाक से बदलकर खबीस और ह़राम न बनाया जाए। जैसे इसे नशे वाला बना दिया जाए, या इसमें ऐसी चीज़ मिलाई जाए जो किसी भी तरह से नुक़सानदेह हो।

इसके बाद इस नेमत का बयान करने के साथ-साथ एक और बड़ी नेमत का ज़िक्र आता है, और वह है दुश्मन की पहचान और जानकारी देना। अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿وَلَا تَتَّبِعُواْ خُطُوَٰتِ ٱلشَّيۡطَٰنِۚ إِنَّهُۥ لَكُمۡ عَدُوّٞ مُّبِينٌ﴾ (और शैतान की बताई राहों पर न चलो, वह तुम्हारा खुला शत्रु है) शैतान इंसानों का खुला दुश्मन है, क्योंकि वह उनकी इच्छाओं और शंकाओं को सजाकर उनके सामने पेश करता है। वह मोमिन का दुश्मन है, क्योंकि वह उसे बुराई की ओर उकसाता है और भलाई के कामों को टालने के लिए बहकाता है, ताकि वह नेकी का वक्त गुज़ार दे। और वह काफ़िर का भी दुश्मन है, क्योंकि वह उसे ऐसी शंकाएं देता है जो उसे हक़ की राह से रोकती हैं। साथ ही, इच्छाओं को उसके लिए सजाकर पेश करता है ताकि वह उनमें डूबा रहे और सच्चाई की ओर ध्यान न दे।

इसलिए शैतान के क़दमों पर चलने से मना किया गया है। यहाँ (خُطُوَٰتِ) "क़दमों" का मतलब है उसके तौर-तरीक़े। यह लफ़्ज़ इस बात को बयान करता है कि शैतान इंसान को धीरे-धीरे और क्रमबद्ध तरीक़े से फंसाता है। जैसे ही इंसान उसका एक हुक्म मानता है, वह उसे दूसरे गुनाह की ओर खींच लेता है, यहाँ तक कि वह इंसान को उसकी भलाई और सफलता से दूर

कर देता है, यहाँ तक कि वह उस कार्य में पड़ जाता है जो उस के लिए बुरा है ﴿إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوٓءِ وَالْفَحْشَآءِ﴾ (वह तुम्हें बुराई तथा निर्लज्जता का आदेश देता है)। अर्थात जो भी बुरे काम हैं, चाहे इस दुनिया से जुड़े हों या आखिरत से। और बेहयाई हर वह काम है जिसे शरीअत ने ह़राम ठहराया है।

क़ुरआन की इस आयत: ﴿إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوٓءِ وَالْفَحْشَآءِ﴾ (वह तुम्हें बुराई तथा निर्लज्जता का आदेश देता है) में ख़ास (बेहयाई) को आम (बुराई) पर अत़्फ़ (संयोजन) के तौर पर पेश किया गया है। क्योंकि बुराई में हर वह चीज़ शामिल है जो इंसान के लिए नुकसानदेह हो। और बेहयाई वह है जो सबसे ज़्यादा बुरी हो, जैसे हत्या, शराब पीना, व्यभिचार और झूठा आरोप लगाना। इसमें यह भी स्पष्ट होता है कि बयान और समझाने के तरीकों में से एक तरीका है कि आम के साथ ख़ास का उल्लेख किया जाए, ताकि इसका महत्व और ध्यान केंद्रित हो। ऐसा इसलिए भी किया जाता है कि सुनने वाले को यह अंदेशा न हो कि आम में ख़ास शामिल नहीं है। ख़ास का उल्लेख इस बात का संकेत है कि उस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

और शैतान के सबसे खतरनाक कदमों में से एक है, अल्लाह पर झूठ बोलना और बिना ज्ञान के बातें करना: ﴿وَأَن تَقُولُوا۟ عَلَى ٱللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ﴾ (और ये कि अल्लाह पर उस चीज़ का आरोप धरो, जिसे तुम नहीं जानते हो) यह अल्लाह के बारे में बिना ज्ञान के कहना है, जो यह दिखाता है कि जो अल्लाह के बारे में बिना ज्ञान के बातें करता है, वह शैतान का गुलाम बन जाता है और वह उसे अपने जाल में फंसा लेता है। इसलिए, अल्लाह तआला ने इसे मना किया और इससे चेतावनी दी, ताकि इंसान अल्लाह के बारे में बिना ज्ञान के बातें न करे, और शैतान की बुराई को सजाने की कोशिश से बच सके। यह स्पष्ट करता है कि किसी इंसान को अल्लाह पर बिना ज्ञान के कुछ भी कहने से बचना चाहिए। किसी चीज़ को ह़राम या हलाल घोषित करना, इबादतों और हुक्मों में नयी बातें शामिल करना, यह सब ऐसे काम हैं जिनका समर्थन शैतान करता है और इन्हें बुराई के रूप में सुंदर बनाकर पेश करता है। यह बात अल्लाह तआला के प्रति बेअदबी और धर्म में अपनी राय थोपने के ख़तरों को दर्शाती है। शैतान का मंसूबा स्पष्ट है, जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَٰطَكَ ٱلْمُسْتَقِيمَ ١٦﴾ (मैं उनके लिए तेरे सीधे रास्ते पर बैठ जाऊंगा)। यह सबसे बड़ी नेमत है कि अल्लाह तआला ने हमें हमारे इस छिपे हुए दुश्मन के बारे में आगाह किया। अगर अल्लाह इसकी जानकारी न देता, तो हम इसे न पहचान पाते क्योंकि यह बड़ी चालाकी से अपना काम करता है। यह जानकारी एक बड़ी नेमत है जो अल्लाह का शुक्र अदा करने और सावधान रहने का कारण बनती है।

﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۗ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ۝١٧٠ وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۚ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝١٧١﴾ [سورة البقرة: ١٧٠-١٧١].

(और जब उनसे कहा जाता है कि जो (क़ुर्आन) अल्लाह ने उतारा है, उसपर चलो, तो कहते हैं कि हम तो उसी रीति पर चलेंगे, जिसपर अपने पूर्वजों को पाया है। क्या यदि उनके पूर्वज कुछ न समझते रहे तथा कुपथ पर रहे हों, (तब भी वे उन्हीं का अनुसरण करते रहेंगे?) उनकी दशा जो काफ़िर हो गये, उसके समान है, जो उसे (अर्थात पशु को) पुकारता है, जो हाँक-पुकार के सिवा कुछ नहीं सुनता, ये (काफ़िर) बहरे, गोंगे तथा अंधे हैं। इसलिए कुछ नहीं समझते)।

इसके बाद अल्लाह ने उन काफ़िरों की हालत बयान की जो साफ़ और स्पष्ट दलीलें आने के बावजूद कुफ़्र पर अड़े रहते हैं। इसके साथ ही वे अपने बाप-दादाओं के नक्शेकदम पर चलने को अपना तर्क पेश करते हैं। क़ुरआन कहता है: ﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۗ﴾ (और जब उनसे कहा जाता है कि जो (क़ुर्आन) अल्लाह ने उतारा है, उसपर चलो, तो कहते हैं कि हम तो उसी रीति पर चलेंगे, जिसपर अपने पूर्वजों को पाया है) इसका मतलब है कि ये लोग अपने बाप-दादाओं की अज्ञानता और गुमराही को दलील के रूप में इस्तेमाल करते हैं और नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा लाई गई साफ़ और स्पष्ट दलीलों को नज़रअंदाज़ करते हैं। यह दिखाता है कि धर्म में बिना ज्ञान के किसी का अनुसरण करना कितना ख़तरनाक हो सकता है। साथ ही, यह भी बताता है कि "बोध करने की क्षमता" (अक़्ल-ए-इदराक़) "सही फ़ैसला करने की क्षमता" (अक़्ल-ए-रुश्द) का विकल्प नहीं हो सकती। अक़्ल-ए-इदराक़ वह है जो इंसान को आकार, रंग और लंबाई जैसे सामान्य भौतिक गुणों को समझने में मदद करती है। यह हर इंसान, चाहे वह मुसलमान हो या काफ़िर, के पास होती है। लेकिन अक़्ल-ए-रुश्द वह है जो अच्छाई और बुराई, हक़ और बातिल के बीच फ़र्क़ करने में मदद करती है। अगर इंसान अक़्ल-ए-रुश्द का उपयोग बंद कर दे और हक़ को समझने की कोशिश न करे, तो वह अपनी बर्बादी का कारण बनता है और ख़ुद को तबाही में डाल देता है। इसलिए क़ुरआन कहता है: ﴿أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ﴾ (क्या यदि उनके पूर्वज कुछ न समझते रहे तथा कुपथ पर रहे हों, (तब भी वे उन्हीं का अनुसरण करते रहेंगे?)) यहाँ प्रश्न तथा आश्चर्य के रूप में उन लोगों की आलोचना की गई है जो अपने बाप-दादाओं का अंधा अनुसरण करते हैं, भले ही वे बाप-दादा हक़ को न समझते हों। सही राह की पहचान और उसे अपनाना अक़्ल-ए-रुश्द का संकेत है। लेकिन गुमराही को अंधे अनुसरण से अपनाना मूर्खता और अक़्ल-ए-रुश्द का अभाव दिखाता है। खास तौर पर जब हक़ स्पष्ट और

रोशन हो जाए और सच्चाई गुमराही से अलग दिखाई देने लगे, तो गुमराही का अनुसरण करना केवल मूर्खता और अज्ञानता का परिचायक होता है। अज्ञानी और अज्ञानियों का अनुसरण और उनकी नकल करना, जबकि सत्य स्पष्ट हो, इंसान को उसके जीवन और परलोक दोनों के लाभ से वंचित कर देता है। अतः हम अल्लाह तआला से तौफीक और सच्चाई पर चलने की दुआ करते हैं। इसी कारण अल्लाह तआला ने क़ुरआन उतारा, जो इंसान को स्पष्ट आयतों और तर्कों के माध्यम से संबोधित करता है, जो उसे अज्ञानता से ज्ञान और समझ की ओर, और असत्य से सत्य की ओर ले जाता है। अल्लाह तआला इंसान का ध्यान उसके चारों ओर की चीज़ों की ओर आकर्षित करता है, ताकि वह सत्य को पहचाने और उसका अनुसरण करे। यहाँ तक कि धरती की उपज और जो कुछ उसमें से निकलता है, जिसे इंसान अपने दैनिक जीवन में खाता और ग्रहण करता है, उसका भी उल्लेख किया गया है।

आयत की शिक्षाएँ दाई (संदेशवाहक) को यह समझ और ज्ञान प्रदान करती हैं कि उसे अपने मार्ग में क्या चुनौतियाँ मिल सकती हैं। यह हमें यह भी सिखाती है कि धार्मिक और सांसारिक मामलों में सोच-विचार और चिंतन के साथ बुद्धि का सही उपयोग करना चाहिए। इंसान को "इमाअत" (दूसरों का आँख मूँदकर अनुसरण करना) से बचना चाहिए, अर्थात् न वह केवल इसलिए अच्छा बने कि लोग अच्छे हैं, और न केवल इसलिए बुरा बने कि लोग बुरे हैं, जैसा कि ह़दीस़ में आया है। बल्कि उसे अपनी सोच और अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रहना चाहिए।

कई काफ़िरों को इस्लाम स्वीकार करने से रोकने वाली एक बड़ी वजह यह थी कि उन्होंने अपने पूर्वजों का अंधानुकरण किया और जो उनके पूर्वज करते आए, उसी का सहारा लिया। यह उन्हें आलोचनात्मक और गहन विचार करने से रोकता था, जो उन्हें सत्य तक पहुँचा सकता था। इसलिए, अंधानुकरण दो प्रकार का हो सकता है—या तो अज्ञानता के कारण, या ज्ञान और समझ के साथ। अज्ञानता के कारण किया गया अंधानुकरण इंसान को बर्बाद कर देता है, जबकि ज्ञान और समझ के साथ अच्छे और सत्य के मार्ग पर किए गए अनुसरण की सराहना की जाती है। सबसे बड़ा उदाहरण पैग़ंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण है। इमाम क़ुर्तुबी रहमतुल्लाहि अलैह ने तक़लीद (अंधानुकरण) के प्रकार और उनके फ़िक़्ही हुक्मों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। जो व्यक्ति इस विषय को विस्तार से समझना चाहता है, उसे उनका अध्ययन करना चाहिए।(1) इसी प्रकार, इमाम शौकानी ने अपनी पुस्तक "अदब-अत-तलब व मुन्तहा-अल-अरब" में इस विषय को विस्तार से समझाया है।

फिर अल्लाह तआला ने उनके मार्ग का उदाहरण प्रस्तुत किया है, ताकि यह अधिक स्पष्ट और शिक्षाप्रद हो जाए। इससे दूसरे लोग भी शिक्षा ग्रहण करें और इसे एक प्रमाण के रूप

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 142-144)।

में देखें: ﴿وَمَثَلُ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ كَمَثَلِ ٱلَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَآءً وَنِدَآءً ۚ صُمٌّۢ بُكۡمٌ عُمۡيٌ فَهُمۡ لَا يَعۡقِلُونَ ١٧١﴾ (उनकी दशा जो काफ़िर हो गये, उसके समान है, जो उसे (अर्थात पशु को) पुकारता है, जो हाँक-पुकार के सिवा कुछ नहीं सुनता, ये (काफ़िर) बहरे, गोंगे तथा अंधे हैं। इसलिए कुछ नहीं समझते) इसमें यह बताया गया है कि सीखने और समझने के साधनों को निष्क्रिय करना कितना ख़तरनाक है। जब इंसान अपने कानों को सत्य सुनने से रोक देता है, अपनी ज़ुबान को प्रश्न पूछने और भलाई की बात करने से रोक देता है, और अपनी आँखों को उन संकेतों और सबूतों को देखने से बंद कर देता है, जो उसके चारों ओर मौजूद हैं, तो वह सत्य से अज्ञान बन जाता है। काफ़िरों का उदाहरण उन जानवरों की तरह है, जिन्हें चरवाहा पुकारता है, लेकिन वे उसकी बात को समझने की बजाय केवल आवाज़ सुनते हैं। इसी प्रकार, वे सत्य की पुकार को सुनते हैं, लेकिन अपने कान, ज़ुबान और आँखों को निष्क्रिय कर लेते हैं। यह मानो वे न तो कुछ सुन रहे हैं और न कुछ देख रहे हैं, सिवाय एक आवाज़ के, जो उनके खिलाफ़ गवाही के लिए पर्याप्त है, लेकिन वह उन्हें कोई लाभ नहीं देती। वे "अक़्ल-ए-रुशद" (सत्य और असत्य को समझने वाली बुद्धि) का उपयोग नहीं करते, जबकि उनके पास "अक़्ल-ए-इदराक" (आम ज्ञान) मौजूद है। और इसीलिए यह तुलना उन मूर्तियों पर भी लागू होती है, जिन्हें वे पूजते हैं। वे उनसे दुआ माँगते हैं और मदद की उम्मीद रखते हैं, लेकिन वे सुन नहीं सकतीं, देख नहीं सकतीं, और कुछ भी समझ नहीं सकतीं। यह उदाहरण दर्शाता है कि उपदेश और शिक्षा का एक प्रभावी तरीका उदाहरणों का उपयोग है। इससे दाई (संदेशवाहक) और शिक्षक अपने उद्देश्य को स्पष्ट रूप से समझा सकते हैं और अपनी बात को श्रोताओं के दिमाग में सरलता से बिठा सकते हैं। इससे सुनने वाले की सोच जागृत होती है और उसके विचारों को नई दिशा मिलती है। यह दृष्टांतों की महत्वता को दीन और शिक्षा में सिद्ध करता है।

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُلُواْ مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقۡنَٰكُمۡ وَٱشۡكُرُواْ لِلَّهِ إِن كُنتُمۡ إِيَّاهُ تَعۡبُدُونَ ١٧٢ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيۡكُمُ ٱلۡمَيۡتَةَ وَٱلدَّمَ وَلَحۡمَ ٱلۡخِنزِيرِ وَمَآ أُهِلَّ بِهِۦ لِغَيۡرِ ٱللَّهِۖ فَمَنِ ٱضۡطُرَّ غَيۡرَ بَاغٖ وَلَا عَادٖ فَلَآ إِثۡمَ عَلَيۡهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٞ رَّحِيمٌ ١٧٣ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكۡتُمُونَ مَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ مِنَ ٱلۡكِتَٰبِ وَيَشۡتَرُونَ بِهِۦ ثَمَنٗا قَلِيلًا أُوْلَٰٓئِكَ مَا يَأۡكُلُونَ فِي بُطُونِهِمۡ إِلَّا ٱلنَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ ٱللَّهُ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمۡ وَلَهُمۡ عَذَابٌ أَلِيمٌ ١٧٤ أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ٱشۡتَرَوُاْ ٱلضَّلَٰلَةَ بِٱلۡهُدَىٰ وَٱلۡعَذَابَ بِٱلۡمَغۡفِرَةِۚ فَمَآ أَصۡبَرَهُمۡ عَلَى ٱلنَّارِ ١٧٥ ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ نَزَّلَ ٱلۡكِتَٰبَ بِٱلۡحَقِّۗ وَإِنَّ ٱلَّذِينَ ٱخۡتَلَفُواْ فِي ٱلۡكِتَٰبِ لَفِي شِقَاقِۭ بَعِيدٖ ١٧٦﴾ [سورة البقرة:١٧٢-١٧٦].

(हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीज़ों में से खाओ, जो हमने तुम्हें दी हैं तथा अल्लाह की कृतज्ञता का वर्णन करो, यदि तुम केवल उसी की इबादत (वंदना) करते हो। (अल्लाह) ने तुमपर मुर्दार तथा (बहता) रक्त और सुअर का माँस तथा जिसपर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो, उन्हें ह़राम (निषेध) कर दिया है। फिर भी जो विवश हो जाये, जबकि वह

नियम न तोड़ रहा हो और आवश्यक्ता की सीमा का उल्लंघन न कर रहा हो, तो उसपर कोई दोष नहीं। अल्लाह अति क्षमाशील, दयावान् है। वास्तव में, जो लोग अल्लाह की उतारी पुस्तक (की बातों) को छुपा रहे हैं और उनके बदले तनिक मूल्य प्राप्त कर लेते हैं, वे अपने उदर में केवल अग्नि भर रहे हैं तथा अल्लाह उनसे बात नहीं करेगा और न उन्हें विशुध्द करेगा और उन्हीं के लिए दुःखदायी यातना है। यही वे लोग हैं, जिन्होंने सुपथ (मार्गदर्शन) के बदले कुपथ खरीद लिया है तथा क्षमा के बदले यातना। तो नरक की अग्नि पर वे कितने सहनशील हैं? इस यातना के अधिकारी वे इसलिए हुए कि अल्लाह ने पुस्तक सत्य के साथ उतारी और जो पुस्तक में विभेद कर बैठे, वे वास्तव में, विरोध में बहुत दुर निकल गये)।

पिछली आयत में सभी लोगों को संबोधित करते हुए यह कहा गया था: ﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا﴾ (ऐ लोगों! जो कुछ धरती में है, उसमें से हलाल और पवित्र चीजें खाओ)। एवं इस आयत में विशेष रूप से मोमिनों (ईमान वालों) को संबोधित करते हुए कहा गया है: ﴿يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ كُلُوا۟ مِن طَيِّبَـٰتِ مَا رَزَقْنَـٰكُمْ وَٱشْكُرُوا۟ لِلَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١٧٢﴾﴾ (हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीज़ों में से खाओ, जो हमने तुम्हें दी हैं तथा अल्लाह की कृतज्ञता का वर्णन करो, यदि तुम केवल उसी की इबादत (वंदना) करते हो) पिछली आयत में शैतान के अनुसरण से सावधान किया गया था, जो लोगों को उनके पैदा करने वाले और रोज़ी देने वाले अल्लाह से भटका देता है। जबकि इस आयत में मोमिनों की विशेष स्थिति को ध्यान में रखते हुए उन्हें शुक्र अदा करने का हुक्म दिया गया है। पिछली आयत में लोगों को शुक्र अदा करने का आदेश नहीं दिया गया था क्योंकि वह संबोधन आम था, जिसमें सभी लोग शामिल थे, चाहे वे ईमान वाले हों या न हों। जो व्यक्ति ईमान नहीं लाया, उससे शुक्र अदा करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। इसलिए, वहां का हुक्म उनकी स्थिति के अनुसार था, यानी उनके दुश्मन शैतान का अनुसरण न करने की चेतावनी। शैतान तो हमेशा बुराई, अश्लीलता और अल्लाह के बारे में बिना ज्ञान के बातें करने की ओर उकसाता है। इस आयत में अल्लाह तआला मोमिनों को विशेष रूप से बुलाकर उनका ध्यान इस ओर दिलाता है कि वे अल्लाह की दी हुई पवित्र रोज़ी को खाएं और उसका आभार प्रकट करें। यह तालमेल और सामंजस्य क़ुरआन के भाषण और निर्देशों की गहराई और उसकी बयान की महानता को दर्शाता है। यह भी बताता है कि संबोधन में मक़ाम और परिस्थिति का ध्यान रखना कितना महत्वपूर्ण है। किसी को भी दावत, शिक्षा, या प्रबंधन से संबंधित कोई आदेश तब तक नहीं दिया जा सकता, जब तक वह व्यक्ति उस आदेश की बुनियादी शर्तों को पूरा न कर ले। इसका अर्थ यह है कि संबोधित व्यक्ति की स्थिति और उसकी आवश्यकताओं को समझकर प्राथमिकताओं को तय करना चाहिए। उदाहरण के लिए, जब तक कोई व्यक्ति इस्लाम स्वीकार नहीं करता और शहादतैन (तौह़ीद व रिसालत की गवाही) नहीं देता, उसे नमाज़ अदा करने का हुक्म नहीं दिया जा सकता।

इस आयत का विपरीत अर्थ यह समझ में आता है कि अल्लाह ने पवित्र चीज़ों के विपरीत चीज़ें खाने से मना किया है, जिनका विस्तार से उल्लेख अगली आयत में किया जाएगा। इस प्रकार, यह निर्देश अगले विवरण से जुड़ा हुआ है, और इसे एक सामान्य नियम के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो खाने-पीने की वस्तुओं पर लागू होता है। इसके बाद अगली आयत में इसका विस्तृत विवरण दिया गया है, जिससे निर्देश में सामंजस्य और भाषाई सौंदर्य उत्पन्न हुआ है। शिक्षा और प्रशिक्षण के दृष्टिकोण से, यह दिखाता है कि जानकारी को चरणबद्ध तरीके से प्रस्तुत करना चाहिए। पहले संक्षेप में मुख्य सिद्धांत बताया जाए, और फिर विस्तार से, ताकि इसे मस्तिष्क आसानी से स्वीकार कर सके।

इस आयत का मुख्य विषय यह है कि रोज़ी अल्लाह की ओर से है। जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقۡنَٰكُمۡ﴾ "हमने तुम्हें जो पवित्र चीज़ें दी हैं, उनमें से खाओ।" इसके बाद अल्लाह ने अपने बंदों को आम तौर पर शुक्र अदा करने का हुक्म दिया: ﴿وَٱشۡكُرُواْ لِلَّهِ﴾ "अल्लाह का शुक्र अदा करो।" शुक्र अदा करना दिल से मानने, जुबान से इसे व्यक्त करने, और कर्मों से इसे साबित करने का नाम है। अल्लाह के शुक्र का मतलब है कि उसकी दी हुई रोज़ी को उसकी खुशी के लिए खर्च किया जाए, जैसे दान और ज़कात। साथ ही, इन नेमतों को फिजूलखर्ची और घमंड से बचाकर इस्तेमाल करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, इस आयत में इबादत और शुक्र के बीच गहरे संबंध को स्पष्ट किया गया है। आयत कहती है: ﴿وَٱشۡكُرُواْ لِلَّهِ إِن كُنتُمۡ إِيَّاهُ تَعۡبُدُونَ﴾ "यदि तुम उसकी इबादत करते हो, तो उसका शुक्र अदा करो।" इस आयत में यह प्रमाण है कि शुक्र (आभार व्यक्त करना) एक इबादत है। इसका अर्थ यह है कि यदि तुम अल्लाह की इबादत करते हो, तो तुम्हें इन नेमतों के लिए उसका शुक्रिया अदा करना चाहिए। शुक्र का मतलब है यह मानना कि यह सारी अच्छी चीजें अल्लाह तआला की ओर से हैं। यह अल्लाह की ओर से आम तौर पर सबके लिए बनाई गईं और विशेष रूप से बंदों को प्रदान की गईं, जैसाकि सूरह वाक़िअह में अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿أَفَرَءَيۡتُم مَّا تَحۡرُثُونَ ﴿٦٣﴾ ءَأَنتُمۡ تَزۡرَعُونَهُۥٓ أَمۡ نَحۡنُ ٱلزَّٰرِعُونَ ﴿٦٤﴾ لَوۡ نَشَآءُ لَجَعَلۡنَٰهُ حُطَٰمٗا فَظَلۡتُمۡ تَفَكَّهُونَ ﴿٦٥﴾﴾ "क्या तुमने देखा कि जो कुछ तुम बोते हो, क्या तुम उसे उगाते हो या हम उगाते हैं? यदि हम चाहें, तो उसे भस्म बना दें, और तुम हैरान रह जाओ।" इससे यह साबित होता है कि शुक्र अदा करना एक महान इबादत है, और हर मोमिन को इसे पूरी तरह निभाना चाहिए।

इसके बाद अल्लाह तआला ने उन जानवरों का उल्लेख किया है, जिनका खाना ह़राम किया गया है: ﴿إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيۡكُمُ ٱلۡمَيۡتَةَ وَٱلدَّمَ وَلَحۡمَ ٱلۡخِنزِيرِ وَمَآ أُهِلَّ بِهِۦ لِغَيۡرِ ٱللَّهِۖ﴾ ((अल्लाह) ने तुमपर मुर्दार तथा (बहता) रक्त और सुअर का माँस तथा जिसपर अल्लाह के सिवा किसी और

का नाम पुकारा गया हो, उन्हें ह़राम (निषेध) कर दिया है।)। यह ह़राम इस कारण है कि इनमें वह हानि है जिसे पवित्र आत्मा अस्वीकार करती है। मुर्दार वह जानवर है, जिसकी आत्मा बिना जिबह के शरीर से निकल गई हो। आयत ने मृत्यु का तरीका बताया है, लेकिन इसका कोई विशेष कारण निर्दिष्ट नहीं किया। इसमें यह लाभ है कि नए कारणों को भी शामिल किया जा सके, जैसे कि विद्युत आघात से मौत, जिसमें खून शरीर में रह जाता है। यह क़ुरआन के दिव्य निर्देश की चमत्कारिकता है।

हालांकि, मछली और टिड्डी इस नियम से अपवाद हैं, जैसा कि पैग़ंबर मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है: “दो प्रकार के मुर्दार हलाल किए गए हैं: मछली तथा टिड्डी, एवं दो प्रकार के रक्त हमारे लिए ह़लाल किए गए हैं: जिगर (कलेजी) एवं तिल्ली”।

" وَٱلدَّمَ खून" का अर्थ है बहता हुआ तरल खून। इसी तरह, सूअर का मांस उसकी गंदगी के कारण और जो जानवर अल्लाह के सिवा किसी और के लिए जिबह किया गया हो, जैसे देवी-देवताओं के नाम पर जिबह किया गया जानवर, उसे भी ह़राम किया गया है। इन सभी का विस्तृत विवरण फिक़्ह की किताबों में दिया गया है। लेकिन अल्लाह तआला की दया और करुणा यह है कि उसने अपने बंदों के लिए मजबूरी की स्थिति में वह चीज़ें हलाल कर दीं, जो सामान्यतः ह़राम हैं। यदि किसी को भूख के कारण अपनी जान जाने का खतरा हो, तो वह अपनी आवश्यकता भर खा सकता है। इसकी शर्त यह है कि वह ﴿غَيۡرَ بَاغٖ وَلَا﴾ (जो नियम न तोड़ रहा हो और आवश्यक्ता की सीमा का उल्लंघन न कर रहा हो)। अर्थात्, वह केवल आवश्यकता की स्थिति में खाए, न कि जान-बूझकर अल्लाह के ह़राम को हलाल करने की इच्छा से। यह अनुमति केवल आपातकालीन स्थिति में दी गई है, जब भूख से मौत का डर हो।

अल्लाह तआला इस मजबूरी के प्रति क्षमाशील और दयालु है। जैसा कि उसने फ़रमाया: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٞ رَّحِيمٌ﴾ "अल्लाह क्षमाशील और दयालु है।" यह आयत अल्लाह की व्यापक दया का प्रमाण है। इसके अतिरिक्त, इस आयत से यह भी स्पष्ट होता है कि इस्लाम में इंसान की जिंदगी को विशेष महत्व दिया गया है। शरीअत ने इंसान की जान को बचाने के लिए हर संभव प्रयास किया है और उसके जीवन के लिए हानिकारक चीजों को रोका है। शरई प्रावधानों से यह भी पता चलता है कि इस्लाम की शिक्षाओं में पूर्वानुमान और व्यापक दृष्टिकोण का महत्व है। यह इस तथ्य को उजागर करता है कि यह कानून अल्लाह की ओर से है।

क़ुरआन की विशेषता यह है कि इसके शब्दों में गहराई, अर्थ की विविधता और मानसिक व आध्यात्मिक प्रभावशीलता है, जो मानव और जिन्नात दोनों की समझ से परे है।

फिर क़ुरआन का संदर्भ अहले किताब (यहूद व नसारा) की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए वापस आता है। अल्लाह तआला कहता है: ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكۡتُمُونَ مَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ مِنَ ٱلۡكِتَٰبِ وَيَشۡتَرُونَ بِهِۦ ثَمَنٗا قَلِيلًا﴾ (वास्तव में, जो लोग अल्लाह की उतारी पुस्तक (की बातों) को छुपा रहे हैं और उनके बदले तनिक मूल्य प्राप्त कर लेते हैं) इस क़ुरआनी बयान में दो कार्यों का उल्लेख किया गया है जो अहले किताब द्वारा किए जाते हैं। ये हैं: छिपाना और खरीदना। इस आयत में अल्लाह तआला अहले किताब के विद्वानों की निंदा करते हैं, जिन्होंने सत्य को छिपाया और नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुवत और विशेषताओं को छिपाया, जिनका अल्लाह ने उनकी किताबों में वर्णन किया था। वे इस छिपाने के बदले में थोड़ी सी कीमत लेते हैं, जिसकी अवधि समाप्त हो जाती है, और जो दी गई धनराशि के घटने के साथ समाप्त हो जाती है। यह कीमत बहुत कम और तुच्छ होती है, जबकि आखिरत का अनन्त इनाम जो कभी घटता नहीं और समाप्त नहीं होता, उससे इसकी तुलना नहीं हो सकती। यह इस बात की चेतावनी देता है कि शरीअत (धर्म व्यवस्था) की संकेतों और अवधारणाओं को अल्लाह और उसके रसूल के मुराद (मकसद) से हटाकर तुच्छ सांसारिक लाभ के लिए छिपाना या विकृत करना बहुत गंभीर है। यह उद्दंडों एवं झूठे नेताओं की मनोवांछित विकृति से मेल खाने वाले विकृति को सहारा देना, जो अल्लाह और उसके रसूल की मराद के साथ विरोधाभासी होता है, के बारे में भी चेतावनी देता है।

इस के व्याख्यात्मक फायदों में से एक यह है कि पाक क़ुरआन का दो गहरे शब्दों के माध्यम से स्पष्ट करना, जो हैं " يَكۡتُمُونَयक्तमून" और " وَيَشۡتَرُونَयशतरून", जिनमें आत्मा की बुराई, कपट और अल्लाह के आदेशों की अवहेलना, अल्लाह की खिलाफत की साहसिकता, साथ ही ईर्ष्या और जानबूझकर अल्लाह के उद्देश्यों के विपरीत कार्य करने का संकेत है। यह दिखाता है कि कुछ लोगों के अंदर बुराई और साहस की मात्रा बहुत अधिक हो सकती है।

इसके अलावा, " وَيَشۡتَرُونَयशतरून", शब्द के माध्यम से दी गई व्याख्या से यह स्पष्ट होता है कि जो लोग सच्चाई को छिपाने के बाद उसे थोड़ा सा लाभ प्राप्त करने के लिए बेचते हैं, वे अपनी आत्मा की गहरी हानि को महसूस नहीं करते हैं। यह शब्द यह स्पष्ट करता है कि उन लोगों की यह प्रक्रिया और उनके द्वारा किया गया व्यापार न केवल उनके वित्तीय नुकसान का कारण बनता है, बल्कि यह उनका आत्मिक नुकसान भी बढ़ाता है, और वे जल्दबाजी में वह हानि उठाते हैं। यह इस बात की चेतावनी भी देता है कि ऐसी स्थिति से बचने के लिए उन लोगों को यह शिक्षा दी गई है, ताकि वे अपनी गलतियों से सिखें और भविष्य में अपनी कोशिशों को सुधारें।

फिर अल्लाह तआला उनके परिणामों को स्पष्ट रूप से बताता है, ﴿أُوْلَٰٓئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا ٱلنَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ ٱللَّهُ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ (, वे अपने उदर में केवल अग्नि भर रहे हैं तथा अल्लाह उनसे बात नहीं करेगा और न उन्हें विशुध्द करेगा और उन्हीं के लिए दुःखदायी यातना है) इसका मतलब यह है कि जो धन उन्होंने इस दुनिया में गलत तरीके से प्राप्त किया, वह उनके पेटों में आग बनकर भरेगा, और क़यामत के दिन उनका यह परिणाम होगा। यह अल्लाह के द्वारा दी गई चेतावनी से बचने के लिए सावधान करने का संकेत है। दूसरा अंजाम यह है कि क़यामत के दिन वे अल्लाह की बात-चीत से वंचित कर दिए जाएंगे, ﴿وَلَا يُكَلِّمُهُمُ ٱللَّهُ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ﴾ (हैं तथा अल्लाह उनसे बात नहीं करेगा) इसका अर्थ है कि वे अल्लाह के रजामंदी से वंचित होंगे, और इसके बजाय उन्हें अल्लाह का ग़ज़ब और क्रोध मिलेगा। क़यामत के दिन इस से बड़ी कोई सजा नहीं हो सकती, कि व्यक्ति अल्लाह के रजामंदी और उससे बात करने से वंचित हो जाए।

तीसरा अंजाम यह है कि उन्हें शुद्ध नहीं किया जाएगा ﴿وَلَا يُزَكِّيهِمْ﴾ (और न उन्हें विशुध्द करेगा) इसका अर्थ है कि वे अपनी गलतियों से शुद्ध नहीं होंगे, क्योंकि अल्लाह तआला का उन पर ग़ज़ब और नराज़गी होगी।

चौथा अंजाम यह है कि उनके लिए दर्दनाक सजा होगी ﴿وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ (और उन्हीं के लिए दुःखदायी यातना है)।

इनकी विशेषता यह है कि ﴿أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ٱشْتَرَوُاْ ٱلضَّلَٰلَةَ بِٱلْهُدَىٰ﴾ (यही वे लोग हैं, जिन्होंने सुपथ (मार्गदर्शन) के बदले कुपथ खरीद लिया है) अर्थात उन्होंने स्पष्ट रूप से मार्गदर्शन के बदले भटकाव को चुन लिया, इस प्रकार उन्होंने इसके लिए मूल्य चुकाया। यह उनकी उस समझ को दर्शाता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वे जो कर रहे थे, उसे भली-भाँति जानते थे। इसमें किताब वालों के विद्वानों की दशा को उजागर करना और उनके हालात को स्पष्ट करना सम्मिलित है।

दूसरी ओर, यह इस बात की ओर संकेत करता है कि सांसारिक लोभ से बचाव कितना आवश्यक है, जो व्यक्ति को उसकी परलोक को उसकी दुनिया के बदले बेचने के लिए प्रेरित कर सकता है। यह स्थिति घोर लापरवाही से बचने की आवश्यकता को उजागर करती है। अल्लाह हम सबको और समस्त मुसलमानों को इससे बचाए।

इसी प्रकार, उन्होंने ﴿أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ٱشْتَرَوُاْ ٱلضَّلَٰلَةَ بِٱلْهُدَىٰ وَٱلْعَذَابَ بِٱلْمَغْفِرَةِ﴾ (यही वे लोग हैं, जिन्होंने सुपथ (मार्गदर्शन) के बदले कुपथ खरीद लिया है तथा क्षमा के बदले यातना)

मार्गदर्शन के बदले भटकाव और अल्लाह की क्षमा, जो जन्नत तक पहुँचाती है, के बदले संसार का तुच्छ लाभ खरीदा और इसका मूल्य भी चुकाया। फिर अल्लाह कहता है, ﴿فَمَآ أَصۡبَرَهُمۡ عَلَى ٱلنَّارِ﴾ (तो नरक की अग्नि पर वे कितने सहनशील हैं?) इससे यह भी स्पष्ट होता है कि इंसान अपने सोचने के पैमाने और तौलने के मापदंड को बदल सकता है। पहले वैचारिक रूप से और फिर व्यावहारिक रूप से। विशेषतः यह तब होता है जब वह दुनिया के लाभ और परलोक के लाभ की तुलना में अल्पकालिक नश्वर वस्तु को शाश्वत और स्थायी लाभ के ऊपर तरजीह देता है। यह बात सोच-समझ कर निर्णय लेने और अपने कार्यों की गहराई से समीक्षा करने तथा अपनी आत्मा को सत्य की ओर लौटाने की आवश्यकता को बताती है। हे अल्लाह, हम आपसे मार्गदर्शन और सफलता की प्रार्थना करते हैं।

फिर अल्लाह तआला यह स्पष्ट करता है कि उसने इस क़ुरआन को सत्य और तर्क के साथ नाज़िल किया है। वह पूर्ण सत्य है ﴿ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ نَزَّلَ ٱلۡكِتَٰبَ بِٱلۡحَقِّۗ﴾ (इस यातना के अधिकारी वे इसलिए हुए कि अल्लाह ने पुस्तक सत्य के साथ उतारी) अर्थात यह क़ुरआन इस उद्देश्य से भेजा गया है कि इसे अपने वास्तविक मकसद से हटाया न जाए। यह ऐसा किताब है जिसमें कोई टेढ़ापन नहीं है। फिर संदर्भ किताब वालों के बीच के मतभेद की ओर जाता है, विशेषतः यहूद और नसराओं के बीच। इसे ईमान वालों के लिए शिक्षा और मार्गदर्शन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है, ﴿وَإِنَّ ٱلَّذِينَ ٱخۡتَلَفُواْ فِي ٱلۡكِتَٰبِ لَفِي شِقَاقِۭ بَعِيدٖ﴾ (जो पुस्तक में विभेद कर बैठे, वे वास्तव में, विरोध में बहुत दुर निकल गये) अर्थात किताब वाले यहूद और नसरा के बीच गहरे मतभेद और विभाजन का कारण उनकी अपनी किताब में ही आपसी असहमति है। इस मतभेद ने उन्हें इस विभाजन तक पहुँचा दिया। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि मतभेद के दुष्परिणामों से सतर्क रहना चाहिए। सत्य के अनुयायियों को सत्य में मतभेद नहीं करना चाहिए। लेकिन जब इंसान की इच्छाएँ और लालसाएँ हस्तक्षेप करती हैं, तो यह सत्य में मतभेद का कारण बनती हैं। यह गलत व्याख्या, अधूरी समझ और विनाशकारी इच्छाओं के माध्यम से होता है, जो अल्लाह तआला की इच्छा के विपरीत, सत्य को इच्छाओं के अनुसार मोड़ देता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि इच्छाओं को सत्य के अधीन करना चाहिए, न कि सत्य को इच्छाओं के अधीन। जो व्यक्ति सत्य को अपनी इच्छाओं के अधीन करता है, वह भटक जाता है और सत्य तथा उसके अनुयायियों के साथ विरोध में आ जाता है। साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि सत्य लोगों को जोड़ता है और उसके आधार पर समुदाय एकत्रित होते हैं। जबकि सत्य का विरोध करने वाला व्यक्ति सत्य और उसके अनुयायियों के साथ टकराव में होता है। यह सत्य तक पहुँचाने वाली दावत की देखभाल और प्रमाण के साथ सत्य का अनुसरण करने के महत्व को भी उजागर करता है।

﴿ لَّيْسَ ٱلْبِرَّ أَن تُوَلُّوا۟ وُجُوهَكُمْ قِبَلَ ٱلْمَشْرِقِ وَٱلْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ ٱلْبِرَّ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلْكِتَٰبِ وَٱلنَّبِيِّۦنَ وَءَاتَى ٱلْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ ذَوِى ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينَ وَٱبْنَ ٱلسَّبِيلِ وَٱلسَّآئِلِينَ وَفِى ٱلرِّقَابِ وَأَقَامَ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَى ٱلزَّكَوٰةَ وَٱلْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَٰهَدُوا۟ وَٱلصَّٰبِرِينَ فِى ٱلْبَأْسَآءِ وَٱلضَّرَّآءِ وَحِينَ ٱلْبَأْسِ أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ صَدَقُوا۟ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾ ﴾ [سورة البقرة:١٧٧]

(भलाई ये नहीं है कि तुम अपना मुख पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेर लो! भला कर्म तो उसका है, जो अल्लाह और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया तथा फ़रिश्तों, सब पुस्तकों, नबियों पर (भी ईमान लाया), धन का मोह रखते हुए, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों, यात्रियों तथा याचकों (काफ़िरों) को और दास मुक्ति के लिए दिया, नमाज़ की स्थापना की, ज़कात दी, अपने वचन को, जब भी वचन दिया, पूरा करते रहे एवं निर्धनता और रोग तथा युध्द की स्थिति में धैर्यवान रहे। यही लोग सच्चे हैं तथा यही (अल्लाह से) डरते हैं)।

पवित्र आयत की शुरुआत उस गलतफहमी को दूर करने और खारिज करने से होती है, जो इस बात को लेकर है कि "नेकी" (ٱلْبِرّ बिर्र) का अर्थ केवल नमाज़ के लिए किसी विशेष क़िबला की ओर रुख करना है। इसका उद्देश्य इस अवधारणा के बारे में मन के अज्ञान को समाप्त करना है ताकि सही सच्चाई को समझने के लिए ध्यान केंद्रित किया जा सके और उसे प्राप्त करने की ओर रुचि उत्पन्न हो। अल्लाह कहता है: ﴿ لَّيْسَ ٱلْبِرَّ أَن تُوَلُّوا۟ وُجُوهَكُمْ قِبَلَ ٱلْمَشْرِقِ وَٱلْمَغْرِبِ ﴾ (भलाई ये नहीं है कि तुम अपना मुख पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेर लो!) मानों संबोधित व्यक्ति पूछ रहा है कि तो फिर (बिर्र) नेकी क्या है?

इसके उत्तर में आगे कहा गया: ﴿وَلَٰكِنَّ ٱلْبِرَّ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلْكِتَٰبِ وَٱلنَّبِيِّۦنَ وَءَاتَى ٱلْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ ذَوِى ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينَ وَٱبْنَ ٱلسَّبِيلِ وَٱلسَّآئِلِينَ وَفِى ٱلرِّقَابِ وَأَقَامَ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَى ٱلزَّكَوٰةَ وَٱلْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَٰهَدُوا۟ وَٱلصَّٰبِرِينَ فِى ٱلْبَأْسَآءِ وَٱلضَّرَّآءِ وَحِينَ ٱلْبَأْسِ ﴾ (भलाई ये नहीं है कि तुम अपना मुख पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेर लो! भला कर्म तो उसका है, जो अल्लाह और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया तथा फ़रिश्तों, सब पुस्तकों, नबियों पर (भी ईमान लाया), धन का मोह रखते हुए, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों, यात्रियों तथा याचकों (काफ़िरों) को और दास मुक्ति के लिए दिया, नमाज़ की स्थापना की, ज़कात दी, अपने वचन को, जब भी वचन दिया, पूरा करते रहे एवं निर्धनता और रोग तथा युध्द की स्थिति में धैर्यवान रहे) इस प्रकार, नेकी (बिर्र) का अर्थ केवल ईमान और इबादत नहीं है, बल्कि यह नैतिकता और अपने नफ़्स को अल्लाह की आज्ञा का पालन करने के लिए संघर्ष में शामिल करता है। यह उन अधिकारों की देखभाल भी है, जिन्हें अल्लाह तआला ने दूसरों के लिए अनिवार्य किया है।

इमाम क़ुर्तबी[1] रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं: 'बिर्र (नेकी) अच्छाई का ऐसा व्यापक नाम है, जो हर उस चीज़ को शामिल करता है जिसे अल्लाह पसंद करता है और जिससे वह प्रसन्न होता है।' विद्वानों ने कहा है कि यह आयत 'अह़काम की अत्यंत महत्वपूर्ण आयतों में से एक' है, क्योंकि इसमें 16 बुनियादी सिद्धांत शामिल हैं: अल्लाह पर ईमान, उसके नाम और गुणों पर ईमान, पुनरुत्थान, हिसाब, मीज़ान, पुल सिरात, हौज़े कौसर, सिफ़ारिश, जन्नत और जहन्नम पर ईमान, अल्लाह की ओर से उतारी गई किताबों और नबियों पर ईमान, माल का सदका, नमाज़ और ज़कात की पाबंदी, वादों को निभाना और कठिनाइयों में धैर्य रखना।[2]

इस आयत ने नेकी (बिर्र) की व्यापकता को स्पष्ट किया है और इसे केवल क़िबला की दिशा में नमाज़ पढ़ने तक सीमित नहीं रखा। बल्कि, यह इंसान के दिल और अंगों को अल्लाह के लिए ईमान, इबादत और कर्तव्यों के निर्वाह में व्यस्त रखने की ओर इशारा करता है।

इस पवित्र आयत में ईमान के स्तंभों का उल्लेख किया गया है: अल्लाह पर ईमान, आख़िरत के दिन पर ईमान, फरिश्तों पर ईमान, और किताबों [3] (सभी आसमानी किताबों) पर ईमान, साथ ही नबियों पर ईमान। जहाँ तक छठे स्तंभ 'तक़दीर (क़ज़ा व क़दर)' की बात है, तो वह स्पष्ट रूप से वर्णित नहीं है, किंतु अल्लाह तआला ने इसे अपने कथन ﴿وَٱلصَّٰبِرِينَ فِى ٱلْبَأْسَآءِ وَٱلضَّرَّآءِ﴾ द्वारा संकेत किया है। यह धैर्य क़ज़ा व क़दर से जुड़ा हुआ है। बाकी अल्लाह ही बेहतर जानने वाला है।

आयत ने सामाजिक सहयोग के पहलू को भी शामिल किया है, जिसमें दूसरों की स्थितियों का ख्याल रखना और उन्हें उस धन से देना शामिल है, जिसे कमाने में सक्षम व्यक्ति ने मेहनत की है और जिसे वह अपने दिल से प्रेम करता है। यहाँ अल्लाह तआला ने इस धन के प्रति स्वाभाविक प्रेम को इंसान से छीनने या उसे धन से विरक्त करने की बात नहीं की, बल्कि इस विशेषता को सकारात्मक दिशा में मोड़ने का आदेश दिया। उसने कहा: ﴿وَءَاتَى ٱلْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ﴾ अर्थात धन के प्रति प्रेम के बावजूद अल्लाह की प्रसन्नता के लिए उसे ख़र्च करने को प्रेरित किया।

---

(2) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 160)।

(3) पिछला संदर्भ (2/ 162)।

(1) तफ़सीर -ए- जलालैन, लेखकः सुयूती (27), तथा इब्न -ए- कसीर रहिमहुल्लाह कहते हैं किः अल् किताबः इस्मे जिंस (जातिवाचक संज्ञा या सामान्य संज्ञा), जो नबियों पर उतारी गई समस्त किताबों को शामिल है, यहाँ तक कि यह सिलसिला सबसे सम्मानित और उच्चतम किताब क़ुरआन पर आकर समाप्त हो गया, जो अपनी पूर्ववर्ती किताबों पर प्रमाणिकता और अधिकार का स्थान रखता है। तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 213)।

इस दृष्टिकोण के लाभों में से एक यह है कि यह इंसान को उसकी वास्तविकता और प्रकृति के खिलाफ जाने के लिए मजबूर नहीं करता, न ही उसे किसी ऐसी चीज़ से विरक्त करता है, जो उसकी फितरत के अनुकूल हो। इसके बजाय, यह उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति और बुद्धि के अनुरूप दिशा प्रदान करता है, जिससे उसका मन निर्देश और मार्गदर्शन को सहजता से स्वीकार कर सके। फिर इसे उस उद्देश्य या मना करने योग्य चीज़ तक पहुँचाने की स्पष्टता दी जाती है, जिससे उसकी प्राथमिकता का सही निर्धारण हो सके।

इसके अतिरिक्त, इस आयत ने ख़र्च करने के दायरे को विस्तृत किया है। इसे केवल रिश्तेदारों तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि इसे समाज के अन्य सदस्यों तक भी फैलाया गया। इसका उद्देश्य व्यापक सामाजिक सहयोग, एकजुटता, और ज़रूरतमंदों की सहायता करना है, ताकि पूरी समाज में परोपकार और भाईचारे की भावना प्रबल हो। यह भी स्पष्ट किया गया कि यह आदेश अल्लाह की ओर से है, जिसने ख़ुद सब कुछ प्रदान किया और फिर आदेश दिया। उसने आपको दूसरों की मदद करने की आवश्यकता में डाला और इस उद्देश्य के लिए आपको समर्थ बनाया। वही अल्लाह है जिसने आपको आदेश दिया कि आप दूसरों की देखभाल करें, उनकी स्थिति का निरीक्षण करें, और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करें।

और उसी समय यह तथ्य भी सामने आता है कि जिस (अल्लाह) ने किसी को निर्धनता और आवश्यकता की स्थिति में डाला, वही अल्लाह तआला उन लोगों को आदेश देता है, जो संपन्न और सक्षम है, कि वह ज़रूरतमंद की तलाश करें और उसे धन दें। यह अल्लाह तआला की कृपा है, न कि किसी व्यक्ति के उपकार का प्रदर्शन। इस आदेश का उद्देश्य केवल ज़कात तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ज़कात से इतर भी है, क्योंकि धन में ज़कात के अतिरिक्त भी अधिकार होता है। अल्लाह तआला ने इस आयत में ज़कात का अलग से उल्लेख किया है, इस बात को अनेक विद्वानों, जैसे इमाम क़ुर्तबी रहमतुल्लाहि अलैह, ने स्पष्ट किया है।[1]

इसी प्रकार, इस आयत में प्राप्तकर्ताओं के अधिकारों को विविधतापूर्ण और व्यवस्थित किया गया है, जिससे दान के प्राथमिकताओं के क्रम को समझाया गया है। सबसे पहले रिश्तेदारों का उल्लेख किया गया है, क्योंकि उनका अधिकार दूसरों की तुलना में अधिक है। इसके बाद अनाथ का उल्लेख है, जो अपनी कम उम्र और अनुभवहीनता के कारण अपने लिए धन कमाने में असमर्थ होता है। फिर निर्धन (मिस्कीन) का ज़िक्र है, जो भले ही धन अर्जित करने के तरीकों को समझता हो, लेकिन किसी शारीरिक या अन्य असमर्थता के कारण ऐसा करने में असमर्थ होता है। अतः अनाथ की प्राथमिकता निर्धन से अधिक है। इसके बाद, मुसाफ़िर (इब्ने सबील) का उल्लेख है, जो यात्रा में धन के साधनों से वंचित हो चुका हो। फिर माँगने वालों (साइल)

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 162)।

का उल्लेख है, जो अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दूसरों से सहायता मांगते हैं। अंत में, ग़ुलामों को आज़ाद करने का ज़िक्र है।

अगर कोई व्यक्ति इस क्रम को ध्यान से देखे, तो वह इन प्राथमिकताओं के पीछे की बुद्धिमत्ता और व्यवस्था पर आश्चर्य करेगा, जिसे अल्लाह, जो अज़ीज़, हकीम और अलीम है, ने निर्धारित किया है।

इस आयत में इबादतों का भी उल्लेख किया गया है, जैसे नमाज़ और ज़कात। नमाज़ एक ऐसी इबादत है जो बंदे और उसके रब के बीच होती है, जबकि ज़कात अल्लाह के लिए एक सामाजिक इबादत है, जो बंदे और समाज के बीच परस्पर संपर्क को स्थापित करती है। ये दोनों इबादतें इबादत के दो पहलुओं को दर्शाती हैं। इसी प्रकार, रोज़ा और हज भी नमाज़ की तरह अल्लाह और बंदे के बीच का संबंध स्थापित करते हैं, जबकि ज़कात, सदक़ा और कफ्फारा सामाजिक जुड़ाव और सहायता की भावना को मज़बूत करते हैं।

आयत ने ऐसे नैतिक गुणों का भी उल्लेख किया है, जो समाज को स्थायित्व प्रदान करते हैं और मानवता के भीतर से बुराई के तत्वों को समाप्त करते हैं। जैसे कि वादों को पूरा करना। यह गुण संधियों और अनुबंधों के बीच सुरक्षा और भरोसे को सुनिश्चित करता है। वादों को तोड़ने या विश्वासघात करने से व्यक्तियों, समुदायों और यहाँ तक कि देशों के बीच दुश्मनी और घृणा उत्पन्न होती है। वादों की पवित्रता को बनाए रखना सामाजिक सुरक्षा और स्थिरता की गारंटी है।

इस आयत करीमा में सब्र (धैर्य) का उल्लेख तीन परिस्थितियों में किया गया है, जो कि सबसे कठिन हालातों में से हैं। यदि कोई व्यक्ति इनमें से किसी एक स्थिति में धैर्य का प्रदर्शन कर सके, तो अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से वह अन्य स्थितियों में भी धैर्यवान बन सकता है। ये तीन स्थितियाँ हैं: (الْبَأْسَاء) अत्यधिक गरीबी, जब कोई व्यक्ति कठिनतम आर्थिक स्थिति का सामना करता है। (الضَّرَّاء) बीमारी, जब कोई गंभीर स्वास्थ्य समस्या से जूझ रहा हो। (حين البأس) युद्ध की कठिनाई, जब कोई अल्लाह की राह में शत्रु से लड़ाई की कठिनाईयों का सामना करता है। इनमें से हर एक परिस्थिति अपने आप में एक जिहाद है। जो व्यक्ति अल्लाह तआला की निगरानी (मुहासबा) को महसूस करता है, वह इन गुणों को अपने अंदर विकसित कर सकता है। उसका अल्लाह पर यह भरोसा होता है कि अल्लाह उसकी कठिनाइयों का बदला बेहतर तरीक़े से देगा। गरीबी का बदला समृद्धि से, बीमारी का बदला स्वास्थ्य और सवाब से, और युद्ध में धैर्य का बदला विजय या शहादत से, जिसके बदले उसे हमेशा की सुखदायी ज़िंदगी मिलेगी।

इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि अल्लाह तआला इंसान को इन परिस्थितियों में आज़मा सकता है। यदि किसी पर इनमें से कोई मुसीबत आ पड़े, तो उसे इस परीक्षा की अंततः भलाई को समझना चाहिए। इसी संदर्भ में, अल्लाह तआला ने इस आयत को इन शब्दों के साथ समाप्त किया: ﴿أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ صَدَقُواْۖ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُتَّقُونَ﴾ (यही लोग सच्चे हैं तथा यही (अल्लाह से) डरते हैं) अतः हे अल्लाह, हमें भी अपनी रह़मत से सच्चे और मुत्तक़ी (पवित्र) लोगों में शामिल कर ले। ऐ सभी रहम करने वालों में सबसे अधिक रहम करने वाले रब।

सच्चे और मुत्तक़ी लोग अल्लाह के सबसे प्रिय बंदे हैं, क्योंकि उनके अंदर उत्तम गुण होते हैं। यही कारण है कि वे अल्लाह की ओर से संपूर्ण प्रशंसा के हक़दार हैं। अल्लाह तआला ने अपने पवित्र ग्रंथ में अनेक महान आयतों में मुत्तक़ी लोगों के लिए अद्भुत इनाम और सवाब का उल्लेख किया है।

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلۡقِصَاصُ فِي ٱلۡقَتۡلَىۖ ٱلۡحُرُّ بِٱلۡحُرِّ وَٱلۡعَبۡدُ بِٱلۡعَبۡدِ وَٱلۡأُنثَىٰ بِٱلۡأُنثَىٰۚ فَمَنۡ عُفِيَ لَهُۥ مِنۡ أَخِيهِ شَيۡءٞ فَٱتِّبَاعُۢ بِٱلۡمَعۡرُوفِ وَأَدَآءٌ إِلَيۡهِ بِإِحۡسَٰنٖۗ ذَٰلِكَ تَخۡفِيفٞ مِّن رَّبِّكُمۡ وَرَحۡمَةٞۗ فَمَنِ ٱعۡتَدَىٰ بَعۡدَ ذَٰلِكَ فَلَهُۥ عَذَابٌ أَلِيمٞ ١٧٨ وَلَكُمۡ فِي ٱلۡقِصَاصِ حَيَوٰةٞ يَٰٓأُوْلِي ٱلۡأَلۡبَٰبِ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ١٧٩﴾ [سورة البقرة:١٧٨-١٧٩].

(हे ईमान वालो! तुमपर निहत व्यक्तियों के बारे में क़िसास (बराबरी का बदला) अनिवार्य कर दिया गया है। स्वतंत्र का बदला स्वतंत्र से लिया जायेगा, दास का दास से और नारी का नारी से। जिस अपराधी के लिए उसके भाई की ओर से कुछ क्षमा कर दिया जाये, तो उसे सामान्य नियम का अनुसरण (अनुपालन) करना चाहिये। निहत व्यक्ति के वारिस को भलाई के साथ दियत (अर्थदण्ड) चुका देना चाहिये। ये तुम्हारे पालनहार की ओर से सुविधा तथा दया है। इसपर भी जो अत्याचार करे, तो उसके लिए दुःखदायी यातना है। और हे समझ वालो! तुम्हारे लिए क़िसास (के नियम में) जीवन है, ताकि तुम रक्तपात से बचो)।

फिर क़ुरआन का संदर्भ, सच्चाई की वास्तविकता को स्पष्ट करने के बाद, उस पर जाता है जो लोगों के जीवन को व्यवस्थित करता है, और उनमें सुरक्षा और स्थिरता की स्थापना करता है, ताकि वे एक सम्मानजनक, सुरक्षित और शांतिपूर्ण जीवन जी सकें, और उसमें वे दुनिया और आख़िरत में उनके कर्तव्यों को निभा सकें। अल्लाह तआला कहता है: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلۡقِصَاصُ فِي ٱلۡقَتۡلَىۖ﴾ (हे ईमान वालो! तुमपर निहत व्यक्तियों के बारे में क़िसास (बराबरी का बदला) अनिवार्य कर दिया गया है) इस आयत की शुरुआत एक निदा (पुकार) के साथ होती है, और यह निदा विशेष रूप से ईमान वालों के लिए है, क्योंकि वे इस महान धर्म की शरीअत को लागू करने के लिए संबंधित हैं। फिर यह बयान किया गया कि यह (كُتِبَ)

अर्थात अनिवार्य और साबित किया गया है कि इसे न्याय और समानता के साथ लागू करना चाहिए, ताकि लोगों के बीच न्याय और संतुलन हो और वे हत्या से बच सकें। यह भी दर्शाता है कि सभी पक्षों को अल्लाह द्वारा अनिवार्य किए गए क़ानून की रक्षा करनी चाहिए, उसे नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए और सच्चाई को छुपाना नहीं चाहिए। बल्कि, हाकिम को इसे लागू करना चाहिए और सभी को इसे मानना चाहिए, यहाँ तक कि हत्यारे के परिवार को भी हाकिम को अल्लाह के क़ानून को लागू करने की अनुमति देनी चाहिए, और किसी को भी हत्यारे को छुपाकर उसे न्याय से बचाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इससे अल्लाह का न्याय रोका जाता है जिसे अल्लाह ने क़िसास के रूप में निर्धारित किया है।

फिर अल्लाह तआला ने अधिक विस्तार से यह स्पष्ट किया: ﴿ٱلۡحُرُّ بِٱلۡحُرِّ وَٱلۡعَبۡدُ بِٱلۡعَبۡدِ وَٱلۡأُنثَىٰ بِٱلۡأُنثَىٰۚ﴾ (स्वतंत्र का बदला स्वतंत्र से लिया जायेगा, दास का दास से और नारी का नारी से) इमाम क़ुर्तुबी रहिमहुल्लाह कहते हैं: "एक समूह का कहना है कि इस आयत ने हर प्रकार के क़िसास का नियम स्पष्ट किया है, जैसे कि स्वतंत्र व्यक्ति के बदले स्वतंत्र व्यक्ति का बदला, दास के बदले दास का, और स्त्री के बदले स्त्री का क़िसास।"(1)

आयत के संदर्भ में मफस्सिरीन (विवेचनाकारों) ने यह उल्लेख किया है कि यह आयत ऐसे समय में नाज़िल हुई जब कुछ लोग क़िसास के मामले में अन्याय करते थे। उदाहरण के लिए, अगर कोई दास मारा जाता, तो वे बदले में एक स्वतंत्र व्यक्ति को मारने की मांग करते थे, जो कि ज्यादती और अतिरेक था।(2)

इससे यह स्पष्ट होता है कि क़ुरआन ने अपने अवतरण के समय प्रचलित समस्याओं और अन्यायपूर्ण प्रथाओं को संबोधित किया। यह ऐसे नियम और व्यवस्थाएँ स्थापित करता है जो मुसलमानों के भविष्य को व्यवस्थित करती हैं। इसके अलावा, यह जानना कि आयतें किस पृष्ठभूमि में उतरीं (अर्थात असबाब-ए-नुज़ूल), अल्लाह के संदेश को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। साथ ही, नासिख और मंसूख (रद्द और लागू होने वाले आदेश) की समझ और उन आयतों को आपस में जोड़ना भी आवश्यक है जो एक-दूसरे को स्पष्ट करती हैं।

उदाहरण के तौर पर, सूरह माइदह की आयत: (وَكَتَبۡنَا عَلَيۡهِمۡ فِيهَآ أَنَّ ٱلنَّفۡسَ بِٱلنَّفۡسِ) "और हमने उनके लिए लिख दिया था कि जान के बदले जान।" यह दिखाता है कि क़ुरआन

---

(2) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 165)।

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 215), ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 163) इत्यादि तफ़सीर की पुस्तकें।

की आयत को समझने और लागू करने में अन्य आयतों और सुन्नत से मार्गदर्शन लेना आवश्यक है। इसे केवल एक आयत तक सीमित करके समझना और लागू करना गंभीर त्रुटि होगी। इससे यह भी साबित होता है कि इस्लाम का पद्धति और कानून बौद्धिक विकास को बढ़ावा देता है और चिंतन को उच्च स्तर तक ले जाता है। यही कारण है कि शरीअत के विद्वान अपनी गहरी सोच और समझ के लिए विख्यात हुए। उन्होंने क़ुरआन और सुन्नत से जुड़े सभी मामलों को स्पष्ट किया, चाहे वह किसी गैर-मुस्लिम की हत्या हो या उसका माल चोरी करना। इस प्रकार, इस्लामिक शरीअत ने न्याय की सीमाएँ स्थापित करके लोगों के जीवन को रोशन किया और विद्वानों के ज्ञान और समझ को परिपूर्ण किया। इसने मुसलमानों को ऐसी क़ानूनी व्यवस्थाओं की आवश्यकता से मुक्त कर दिया जिन्हें लोग आपसी सहमति से भी न मान सकें। अतः अल्लाह का शुक्र और धन्यवाद है।

फिर आयत ने क्षमा की अवधारणा को स्पष्ट किया है, जो मुसलमानों के बीच शरीअत की एक मांग है: ﴿فَمَنْ عُفِيَ لَهُۥ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ﴾ "जो भी किसी को उसके भाई से माफ़ किया जाए"। यहाँ, यहाँ तक कि हत्या के मामले में भी भाईचारे की पुष्टि की गई है। अल्लाह तआला ने भाईचारे की बात की है: ﴿فَمَنْ عُفِيَ لَهُۥ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ﴾ "जो भी किसी को उसके भाई से माफ़ किया जाए"। जो कुछ भी हुआ है वह इस्लामी भाईचारे को समाप्त नहीं करता। जो व्यक्ति हत्यारे को दिये के बदले माफ़ कर देता है, या बिना किसी बदले माफी देता है, उसे संबंधित पक्षों के साथ सदभावना से व्यवहार करना चाहिए: ﴿فَٱتِّبَاعٌۢ بِٱلْمَعْرُوفِ وَأَدَآءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَٰنٍ﴾ " तो उसे सामान्य नियम का अनुसरण (अनुपालन) करना चाहिये"। तो मृतक के वली को हत्यारे भाई के साथ ﴿بِٱلْمَعْرُوفِ﴾ "अच्छे तरीके से" बिना किसी कठिनाई के अनुकरण करना चाहिए, उसे वह बोझ नहीं डालना चाहिए जिसे वह सहन नहीं कर सकता, बल्कि न्यायिक और आर्थिक मामलों में अच्छे से व्यवहार करना चाहिए, और यदि दिये की मांग की जाती है तो उसे उस पर नहीं धकेलना चाहिए जिसे वह नहीं कर सकता। इसके विपरीत, हत्यारे को इसे अदा करना चाहिए, लेकिन अच्छे तरीके से: ﴿وَأَدَآءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَٰنٍ﴾ "उसे अच्छी तरह से अदा करें" बिना देरी के या किसी भी प्रकार के मौखिक या शारीरिक दुर्व्यवहार के बिना। यह एक महान और करुणामय प्रभु की ओर से एक महान मार्गदर्शन है, जिसने क्षमा को प्रेरित करने के लिए इसे प्रोत्साहित किया और इसका संकेत दिया, फिर दोनों पक्षों के बीच व्यवहार की आचार संहिता को स्पष्ट किया और उन्हें भाईचारे की ओर केन्द्रित किया: ﴿فَمَنْ عُفِيَ لَهُۥ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ﴾ "जो भी किसी को उसके भाई से माफ़ किया जाए"। फिर अल्लाह तआला अपनी इस हुक्म में अपनी करुणा को स्पष्ट करते हैं, यह कहते हुए: ﴿ذَٰلِكَ تَخْفِيفٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ﴾ "यह आपके रब की ओर से एक राहत और करुणा है"। क्योंकि अल्लाह तआला ने क़िसास को निर्धारित किया है, और माफी

का अवसर दिया है, यह आपके लिए अल्लाह तआला की ओर से एक राहत और करुणा है। तो अल्लाह तआला की प्रशंसा और धन्यवाद है। यह इस शरीअत के महान हुक्मों पर अल्लाह की प्रशंसा और धन्यवाद का आह्वान करता है, जिसमें स्पष्ट और गुप्त करुणा शामिल है, जो अल्लाह तआला ने आज्ञा दी है और उसे न्यायित किया है, और उसमें जो कुछ वह मना करते हैं और उससे रोकते हैं। यह अल्लाह की करुणा का प्रमाण है, और यह कि उसने इस धर्म में अपने बंदों के लिए कोई कठिनाई नहीं चाही है।

फिर अल्लाह तआला स्पष्ट करते हैं कि क़िसास के लागू होने के बाद, या दिये लेने के बाद या पक्षों के बीच पूरी माफी के बाद, किसी भी प्रकार के अतिचार की संभावना हो सकती है। इसलिए, उसने तुरंत उसकी सजा को स्पष्ट किया: ﴿فَمَنِ ٱعۡتَدَىٰ بَعۡدَ ذَٰلِكَ فَلَهُۥ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ "जो इसके बाद अतिचार करे, उसके लिए दर्दनाक सज़ा है"। यह दुष्टता को रोकने और उसकी सीमा निर्धारित करने के लिए है, ताकि यह दोनों पक्षों के बीच और अधिक न बढ़े। उसने इसे कठोर चेतावनी से समाप्त किया: ﴿فَمَنِ ٱعۡتَدَىٰ بَعۡدَ ذَٰلِكَ فَلَهُۥ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ "जो इसके बाद अतिचार करे, उसके लिए दर्दनाक सज़ा है"। यह इस्लामी शरीअत की गहराई और उसकी पूर्वानुमानितता का प्रमाण है, क्योंकि यह उन संभावित बुराइयों को भी संबोधित करती है जो मानव के बुरे कार्यों के बाद उत्पन्न हो सकती हैं। यह एक ऐसी शरीअत है जो एक सर्वज्ञ और प्रज्ञ व्यक्ति (अल्लाह) की ओर से आई है, और यह उन सभी संभावित स्थितियों का समाधान प्रस्तुत करती है जो मानव मन के लिए कष्टकारी हो सकती हैं। इसका उद्देश्य है कि बुराई का पूरी तरह से अंत कर दिया जाए। फिर अल्लाह तआला ने इस दिव्य आदेश की महानता को स्पष्ट किया: ﴿وَلَكُمۡ فِي ٱلۡقِصَاصِ حَيَوٰةٞ يَٰٓأُوْلِي ٱلۡأَلۡبَٰبِ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ١٧٩﴾ (और हे समझ वालो! तुम्हारे लिए क़िसास (के नियम में) जीवन है, ताकि तुम रक्तपात से बचो) क़िसास, चाहे वह हत्यारे को मौत की सज़ा देना हो, मुआवजा (दिया) स्वीकार करना हो, या क्षमा करना हो—इनमें मानवता के लिए जीवन का संदेश है। इस न्यायपूर्ण व्यवस्था से लोगों के दिलों में अपराध करने का डर बैठता है, और वे अपने घमंड और मनमानी से रुक जाते हैं। उन्हें यह एहसास होता है कि यदि उन्होंने किसी की हत्या की, तो उनके लिए भी शरीअत में वही सज़ा है। इसलिए, जिसने किसी के खिलाफ अधिकार का दावा करना हो, उसे न्यायिक तरीके से अपनी मांग करनी चाहिए, न कि हत्या जैसे अपराध में पड़ना चाहिए। यहाँ, शासक (हाकिम) की उपस्थिति और राज्य के अस्तित्व का महत्व उजागर होता है, क्योंकि शासक ही अल्लाह की शरीअत को लागू करता है। इसके अलावा, शासक को शरीअत के कार्यान्वयन में सहयोग देना और उसके समर्थन में खड़ा होना भी महत्वपूर्ण है।

आयत का अंत अल्लाह के इस कथन से होता है: ﴿لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾ (ताकि तुम तक़्वा (परहेज़गारी) हासिल करो) शरीअत के आदेशों को लागू करने से तक़्वा हासिल होती है। यह इंसान को हत्या जैसे पाप से बचने की प्रेरणा देता है। जब तक़्वा हासिल होती है, तो यह इस बात का प्रमाण बन जाती है कि अल्लाह के आदेशों का पालन हो रहा है।

﴿كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِن تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿١٨٠﴾ فَمَن بَدَّلَهُ بَعْدَمَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٨١﴾ فَمَنْ خَافَ مِن مُّوصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٨٢﴾﴾ [سورة البقرة: ١٨٠-١٨٢].

(और जब तुममें से किसी के निधन का समय हो और वह धन छोड़ रहा हो, तो उसपर माता-पिता और समीपवर्तियों के लिए साधारण नियमानुसार वसिय्यत (उत्तरदान) करना अनिवार्य कर दिया गया है। ये आज्ञाकारियों के लिए सुनिश्चित है। फिर जिसने वसिय्यत सुनने के पश्चात उसे बदल दिया, तो उसका पाप उनपर है, जो उसे बदलेंगे और अल्लाह सब कुछ सुनता-जानता है। फिर जिसे डर हो कि वसिय्यत करने वाले ने पक्षपात या अत्याचार किया है, फिर उसने उनके बीच सुधार करा दिया, तो उसपर कोई पाप नहीं। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है)।

फिर क़ुरआन का संदर्भ मुसलमानों को यह सिखाने की ओर बढ़ता है कि जब मृत्यु के संकेत स्पष्ट हों, तो तुरंत वसीयत करने की ओर बढ़ें। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِن تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ﴾ (और जब तुममें से किसी के निधन का समय हो और वह धन छोड़ रहा हो, तो उसपर वसिय्यत (उत्तरदान) करना अनिवार्य कर दिया गया है) अल्लाह के कथन ﴿كُتِبَ﴾ का अर्थ है कि यह तुम पर फर्ज़ (अनिवार्य) कर दिया गया है। ऐ ईमान लाने वालों, जब मृत्यु के कारण और संकेत प्रकट हो जाएँ, जैसे ऐसा रोग जो ठीक होने की उम्मीद न हो, या ऐसी घटनाएँ जिनमें हत्या का डर हो, तो जिसे अल्लाह ने अधिक संपत्ति दी हो, वह अल्लाह के आदेश का पालन करे। ﴿تَرَكَ خَيْرًا﴾ का मतलब है, जिसके पास पर्याप्त संपत्ति हो, उसे वसीयत करनी चाहिए। अल्लाह ने आदेश दिया है कि वह वसीयत अपने माता-पिता और करीबी रिश्तेदारों के लिए करे, जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿إِن تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ﴾ अगर किसी के पास पर्याप्त संपत्ति हो, तो उसे अपनी वसीयत में माता-पिता और उन रिश्तेदारों का ध्यान रखना चाहिए जो जरूरतमंद हैं। इसमें वसीयत की प्राथमिकता ज़रूरत और गरीबी के अनुसार तय की जानी चाहिए। यह वसीयत करना तक़्वा (परहेज़गारी) का हिस्सा है, और यह वसीयतकर्ता की परहेज़गारी का प्रमाण भी

है। उलमा ने इस संबंध में विस्तार से चर्चा की है, जैसे कि वसीयत संपत्ति के एक-तिहाई हिस्से में होनी चाहिए या अधिक संपत्ति के मामले में होनी चाहिए। और यह भी कि क्या यह उन माता-पिता से संबंधित है जो वारिस नहीं होते। जो इन मुद्दों की पूरी जानकारी लेना चाहते हैं, वे तफसीर और विरासत से संबंधित फिक्ह की पुस्तकों का अध्ययन कर सकते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह ने इंसान, उसकी संपत्ति और उसके रिश्तेदारों के अधिकारों की सुरक्षा, वितरण, और सामंजस्य के लिए बहुत ध्यान दिया है। इस्लामी शरीअत की गहराई और सूक्ष्मता यह दिखाती है कि यह मानसिक और बौद्धिक क्षमताओं को परिष्कृत करती है, और इंसान के दिल में अल्लाह के प्रति प्रेम पैदा करती है।

फिर अल्लाह ने उन गवाहों या वारिसों की स्थिति स्पष्ट की है, जो वसीयत को सुनते हैं और जानते हैं, लेकिन उसे बदल देते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿فَمَنۢ بَدَّلَهُۥ بَعۡدَ مَا سَمِعَهُۥ فَإِنَّمَآ إِثۡمُهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُۥٓۚ﴾ (फिर जिसने वसिय्यत सुनने के पश्चात उसे बदल दिया, तो उसका पाप उनपर है, जो उसे बदलेंगे) वसीयत करने वाले को उसकी वसीयत का सवाब अल्लाह के पास मिलेगा, लेकिन पाप उन लोगों पर होगा जो इसे सुनने और समझने के बाद बदलते हैं। अल्लाह तआला ने कहा: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ (अल्लाह सब कुछ सुनता-जानता है) अल्लाह वसीयत करने वाले के इरादे को सुनता है, और वह यह भी जानता है कि गवाहों ने वसीयत को बदला है या नहीं। यह एहसास कि अल्लाह सब सुनता और जानता है, इंसान को गुनाह से बचने की प्रेरणा देता है।

लेकिन अगर वसीयत करने वाला अन्याय करे, अज्ञानता के कारण, किसी वारिस की ओर झुकाव से, या किसी और कारण से वसीयत में हानि पहुँचाए, तो अल्लाह ने आदेश दिया: ﴿فَمَنۡ خَافَ مِن مُّوصٖ جَنَفًا أَوۡ إِثۡمٗا فَأَصۡلَحَ بَيۡنَهُمۡ فَلَآ إِثۡمَ عَلَيۡهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٞ رَّحِيمٞ﴾ (फिर जिसे डर हो कि वसिय्यत करने वाले ने पक्षपात या अत्याचार किया है, फिर उसने उनके बीच सुधार करा दिया, तो उसपर कोई पाप नहीं। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है) यहाँ पर देखा जा सकता है कि अल्लाह तआला ने अपने बंदों की कितनी गहरी देखभाल की है। ऐसा इसलिए कि इंसान से अनजाने में या जानबूझकर गलतियाँ हो सकती हैं। अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿فَمَنۡ خَافَ مِن مُّوصٖ جَنَفًا أَوۡ إِثۡمٗا﴾ (फिर जिसने किसी वसीयतकर्ता के अन्याय या पाप का डर महसूस किया) (جنف) "अन्याय" का मतलब है बिना इरादे के सही रास्ते और न्याय से हट जाना। जबकि (إثم) "पाप" का अर्थ है जानबूझकर सत्य और न्याय का उल्लंघन करना। दोनों ही स्थितियों में वसीयत करने वाले को नसीहत की आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति वसीयत के समय मौजूद हो, उसे चाहिए कि वह वसीयत को सही दिशा में सुधारने के लिए नसीहत करे। इससे वसीयत करने वाले और जिनके लिए वसीयत की गई है, उनके मामले सुलझ सकते हैं।

इसलिए यह वाजिब है कि जो भी वसीयत के समय उपस्थित हो, वह सलाह दे। और अगर उसने सलाह दी, तो उस पर कोई पाप नहीं होगा, जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿فَلَآ إِثۡمَ عَلَيۡهِۚ﴾ (तो उस पर कोई पाप नहीं है)। अल्लाह तआला के इस आदेश में यह भी है कि किसी के दिल में यह विचार न आए कि वसीयत करना वसीयतकर्ता का ही मामला है, और वह उसमें हस्तक्षेप न करे। शरीअत ने इस तरह के संभावित विचारों और आशंकाओं को हटा दिया है। यह इस्लामी शरीअत की गहराई का प्रमाण है, क्योंकि यह उन सूक्ष्म पहलुओं को भी संबोधित करती है, जिन्हें इंसान स्वयं नहीं समझ सकता।

शैख़ इब्न -ए- सआदी[1] रहिमहुल्लाह इस आयत के संबंध में कहते हैं: जो व्यक्ति वसीयतकर्ता की वसीयत के समय उपस्थित हो, उस पर यह आवश्यक है कि वह अच्छाई और न्याय के साथ नसीहत करे और अन्याय को रोकने की कोशिश करे। यदि वसीयतकर्ता जानबूझकर नसीहत को अनसुना कर देता है और उसके अनुसार कार्य नहीं करता, तो उस व्यक्ति को चाहिए जो वसीयत के समय उपस्थित था, कि वह वसीयत के लाभार्थियों के बीच सुधार करे। उसके लिए आवश्यक है कि वह न्याय को स्थापित करने और उनमें सामंजस्य बनाने का प्रयास करे और उन्हें उनके मृतक की आत्मा को निर्दोष साबित करने के लिए उपदेश दे। इस प्रकार उसने एक महान भलाई का कार्य किया होगा, और इस पर उसका कोई दोष नहीं होगा। लेकिन जो व्यक्ति अन्यायपूर्ण वसीयत को बदलता है, उस पर पाप का दायित्व रहेगा।

अल्लाह तआला ने इस आयत को इस वाक्य के साथ समाप्त किया: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٞ رَّحِيمٞ﴾ (निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है) यह क्षमा उन लोगों के लिए है जो अनजाने में गलती कर जाते हैं। इससे यह भी सीखा जा सकता है कि इंसान गलतियों का पात्र है, चाहे वह अनजाने में हो या जानबूझकर। अक्सर, दुनिया से विदा लेते समय भी, इंसान अपने अंदर छिपे द्वेष, नफरत, या पूर्वाग्रह को अपने साथ रखता है। इस स्थिति के प्रति सतर्क रहना और इसे दूर करने का प्रयास करना आवश्यक है। इंसान को हर हाल में अल्लाह की खुशी को प्राथमिकता देनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसका प्यार या नफरत उसे अन्याय और पाखंड की ओर न ले जाए।

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ١٨٣
أَيَّامٗا مَّعۡدُودَٰتٖۚ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوۡ عَلَىٰ سَفَرٖ فَعِدَّةٞ مِّنۡ أَيَّامٍ أُخَرَۚ وَعَلَى ٱلَّذِينَ يُطِيقُونَهُۥ فِدۡيَةٞ طَعَامُ
مِسۡكِينٖۖ فَمَن تَطَوَّعَ خَيۡرٗا فَهُوَ خَيۡرٞ لَّهُۥۚ وَأَن تَصُومُواْ خَيۡرٞ لَّكُمۡ إِن كُنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ١٨٤ شَهۡرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِيٓ أُنزِلَ فِيهِ

(1) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी। (1/ 142-143)।

ٱلْقُرْءَانُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَٰتٍ مِّنَ ٱلْهُدَىٰ وَٱلْفُرْقَانِ ۚ فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ ٱلشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ ٱللَّهُ بِكُمُ ٱلْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ ٱلْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا۟ ٱلْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا۟ ٱللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَىٰكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾﴾ [سورة البقرة:١٨٣-١٨٥].

(हे ईमान वालो! तुमपर रोज़े उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं, जैसे तुमसे पूर्व के लोगों पर अनिवार्य किये गये, ताकि तुम अल्लाह से डरो। वह गिनती के कुछ दिन हैं। फिर यदि तुममें से कोई रोगी अथवा यात्रा पर हो, तो ये गिनती, दूसरे दिनों से पूरी करे और जो उस रोज़े को सहन न कर सके, वह फ़िद्या (प्रायश्चित्त) दे, जो एक निर्धन को खाना खिलाना है और जो स्वेच्छा भलाई करे, वह उसके लिए अच्छी बात है। यदी तुम समझो, तो तुम्हारे लिए रोज़ा रखना ही अच्छा है। रमज़ान का महीना वह है, जिसमें क़ुर्आन उतारा गया, जो सब मानव के लिए मार्गदर्शन है तथा मार्गदर्शन और सत्योसत्य के बीच अन्तर करने के खुले प्रमाण रखता है। अतः जो व्यक्ति इस महीने में उपस्थित हो, वह उसका रोज़ा रखे, फिर यदि तुममें से कोई रोगी अथवा यात्रा पर हो, तो उसे दूसरे दिनों में गिनती पुरी करनी चाहिए। अल्लाह तुम्हारे लिए सुविधा चाहता है, तंगी (असुविधा) नहीं चाहता और चाहता है कि तुम गिनती पूरी करो तथा इस बातपर अल्लाह की महिमा का वर्णन करो कि उसने तुम्हें मार्गदर्शन दिया और (इस प्रकार) तुम उसके कृतज्ञ बन सको)।

अल्लाह तआला रोज़े की फर्जियत (अनिवार्यता) का आदेश अपने इस कथन में बयान करता है: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾ (हे ईमान वालो! तुमपर रोज़े उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं, जैसे तुमसे पूर्व के लोगों पर अनिवार्य किये गये, ताकि तुम अल्लाह से डरो) इस महान आयत की शुरुआत ईमान वालों को निदा (ऐ, हे) के द्वारा पुकार कर की गई, जो कि उसके महत्व को दर्शाती है और इसमें अल्लाह की ओर से मुसलमानों के लिए ईमान की विशेषता शामिल है: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟﴾ "हे ईमान वालों।" यह एक ऊँची दर्जे की बात है, मानो वह यह कह रहा है किः हे वे लोगों जो ईमान लाए हो उस पर जो तुम्हारे पास आया है।

यह कितनी बड़ी बात है कि हमारा रब हमें उच्चतम ईमान के दर्जे से पुकारे। इसके बाद आदेश को स्पष्ट किया जाता है कि रोज़ा उन पर लिखा और अनिवार्य किया गया है। यह उसी तरह बताया गया जैसे क़िसास और वसीयत की आयत में बताया गया है। अल्लाह तआला फ़रमात है: ﴿كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلْقِصَاصُ﴾ "तुम पर क़िसास अनिवार्य किया गया" और ﴿كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ ٱلْمَوْتُ إِن تَرَكَ خَيْرًا﴾ "जब तुममें से किसी को मृत्यु का सामना करना पड़े, यदि उसने कुछ भलाई छोड़ी हो, तो वसीयत अनिवार्य है।" और इसी प्रकार रोज़े की फर्जियत की

आयत है: ﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلصِّيَامُ ﴾ अर्थात यह तुम पर अनिवार्य किया गया है। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत के दूसरे साल में फ़र्ज़ हुआ। यह इस बात का सबूत है कि अल्लाह तआला ने जो आदेश दिया है, और जो वसीयत की है, वह बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि (كُتِبَ) आदेशात्मक वचन है, जिसका अर्थ है कि यह फ़र्ज़ एवं अनिवार्य है।

अल्लाह तआला यह भी बताता है कि रोज़ा तुमसे पहले वालों पर भी अनिवार्य किया गया था: : ﴿كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ﴾ (तुमपर रोज़े उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं, जैसे तुमसे पूर्व के लोगों पर अनिवार्य किये गये) यह मुसलमानों को अपने पूर्वजों के साथ मुकाबला करने के लिए प्रेरित करता है और यह स्पष्ट करता है कि यह आदेश केवल तुम्हारे लिए नहीं है, बल्कि यह एक इबादत है जो तुम्हारे और तुम्हारे पूर्वजों पर अनिवार्य है। यह किसी प्रकार की सज़ा नहीं है, बल्कि रोज़ा से शरीर और आत्मा को ताजगी मिलती है, और यह परहेजगारी को बढ़ाता है। ﴿لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾ (ताकि तुम अल्लाह से डरो) यह अल्लाह की ओर से उसके बंदों के प्रति स्नेह है कि उसने उन्हें इस फर्ज के बारे में बताया और उसकी महान फायदों को स्पष्ट किया, जो कि परहेजगारी प्राप्त करना है। रोज़ा, अल्लाह की परहेजगारी का निर्माण करता है, क्योंकि रोज़ेदार अपने खाने-पीने को अल्लाह के लिए छोड़ देता है, इसलिए अल्लाह उसे इस महान इबादत से परहेजगारी प्रदान करते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि रोज़ा शैतान की बुराइयों से बचाव और सुरक्षा है और इसमें मानसिक, नैतिक और स्वास्थ्य संबंधी बड़े और कई लाभ हैं। इसमें बड़ी मात्रा में पुण्य है, जिसे कई हदीसों में प्रमाणित किया गया है।

अल्लाह तआला ने अपनी रहमत एवं दया का परिचय देते हुए हुए रोज़े की अवधि को इस प्रकार निर्धारित किया है कि इसकी कठिनाई कम हो जाए। सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह ने इसे ﴿أَيَّامًا مَّعْدُودَٰتٍ﴾ "गिने-चुने दिन" कहा है, अर्थात ये बहुत लंबे समय तक नहीं हैं, बल्कि थोड़े दिनों के रोज़े हैं। यह दयालु तथा कृपालु अल्लाह तआला की दया और कृपा का प्रमाण है कि उन्होंने अपने मोमिन बंदों के लिए रोज़े की फर्ज़ियत (अनिवार्यता) को स्पष्ट किया है। इससे यह शिक्षा मिलती है कि दया और नरमी का महत्व अत्यधिक है, खासकर तब जब किसी को नसीहत, शिक्षा या निर्देश दिया जा रहा हो। यह व्यवहार रोज़मर्रा के जीवन के हर पहलू में अपनाया जाना चाहिए, चाहे वह कार्यस्थल हो, पेशेवर जीवन हो, या समाज में आपसी सहयोग का क्षेत्र हो। यह सहानुभूति हर जगह लागू होनी चाहिए, जब तक कि मामला सख्ती की मांग न करे।

फिर अल्लाह तआला अपनी दया का विस्तार करते हुए बीमारों और यात्रियों पर से कठिनाई को दूर करता है: ﴿فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ﴾ (फिर यदि तुममें से कोई रोगी अथवा यात्रा पर हो, तो ये गिनती, दूसरे दिनों से पूरी करे) इस्लाम में इबादत (पूजा) के नियम इतने सटीक और लचीले हैं कि इसने उन परिस्थितियों का भी ध्यान रखा है, जो किसी को फर्ज़ अदा करने से रोक सकती हैं। यह स्पष्ट किया गया है कि ऐसी परिस्थितियों में राहत दी गई है। इसके बाद आयत में रोज़ेदारों के एक और प्रकार का उल्लेख है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ﴾ (और जो उस रोज़े को सहन न कर सके, वह फ़िद्या (प्रायश्चित्त) दे, जो एक निर्धन को खाना खिलाना) यह उन लोगों के लिए है, जो शारीरिक रूप से रोज़ा रख सकते हैं, लेकिन किसी कारणवश उनके लिए यह कठिन हो जाता है। ऐसे लोग रोज़ा छोड़ सकते हैं और बदले में हर दिन के लिए एक गरीब को खाना खिला सकते हैं। यह नियम रोज़े की फर्ज़ियत के शुरुआती समय में लागू था। बाद में यह छूट हटा दी गई। फिर अल्लाह तआला ने रोज़ा रखने को अफ़ज़ल और बेहतर ठहराया, ताकि लोग रोज़ा रखने के लिए प्रेरित हों, बजाय इसे छोड़ने और सिर्फ फिद्या देने के। ﴿فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ ۚ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ﴾ (फिर जो अपनी ओर से कोई भलाई करे, तो वह उसके लिए बेहतर है। और अगर तुम रोज़ा रखो, तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है, यदि तुम जानते हो)

अल्लाह तआला के इस कथन: ﴿فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ﴾ का अर्थ यह है कि अगर कोई व्यक्ति हर दिन एक से अधिक गरीबों को खाना खिलाए, तो यह उसके लिए बेहतर है। और अगर वह रोज़ा रखे, तो यह खाना खिलाने से भी अधिक श्रेष्ठ है। यह इब्न -ए- मसऊद, इब्न -ए- अब्बास, मुजाहिद, ताऊस, मुक़ातिल और अन्य सलफ़ विद्वानों का कथन है।(1) यह इस्लामी शरीअत की उस विशेषता को दर्शाता है, जो मानव स्वभाव का ध्यान रखते हुए निर्देश देती है। शरीअत ने शिक्षा और प्रेरणा देने में क्रमबद्धता का तरीका अपनाया है, और अधिक भलाई की ओर प्रोत्साहित किया है। यह दिखाता है कि इस्लाम ने लोगों की विभिन्न क्षमताओं और आवश्यकताओं का ध्यान रखा है। कमजोर क्षमताओं वाले लोगों की अनदेखी नहीं की जाती, बल्कि उनकी देखभाल की जाती है और उनके लिए उपयुक्त विकल्प प्रदान किए जाते हैं। साथ ही, उन्हें बेहतर बनने और अपने स्तर को ऊंचा करने के लिए प्रेरित किया जाता है। यदि यह दृष्टिकोण अल्लाह तआला का है, जो इबादतों और अपने बंदों के साथ नरमी, प्रोत्साहन और पूर्णता की ओर प्रेरणा से संबंधित है, तो यह और भी अधिक जरूरी हो जाता है कि यह दृष्टिकोण लोगों के आपसी व्यवहार में भी अपनाया जाए। इंसानों को भी एक-दूसरे के साथ दया, सहयोग और प्रोत्साहन का व्यवहार करना चाहिए।

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 220)।

अल्लाह तआला के कथन: ﴿وَأَن تَصُومُوا۟ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ﴾ इसमें बंदों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया गया है कि उन्हें रोज़ा न रखने की अनुमति दी गई है, जब वे इसे मुश्किल पाते हैं। लेकिन इसके बदले उन्हें एक या अधिक गरीबों को खाना खिलाने का प्रबंध करना होगा। इसके साथ ही, अल्लाह तआला ने उन्हें रोज़ा रखने के लिए प्रोत्साहित किया है, क्योंकि यह अधिक बेहतर और श्रेयस्कर है। ﴿وَأَن تَصُومُوا۟ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ﴾ यह दिखाता है कि रोज़ा रखना भलाई और गुणों का कारण है, और इसमें बंदों के लिए अनेक फायदे हैं। अल्लाह तआला ने इस आयत के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि भले ही छूट दी गई हो, लेकिन रोज़ा रखना अधिक फायदेमंद और उत्तम है। इस आयत में अल्लाह तआला ने यह बताया कि ज्ञान और समझ रखने वालों के लिए रोज़ा रखने की श्रेष्ठता को समझने के बाद, इसे अपनाने की प्रेरणा दी गई है: ﴿إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ﴾ "यदि तुम जानते हो।" इससे यह संकेत मिलता है कि छूट तो है, लेकिन साथ ही बेहतर विकल्प की ओर प्रोत्साहन और प्रेरणा भी दी गई है। यह निर्देशन की कला में अद्वितीय और उत्कृष्ट शैली है। हम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं कि उन्होंने हमें अपनी शरीअत की विधि और उसके उद्देश्यों के बारे में सिखाया, जिसे हम अपनी जिंदगी के विभिन्न पहलुओं, दावत, शिक्षा, पारिवारिक, पेशेवर, सामाजिक और प्रबंधन संबंधी कार्यों में अपनाकर लाभ उठा सकते हैं।

आगे आयत में रोज़े की फर्ज़ियत को पूर्ण करते हुए रमज़ान के महीने की प्रशंसा के साथ इसका उल्लेख किया गया है: ﴿شَهْرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِىٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلْقُرْءَانُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَٰتٍ مِّنَ ٱلْهُدَىٰ وَٱلْفُرْقَانِ﴾ (रमज़ान का महीना वह है, जिसमें क़ुर्आन उतारा गया, जो सब मानव के लिए मार्गदर्शन है तथा मार्गदर्शन और सत्योसत्य के बीच अन्तर करने के खुले प्रमाण रखता है) इससे यह स्पष्ट होता है कि यह महीना अल्लाह तआला के निकट कितना सम्मानित और उच्च स्थान रखता है। यह ईमान वालों के लिए रमज़ान की अहमियत को समझने और इसे पूरी श्रद्धा और ध्यान के साथ बिताने का सबक है। यह उल्लेख आयत के अगले भाग में रमज़ान में रोज़ा रखने की अनिवार्यता को और अधिक स्पष्ट करता है। साथ ही, यह भी शिक्षा देता है कि किसी चीज़ के महत्व और उसकी श्रेष्ठता को उसकी शुरुआत में ही उल्लेखित करना, उसे अपनाने और उसकी महत्ता को समझने में मदद करता है। इस आयत से यह भी पता चलता है कि क़ुरआन का कितना बड़ा दर्जा है। क़ुरआन को रमज़ान के महीने की प्रशंसा के माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह भी स्पष्ट किया गया कि क़ुरआन रमज़ान के महीने में, विशेष रूप से शबे क़द्र में आसमान-ए-दुनिया पर उतारा गया। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةِ ٱلْقَدْرِ ١﴾ "हमने इसे शबे क़द्र में उतारा।" इसके बाद यह क़ुरआन समय-

समय पर घटनाओं के अनुसार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल होता रहा। जैसा कि इब्न -ए- अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से विभिन्न प्रमाणित रिवायतों में वर्णित है।[1]

और इसी तरह अल्लाह तआला ने इस आयत में क़ुरआन की प्रशंसा की है कि उसे हिदायत के रूप में वर्णित किया: ﴿شَهۡرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِيٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلۡقُرۡءَانُ هُدٗى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَٰتٖ مِّنَ ٱلۡهُدَىٰ وَٱلۡفُرۡقَانِۚ﴾ (रमज़ान का महीना वह है, जिसमें क़ुर्आन उतारा गया, जो सब मानव के लिए मार्गदर्शन है तथा मार्गदर्शन और सत्योसत्य के बीच अन्तर करने के खुले प्रमाण रखता है) यह सभी लोगों के लिए हिदायत है, चाहे वह काफिर हो या मुसलमान। काफिर के लिए यह इसलिए हिदायत है ताकि वह अल्लाह तआला के धर्म की ओर आ सके, क्योंकि इसमें अल्लाह की ओर मार्गदर्शन और स्पष्ट प्रमाण हैं। और मुसलमान के लिए यह हिदायत है क्योंकि इसमें अल्लाह तआला की इच्छाओं और निषेधाज्ञाओं का वर्णन है, जिसमें उसे अल्लाह तआला की प्रसन्नता और अप्रसन्नता का ज्ञान होता है। इसमें आदेश और निषेध हैं।

और इसी तरह अल्लाह तआला ने क़ुरआन की स्पष्टता और स्पष्ट प्रमाणों के लिए प्रशंसा की, अल्लाह तआला कहता है: ﴿وَبَيِّنَٰتٖ مِّنَ ٱلۡهُدَىٰ وَٱلۡفُرۡقَانِۚ﴾ इसमें स्पष्ट और स्पष्ट प्रमाण और तर्क शामिल हैं, जो इसे पढ़ने और सोचने वाले के लिए स्पष्ट हैं। यह उन हिदायतों की सच्चाई का प्रमाण है जो गुमराही के विपरीत हैं, और सही ज्ञान जो गुमराही के विपरीत है, और हक़ और बातिल, हलाल और ह़राम के बीच निर्णय करता है।[2] यह दर्शाता है कि जो व्यक्ति हिदायत चाहता है, उसे क़ुरआन को अपनाना चाहिए, और जो तर्क और प्रमाण सीखना या जानना चाहता है, उसे क़ुरआन को अपनाना चाहिए, और जो लोगों को सच्चाई बताना चाहता है, उसे महान क़ुरआन को अपनाना चाहिए, और जो ज्ञान और उसके मूल तत्वों को प्राप्त करना चाहता है, उसे क़ुरआन को सीखना चाहिए, और जो फिक़ह और तौह़ीद को प्राप्त करना चाहता है, उसे क़ुरआन को अपनाना चाहिए, और जो हक़ और बातिल के बीच अंतर और विरोधाभासों को जानना चाहता है, उसे क़ुरआन को अपनाना चाहिए। यह वह अच्छाई और रोशनी है जो व्यक्ति को अल्लाह तआला की इच्छाओं की ओर मार्गदर्शन करती है। इसी प्रकार, रमज़ान के महीने और इसमें क़ुरआन की नाज़िल होने की विशेषता क़ुरआन की पढ़ाई के महत्व को स्पष्ट करती है।

रमज़ान के महीने की महत्ता और उसमें क़ुरआन की नाज़िल होने की विशेषता को स्पष्ट करने के बाद, अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ ٱلشَّهۡرَ فَلۡيَصُمۡهُۖ﴾ (अतः जो व्यक्ति

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 222)।

(3) पिछला संदर्भ।

इस महीने में उपस्थित हो, वह उसका रोज़ा रखे) तो आदेश दिया गया कि जो कोई इस महीने के शुरू होने का गवाह बने, उसे रोज़ा रखना चाहिए, ताकि यह आयत पिछले अनुमति को निरस्त कर दे, जिसमें स्वस्थ और निवासी व्यक्ति को रोज़ा छोड़ने और हर दिन के बदले एक गरीब को खाना खिलाने की अनुमति थी, जैसा कि पिछले आयत में बताया गया है।[1] फिर अल्लाह तआला ने मुसाफिर और बीमार को छूट दी: ﴿وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ﴾ (फिर यदि तुममें से कोई रोगी अथवा यात्रा पर हो, तो उसे दूसरे दिनों में गिनती पुरी करनी चाहिए) यह अल्लाह की करुणा और दया का प्रदर्शन है, जैसा कि पिछले आयत में स्पष्ट किया गया है, और यहाँ इसका पुनरावृत्ति इसके निरस्तीकरण के बाद इसे स्थापित करने के लिए है, ताकि यह संदेह न हो कि यह अन्य लोगों के साथ निरस्त हो गया है जो कठिनाई के साथ रोज़ा रख सकते हैं, और उनके पास रोज़ा रखने या इफ्तार और खाना खिलाने के बीच विकल्प है। जैसा कि पहले बताया गया था। फिर अल्लाह तआला बीमार और मुसाफिर को रोज़ा छोड़ने और उसे दूसरे दिनों के लिए स्थगित करने का कारण बताता है, जहां अल्लाह तआला कहता है: ﴿يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ﴾ (अल्लाह तुम्हारे लिए सुविधा चाहता है, तंगी (असुविधा) नहीं चाहता) यह उनकी दया और देखभाल का प्रतीक है, जिससे उन्होंने बीमार और मुसाफिर को स्थगन की अनुमति दी, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह तआला ने इस महान फर्ज और अन्य इबादतों को मुसलमानों पर कठिनाई और कठिनाई के लिए नहीं ठहराया है, बल्कि उन्होंने उनके लिए उन तरीकों को आसान बना दिया है जो उन्हें अल्लाह तआला की आज्ञाकारिता प्राप्त करने के लिए पहुँचाते हैं। और इस रोज़े के माध्यम से वे परहेजगारी प्राप्त करते हैं, जैसा कि अल्लाह तआला ने पिछले आयत में स्पष्ट किया है: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾ (हे ईमान वालो! तुमपर रोज़े उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं, जैसे तुमसे पूर्व के लोगों पर अनिवार्य किये गये, ताकि तुम अल्लाह से डरो)। फिक़्ह में क़ज़ा (रोज़ों की भरपाई) और बीमार और मुसाफिर की स्थितियों, यात्रा की अवधि और दूरी, और किन्हें रोज़ा रखना चाहिए और अन्य फिक़्ही मुद्दों पर विस्तृत विवरण है, जिन्हें तफ़सीर और फिक़्ह की किताबों में देखा जा सकता है।

फिर अल्लाह तआला ने बीमार और मुसाफ़िर के बारे में फ़रमाया: ﴿وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ﴾ (और (यह छूट दी गई है ताकि) तुम गिनती पूरी कर सको)। तो अल्लाह तआला ने स्पष्ट कर दिया कि सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह ने उन्हें उन दिनों की क़ज़ा पूरी करने का आदेश दिया है जो उन्होंने छोड़े थे, ताकि महीने के दिनों की गिनती पूरी हो सके ﴿وَمَن كَانَ مَرِيضًا

(1) पिछला संदर्भ।

﴿ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ ﴾ (फिर यदि तुममें से कोई रोगी अथवा यात्रा पर हो, तो उसे दूसरे दिनों में गिनती पुरी करनी चाहिए। अल्लाह तुम्हारे लिए सुविधा चाहता है, तंगी (असुविधा) नहीं चाहता और चाहता है कि तुम गिनती पूरी करो) फिर अल्लाह तआला ने उन्हें तकबीर (अल्लाह की बड़ाई बयान करने) की हिदायत दी, जो अल्लाह का शुक्र और आभार व्यक्त करने का एक तरीक़ा है कि उन्होंने इस इबादत की हिदायत दी और इसे अदा करने की तौफ़ीक़ बख़्शी ﴿ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴾ (तथा इस बातपर अल्लाह की महिमा का वर्णन करो कि उसने तुम्हें मार्गदर्शन दिया और (इस प्रकार) तुम उसके कृतज्ञ बन सको) इसमें रमज़ान मास के अंत में तकबीर कहने की प्रेरणा दी गई है, जैसा कि अधिकतर मुफस्सिरीन (तफ़सीर के विद्वानों) का मत है। इब्न -ए- अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने फ़रमाया: "मुसलमानों पर यह हक़ है कि जब वे शव्वाल का चांद देखें तो तकबीर कहें।" उनसे यह भी वर्णित है: "व्यक्ति चांद देखने से लेकर ख़ुत्बा समाप्त होने तक तकबीर कहे।"[1] यह इस बात का प्रमाण है कि रोज़ा अल्लाह तआला की एक नेमत (अनुग्रह) है, जिसके लिए बंदे पर अल्लाह का शुक्र अदा करना वाजिब है। वास्तव में, हर इबादत अल्लाह की एक महान नेमत है, जो शुक्र की हक़दार है, और इसका आरंभ तकबीर से करना चाहिए। यह तकबीर भी अल्लाह का ज़िक्र और शुक्र अदा करने की एक निशानी है।

﴿ وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾ ﴾ [سورة البقرة:١٨٦]

((हे नबी!) जब मेरे भक्त मेरे विषय में आपसे प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय मैं समीप हूँ। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ। अतः, उन्हें भी चाहिये कि मेरे आज्ञाकारी बनें तथा मुझपर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वे सीधी राह पायें)।

फिर क़ुरआन का संदर्भ अल्लाह तआला के क़रीब या दूर होने के बारे में पूछे गए सवाल के उत्तर की ओर बढ़ता है। एक बद्दु (देहाती) ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा: "क्या हमारा रब क़रीब है कि हम उससे धीमे स्वर में बात करें, या दूर है कि हम ऊँची आवाज़ में पुकारें?" नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुप रहे। तब अल्लाह ने यह आयत उतारी: ﴿ وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾ ﴾ ((हे नबी!) जब मेरे भक्त मेरे विषय में आपसे प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 204)।

निश्चय मैं समीप हूँ। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ। अतः, उन्हें भी चाहिये कि मेरे आज्ञाकारी बनें तथा मुझपर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वे सीधी राह पायें)। यह एक महान आयत है और एक सच्चा सवाल है, जिसका करने वाला अपने रब की क़रीबी और दूरी के बारे में इल्म और पहचान चाहता था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (जो अपनी इच्छा से कुछ नहीं कहते) का ठहर जाना और फिर अल्लाह रहमान का इस सवाल का शानदार उत्तर देना इस आयत की महानता को दर्शाता है। अल्लाह तआला अपने बंदों के क़रीब है, वह उनकी बात सुनता है, उनके राज़ और गुप्त बातें तक सुनता है। वह उनकी हालत और उनके उठने-बैठने को जानता है। अल्लाह तआला की क़रीबी उसके शान और उसकी महानता के अनुरूप है, जो उसकी मख़लूक (सृष्टि) की क़रीबी जैसी नहीं है। उसकी क़ुदरत मख़लूक की क़ुदरत जैसी नहीं है, बल्कि वह उनकी क़ुदरत का स्रष्टा है। यह आयत इस बात का इल्म देती है कि अल्लाह तआला अपने ज्ञान, शक्ति और क़ुदरत में क़रीब है। जैसा कि उसने फ़रमाया: ﴿وَنَحۡنُ أَقۡرَبُ إِلَيۡهِ مِنۡ حَبۡلِ ٱلۡوَرِيدِ﴾ (हम तो उसकी गर्दन की रग से भी ज़्यादा क़रीब हैं।) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "ऐ लोगो! अपने आपको संभालो, तुम बहरे या अनुपस्थित को नहीं पुकार रहे हो। बल्कि तुम उसे पुकार रहे हो जो सुनने वाला और देखने वाला है। वह तो तुमसे तुम्हारी सवारी की गर्दन से भी ज़्यादा क़रीब है।"[1] यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक ग़ज़वा (युद्ध अभियान) के दौरान फ़रमाया, जब सहाबा ऊँची आवाज़ में तकबीर कह रहे थे। इस बयान से यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह अपने बंदे के उसके खुद के नफ़्स (आत्मा) से भी ज़्यादा क़रीब है।

इस आयत से यह शिक्षा मिलती है कि अल्लाह से दुआ और संवाद में अदब होना चाहिए। दुआ करने वाला यह विश्वास रखे कि अल्लाह उसके गुप्त और स्पष्ट हर बात को सुन रहा है। दुआ में अपनी आवाज़ को ऊँचा न करे और यह यक़ीन रखे कि अल्लाह तआला उसकी दुआ क़बूल करेगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿أُجِيبُ دَعۡوَةَ ٱلدَّاعِ إِذَا دَعَانِۖ﴾ (मैं दुआ करने वाले की दुआ क़ुबूल करता हूँ, जब वह मुझे पुकारता है।)

इसलिए बंदे को चाहिए कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करे, उसकी निषेध बातों से बचे, और उसकी पसंदीदा बातों में मेहनत करे। ﴿فَلۡيَسۡتَجِيبُواْ لِي وَلۡيُؤۡمِنُواْ بِي لَعَلَّهُمۡ يَرۡشُدُونَ﴾ (तो चाहिए कि वे मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान लाएँ ताकि वे मार्गदर्शन पाएँ।)

"रुश्द" (मार्गदर्शन) "ग़ैइ" (गुमराही) का विलोम है। इसका अर्थ है चीज़ को सही जगह पर रखना, आख़िरत को दुनिया पर प्राथमिकता देना, और सही मार्ग को पहचान कर उस पर

(1) मज्मूअ अल् फ़तावा, लेखकः इब्न -ए- तैमिय्या (17/ 15)।

चलना। यह भी कि ग़लत रास्ते को पहचान कर उससे बचना। इस रब्बानी मार्गदर्शन ﴿ فَلۡيَسۡتَجِيبُواْ لِي وَلۡيُؤۡمِنُواْ بِي لَعَلَّهُمۡ يَرۡشُدُونَ ﴾ से यह शिक्षा मिलती है कि पूर्ण मार्गदर्शन अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज्ञा का पालन करने और अल्लाह तथा उन चीज़ों पर ईमान लाने से प्राप्त होता है, जिन पर ईमान लाने का अल्लाह ने आदेश दिया है।

﴿أُحِلَّ لَكُمۡ لَيۡلَةَ ٱلصِّيَامِ ٱلرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَآئِكُمۡۚ هُنَّ لِبَاسٞ لَّكُمۡ وَأَنتُمۡ لِبَاسٞ لَّهُنَّۗ عَلِمَ ٱللَّهُ أَنَّكُمۡ كُنتُمۡ تَخۡتَانُونَ أَنفُسَكُمۡ فَتَابَ عَلَيۡكُمۡ وَعَفَا عَنكُمۡۖ فَٱلۡـَٰٔنَ بَٰشِرُوهُنَّ وَٱبۡتَغُواْ مَا كَتَبَ ٱللَّهُ لَكُمۡۚ وَكُلُواْ وَٱشۡرَبُواْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ ٱلۡخَيۡطُ ٱلۡأَبۡيَضُ مِنَ ٱلۡخَيۡطِ ٱلۡأَسۡوَدِ مِنَ ٱلۡفَجۡرِۖ ثُمَّ أَتِمُّواْ ٱلصِّيَامَ إِلَى ٱلَّيۡلِۚ وَلَا تُبَٰشِرُوهُنَّ وَأَنتُمۡ عَٰكِفُونَ فِي ٱلۡمَسَٰجِدِۗ تِلۡكَ حُدُودُ ٱللَّهِ فَلَا تَقۡرَبُوهَاۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ ءَايَٰتِهِۦ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمۡ يَتَّقُونَ ١٨٧﴾ [سورة البقرة:١٨٧]

(तुम्हारे लिए रोज़े की रात में अपनी स्त्रियों से सहवास ह़लाल (उचित) कर दिया गया है, वे तुम्हारा वस्त्र हैं तथा तुम उनका वस्त्र हो, अल्लाह को ज्ञान हो गया है कि तुम अपना उपभोग कर रहे थे। उसने तुम्हारी तौबा (क्षमा याचना) स्वीकार कर ली तथा तुम्हें क्षमा कर दिया। अब उनसे (रात्रि में) सहवास करो और अल्लाह के (अपने भाग्य में) लिखे की खोज करो और रात्रि में खाओ तथा पिओ, यहाँ तक की भोर की सफेद धारी रात की काली धारी से उजागर हो जाये, फिर रोज़े को रात्रि (सूर्यास्त) तक पूरा करो और उनसे सहवास न करो, जब मस्जिदों में ऐतिकाफ़ (एकान्तवास) में रहो। ये अल्लाह की सीमायें हैं, इनके समीप भी न जाओ। इसी प्रकार अल्लाह लोगों के लिए अपनी आयतों को उजागर करता है, ताकि वे (उनके उल्लंघन से) बचें)।

फिर क़ुरआन का संदर्भ रोज़े की विधि पर वापस आता है, उस आयत के बाद जो अल्लाह तआला की निकटता के विषय में पूछे गए सवाल का उत्तर देती है। रोज़े की आयतों के बीच इस अंतराल का लाभ यह है कि वह इस विषय पर ध्यान आकर्षित करता है और इसके बाद की आयतों के लिए उत्सुकता पैदा करता है, जो रोज़ेदारों पर अल्लाह रहमान-रहीम की कृपा को प्रकट करती हैं। इन आयतों में खाने-पीने और अपनी पत्नी से संबंध रखने के समय को बढ़ाने का वर्णन है। पहले रोज़े की अनिवार्यता में, इफ़्तार का समय रात की नमाज़ (इशा) या सोने तक सीमित था। जब व्यक्ति सो जाता या इशा की नमाज़ पढ़ लेता, तो उसे अगले दिन की रात तक खाना-पीना और पत्नी से संबंध रखना ह़राम हो जाता। इससे मुसलमानों को बहुत कठिनाई होती थी।(1) फिर अल्लाह ने उनकी सुविधा के लिए इसे विस्तारित कर दिया, जैसा

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 226)।

कि उसने फ़रमाया: ﴿أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ ٱلصِّيَامِ ٱلرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَآئِكُمْ﴾ यह (रोज़े की रातों में) अपनी पत्नियों के पास जाने (संभोग) की बात है। और इस के अलावा जो कुछ भी इससे कम है, वह भी हलाल (अनुमेय) है। क्योंकि किसी बड़ी चीज़ की अनुमति देना इस बात का संकेत है कि उससे कम चीज़ भी सम्मिलित है। फिर अल्लाह तआला पति और पत्नी के रिश्ते की विशेषता का वर्णन करता हैः ﴿هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ﴾ (वे तुम्हारा वस्त्र हैं तथा तुम उनका वस्त्र हो) वे तुम्हारे लिए सुकून हैं और तुम उनके लिए सुकून हो। यह विशेषता अल्लाह तआला ने पति-पत्नी के बीच रखी है।

यह दर्शाता है कि मानसिक सुकून की नेमत दोनों पक्षों के बीच परस्पर है। इसमें किसी का दूसरे पर कोई विशेषाधिकार नहीं है, बल्कि दोनों इसे एक-दूसरे को प्रदान करने में समान हैं। "لِبَاسٌ वस्त्र" का मतलब है ढकना, छुपाना, निकटता और संपर्क, क्योंकि वस्त्र शरीर के संपर्क में होता है। यदि इंसान इन अर्थों को समझे और उनसे शिक्षा ले, तो पति-पत्नी एक-दूसरे के लिए इन अर्थों के समान होंगे, इसे जीवन में वास्तविकता में ढालने के लिए।

फिर अल्लाह तआला ने उस कठिनाई को स्पष्ट किया जो मुसलमानों को इफ्तार के कम समय होने के कारण हो रही थी, और वे अपने आप को धोखा दे रहे थे, जो संबंध बनाने या खाने से हो सकता था। इसलिए अल्लाह ने उनसे यह बोझ हटा दिया, जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा: ﴿عَلِمَ ٱللَّهُ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَخْتَانُونَ أَنفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنكُمْ﴾ (अल्लाह ने जान लिया कि तुम अपने आप को धोखा दे रहे थे, इसलिए उसने तुम्हें माफ कर दिया और तुमसे दरगुज़र किया)। यह अल्लाह की रहमत और उदारता का प्रतीक है।

अल्लाह तआला के इस कथन: ﴿عَلِمَ ٱللَّهُ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَخْتَانُونَ أَنفُسَكُمْ﴾ में यह दर्शाया गया है कि अल्लाह तआला इंसान के कृत्यों को जानता है। और चूंकि यह बात बहुवचन में कही गई है, इससे उस व्यक्ति का बोझ हल्का हो जाता है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आकर खाने, पीने या सहवास के बारे में शिकायत करता है, और वह सोचता है कि इस संदर्भ में शायद दूसरों से भी वही हुआ हो जो उससे हुआ है।

यह इस बात को दर्शाता है कि किसी गलती को सुधारने और सही दिशा में मार्गदर्शन के समय संयम और बुद्धिमत्ता का पालन करना चाहिए। जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का तरीका था कि जब वह किसी को समझाते तो बात को सामान्य रूप में प्रस्तुत करते। उम्मुल-मोमिनीन आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) कहती हैं: “जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को किसी व्यक्ति के बारे में कोई बात पहुंचती, तो वह यह नहीं कहते कि अमुक

व्यक्ति ऐसा क्यों कह रहा है? बल्कि कहते, लोगों को क्या हो गया है कि वे ऐसा-ऐसा बोल रहे हैं?"।[1]

इसके बाद अल्लाह तआला अपनी दया और क्षमा को स्पष्ट करता है: ﴿فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنكُمْ﴾ (उसने तुम्हारी तौबा (क्षमा याचना) स्वीकार कर ली तथा तुम्हें क्षमा कर दिया) अर्थात न केवल तौबा स्वीकार की बल्कि उस पर जो कुछ हुआ उसे क्षमा कर दिया, जैसे कि वह घटना हुई ही न हो। अत: अल्लाह बहुत क्षमाशील और अत्यंत दयालु है। फिर स्पष्ट रूप से अनुमति दी: ﴿فَالْآنَ بَاشِرُوهُنَّ﴾ (तो अब अपनी पत्नियों से सहवास करो), और इस सहवास को एक उद्देश्य से जोड़ा: ﴿وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ﴾ (और अल्लाह के (अपने भाग्य में) लिखे की खोज करो) अर्थात संतान। संतान प्राप्ति के लिए इस संबंध को स्थापित करो। यह इस ओर संकेत है कि जो आनंद पति-पत्नी को मिलता है, उसका उद्देश्य संतान उत्पन्न करना भी होना चाहिए। अतः अल्लाह का शुक्र है, जिसने अपने बंदों को इन अनेक नेमतों से नवाज़ा है, उनके लिए सहूलियत, सुविधा, सरलता और शिक्षा प्रदान करके। और ध्यान रहे कि "संतान" शब्द में पुत्र और पुत्री दोनों शामिल होते हैं।

इसके बाद और भी स्पष्टता और संभावनाओं को समाप्त करने के लिए बयान किया गया कि यह रियायत भोजन और पेय दोनों को शामिल करती है: ﴿وَكُلُوا وَاشْرَبُوا﴾ "खाओ और पियो," और फिर यह अवधि बताई गई जब यह रियायत समाप्त हो जाती है: ﴿حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ﴾ "यहाँ तक कि तुम्हारे लिए भोर का सफेद धागा काले धागे से अलग दिखने लगे," अर्थात भोर का उजाला रात के अंधेरे से अलग दिखने लगे। यह क़ुरआन के सटीक वर्णन में से एक है, जिसमें रोज़े की शुरुआत का समय निश्चित किया गया है ताकि यह अपरिवर्तित और स्थिर रहे। यह समय भोर है, जिसे रात के अंधेरे से दिन के उजाले के स्पष्ट होने से पहचाना जाता है। इसके बाद रोज़ा सूर्यास्त तक जारी रहता है: ﴿ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ﴾ "फिर रोज़े को रात तक पूरा करो," अर्थात सूर्यास्त तक।

इसके बाद उस संभोग की ओर ध्यान आकृष्ट कराया गया है जो एतकाफ़ करने वाले व्यक्ति के लिए वर्जित, क्योंकि यह स्वेच्छा से अंजाम दी जाने वाली महान उपासना है, जोकि एतकाफ़ है: ﴿وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ﴾ "और अपनी पत्नियों से सहवास न करो जब तुम मस्जिदों में एतिकाफ़ (ध्यान और साधना) में हो, रोज़ेदारों को रात्रि में अपनी पत्नी से संभोग करने की जो छूट दी गई है, उस छूट से एतिकाफ़ करने वालों को अलग करने हेतु यह

(1) अबू दावूद (5/ 143) हदीस़ संख्या (4788)।

आदेश आया है, क्योंकि एतिकाफ़ करने वाला दिन एवं रात कभी भी सहवास नहीं कर सकता, रात को मना इसलिए है क्योंकि वे इतिकाफ में होते हैं, और दिन में इसलिए क्योंकि वे रोज़े में होते हैं फिर एतकाफ की स्थिति में भी होते हैं। एतिकाफ़ का अर्थ है अल्लाह की उपासना के लिए मस्जिद में ठहरना।

फिर अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿تِلۡكَ حُدُودُ ٱللَّهِ فَلَا تَقۡرَبُوهَاۗ﴾ "ये अल्लाह की सीमाएँ हैं, इनके पास भी न जाओ," अर्थात ये आदेश और निषेध अल्लाह की ओर से निश्चित सीमाएँ हैं, जिनका उल्लंघन न करो। शब्द " تِلۡكَ ये" इन आदेशों और निषेधों की ओर इशारा करता है। और "सीमाएँ" ऐसे अवरोध हैं जो किसी चीज़ को अंदर जाने से रोकते हैं जो इसमें शामिल नहीं है, और बाहर निकलने से भी रोकते हैं जो इसमें शामिल है। सीमाओं के उल्लंघन को पापों के संदर्भ में भी समझा जा सकता है, क्योंकि वे अपने करने वालों को इसी प्रकार के अन्य पापों से रोकते हैं।(1)

इससे अल्लाह की सीमाओं का सम्मान करना और नई पीढ़ी को इस पर प्रशिक्षित करना अनिवार्य बनता है, ताकि वे इन सीमाओं का सम्मान करना सीखें। यह आत्मा को अल्लाह की सीमाओं पर ठहरने और उन्हें न पार करने की आदत डालने के महत्व को दर्शाता है।

शब्द " فَلَا تَقۡرَبُوهَاۗ उनके निकट न जाओ" इस बात का संकेत और मतलब देता है कि उनके निकट न जाओ, ताकि तुम उन्हें पार न कर सको और न उनमें प्रवेश कर सको, यद्यपि इसका मतलब उन्हें पार न करना है, लेकिन इसे निकटता के निषेध के शब्द से मना करना इस बात का संकेत देता है कि किसी भी चीज से दूरी बना लो जो इसे पार करने में मदद करती है।

इससे यह भी सीखा जाता है कि मुसलमान को इस आयत को अपने हर इच्छाओं और विकारों का सामना करने के लिए एक शक्ति के रूप में मानना चाहिए। यदि कोई पाप उसे घेर लेता है, तो उसे अपने आप से कहना चाहिए: ﴿تِلۡكَ حُدُودُ ٱللَّهِ فَلَا تَقۡرَبُوهَاۗ﴾ "यह अल्लाह की सीमाएँ हैं, इनके निकट न जाओ"। यदि आत्मा उसे किसी आदेश का उल्लंघन करने के लिए प्रेरित करती है, तो उसे इससे रोकने के लिए कहना चाहिए: ﴿تِلۡكَ حُدُودُ ٱللَّهِ فَلَا تَقۡرَبُوهَاۗ﴾ "यह अल्लाह की सीमाएँ हैं, इनके निकट न जाओ"। यदि शैतान उसे अल्लाह की सीमाओं के निकट जाने के लिए प्रेरित करता है, तो उसे इस आयत के शब्दों से मजबूती प्राप्त करनी चाहिए: ﴿تِلۡكَ

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 225)।

﴿ حُدُودُ ٱللَّهِ فَلَا تَقۡرَبُوهَاۗ ﴾ "यह अल्लाह की सीमाएँ हैं, इनके निकट न जाओ"। यह एक मोमिन के लिए एक शक्ति है यदि वह इसे अपने जीवन में समझे।

फिर आयत अल्लाह के इस कथन पर समाप्त होती है: ﴿كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ ءَايَٰتِهِۦ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمۡ يَتَّقُونَ ١٨٧﴾ "इसी तरह अल्लाह अपनी आयतों को लोगों के लिए स्पष्ट करता है ताकि वे परहेजगार बन सकें"। जैसे अल्लाह ने इन सीमाओं को स्पष्ट किया, वैसे ही उन्होंने इससे संबंधित सभी आदेशों को भी स्पष्ट किया है, ताकि वे इन्हें न पार करें, और यह जान सकें कि कैसे हिदायत प्राप्त करें, और कैसे अल्लाह के आदेशों का पालन करें और उनकी सीमाओं को पार न करें। ताकि वे अल्लाह के आदेशों और निषेधाज्ञाओं के पालन से परहेजगारी प्राप्त कर सकें। यह दर्शाता है कि जो कोई अल्लाह की सीमाओं का सम्मान करता है, उसे अल्लाह तआला परहेजगारी प्रदान करते हैं, और निःसंदेह वह इससे बड़ी भलाई प्राप्त करेगा।

﴿وَلَا تَأۡكُلُوٓاْ أَمۡوَٰلَكُم بَيۡنَكُم بِٱلۡبَٰطِلِ وَتُدۡلُواْ بِهَآ إِلَى ٱلۡحُكَّامِ لِتَأۡكُلُواْ فَرِيقٗا مِّنۡ أَمۡوَٰلِ ٱلنَّاسِ بِٱلۡإِثۡمِ وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ١٨٨﴾ [سورة البقرة:١٨٨]

(तथा आपस में एक-दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ और न अधिकारियों के पास उसे इस धेय से ले जाओ कि लोगों के धन का कोई भाग, जान-बूझ कर पाप द्वारा खा जाओ)।

यह आयत इस निर्देश के साथ शुरू होती है: ﴿وَلَا تَأۡكُلُوٓاْ أَمۡوَٰلَكُم بَيۡنَكُم بِٱلۡبَٰطِلِ﴾ (तथा आपस में एक-दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ) इसमें नाजायज़ तरीके से संपत्तियों को लेने, आदान-प्रदान करने और हस्तांतरित करने से मना किया गया है। "बातिल" का मतलब है जो सत्य और न्याय के विपरीत हो।

इसमें संपत्ति के इस भ्रष्ट तरीके से उपयोग को भोजन करने के रूप में व्यक्त किया गया है: ﴿وَلَا تَأۡكُلُوٓاْ أَمۡوَٰلَكُم﴾ उसे लेने का इस्तेमाल भोजन या किसी अन्य चीज़ के लिए किया जा सकता है, लेकिन अल्लाह ने इसे इस भ्रष्ट तरीके से लेने को भोजन के रूप में माना है, जो अधिक निंदनीय है। इसे लेने और उपयोग करने का कोई भी तरीका हो, इसे अनुचित तरीके से खाना माना जाता है, और इसे भोजन के रूप में चित्रित करना इसे निंदनीय बनाता है, और ईमानदार आत्मा के लिए इसे अस्वीकार्य बनाता है।

शब्द "﴿بَيۡنَكُم﴾ आपस में" का उपयोग इस बात का संकेत देता है कि यह गतिविधि सामाजिक रूप से अस्वीकार्य है। तथा शब्द "﴿بِٱلۡبَٰطِلِ﴾ नाजायज़" सभी प्रकार की अवैध विधियों को संदर्भित करता है, जैसे धोखाधड़ी, जुआ, रिश्वत, सूद, बिना काम के मजदूरी लेना,

या जिसने काम पूरा किया है उसे पूरी मजदूरी न देना। अनुचित कार्यों के तरीके अनगिनत हो सकते हैं। लेकिन एक शब्द ने सभी प्रकार की भ्रष्ट विधियों को समेट लिया है, वह है माल को "بِٱلۡبَٰطِلِ" न खाने का निषेध। इस शब्द ने सभी प्रकार के लेन-देन को समेट लिया है जो अल्लाह ने व्यापार, लेन-देन और अवैध लेन-देन में निषेध किया है। यह क़ुरआन की महान अभिव्यक्ति और वाक्पटुता का एक उदाहरण है।

इसमें एक व्यापक और अवरोधक नियम की स्थापना है, बिना अवैध तरीकों के नामकरण या निर्दिष्ट किए। यह भविष्य में होने वाले अवैध तरीकों और विधियों को समेटने की क्षमता दिखाता है। इसमें एक उच्च नैतिक और फिक्ही मूल्य है, जो इसके अवैध तरीकों को समेटने की क्षमता को दिखाता है। यह शरीअत की नैतिक, फिक्ही और वैचारिक महानता का प्रमाण है, और क़ुरआन के बहुआयामी अभिज्ञान का भी एक प्रमाण है, जिसमें सभी प्रकार के तरीकों और विधियों को समेटा गया है। यह अल्लाह की ओर से एक महान और जलील मार्गदर्शक नियम है। इस निषेध में जो निषेध का प्रभाव है, वह यह भी स्पष्ट करता है कि धर्म के उद्देश्य सामाजिक भ्रष्टाचार को खत्म करने और जरूरतों का शोषण करने वाली परिस्थितियों को समाप्त करने के लिए हैं।

फिर अल्लाह कहता है: ﴿وَتُدۡلُواْ بِهَآ إِلَى ٱلۡحُكَّامِ﴾ "और उन्हें न्यायाधीशों को न सौंपो"। यह अनुचित तरीके से संपत्ति खाने का एक प्रकार स्पष्ट करता है, न्यायाधीशों को रिश्वत और चालाकी से संपत्ति प्राप्त करने के लिए देना: ﴿وَتُدۡلُواْ بِهَآ إِلَى ٱلۡحُكَّامِ لِتَأۡكُلُواْ فَرِيقٗا مِّنۡ أَمۡوَٰلِ ٱلنَّاسِ بِٱلۡإِثۡمِ وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ﴾ (और न अधिकारियों के पास उसे इस धेय से ले जाओ कि लोगों के धन का कोई भाग, जान-बूझ कर पाप द्वारा खा जाओ) इससे यह भी स्पष्ट होता है कि मनुष्य से अन्याय और झूठ के माध्यम से दूसरे की संपत्ति अनुचित तरीके से खाने के लिए क्या हो सकता है, जबकि वह जानता है कि वह गलत है, तो वह इसे पाप के साथ खाता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि शरीअत ने संपत्ति के लेन-देन या लेने को न्यायाधीश के निर्णय पर आधारित नहीं किया है, जिसे कुछ सबूतों से अंधेरा किया जा सकता है, और वह अन्यायकारी के पक्ष में निर्णय कर सकता है, बल्कि इसने इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात पर ध्यान दिया है, वह है आत्मा की जिम्मेदारी, उसे पाप और अल्लाह के दंड से डराकर।

﴿۞ يَسۡـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلۡأَهِلَّةِۖ قُلۡ هِيَ مَوَٰقِيتُ لِلنَّاسِ وَٱلۡحَجِّۗ وَلَيۡسَ ٱلۡبِرُّ بِأَن تَأۡتُواْ ٱلۡبُيُوتَ مِن ظُهُورِهَا وَلَٰكِنَّ ٱلۡبِرَّ مَنِ ٱتَّقَىٰۗ وَأۡتُواْ ٱلۡبُيُوتَ مِنۡ أَبۡوَٰبِهَاۚ وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ ١٨٩﴾ [سورة البقرة:١٨٩]

((हे नबी!) लोग आपसे चंद्रमा के (घटने-बढ़ने) के विषय में प्रश्न करते हैं? तो आप कह दें, इससे लोगों को तिथियों के निर्धारण तथा ह़ज के समय का ज्ञान होता है और ये कोई भलाई नहीं है कि घरों में उनके पीछे से प्रवेश करो, परन्तु भलाई तो अल्लाह की अवज्ञा से बचने में है। घरों में उनके द्वारों से आओ तथा अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ)।

फिर क़ुरआन का प्रसंग उस प्रश्न का उत्तर देने की ओर बढ़ता है, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा गया था। यह प्रश्न चाँद के बारे में था, कि वह पहले छोटा दिखाई देता है, फिर धीरे-धीरे बढ़ता है जब तक कि पूर्णिमा का चाँद न बन जाए, फिर धीरे-धीरे घटता है जब तक कि पूरी तरह लुप्त न हो जाए। यह चक्र हर तीस या उन्तीस दिनों में दोहराया जाता है।

इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी: ﴿يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلْأَهِلَّةِ﴾ ((हे नबी!) लोग आपसे चंद्रमा के (घटने-बढ़ने) के विषय में प्रश्न करते हैं?) यह दर्शाता है कि क़ुरआन को क्रमवार उतारने के फायदों में से एक यह है कि यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछे गए कई प्रश्नों के उत्तर देता है।

फिर उत्तर में अल्लाह कहता है: ﴿قُلْ هِىَ مَوَٰقِيتُ لِلنَّاسِ وَٱلْحَجِّ﴾ (तो आप कह दें, इससे लोगों को तिथियों के निर्धारण तथा ह़ज के समय का ज्ञान होता है) शब्द " مَوَٰقِيتُ समयचक्र" में अनेक लाभ हैं, सभी लोगों के लिए, मुसलमान और काफिर दोनों के लिए, क्योंकि वे सब चांद्र समयचक्र से लाभान्वित होते हैं, और मुसलमान इनसे अपनी इबादत के समय निर्धारित करते हैं। ये इबादत के समयचक्र हैं जैसे रोज़ा, ज़कात, अनुबंध, ऋण, समय-सारिणी, और जो कुछ भी लोग अपने कार्यों में समय और समय पर सहमति करते हैं, और उनकी अनगिनत जरूरतों के लिए। यह इस एक वाक्य में महान लाभ निहित है। इसी तरह " مَوَٰقِيتُ समयचक्र" शब्द ने पीढ़ियों और समयों को समेट लिया है, और जो लोग अपने बीच सहमति बनाते हैं, जैसे ऋणों का भुगतान, विभिन्न समय-सारिणी अपने विभिन्न उद्देश्यों के साथ, और इबादतों के समयचक्र भी। " لِلنَّاسِ लोगों" शब्द ने सभी बंदों, मुसलमान और काफिर दोनों को समेट लिया है। यह अल्लाह की आम लाभों में से एक है। व्यक्ति को इस कुरआनी अभिव्यक्ति की महत्ता और उसमें मौजूद उच्च वाक्पटुता और विस्तृत ब्यौरा पर ध्यान देना चाहिए।

फिर अल्लाह ने समयचक्र के लाभों में से (وَٱلْحَجِّ हज) के समय को विशेष किया है, इसमें इसे इबादत के लिए एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया, जो चांद्र समयचक्र पर आधारित है। और इसी तरह हज के साथ संबंध को स्पष्ट करने के लिए, जहाँ अल्लाह ने एक अनुचित धार्मिक विश्वास को सही किया, जो उन लोगों के बीच था जिन्होंने अज्ञानता के समय

में हज के लिए एहराम बांधा था। अल्लाह ने इसे नकारात्मक रूप में शुरू करके, कहा: ﴿وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَن تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِن ظُهُورِهَا﴾ "यह धर्म नहीं कि तुम घरों में उनकी पीठ की ओर से प्रवेश करो"।

और (जाहिलिय्यत) अज्ञानता के समय में जब अंसार के लोग हज या उमरा के लिए एहराम बांधते, और अपने घर से बाहर जाते, फिर वह किसी आवश्यकता के लिए घर वापस आना चाहते थे, तो वह दरवाजे से प्रवेश नहीं करते थे, बल्कि दीवार पर चढ़कर घर की पीठ की ओर से प्रवेश करते थे, ताकि उनके और आसमान के बीच कोई अवरोध न हो।(1) क्योंकि दरवाजे में एक अवरोध होता है जिसके नीचे से प्रवेश किया जाता है। वे मानते थे कि दरवाजे के अवरोध के नीचे से न गुजरना अल्लाह की आज्ञाकारिता और भक्ति है। अल्लाह, रहमान और रहीम ने इस प्रथा या विश्वास को नकारात्मक रूप में नकार दिया और इस गलतफहमी को समाप्त किया, ताकि इसका स्थान सच्चे ज्ञान और अल्लाह के शरीअत द्वारा निर्धारित सही मार्गदर्शन ले सके: ﴿وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَىٰ﴾ (परन्तु भलाई तो अल्लाह की अवज्ञा से बचने में है) अल्लाह ने स्पष्ट किया कि सच्ची भक्ति अल्लाह की परहेजगारी में है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि नवाचार, भले ही धार्मिक उद्देश्यों के लिए हो, सत्य से हटा हुआ है, और यह सत्य और भक्ति नहीं है। सच्ची भक्ति अल्लाह की परहेजगारी में है, जो उसके आदेशों का पालन करते हुए, उसके निर्धारित शरीअत के अनुसार, बिना किसी वृद्धि या कमी के, और उससे विचलित न हो। फिर अल्लाह सही कार्य का आदेश देता है: ﴿وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا﴾ (घरों में उनके द्वारों से आओ) इसका मतलब यह भी है कि इस्लाम की पद्धति एक उच्च नैतिक पद्धति है, और यह कठिनाई और कड़ेपन पर आधारित नहीं है, बल्कि सरलता और कोमलता पर आधारित है।

इस प्रकार, इस आयत में अन्य उपासनाओं के मध्य ह़ज्ज का उल्लेख करने का कारण और उद्देश्य स्पष्ट होता है, जैसा कि इमाम क़ुर्तुबी रह़िमहुल्लाह ने बताया है: "यह हज के समय निर्धारण से जुड़ा हुआ है, जैसे घरों में प्रवेश के लिए पीछे से आना। यह दोनों मुद्दे चाँद के दिखने और घरों में प्रवेश से संबंधित प्रश्न में एक साथ आते हैं।"(2) इसके बाद, अल्लाह तआला इस आयत के अंत में (تقوى तक़वा) का आदेश देता है: ﴿وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ١٨٩﴾ (तथा अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ) यह दर्शाता है कि अल्लाह से डरने वाला व्यक्ति सफलता, उन्नति और सुरक्षा की ओर बढ़ता है। यह मुसलमानों को अपनी और

---

(2) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 230)।

(1) पिछला संदर्भ।

दूसरों की तौक़ी पर शिक्षित करने का मार्गदर्शन देता है, क्योंकि यह सार्वजनिक और व्यक्तिगत आचरण की व्यवस्था करता है।

इस आयत से यह भी समझ में आता है कि इस्लाम में तद्रीज (क्रमिक सुधार) का महत्व है, जैसे पहले ग़लत सोच और समझ को दूर किया गया (उदाहरण के लिए, ﴿وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَن تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِن ظُهُورِهَا﴾ "नेकी यह नहीं कि तुम घरों में उनके पिछले हिस्से से प्रवेश करो") फिर सही ज्ञान और मार्गदर्शन दिया गया ("लेकिन नेकी यह है कि जो अल्लाह से डरे") और इसके बाद सही आचरण को सुधारने का निर्देश दिया गया (﴿وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَىٰ﴾ "और घरों में उनके दरवाज़ों से प्रवेश करो") फिर विचार और समझ को ठीक करने के बाद व्यवहार को ठीक किया: (﴿وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا﴾ "और घरों में उनके दरवाजों से प्रवेश करो")। फिर इसके बाद आदेश के अनुसार बदलाव और कार्य करने की प्रेरणादायक नसीहत आई: (﴿وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾ "अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम सफल हो सको")। इस प्रकार, इस आयत ने उपचार, सुधार और शिक्षा में एक सटीक वैज्ञानिक और शिक्षात्मक पद्धति प्रस्तुत की है।

﴿وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُم مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ فَإِن قَاتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿١٩١﴾ فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٢﴾ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ ۖ فَإِنِ انتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٩٣﴾ الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَاتُ قِصَاصٌ ۚ فَمَنِ اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩٤﴾ وَأَنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَأَحْسِنُوا ۛ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٩٥﴾﴾ [سورة البقرة:١٩٠-١٩٥].

(तथा अल्लाह की राह में, उनसे युध्द करो, जो तुमसे युध्द करते हों और अत्याचार न करो, अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता। और उन्हें हत करो, जहाँ पाओ और उन्हें निकालो, जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है, इसलिए कि फ़ितना (उपद्रव), हत करने से भी बुरा है और उनसे मस्जिदे ह़राम के पास युध्द न करो, जब तक वे तुमसे वहाँ युध्द न करें। परन्तु, यदि वे तुमसे युध्द करें, तो उनकी हत्या करो, यही काफ़िरों का बदला है। फिर यदि वे (आक्रमण करने से) रुक जायें, तो अल्लाह अति क्षमी, दयावान् है। तथा उनसे युध्द करो, यहाँ तक कि

फ़ितना न रह जाये और धर्म केवल अल्लाह के लिए रह जाये, फिर यदि वे रुक जायें, तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी और पर अत्याचार नहीं करना चाहिए। सम्मानित मास, सम्मानित मास के बदले है और सम्मानित विषयों में बराबरी है। अतः, जो तुमपर अतिक्रमण (अत्याचार) करे, तो तुम भी उसपर उसी के समान (अतिक्रमण) करो तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो और जान लो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है। तथा अल्लाह की राह (जिहाद) में धन ख़र्च करो और अपने-आपको विनाश में न डालो तथा उपकार करो, निश्चय अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है)।

इस आयत में संबोधन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और मोमिनों के लिए है, जिसमें बहुवचन और आदेश का उपयोग किया गया है: ﴿وَقَٰتِلُواْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ ٱلَّذِينَ يُقَٰتِلُونَكُمۡ وَلَا تَعۡتَدُوٓاْۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُحِبُّ ٱلۡمُعۡتَدِينَ ١٩٠﴾ (तथा अल्लाह की राह में, उनसे युध्द करो, जो तुमसे युध्द करते हों और अत्याचार न करो, अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता) अल्लाह तआला ने पहली आयत में जिहाद के लिए आदेश देते हुए दो बातों का पालन करने की आज्ञा दी: पहली, उन लोगों से लड़ना जो मुसलमानों से लड़ते हैं, और दूसरी, अत्याचार न करना। इस आयत के अर्थ में, जिहाद का उद्देश्य निर्धारित करना कि यह केवल अल्लाह के रास्ते में होना चाहिए, इससे हर ऐसा जिहाद खत्म हो जाता है जो अल्लाह के रास्ते में नहीं है। इसी प्रकार, आयत ने मुसलमानों से लड़ने वालों से लड़ाई करने को शामिल किया, फिर एक शब्द में लड़ाई के नैतिकता को स्पष्ट किया "وَلَا تَعۡتَدُوٓاْ अत्याचार न करो"।

अलामा इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह कहते हैं: इसमें मुसला (शरीर को अंगों को काटने), धोखाधड़ी, औरतों, बच्चों, बुजुर्गों, भिक्षुओं और मठों के लोगों की हत्या, पेड़ों को जलाना और बिना लाभ के जानवरों की हत्या सभी शामिल हैं।(1) इससे यह स्पष्ट होता है कि इस्लाम एक नैतिकता, शांति और दया का धर्म है, न कि बदला, हत्या और आघात का धर्म। यह लोगों की सुरक्षा और सामर्थ्य की रक्षा करता है। इसका उद्देश्य बुराई को दूर करना और लाभ प्राप्त करना है, और युद्ध में भी सीमा से आगे न बढ़ना है। बल्कि आयत का अंत अल्लाह के कथन से होता है: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُحِبُّ ٱلۡمُعۡتَدِينَ﴾ इससे यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह अत्याचार को पसंद नहीं करता और सीमा से अधिक करने वालों को पसंद नहीं करता, इसलिए मुसलमानों को अत्याचार से बचना चाहिए, आत्म-नियंत्रण करना चाहिए, और अल्लाह के मरज़ी के अनुसार काम करना चाहिए ताकि जिहाद अल्लाह के रास्ते में पूरा हो सके।

---

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 233)।

और जब अल्लाह ने मोमिनों से लड़ने वालों से लड़ाई की अनुमति दी, तो उसने मक्का के मुशरिकों से लड़ाई की अनुमति भी दी, आदेश के रूप में, बल्कि अल्लाह ने मुसलमानों को उनसे लड़ाई करने की अनुमति दी जहाँ भी वे उन्हें पाएं: ﴿وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ﴾ और इसी तरह: ﴿وَأَخْرِجُوهُم مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ﴾ अर्थात उन्हें उस स्थान से निकालो जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला, और वह मक्का मुअज्ज़मा है, जहाँ से रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और मुहाजिरों को निकाला गया था, और उन्होंने अपने धन और सामान को छोड़ दिया था, अपने धर्म के लिए मुशरिकों के अत्याचार और उत्पीड़न से बचने के लिए। तो अल्लाह का यह आदेश दुश्मन के साथ न्यायपूर्ण था, जैसे उन्होंने तुम्हें सताया, उत्पीड़ित किया और निकाला, वैसे ही तुम उन्हें मारो और मक्का से निकालो। इससे इस्लाम के न्यायपूर्ण व्यवहार का पता चलता है। फिर अल्लाह तआला एक धार्मिक सच्चाई को स्पष्ट करता है, और कहता है: ﴿وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ﴾ "और फितना हत्या से भी बड़ा पाप है"। धर्म में फितना हत्या से भी अधिक खतरनाक और अपराध है। इसलिए, उनका मोमिनों को काफिर बनाने के लिए फितना करना, मोमिनों के उन्हें मारने से भी अधिक गंभीर है, क्योंकि उन्होंने अत्याचार, उत्पीड़न, और शारीरिक, मानसिक और नैतिक युद्ध किया, जैसे कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जादूगर, काहिन और कवि कहना, और शारीरिक आघात करना। इससे यह स्पष्ट होता है कि धर्म में फितना सबसे बड़ी आपदाओं और अपराधों में से एक है, और जो लोग लोगों को अल्लाह के धर्म से फितना करते हैं, उनकी गंभीरता और खतरे को भी स्पष्ट करता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि धर्म में फितना से बचना और इसके तरीकों, रूपों और प्रकारों से सावधान रहना अनिवार्य है, या इसे मुसलमानों के देशों में शब्द और चित्र के माध्यम से लाना, या अन्य तरीकों से।

क़ुरआन का यह बयान हत्या के खतरे और नुकसान की तुलना में, मोमिन को उसके धर्म से भटकाने के खतरे और नुकसान को स्पष्ट करता है: ﴿وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ﴾ "और फितना हत्या से भी बड़ा पाप है"।

इससे यह पता चलता है कि किसी भी विचार और धारणा को उजागर करना और उसे दूर करना कितना महत्वपूर्ण है जो जिहाद की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है, या उद्देश्य की प्राप्ति को रोक सकता है। इसलिए, सत्य की शक्ति के लिए आत्मा को तैयार करना महत्वपूर्ण है। और उस मोमिन की सहायता करना भी महत्वपूर्ण है जिसे उसके धर्म से भटकाया जा रहा है। यह सामान्य रूप से बौद्धिक बाधाओं को दूर करने में भी मदद करता है, जिससे लाभ और हानि के बीच तुलना की जा सके, और सही मार्ग का चयन और विवेकपूर्ण निर्णय लिया जा सके।

फिर अल्लाह तआला मक्का मुअज़्ज़मा की पवित्रता को स्पष्ट करता है: ﴿وَلَا تُقَٰتِلُوهُمۡ عِندَ ٱلۡمَسۡجِدِ ٱلۡحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَٰتِلُوكُمۡ فِيهِۖ فَإِن قَٰتَلُوكُمۡ﴾ "और मस्जिद ह़राम के पास उनसे युद्ध न करो जब तक वे तुमसे युद्ध न करें। यदि वे तुमसे युद्ध करें, तो तुम भी उन्हें मारो"। यह अल्लाह के पवित्र घर की पवित्रता का प्रमाण है, जिससे घर का सम्मान और उसकी प्रतिष्ठा का पालन करना आवश्यक हो जाता है, और हर प्रकार के आदर और सम्मान के साथ व्यवहार करना चाहिए। यह स्पष्ट निषेध है, सिवाय जब वे तुमसे पहले युद्ध करें, तो तुम भी उनसे लड़ो।

फतह मक्का के समय भी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध नहीं शुरू किया था, और अल्लाह ने मक्का का फतह बिना युद्ध के प्रदान किया। यह काफिरों का बदला है, जैसा कि अल्लाह तआला कहते हैं: ﴿كَذَٰلِكَ جَزَآءُ ٱلۡكَٰفِرِينَ﴾ "यह काफिरों का बदला है"। फिर अल्लाह तआला यह स्पष्ट करता है कि क्या हो सकता है, और क्या किया जाना चाहिए: ﴿فَإِنِ ٱنتَهَوۡاْ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٞ رَّحِيمٞ ١٩٢﴾ "यदि वे रुक जाएं, तो निःसंदेह अल्लाह क्षमाशील, दयालु है"। यदि वे शिर्क से रुक जाएं और इस्लाम में प्रवेश करें, तो अल्लाह तआला उन्हें क्षमा करेंगे और उन पर दया करेंगे। इससे यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह इस्लाम के माध्यम से पूर्व के पापों को माफ कर देते हैं, और उद्देश्य उनका विजय और उनसे बदला लेना नहीं है, बल्कि लक्ष्य उनका इस्लाम में प्रवेश है।

फिर अल्लाह तआला उनके साथ लड़ाई के उद्देश्य को स्पष्ट करता है: ﴿وَقَٰتِلُوهُمۡ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتۡنَةٞ وَيَكُونَ ٱلدِّينُ لِلَّهِۖ﴾ "और उनसे लड़ो जब तक कि फितना समाप्त न हो जाए और धर्म केवल अल्लाह का हो जाए"। उनका मुकाबला करने का उद्देश्य यह है कि वे लोगों को उनके धर्म से भटकाएं नहीं, और मक्का में कोई उत्पीड़ित न हो, जिससे वह अपने धर्म में फितना हो, और मक्का में धर्म केवल अल्लाह का हो, जिसमें कोई साझेदार नहीं। ताकि शिर्क का जड़ से उन्मूलन हो जाए, और केवल अल्लाह का धर्म ही बचे। और यदि वे अपने शिर्क और कुफ्र से रुक जाएं और इस्लाम स्वीकार करें, तो नियम यह है: ﴿فَإِنِ ٱنتَهَوۡاْ فَلَا عُدۡوَٰنَ إِلَّا عَلَى ٱلظَّٰلِمِينَ﴾(फिर यदि वे रुक जायें, तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी और पर अत्याचार नहीं करना चाहिए)।

संदर्भ से यह स्पष्ट होता है कि न्याय और अन्याय का उन्मूलन, लक्ष्य की प्राप्ति, और समान व्यवहार, और इस्लाम सभी दुश्मनी और द्वेष को समाप्त करता है, और इससे सभी दुश्मनी के कारणों को समाप्त करता है, और इससे रक्त बहाव को रोका जाता है, चाहे वह इस्लाम से

पहले का हो। इसलिए मुसलमानों को आदेश नहीं दिया गया कि वे बदला लें और उन्हें तंग करें यदि वे इस्लाम स्वीकार करें, बल्कि अल्लाह कहता है: ﴿فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾ "यदि वे रुक जाएं, तो निःसंदेह अल्लाह क्षमाशील, दयालु है"।

अल्लाह तआला फ़रमाता है ﴿الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَاتُ قِصَاصٌ﴾ (सम्मानित मास, सम्मानित मास के बदले है और सम्मानित विषयों में बराबरी है) इस आयत से समान व्यवहार का सिद्धांत सामने आता है, जिससे हर प्रकार के आक्रमण का प्रतिकार किया जा सके। यदि कोई व्यक्ति अल्लाह द्वारा पवित्र घोषित किए गए महीनों में, जैसे ज़ुलक़ादा, ज़ुलहिज्जा, मुहर्रम, या रजब में जो युद्ध करता है, तो उससे बदला लिया जा सकता है। यह समानता का सिद्धांत है: ﴿فَمَنِ اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ﴾ "जिसने तुम पर आक्रमण किया, तुम भी उस पर वैसा ही आक्रमण करो"। यह इस बात को दर्शाता है कि इस्लाम अल्लाह द्वारा निर्धारित पवित्रताओं का सम्मान करता है। लेकिन जब किसी आक्रमणकारी के कारण खतरा उत्पन्न हो, तो उसके बुरे कार्यों को रोकने के लिए बचाव आवश्यक हो जाता है, भले ही वह पवित्र महीना हो, या वह स्थान हो जिसे पवित्र घोषित किया गया हो, या कोई व्यक्ति हज या उमरा के इह़राम में हो। यदि वह व्यक्ति अत्याचार करता है या किसी बुराई का कारण बनता है, तो उसे सजा दी जाएगी और रोका जाएगा। यह घटना हुदैबिया के साल की है और इससे जुड़े विवरण मुफ़स्सिरीन ने विस्तार से बयान किए हैं।[1]

चूंकि मानव स्वभाव बदला लेने की छूट मिलने पर सीमाओं को लांघने की प्रवृत्ति रखता है और प्रतिशोध के लिए अधिक प्रयास कर सकता है, इसलिए अल्लाह तआला ने अपनी सीमाओं का पालन करने और उन्हें पार न करने की हिदायत दी।[2] अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ﴾ "अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है" यह आयत इस बात को स्पष्ट करती है कि जो व्यक्ति चाहता है कि अल्लाह उसकी सहायता करे, उसे अल्लाह का डर यानी तक़्वा अपनाना चाहिए। इससे यह लाभ होता है कि अल्लाह उसकी मदद करता है, उसका समर्थक बनता है और उसे विजयी बनाता है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति अल्लाह से नहीं डरता, अल्लाह तआला उससे दूर हो जाता है। इससे उसे हर समय और हर परिस्थिति में विफलता का सामना करना पड़ता है।

---

(2) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 236-237)।

(1) तैसीरुल करीमिर्रह़मान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 153)।

इसके बाद अल्लाह तआला अपने बंदों को अपनी राह में खर्च करने का आदेश देते हैं: ﴿وَأَنفِقُواْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ﴾ "और अल्लाह की राह में खर्च करो"। यह आदेश उन लोगों के लिए है जो सक्षम हैं कि वे अल्लाह की राह में, हर प्रकार के नेक काम में ﴿فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ﴾ खर्च करें। आयत के संदर्भ में, चूंकि यह जिहाद से संबंधित है, इसलिए यह खासतौर पर जिहाद में खर्च करने की प्रेरणा देती है।

साथ ही, कंजूसी से बचने की हिदायत दी गई है, क्योंकि कंजूसी व्यक्ति को बर्बादी की ओर ले जाती है: ﴿وَلَا تُلۡقُواْ بِأَيۡدِيكُمۡ إِلَى ٱلتَّهۡلُكَةِ﴾ "और अपने हाथों से खुद को तबाही में न डालो"। यह छवि दर्शाती है कि अल्लाह की राह में धन खर्च न करना व्यक्ति को बर्बादी की ओर ले जाता है, जैसे कि उसने खुद अपनी तबाही का रास्ता चुना।

इसके विपरीत, खर्च करने से तबाही दूर होती है। जैसा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: "सदक़ा अल्लाह के गुस्से को शांत करता है और बुरी मौत को रोकता है"।[1] अल्लाह की राह में खर्च करने से जरूरतमंदों की मदद होती है, गरीबों और असहायों की सहायता होती है, और जिहाद में इसका उपयोग इस्लाम को सुदृढ़ करने और अत्याचारियों के बुरे इरादों को विफल करने में सहायक होता है। इसके बाद अल्लाह तआला भलाई और नेकी की हिदायत देता है: ﴿وَأَحۡسِنُوٓاْۚ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾ "और भलाई करो, निस्संदेह अल्लाह भलाई करने वालों से प्रेम करता है"। यह निर्देश व्यक्ति को अल्लाह की प्रेम प्राप्ति की ओर प्रेरित करता है। अल्लाह का प्रेम प्राप्त करना सबसे बड़ी और सम्मानजनक सफलता है, क्योंकि जो व्यक्ति अल्लाह का प्रेम प्राप्त करता है, उसे अल्लाह की देखभाल, सहायता, और मार्गदर्शन प्राप्त होता है। साथ ही, अल्लाह उसे लोगों के दिलों में भी प्रिय बना देता है।

अल्लाह तआला के इस कथन से: ﴿وَأَحۡسِنُوٓاْۚ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾ (तथा उपकार करो, निश्चय अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है)। वह शक्ति उत्पन्न होती है जिससे व्यक्ति आत्मा की संकीर्णता को दूर करता है, और भलाई की ओर अग्रसर होता है। यदि भलाई में संकोच करे, तो अपने आप से कहे: ﴿وَأَحۡسِنُوٓاْۚ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾ (तथा उपकार करो, निश्चय अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है)। । यदि उसे कंजूसी घेरे, तो इस आयत से स्वयं को मजबूत करे: ﴿وَأَحۡسِنُوٓاْۚ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾ (तथा उपकार करो, निश्चय अल्लाह उपकारियों से प्रेम

(1) इब्न -ए- माजह (3/ 52) ह़दीस़ संख्या (664)।

करता है)। यदि उसे खर्च अधिक लगे, तो इस आयत से स्वयं को प्रोत्साहित करे: यदि वह किसी भलाई के कार्य में सुस्ती करे, तो इस आयत से प्रेरणा प्राप्त करे: ﴿وَأَحۡسِنُوٓاْۚ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾ (अल्लाह के आज्ञाकारी रहो और जान लो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है)। यदि वह स्वयं को प्राथमिकता दे, तो इस आयत से उसे फटकारे: ﴿وَأَحۡسِنُوٓاْۚ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾ (तथा उपकार करो, निश्चय अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है)। यह मोमिन के लिए एक शक्ति है जिससे वह भलाई के हर अवसर में, और इसके विभिन्न रूपों में, सशक्त होता है। हम अल्लाह तआला से सफलता, सहारा और मार्गदर्शन की दुआ करते हैं, और यह भी कि वह मुझे और मेरे मुसलमान भाइयों को भलाई करने वालों में से बनाए।

﴿وَأَتِمُّواْ ٱلۡحَجَّ وَٱلۡعُمۡرَةَ لِلَّهِۚ فَإِنۡ أُحۡصِرۡتُمۡ فَمَا ٱسۡتَيۡسَرَ مِنَ ٱلۡهَدۡيِۖ وَلَا تَحۡلِقُواْ رُءُوسَكُمۡ حَتَّىٰ يَبۡلُغَ ٱلۡهَدۡيُ مَحِلَّهُۥۚ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوۡ بِهِۦٓ أَذٗى مِّن رَّأۡسِهِۦ فَفِدۡيَةٞ مِّن صِيَامٍ أَوۡ صَدَقَةٍ أَوۡ نُسُكٖۚ فَإِذَآ أَمِنتُمۡ فَمَن تَمَتَّعَ بِٱلۡعُمۡرَةِ إِلَى ٱلۡحَجِّ فَمَا ٱسۡتَيۡسَرَ مِنَ ٱلۡهَدۡيِۚ فَمَن لَّمۡ يَجِدۡ فَصِيَامُ ثَلَٰثَةِ أَيَّامٖ فِي ٱلۡحَجِّ وَسَبۡعَةٍ إِذَا رَجَعۡتُمۡۗ تِلۡكَ عَشَرَةٞ كَامِلَةٞۗ ذَٰلِكَ لِمَن لَّمۡ يَكُنۡ أَهۡلُهُۥ حَاضِرِي ٱلۡمَسۡجِدِ ٱلۡحَرَامِۚ وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلۡعِقَابِ ١٩٦﴾[سورة البقرة:١٩٦]

(तथा ह़ज और उमरह अल्लाह के लिए पूरा करो और यदि रोक दिये जाओ, तो जो क़ुर्बानी सुलभ हो (कर दो) और अपने सिर न मुँडाओ, जब तक कि क़ुर्बानी अपने स्थान तक न पहुँच जाये, यदि तुममें से कोई व्यक्ति रोगी हो या उसके सिर में कोई पीड़ा हो (और सिर मुँडा ले), तो उसके बदले में रोज़ा रखना या दान देना या क़ुर्बानी देना है और जब तुम निर्भय (शान्त) रहो, तो जो उमरे से ह़ज तक लाभान्वित हो, वह जो क़ुर्बानी सुलभ हो, उसे करे और जिसे उपलब्ध न हो, वह तीन रोज़े ह़ज के दिनों में रखे और सात, जब रखे, जब तुम (घर) वापस आओ। ये पूरे दस हुए। ये उसके लिए है, जो मस्जिदे ह़राम का निवासी न हो और अल्लाह से डरो तथा जान लो कि अल्लाह की यातना बहुत कड़ी है)।

अल्लाह तआला, जो सर्वज्ञानी तत्वज्ञ है, ने मोमिनों को हज और उमरा की अनिवार्यता के बारे में बताया: ﴿وَأَتِمُّواْ ٱلۡحَجَّ وَٱلۡعُمۡرَةَ لِلَّهِ﴾ (और हज और उमरा को अल्लाह के लिए पूरा करो)। आयत की शुरुआत इस आदेश से होती है, जो हज और उमरा को शुरू करने वाले के लिए उसे पूरा करना अनिवार्य बनाता है। ﴿وَأَتِمُّواْ ٱلۡحَجَّ وَٱلۡعُمۡرَةَ لِلَّهِ﴾ (और हज और उमरा को अल्लाह के लिए पूरा करो) के इस आदेश से यह स्पष्ट होता है कि इन इबादतों को सबसे बेहतर तरीके से उनके सभी अरकान, वाजिबात और मुस्तहबात के साथ पूरा करना चाहिए। इसके अलावा, इसे पूरा करने का मतलब है कि सभी शंकाओं को दूर कर दृढ़ संकल्प के साथ इस काम को अंजाम

देना। यह सिखाता है कि अल्लाह पर भरोसा रखते हुए और किसी भी प्रकार के संदेह को समाप्त करते हुए, व्यक्ति को अपने कामों को पूरा करना चाहिए। हदीस़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब तुम में से कोई कोई काम करे तो उसे पूरी कुशलता के साथ करे।"(1) यह आयत इस बात पर भी बल देती है कि सभी कार्य केवल अल्लाह के लिए (इख़्लास़ के साथ) किए जाएं: ﴿وَأَتِمُّوا۟ ٱلْحَجَّ وَٱلْعُمْرَةَ لِلَّهِ﴾ (और हज और उमरा को अल्लाह के लिए पूरा करो) इससे यह भी सिद्ध होता है कि इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो हर कार्य में इखलास (निष्ठा) की शिक्षा देता है। इसमें दिखावा, आत्म-प्रशंसा या अन्य किसी भी सांसारिक उद्देश्य का स्थान नहीं है। जब इंसान अपने हर काम को अल्लाह के लिए करने की आदत डाल लेता है, तो वह दिखावे और घमंड से बच जाता है।

इसके परिणामस्वरूप, वह दूसरों के प्रति नफरत और शत्रुता से मुक्त होकर, नम्रता और स्नेह का भाव विकसित करता है। यह इबादत व्यक्ति के व्यवहार और दिनचर्या पर भी सकारात्मक प्रभाव डालती है। धार्मिक कर्मकांडों की यह पवित्रता सामान्य जीवन और नैतिक आचरण में भी परिलक्षित होती है।

इस्लामी शरीअत ने उन समस्याओं को स्पष्ट किया है जो एक व्यक्ति को इहराम में होते हुए हज या उमरा के इबादत को पूरा करने से रोक सकती हैं, जैसे कि अल्लाह तआला का कहना: ﴿فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ﴾ "अगर तुम रोक दिए जाओ"। यह आयत बताती है कि यदि कोई व्यक्ति हज या उमरा करने के इरादे से इहराम में है, लेकिन उसे कोई ऐसी समस्या आ जाए जो उसे अपनी इबादत को पूरा करने से रोक दे, तो उसे शरीअत द्वारा विशेष छूट दी जाती है। यहां ﴿فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ﴾ "रोक दिए जाने" का शब्द व्यापक रूप से उपयोग किया गया है, जो किसी भी कारण को शामिल करता है जो इबादत के समापन में रुकावट डाल सकता है, चाहे वह कोई शारीरिक समस्या हो, प्राकृतिक आपदा हो या किसी अन्य प्रकार का अवरोध। अल्लाह तआला इस आयत में इस प्रकार के अवरोधों को समझते हैं और उन्होंने इसे स्वीकार किया है। इस प्रकार के विस्तार से यह सिद्ध होता है कि शरीअत पूरी तरह से व्यापक और दयालु है, और इसे सभी परिस्थितियों में लागू किया जा सकता है। ﴿فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ﴾ इस आयत में अल्लाह तआला ने स्पष्ट रूप से बताया कि इस स्थिति में इहराम में फंसे व्यक्ति के लिए एक विकल्प उपलब्ध है, जैसे कि एक बकरा या ऊंट या गाय की कुर्बानी देना। इस निर्णय में किसी भी विशिष्ट शर्त का पालन करने का उल्लेख नहीं है, जो इसका मतलब है कि इस प्रक्रिया में लचीलापन है और स्थिति की वास्तविकता के आधार पर निर्णय लिया जा सकता है।

(1) अस् सिलसिला अज़् ज़ईफ़ा, लेखकः अलबानी, हदीस़ संख्या (2647)।

यह आयत इस्लामी कानून के लचीलापन और समझ को दर्शाती है। अल्लाह तआला ने ﴿فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ﴾ "जो भी संभव हो" का आदेश दिया, जो दिखाता है कि हर किसी की अलग-अलग परिस्थितियां हो सकती हैं, और शरीअत इसको पूरी तरह से समझती है। यह प्रावधान कार्यों को सरल और सुविधाजनक बनाने के लिए है, ताकि कोई व्यक्ति किसी भी अप्रत्याशित समस्या के कारण मुश्किल में न पड़े। यह शिक्षा जीवन की किसी भी योजना में संभावनाओं और विकल्पों को ध्यान में रखते हुए उचित समाधान तैयार करने की महत्वपूर्णता को भी दर्शाती है। जब कोई समस्या उत्पन्न होती है, तो त्वरित और उपयुक्त समाधान प्रदान करना आवश्यक होता है, और शरीअत ने इसे पूरी तरह से स्वीकार किया है।

फिर अल्लाह तआला ने इहराम से बाहर निकलने के नियमों को स्पष्ट किया, जिसमें यह है कि कुर्बानी (हदी) की प्रक्रिया पूरी करने के बाद ही सिर मुंडवाना जायज है: ﴿وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ﴾ "और तुम अपने सिर न मुंडवाओ जब तक कि हदी अपनी जगह तक न पहुँच जाए"। यह आयत इस बात को स्पष्ट करती है कि इस्लामी शरीअत में प्रत्येक इबादत और कृत्य का एक व्यवस्थित और समझदारी से निर्धारित तरीका है, जिसे अल्लाह तआला और उनके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्थापित किया है, और मुसलमानों के लिए उसका पालन करना आवश्यक है। फिर अल्लाह तआला ने हज या उमरा करने वाले व्यक्ति को अन्य संभावित समस्याओं के बारे में बताया, जो किसी भी हालत में उसकी इबादत को प्रभावित कर सकती हैं ﴿فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِّن رَّأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِّن صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ﴾ (यदि तुममें से कोई व्यक्ति रोगी हो या उसके सिर में कोई पीड़ा हो (और सिर मुँडा ले), तो उसके बदले में रोज़ा रखना या दान देना या क़ुर्बानी देना है)। इस आयत से यह पता चलता है कि अल्लाह तआला अपने बंदों के लिए पूरी तरह से समझदारी और लचीलापन प्रदान करते हैं, क्योंकि वह जानते हैं कि क्या समस्याएँ उनके बंधुओं पर आ सकती हैं। इस प्रकार, शरीअत के नियम और आदेश न केवल आदर्श हैं, बल्कि वे व्यावहारिक भी हैं, और यह सब एक महान और बुद्धिमान शासक की ओर से आता है। इस प्रकार की शारीरिक समस्याओं के लिए शरीअत ने वैकल्पिक उपाय भी प्रदान किए हैं, जैसे कि सिर मुंडवाने के लिए कफ्फारा देना (सजा)। यह कफ्फारा उपवास, दान या कुर्बानी के रूप में हो सकता है। यह एक लचीला और सटीक समाधान प्रदान करने वाला तरीका है, और शरीअत ने इसे बहुत अच्छे से समझाया है। इसके अलावा, इस्लामी न्यायशास्त्र (फिकह) ने इस बारे में और विस्तार से विवरण दिया है, जिससे विद्वान यह निर्धारित कर सकते हैं कि किस स्थिति में कौन सा समाधान लागू होगा। यह सिद्धांत और विधि इस्लामी शरीअत के तात्कालिक और भविष्य के अनगिनत पहलुओं के लिए बहुत उपयोगी है, और इसने नए विचारों और नवाचारों की स्थापना को बढ़ावा दिया है, जैसे कि न्यायशास्त्र के सिद्धांत, ह़दीस़ के नियम, और अन्य धार्मिक ज्ञान, जो इस्लामी विद्वानों के द्वारा उत्पन्न किए गए हैं। यह

इस्लाम के विधायी प्रणाली की व्यापकता और प्रभावशीलता को दर्शाता है, जो सभी परिस्थितियों में समाधान प्रदान करता है।

फिर अल्लाह तआला ने तमत्तु' (विशेष प्रकार के हज) के बारे में बताया, जो तब होता है जब कोई व्यक्ति उमरा करने के बाद हज में प्रवेश करता है। ﴿فَإِذَآ أَمِنتُمۡ فَمَن تَمَتَّعَ بِٱلۡعُمۡرَةِ إِلَى ٱلۡحَجِّ فَمَا ٱسۡتَيۡسَرَ مِنَ ٱلۡهَدۡيِۚ﴾ (और जब तुम निर्भय (शान्त) रहो, तो जो उमरे से ह़ज तक लाभान्वित हो, वह जो क़ुर्बानी सुलभ हो)। इसका मतलब यह है कि अगर कोई व्यक्ति हज के महीने में इह़राम बांधकर उमरा करता है, फिर उसे उमरा से मुक्त होने का तरीका अपनाना होता है और फिर हज के लिए इह़राम बांधना होता है, तो उसे हदी देना आवश्यक होगा। इससे यह भी साबित होता है कि इस्लामी शरीअत व्यक्ति की परिस्थितियों और उसके सामने आने वाली समस्याओं का पूरा ख्याल रखती है। जैसे अगर किसी व्यक्ति को हदी देने का साधन न हो, तो उसे ﴿فَمَن لَّمۡ يَجِدۡ فَصِيَامُ ثَلَٰثَةِ أَيَّامٖ فِي ٱلۡحَجِّ وَسَبۡعَةٍ إِذَا رَجَعۡتُمۡۗ تِلۡكَ عَشَرَةٞ كَامِلَةٞۗ﴾ "तीन दिन हज के दौरान उपवास रखना होगा, और सात दिन जब वह वापस अपने देश लौटे"। यह शरीअत की लचीलापन और वास्तविकता के अनुसार समाधान प्रदान करने की क्षमता को प्रदर्शित करता है। शरीअत ने यह विकल्प इसलिए दिया ताकि व्यक्ति को कोई कठिनाई न हो, और उस पर कोई अतिरिक्त बोझ न पड़े।

यहां शरीअत के दृष्टिकोण में उस व्यक्ति की स्थिति को समझने का उदाहरण मिलता है, जिससे उसे अपने कृत्य के लिए उचित समाधान मिल सके। अगर कोई व्यक्ति हदी देने की स्थिति में नहीं है, तो वह उपवास रख सकता है और इसे दो भागों में बाँट सकता है—तीन दिन हज के दौरान और सात दिन वापसी पर। यह एक वैकल्पिक व्यवस्था है जो कड़ी परिस्थितियों में भी व्यक्ति को उसके कर्तव्यों को निभाने का अवसर देती है। इस तरह से यह शरीअत न केवल धार्मिक कृत्यों को सिखाती है, बल्कि जीवन के हर पहलू में योजना, समन्वय और विभिन्न परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए हल ढूंढने की विधि भी सिखाती है। इससे व्यक्ति न केवल अपनी व्यक्तिगत जिंदगी को व्यवस्थित करता है, बल्कि समाज और समुदाय की भलाई के लिए भी काम करता है। इसके अतिरिक्त, अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट किया कि यह आदेश उन लोगों के लिए है जो मक्का के निवासी नहीं हैं ﴿ذَٰلِكَ لِمَن لَّمۡ يَكُنۡ أَهۡلُهُۥ حَاضِرِي ٱلۡمَسۡجِدِ ٱلۡحَرَامِۚ﴾ "यह आदेश उन लोगों के लिए है जो मस्जिद अल-ह़राम के निवासी नहीं हैं"। यह बयान इस बात की पुष्टि करता है कि मक्का के निवासी पर हदी का आदेश लागू नहीं होता, क्योंकि उनके लिए हदी का कोई विशेष कारण नहीं है, जैसा कि शैख इब्न -ए- सअदी रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः जो व्यक्ति मस्जिद-ह़राम के निवासियों में से हो, उसके ऊपर हदी (कुरबानी) नहीं है, क्योंकि

इसका कोई कारण नहीं है।[1] तथा फ़ुक़हा (इस्लामी विद्वानों) ने इस विषय में विस्तार से लिखा है।

फिर अल्लाह तआला परहेज़गारी का आदेश देता है: ﴿وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ﴾ "और अल्लाह से डरते रहो"। यह वाक्य, जिसमें परहेज़गारी का आदेश शामिल है, यह स्पष्ट करता है कि हाजी और उमरा करने वाले को अल्लाह से डरना चाहिए, क्योंकि उन पर निगरानी और हिसाब केवल अल्लाह की होती है। इसलिए, उन्हें अनिवार्य रूप से उस फरीज़े को पूरा करना चाहिए जैसा कि अल्लाह ने आदेश दिया है। यह यह भी स्पष्ट करता है कि दावती, शिक्षात्मक और प्रशिक्षण कार्यों में अल्लाह से डरने की याद दिलाना कितना महत्वपूर्ण है। और भलाई की याद दिलाना कितना महत्वपूर्ण है, और इसके लाभ और प्रभाव, यहाँ तक कि पेशेवर कार्यों में, और लोगों के बीच संबंधों में, और उनके लेन-देन में, भलाई की याद दिलाना सभी के लिए महत्वपूर्ण होना चाहिए। फिर अल्लाह तआला यह भी स्पष्ट करते हैं कि जो लोग अल्लाह से नहीं डरते, और इबादत में खेलते हैं और लापरवाही करते हैं, उन्हें सजा दी जाएगी: ﴿وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلۡعِقَابِ﴾ "और जान लो कि अल्लाह की सजा बहुत कड़ी है"। इससे यह समझ में आता है कि यदि कोई व्यक्ति परहेज़गारी का पालन नहीं करता है, तो अल्लाह की सजा बहुत कड़ी होती है। इसलिए, मुसलमान को अल्लाह के आदेश को गंभीरता से लेना चाहिए, और इसमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए। इस धमकी में अल्लाह की तरफ से चेतावनी और डर है। क्योंकि अल्लाह का डर अल्लाह की परहेज़गारी को प्राप्त करने में मदद करता है। यह याद दिलाना और यह बताना कि अल्लाह की सजा बहुत कड़ी है, बन्दा को परहेज़गारी की ओर ले जाता है, क्योंकि इंसान की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि वह डर और सुरक्षा की इच्छा रखता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि मार्गदर्शन और उन लोगों के परिणामों को स्पष्ट करना जो इसे पालन नहीं करते, कितना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, इसमें यह सिखाना भी शामिल है कि व्यक्ति अल्लाह से डरकर अपनी आत्मा की परवरिश करे, क्योंकि इंसानों में से कोई भी हाजी की इबादत में कमी के लिए उसे हिसाब नहीं करेगा, बल्कि हिसाब लेने वाला और सजा देने वाला केवल अकेला अल्लाह है जिस का कोई साझीदार नहीं है।

﴿ٱلۡحَجُّ أَشۡهُرٞ مَّعۡلُومَٰتٞۚ فَمَن فَرَضَ فِيهِنَّ ٱلۡحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي ٱلۡحَجِّۗ وَمَا تَفۡعَلُواْ
مِنۡ خَيۡرٖ يَعۡلَمۡهُ ٱللَّهُۗ وَتَزَوَّدُواْ فَإِنَّ خَيۡرَ ٱلزَّادِ ٱلتَّقۡوَىٰۖ وَٱتَّقُونِ يَٰٓأُوْلِي ٱلۡأَلۡبَٰبِ ١٩٧ لَيۡسَ عَلَيۡكُمۡ
جُنَاحٌ أَن تَبۡتَغُواْ فَضۡلٗا مِّن رَّبِّكُمۡۚ فَإِذَآ أَفَضۡتُم مِّنۡ عَرَفَٰتٖ فَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ عِندَ ٱلۡمَشۡعَرِ
ٱلۡحَرَامِۖ وَٱذۡكُرُوهُ كَمَا هَدَىٰكُمۡ وَإِن كُنتُم مِّن قَبۡلِهِۦ لَمِنَ ٱلضَّآلِّينَ ١٩٨ ثُمَّ أَفِيضُواْ مِنۡ حَيۡثُ

(1) तैसीरुल करीमिर्रह़मान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 156)

أَفَاضَ ٱلنَّاسُ وَٱسْتَغْفِرُوا۟ ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٩﴾ فَإِذَا قَضَيْتُم مَّنَٰسِكَكُمْ فَٱذْكُرُوا۟ ٱللَّهَ
كَذِكْرِكُمْ ءَابَآءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۗ فَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِى ٱلدُّنْيَا وَمَا لَهُۥ فِى ٱلْـَٔاخِرَةِ
مِنْ خَلَٰقٍ ﴿٢٠٠﴾ وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِى ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِى ٱلْـَٔاخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ ﴿٢٠١﴾
أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا۟ ۚ وَٱللَّهُ سَرِيعُ ٱلْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾ ۞ وَٱذْكُرُوا۟ ٱللَّهَ فِىٓ أَيَّامٍ مَّعْدُودَٰتٍ ۚ فَمَن تَعَجَّلَ فِى
يَوْمَيْنِ فَلَآ إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَن تَأَخَّرَ فَلَآ إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ ٱتَّقَىٰ ۗ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٠٣﴾﴾
[سورة البقرة:١٩٧-٢٠٣].

(ह़ज के महीने प्रसिध्द हैं, जो व्यक्ति इनमें ह़ज का निश्चय कर ले, तो (ह़ज के बीच) काम वासना तथा अवज्ञा और झगड़े की बातें न करे तथा तुम जो भी अच्छे कर्म करोगे, उसका ज्ञान अल्लाह को हो जायेगा और अपने लिए पाथेय बना लो, उत्तम पाथेय अल्लाह की आज्ञाकारिता है तथा हे समझ वालो! मुझी से डरो। तथा तुमपर कोई दोष नहीं कि अपने पालनहार के अनुग्रह की खोज करो, फिर जब तुम अरफ़ात से चलो, तो मश्अरे ह़राम (मुज़दलिफ़ह) के पास अल्लाह का स्मरण करो, जिस प्रकार अल्लाह ने तुम्हें बताया है। यद्यपि इससे पहले तुम कुपथों में से थे। फिर तुम भी वहीं से फिरो, जहाँ से लोग फिरते हैं तथा अल्लाह से क्षमा माँगो। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील, दयावान् है। और जब तुम अपने ह़ज के मनासिक (कर्म) पूरे कर लो, तो जिस प्रकार पहले अपने पूर्वजों की चर्चा करते रहे, उसी प्रकार बल्कि उससे भी अधिक अल्लाह का स्मरण करो। उनमें से कुछ ऐसे हैं, जो ये कहते हैं कि हे हमारे पालनहार! (हमें जो देना है,) संसार ही में दे दे। अतः ऐसे व्यक्ति के लिए परलोक में कोई भाग नहीं है। तथा उनमें से कुछ ऐसे हैं, जो ये कहते हैं कि हमारे पालनहार! हमें संसार में भलाई दे तथा परलोक में भी भलाई दे और हमें नरक की यातना से सुरक्षित रख। इन्हीं को इनकी कमाई के कारण भाग मिलेगा और अल्लाह शीघ्र ह़िसाब चुकाने बाला है। तथा इन गिनती के कुछ दिनों में अल्लाह को स्मरण (याद) करो, फिर जो व्यक्ति शीघ्रता से दो ही दिन में (मिना से) चल दे, उसपर कोई दोष नहीं और जो विलम्ब करे, उसपर भी कोई दोष नहीं, उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह से डरा तथा तुम अल्लाह से डरते रहो और ये समझ लो कि तुम उसी के पास प्रलय के दिन एकत्र किए जाओगो)।

फिर अल्लाह तआला इस महान इबादत के बारे में और अधिक स्पष्ट बयान करता है, जो इस्लाम के स्तंभों में से एक है। अल्लाह तआला कहते हैं: ﴿ٱلْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَٰتٌ ۚ﴾ "हज के महीने ज्ञात हैं"। यह स्पष्ट करता है कि हज के महीने संबोधित व्यक्ति के लिए ज्ञात हैं। यह हजरत इब्राहिम (अलैहिस्सलाम) के समय से ज्ञात हैं, और ये शव्वाल, जुलक़ादा और जुलहिज्जा के दस दिन हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि जो स्पष्ट रूप से ज्ञात है, उसे विस्तार

से दोहराने की आवश्यकता नहीं है। इमाम क़ुर्तुबी रह़िमहुल्लाह(1) कहते हैं कि अल्लाह तआला ने यहाँ उमरा का उल्लेख नहीं किया है, क्योंकि यह पूरे साल के दौरान होता है, जबकि हज केवल एक बार होता है: ﴿ٱلۡحَجُّ أَشۡهُرٞ مَّعۡلُومَٰتٞۚ﴾ "हज के महीने ज्ञात हैं"।

फिर अल्लाह तआला उन लोगों के लिए नैतिकता को स्पष्ट करता है जो इस इबादत में प्रवेश करते हैं: ﴿فَمَن فَرَضَ فِيهِنَّ ٱلۡحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي ٱلۡحَجِّۗ﴾ "तो जिसने इनमें हज का इरादा किया, उसे हज के दौरान न कोई अनैतिकता करनी चाहिए, न कोई पाप करना चाहिए, न कोई झगड़ा करना चाहिए"। जो इस इबादत में प्रवेश करता है, उसने अपने ऊपर हज को अनिवार्य कर लिया है, और उसे इसके सभी आवश्यकताओं को पूरा करना है। इसका उदाहरण ऐसा है जैसे कि कोई व्यक्ति एक अनुबंध में प्रवेश करता है, उसने इसके सभी शर्तों को पूरा करने का संकल्प लिया है। इमाम क़ुर्तुबी रह़िमहुल्लाह कहते हैं: उसने इसे अपने अंदर नीयत के साथ, और बाहरी रूप से एह़राम के साथ, और सुनने योग्य रूप से तलबिया के साथ शुरू किया है। जो हज की इबादत में प्रवेश करता है, उसे इसकी सभी आवश्यकताओं का पालन करना आवश्यक है, जिसमें शामिल हैं: ﴿فَلَا رَفَثَ﴾"तो कोई अनैतिकता नहीं" अर्थात संभोग या इस प्रकार का कोई कार्य। ﴿وَلَا فُسُوقَ﴾ "न कोई पाप" अर्थात सभी पाप। ﴿وَلَا جِدَالَ﴾ "न कोई झगड़ा" अर्थात वह बहस जो किसी मुद्दे पर लोगों के बीच होती है।(2)

यह वे निषेध कार्य हैं जो हज में वर्जित हैं, और वे हाजी को आत्म-संयम की क्षमता प्रदान करते हैं। यह व्यक्ति को उन चीज़ों से बचने की प्रेरणा देता है जिनसे शरीअत ने रोका है। यह उसकी इच्छाशक्ति और दृढ़ता को मजबूत करता है, उसे उसकी सहनशक्ति और संयम की क्षमता का एहसास कराता है, और उसके मन से वे सभी पूर्व धारणाएँ मिटा देता है जिनकी वजह से वह यह मानता था कि वह इन चीज़ों से बच नहीं सकता। इस प्रकार वह अपनी क्षमताओं को पहचानता है और उसकी भ्रांतियाँ समाप्त हो जाती हैं। यह आत्म-विकास और नैतिक गुणों की ऊँचाइयों तक पहुँचने के सबसे महत्वपूर्ण चरणों में से एक है। इस संदर्भ में, इन गुणों और उनके प्रभावों को, तथा उनका व्यक्ति, सामाजिक जीवन, परिवार और व्यवसाय से संबंध विस्तार से समझाया जा सकता है। फिर अल्लाह तआला अपने पवित्र वचनों में इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करता है और अपने विश्वास करने वाले बंदों को यह याद दिलाता है कि वह उनके बारे में सब कुछ जानता है: ﴿وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ﴾ (और जो कुछ तुम भलाई करते हो, उसे अल्लाह जानता है) इस तरह का स्मरण दिलाने वाला तरीका, जो अल्लाह तआला द्वारा दिए गए निषेधों से जुड़ा है, विश्वासियों को भलाई करने और इसमें कोई कमी न

(2) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 269)।

(1) पिछला संदर्भ (2/ 272)।

करने के लिए प्रेरित करता है। यदि वे भलाई के विपरीत किसी भी चीज़ से बचते हैं और इसके विपरीत कार्य करते हैं, तो अल्लाह तआला उसे जानता है। वह उनके प्रयासों, उनके आत्म-संयम, और उन चीज़ों से दूर रहने को जो अल्लाह ने वर्जित किया है, तथा उन गुणों को अपनाने को जो उसने आदेश दिए हैं, पर गौर करता है। और फिर वह अपनी ज्ञान और उदारता के अनुसार उन्हें पुरस्कृत करता है। अल्लाह तआला ने भलाई के किसी प्रकार को सीमित नहीं किया है, बल्कि इसे खुला छोड़ा है, ताकि इंसान अपनी क्षमता और साधनों के अनुसार हर प्रकार की भलाई में प्रयास कर सके ﴿وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ﴾। यही क़ुरआन करीम की बारीकियों और मार्गदर्शक चमत्कारों में से एक है। इसमें वह व्यक्ति शामिल है जो धन से समर्थ है, जो शारीरिक श्रम से समर्थ है, जो अपने ज्ञान से समर्थ है, और जो अपने ज़िक्र (ध्यान) से समर्थ है। और भलाई के ऐसे अनगिनत रूप हैं जो हर इंसान की स्थिति के अनुसार मेल खाते हैं।

फिर अल्लाह तआला अपने हज करने वाले बंदों को आदेश के रूप में संबोधित करते हुए यह निर्देश देता है कि वे अपने सफर के लिए आवश्यक सामान का प्रबंध कर लें: ﴿وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَى﴾ (और यात्रा का सामान साथ रखो, और निस्संदेह सबसे उत्तम सामान तक़्वा है) यह इसलिए कि कुछ हाजी बिना किसी प्रकार का सामान लिए हज के लिए आ जाते थे, यह सोचकर कि यह अल्लाह पर भरोसे का हिस्सा है। ऐसे लोगों को अल्लाह ने आदेश दिया कि वे अपनी आवश्यकताओं का प्रबंध करें ताकि उन्हें दूसरों पर निर्भर न रहना पड़े।[1] ऐसा इसलिए भी है कि हज के लिए सक्षम होना आवश्यक है, जैसा कि बाद में बताया जाएगा, इन शा अल्लाह। इस आयत से यह प्रमाणित होता है कि इस्लाम का मार्ग एक व्यावहारिक मार्ग है, जो मुसलमान को कारणों और साधनों को अपनाने का आदेश देता है। चूँकि अल्लाह तआला ही ने इन साधनों को पैदा किया और अपने बंदों के लिए उन्हें आसान बनाया। इस प्रकार वह अपने बंदों को यात्रा के दौरान सबसे आवश्यक चीज़ की ओर निर्देशित करता है, अर्थात सामान (आवश्यक सामग्री)। साथ ही वह दूसरे प्रकार के सामान की ओर भी संकेत करता है, जो तक़्वा (परहेज़गारी) है। यह वह आध्यात्मिक और हृदयगत सामान है, जो मुसलमान को उसकी अंतिम यात्रा के लिए तैयार करता है। इस प्रकार, अल्लाह तआला ने भौतिक सामान के बाद आध्यात्मिक सामान (तक़्वा) की ओर ध्यान दिलाया, जिसमें अल्लाह का डर, विनम्रता, उसकी कृपा की चाहत और उसकी नाराज़गी का डर शामिल है। ये गुण हाजी को अल्लाह के धर्म का व्यावहारिक रूप से पालन करने के लिए प्रेरित करते हैं। इस आयत में सांसारिक यात्रा के सामान और परलोक की यात्रा के सामान, दोनों के महत्व को स्पष्ट किया गया है। पहली पीढ़ी ने इस सामान और यात्रा में इसकी भूमिका को भली-भाँति समझा। उन्होंने

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 246)।

इसे शरीर के संरक्षण और यात्रा की कठिनाइयों का सामना करने के लिए आवश्यक माना। यहाँ तक कि हज़रत इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहा करते थे: "यात्रा के दौरान व्यक्ति की शान उसकी अच्छी तैयारी में है, वे इस बात पर जोर देते थे कि उनके साथी यात्रा में उच्च गुणवत्ता वाले सामान का प्रबंध करें"।

फिर, जब अल्लाह तआला ने सामान (ज़ाद) का उल्लेख किया और उसके दो प्रकारों में से सबसे श्रेष्ठ प्रकार को बताया: ﴿فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَى﴾ (निःसंदेह सबसे उत्तम सामान तक़वा है)। तो इसके बाद यह आदेश दिया कि यह तक़वा केवल उसी के लिए होना चाहिए, जिसके साथ कोई साझीदार नहीं है: ﴿وَاتَّقُونِ يَا أُولِي الأَلْبَابِ﴾ (और मुझसे डरते रहो, हे समझ रखने वालों!) यह संबोधन उन लोगों के लिए है जो समझ और बुद्धि वाले हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाता है और उसके आज्ञापालन को चुनता है, वह बुद्धिमान और समझदार है, क्योंकि उसने सत्य को असत्य पर प्राथमिकता दी। इमाम क़ुर्तुब़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने कहा है: "अलबाब ('अक्ल' वाले) 'लुब' (सार) का बहुवचन है, और 'लुब' का मतलब हर चीज़ का सार और शुद्धतम हिस्सा होता है। इसलिए, बुद्धि को भी 'लुब' कहा गया है।"(1)

अल्लाह तआला ने उन्हें 'उलुल-अलबाब' कहकर उनका सम्मान किया और उनकी प्रशंसा की। इस प्रकार, जब अल्लाह उन्हें संबोधित करता है, तो यह न केवल आदेश है बल्कि उनकी प्रशंसा भी है, क्योंकि वह उन्हें उनके अच्छे गुणों और विशेषताओं की वजह से संबोधित करता है: ﴿وَاتَّقُونِ يَا أُولِي الأَلْبَابِ﴾ (और मुझसे डरते रहो, हे समझ रखने वालों!) इस आयत में एक शिक्षाप्रद और प्रचारक पहलू यह है कि जिस व्यक्ति को संबोधित किया जा रहा है, उसकी अच्छाइयों और विशेषताओं को पहचानकर उसे प्रोत्साहित करना चाहिए। ऐसा करने से वह व्यक्ति अधिक भलाई करने के लिए प्रेरित होता है और उसमें इसे बढ़ाने की भावना प्रबल होती है।

फिर अल्लाह तआला हज के दौरान व्यापार के मुद्दे पर ध्यान आकर्षित करता है, क्योंकि उकाज़, मिजन्नह और ज़ुल मज़ाज के बाजार अज्ञानता के समय अरबी बाजार थे, और वे हज के मौसम में व्यापार करने को पाप मानते थे। इसलिए यह आयत उतरी(2): ﴿لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ﴾ "तुम्हारे लिए कोई पाप नहीं है कि तुम अपने रब के अनुग्रह की तलाश करो"। आयत ने पाप की भावना को नकारने से शुरू किया: ﴿لَيْسَ

(2) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 274)।

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 247)।

﴿عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ﴾ "तुम्हारे लिए कोई पाप नहीं है", हज के दौरान व्यापार के माध्यम से अल्लाह तआला के अनुग्रह की तलाश करने में तुम्हारे लिए कोई पाप नहीं है, ताकि हज के दौरान व्यापार के माध्यम से अल्लाह तआला के अनुग्रह की तलाश करने की पूरी अनुमति हो, और इस बात से कोई भी चिंता और भावना खत्म हो जाए। बल्कि अल्लाह तआला ने जिस अनुग्रह की वे तलाश करते हैं उसे अपने साथ जोड़ा: ﴿أَن تَبْتَغُواْ فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ﴾"तुम्हारे रब के अनुग्रह की तलाश करना", ताकि मोमिन यह समझे कि जो भी वह रोज़ी की तलाश करता है, वह अल्लाह तआला के अनुग्रह की तलाश और खोज है। और रोज़ी अल्लाह तआला का अनुग्रह है लोगों के लिए। इसलिए, जो कोई अनुग्रह की तलाश करता है, उसे अल्लाह तआला से इसे दो तरीकों से मांगना चाहिए: पहला: इसे मांगने और उसकी तलाश करने के द्वारा: ﴿أَن تَبْتَغُواْ﴾"तुम्हारे रब के अनुग्रह की तलाश करना"। दूसरा: दुआ द्वारा, क्योंकि अल्लाह ने इस अनुग्रह को अपने साथ जोड़ा है: ﴿فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ﴾ "तुम्हारे रब के अनुग्रह की तलाश करना"। इसने कई मुद्दों और लाभों को समेट लिया है, जिनमें शामिल हैं, पहले बताए गए लाभ, और दुआ की महत्वता और इसका अनुग्रह, और रोज़ी की तलाश में उसकी महत्वता, और अल्लाह तआला पर विश्वास करना, जो अनुग्रह प्रदान करता है। और यह धर्म एक काम करने वाला धर्म है, और यह भी बताता है कि व्यापार के माध्यम से लोगों के बीच लाभ प्राप्त करना कितना महत्वपूर्ण है, और इसे अनिवार्य रूप से अनुमति दी गई है, जब तक कि इसमें कुछ भी ह़राम नहीं है, चाहे वह वस्तु में हो, या उसके लेन-देन के तरीके में।

फिर अल्लाह तआला हाजी को उस ज़िक्र (अल्लाह की याद) की ओर निर्देशित करता है, जो हज के दौरान करना आवश्यक है ﴿فَإِذَا أَفَضْتُم مِّنْ عَرَفَاتٍ فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِندَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ﴾ (फिर जब तुम अराफात से लौटो, तो मशअरे ह़राम (मुज़दलिफ़ा) में अल्लाह को याद करो) अराफात वह स्थान है जहाँ हज के दौरान रुकना होता है, और यह हज के सबसे प्रमुख कार्यों में से एक है।[1] जैसा कि ह़दीस़ में आया है:"हज अराफा है"।[2] (अर्थात हज का मुख्य भाग अराफात में रुकना है) आयत में शब्द 'अफ़ज़्तुम' का अर्थ है 'अराफात से चलना।' यह शब्द "फ़ाज़" (बहना) से निकला है, जैसे कोई बर्तन भरकर बह जाए। इस शब्द से एक दृश्य उत्पन्न होता है, जहाँ अराफात लोगों से भर जाती है और हाजी वहाँ से ऐसे निकलते हैं मानो वह स्थान उनकी भीड़ से भरकर छलक पड़ा हो। इसके बाद हाजी मुज़दलिफ़ा (मशअरे ह़राम) पहुँचते हैं, जहाँ अल्लाह तआला उन्हें अपनी याद (ज़िक्र) का आदेश देता है। यह आदेश इस उद्देश्य से है कि हाजी का अल्लाह की याद से संबंध निरंतर बना रहे। अल्लाह ने बार-बार ज़िक्र का आदेश

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 248)।

(1) नसई (5/ 256) ह़दीस़ संख्या (3016)।

देते हुए इसका कारण भी स्पष्ट किया: ﴿وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ﴾ (और उसकी याद करो, जैसे उसने तुम्हें मार्ग दिखाया) यह मार्गदर्शन और इस्लाम धर्म के महान आदेशों का अनुसरण करने की अल्लाह की नेमत की याद दिलाता है। अल्लाह ने हिदायत को अपनी ओर जोड़ा है ﴿كَمَا هَدَاكُمْ﴾ (जैसे उसने तुम्हें मार्ग दिखाया) ताकि यह स्पष्ट हो कि अल्लाह ही ने इंसान के दिल को इस धर्म की ओर मार्गदर्शन दिया, नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा, और उनके साथ किताब और सुन्नत को उतारा। यदि यह मार्गदर्शन अल्लाह की ओर से न होता, तो कोई भी व्यक्ति इस मार्ग पर न आ सकता। जब इंसान इस महान नेमत (हिदायत) को समझ लेता है, तो उसके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अल्लाह का शुक्र और प्रशंसा करे। यह धर्म ही वह मार्ग है जो परलोक की सफलताओं और सुखों की ओर ले जाता है। फिर, अल्लाह तआला हिदायत से पहले और उसके बाद इंसान की स्थिति का उल्लेख करता है: ﴿وَإِن كُنتُم مِّن قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ﴾ (और इससे पहले तुम गुमराहों में से थे) यह तुलना का एक तरीका है, जो इंसान को अपनी वर्तमान स्थिति को गुमराही की पुरानी स्थिति से तुलना करने पर प्रेरित करता है। इससे इंसान को अल्लाह की नेमत और उसका फ़ज़ल (कृपा) स्पष्ट रूप से समझ में आता है। इस शिक्षाप्रद तरीके का उपयोग दावत (प्रचार), सुधार, और प्रबंधन के हर पहलू में किया जा सकता है। यह तरीका सिखाता है कि किसी व्यक्ति को उसके पहले और वर्तमान हालात के बीच तुलना करने में मदद करें, ताकि वह अल्लाह की नेमतों को पहचान सके। हालाँकि, यह तुलना अहंकार या आलोचना के लिए नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह दिखाने के लिए होनी चाहिए कि अल्लाह की नेमतें उसकी कृपा से हैं।

फिर अल्लाह तआला अपने हज यात्रियों को हज के अगले चरण के बारे में आदेश देता है: ﴿ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ﴾ "फिर वहाँ से लौटो जहाँ से लोग लौटते हैं"। यह मिना की ओर प्रस्थान है, ताकि रात को वहाँ बिताना, जमरात को कंकर मारना, हदी की कुर्बानी करना, तवाफ और सई पूरा किया जा सके। इसी तरह अल्लाह तआला हाजियों को इस्तिग़फार (क्षमा याचना) करने का आदेश देते हैं: ﴿ٱللَّهَۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾ "और अल्लाह से माफी मांगो, निःसंदेह अल्लाह माफी देने वाला, दयालु है"। कितना भी अल्लाह की इबादत की जाए, उसमें कमी और गलती होती है, इसलिए इस्तिग़फार कभी नहीं छोड़ना चाहिए। बन्दे को अपनी इबादत में पूर्णता नहीं देखनी चाहिए, क्योंकि कमी और भूल मानवीय स्वभाव का हिस्सा हैं, और हर स्थिति में इस्तिग़फार की आवश्यकता होती है। इससे यह भी समझ में आता है कि हाजी एक महान और कठिन इबादत में होते हुए भी अल्लाह तआला ने उसे इस्तिग़फार का आदेश दिया। तो एक इंसान के दिन, सप्ताह, महीने और पूरी उम्र में इस्तिग़फार की कितनी जरूरत होगी। यह इस्तिग़फार की आवश्यकतानुसार होने का महत्व बताता है, क्योंकि इंसान

को कमी, भूल, गलती, पाप, गलत कोशिशें, दिखावा, और अन्य मंसूबों का सामना करना पड़ता है।

अल्लाह तआला ने अपनी महान विशेषता पर ध्यान आकर्षित किया है: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾ "निःसंदेह अल्लाह माफी देने वाला, दयालु है"। इसमें यह संकेत और ध्यान आकर्षित किया गया है कि मुसलमान इस्तिग़फार करते समय यह समझे कि अल्लाह माफी देने वाला, दयालु है, जो पाप को माफ करता है और इस्तिग़फार करने वाले पर दया करता है। इसलिए, इस्तिग़फार करने वाले को क्षमी एवं दयालु से माफी मांगनी चाहिए।इससे यह भी स्पष्ट होता है कि अल्लाह की वहदानियत का महत्व है, कि इस्तिग़फार केवल अल्लाह से ही मांगी जाए: ﴿وَٱسْتَغْفِرُوا۟ ٱللَّهَ﴾ "और अल्लाह से माफी मांगो"। इस्तिग़फार को किसी और की ओर निर्देशित नहीं किया जाना चाहिए।

फिर अल्लाह तआला अपने हज यात्रियों को अरकान अदा करने के बाद अल्लाह को याद करने का आदेश देते हुए कहता है: ﴿فَإِذَا قَضَيْتُم مَّنَٰسِكَكُمْ فَٱذْكُرُوا۟ ٱللَّهَ كَذِكْرِكُمْ ءَابَآءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا﴾ "फिर जब तुम अपने अरकान अदा कर लो, तो अल्लाह को याद करो जैसे तुम अपने माता-पिता को याद करते हो, बल्कि उससे भी ज्यादा"। अल्लाह अपने हाजियों को आदेश देता है कि वे अपने हज की समाप्ति के बाद उनका ज़िक्र करते रहें, जैसे एक बच्चा अपने माता-पिता को याद करता है, और उसके ज़बान पर दिन भर उनका नाम रहता है।(1)

यदि इसका मतलब बड़े लोगों के लिए भी हो, तो वे भी अपने माता-पिता को याद करते हैं जैसे: "मेरे पिता आए, मेरी माँ आई, मेरे पिता कहाँ हैं, मेरी माँ कहाँ हैं, मेरे पिता ने कहा, मेरी माँ ने कहा," लेकिन बच्चा अपने माता-पिता को अधिक याद करता है। इस तुलना में यह संकेत है कि अल्लाह का ज़िक्र कितना महत्वपूर्ण है, और इंसान को अल्लाह का ज़िक्र करते रहना चाहिए। बच्चा जब से उठता है, उसकी ज़बान पर उसके माता-पिता का नाम रहता है। जब भी उसे खाना चाहिए, वह रोता है और उसके माता-पिता का ज़िक्र करता है। जब भी वह खेल और मस्ती करता है, वह भी ऐसा करता है। इसी तरह, मुसलमान अपने खाने और पीने से पहले बिस्मिल्लाह के साथ अल्लाह का ज़िक्र करता है, तो वह ज़िक्र में होता है। अपने खाने और पीने के बाद, अल्हम्दुलिल्लाह के साथ अल्लाह का ज़िक्र करता है, तो वह भी ज़िक्र में होता है। इसी तरह, सोते समय, जागते समय, और अपनी हर नमाज़ से पहले और बाद में, अल्लाह का ज़िक्र करता है। अपने हर काम में अल्लाह का ज़िक्र करते रहना चाहिए। रसूलुल्लाह

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 250)।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम्हारी ज़बान अल्लाह के ज़िक्र से हमेशा ताज़ा रहे"।[1] बल्कि, इंसान को अल्लाह का ज़िक्र उस बच्चे से भी अधिक करना चाहिए जो अपने माता-पिता का ज़िक्र करता है, क्योंकि अल्लाह तआला कहते हैं: ﴿كَذِكۡرِكُمۡ ءَابَآءَكُمۡ أَوۡ أَشَدَّ ذِكۡرٗاۗ﴾ "जैसे तुम अपने माता-पिता का ज़िक्र करते हो या उससे भी ज्यादा"। हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हमें इस बात का अनुग्रह प्रदान करे कि हम अपने समय को उस के ज़िक्र और उस के शुक्र में बिताएं।

दूसरे दृष्टिकोण से, यह शिक्षात्मक, प्रशिक्षणात्मक, दावती, और यहाँ तक कि पेशेवर और प्रशासनिक रूप से भी लाभकारी है कि स्पष्टता के लिए बयान में व्याख्या का उपयोग करना कितना महत्वपूर्ण है, जैसा कि इस कुरआनी आयत में स्पष्ट है। तुलना एक आकर्षक और अर्थ को करीब लाने वाली विधि है, जो इंसान की समझ की गहराई को बढ़ाती है। यह भी स्पष्ट करता है कि तुलना का मतलब स्थिति में समानता नहीं है, बल्कि उस स्थिति में है जो अर्थ और चित्र को करीब लाती है, क्योंकि हमारे रब के ज़िक्र का स्थान सबसे महान और सबसे सम्मानजनक है।

फिर अल्लाह तआला लोगों की हालत को बयान करता है कि वे दुनिया और आखिरत की तलब में दो प्रकार के होते हैं। पहली किस्म के बारे में अल्लाह तआला ने इस आयत में फ़रमाया: ﴿فَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِي ٱلدُّنۡيَا وَمَا لَهُۥ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ مِنۡ خَلَٰقٖ﴾ (अर्थात, कुछ लोग ऐसे हैं जो यह कहते हैं: "ऐ हमारे रब, हमें दुनिया में दे।" लेकिन उनके लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं है)। यह वह लोग हैं जो दुनिया की जिंदगी की चमक-दमक, उसकी जरूरतों और कभी न खत्म होने वाली इच्छाओं में मग्न हो जाते हैं। ऐसे लोग अपनी दुआओं और उम्मीदों को केवल दुनिया तक ही सीमित कर देते हैं, और आखिरत को, जो सबसे स्थायी और श्रेष्ठ है, बिल्कुल भूल जाते हैं। इसके बाद अल्लाह तआला ने दूसरी किस्म के लोगों का ज़िक्र किया: ﴿وَمِنۡهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِي ٱلدُّنۡيَا حَسَنَةٗ وَفِي ٱلۡأٓخِرَةِ حَسَنَةٗ وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ ٢٠١﴾ (और कुछ लोग ऐसे हैं जो यह कहते हैं: "ऐ हमारे रब, हमें दुनिया में भलाई दे और आखिरत में भी भलाई दे, और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा"। यह लोग अपनी दुआओं में दुनिया और आखिरत दोनों का ध्यान रखते हैं और जहन्नम के अज़ाब से पनाह मांगते हैं। इससे पता चलता है कि कुछ लोगों की ख्वाहिशें छोटी होती हैं, जो केवल दुनिया तक सीमित रहती हैं। लेकिन कुछ की ख्वाहिशें ऊंची होती हैं, जो दुनिया के साथ-साथ आखिरत की भी फिक्र करते हैं। अल्लाह तआला दुनिया और आखिरत दोनों के लिए मांगने वाले बंदों को पसंद करता है। इस आयत से यह भी मालूम होता है कि दुनिया और आखिरत दोनों अल्लाह के मालिकाना हक

(1) तिर्मिज़ी (5/ 427-428) हदीस़ संख्या (3375)।

में हैं। बंदा इन्हें सिर्फ उसी से मांग सकता है। इस दुआ की विशेषता यह है कि यह हर प्रकार की भलाई को समेटे हुए है। "हसनह" का मतलब हर भलाई को शामिल करना है। जब कोई मोमिन यह दुआ करता है तो वह अल्लाह से दुनिया और आखिरत की भलाई और जहन्नम के अज़ाब से बचाव की दुआ करता है। अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है: "नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली दुआ यह थी: "रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या हसनह, व फ़िल-आखिरति हसनह, व क़िना अज़ाब-अन्नार (हमारे रब, हमें दुनिया में भलाई दे, और आख़िरत में भलाई दे, और हमें आग के अज़ाब से बचा)"।(1)

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمۡ نَصِيبٞ مِّمَّا كَسَبُواْۚ وَٱللَّهُ سَرِيعُ ٱلۡحِسَابِ ٢٠٢﴾ "उनके लिए उनके कर्मों का हिस्सा मिलेगा और अल्लाह जल्दी हिसाब लेने वाला है"। तफसीर में आया है कि यह दूसरा समूह, इस्लाम के समूह के लिए है, अर्थात उन्हें हज और दुआ का सवाब मिलेगा, क्योंकि मोमिन की दुआ इबादत है। और कहा गया कि " أُوْلَٰٓئِكَ उनके लिए" दोनों समूहों के लिए है, मोमिन के लिए उसके कर्म और दुआ का सवाब है, और काफिर के लिए उसके शिर्क और केवल दुनिया पर ध्यान देने का सजा है।(2) दोनों कथनों में यह स्पष्ट होता है कि क़ुरआन की कुछ व्याख्याएं विभिन्न दृष्टिकोणों को समेट सकती हैं, ताकि अधिक लाभ और उपयोगिता प्राप्त हो।

फिर आयत का अंत अल्लाह के अपने बंदों के हिसाब लेने की तेजी को स्पष्ट करता है: ﴿وَٱللَّهُ سَرِيعُ ٱلۡحِسَابِ﴾ "और अल्लाह जल्दी हिसाब लेने वाला है"। मुसलमान को यह समझना चाहिए कि अल्लाह का हिसाब इंसानों के हिसाब से नहीं मापा जा सकता, और न ही उनके मानकों से। अल्लाह ज्ञानवान और सक्षम हैं।

फिर अल्लाह तआला अपने जिक्र के महत्व को दोहराता है: ﴿وَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ فِيٓ أَيَّامٖ مَّعۡدُودَٰتٖۚ﴾ "और गिने-चुने दिनों में अल्लाह का जिक्र करो"। इसका मतलब है कि ईद के बाद मिना के तीन दिनों में नमाजों के बाद तकबीर पढ़ना। इन दिनों को जिक्र के साथ विशिष्ट करना उनके फजीलत का प्रमाण है, जिससे मुसलमान को इन दिनों में जिक्र का अधिकतम उपयोग करना चाहिए। दूसरी दृष्टि से, यह स्पष्ट करता है कि विशिष्टता का बयान कितना महत्वपूर्ण है, और शिक्षा, मार्गदर्शन और निर्देशन के दौरान इसकी आवश्यकता क्या है। फिर इस्लाम की उदारता को स्पष्ट करते हुए कहा गया है: ﴿فَمَن تَعَجَّلَ فِي يَوۡمَيۡنِ فَلَآ إِثۡمَ عَلَيۡهِ﴾ "जो दो दिनों में जल्दी कर ले, उस पर कोई पाप नहीं"। अल्लाह ने जल्दी करने वाले पर पाप को दूर

(2) बुख़ारी (4/ 169) ह़दीस़ संख्या (6389)।

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (2/ 287)।

कर दिया है। और कहा: ﴿وَمَن تَأَخَّرَ فَلَآ إِثۡمَ عَلَيۡهِۚ﴾ "और जो तीन दिनों तक ठहरता है, उस पर कोई पाप नहीं"। इसमें यह संकेत है कि तीसरे दिन तक ठहरने के लिए प्रेरित किया गया है, ﴿لِمَنِ ٱتَّقَىٰۗ وَٱتَّقُواْ﴾ "जो परहेजगारी करता है"। फिर अल्लाह तआला परहेजगारी का आदेश देता है: ﴿وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّكُمۡ إِلَيۡهِ﴾ "अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि तुम्हें उसकी ओर लौटना है"। इसमें दो बातों की याद दिलाई जाती है: पहला परहेजगारी का आदेश, और दूसरा उसकी ओर लौटने की याद। क्योंकि उसकी ओर लौटने में ऐसा होता है कि मोमिन परहेजगारी को अपनाता है, जो उसे भलाई करने और बुराई से बचने के लिए प्रेरित करता है। शिक्षात्मक, दावती और प्रशिक्षणात्मक दृष्टिकोण से, यह स्पष्ट करता है कि किसी चीज की अपरिहार्य परिणाम और परिणाम को बयान करना कितना महत्वपूर्ण है, और यह याद दिलाना कि क्या फायदेमंद है और पालन करने लायक है। क्योंकि आत्माएं इसकी आवश्यकता रखती हैं, क्योंकि उन्हें लापरवाही, छूट और भुलक्कड़पन का सामना करना पड़ सकता है। मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि वह हमें और हमारे मुसलमान भाइयों को सफलता, मार्गदर्शन और स्थिरता प्रदान करे।

﴿وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يُعۡجِبُكَ قَوۡلُهُۥ فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا وَيُشۡهِدُ ٱللَّهَ عَلَىٰ مَا فِي قَلۡبِهِۦ وَهُوَ أَلَدُّ ٱلۡخِصَامِ ٢٠٤ وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِي ٱلۡأَرۡضِ لِيُفۡسِدَ فِيهَا وَيُهۡلِكَ ٱلۡحَرۡثَ وَٱلنَّسۡلَۚ وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ ٱلۡفَسَادَ ٢٠٥ وَإِذَا قِيلَ لَهُ ٱتَّقِ ٱللَّهَ أَخَذَتۡهُ ٱلۡعِزَّةُ بِٱلۡإِثۡمِۚ فَحَسۡبُهُۥ جَهَنَّمُۖ وَلَبِئۡسَ ٱلۡمِهَادُ ٢٠٦ وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَشۡرِي نَفۡسَهُ ٱبۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ ٱللَّهِۚ وَٱللَّهُ رَءُوفُۢ بِٱلۡعِبَادِ ٢٠٧﴾ [سورة البقرة:٢٠٤-٢٠٧].

((हे नबी!) लोगों में ऐसा व्यक्ति भी है, जिसकी बात आपको सांसारिक विषय में भाती है तथा जो कुछ उसके दिल में है, वह उसपर अल्लाह को साक्षी बनाता है, जबकि बह बड़ा झगड़ालू है। तथा जब वह आपके पास से जाता है, तो धरती में उपद्रव मचाने का प्रयास करता है और खेती तथा पशुओं का विनाश करता है और अल्लाह उपद्रव से प्रेम नहीं करता। तथा जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो अभिमान उसे पाप पर उभार देता है। अतः उसके (दण्ड) के लिए नरक काफ़ी है और वह बहुत बुरा बिछौना है। तथा लोगों में ऐसा व्यक्ति भी है, जो अल्लाह की प्रसन्नता की खोज में अपना प्राण बेच देता है और अल्लाह अपने भक्तों के लिए अति करुणामय है)।

पिछली आयत से यह स्पष्ट होता है कि लोग दुनिया और आख़िरत की तलाश में कैसे होते हैं। और इन आयतों में अल्लाह तआला स्पष्ट करता है कि कुछ लोग होते हैं जो क़ुफ़्र को छिपाते हैं और इस्लाम को प्रकट करते हैं।

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह फ़रमाता है: ﴿وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يُعۡجِبُكَ قَوۡلُهُۥ فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا وَيُشۡهِدُ ٱللَّهَ عَلَىٰ مَا فِي قَلۡبِهِۦ وَهُوَ أَلَدُّ ٱلۡخِصَامِ ٢٠٤﴾ अल्लाह तआला अपने रसूल को मुनाफिकों की वास्तविकता बता रहा है। यह सभी मुनाफिकों के लिए सामान्य है, हालांकि यह विशेष रूप से कुछ मुनाफिकों के लिए उतरी है। यह वह प्रकार के लोग हैं जो अपने अंदर की बातों के विपरीत प्रकट करते हैं। वे अच्छे और सुंदर बातों को प्रकट करते हैं, और सबसे अच्छा बोलते हैं, और धर्म और मिल्लत में एकता दिखाते हैं। वे अपने सामने वाले को धोखा देते हैं, क्योंकि वे सच को छोड़कर झूठ बोलते हैं, और वे यह दावा करते हैं कि वे जो कहते हैं वह सच है, जबकि वे झूठे मुनाफिक हैं। बल्कि वे सबसे अधिक झगड़ालू हैं, और वे बुराई के साथ बहस करते हैं। उनके बातों का बाहरी हिस्सा मीठा है, लेकिन अंदर से बुरा और झूठा है।

इससे मुनाफिक की स्थिति का पता चलता है, जो इस खतरनाक रास्ते पर चलता है। वह ज़ुबान से इस्लाम, सहयोग और समर्थन का दावा करता है, जबकि उसके दिल में इस्लाम और मुसलमानों के लिए घृणा और नफरत होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि बातों को न मानकर कार्यों को देखना चाहिए, क्योंकि क्रियाएँ वास्तविकता का प्रमाण हैं और बातों की सच्चाई की कसौटी हैं। अल्लाह तआला का यह खुलासा मोमिनों के लिए इनकी हकीकत को स्पष्ट करता है, जिससे उन्हें सतर्क रहना चाहिए।

मुनाफिकों की दूसरी विशेषता है: ﴿وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِي ٱلۡأَرۡضِ لِيُفۡسِدَ فِيهَا وَيُهۡلِكَ ٱلۡحَرۡثَ وَٱلنَّسۡلَۗ﴾ जिस तरह से वे बातों में खोटे होते हैं, वैसे ही वे कार्यों में भी बुरे होते हैं। जब वे पीछे हटते हैं, तो उनका प्रयास और मेहनत ज़मीन में फसाद करना होता है। ﴿وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِي ٱلۡأَرۡضِ لِيُفۡسِدَ فِيهَا﴾ उनका फसाद व्यापक और विविध होता है, बातों और कार्यों में दोनों। उनका उद्देश्य खेती और जानवरों की नस्ल को नष्ट करना होता है ﴿وَيُهۡلِكَ ٱلۡحَرۡثَ﴾, जबकि खेती और जानवरों की नस्ल मानव जीवन के आधार हैं ﴿وَٱلنَّسۡلَۗ﴾। वे जानबूझकर लोगों की संसाधनों को नष्ट करते हैं। यह अल्लाह तआला की मरज़ी के विपरीत है, और वह इसे पसंद नहीं करते। अल्लाह तआला कहता है: ﴿وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ ٱلۡفَسَادَ﴾ "अल्लाह फसाद को पसंद नहीं करता"। इस कथन में यह स्पष्ट होता है कि यह धर्म फसाद को पसंद नहीं करता, और न ही इसे स्वीकार करता है, और न ही इसका आदेश देता है, बल्कि यह इसे निषिद्ध करता है और जो इसे करता है उसे दंडित करता है। कितना सम्माननीय धर्म है यह महान धर्म।

उनकी एक और विशेषता है कि वे पाप के साथ सत्य पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करते हैं: ﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُ ٱتَّقِ ٱللَّهَ أَخَذَتۡهُ ٱلۡعِزَّةُ بِٱلۡإِثۡمِۚ﴾ वह उन्हें उनके बुरे कर्मों और निंदनीय व्यवहार

से रोकने वाले निर्देशन को स्वीकार नहीं करता। जब उसे सलाह दी जाती है, और कहा जाता है: अल्लाह से डरो, क्योंकि तुम बुरे कर्म कर रहे हो, बुरे शब्द बोल रहे हो, और सही और सच्चाई की ओर लौटो, तो वह इनकार करता है, और पाप पर विजय प्राप्त करने की कोशिश में लग जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मुनाफिकों का खतरनाक प्रभाव समाज पर पड़ता है, और उनके गर्व का नकारात्मक प्रभाव सलाह देने वाले और सलाह पर होता है। अल्हाताला कहते हैं: ﴿فَحَسْبُهُۥ جَهَنَّمُۚ وَلَبِئْسَ ٱلْمِهَادُ﴾ "तो उसके लिए जहन्नम ही पर्याप्त है, और यह कितना बुरा ठिकाना है"। यह उसकी सजा और ठिकाना है। यह उसके लिए पर्याप्त सजा है, और यह एक बुरा ठिकाना और निवास स्थान है।

अल्लाह तआला ने इन लोगों की मानसिक और वास्तविक सच्चाइयों को उजागर किया है, और उनकी बुरी नीतियों को भी उजागर किया है। वे मीठी बातों के साथ आते हैं, लेकिन अंदर से वे बुराई और नफरत के साथ भरे होते हैं। इस्लाम और मुसलमानों के प्रति उनका कड़वा घृणा है। अल्लाह तआला ने यह भी स्पष्ट किया है कि उनका व्यवहार ज़मीन में फसाद फैलाने के प्रति है, विशेष रूप से लोगों के जीवन के साधनों को नष्ट करने के प्रति। यह उनकी नफरत और ईर्ष्या है जो उन्हें इस रास्ते पर ले जाती है, जो केवल बुरे और दुष्ट व्यक्ति से निकलती है। अल्लाह तआला ने स्पष्ट किया है कि वे सच्चाई को स्वीकार नहीं करते, चाहे उपदेश कितना भी मजबूत हो। अल्लाह तआला का आदेश देने के बाद ﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُ ٱتَّقِ ٱللَّهَ أَخَذَتْهُ ٱلْعِزَّةُ بِٱلْإِثْمِۚ﴾ वह पाप की सहायता करता है, और जानता है कि वह अंदर से बुराई के साथ है। अल्लाह तआला ने उसे सजा दी है कि उसका ठिकाना आग है। इससे मोमिनों को मुनाफिकों की स्थितियों और विशेषताओं के बारे में चेतावनी दी जाती है, ताकि वे उनसे बच सकें, और यह रास्ता न अपनाएं, ताकि विनम्रता मोमिनों का विशेषता हो सके।

फिर अल्लाह तआला दूसरे प्रकार के लोगों की विशेषताओं को स्पष्ट करते हैं: ﴿وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَشْرِى نَفْسَهُ ٱبْتِغَآءَ مَرْضَاتِ ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ رَءُوفٌۢ بِٱلْعِبَادِ﴾ "और कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह की प्रसन्नता के लिए अपनी जान देते हैं"। यह प्रकार के लोग अपने सबसे कीमती और मूल्यवान चीज़ों को अल्लाह की प्रसन्नता के लिए देते हैं, क़ुफ़्र और निफ़ाक से अपने आपको दूर करते हैं, भले ही उन्हें धन और प्रतिष्ठा खोनी पड़े, लेकिन वे अल्लाह की प्रसन्नता को प्राथमिकता देते हैं। प्रत्येक कीमत सस्ती होती है अल्लाह की प्रसन्नता के मुकाबले, जबकि पहला प्रकार के लोग सबसे सस्ते कीमतों के बदले में खुद को बेचते हैं, और सबसे सस्ते चीज़ों के लिए अपने आपको नष्ट करते हैं।

यह आयत एक महान पाठशाला है, जो इंसान को यह सिखाती है कि अगर जरूरत पड़े तो वह अल्लाह की रज़ा के लिए अपनी जान को बेचने के लिए तैयार हो जाए।

इसमें सुहैब रूमी रज़ियल्लाहु अन्हु का उदाहरण दिया गया है। यह आयत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में उतरी थी: जब सुहैब बिन सिनान रूमी रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम लाए और हिजरत करना चाहा, तो लोगों ने उन्हें उनके धन के साथ हिजरत करने से रोक दिया। उन्होंने उनसे कहा कि अगर वह अपना धन छोड़कर हिजरत करना चाहें, तो ऐसा कर सकते हैं। तब सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना धन उन्हें दे दिया और उनसे छुटकारा पा लिया। जब यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पता चली, तो आपने फ़रमाया: “सुहैब ने लाभ उठाया, सुहैब ने लाभ उठाया”।[1] उन्हें उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु और कुछ अन्य लोगों ने हर्रा के किनारे पर जाकर मुलाकात की और उनसे कहा: “तुम्हारा सौदा लाभकारी हुआ”।[2]

आयत का समापन अल्लाह तआला की एक विशेषता को स्पष्ट करते हुए होता है: ﴿وَٱللَّهُ رَءُوفُۢ بِٱلۡعِبَادِ﴾ "और अल्लाह अपने बंदों पर अत्यंत कृपालु है।" अल्लाह तआला अपनी कृपा के कारण अपने बंदों को मार्गदर्शन देता है और उन्हें सफलता प्रदान करता है। वह काफिर, मुनाफिक और पापी पर भी धैर्य रखता है। अगर यह कृपा और सहनशीलता न होती, तो काफिर और पापी सभी नष्ट हो जाते।

हम अल्लाह तआला की कृपा और दयालुता के लिए उसका धन्यवाद करते हैं, जो वह हम पर और सभी मानव जाति पर करता है।

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱدۡخُلُواْ فِي ٱلسِّلۡمِ كَآفَّةٗ وَلَا تَتَّبِعُواْ خُطُوَٰتِ ٱلشَّيۡطَٰنِۚ إِنَّهُۥ لَكُمۡ عَدُوّٞ مُّبِينٞ ٢٠٨ فَإِن زَلَلۡتُم مِّنۢ بَعۡدِ مَا جَآءَتۡكُمُ ٱلۡبَيِّنَٰتُ فَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ٢٠٩ هَلۡ يَنظُرُونَ إِلَّآ أَن يَأۡتِيَهُمُ ٱللَّهُ فِي ظُلَلٖ مِّنَ ٱلۡغَمَامِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ ٱلۡأَمۡرُۚ وَإِلَى ٱللَّهِ تُرۡجَعُ ٱلۡأُمُورُ ٢١٠﴾ [سورة البقرة:٢٠٨-٢١٠].

(हे ईमान वालो! तुम सर्वथा इस्लाम में प्रवेश कर जाओ और शैतान की राहों पर मत चलो, निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है। फिर यदि तुम खुले तर्कों (दलीलों) के आने के पश्चात विचलित हो गये, तो जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तथा तत्वज्ञ है। क्या (इन खुले तर्कों के आ जाने के पश्चात्) वे इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उनके समक्ष अल्लाह तथा फ़रिश्ते बादलों के छत्र में आ जायें और निर्णय ही कर दिया जाये? और सभी विषय अल्लाह ही की ओर फेरे जायेंगे)।

(2) स़हीह इब्न -ए- हिब्बान, हदीस़ संख्या (7082)।

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 254)।

फिर अल्लाह अपने मोमिन बंदों को संबोधित करते हुए कहता है: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱدْخُلُوا۟ فِى ٱلسِّلْمِ كَآفَّةً﴾ (हे ईमान वालो! तुम सर्वथा इस्लाम में प्रवेश कर जाओ)। आयत की शुरुआत मोमिनों को निदा (पुकार) के रूप में संबोधित करते हुए होती है, और उन्हें ईमान के गुण के साथ संबोधित किया जाता है, जो अल्लाह की ओर से एक सम्मान है कि वह अपने मोमिन बंदों को इस ऊंची स्थिति के साथ बुलाते हैं। इस निदा में इस प्रकार का अंदाज, मोमिन को ध्यान देने और सुनने के लिए प्रेरित करता है। अल्लाह उन्हें आदेश देते हैं: ﴿ٱدْخُلُوا۟ فِى ٱلسِّلْمِ كَآفَّةً﴾ "इस्लाम में पूरे के पूरे प्रवेश करो"। इसका मतलब है कि अल्लाह की पूरी तरह से आज्ञा का पालन करो, और बिना किसी अपवाद के, ईमान की शाखाओं और इस्लाम के विधानों को लागू करो। सभी कर्मों और भलाई के चेहरों को पूरा करो। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि इस्लाम एक अखंडित संपूर्णता है, और ईमान की सभी शाखाओं और शरीअत के विधानों का पालन अनिवार्य है। इसे इच्छा और मनमानी के आधार पर विभाजित नहीं किया जा सकता, जैसे कि किसी चीज़ को अपनाना और किसी चीज़ को छोड़ना, या कभी इसे अपनाना और कभी इससे गाफिल रहना। बल्कि इस्लाम एक अखंडित संपूर्णता है। " كَآفَّةً काफ़्फ़ा" शब्द का मतलब भी है कि आप सभी इस्लाम की शाखाओं और शरीअत के विधानों का पालन करो, ताकि इसमें से किसी भी चीज़ से कोई भी पीछे न रहे। यही इस्लाम है।[1]

चाहे " كَآفَّةً काफ़्फ़ा" शब्द मोमिनों से संबंधित हो या इस्लाम से, इसका दोनों ही मामलों में महत्वपूर्ण और समीचीन अर्थ है। यह हमारे रब की महान बातें हैं और इसकी बयान की क्षमता का चमत्कार है।

फिर अल्लाह मोमिनों को शैतान का अनुसरण न करने का आदेश देता है: ﴿وَلَا تَتَّبِعُوا۟ خُطُوَٰتِ ٱلشَّيْطَٰنِ﴾ "और शैतान के कदमों का अनुसरण न करो"। " خُطُوَٰتِ कदमों" शब्द यह दर्शाता है कि शैतान धीरे-धीरे इंसान को पाप की ओर ले जाता है, एक कदम से दूसरे कदम की ओर। इस प्रकार, मोमिनों को उनके दुश्मन से सावधान किया गया है, क्योंकि वह उन्हें धीरे-धीरे पाप की ओर ले जाता है।

फिर अल्लाह अपने पापी बंदों को चेतावनी देता है: ﴿فَإِن زَلَلْتُم مِّنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ ٱلْبَيِّنَٰتُ﴾ (फिर यदि तुम खुले तर्कों (दलीलों) के आने के पश्चात विचलित हो गये) ज़लल

(1) इब्न -ए- कसीर रहिमहुल्लाह ने इस संबंध में विस्तार से विद्वानों को कथनों को नकल किया है (1/ 255), इसी प्रकार इब्नुल जौज़ी रहिमहुल्लाह ने अपनी किताब "ज़ाद अल-मसीर फ़ी इल्म अत-तफ़सीर" (1/ 205) में भी इसका उल्लेख किया है।

(الزلل) से बचो, जबकि तुम्हारे पास ज्ञान आ चुका है, और स्पष्ट हो चुका है कि क्या आवश्यक है और क्या निषिद्ध है। "(الزلل) ज़लल (विचलन)" शब्द यह दर्शाता है कि स्थिरता के बाद विचलन होता है। यह उस समय होता है जब मख़लूक़ ज़रूरी चीज़ों से ज़लल करता है।

तब अल्लाह उसे ज़लल से सावधान कर रहा है, जो स्पष्ट बातें आने के बाद अल्लाह की आज्ञा और आदेश से विचलित होता है: ﴿فَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ﴾ (तो जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तथा तत्वज्ञ है)। यह अल्लाह तआला के महान और ऊँचे दर्जे का बयान है, कि वह अज़ीज़ (परम-शक्तिशाली) और हकीम (परम-ज्ञानी) है। इस बात को जानना कि अल्लाह अज़ीज़ और हकीम है, यह आवश्यक करता है कि उसकी आज्ञा का पालन किया जाए और उसकी नाफरमानी से बचा जाए। अज़ीज़ वह है जिसके सामने हर चीज़ विनम्र और आज्ञाकारी हो जाती है। अज़ीज़ वह है जो सब पर क़ाबू रखता है और जिसे कोई पराजित नहीं कर सकता। अज़ीज़ वह है जो अपने दुश्मनों से शक्ति और कठोरता से बदला लेता है। उसका दर्जा ऊँचा और सम्मानित है, जिसमें महानता, शक्ति, ऊँचाई और असीम क्षमता समाहित हैं। वह हकीम है, अपने कानूनों, आदेशों, मना करने और अपने हर प्रबंधन में। न तो कोई अल्लाह जैसा अज़ीज़ हो सकता है और न कोई अल्लाह जैसा हकीम। इससे यह ज़रूरी होता है कि उसके अधिकार में, जो इतनी महान और डरावनी विशेषताओं वाला है, फिसलन (ज़लल) से बचा जाए। यह शैली (आंदाज़) शर्म और डर को एक साथ उकसाती है, ध्यान, सतर्कता और उसकी नाफरमानी से बचने के लिए प्रेरित करती है। तो अल्लाह के क़ुरआन में कितने महान, मधुर और सुंदर तरीके हैं! खासतौर से यह देखते हुए कि अल्लाह ने अपनी पिछली आयतों में ही ईमान वालों को संबोधित करना शुरू किया ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ﴾ (हे ईमान वालो!) यह इस बात को दर्शाता है कि इस संबोधन में ईमान वालों के भीतर छिपे हुए ईमान को उत्तेजित करने का उद्देश्य है, क्योंकि आप ही वो ईमानदार लोग हैं जिनके लिए यह उचित नहीं है कि वे स्पष्ट प्रमाण आने के बाद भी किसी तरह की गलती (ज़लल) करें।

फिर अल्लाह तआला इस्लाम में प्रवेश करने में विलंब करने वालों से इनकार वाले सवाल के रूप में कहता है: ﴿هَلۡ يَنظُرُونَ إِلَّآ أَن يَأۡتِيَهُمُ ٱللَّهُ فِي ظُلَلٖ مِّنَ ٱلۡغَمَامِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ ٱلۡأَمۡرُۚ وَإِلَى ٱللَّهِ تُرۡجَعُ ٱلۡأُمُورُ ٢١٠﴾ (क्या (इन खुले तर्कों के आ जाने के पश्चात्) वे इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उनके समक्ष अल्लाह तथा फ़रिश्ते बादलों के छत्र में आ जायें और निर्णय ही कर दिया जाये? और सभी विषय अल्लाह ही की ओर फेरे जायेंगे) ये लोग जो स्पष्ट प्रमाणों के बावजूद अपने पापों, कफिर और शैतान के कदमों का अनुसरण करते हैं, सत्य से मुंह मोड़ते हैं, क्या वे इंतजार कर रहे हैं कि कयामत के दिन फैसला होगा और हर कर्म करने वाले को उसके कर्म के अनुसार इनाम या सजा मिलेगी: ﴿وَقُضِيَ ٱلۡأَمۡرُۚ وَإِلَى ٱللَّهِ تُرۡجَعُ ٱلۡأُمُورُ﴾ (और निर्णय ही कर दिया

जाये? और सभी विषय अल्लाह ही की ओर फेरे जायेंगे) क्या वे उस समय ईमान लाएँगे, जबकि उस समय का ईमान कोई लाभ नहीं देगा, क्योंकि तब फैसला हो जाएगा और सृजनों के बीच विभाजन हो जाएगा। क्या वे वही इंतजार कर रहे हैं कि अल्लाह उनके लिए हिसाब लाएँगे जैसा कि उन्होंने वादा किया है?

इस इनकार वाले प्रश्न के साथ अल्लाह कि यह निदा अल्लाह की ओर से इस्लाम में प्रवेश करने में विलंब करने वालों के लिए सोचने और विचार करने की प्रेरणा है। अल्लाह ने इस्तिंकारी सवाल के रूप में बात की है, ताकि वे दुनिया की व्यस्तताओं से हटकर आख़िरत के बारे में सोचें। इसका उद्देश्य उनकी मानसिक उत्तेजना को बढ़ाना है, ताकि वे सोचें, विचार करें और सच्चाई की ओर लौटें, जो उन्हें इस्लाम में प्रवेश करने की ओर प्रेरित करती है। अल्लाह ने कयामत के दिन की एक छवि वर्णित की है जो मस्तिष्क और भावना को इस महान दृश्य के भय से उत्तेजित करती है। आयत का अंत अल्लाह के इस कथन के साथ होता है: ﴿وَإِلَى ٱللَّهِ تُرْجَعُ ٱلْأُمُورُ﴾ "और सब मामलों की वापसी अल्लाह की ओर है"। अल्लाह की ओर सभी मामलों का लौटना होता है, और सृजन के उसकी ओर लौटने से हिसाब और इनाम-सजा का प्रबंधन होता है। सभी अल्लाह की पाक है, जिसने अपनी महान पुस्तक में मनुष्य के लाभ के लिए, आदेश, निषेध, निर्देशन और बयान के माध्यम से, और शिक्षण और स्मरण के माध्यम से, और विभिन्न मानसिक और भावनात्मक उत्तेजना के माध्यमों का उपयोग किया है।

﴿سَلْ بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ كَمْ ءَاتَيْنَٰهُم مِّنْ ءَايَةٍۭ بَيِّنَةٍۗ وَمَن يُبَدِّلْ نِعْمَةَ ٱللَّهِ مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَإِنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ﴿٢١١﴾ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ۘ وَٱلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ فَوْقَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِۗ وَٱللَّهُ يَرْزُقُ مَن يَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾﴾ [سورة البقرة:٢١١-٢١٢].

(बनी इस्राईल से पूछो कि हमने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दीं? इसपर भी जिसने अल्लाह की अनुकम्पा को, उसके अपने पास आ जाने के पश्चात् बदल दिया, तो अल्लाह की यातना भी बहुत कड़ी है। काफ़िरों के लिए सांसारिक जीवन शोभनीय (मनोहर) बना दिया गया है तथा जो ईमान लाये ये उनका उपहास करते हैं और प्रलय के दिन अल्लाह के आज्ञाकारी उनसे उच्च स्थान पर रहेंगे तथा अल्लाह जिसे चाहे, अगणित आजीविका प्रदान करता है)।

फिर क़ुरआन का शैली और संदर्भ बनी इस्राईल की ओर लौटता है, जिसमें अल्लाह तआला बनी इस्राईल पर अपनी नेमत को स्पष्ट करता है, जिन्होंने नेमत को बदल कर पाप को अपना लिया: ﴿سَلْ بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ كَمْ ءَاتَيْنَٰهُم مِّنْ ءَايَةٍۭ بَيِّنَةٍۗ وَمَن يُبَدِّلْ نِعْمَةَ ٱللَّهِ مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَإِنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ﴿٢١١﴾﴾ (बनी इस्राईल से पूछो कि हमने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दीं? इसपर भी

जिसने अल्लाह की अनुकम्पा को, उसके अपने पास आ जाने के पश्चात् बदल दिया, तो अल्लाह की यातना भी बहुत कड़ी है) यह आयत अल्लाह के इस कथन के साथ शुरू होती है: ﴿سَلْ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ﴾ "पूछो बनी इस्राईल से"। यह संबोधन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को किया गया है, और बनी इस्राईल से यह सवाल उपहास और ताने के रूप में किया गया है।[1]

यह बनी इस्राईल के ईमान न लाने पर सांत्वना देता है, उनके हाल और गुणों का बयान करके जो उन्होंने धर्म की नेमत को बदल कर किया, जबकि उन्हें स्पष्ट और महान निशानियाँ दी गई थीं। "كَمْ कम" शब्द बाहुल्यता का संकेत देता है: ﴿كَمْ ءَاتَيْنَٰهُم مِّنْ ءَايَةٍۭ بَيِّنَةٍ﴾ "हमने उन्हें कितनी स्पष्ट निशानियाँ दीं"। चाहे वे महान निशानियाँ हों, जैसे: मूसा की छड़ी और हाथ की सफेदी, समुद्र का विभाजन, और मन्न और सलवा, फिर भी उन्होंने अपने पुस्तकों को बदल दिया, और परिणामस्वरूप अपने धर्म को बदल दिया। इसमें यह संकेत है कि बनी इस्राईल को जो भी निशानियाँ मिलीं, वे उनसे लाभ नहीं उठा सके, और नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के संदेश को भी उन्होंने नहीं अपनाया। हालांकि उनमें से गिनती के लोगों ने इस्लाम कबूल किया, लेकिन सामान्य फैसला उन पर लागू होता है।

इसमें यह संकेत और चेतावनी है कि जो भी अल्लाह की नेमतों को बदल देता है, जिसमें धर्म की नेमत भी शामिल है, तो अल्लाह का दण्ड बहुत कठोर है। इस का एक लाभ यह है कि धर्म एक महान और सम्माननीय नेमत है, जो विश्वास, कार्य और अल्लाह का शुक्र करने के अधिकार को पूरा करना आवश्यक बनाता है। जिन्होंने धर्म को बदल दिया, उनके लिए कड़ी सज़ा यह दर्शाती है कि यह कितना महान है, और इसे बदलने की खतरा कितनी गंभीर है। इसलिए इसे सुरक्षित रखना आवश्यक है, क्योंकि यह अल्लाह की सज़ा से बचने का मार्ग है।

इमाम क़ुर्तुबी रहिमहुल्लाह ने कहा है कि अल्लाह के इस कथन: ﴿وَمَن يُبَدِّلْ نِعْمَةَ ٱللَّهِ مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ﴾ (जिसने अल्लाह की अनुकम्पा को, उसके अपने पास आ जाने के पश्चात् बदल दिया) का उपयोग सभी लोगों के लिए सामान्य है, हालांकि यह बनी इस्राईल के लिए विशेष रूप से है, क्योंकि उन्होंने अपनी पुस्तकों को बदल दिया, और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आदेश को नकारा। तो यह शब्द सभी अल्लाह की नेमत के बदलने वालों पर लागू होता है। तबरी ने कहा है: यहाँ नेमत का मतलब इस्लाम है। यह पहले के निकट है। इसमें काफिर क़ुरैश भी शामिल हैं, क्योंकि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का उन पर भेजा जाना उनके लिए नेमत थी, और उन्होंने इसे कबूल करने और इसके लिए शुक्र करने के बजाय कफिर

(2) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 20)।

किया।(1) विद्वानों की समझ इस आयत के अर्थ के अनुसार है कि नियम का आधार है: शब्द का सामान्य होना, विशेष कारण नहीं। अल्लाह ने अपनी पुस्तक में जो कुछ भी उल्लेख किया है, उसका उद्देश्य कार्य करना है, न कि केवल समाचार जानना। इससे यह भी समझ में आता है कि अल्लाह की पुस्तक में हर अच्छाई शिक्षा और कार्य के लिए है।

फिर सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह फ़रमाता है: ﴿ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا ﴾ (काफ़िरों के लिए सांसारिक जीवन शोभनीय (मनोहर) बना दिया गया है) अल्लाह बताता है कि जिन्होंने कुफ़्र किया और उसके आदेश को नकारा, उनके लिए दुनिया की जिंदगी को शोभनीय बना दिया गया है। इसलिए उनके आंखों और दिलों में यह सजावट हो गई है, और वे इससे संतुष्ट और आराम में हैं। इस प्रकार, उनकी इच्छाएँ, उनके कार्य, सभी इसके लिए होते हैं, और उन्होंने मोमिनों को तुच्छ समझा और उनका मजाक उड़ाया।(2) यह संकेत देता है कि अल्लाह की शरीअत को नकारने वाले काफिर के लिए सजावट की एक प्रकार की सजा है। क्योंकि दुनिया उनके आंखों और दिलों में इतनी सजती है कि वे अल्लाह के मोमिन बंदों का मजाक उड़ाते हैं: ﴿ وَيَسْخَرُونَ مِنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ﴾ "और वे मोमिनों का मजाक उड़ाते हैं"। यह दुनिया की सजावट के फितना से सावधान रहने का संकेत देता है। यह भी संकेत देता है कि जो दुनिया को आख़िरत से बेहतर मानते हैं, वे उन लोगों का मजाक उड़ाते हैं जिन्होंने आख़िरत को दुनिया से बेहतर माना। यह दिखाता है कि मजाक उड़ाना काफिरों का हर समय और हर जगह का तरीका है, और अल्लाह ने इसे संकेतित किया है। इसलिए मुसलमान को काफिरों के मजाक की परवाह नहीं करनी चाहिए, और उन्हें खुश करने के लिए उन चीजों को तुच्छ समझने की कोशिश नहीं करनी चाहिए जिनका वे मजाक उड़ाते हैं। यह भी संकेत देता है कि मजाक उड़ाने का तरीका काफिरों का एक साधन है ताकि वे अल्लाह की राह से लोगों को हटा सकें। इसलिए मोमिनों को इससे सावधान रहना चाहिए। ताकि वह उस स्थान पर हों जिस बारे में अल्लाह कहते हैं: ﴿ وَٱلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ فَوْقَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ﴾ (और प्रलय के दिन अल्लाह के आज्ञाकारी उनसे उच्च स्थान पर रहेंगे) परहेज़गार ऊँचे स्थानों में होंगे, स्थायी नेमत का आनंद लेते हुए, और काफिर नीच स्थानों में, अलग-अलग प्रकार के दर्द और संकट का सामना करते हुए। यह मोमिनों को उनके धर्म में काफिरों से जो सामना होता है, उसमें धैर्य को प्रोत्साहित करता है, और यह संकेत देता है कि अंतिम परिणाम मोमिन के लिए सबसे अच्छा होता है, जो उसे अल्लाह के तौफीक और रहमत के साथ बेहतरीन और सबसे ऊँचे स्थान प्रदान करता है।

(2) पिछला संदर्भ (3/ 20-21)।

(1) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 167)

फिर अल्लाह एक महत्वपूर्ण बात स्पष्ट करता है, जो है रोज़ी का स्रोत: ﴿وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾ (तथा अल्लाह जिसे चाहे, बेहिसाब आजीविका प्रदान करता है) इसमें रोज़ी की वास्तविकता और उसके मूल स्रोत का बयान है, और इसमें मोमिन को प्रोत्साहन और प्रेरणा है कि वह उस से रोज़ी मांगे जो इसका सच्चा मालिक है। दुनिया और आख़िरत की रोज़ी अल्लाह के हाथ में है, जिससे आवश्यक है कि मोमिन अपने रब से दुनिया और आख़िरत की रोज़ी और धर्म पर स्थिरता की दुआ मांगे, क्योंकि वही देने वाला है। आयत में यह भी बताया गया है कि अल्लाह जिसे चाहे बिना हिसाब के रोज़ी देता है, और बंदे के काम के समान नहीं। अल्लाह जब देता है तो बहुत क्रीम होता है, उसका देना बहुत अधिक और महान होता है, बिना हिसाब के। बंदा कितना भी आज्ञापालन करे, वह अल्लाह के सामने थोड़ा है, और अल्लाह जो बंदे को देता है वह उससे अधिक है जितना बंदा अपने रब की इबादत और आज्ञापालन करता है। कोई तुलना नहीं है। अल्लाह का देना दुनिया और आख़िरत दोनों में बहुत अधिक है। हम अल्लाह से उसका फज़्ल, क़रम और रह़मत (अनुग्रह, दया एवं कृपा) मांगते हैं।

﴿كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيِّينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنزَلَ مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۖ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهِ ۗ وَاللَّهُ يَهْدِي مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢١٣﴾﴾ [سورة البقرة:٢١٣]

((आरंभ में) सभी मानव एक ही (स्वाभाविक) सत्धर्म पर थे। (फिर विभेद हुआ) तो अल्लाह ने नबियों को शुभ समाचार सुनाने और (अवज्ञा) से सचेत करने के लिए भेजा और उनपर सत्य के साथ पुस्तक उतारी, ताकि वे जिन बातों में विभेद कर रहे हैं, उनका निर्णय कर दे। और आपकी दुराग्रह के कारण उन्होंने ही विभेद किया, जिन्हें (विभेद निवारण के लिए) ये पुस्तक दी गयी। (अल्बत्ता) जो ईमान लाये, अल्लाह ने उस विभेद में उन्हें अपनी अनुमति से सत्पथ दर्शा दिया और अल्लाह जिसे चाहे, सत्पथ दर्शा देता है)।

अल्लाह तआला ने आदम अलेहिस्सलाम के बाद से लेकर जब तक रसूलों को भेजा, तब तक लोगों की हालत को स्पष्ट किया है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيِّينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ﴾ "लोग एक ही उम्मत थे, फिर अल्लाह ने नबी भेजे, खुशखबरी देने वाले और डराने वाले।" इसका अर्थ है कि लोगों का मूल हाल यह था कि वे सभी एक उम्मत थे, आदम अलेहिस्सलाम के धर्म पर। फिर समय के साथ वे बढ़े, और उनके बीच मतभेद और विवाद बढ़े, पंथ का अवतरण हुआ और मूर्तियों की पूजा शुरू हो गई। तो

अल्लाह तआला ने नूह अलेहिस्सलाम को भेजा, जो पहला रसूल थे जिन्हें अल्लाह तआला ने लोगों के पास भेजा।

इस आयत से प्राप्त होने वाली एक महत्वपूर्ण शिक्षा यह है कि अल्लाह तआला ने लोगों की स्थिति को दो शब्दों में स्पष्ट किया: "أُمَّةً وَاحِدَةً एक उम्मत", फिर उनकी स्थिति को स्पष्ट करते हुए, रसूलों को भेजने के कारण और उद्देश्य को बताया: ﴿فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيِّينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ﴾ "फिर अल्लाह ने नबी भेजे, खुशखबरी देने वाले और डराने वाले।" इस आयत में रसूलों के संदेश का सार दो शब्दों में प्रस्तुत किया गया है: ﴿مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ﴾ "खुशखबरी देने वाले और डराने वाले," और यह क़ुरआन के महान भाषाई और व्याख्यात्मक चमत्कारी अद्वितीयता को दर्शाता है। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है: "नूह और आदम (अलैहिमस्सलाम) के बीच दस सदियाँ थीं, सभी सत्य के मार्ग पर थे, फिर वे भटक गए, तो अल्लाह ने नबी भेजे, खुशखबरी देने वाले और डराने वाले"।[1]

यह इस बात को स्पष्ट करता है कि लोगों को अपने धर्म में पुनर्निर्माण की आवश्यकता थी, क्योंकि उनके बीच मतभेद उत्पन्न हो गए थे। जैसे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है: "अल्लाह इस उम्मत के लिए हर सौ साल के अंत में एक ऐसे व्यक्ति को भेजेगा जो उसके धर्म का पुनर्निर्माण करेगा"।[2] और यदि धर्म में यह मतभेद होते हैं, तो यह और भी अधिक स्वाभाविक है कि वे जीवन के अन्य पहलुओं, सामाजिक संबंधों, पेशे और अन्य मामलों में भी भिन्नता रखें। इसलिए यह आयत इस बात का संकेत देती है कि समाज और उम्मत की एकता के लिए इन तथ्यों से निपटना आवश्यक है। लोग समय-समय पर नवीनीकरण की आवश्यकता महसूस करते हैं, चाहे वह उम्मत के स्तर पर हो या पेशेवर और सामान्य हितों के स्तर पर।

इस पाक आयत के माध्यम से, अल्लाह तआला ने नबीओं के कार्य को स्पष्ट किया, जैसा कि वह कहता है ﴿مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ﴾ "खुशखबरी देने वाले और डराने वाले" ताकि यह स्पष्ट हो सके कि नबी अपनी उम्मत को जन्नत की खुशखबरी देते हैं और गुनाहगारों को दोज़ख से डराते हैं, और इसके साथ-साथ वह अल्लाह के द्वारा निर्धारित रास्ते को स्पष्ट करते हैं। यह इस बात को भी स्पष्ट करता है कि उलमा और दावत का कार्य भी नबियों के कार्य के समान है, अर्थात वे लोगों को सही रास्ता दिखाते हैं, लेकिन वे हिदायत देने वाले नहीं होते, बल्कि वे अल्लाह के द्वारा अंबिया पर उतारी गई किताबों के माध्यम से लोगों को सही रास्ता बताते हैं,

(2) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 257)।

(1) अबू दावूद (4/ 480) हदीस़ संख्या (4291)।

जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा है: ﴿وَأَنزَلَ مَعَهُمُ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ﴾ (और उनपर सत्य के साथ पुस्तक उतारी) यह दिखाता है कि नबी अपने खुद के विचारों से धर्म में कोई निर्णय नहीं करते, बल्कि वह जो कुछ भी उन पर उतारा गया है, उसी के आधार पर काम करते हैं, और इसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि एक सच्चा और ज्ञानी व्यक्ति, जो अल्लाह के सिद्धांतों पर आधारित हो, वही सही मार्गदर्शन कर सकता है। यह यह दर्शाता है कि अल्लाह तआला का धर्म वही है जो अल्लाह तआला ने सच के रूप में भेजा है। जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा है: ﴿وَأَنزَلَ مَعَهُمُ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ﴾ (और उनपर सत्य के साथ पुस्तक उतारी)

फिर अल्लाह तआला ने यह बताया कि नबियों का कार्य यह था कि वे लोगों के बीच किसी विवाद में निर्णय लेते थे ताकि उन्हें पहले जैसी एकता में वापस लाया जा सके, जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा: ﴿وَأَنزَلَ مَعَهُمُ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ ٱلنَّاسِ فِيمَا ٱخْتَلَفُوا۟ فِيهِ﴾ (और उनपर सत्य के साथ पुस्तक उतारी, ताकि वे जिन बातों में विभेद कर रहे हैं, उनका निर्णय कर दे) यह इस बात को दर्शाता कि लोग केवल एकता प्राप्त कर सकते हैं अगर वे उस चीज़ की ओर वापस लौटें जो उन्हें एकजुट करती है, अर्थात अल्लाह की किताब और उसके नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत। और किताब पूरी तरह से सही है, और अल्लाह ने उसे " بِٱلْحَقِّ सच के साथ" भेजा है। फिर अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट किया कि जो लोग किताब आने के बाद भी सही मार्ग पर नहीं आए, उनके बीच यह मतभेद केवल उनकी बगावत के कारण था, जैसा कि अल्लाह तआला कहता है: ﴿وَمَا ٱخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا ٱلَّذِينَ أُوتُوهُ مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ ٱلْبَيِّنَٰتُ﴾ "और वे जिन्होंने किताब को पाया, उनमें से कुछ ने उस पर आपस में विवाद किया, यह केवल उनके आपसी बगावत के कारण था।" बगावत ही वह कारण था, जिसने कुछ लोगों को दूसरे लोगों से भेदभाव करने के लिए प्रेरित किया, और यह इस बात को साबित करता है कि बगावत एक बहुत बड़ा कारण है, जो समाज और उम्मत को विभाजित करता है, और यह उसे बर्बाद कर सकता है। बगावत में अत्याचार, सीमाओं का उल्लंघन, अन्याय और दूसरों से ऊंचा होने की भावना होती है।

फिर अल्लाह तआला ने इस उम्मत पर एहसान किया कि उन्हें उस सही मार्ग पर हिदायत दी, जिस पर पहले की उम्मतों में विवाद हुआ था, जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा है: ﴿فَهَدَى ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لِمَا ٱخْتَلَفُوا۟ فِيهِ مِنَ ٱلْحَقِّ بِإِذْنِهِۦ﴾ पहले तो हिदायत अल्लाह का एक बड़ा उपकार है, जैसा कि अल्लाह तआला कहता है: ﴿فَهَدَى ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟﴾ "फिर अल्लाह ने विश्वास करने वालों को हिदायत दी।" और फिर यह हिदायत अल्लाह की इच्छा और ज्ञान के अनुसार होती है: ﴿بِإِذْنِهِۦ﴾ "अपनी इच्छा से", क्योंकि अल्लाह को अपने भक्तों का ज्ञान होता

है और वह उन्हें वही हिदायत देता है, जो उन्हें उनकी भलाई के लिए चाहिए, और यह उसी के अनुसार होता है, जिसे वह तय करता है। इसलिए हम अल्लाह का धन्यवाद करते हैं और उसकी कृपा का आभार व्यक्त करते हैं। यह इस बात को भी दर्शाता है कि बगावत इंसान को सही मार्ग से भटकाती है और उसे उसकी स्पष्ट और सच्ची राह से दूर कर देती है, जो अल्लाह तआला की ओर से आई है, और यह बुराई, घमंड, और दूसरों के ऊपर खुद को श्रेष्ठ दिखाने की भावना से उत्पन्न होती है। अगर लोग आपस में अधिकारों को लेकर मतभेद करते हैं, तो यह स्थिति और भी जटिल हो जाती है। इसलिए यह आयत यह बताती है कि किसी भी तरह के विवाद से बचने के लिए हमें हमेशा सच्चाई का अनुसरण करना चाहिए, और हमें बगावत और घमंड से बचना चाहिए, क्योंकि ये बुराई और दुराचार का कारण बन सकते हैं।

तथा मतभेद के उदाहरणों में से यह है कि वे लोग शुक्रवार के दिन में मतभेद करते थे, यहूदी ने शनिवार को चुना, और ईसाई ने रविवार को, जबकि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को शुक्रवार का दिन दिया। और वे क़िबला में भी मतभेद करते थे, ईसाई लोग पूरब की तरफ़ मुंह करते थे, और यहूदी क़ुद्स की तरफ़, जबकि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को सही क़िबला दिखाया। और वे नमाज़ में भी मतभेद करते थे, कुछ लोग रुकू करते थे, लेकिन सजदा नहीं करते थे, और कुछ लोग सजदा करते थे, लेकिन रुकू नहीं करते थे, कुछ लोग नमाज़ पढ़ते थे जबकि वे बात करते थे, और कुछ लोग चलते हुए नमाज़ पढ़ते थे, जबकि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को इन सभी में सही रास्ता दिखाया। और वे उपवास में भी मतभेद करते थे, कुछ लोग दिन के कुछ हिस्से का उपवास करते थे, और कुछ लोग कुछ खाना छोड़ते थे, जबकि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को उपवास का सही तरीका बताया। और वे इब्राहीम अलेहिस्सलाम के बारे में भी मतभेद करते थे, यहूदियों ने कहा कि वह यहूदी थे, और ईसाइयों ने कहा कि वह ईसाई थे, जबकि अल्लाह तआला ने उन्हें हनीफ़ और मुसलमान बनाया, और अल्लाह तआला ने मुसलमानों को इस सही रास्ते पर लाया। और वे ईसा अलेहिस्सलाम के बारे में भी मतभेद करते थे, यहूदियों ने उन्हें नकारा और उन पर बड़ा झूठ बोला, और ईसाइयों ने उन्हें भगवान और पुत्र बना दिया, जबकि अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी "रूह" और "कलिमा" बनाया था, और अल्लाह ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की उम्मत को इस मामले में सही हिदायत दी।[1] और इस उम्मत में जो भी मतभेद होता है, वह उन्हीं की राह पर चलने के समान है, जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हुआ और जो गुमराह हुए।

फिर अल्लाह इस बयान को इस बात पर समाप्त करता है कि वही हिदायत देने वाले और सफल करने वाला है: ﴿وَٱللَّهُ يَهۡدِي مَن يَشَآءُ إِلَىٰ صِرَٰطٖ مُّسۡتَقِيمٍ﴾ (और अल्लाह जिसे चाहे, सत्पथ दर्शा देता है) अल्लाह अपने सृष्टि में से जिसे चाहे हिदायत देते हैं। यह हिदायत की महान

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 157-158)।

नेमत की ओर संकेत करता है, और यह कि हिदायत पाने वाला अपनी हिदायत को अल्लाह की ओर माने, और हर नेमत को अल्लाह की ओर माने, न कि अपनी क्षमता, समझ, बुद्धि और चतुराई के कारण, बल्कि अल्लाह की ओर माने। और इंसान अल्लाह से हिदायत मांगे, और हर ज़रूरत और आवश्यक चीज़ को अल्लाह से मांगे, और हर नापसंद चीज़ से अल्लाह की शरण मांगे। इसलिए दुआ में मुसलमान कहता है: "अल्लाहुम्मा इहदिनी फीमन हदैता, वा 'आफिनी फीमन आफ़ैता, वतवल्लनी फीमन तल्लैता, वा बारिक ली फीमा आ'तैता, वा क़िनी शर्रा मा क़ज़ैता. इन्नका तक़ज़ी व ला युक़ज़ा अलैक, व इन्नहु ला यज़िल्लु मन् वालैता, व ला यइज़्ज़ु मन् आदैता. तबारकता रब्बना व तआलैता" (ऐ अल्लाह, मुझे उन्हीं में हिदायत दे जिनमें तूने हिदायत दी, और मुझे उन्हीं में सुकून दे जिनमें तूने सुकून दिया, और मुझे उन्हीं में सहारा दे जिनमें तूने सहारा दिया, और जो तूने दिया उसमें मुझे बरकत दे, और मुझे उस बुराई से बचा जो तूने निर्धारित की है। तू निर्णय करता है और तुझ पर कोई निर्णय नहीं होता, और जिसे तू समर्थन देता है वह अपमानित नहीं होता, और जिसे तू दुश्मन मानता है वह सम्मानित नहीं होता। हमारे रब, तू महान और ऊँचा है)।(1)

﴿ أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا۟ ٱلْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُم مَّثَلُ ٱلَّذِينَ خَلَوْا۟ مِن قَبْلِكُم ۖ مَّسَّتْهُمُ ٱلْبَأْسَآءُ وَٱلضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوا۟ حَتَّىٰ يَقُولَ ٱلرَّسُولُ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ مَتَىٰ نَصْرُ ٱللَّهِ ۗ أَلَآ إِنَّ نَصْرَ ٱللَّهِ قَرِيبٌ ﴿٢١٤﴾ ﴾ [سورة البقرة:٢١٤]

(क्या तुमने समझ रखा है कि यूँ ही स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे, ह़ालाँकि अभी तक तुम्हारी वह दशा नहीं हुई, जो तुमसे पूर्व के ईमान वालों की हुई? उन्हें तंगियों तथा आपदाओं ने घेर लिया और वे झंझोड़ दिये गये, यहाँ तक कि रसूल और जो उसपर ईमान लाये, गुहारने लगे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी? (उस समय कहा गयाः) सुन लो! अल्लाह की सहायता समीप है)।

अल्लाह अपनी सृष्टि में परीक्षा और शुद्धिकरण की अपनी परंपरा को स्पष्ट कर रहा है:

﴿ أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا۟ ٱلْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُم مَّثَلُ ٱلَّذِينَ خَلَوْا۟ مِن قَبْلِكُم ۖ مَّسَّتْهُمُ ٱلْبَأْسَآءُ وَٱلضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوا۟ حَتَّىٰ يَقُولَ ٱلرَّسُولُ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ مَتَىٰ نَصْرُ ٱللَّهِ ۗ أَلَآ إِنَّ نَصْرَ ٱللَّهِ قَرِيبٌ ﴿٢١٤﴾ ﴾

(क्या तुमने समझ रखा है कि यूँ ही स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे, ह़ालाँकि अभी तक तुम्हारी वह दशा नहीं हुई, जो तुमसे पूर्व के ईमान वालों की हुई? उन्हें तंगियों तथा आपदाओं ने घेर लिया और वे झंझोड़ दिये गये, यहाँ तक कि रसूल और जो उसपर ईमान लाये, गुहारने लगे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी? (उस समय कहा गयाः) सुन लो! अल्लाह की

(1) अबू दावूद (2/ 133-134) ह़दीस़ संख्या (1425)।

सहायता समीप है) यह आयत एक प्रश्न से शुरू होती है, ताकि मोमिन को यह पता चले कि परीक्षा और शुद्धिकरण अल्लाह के नियमों में से एक है। क्या तुम सोचते हो कि जन्नत में प्रवेश बिना परीक्षा के होगा? ताकि मोमिन अल्लाह की अपनी सृष्टि में परंपरा को समझे, उसे जानें और स्वीकार करें।

अल्लाह की कृपा और रहमत से, यह स्पष्ट किया गया कि यह सिर्फ तुम्हारे लिए विशेष नहीं है, बल्कि यह अल्लाह का नियम है, जो तुम्हारे पहले के लोगों में भी था: ﴿وَلَمَّا يَأْتِكُم مَّثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُم ۖ مَّسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا﴾ (हालाँकि अभी तक तुम्हारी वह दशा नहीं हुई, जो तुमसे पूर्व के ईमान वालों की हुई? ताकि दिल संतुष्ट हो और वह परीक्षा को स्वीकार करे। वह जो अल्लाह की कृपा और रहमत से जन्नत में प्रवेश करे, जिसमें गरीबी की परीक्षा हो, जो "البأساء" है, और बीमारियाँ और रोग "الضراء" हैं, और दुश्मनों का भय "وزلزلوا" है। यह परीक्षा मोमिन के लिए शुद्धिकरण और जन्नत में प्रवेश के लिए उसकी श्रेणी को बढ़ाने का कारण है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जन्नत का रास्ता परीक्षाओं से भरा हुआ है, और इस ज्ञान के साथ मोमिन को समझ में आता है कि उसे धैर्य रखना और संतुष्ट रहना चाहिए।

पिछले लोगों की परीक्षा का जिक्र मोमिनों के लिए सांत्वना है, ताकि वे यह न सोचें कि केवल वे ही हैं जिन्हें अल्लाह परीक्षा में डालता है, बल्कि यहाँ तक कि नबी और उनके साथी भी: ﴿وَزُلْزِلُوا حَتَّىٰ يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَىٰ نَصْرُ اللَّهِ ۗ﴾ (और वे झंझोड़ दिये गये, यहाँ तक कि रसूल और जो उसपर ईमान लाये, गुहारने लगे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी?) वे अपने दुश्मनों पर विजय पाने की प्रार्थना करते हैं और उनकी कष्टों से राहत की दुआ करते हैं। शब्द "وَزُلْزِلُوا हिला दिया गया" का मतलब है अत्यधिक भय और भय से दिलों का काँपना और हिलना।

जैसे कि अहज़ाब युद्द के दिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनके साथियों के साथ हुआ, जैसा कि अल्लाह ने सूरा अहज़ाब में कहा: ﴿إِذْ جَاءُوكُم مِّن فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ﴾ (जब वे तुम्हारे ऊपर और नीचे से आए, और जब आँखें फिसल गईं और दिल गले तक आ गए)। फिर अल्लाह इस आयत को यों समाप्त करता है: ﴿أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ ﴿٢١٤﴾﴾ (सुन लो! अल्लाह की सहायता समीप है) इससे यह स्पष्ट होता है कि परीक्षा के बाद राहत आती है, इसलिए मोमिन को धैर्य रखना चाहिए। यही कारण है कि जब सहाबा ने देखा कि उनके दुश्मन बहुत अधिक थे और उनके दिल गले तक पहुँच गए थे, उन्होंने कहा: ﴿هَٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا﴾ (यह वही है जो

अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था, और अल्लाह और उसके रसूल ने सच्च कहा, और इससे हमारे ईमान और समर्पण में और वृद्धि हुई) फिर अल्लाह ने हवा और उन सैनिकों को भेजा जिन्हें उन्होंने नहीं देखा, और उनके दुश्मन हार गए। इसलिए, अल्लाह की मदद उनके निकट थी।

﴿ يَسْـَٔلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَۖ قُلْ مَآ أَنفَقْتُم مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَٰلِدَيْنِ وَٱلْأَقْرَبِينَ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينِ وَٱبْنِ ٱلسَّبِيلِۗ وَمَا تَفْعَلُوا۟ مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ ٱللَّهَ بِهِۦ عَلِيمٌ ﴿٢١٥﴾ ﴾ [سورة البقرة:٢١٥]

((हे नबी!) वे आपसे प्रश्न करते हैं कि कैसे व्यय (ख़र्च) करें? उनसे कह दीजिये कि जो भी धन तुम ख़र्च करो, तो अपने माता-पिता, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों तथा यात्रियों (को दो)। तथा जो भी भलाई तुम करते हो, उसे अल्लाह भलि-भाँति जानता है)।

फिर क़ुरआन का संदर्भ मोमिनों के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से स्वैच्छिक दान और इसके रास्तों के बारे में पूछने के सवाल का जवाब देता है।

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह फ़रमाता है: ﴿ يَسْـَٔلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَۖ ﴾ "वे आपसे पूछते हैं कि वे क्या खर्च करें"। इसमें यह संकेत है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अल्लाह के निकट होने के रास्तों के बारे में जानने के लिए बहुत इच्छुक थे। क़ुरआन की भाषाई उत्तमता यह है कि इसने दान के लिए सामान्य शब्द ﴿قُلْ مَآ أَنفَقْتُم مِّنْ خَيْرٍ﴾ (जो भी भलाई तुम खर्च करो) प्रयोग किया है। भलाई का अर्थ प्रायः धन से होता है, किंतु यह शब्द सभी प्रकार की भलाई को शामिल है, जैसे धन, भोजन, कपड़े, और वह सब जो इंसान अपनी क्षमता के अनुसार दे सकता है।भलाई का मतलब सामान्यतः धन होता है, लेकिन इस शब्द के उपयोग के कारण इसका मतलब आम हो जाता है, बल्कि इसे हर किसी के लिए खोल दिया गया, जो कुछ भी वे प्रकार और मात्रा में खर्च कर सकते हैं, जो अल्लाह ने उन्हें दिया है, चाहे वह धन हो या खाना, या कपड़ा, चाहे कम हो या ज्यादा। फिर अल्लाह भलाई खर्च करने के हकदारों की प्राथमिकता को स्पष्ट करता है: ﴿قُلْ مَآ أَنفَقْتُم مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَٰلِدَيْنِ وَٱلْأَقْرَبِينَ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينِ وَٱبْنِ ٱلسَّبِيلِۗ﴾ (उनसे कह दीजिये कि जो भी धन तुम ख़र्च करो, तो अपने माता-पिता, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों तथा यात्रियों (को दो)) सबसे पहले खर्च करने का अधिकार और प्राथमिकता उन लोगों का है, जिनका अधिकार सबसे बड़ा है, और वे हैं माता-पिता, और उनके बाद रिश्तेदार। इससे यह समझ में आता है कि संबंधियों की प्राथमिकता उनकी आवश्यकता और निकटता के अनुसार है। वह संबंधी जो अधिक आवश्यकता में है, उसका हक़ अधिक है। इसी तरह, ज़रूरत का प्रकार और निकट संबंधी की स्थिति, दोनों का ध्यान रखना आवश्यक है। क़ुरआन के शब्द इन सभी स्थितियों को समाहित करते हैं। फिर आयत में (यतीमों) का ज़िक्र किया गया है, जो स्वयं

अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ हैं। इसलिए उनके लिए विशेष सिफ़ारिश की गई है, क्योंकि वे ज़रूरतमंद और असहाय होते हैं। इसके बाद आयत में (وَٱلْمَسَٰكِينِ मिस्कीनों) का उल्लेख है, जो अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के साधन नहीं रखते। फिर (وَٱبْنِ ٱلسَّبِيلِ मुसाफ़िर) का उल्लेख है, जो सफ़र में संसाधन समाप्त होने या कठिनाई में फँस जाने के कारण मदद का हक़दार बनता है। यह सब अल्लाह तआला की अपने बंदों के प्रति देखभाल और उनकी भलाई के लिए दिए गए निर्देशों को दर्शाता है। उसने अपनी नेमतों का उपयोग दूसरों की ज़रूरतें पूरी करने के लिए करने का आदेश दिया। यह भी स्पष्ट होता है कि इस्लाम एक व्यवस्थित और अनुशासित धर्म है, जिसमें दान के मार्गदर्शन को एक निश्चित क्रम में रखा गया है। यह व्यवस्था केवल एक सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और दयालु प्रभु द्वारा ही दी जा सकती है। दान की यह सीमा केवल क़रीबियों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यतीम, मिस्कीन, और मुसाफ़िर जैसे दूर के लोगों तक भी फैली हुई है।

इस के लाभों में से एक यह है कि खर्च करने वाला यह समझता है कि जिसने उसे दिया है, वही उसे आदेश देता है कि वह जो दिया गया है उससे खर्च करे, और जिसने उसे दूसरों की जरूरत बनाई, वही उसे दूसरों से स्वतंत्र बनाता है, और वही सक्षम है कि उसे दूसरों की जरूरत बनाए, और दूसरों को उससे स्वतंत्र बनाए, महान अल्लाह के लिए, जिसके हाथ में हर चीज़ का मालिकाना हक है। फिर अल्लाह खर्च करने वाले का इनाम बताता है: ﴿وَمَا تَفْعَلُوا۟ مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ ٱللَّهَ بِهِۦ عَلِيمٌ﴾ (तथा जो भी भलाई तुम करते हो, उसे अल्लाह भलि-भाँति जानता है) इसमें दो चीजों का जिक्र है: पहला, बंदे का काम: " ﴿وَمَا تَفْعَلُوا۟ مِنْ خَيْرٍ﴾ जो भी भलाई तुम करो", और दूसरा, अल्लाह का काम: " ﴿فَإِنَّ ٱللَّهَ بِهِۦ عَلِيمٌ﴾ अल्लाह उससे अवगत है"। इस बयान से यह समझ में आता है कि अल्लाह बंदे के काम को पूरी तरह से जानता है, उन्होंने जो भलाई खर्च की है, उसे जानने का मतलब है कि अल्लाह इससे पूरी तरह अवगत है, और इसलिए वह इसे सुरक्षित रखेंगा, तथा इस काम का इनाम और बदला देगा, यह ज्ञान मोमिनों के बीच निश्चित हो चुका है।

और इस आयत में बयान की गई शैली की सुंदरता में यह शामिल है कि अल्लाह तआला ने आयत की शुरुआत में फ़रमाया ﴿مَآ أَنفَقْتُم مِّنْ خَيْرٍ﴾ (जो भी भलाई तुम खर्च करो) और अंत में फ़रमाया ﴿وَمَا تَفْعَلُوا۟ مِنْ خَيْرٍ﴾ (जो भी भलाई तुम करो) पहले हिस्से में यह संकेत है कि बंदे ने भलाई के खर्च में कैसी प्रतिक्रिया दी, और दूसरे हिस्से में भलाई के काम पर अल्लाह का ज्ञान और उसकी व्यापकता का उल्लेख किया गया है, बिना उस इनाम का उल्लेख किए जो ईमान वाले के लिए सुनिश्चित है। बल्कि अल्लाह तआला के इस कथन ﴿وَمَا تَفْعَلُوا۟

﴿مِن خَيۡرٖ فَإِنَّ ٱللَّهَ بِهِۦ عَلِيمٞ﴾ (तथा जो भी भलाई तुम करते हो, उसे अल्लाह भलि-भाँति जानता है) में केवल अल्लाह के ज्ञान की ओर संकेत करके संतोष किया गया है, जो कि उसकी किताब के हर शब्द में मौजूद बयान की चमत्कारिक शैली का हिस्सा है।

﴿كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلۡقِتَالُ وَهُوَ كُرۡهٞ لَّكُمۡۖ وَعَسَىٰٓ أَن تَكۡرَهُواْ شَيۡـٔٗا وَهُوَ خَيۡرٞ لَّكُمۡۖ وَعَسَىٰٓ أَن تُحِبُّواْ شَيۡـٔٗا وَهُوَ شَرّٞ لَّكُمۡۚ وَٱللَّهُ يَعۡلَمُ وَأَنتُمۡ لَا تَعۡلَمُونَ ٢١٦﴾ [سورة البقرة:٢١٦]

((हे ईमान वालो!) तुमपर युध्द करना अनिवार्य कर दिया गया है, ह़लाँकि वह तुम्हें अप्रिय है। हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो और वही तुम्हारे लिए अच्छी हो और इसी प्रकार सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते)।

अल्लाह अपने रास्ते में जिहाद की अनिवार्यता के बारे में बता रहा है: ﴿كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلۡقِتَالُ﴾ अर्थात तुम पर जिहाद अनिवार्य किया गया है आयत का आरंभ अल्लाह के रास्ते में जिहाद की अनिवार्यता को स्पष्ट करने से होता है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को मक्का में रहने के दौरान लड़ाई की अनुमति नहीं दी गई थी, लेकिन जब वे हिजरत करके गए तो उन्हें उन मुशरिकों से लड़ने की अनुमति दी गई जो उनसे लड़ते थे।

अल्लाह फ़रमाता है: ﴿أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَٰتَلُونَ بِأَنَّهُمۡ ظُلِمُواْۚ وَإِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ نَصۡرِهِمۡ لَقَدِيرٌ ٣٩﴾ फिर मुशरिकों से आम लड़ाई की अनुमति दी गई। इस आयत के संदर्भ में विद्वानों में मतभेद है। कुछ ने कहा: यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथियों के लिए विशिष्ट था, इसलिए नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ लड़ाई करना उन पर व्यक्तिगत रूप से अनिवार्य था, लेकिन जब शरीअत स्थापित हो गया, तो यह किफायती हो गया। यह अ़ता एवं औज़ाई का कथन है।[1] लड़ाई की अनिवार्यता में क्रमिकता की योजना, और परिस्थितियों का ध्यान रखने में अल्लाह के तत्वज्ञ होने को दर्शाता है। अल्लाह ने दावती, सामाजिक और रक्षात्मक नियम बनाए हैं, जिन्हें अपनाना आवश्यक है, ताकि हर चीज़ अपने फल को अल्लाह की अनुमति से दे। अल्लाह ने अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनके साथियों को मक्का में लड़ाई का आदेश नहीं दिया, क्योंकि यह अल्लाह की क़ानूनी परंपरा में कमियों और अधिकताओं, और शक्ति और कमजोरी के अनुसार था। अल्लाह ने उन्हें खतरे में डालने का आदेश नहीं दिया, जबकि वह अपनी कमियों और दुश्मनों की अधिकताओं पर उनकी मदद करने में सक्षम थे। लेकिन उसके आदेश उसकी क़ानूनी परंपरा के साथ संगत थे, कमियों और

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 27)।

अधिकताओं, और शक्ति और कमजोरी में। यह चमत्कारों को रोकता नहीं है, जैसे कि बद्र की लड़ाई में हुआ। इससे यह स्पष्ट होता है कि उम्मत को इस ईश्वरीय तरीके का उपयोग करना चाहिए, और अल्लाह की सटीक रूप से हर जिहाद और इसके आवश्यकताओं और आवश्यकताओं में नियमों को जानना चाहिए, ताकि वह एक बुद्धिमान उम्मत बन सके, जिसे क़ुरआन और हिकमत दी गई है।

फिर अल्लाह तआला ने इंसानी आत्मा और उसकी मानसिकता की सच्चाई को स्पष्ट किया है ﴿كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ﴾ ((हे ईमान वालो!) तुमपर युध्द करना अनिवार्य कर दिया गया है, ह़लाँकि वह तुम्हें अप्रिय है)। फिर क़ुरआन -ए- करीम ने उन व्यावहारिक तथ्यों को बताया, जिन्हें समझना और अपनाना आवश्यक है। अल्लाह तआला ने इन तथ्यों को बिना नज़रअंदाज़ किए उजागर किया, इस प्रकार यह स्पष्ट किया कि जब किसी कार्य में इंसानी स्वभाव के खिलाफ जाने की बात आती है, तो हमें उसे स्पष्ट रूप से स्वीकार करना चाहिए। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि शैक्षिक, मानसिक और दावती दृष्टिकोण से व्यक्तिगत सुधार या विकास तब संभव है, जब हम इंसान की मानसिकता और स्वभाव की सच्चाई से आंखें नहीं मूंदते। अर्थात, जब किसी व्यक्ति को सुधारना या बनाना हो, तो पहले उसकी मानसिकता और स्वभाव की प्रकृति को स्वीकार करना चाहिए, फिर जो काम करना हो, उसकी आवश्यकता को स्पष्ट रूप से बताया जाए, भले ही वह स्वभाव के खिलाफ हो। ऐसा करने से सुधार और स्वीकार्यता की प्रक्रिया सही तरीके से होती है, और यह आत्म-धोखा देने से बचने में मदद करता है, जो स्वभाव के खिलाफ कार्यों को छुपाने या नकारने के बाद उत्पन्न हो सकती है।

यह घृणा उस जिहाद की अनिवार्यता के प्रति नहीं है जिसे अल्लाह ने अनिवार्य किया है, बल्कि आत्मा पर जो प्रभाव पड़ता है, उसके प्रति है। क्योंकि जिहाद के लिए प्रस्थान करने में परिवार, निवासस्थान और धन का परित्याग होता है और शारीरिक कष्ट या मृत्यु के संभावितता का सामना करना पड़ता है। अल्लाह ने आत्मा की प्रकृति और मानसिकता, यहाँ तक कि बौद्धिकता को भी वास्तविकताओं के माध्यम से समाहित करने वाले तरीकों से समाधान किया। अल्लाह ने अपने अनुयायियों पर जो अनिवार्य किया है उसकी महत्ता का मोमिन के लिए समझाने वाली वास्तविकताएँ प्रस्तुत की हैं: ﴿وَعَسَىٰ أَن تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَسَىٰ أَن تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ﴾ (हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो और वही तुम्हारे लिए अच्छी हो और इसी प्रकार सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो) यह विश्वास की एक गणना है, जिसे यदि मोमिन समझता और स्वीकार करता है, तो यह उसे अल्लाह की अनिवार्यताओं से प्रसन्न रहने, अल्लाह के हर निर्णय और उसकी हर अवस्था में समर्पित रहने, और हर अच्छे कारण के साथ क्रियाशील होने, और हर बुराई से बचने में धैर्य रखने की शिक्षा देती है। यह उसे अल्लाह पर भरोसा करने में ऊपर उठाती है, जो

भरोसा करने वालों से प्रेम करता है, जैसा कि सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह ने दूसरे आयत में कहा है: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلْمُتَوَكِّلِينَ ١٥٩﴾ "निस्संदेह, अल्लाह भरोसा करने वालों से प्रेम करता है"। यह महान आयत यह भी बताती है कि किसी चीज़ से घृणा हो सकती है जो कल्याणकारी है, और किसी चीज़ को प्रेम हो सकता है जो अहितकर है।

यह यह भी दर्शाती है कि मनुष्य इस बात को समझने में असमर्थ है कि वह किस चीज़ से घृणा करता है या प्रेम करता है।

इसलिए उसे उस पर निर्भर रहना चाहिए जो अज्ञात का स्वामी है, जिसमें वस्तुओं और मामलों के परिणामों का ज्ञान होता है: ﴿وَٱللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ٢١٦﴾ "अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते"। अल्लाह अज्ञात और प्रत्यक्ष दोनों का ज्ञान रखता है, वह महान और बुद्धिमान है, इसलिए उसे यह स्वीकार करना चाहिए कि उसके आदेशों का पालन करना और उसके फैसले और क़द्र (प्रारब्ध) से संतुष्ट होना आवश्यक है। खासकर जब यह महान आयत अल्लाह के ज्ञान और उसकी व्यापकता को प्रमाणित करती है, और यह स्पष्ट करती है कि बंदे के पास चीजों और उसकी अच्छाइयों और बुराइयों के परिणामों का ज्ञान नहीं है। बंदों के जीवन में ऐसे कई उदाहरण हैं, उनकी विविधता और प्रचुरता के कारण।

अल्लाह के मार्ग में जिहाद के लिए हृदयगत और व्यावहारिक समाधान अन्य आयतों में आए हैं, जैसे कि इसी सूरह में अल्लाह का कथन है: ﴿وَلَا تَقُولُوا۟ لِمَن يُقْتَلُ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ أَمْوَٰتٌۢ ۚ بَلْ أَحْيَآءٌ وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ ١٥٤﴾ (और जो अल्लाह के मार्ग में मारे गए, उन्हें मृतक न कहो। बल्कि वे जीवित हैं, लेकिन तुम उसे महसूस नहीं करते)। और सूरह आल-इमरान में अल्लाह फ़रमाता है: ﴿وَلَا تَحْسَبَنَّ ٱلَّذِينَ قُتِلُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ أَمْوَٰتًۢا ۚ بَلْ أَحْيَآءٌ عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ * فَرِحِينَ بِمَآ ءَاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِٱلَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا۟ بِهِم مِّنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾ (और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गए, उन्हें मृतक न समझो। बल्कि वे अपने रब के पास जीवित हैं, और उन्हें रोज़ी दी जाती है। वे अल्लाह के फ़ज़्ल से जो उन्हें मिला, उससे प्रसन्न हैं। और वे अपने पीछे वालों के लिए खुशखबरी देते हैं, जो उनसे नहीं जुड़े कि उन पर कोई भय नहीं होगा और वे दुखी नहीं होंगे)। अल्लाह ने इस मामले का समाधान किया जो मनुष्य की प्राकृतिक इच्छा के साथ मेल खाता है, जोकि भविष्य के अच्छा होने की चाहत है। अल्लाह ने अपने मार्ग में जिहाद करने वाले को महान प्रतिफल का वादा किया जो मनुष्य की आत्मा को विशेषता प्रदान करता है। इस सच्चाई और ईश्वरीय समाधान से, जिहाद करने वाला उस प्राकृतिक और स्वाभाविक घृणा पर विजय प्राप्त करता है, इच्छा और प्रतिफल से। अल्लाह के मार्ग में जिहाद। चोटों और विकलांगताओं के परिणामस्वरूप होने वाली कठिनाइयों के बावजूद, अल्लाह के

आदेश की प्रेम, जिहाद की कठिनाइयों पर हावी हो जाती है, जिससे जिहाद करने वाला अपने रब के प्रेम में प्रवाहित होता है।

अल्लामा इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह ने इस आयत ﴿وَعَسَىٰٓ أَن تَكۡرَهُواْ شَيۡـٔٗا وَهُوَ خَيۡرٞ لَّكُمۡۖ﴾ ﴿وَعَسَىٰٓ أَن تُحِبُّواْ شَيۡـٔٗا وَهُوَ شَرّٞ لَّكُمۡۚ﴾ के फायदे और गुणों पर एक मूल्यवान टिप्पणी की है, वह कहते हैं: इस आयत में कई हिकमतें, रहस्य और लाभ हैं। जब बंदा जान लेता है कि नफरत की चीज़ भी भलाई ला सकती है, तो वह बुरे के आने से सुरक्षित रहता है, और भलाई की उम्मीद करता है। अल्लाह उन परिणामों को जानता है जिन्हें बंदा नहीं जानता, इसलिए अल्लाह ने उसे इस बात का आदेश दिया:

- इसमें सबसे बड़ा लाभ यह है कि अल्लाह के आदेश का पालन करना, चाहे वह प्रारंभ में कठिन हो, अंततः अच्छे परिणाम और खुशियाँ लाता है, भले ही आत्मा उसे नफरत करे। और सबसे हानिकारक चीज़ वह है जो अल्लाह ने मना की है, चाहे आत्मा उसे प्यार करे, क्योंकि इसके परिणाम हमेशा दुख, बुराई और मुसीबतें होते हैं।

- इस आयत का एक और रहस्य यह है कि यह बंदे को उन परामर्शों पर भरोसा करने का आदेश देती है जो अल्लाह ने उसे दिए हैं। बंदे को उसके रब पर भरोसा करना चाहिए, उसके आदेशों का पालन करना चाहिए, और उसकी पसंद और निर्णयों को स्वीकार करना चाहिए।

- इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि बंदा अपने रब पर भरोसा करे और जो अल्लाह उसके लिए चुनता है, उसे स्वीकार करे, और उसमें संपूर्णता देखे। इस प्रकार, जब बंदा अपने मामलों को अपने रब के हाथों में छोड़ता है और उसके द्वारा चुनी गई चीज़ों को स्वीकार करता है, तो उसे सामर्थ्य, धैर्य और दृढ़ता प्राप्त होती है। बंदा देखता है कि अल्लाह द्वारा चुनी गई चीज़ों का परिणाम कितना अच्छा होता है, जो वह अपने लिए नहीं चुन सकता था।[1]

﴿يَسۡـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلشَّهۡرِ ٱلۡحَرَامِ قِتَالٖ فِيهِۖ قُلۡ قِتَالٞ فِيهِ كَبِيرٞۚ وَصَدٌّ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ وَكُفۡرُۢ بِهِۦ وَٱلۡمَسۡجِدِ ٱلۡحَرَامِ وَإِخۡرَاجُ أَهۡلِهِۦ مِنۡهُ أَكۡبَرُ عِندَ ٱللَّهِۚ وَٱلۡفِتۡنَةُ أَكۡبَرُ مِنَ ٱلۡقَتۡلِۗ وَلَا يَزَالُونَ يُقَٰتِلُونَكُمۡ حَتَّىٰ يَرُدُّوكُمۡ عَن دِينِكُمۡ إِنِ ٱسۡتَطَٰعُواْۚ وَمَن يَرۡتَدِدۡ مِنكُمۡ عَن دِينِهِۦ فَيَمُتۡ وَهُوَ كَافِرٞ فَأُوْلَٰٓئِكَ حَبِطَتۡ أَعۡمَٰلُهُمۡ فِي ٱلدُّنۡيَا وَٱلۡأٓخِرَةِۖ

(1) अल् फ़वाइद, लेखकः इब्नुल क़ौयिम अल् जौज़िय्यह (146-147)।

وَأُوْلَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٢١٧﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَٱلَّذِينَ هَاجَرُواْ وَجَٰهَدُواْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ أُوْلَٰٓئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ ٱللَّهِۚ وَٱللَّهُ غَفُورٞ رَّحِيمٞ ﴿٢١٨﴾﴾ [سورة البقرة:٢١٧-٢١٨].

((हे नबी!) वे आपसे प्रश्न करते हैं कि सम्मानित मास में युध्द करना कैसा है? आप उनसे कह दें कि उसमें युध्द करना घोर पाप है, परन्तु अल्लाह की राह से रोकना, उसका इन्कार करना, मस्जिदे ह़राम से रोकना और उसके निवासियों को उससे निकालना, अल्लाह के समीप उससे भी घोर पाप है तथा फ़ितना (सत्धर्म से विचलाना) हत्या से भी भारी है। और वे तो तुमसे युध्द करते ही जायेंगे, यहाँ तक कि उनके बस में हो, तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें और तुममें से जो व्यक्ति अपने धर्म (इस्लाम) से फिर जायेगा, फिर कुफ़्र पर ही उसकी मौत होगी, ऐसों का किया-कराया, संसार तथा परलोक में व्यर्थ हो जायेगा तथा वही नारकी हैं और वे उसमें सदावासी होंगे। (इसके विपरीत) जो लोग ईमान लाये, हिजरत की तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया, वास्तव में, वही अल्लाह की दया की आशा रखते हैं तथा अल्लाह अति क्षमाशील और बहुत दयालु है)।

इस महान आयत में यह संकेत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सम्मानित महीनों में युद्ध के बारे में प्रश्न या प्रश्न पूछे गए थे, जो हैं: ज़ुलक़ादा, ज़ुलहिज्जा, मुहर्रम और रजब।

अल्लाह फ़रमाता है: ﴿يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلشَّهْرِ ٱلْحَرَامِ قِتَالٖ فِيهِۖ﴾ "वे आपसे सम्मानित महीने में युद्ध के बारे में पूछते हैं"।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अब्दुल्लाह बिन जहश के नेतृत्व में अपने साथियों को बत़न -ए- नख़लह की ओर भेजा, ताकि वे दुश्मनों की स्थिति जान सकें। अल्लाह की इच्छा से उन्होंने क़ुरैश का एक काफिला पाया, और लड़ाई हुई, जिसमें उन्होंने एक आदमी जिसका नाम अम्र बिन अल-हज़्रमी था, को मार डाला, दो को बंदी बना लिया और उनका सामान लेकर मदीना लौट आए, यह जुमादा अल-स़ानियह का अंतिम दिन और रजब महीने की पहली रात थी। इस पर क़ुरैश ने कहा, "तुमने पवित्र महीने में हत्या की है!" उन्होंने कहा कि "मुहम्मद और उनके साथियों ने पवित्र महीने का अनादर किया और उसमें ख़ून बहाया।" मुसलमानों ने भी अपने भाइयों पर नाराज़गी व्यक्त की। जब मुसलमान टुकड़ी से वापस आए तो उन्हें यह सोचकर चिंता हुई कि उन्होंने शायद अल्लाह की नाराज़गी मोल ली है। वे इस बात को लेकर परेशान थे कि हत्या रजब के महीने में हुई या जमादी उस-सानी में। तब यह आयत नाज़िल हुई।[1] यह इस बात का प्रमाण है कि सहाबा रज़ी अल्लाहु तआला अन्हुम अल्लाह

(1) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 214)।

की रज़ा हासिल करने और उसकी नाराज़गी से बचने के लिए हर उस चीज़ की परवाह करते थे जो अल्लाह की खुशी का कारण बने। जब मुसलमान अपनी उस मुहिम से लौटे, तो उन्हें गम हुआ और उन्होंने समझा कि उन्होंने कोई बड़ी गलती की है। उनके मुसलमान भाइयों ने भी उन्हें डांटा, क्योंकि वे अल्लाह की फरमाबरदारी में सख्ती के साथ लगे रहते थे। इसी तरह, क़ुरैश ने कहा कि मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनके साथियों ने ह़राम महीने की हुरमत तोड़ी और उसमें खून बहाया।[1]

इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि उन्होंने कहा: "मैंने लोगों का ऐसा समूह नहीं देखा जो मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथियों से बेहतर हो। उन्होंने केवल 13 सवाल किए, और वे सब क़ुरआन में दर्ज हैं ... वे केवल उन्हीं चीजों के बारे में पूछते थे जो उनके लिए फायदेमंद होतीं।"[2] यह सहाबा के भलाई, सुधार, और अल्लाह की रज़ामंदी की तलब पर उनका ध्यान केंद्रित होने का सबूत है। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ।

अल्लाह तआला के किताब में वह आयतें जो सवाल से शुरू होती हैं, वे निम्नलिखित हैं: ﴿يَسْأَلُونَكَ عَنِ ٱلْأَهِلَّةِ﴾ "वे आपसे चाँद के बारे में पूछते हैं।" ﴿يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ﴾ "वे आपसे पूछते हैं कि क्या खर्च करें।" ﴿يَسْأَلُونَكَ عَنِ ٱلشَّهْرِ ٱلْحَرَامِ﴾ "वे आपसे ह़राम महीने के बारे में पूछते हैं।" ﴿يَسْأَلُونَكَ عَنِ ٱلْخَمْرِ وَٱلْمَيْسِرِ﴾ "वे आपसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं।" ﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ ٱلْيَتَٰمَىٰ﴾ "वे आपसे यतीमों के बारे में पूछते हैं।" ﴿يَسْأَلُونَكَ مَاذَآ أُحِلَّ لَهُمْ﴾ "वे आपसे पूछते हैं कि उनके लिए क्या हलाल किया गया है।" ﴿يَسْأَلُونَكَ عَنِ ٱلسَّاعَةِ﴾ "वे आपसे क़यामत के बारे में पूछते हैं।" ﴿يَسْأَلُونَكَ عَنِ ٱلنَّفَلِ﴾ "वे आपसे माले ग़नीमत के बारे में पूछते हैं।" ﴿وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلرُّوحِ﴾ "वे आपसे रूह के बारे में पूछते हैं।" ﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَن ذِى ٱلْقَرْنَيْنِ﴾ "वे आपसे ज़ुलक़रनैन के बारे में पूछते हैं।" ﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ ٱلْجِبَالِ﴾ "वे आपसे पहाड़ों के बारे में पूछते हैं।" ﴿يَسْأَلُكَ ٱلنَّاسُ عَنِ ٱلسَّاعَةِ﴾ "लोग आपसे क़यामत के बारे में पूछते हैं।"

और इन दोनों मामलों में चाहे आयत का अवतरण सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के सवाल करने के कारण हुआ हो, या मुशरिकों के ऐतराज़ के कारण, इससे यह बात स्पष्ट होती है कि क़ुरआन के चरणबद्ध अवतरण की फायदों में यह भी शामिल है कि यह उन परिस्थितियों को हल करता है जो उस समय घटित हो रही होती हैं, सत्यता को स्पष्ट करता है, सवाल करने वालों को जवाब देता है, और मुसलमानों को धर्म और दुनिया के मामलों में मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और ईमानवालों के लिए ढांढस

(2) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 261)।

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 28)।

का साधन भी है और उनके लिए क्रमिक प्रशिक्षण का तरीका भी। इसके अतिरिक्त, इस चरणबद्ध अवतरण के कई अन्य लाभ हैं जिनकी विस्तारपूर्वक और स्वतंत्र रूप से अध्ययन की आवश्यकता है।

अल्लाह तआला ने ह़राम महीने में युद्ध के बारे में पूछे गए सवाल का उत्तर देते हुए फ़रमाया: ﴿قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ ۖ وَصَدٌّ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ وَكُفْرٌۢ بِهِۦ وَٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِۦ مِنْهُ أَكْبَرُ عِندَ ٱللَّهِ ۚ﴾ "कह दो कि इसमें लड़ाई करना बड़ा गुनाह है, लेकिन अल्लाह के रास्ते से रोकना, अल्लाह का इनकार करना, और मस्जिदे ह़राम में लोगों को उनके घरों से निकालना, अल्लाह के नज़दीक इससे भी बड़ा गुनाह है।"

यह आयत स्पष्ट करती है कि मुशरिक इस सच्चाई को नज़रअंदाज़ कर रहे थे या इसके प्रति उदासीन थे, जबकि अल्लाह तआला उनकी वास्तविकता और उनके गुनाहों से पूरी तरह अवगत है। ह़राम महीने में युद्ध करना यकीनन बड़ा पाप है: ﴿قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ ۖ﴾ "कह दो कि इसमें लड़ाई करना बड़ा गुनाह है।" लेकिन अल्लाह के रास्ते से रोकना, उसका इनकार करना, और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा ईमानवालों को मक्का और मस्जिदे ह़राम से निकालना, इन सबका गुनाह अल्लाह के नज़दीक कहीं अधिक गंभीर और बड़ा है। यह मुशरिकों की सोच और उनके व्यवहार की आलोचना करते हुए दर्शाता है कि वे जो दूसरों पर ऐतराज़ करते हैं, उससे कहीं बड़ा गुनाह स्वयं कर रहे हैं। क़ुरआन का यह तरीका ध्यान आकर्षित करता है और पाठक को इस मामले की वास्तविकता पर विचार करने और उन दोनों मामलों की तुलना करने के लिए प्रेरित करता है। यह क़ुरआन का तालीमी और दावती अंदाज़ है, जो यह सिखाता है कि ग़लत विचारधारा का खंडन प्रभावशाली और स्पष्ट तर्क के साथ करना चाहिए। यह तरीका दावती और तर्बियती कार्यों में उपयोगी होता है और इंसाफ़पसंद सोच को नकारने के लिए मजबूर कर देता है।

इस आयत का शिक्षा देने का तरीका यह है कि वह सोचने और वास्तविकता पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है। अक्सर इंसान किसी घटना के केवल उस पक्ष को देखता है जो उसकी दलील को मज़बूत करता है और उसे सहारा देता है, जबकि वह जान-बूझकर या अनजाने में उस पक्ष को नज़रअंदाज़ कर देता है, जो उसके खिलाफ़ दलील पेश करता है।

अल्लाह तआला अपने नबी मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश देते हैं कि वे इस सत्य को स्पष्ट रूप से बयान करें: ﴿قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ ۖ وَصَدٌّ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ وَكُفْرٌۢ بِهِۦ وَٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِۦ مِنْهُ أَكْبَرُ عِندَ ٱللَّهِ ۚ﴾ "कह दो कि इसमें लड़ाई करना बड़ा गुनाह है, लेकिन अल्लाह के रास्ते से रोकना, अल्लाह का इनकार करना, और मस्जिदे ह़राम से उसके लोगों को निकालना, अल्लाह के नज़दीक इससे भी बड़ा गुनाह है।" क़ुरआन की यह शैली यह

बताने के लिए है कि वास्तविकता को नकारना, या उसे किसी भी प्रकार से गलत दिशा में मोड़ना सही नहीं है। अल्लाह ने ह़राम महीनों की पवित्रता को स्वीकार किया और इसे नकारा नहीं, बल्कि इसे सत्य ठहराया: ﴿قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ﴾ "कह दो कि इसमें लड़ाई करना बड़ा गुनाह है।" फिर बताया कि इससे भी बड़ा गुनाह क्या है, जैसे मस्जिदे ह़राम से उसके लोगों को निकालना। यह दिखाता है कि विरोधियों की गलत धारणाओं को समझना और उनकी गलतियों को उजागर करना सच्चाई को स्थापित करने में सहायक होता है।

फिर आयत में उनके फितना (उत्पीड़न) की सख्ती को बयान किया गया: ﴿وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ﴾ "और फितना क़त्ल से भी बड़ा गुनाह है।" फितना चाहे कुफ़्र हो या मुसलमानों को उनके धर्म से भटकाने का प्रयास, यह ह़राम महीनों में युद्ध से कहीं अधिक गंभीर गुनाह है। इससे यह शिक्षा मिलती है कि पापों की गंभीरता में अंतर होता है। कुछ पाप दूसरों से बड़े होते हैं। यह इंसान को यह समझने में मदद करता है कि उसे छोटे गुनाहों से बचने के साथ-साथ बड़े गुनाहों को भी नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। अपने दैनिक आचरण का मूल्यांकन करना और आत्म-परीक्षण करना आवश्यक है ताकि इंसान सही मार्ग पर चल सके और आत्मा को शुद्ध रख सके।

मुशरिकों द्वारा मुसलमानों की परीक्षा और उन्हें उनके धर्म से हटाने के प्रयास के रूप में यह समझ में आता है कि काफिर हर समय और हर अवसर पर मुसलमानों को उनके धर्म से रोकने की कोशिश करते हैं: ﴿وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّىٰ يَرُدُّوكُمْ عَن دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا﴾ "और वे लगातार तुमसे लड़ते रहेंगे जब तक कि वे तुम्हें तुम्हारे धर्म से वापस न लौटा दें, अगर वे इसे कर सकें"। वे मुसलमानों को उनके धर्म से विचलित करने के सभी माध्यमों का उपयोग करते हैं, जितनी कोशिश वे कर सकते हैं। इससे यह आवश्यक होता है कि मुसलमान सभी प्रकार और विधियों से सावधान रहें, चाहे वे चित्र, आवाज, विचार, संदेह या इच्छाएँ हों। अल्लाह ने इस आयत में मोमिनों को चेतावनी दी है: ﴿وَمَن يَرْتَدِدْ مِنكُمْ عَن دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ﴾ "और जो कोई तुममें से अपने धर्म से फिर जाये और काफिर हो जाये और मर जाये, तो ऐसे लोगों के सारे कर्म व्यर्थ हो गये हैं और वे आख़िरत में भी सज़ा पायेंगे"। यह बताता है कि कुफ़्र नेक कर्म को बेकार कर देता है। हम अल्लाह से सुरक्षा और स्थिरता की दुआ करते हैं। इसलिए इसका परिणाम और अंतिम संबंध यह है कि जो अपने धर्म से वापस पड़ेगा: ﴿وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ﴾ "और वे जहन्नम के निवासी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे"। इसलिए इसका परिणाम और अंतिम अंजाम यह है कि जो अपने धर्म से वापस लौट जाये और काफिर होकर मर जाये, उसे हमेशा के लिए नरक में रहना पड़ेगा। यह आयत हर समय और हर युग के मुसलमानों को

इस बात से आगाह करती है कि वे अल्लाह के धर्म से फिरने (ارتداد) से बचें। यह चेतावनी मुसलमानों को उनके ईमान की सुरक्षा और सुदृढ़ता की आवश्यकता का एहसास कराती है।

इब्न -ए- सअदी रह़िमहुल्लाह कहते हैं: कुछ व्याख्याकारों ने कहा कि इसे रद्द नहीं किया गया, क्योंकि आम आदेश को विशेष नियम के साथ जोड़ा गया है, और यह आयत विशेष है, आम आदेश के साथ युद्ध की अनुमति दी गई है, और क्योंकि सम्मानित महीने का सबसे बड़ा विशेषता युद्ध की मनाही है, और यह केवल प्रारंभिक युद्ध के लिए है। और आत्मरक्षा के युद्ध की अनुमति सम्मानित महीने में भी है, जैसे कि पवित्र शहर (बलद -ए- ह़राम) में।(1) इस आयत और अन्य से, विचार और चिंतन के लिए कई पहलुओं में दिशानिर्देश निकलते हैं, और सबसे प्रमुख वह है जो विद्वानों, फुकीहों और व्याख्याकारों ने आयतों के बीच संयोजन से, उसमें मौजूद फिकह को जानने के लिए किया है, जिसमें शामिल है: सम्मानित महीने के रद्द होने या न होने की सीमा, और आम और विशेष के बीच संयोजन की विधि, और इस इस्लामी विधि से, फिकह और तफ्सीर के विषयों में इल्मी मदारिस (वैज्ञानिक विद्यालय) विकसित हुए हैं।

जब अल्लाह ने क़ुरआन में स्पष्ट किया कि हत्या के लिए गुप्त मिशन के सदस्यों पर कोई पाप नहीं है, तो अब्दुल्लाह बिन जहश और उनके साथी पुण्य की इच्छा करने लगे, तथा उन्होंने कहा: "हे अल्लाह के रसूल, क्या हमें वह इनाम मिलेगा जो मुजाहिद के युद्ध में मिलता है?" तो अल्लाह ने यह आयत अवतरित की: (2) ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَٱلَّذِينَ هَاجَرُواْ وَجَٰهَدُواْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ أُوْلَٰٓئِكَ يَرۡجُونَ رَحۡمَتَ ٱللَّهِۚ وَٱللَّهُ غَفُورٞ رَّحِيمٞ ٢١٨﴾ (जो लोग ईमान लाये, हिजरत की तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया, वास्तव में, वही अल्लाह की दया की आशा रखते हैं तथा अल्लाह अति क्षमाशील और बहुत दयालु है)। यह अल्लाह की कृपा है, कि उन्होंने इस मिशन के सदस्यों को आश्वासन दिया कि वे पापी नहीं हैं, और उनके लिए अल्लाह की माफी और रह़मत है।

इस महान आयत ने ईमान का दर्जा, हिजरत (पलायन) और मुहाजिरीन (हिजरत करने वालों) की प्रतिष्ठा, और अल्लाह के रास्ते में जिहाद के महत्व को स्पष्ट किया है। इसमें अल्लाह ने विशेष रूप से अब्दुल्लाह इब्न जहश और उनके साथियों को इस श्रेणी में शामिल किया। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि अल्लाह के लिए खालिस (शुद्ध) निय्यत का क्या महत्व है, क्योंकि अल्लाह ने जिहाद को अपनी राह में करने की शर्त से जोड़ा है: ﴿وَجَٰهَدُواْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ﴾

(2) तैसीरुल करीमिर्रह़मान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 172)

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 262)।

"और उन्होंने अल्लाह की राह में जिहाद किया।" इसके बाद अल्लाह तआला ने और अधिक स्पष्ट किया कि निय्यत और इखलास (निष्ठा) का महत्व कितना बड़ा है।

﴿أُوْلَٰٓئِكَ يَرۡجُونَ رَحۡمَتَ ٱللَّهِۚ﴾ (जो लोग ईमान लाये, हिजरत की तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया, वास्तव में, वही अल्लाह की दया की आशा रखते हैं तथा अल्लाह अति क्षमाशील और बहुत दयालु है)।

﴿۞ يَسۡـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلۡخَمۡرِ وَٱلۡمَيۡسِرِۖ قُلۡ فِيهِمَآ إِثۡمٞ كَبِيرٞ وَمَنَٰفِعُ لِلنَّاسِ وَإِثۡمُهُمَآ أَكۡبَرُ مِن نَّفۡعِهِمَاۗ وَيَسۡـَٔلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَۖ قُلِ ٱلۡعَفۡوَۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمُ ٱلۡأٓيَٰتِ لَعَلَّكُمۡ تَتَفَكَّرُونَ ٢١٩ فِي ٱلدُّنۡيَا وَٱلۡأٓخِرَةِۗ﴾

((हे नबी!) वे आपसे मदिरा और जुआ के विषय में प्रश्न करते हैं। आप बता दें कि इन दोनों में बड़ा पाप है तथा लोगों का कुछ लाभ भी है; परन्तु उनका पाप उनके लाभ से अधिक बड़ा है। तथा वे आपसे प्रश्न करते हैं कि अल्लाह की राह में क्या ख़र्च करें? उनसे कह दीजिये कि जो अपनी आवश्यक्ता से अधिक हो। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों (धर्मादेशों) को उजागर करता है, ताकि तुम सोच-विचार करो। लोक एवं परलोक में)।

यह आयत इस बात को स्पष्ट करती है कि सहाबा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) अपने धर्म के मामलों में कितने जागरूक थे, विशेष रूप से उन्होंने शराब और जुए के बारे में सवाल किया।

शराब: नशा उत्पन्न करने वाली चीज। जुआ: वह खेल जिसमें दांव लगाया जाए। तफ्सीर की किताबों में आया है कि उमर बिन खत्ताब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने दुआ की: "या अल्लाह, हमें शराब के बारे में स्पष्ट हुक्म बता।" इस पर यह आयत उतरी: ﴿يَسۡـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلۡخَمۡرِ وَٱلۡمَيۡسِرِ﴾ "वे आपसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं।" फिर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया गया और यह आयत उन्हें पढ़कर सुनाई गई। उन्होंने फिर कहा: "या अल्लाह, हमें शराब के बारे में स्पष्ट हुक्म बता।" फिर यह आयत नाज़िल हुई: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تَقۡرَبُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَأَنتُمۡ سُكَٰرَىٰ﴾ "ऐ ईमान लाने वालों! जब तुम नशे की हालत में हो, तो नमाज़ के पास भी न जाओ।" उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर कहा: "या अल्लाह, हमें शराब के बारे में स्पष्ट हुक्म बता।" फिर सूरह माइदा की यह आयत नाज़िल हुई[1]: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِنَّمَا ٱلۡخَمۡرُ وَٱلۡمَيۡسِرُ وَٱلۡأَنصَابُ وَٱلۡأَزۡلَٰمُ رِجۡسٞ مِّنۡ عَمَلِ ٱلشَّيۡطَٰنِ فَٱجۡتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ﴾ "ऐ

(1) पिछला संदर्भ (1/ 262)।

ईमान लाने वालों! निस्संदेह शराब, जुआ, वेदी और पांसे यह सब शैतान के गंदे काम हैं, इसलिए इनसे बचो ताकि तुम सफल हो सको।"

इससे यह पता चलता है कि सहाबा ने शराब और जुए के नुकसान को समझा और इन्हें नेक कामों का हिस्सा नहीं माना, क्योंकिः

- शराब: यह अक्ल को नष्ट कर देती है।
- जुआ: दूसरों का धन अन्यायपूर्वक हड़पने का साधन है।

इसके अलावा, इससे यह भी पता चलता है कि शराब की ह़राम होने की प्रक्रिया क्रमिक थी। यह अल्लाह की रह़मत थी, क्योंकि जाहिलियत के समय यह उनके लिए आदत थी। इस क्रमिक निषेध ने इसे छोड़ने में आसानी प्रदान की। यह भी स्पष्ट होता है कि अल्लाह ने इंसानी फितरत और उनकी हालत को ध्यान में रखा और उसके अनुसार हुक्म नाज़िल किया। यह मानव विशेषताओं और स्वभावों को ध्यान में रखने की महत्वपूर्णता को दर्शाता है, विशेष रूप से जब निर्देश, मार्गदर्शन, दावत, और शिक्षा दी जा रही हो, और इसके अनुकूल व्यवहार किया जाए, और उन स्वभावों को अनदेखा न किया जाए ताकि मार्गदर्शन अपने फल दे सके। उन स्वभावों में से एक हैं: भूलना, लापरवाही, और मानव आत्मा की कमजोरी, इसलिए निरंतर स्मरण की आवश्यकता होती है, विशेष रूप से जब मानव आत्मा किसी चीज़ की आदि हो जाती है, तो कभी-कभी उसे विकल्प की आवश्यकता होती है, और इच्छाओं पर काबू पाने की आवश्यकता होती है। यह गुणों के अर्जन में भी सहायक होता है, क्योंकि इसके लिए भी क्रमिकता की आवश्यकता हो सकती है, जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ह़दीस़ में आया है: "ज्ञान अध्ययन से प्राप्त होता है और धैर्य अभ्यास से आता है"।[1] और: "व्यक्ति सच्चाई बोलता रहता है और सच्चाई की खोज करता है यहाँ तक कि उसे सच्चा लिख दिया जाता है"।[2]

और यह आयत क्रमबद्ध शिक्षा की एक विधि को समाहित करती है, जिसमें शराब और जुए की वास्तविकता को पहले स्पष्ट किया गया है, फिर उनसे जुड़े पापों का उल्लेख किया गया है। इसके साथ ही, इनसे होने वाले फायदों को भी नज़रअंदाज़ नहीं किया गया। फिर लाभ और पाप के बीच तुलना की प्रक्रिया शुरू की गई: ﴿قُلْ فِيهِمَآ إِثْمٌ كَبِيرٌ﴾ "इनमें बड़ा पाप है।" अल्लाह तआला ने सिद्ध किया कि इनमें पाप है, और वह भी साधारण पाप नहीं, बल्कि बहुत बड़ा पाप। शराब: यह नशे में चूर व्यक्ति से गाली-गलौज और अन्य बड़े पाप करवाता है। यह

---

(2) मज़्मअ अज़् ज़वाइद, लेखकः हैस़मी (1/ 133)।

(1) मुसनद अह़मद (6/ 273) ह़दीस़ संख्या (3727)।

अक्ल को ऐसा खत्म करता है कि इंसान अपनी ज़िम्मेदारियों, जैसे नमाज़, आदि को नहीं निभा पाता। जुआ: इसमें अन्यायपूर्ण धन कमाई होती है, इसके साथ ही यह दुश्मनी और नफरत को जन्म देता है। इन हानियों के कारण इन्हें छोड़ने की प्रेरणा मिलती है। फिर अल्लाह तआला ने यह भी स्पष्ट किया कि इनमें कुछ फायदे भी हैं: ﴿وَمَنَـٰفِعُ لِلنَّاسِ﴾ "और इनमें लोगों के लिए फायदे भी हैं।" शराब: नशे में एक अस्थायी आनंद। जुआ: बिना मेहनत के धन और सुख-सामग्री प्राप्त करना। लेकिन, अंत में, इस तुलना ने पूर्ण शिक्षा प्रदान की: ﴿وَإِثْمُهُمَآ أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا﴾ "लेकिन इनका पाप, इनके लाभ से कहीं बड़ा है।" यह रहमान और रहीम (दयालु और कृपालु) अल्लाह की ओर से शराब और जुए के हुक्म का एक स्पष्ट और शिक्षाप्रद बयान है। यह ऐसी शैली में है जो अक्ल को रोशन करती है और दिल को स्वीकार करने योग्य लगती है। अल्लाह तआला ने अपनी शक्ति से बिना किसी विस्तार के इन्हें ह़राम ठहरा सकता था, लेकिन उनकी हिकमत ने मुसलमानों को सिखाने और समझाने की आवश्यकता को महसूस किया। इस तरह की विधि ने उन्हें धर्म और दुनिया के मामलों में वैज्ञानिक और व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया।

और अल्लाह तआला के इस हुक्म को स्थापित करने के तरीके से यह सीखा जा सकता है कि वास्तविकता को स्वीकार करना और समझाने में तथ्यों को नजरअंदाज न करना कितना महत्वपूर्ण है। क़ुरआन ने इंसान को शराब और जुए के फायदे और नुकसान की वास्तविकता से अवगत कराया। इन दोनों में फायदे होने की बात को नकारा नहीं गया: ﴿وَمَنَـٰفِعُ لِلنَّاسِ﴾ "और इनमें लोगों के लिए लाभ हैं।" यहां तक कि लाभ को बहुवचन में बयान किया गया है। लेकिन इन फायदों के बाद, अल्लाह ने उनकी तुलना उनके पापों से की: ﴿وَإِثْمُهُمَآ أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا﴾ "लेकिन उनका पाप उनके लाभ से कहीं अधिक है।" यह शैली इंसानी स्वभाव को समझने और उसकी वास्तविकता के अनुसार उसे सही दिशा में लाने का बेहतरीन तरीका है। शिक्षाप्रद और प्रचारक दृष्टिकोण से लाभ: वास्तविकता को नजरअंदाज न करना, सही और गलत के बीच तुलना और वरीयता स्थापित करना, तथा अक्ल को उसके तार्किक ढंग से संबोधित करना, ताकि यह सत्य को स्वीकार करने में सहायता करे। अल्लाह तआला का यह तरीका हर व्यक्ति के विचार और समझ को निखारने के लिए एक अद्वितीय मार्गदर्शन है।

यह आयत क़ुरआन में एक और सवाल की चर्चा करती है जो ईमान वालों ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया था: ﴿وَيَسْـَٔلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ﴾ "वे आपसे पूछते हैं कि वे क्या खर्च करें।" यह सवाल खर्च की मात्रा के बारे में था। रहमान और रहीम अल्लाह ने इसे सहजता से स्पष्ट किया: ﴿قُلِ ٱلْعَفْوَ﴾ "कह दीजिए कि जो बच जाए।" इसका अर्थ है, आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद जो बच जाए और जो खर्च करने वाले के लिए कठिनाई

न पैदा करे। इससे यह शिक्षा दी गई कि अपनी जरूरतों को पूरा करने के बाद ही खर्च करें, ताकि खुद निर्भर न हो जाएं।[1] ﴿كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمُ ٱلْءَايَـٰتِ﴾ "इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें स्पष्ट करता है।" इसके बाद ईमान वालों को दुनिया और आख़िरत के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया गया: ﴿لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ﴾ "ताकि तुम दुनिया और आख़िरत के बारे में सोचो।" इसमें एक व्यापक मार्गदर्शन छिपा है: दुनिया के प्रारंभ और अंत, सफलता और असफलता, संपत्ति और निर्धनता, और इसके अस्थायित्व पर विचार करना। आख़िरत, जो शाश्वत है, उसमें ईमान वालों की खुशियां और काफिरों के दुख और यातनाओं के बारे में सोचकर उसे प्राथमिकता देना। यह तुलना इंसान को अस्थायी चीज़ों पर स्थायी चीज़ों को प्राथमिकता देने की प्रेरणा देती है। अल्लाह का यह मार्गदर्शन और क़ुरआन की शिक्षाएं हर सवाल का जवाब केवल उसके दायरे तक सीमित नहीं रखतीं, बल्कि उससे बढ़कर व्यापक ज्ञान प्रदान करती हैं।

﴿وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلْيَتَـٰمَىٰ ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۖ وَإِن تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَٰنُكُمْ ۚ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ ٱلْمُفْسِدَ مِنَ ٱلْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٠﴾﴾ [سورة البقرة: ٢٢٠]

(और वे आपसे अनाथों के विषय में प्रश्ण करते हैं। उनसे कह दीजिए कि जिस बात में उनका सुधार हो वही सबसे अच्छी है। यदि तुम उनसे मिलकर रहो, तो वे तुम्हारे भाई ही हैं और अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है और यदि अल्लाह चाहता, तो तुमपर सख्ती कर देता। वास्तव में, अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है)।

यह महान आयत उन समस्याओं को संबोधित करती है जिनसे मुसलमान अनाथों के धन के मामलों में चिंतित और परेशान थे, यहाँ तक कि उन्होंने अपने खाने को अनाथों के खाने से अलग कर दिया था, यह डरते हुए कि वे गलती से उन का मान न कहीं खा न लें। उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से पूछा, तो अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلْيَتَـٰمَىٰ ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۖ وَإِن تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَٰنُكُمْ ۚ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ ٱلْمُفْسِدَ مِنَ ٱلْمُصْلِحِ ۚ﴾ (और वे आपसे अनाथों के विषय में प्रश्ण करते हैं। उनसे कह दीजिए कि जिस बात में उनका सुधार हो वही सबसे अच्छी है। यदि तुम उनसे मिलकर रहो, तो वे तुम्हारे भाई ही हैं और अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है)। अल्लाह ने अपने बंदों के लिए अनाथों के मामले को एक शब्द में स्पष्ट किया: "إِصْلَاحٌ सुधार", जिसमें अनाथों के धन की सुरक्षा, देखभाल और वृद्धि शामिल है। सुधार, भ्रष्टाचार के विपरीत है: ﴿قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۖ﴾ "कहो, उनके लिए सुधार बेहतर है", और

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 42)।

यह उनके धन को सभी प्रकार से सुधारने के कार्य को शामिल करता है, जो कि "उनके लिए बेहतर" है, उस अलगाव से बेहतर है जो सुधार और वृद्धि को रोकता है। बल्कि अल्लाह ने आगे और भी जोड़ा जो उनके लिए कठिनाई को दूर करता है: ﴿وَإِن تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ﴾ "और यदि आप उनके साथ मिलजुल कर रहें, तो वे आपके भाई हैं", उन्होंने अनाथों के साथ भोजन और धन में मिलजुल कर रहने की अनुमति दी, जिससे उनकी भलाई सुनिश्चित होती है और कठिनाई दूर होती है। अल्लाह ने इसे सुधार में प्रयास को भाईचारे की विशेषता और अवस्था से जोड़ा: ﴿وَإِن تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ﴾ "और यदि आप उनके साथ मिलजुल कर रहें, तो वे आपके भाई हैं", यह शब्द संबंध, भलाई की प्रेम, सुरक्षा और वृद्धि को दर्शाता है, और इससे सभी प्रकार की भ्रष्टाचार दूर होती है, जो यह दर्शाता है कि भाईचारे का संबंध भलाई में प्रेम और बुराई में नफरत का उदाहरण होना चाहिए। फिर अल्लाह ने आंतरिक मानसिक उद्देश्यों की ओर इशारा किया, जिन्हें केवल अल्लाह ही जानता है: ﴿وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ﴾"और अल्लाह बिगाड़ने वाले और सुधारक को जानता है", वह आपके उद्देश्यों को जानता है जो आप अनाथों के धन में करते हैं। निस्संदेह, यह व्यक्ति में सावधानी और डर को पैदा करता है, और अल्लाह की निगरानी को अपने सभी कार्यों में शामिल करता है, विशेष रूप से उन अनाथों के धन में, जो इस महान आयत का केंद्र हैं।

अल्लाह का यह कथन: ﴿وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ﴾ (अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है)। हर जीवन के मामले में एक आचार नियम है, जिसे साक्ष्यों या इरादों से निश्चित रूप से नहीं जाना जा सकता, केवल हृदय के अंदर की बातों को केवल अल्लाह ही जानता है, जो दृश्य और अदृश्य का ज्ञान रखता है। यहाँ, व्यक्ति अपने हर क्षण के आचरण को अल्लाह के इस कथन से सुधारता है: "अल्लाह जानता है कि कौन भ्रष्ट है और कौन सुधार करता है"।

अगर किसी को अपने ईमानदारी में संदेह हो, तो वह अल्लाह के इस कथन से अपनी आत्मा को सुधारता है: ﴿وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ﴾ (अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है)। अगर किसी को अपने कार्य और आचरण में संदेह हो, तो वह अल्लाह के इस कथन से अपनी आत्मा को सुधारता है: "﴿وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ﴾ (अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है)। अगर किसी ने किसी अन्य के मामले में सुधार का प्रयास किया और वह जो नहीं चाहता था, वह हुआ, तो वह अपनी आत्मा को अल्लाह के इस कथन से सुधारता है: "﴿وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ﴾ (अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है)। अगर किसी को किसी अन्य की

नीयत में संदेह हो, तो वह अपनी आत्मा से कहता है: ﴿وَٱللَّهُ يَعْلَمُ ٱلْمُفْسِدَ مِنَ ٱلْمُصْلِحِ﴾ (अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है)।

इस दिव्य विधि का लाभ यह है कि जीवन में ऐसे मामले होते हैं जिनके घटकों को प्राप्त करना कठिन होता है, विशेष रूप से जब वे अन्य लोगों से संबंधित होते हैं, जो सुधार के दृष्टिकोण से निपटने की आवश्यकता होती है, भाईचारे की पहचान के साथ, और तीसरे पर अल्लाह के ज्ञान पर विश्वास के साथ। जो उनके नीयत और उद्देश्य को नहीं जानता है, केवल अल्लाह। यह आचरण की इस विधि का लाभ प्रबंधन की नियमों, जैसे व्यवसाय प्रबंधन, प्रशासनिक और सामान्य संबंधों, और सामाजिक और पारिवारिक संबंधों में भी विस्तारित होता है। इसमें व्यक्ति को भाईचारे के सिद्धांत पर आधारित सुधार के सिद्धांत को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए, अल्लाह की निगरानी और उसकी नीयत और उद्देश्यों के ज्ञान को समझते हुए। यह आचरण के लिए एक महत्वपूर्ण नियम है, इसके प्रभाव के क्षेत्र में व्यापक है, और इसके लाभ और गुणों के पहलुओं में गहराई है।

फिर अल्लाह अपनी इस महान और मूल्यवान मार्गदर्शन में मोमिनों पर अपनी कृपा का वर्णन करता है: ﴿وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ﴾ (और यदि अल्लाह चाहता, तो तुमपर सख्ती कर देता)। यदि अल्लाह ने आप पर कठिनाई डालने की इच्छा की होती, इस अनुमति को दिए बिना और स्पष्ट किए बिना, तो वह निश्चित रूप से ऐसा कर सकता था, जिससे आप को कठिनाई होती, इस के विपरीत उसने इसके बदले इसे उठाकर अनाथ के लिए भलाई और लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य और तरीकों को प्रदान किया। इस संदर्भ में, अल्लाह ने मोमिनों को उनकी शिक्षाओं और इससे प्राप्त भलाई की महानता के बारे में सिखाया है। इस कठिनाई को दूर करने की ओर ध्यान आकर्षित करने से यह भी समझ आता है कि विपरीत के माध्यम से स्पष्टीकरण, आशीर्वाद के प्रति जागरूकता को बढ़ाता है। यह एक शैक्षिक विधि है, जिसमें विपरीत बातों पर ध्यान आकर्षित किया जाता है जो आशीर्वाद के रूप में पहचानी जाती हैं। फिर अल्लाह ने इस महान आयत को इस शब्दों के साथ समाप्त किया: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ﴾ (वास्तव में, अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है) “अल-इज्जत” में संपूर्ण शक्ति और पूर्ण प्रभुत्व का अर्थ शामिल है, वह अपने कार्यों में सर्वशक्तिमान है। और वह अपने आदेशों और निषेधों, उसके कानूनों, उसके निर्णयों और उसकी न्यायियों, उसकी सृष्टि और जीवन और मृत्यु में तत्वज्ञ है, वह हर मामले में तत्वज्ञ है। और वह सभी चीजों को व्यवस्थित करने वाला है। हिकमत में चीजों को उनके सही स्थान पर रखना शामिल है, यह विपरीत है अनुचितता का। इन दोनों गुणों के बीच संयोजन में: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ﴾ (वास्तव में, अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है), यह दर्शाता है कि अपने संपूर्ण प्रभुत्व और शक्ति और पूर्ण विजयी क्षमता के बावजूद, वह इसमें और इसके साथ बुद्धिमान है।

वह अपने आदेशों और प्रशासन में बुद्धिमान है, जो उसकी महान नाम और गुणों के अनुसार है, जैसे कि दया, सहानुभूति और सहायता, अन्याय के लिए चालाकी और सहायता, और अत्याचारी के लिए चालाकी और दंड। हिकमत एक महान और महिमा से भरी विशेषता है, और अल्लाह ने एक अन्य आयत में उसकी प्रशंसा की है जिसे उन्होंने अपने बंदों में से दिया है: ﴿وَمَن يُؤْتَ ٱلْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِىَ خَيْرًا كَثِيرًا﴾ "और जिसे हिकमत दी गई, उसे बड़ी भलाई दी गई।" निस्संदेह, बंदों की हिकमत अल्लाह की हिकमत जैसी नहीं होती, क्योंकि अल्लाह की हिकमत संपूर्ण है, और मख़लूक़ की हिकमत में वह कमी होती है जो इंसान में होती है। लेकिन जिसे हिकमत दी जाती है, वह उससे बेहतर और श्रेष्ठ है जिसने इसे प्राप्त नहीं किया। जिसे लोगों में से हिकमत दी जाती है, उसमें सही जगह पर शक्ति और मान्यता रखने की प्रवृत्ति होती है। अल्लाह का धन्यवाद, जिसके पास ये सर्वोच्च गुण और सुंदर नाम हैं। यह इस विचार पर आधारित है कि हिकमत चीजों को उनके सही स्थान पर रखना है।

﴿وَلَا تَنكِحُوا۟ ٱلْمُشْرِكَٰتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنَّ ۚ وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۗ وَلَا تُنكِحُوا۟ ٱلْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا۟ ۚ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۗ أُو۟لَٰٓئِكَ يَدْعُونَ إِلَى ٱلنَّارِ ۖ وَٱللَّهُ يَدْعُوٓا۟ إِلَى ٱلْجَنَّةِ وَٱلْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِۦ ۖ وَيُبَيِّنُ ءَايَٰتِهِۦ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٢١﴾﴾ [سورة البقرة:٢٢١]

(तथा मुश्रिक स्त्रियों से तुम विवाह न करो, जब तक वे ईमान न लायें और ईमान वाली दासी मुश्रिक स्त्री से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हारे मन को भा रही हो और अपनी स्त्रियों का निकाह़ मुश्रिकों से न करो, जब तक वे ईमान न लायें और ईमान वाला दास मुश्रिक से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हें भा रहा हो। वे तुम्हें अग्नि की ओर बुलाते हैं तथा अल्लाह स्वर्ग और क्षमा की ओर बुला रहा है और (अल्लाह) सभी मानव के लिए अपनी आयतें (आदेश) उजागर कर रहा है, ताकि वह शिक्षा ग्रहन करें)।

यह महान आयत धर्म के आधार पर पति और पत्नी के चयन का मामला बताती है: ﴿وَلَا تَنكِحُوا۟ ٱلْمُشْرِكَٰتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنَّ ۚ﴾ इस आयत में मूर्तिपूजक महिलाओं से विवाह करने की मनाही है, जब तक कि वे ईमान न ले आएं। फिर अल्लाह ने मनाही का कारण बताया: ﴿وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۗ﴾ (और ईमान वाली दासी मुश्रिक स्त्री से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हारे मन को भा रही हो), जिससे आयत दो बातों के बीच तुलना को दिखाती है: आकर्षण और भलाई। आकर्षण जरूरी नहीं कि भलाई और श्रेष्ठता आधारित हो, इसलिए दूसरे मानदंड को देखना चाहिए, जो भलाई है। यह एक मूल्यवान सिद्धांत है, जो हर मामले में मोमिन को इसका लाभ देता है। आयत में आकर्षण का उल्लेख है, जो विभिन्न भागों और विभिन्न घटकों को बताता है, जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "महिलाओं से चार

कारणों से शादी की जाती है: उसके धन के लिए, उसके वंश के लिए, उसकी सुंदरता के लिए, और उसके धर्म के लिए, धर्म वाली को वरीयता करो, तुम समृद्ध हो जाओगे"।[1] महिला में आकर्षण के स्रोत ये चार मापदंड होते हैं।

फिर अल्लाह ने दूसरे मापदंड का कार्य बताया, जो विश्वास की भलाई है: ﴿وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ﴾ (और ईमान वाली दासी मुश्रिक स्त्री से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हारे मन को भा रही हो), क्योंकि उसकी भलाई विश्वास के घटकों और प्रभावों की भलाई से है, जो महिला के व्यवहार और संबंधों को नियंत्रित करता है, और उसे खुद, उसके धन, बच्चों, और पति को सुरक्षित रखता है, इसलिए वह अल्लाह की प्रसन्नता के लिए अपने पति की आज्ञाकारिता और उसकी भलाई चाहती है, जो मूर्तिपूजक महिला में नहीं होता, क्योंकि उसमें ईमान की कमी होती है। जैसा कि उसके दिल में ईमान का उद्देश्य, उसे दुनिया और आखिरत में ऊंचाई देता है। यह पति के चयन में भी लागू होता है, अल्लाह फ़रमाता है: ﴿وَلَا تُنكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا ۚ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ﴾ (और अपनी स्त्रियों का निकाह़ मुश्रिकों से न करो, जब तक वे ईमान न लायें और ईमान वाला दास मुश्रिक से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हें भा रहा हो) यह दोनों पक्षों में समान है: आकर्षण और भलाई।

फिर अल्लाह ने (ख़ैर) भलाई का एक और पहलू बताया: ﴿أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ﴾ "वे नरक की ओर बुलाते हैं"। ये मुश्रिक लोग नरक की ओर बुलाते हैं, और ध्यान देने पर यह पाया जाता है कि वे हर दरवाजे से नरक की ओर बुलाते हैं: शिर्क के दरवाजों से, नैतिक पापों से, बुराई से, मुसलमानों और इस्लाम से नफरत से, और दूसरों को कुफ़्र की ओर बुलाते हैं, और अल्लाह के मार्ग से खुद को और दूसरों को रोकते हैं। यह सब अल्लाह की बुलाहट के विपरीत है: ﴿وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ﴾ "और अल्लाह जन्नत और माफी की ओर बुलाता है अपने इजाजत से"। अल्लाह उन लोगों की बुलाहट के विपरीत चीज़ की ओर बुलाता है, यह एक बहुत बड़ी अंतर है, जो चयन न करने और छोड़ने को मजबूर करता है, चाहे आकर्षण कितना भी हो। आयत में एक महान संकेत है कि जन्नत और माफी अल्लाह की इजाजत और इच्छा से हैं: "और अल्लाह जन्नत और माफी की ओर बुलाता है अपने इजाजत से", जो प्रार्थना करने और अल्लाह से सच्चाई पर स्थिर रहने की दुआ करने की आवश्यकता को बताता है, जब तक कि बंदा अल्लाह से मिल न जाए। किसी के पास कुछ भी नहीं है सिवाय अल्लाह की इजाजत से।

(1) बुख़ारी (3/ 360) ह़दीस़ संख्या (5090)।

फिर अल्लाह कहता है: ﴿وَيُبَيِّنُ ءَايَٰتِهِۦ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمۡ يَتَذَكَّرُونَ﴾ "और वह अपनी आयतों को लोगों के लिए स्पष्ट करता है ताकि वे याद रखें"। अल्लाह स्पष्ट करता है कि वह अपने आदेशों और उद्देश्यों को अपने बंदों के लिए स्पष्ट करते हैं, और उन्हें सिखाते हैं जो वे नहीं जानते थे, जो उन्हें उनके आदेशों के अनुसार काम करने और उसके आदेश और निषेध का पालन करने, और इस स्पष्टीकरण को याद रखने की आवश्यकता है यदि भूल होती है।

﴿وَيَسۡـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلۡمَحِيضِۖ قُلۡ هُوَ أَذٗى فَٱعۡتَزِلُواْ ٱلنِّسَآءَ فِي ٱلۡمَحِيضِ وَلَا تَقۡرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطۡهُرۡنَۖ فَإِذَا تَطَهَّرۡنَ فَأۡتُوهُنَّ مِنۡ حَيۡثُ أَمَرَكُمُ ٱللَّهُۚ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلتَّوَّٰبِينَ وَيُحِبُّ ٱلۡمُتَطَهِّرِينَ ٢٢٢ نِسَآؤُكُمۡ حَرۡثٞ لَّكُمۡ فَأۡتُواْ حَرۡثَكُمۡ أَنَّىٰ شِئۡتُمۡۖ وَقَدِّمُواْ لِأَنفُسِكُمۡۚ وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّكُم مُّلَٰقُوهُۗ وَبَشِّرِ ٱلۡمُؤۡمِنِينَ ٢٢٣﴾ [سورة البقرة:٢٢٢-٢٢٣].

(तथा वे आपसे मासिक धर्म के विषय में प्रश्न करते हैं। तो कह दें कि वह मलीनता है और उनके समीप भी न जाओ, जब तक पवित्र न हो जायें। फिर जब वे भली भाँति स्वच्छ हो जायें, तो उनके पास उसी प्रकार जाओ, जैसे अल्लाह ने तुम्हें आदेश दिया है। निश्चय अल्लाह तौबा करने वालों तथा पवित्र रहने वालों से प्रेम करता है। तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारे लिए खेतियाँ हैं। तुम्हें अनुमति है कि जैसे चाहो, अपनी खेतियों में जाओ; परन्तु भविष्य के लिए भी सत्कर्म करो तथा अल्लाह से डरते रहो और विश्वास रखो कि तुम्हें उससे मिलना है और ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दो)।

फिर अल्लाह ने उस बारे में स्पष्ट किया जो कुछ मुसलमानों ने महिलाओं के बारे में पूछा था, जब महिला मासिक धर्म में होती है। यहूदियों में जब महिलाएँ मासिक धर्म में होती थीं, तो वे न उनके साथ खाना खाते थे, न ही उनके साथ पीते थे, और न ही उनके साथ घरों में रहते थे। उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से इसके बारे में पूछा, तो अल्लाह ने यह आयत उतारी[1]: ﴿وَيَسۡـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلۡمَحِيضِۖ﴾ (तथा वे आपसे मासिक धर्म के विषय में प्रश्न करते हैं) तो उत्तर अल्लाह की ओर से आया जो साहित्यिक उत्कृष्टता एवं प्रभावशीलता की उच्चतम सीमा को अपने अंदर समोए हुए है ﴿قُلۡ هُوَ أَذٗى﴾ अल्लाह ने इस कष्ट को एक शब्द में बताया: " أَذٗى अज़न", जो संपूर्ण अर्थ वाला है, बिना कष्ट की विस्तृत जानकारी दिए। इसमें महिला की भावनाओं का संरक्षण है, और उसके शर्म का संरक्षण है, जिससे वह चाहती है कि कोई और उसकी निजी बातें न जाने। अल्लाह ने उसकी भावनाओं और शर्म को सार्वजनिक रूप से खुलासा होने से बचाया है। अल्लाह की किताब में शर्म और गोपनीयता के संरक्षण का स्थान बहुत अधिक है, जैसे तलाकशुदा महिलाओं के मामले में: ﴿يَتَرَبَّصۡنَ بِأَنفُسِهِنَّ ثَلَٰثَةَ قُرُوٓءٖ﴾ "वे

(1) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 223)।

तीन माहवारी तक प्रतीक्षा करें", और जिनका पति मर गया: ﴿يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا﴾ "वे चार महीने और दस दिन प्रतीक्षा करें"। (अज़न أَذًى) का मतलब वह है जो महिला को इस मामले में परेशान करता है, चाहे वह मानसिक या शारीरिक कष्ट हो। जो पति को भी इस कष्ट से दूर रहने की आवश्यकता को इंगित करता है।

फिर अल्लाह ने उन्हें अलग रहने का आदेश दिया: ﴿فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ﴾ "मासिक धर्म के दौरान महिलाओं से दूर रहो", फिर इसे और स्पष्ट किया: ﴿وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ﴾ "और उनके पास न जाओ जब तक कि वे पवित्र न हो जाएं"। अल्लाह ने संभोग से अलग रहने का आदेश दिया, जो उलमा के इज्माअ (सर्वसम्मति) से वर्जित (ह़राम) है, और मासिक धर्म के दौरान अलगाव को विशेष रूप से निर्दिष्ट किया। यह इंगित करता है कि पत्नी से संभोग के अतिरिक्त हर चीज़ में वैध है, जैसा कि अल्लाह ने अनुमति दी है।[1] और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: "निकाह (संभोग) को छोड़कर सब कुछ करो"।[2] इससे संबंधित फ़िकह मामलों के लाभों में से एक है कि सुन्नत ने इसमें विस्तार किया है, इसलिए फुकहाओं और व्याख्याकारों ने गहराई से अध्ययन किया, और क़ुरआन की इस आयत और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के निर्देश के बीच संगम का अध्ययन किया, ताकि वे इस विषय में महान फ़िकह मामलों को निकाल सकें।

क़ुरआन का यह उत्तर देने का तरीका भी लाभदायक है, जैसा कि पहले संकेत दिया गया था, जिसमें निर्णय को स्पष्ट रूप से और बिना विवरण के जो श्रोता को अस्वस्थ कर सकता है, संक्षिप्त रूप में पेश किया गया है। इससे यह समझ में आता है कि क़ुरआन के इस विधि को निर्देशन और शिक्षा में अपनाना महत्वपूर्ण है, और जब किसी से बातचीत करें, तो बात में शर्म और सम्मान को बनाए रखें, और शब्दों को ध्यान से चुनें, और शालीन शब्दों का उपयोग करें। इसके साथ ही नव पीढ़ी को भी इसका अभ्यास करने के महत्व को दर्शाता है।

फिर अल्लाह ने इजाजत और स्थिति को अपनी सामान्यता में लौटाने को स्पष्ट किया, मासिक धर्म समाप्त होने और उससे शुद्ध होने के बाद: ﴿فَإِذَا تَطَهَّرْنَ﴾ "और जब वे शुद्ध हो जाएं"। इसमें दो पहलू होते हैं: मासिक धर्म का अंत, जो शुद्धि की शुरुआत है, और इसे स्नान के द्वारा पूरा करना, जिसे सुन्नत ने और स्पष्ट किया है। ﴿فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ﴾ (फिर जब वे भली भाँति स्वच्छ हो जायें, तो उनके पास उसी प्रकार जाओ, जैसे अल्लाह ने

(2) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 178)

(1) स़ह़ीह़ मुस्लिम (1/ 246) ह़दीस़ संख्या (302)।

तुम्हें आदेश दिया है)। यह महान सम्मान के साथ जानकारी का और विस्तार है। जब शुद्धि हो जाए, तो आदमी अपनी पत्नी के पास उसी तरीके से जाए जैसा अल्लाह ने अनुमति दी है, और उस तरीके से नहीं जाए जिसे अल्लाह ने अनुमति नहीं दी है। शिक्षा में यह नैतिक तरीका, एक साहित्यिक और शैक्षिक रास्ता है, जो शिक्षण के तरीकों में अपनाने के लिए, विशेष रूप से उस व्यक्ति के प्रकार के अनुसार, और यह भी दर्शाता है कि शर्म इस महान धर्म की विशेषताओं में से एक है। इसे अपनाना और इसका प्रचार करना आवश्यक है।

फिर अल्लाह ने यह भी स्पष्ट किया कि वह अपने बंदों में किसे पसंद करता है: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلتَّوَّٰبِينَ وَيُحِبُّ ٱلۡمُتَطَهِّرِينَ﴾ "निस्संदेह, अल्लाह तौबा करने वालों और शुद्ध रहने वालों से प्रेम करता है"। अल्लाह उन लोगों से प्रेम करता है जो अधिक तौबा करते हैं, क्योंकि इंसान में कमी और पाप होते हैं, इसलिए अल्लाह इस प्रकार के मोमिनों से प्रेम करता है। और इसी तरह अल्लाह तआला उन लोगों को पसंद करता है जो शारीरिक गंदगी से बचते हैं, जैसे संभोग (संपर्क) और माहवारी (हैज़) से, और गंदगी से, और उन चीज़ों से जो सफाई और स्नान की मांग करती हैं। अल्लाह तआला की पसंद उन लोगों के लिए है जो शारीरिक और आत्मिक गंदगी से शुद्ध होते हैं।

फिकह के लाभों में से एक है, दालीलों (प्रमाणों) से सूक्ष्म बातें निकालने की विद्वानों की क्षमता, जो दिमाग को खोलती है और गहरी सोच और निष्कर्ष को प्रकाशित करती है, जैसे अल्लाह का कहना है: ﴿فَإِذَا تَطَهَّرۡنَ فَأۡتُوهُنَّ مِنۡ حَيۡثُ أَمَرَكُمُ ٱللَّهُۚ﴾ "जब वे शुद्ध हो जाएं, तो जहां से अल्लाह ने आपको आदेश दिया है, वहां से उनके पास जाओ"। कुछ विद्वानों ने इसे स्नान के बाद सहवास के लिए निर्देश और मार्गदर्शन के रूप में बताया है, और इब्न -ए- ह़ज़्म रह़िमहुल्लाह ने इसे प्रत्येक मासिक धर्म के बाद अनिवार्य बताया, और कुछ उस़ूलियों ने इसे अनिवार्य माना, जबकि कुछ ने इसे वैध बताया, और निबंध से पहले निषेध को इसके अनिवार्य न होने का प्रमाण माना। फिर इब्न -ए- कस़ीर रह़िमहुल्लाह ने उन कथनों का उल्लेख करने के बाद कहा: और जिसका प्रमाण यह है कि उसे उस आदेश की ओर लौटाया जाए, जैसा कि निषेध से पहले था, यदि वह अनिवार्य था, तो अनिवार्य है, जैसे अल्लाह का कहना है: ﴿فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحَرَامُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ﴾ "जब पवित्र महीना समाप्त हो जाए, तो मुश्रिकों को मारो", या यदि वैध था, तो वैध है, जैसे अल्लाह का कहना है: ﴿وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا﴾ "और जब आप हलाल हो जाएं, तो शिकार करो", ﴿فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَانتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ﴾ "और जब नमाज समाप्त हो जाए, तो धरती पर फैल जाओ"। इस कथन पर सभी प्रमाण एकत्र होते हैं,

तथा गज़ाली और अन्य विद्वानों ने इसका उल्लेख किया, जिसे कुछ बाद के विद्वानों ने चुना है और यही सही है।(1)

यह वैज्ञानिक, वैचारिक और शैक्षिक दृष्टिकोण से क़ुरआन के प्रभाव को दर्शाता है, जिससे फिकह और उसूल का उदय हुआ, और विद्वानों ने कानूनी ग्रंथों से निष्कर्ष निकाले। यह भी दर्शाता है कि क़ुरआन दिमाग को विकसित करता है और उसे स्थिर नहीं रखता, बल्कि उसे अपनी व्यापकता में गतिशील बनाता है।

अल्लाह ने पहले जो स्पष्ट किया है कि महिलाओं के मासिक धर्म के बारे में पूछने वाले लोगों के लिए, वह पुरुष के उसकी पत्नी के साथ के संबंध में अधिक स्पष्टीकरण देता है। लोग इस बारे में पूछते थे कि यहूदियों का क्या कहना है, कि यदि पुरुष अपनी पत्नी के साथ पीछे से संभोग करता है, तो बच्चा भेंगा पैदा होता है।(2) अल्लाह ने कहा: ﴿نِسَآؤُكُمۡ حَرۡثٞ لَّكُمۡ فَأۡتُواْ حَرۡثَكُمۡ أَنَّىٰ شِئۡتُمۡۖ﴾ "आपकी पत्नियाँ आपकी खेती हैं, तो अपनी खेती में जैसे चाहें जाएं", अल्लाह ने इस आयत के माध्यम से इस विश्वास को खारिज कर दिया, जिससे लोगों में गलत विश्वास दूर हुआ। यह इस बात को भी दर्शाता है कि क़ुरआन के विभिन्न लोगों के मुद्दों को हल करने के लिए अवतरित होने के फायदे हैं। इब्न -ए- कस़ीर रह़िमहुल्लाह और अन्य व्याख्याकारों ने कहा है: कैसे चाहें, सामने से और पीछे से, केवल एक स्थान में, अर्थात केवल योनि में, जैसाकि स़ह़ीह़ ह़दीस़ों से प्रमाणित है।(3) इब्न -ए- अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने एक आदमी को जवाब देते हुए कहा: खड़े होकर, बैठे हुए, सामने और पीछे से, लेकिन केवल सामने के हिस्से में, इस के अतिरिक्त कहीं और नहीं।(4) तथा जुम्हूर स़हाबा, ताबेईन एवं फ़तवा देने वाले विद्वानों के निकट इस का अर्थ है किः तुम चाहे जिस दिशा से करो, आगे से चाहे पीछे से, किंतु संभोग योनि में ही करना है।(5)

इससे यह समझ आता है कि इस्लाम मुसलमान की आवश्यकताओं के सूक्ष्म विवरण को स्पष्ट करता है, और यह स्पष्ट, संपूर्ण, और गहरे सम्मान के साथ एक साहित्यिक शैली में आता है। पूरे स्पष्टता के साथ, और पाठ को उस पद्धति के साथ भरता है जो शिक्षा और बयान में शर्म के दृष्टिकोण को सिखाता है। इससे पाठक को कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं होती, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, और यह क़ुरआन के साहित्यिक चमत्कारों में से एक है। क़ुरआन

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 196)।

(3) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 61)।

(4) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 270)।

(5) पिछला संदर्भ (1/ 270)।

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 62)।

इस बारे में कहता है: ﴿نِسَآؤُكُمۡ حَرۡثٞ لَّكُمۡ﴾ "आपकी पत्नियाँ आपकी खेती हैं", और खेती वह स्थान है जहां बीज बोया जाता है और फसल उगती है, और उसी तरह महिला का गर्भ, जिसमें बच्चा उगता और बनता है। फिर अल्लाह ने अपने पति के साथ महिला के संबंध में कहा: ﴿فَأۡتُواْ حَرۡثَكُمۡ أَنَّىٰ شِئۡتُمۡۖ﴾ "अपनी खेती में जैसे चाहें जाएं", जिसमें एक साहित्यिक शैली है जो सम्मान से भरी है, जो महिला और पुरुष दोनों की शर्म का संरक्षण करती है। यह उसके महान नामों और गुणों का परिणाम है, जैसा कि ह़दीस़ में आया है: "निस्संदेह, अल्लाह शर्मीला और छुपाने वाला है"[1], और उसी समय, अल्लाह ने कहा: "अल्लाह सत्य को स्पष्ट करने और दिखाने से शर्म नहीं करता", जिससे यह समझ आता है कि शर्म सत्य को स्पष्ट करने से नहीं रोकती, लेकिन इसे स्पष्ट करने की शैली वह है जो शर्म से भरी हो, जो अल्लाह के गुणों में से एक है। इससे यह भी समझ आता है कि बातचीत और उपयुक्त शब्दों के चयन में शर्म और सम्मान के साथ शिक्षा का महत्व है, और उन शब्दों से दूर रहना जो कहने के योग्य नहीं होते, चाहे किसी भी दृष्टिकोण से हों, और इसमें समय, स्थान और स्थिति का ध्यान रखना चाहिए, और उच्च स्तर का सम्मान, जो नेक बंदों की विशेषताओं में से एक है, उनके प्रमुख नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और फिर उनके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम। उनके शब्दों में गंदी बातें या अयोग्य बातें नहीं होतीं। वे शब्दों का चयन ध्यान से करते हैं, जैसे कि इब्न -ए- अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा गया, जैसा कि पहले बताया गया, जहां उन्होंने कहा: खड़े होकर, बैठे हुए, सामने और पीछे, लेकिन केवल सामने के हिस्से में, इसे अन्यथा न करें। यह उच्च स्तर का सम्मान विद्वानों के शब्दों में विस्तारित हुआ, और उनके लेखों में सत्य स्पष्ट रूप से सबसे सुंदर शब्दों में था, बिना किसी आवश्यकता के अन्य शब्दों की, और वाक्यांशों की। अल्लाह हमें सिखाए और वह आदर दे जो उसे पसंद है और उससे प्रसन्न है।

और संदर्भ से जुड़ी कुछ लाभों में से एक यह है कि (أَنَّىٰ) शब्द का चयन किया गया है (أَنَّىٰ شِئۡتُمۡۖ) वाक्य से। क्योंकि (أَنَّىٰ) सवाल करने और एक आदेश देने वाले के बारे में सूचना देने के लिए आता है, जो विभिन्न पहलुओं से जुड़ा होता है, इसलिए यह (كيف कैसे), (أين कहां), और (متى कब) से अधिक व्यापक है।[2] फिर अल्लाह तआला कहते हैं: (और अपने लिए आगे भेजो), यह इस बात की ओर इशारा करता है कि मुसलमान को अपनी पत्नी के साथ संयम से पहले कुछ करना चाहिए। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं: "तुम (बिस्मिल्लाह) कहो, यह संभोग के समय तस्मियाह का उल्लेख है"।[3] इसी तरह, जो चीज़

(2) मुसनद अह़मद (4/ 224), सुनन अबू दावूद ह़दीस़ संख्या (4013)।

(3) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 62)।

(4) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 273)।

तुम्हारे लिए लाभकारी हो, उसे पहले रखो, और अपने लिए पवित्रता और अच्छे कार्यों को प्रस्तुत करो। कुछ लोग कहते हैं कि यह संतान और वंश की इच्छा को दर्शाता है।[1] कोई भी बात इस अर्थ से बाहर नहीं है, और यह क़ुरआन की विशेष बयानी विशेषता है, जिसमें कुछ संकेत ऐसे होते हैं जो विभिन्न उद्देश्य और लक्ष्यों को समाहित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, एक लाभ यह है कि जो दंपति चाहते हैं, उसे दुनिया और आखिरत दोनों के लक्ष्यों से जोड़ा गया है, साथ ही बिस्मिल्लाह कहने के माध्यम से अल्लाह का उल्लेख किया गया है, जो इसके महत्व और उसके आशीर्वाद को प्रदर्शित करता है। जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आया है: "यदि तुममें से कोई अपनी पत्नी के पास जाए, तो वह कहे, बिस्मिल्लाह, अल्लाहुम्मा जन्निबना शैतान, व जन्निब शैतान मा रिज़कतना। यदि उसे संतान मिलती है, तो शैतान उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचाता।"[2]

फिर इस महान आयत का समापन ताकवा का आदेश ﴿وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ﴾"और अल्लाह से डरते रहो" से होता है, जो अल्लाह की वह सिफारिश है जो क़ुरआन में बार-बार मिलती है।

इस सिफारिश पर मोमिन का ध्यान आकर्षित होता है, और उसकी महत्वपूर्णता की पुष्टि होती है, ताकि वह इसे हर समय याद रखे, क्योंकि ताकवा के साथ रहने से भलाई प्राप्त होती है, और बुराई दूर होती है। ताकवा यह आवश्यक बनाती है कि अल्लाह ने जिसे मना किया है उससे दूर रहना, और जिसे अल्लाह ने आदेश दिया है उसका पालन करना, और कमी और गलती के समय डरना। यह मोमिन को गलती और लापरवाही के समय तौबा और इस्तगफार की ओर भागने के लिए प्रेरित करता है। फिर अल्लाह अपने बंदों को अपनी ओर लौटने की याद दिलाते हैं: ﴿وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّكُم مُّلَٰقُوهُۗ﴾"और जान लो कि तुम उससे मिलने वाले हो", इससे मोमिन यह महसूस करता है कि वह अपने कार्यों का हिसाब देने और पुरस्कार पाने वाला है।

फिर अल्लाह अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से कहते हैं: ﴿وَبَشِّرِ ٱلۡمُؤۡمِنِينَ﴾ "और मोमिनों को खुशखबरी दो", और खुशखबरी का उल्लेख नहीं किया गया, ताकि यह अल्लाह से मिलने वाले सभी भलाई को समाहित कर सके, यह उन तरीकों में से है जो महान भलाई की उत्सुकता को उत्पन्न करते हैं। यदि एक मख़लूक़ की एक मख़लूक़ के लिए खुशखबरी वह चीज उत्पन्न करती है जिसे वह अपेक्षित और पसंद करता है, तो अल्लाह की खुशखबरी कितनी अधिक उत्सुकता और आशा उत्पन्न करती है। इससे यह समझ आता है

(2) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 64)।

(1) बुख़ारी (2/ 438) ह़दीस़ संख्या (3271)।

कि तालीम और दावत में खुशखबरी का महत्व, एक प्रभावी और प्रेरक विधि के रूप में, और इसी तरह ताकवा की याद दिलाने और उसे सुनने वाले के कानों में बार-बार दोहराने का महत्व, ताकि वह याद रख सके, और भलाई के लिए प्रयास करने और उसे आवश्यक मानने के लिए प्रेरित हो सके।

﴿وَلَا تَجۡعَلُواْ ٱللَّهَ عُرۡضَةٗ لِّأَيۡمَٰنِكُمۡ أَن تَبَرُّواْ وَتَتَّقُواْ وَتُصۡلِحُواْ بَيۡنَ ٱلنَّاسِۚ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٞ ٢٢٤ لَّا يُؤَاخِذُكُمُ ٱللَّهُ بِٱللَّغۡوِ فِيٓ أَيۡمَٰنِكُمۡ وَلَٰكِن يُؤَاخِذُكُم بِمَا كَسَبَتۡ قُلُوبُكُمۡۗ وَٱللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٞ ٢٢٥﴾ [سورة البقرة:٢٢٤-٢٢٥].

(तथा अल्लाह के नाम पर, अपनी शपथों को उपकार तथा सदाचार और लोगों में मिलाप कराने के लिए रोक न बनाओ और अल्लाह सब कुछ सुनता-जानता है। अल्लाह तम्हारी निरर्थक शपथों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा, परन्तु जो शपथ अपने दिलों के संकल्प से लोगे, उनपर पकड़ेगा और अल्लाह अति क्षमाशील, सहनशील है)।

ये आयतें स्पष्ट करती हैं कि मनुष्य को अपने सृजनहार तबारक व तआला के साथ किस तरह का व्यवहार करना चाहिए, और यह भी स्पष्ट करती हैं कि ईमान और अल्लाह की कसम के संबंध में क्या महत्वपूर्ण है, और इससे संबंधित निषेध और आदाब। अल्लाह तआला कहते हैं: ﴿وَلَا تَجۡعَلُواْ ٱللَّهَ عُرۡضَةٗ لِّأَيۡمَٰنِكُمۡ أَن تَبَرُّواْ وَتَتَّقُواْ وَتُصۡلِحُواْ بَيۡنَ ٱلنَّاسِۚ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٞ ٢٢٤﴾ (तथा अल्लाह के नाम पर, अपनी शपथों को उपकार तथा सदाचार और लोगों में मिलाप कराने के लिए रोक न बनाओ और अल्लाह सब कुछ सुनता-जानता है)। जब मनुष्य को अपनी बात की सच्चाई, या जो उसने देखा, या सुना, या जो उसने सीखा, या जो वह करेगा या नहीं करेगा, या किसी आरोप को खारिज करने के लिए अल्लाह की कसम की आवश्यकता होती है, तो वह अपनी बात की पुष्टि अल्लाह की कसम से करता है। इससे उसे अपनी कसमों के साथ अनुचित व्यवहार और अतिक्रमण हो सकता है। अल्लाह तबारक व तआला ने इस मामले को स्पष्ट किया, जिसमें सभी पहलू और संबंधित मामले शामिल हैं, जिनके अर्थ और संकल्पनाएँ इसके लिए उपयुक्त हैं। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम और अन्य विद्वानों ने इस पाठ को कई पहलुओं से समझा, जो ईश्वरीय मार्गदर्शन को शामिल करते हैं। यह साहित्यिक चमत्कार है कि एक संक्षिप्त पाठ में सभी पहलुओं को समाहित किया जाता है जिन्हें स्पष्ट करना आवश्यक होता है। साहित्यिक चमत्कार केवल शब्द और उनके अर्थों के व्यापकता में नहीं है, बल्कि शब्दों की संरचना में भी है, जो कई निर्दिष्ट और लक्षित संकेतों को समाहित करती है। इमाम क़ुर्तबी रह. ने इस व्याख्या को संक्षेप में प्रस्तुत किया: किसी भी अच्छे काम से इसलिए मत हटो कि हमने कसम खाई है कि हम ऐसा नहीं करेंगे, जैसा कि इब्ने अब्बास, नख़ई, मुजाहिद, रबीअ और अन्य ने कहा है। सईद बिन ज़ुबैर ने कहा: वह आदमी जो कसम खाता है कि वह

अच्छा नहीं करेगा, या संबंध नहीं रखेगा, या लोगों के बीच सुधार नहीं करेगा, उससे कहा जाता है: 'अच्छा करो।' वह कहता है: 'मैंने कसम खाई है।' कुछ व्याख्याताओं ने कहा है: इसका मतलब है कि अल्लाह की झूठी कसम न खाएं, जब आप भलाई, परहेज़गारी और सुधार करना चाहते हैं।

इससे यह संकेत भी मिलता है कि कसमों को कम करें, क्योंकि यह भलाई और परहेज़गारी में सहायक है। बहुत ज्यादा कसम खाने से पाप और अल्लाह के हक़ को अनदेखा करने की संभावना बढ़ जाती है। साथ ही, कसम को हर सही और गलत काम के लिए आम न बनाओ। यदि किसी व्यक्ति से कोई भलाई का काम मांगा जाए, तो वह बहाना बनाकर कहे: "मेरी कसम है," जबकि उसने कसम खाई न हो। और कसम को हर सत्य और असत्य में न बनाओ। और जब किसी आदमी से भलाई करने के लिए कहा जाता है, तो वह अल्लाह का बहाना बनाता है और कहता है: 'मेरी कसम है,' जबकि उसने कसम नहीं खाई होती है।

तथा इस के अन्य अर्थों में से यह भी है: यदि आप कसम खाते हैं कि आप अपने रिश्तेदारों से संबंध नहीं रखेंगे, दान नहीं देंगे, सुधार नहीं करेंगे, और अन्य अच्छे कार्यों के बारे में, तो अपनी कसम का कफारा दें।[1]

महान आयत में भलाई के मुख्य प्रकार शामिल हैं, जिन्हें कसम की वजह से नहीं रोका जाना चाहिए, जैसे भलाई, परहेज़गारी और लोगों के बीच सुधार: ﴿وَلَا تَجۡعَلُواْ ٱللَّهَ عُرۡضَةً لِّأَيۡمَٰنِكُمۡ أَن تَبَرُّواْ وَتَتَّقُواْ وَتُصۡلِحُواْ بَيۡنَ ٱلنَّاسِۗ﴾ "और अल्लाह की कसमों को अपने अच्छे कामों, परहेज़गारी और लोगों के बीच सुधार के लिए रुकावट न बनाओ"। तो भलाई, परहेज़गारी और लोगों के बीच सुधार, कसम को पूरा करने से अधिक महत्वपूर्ण और प्राथमिक हैं। यह विभिन्न मामलों के बीच तुलना की आवश्यकता को दर्शाता है, और सोच, निष्कर्ष और संकलन के स्तर को बढ़ाने की आवश्यकता, और मुसलमान के लिए प्राथमिकताओं की व्यवस्था, और उसके ज्ञान और समझ को उच्च स्तरों तक बढ़ाने की क्षमता, और निर्माण की सामाजिक और नैतिक संरचना की दृढ़ता को प्राप्त करने के लिए उत्पादक सोच। क़ुरआन के लाभों को समझने में ये अर्थ, प्राप्तकर्ता के दिमाग को सोचने और कार्रवाई करने की दिशा में बढ़ाते हैं, जो कानूनी उद्देश्यों को पूरा करता है, जिसे शैक्षिक, शैक्षिक और प्रशासनिक प्रणाली की आवश्यकता होती है।

आयत में एक और लाभ यह है कि कसम भलाई को नहीं रोकती, बल्कि अपनी कसम का कफारा दें और भलाई करें, और अल्लाह के सामने भलाई और संबंध की उच्च स्थिति है,

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 64-65)।

क्योंकि अल्लाह ने कसम का कफारा देने का निर्देश दिया है। इसमें सहयोग, एकता और संबंधों की महत्वपूर्णता को दर्शाता है, और उन्हें कसम के कफारे से प्राथमिकता देने का निर्देश। इसमें शरीअत की चिंता है कि मोमिनों के लिए जो भी भलाई लाता है और उन्हें एकत्र करता है, जैसे कसम का कफारा देने का निर्देश। फिर इस महान आयत का ईश्वरीय निर्देश इस बात पर समाप्त होता है कि: ﴿وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ "अल्लाह सुनने और जानने वाला है", यह कि अल्लाह सुनता है जो आप कहते हैं, और जानता है जो आप छुपाते और प्रकट करते हैं। कसम के पहलुओं में से एक है कि कसम खाने वाला किसी ऐसे मामले पर कसम खाता है जिसे वह नहीं जानता और नहीं समझता, और जिसे जानता और समझता है वह कसम खाने वाला होता है। अल्लाह ने स्पष्ट किया कि वह सुनता और जानता है जिसे कसम खाने वाला नहीं जानता और नहीं समझता। इसमें अल्लाह के ज्ञान की याद दिलाई जाती है: यदि कसम खाने वाला नहीं जानता और समझता, तो अल्लाह सुनता और जानता है। और यदि मुसलमान अपने मन में अल्लाह के गुणों को हर मामले में याद रखता है, तो वह उसे उस चीज़ पर खड़ा करता है जिसे अल्लाह पसंद करता है, और वह उससे प्रेरित होता है, और जो अल्लाह ने मना किया है उससे दूर रहता है। आदाब में से यह भी है कि मुसलमान अपनी कसमों के लिए अपने रब को एक अवरोध और बाधा न बनाए।

फिर अल्लाह तआला कसमों के बारे में और अधिक शिक्षा देता है: ﴿لَّا يُؤَاخِذُكُمُ ٱللَّهُ بِٱللَّغْوِ فِيٓ أَيْمَٰنِكُمْ﴾ (अल्लाह तम्हारी निरर्थक शपथों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा) अल्लाह ने उन बातों से हर्ज को हटा दिया है जो लोगों की ज़ुबान पर चलती हैं, जैसे कि बेकार कसमें, और विद्वानों ने इस पर सहमति जताई है कि बेकार कसमें: जैसे कि कोई व्यक्ति अपनी बात के दौरान कहता है: नहीं, अल्लाह की कसम। हाँ, अल्लाह की कसम। बिना किसी कसम की मंशा के।(1) यह अल्लाह की महान कृपा है, क्योंकि उन्होंने इस प्रकार की कसमों से हर्ज और पाप को हटा दिया है, जो अक्सर बिना किसी मंशा के व्यक्ति से निकल जाती हैं। लेकिन पकड़ तब होती है जब जैसा कि तबारक व तआला ने बताया: ﴿وَلَٰكِن يُؤَاخِذُكُم بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ﴾ (परन्तु जो शपथ अपने दिलों के संकल्प से लोगे, उनपर पकड़ेगा), कि वह किसी चीज़ पर कसम खाता है और जानता है कि वह झूठा है, और वह किसी चीज़ पर कसम खाता है और केवल सच्चाई चाहता है, तो वह उस पर नहीं होता जो उसने कसम खाई थी। फिर इस महान आयत का समापन अल्लाह तआला के इस कथन से होता है: ﴿وَٱللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ﴾ (और अल्लाह अति क्षमाशील, सहनशील है), अपने बंदों के लिए माफ करने वाला, सहनशील है। यह अल्लाह की महान कृपा और दया

(1) पिछला संदर्भ (3/ 66)।

है कि वह अपने बंदों को माफ करता है और उन पर सहनशील होता है, और उन्हें सजा देने में जल्दी नहीं करता। और जो तौबा और इस्तगफार करता है उसे माफ करता है।

﴿ لِّلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِن نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ فَإِن فَآءُو فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَإِنْ عَزَمُوا۟ ٱلطَّلَٰقَ فَإِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾ ﴾ [سورة البقرة:٢٢٦-٢٢٧].

(तथा जो लोग अपनी पत्नियों से संभोग न करने की शपथ लेते हों, वे चार महीने प्रतीक्षा करें। फिर यदि (इस बीच) अपनी शपथ से फिर जायें, तो अल्लाह अति क्षमाशील, दयावान् है। और यदि उन्होंने तलाक़ का संकल्प ले लिया हो, तो निःसंदेह अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है)।

क़ुरआन का संदर्भ पति-पत्नी के बीच अलगाव के मामलों की ओर बढ़ता है, अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿ لِّلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِن نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ فَإِن فَآءُو فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾ ﴾ (तथा जो लोग अपनी पत्नियों से संभोग न करने की शपथ लेते हों, वे चार महीने प्रतीक्षा करें। फिर यदि (इस बीच) अपनी शपथ से फिर जायें, तो अल्लाह अति क्षमाशील, दयावान् है) यह आयत और इसके बाद की आयतें उस स्थिति को संबोधित करती हैं जब पति अपनी पत्नी के साथ सहवास न करने की कसम खाता है, यदि वह चार महीने से कम समय के लिए अपनी पत्नी से अलग रहता है, तो यह अन्य कसमों की तरह है।

या तो वह कफारा देता है और अपनी पत्नी के साथ सहवास करता है, या अपनी कसम पर चलता है। उसकी पत्नी का उस पर कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि यह चार महीने से कम है: ﴿تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ﴾ "चार महीने की प्रतीक्षा"। और यदि अवधि चार महीने से अधिक हो, तो पत्नी चार महीने की प्रतीक्षा करती है: ﴿فَإِن فَآءُو فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾ "फिर यदि वे लौट आएं, तो अल्लाह बहुत माफ करने वाला, दयालु है", अर्थात यदि वे अपनी कसम से लौट आएं, तो अल्लाह उन्हें माफ करता है जो पहले हो चुका है, और उन्हें कसम का कफारा देने की अनुमति दी है। और यदि वह नहीं लौटता, और चार महीने समाप्त हो जाते हैं, तो पत्नी सहवास की मांग कर सकती है, यह उसका अधिकार है चार महीने के बाद। यदि वह सहवास करता है, तो उसे कसम का कफारा देना होगा, और यदि वह मना करता है, तो पत्नी धैर्य रख सकती है, या तलाक की मांग कर सकती है, और यदि वह मना करता है, तो उसे तलाक देने के लिए मजबूर किया जाएगा।[1]

(1) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 180)

यहाँ क़ुरआन के बयान से अनेक लाभ प्रकट होते हैं। इनमें से एक लाभ यह है कि इसमें उन शब्दों का चयन किया गया है, जो पति-पत्नी के बीच की अंतरंग बातों को बयान करते समय छोटे बच्चे को समझ में न आए, और बड़े इसे समझ जाएं लेकिन उनके स्वाभाविक संकोच को ठेस न पहुँचे, क्योंकि इंसान स्वभावतः शर्मीला होता है। इससे यह पुष्टि होती है कि क़ुरआन की शैली मानव दिमाग और स्वाद को उच्च नैतिक और अदब की उच्चतर धाराओं की ओर ले जाती है, और इस प्रकार हर पहलू में शर्म की शिक्षा का महत्व होता है, जिसमें अभिव्यक्तिकर्ता शब्दों का चयन भी शामिल है, जिससे शर्म की विशेषता को चोट न पहुंचे। अधिकारों की महानता भी पति-पत्नी के बीच उनके संबंधों को नियंत्रित करने वाली क्षमताओं और गुणों के अनुसार होती है, तबारक व तआला ने इसे चार महीनों में निर्धारित किया, जो पुरुष को यह समझाता और स्पष्ट करता है कि चार महीनों से अधिक समय तक अपनी पत्नी से दूर न रहे, जैसे कि यात्रा में, उच्चतम सीमा के रूप में। और इस मामले में महिला का एक अनिवार्य अधिकार है, और यदि पति मना करता है, तो उसे अपना अधिकार मांगने का अधिकार है, और यदि सीमा पार होती है, तो उसे तलाक की मांग करने का अधिकार है। इसमें शारीरिक और मानसिक हानि को रोकना शामिल है, और पति-पत्नी के बीच अधिकारों का पालन अनिवार्य है, और विकल्प की सीमा सीमित है और शरीअत द्वारा नियंत्रित है। शरीअत पति-पत्नी के संबंध में सबसे सूक्ष्म मामलों की भी देखभाल करती है, और इसे चार महीनों में निर्धारित करना एक प्रमाण है कि यह एक महान, ज्ञानी, और हर बात से अवगत व्यक्ति द्वारा किया गया है। जो महिला की प्रवृत्ति को समझता है, किसी को भी इस मामले में समय निर्धारित करने और इसे लागू करने का अधिकार नहीं हो सकता, सिवाय समीअ और अलीम (सब कुछ सुनने वाले एवं जानने वाले) के। यहां तक कि पत्नी को अलग करने के लिए हज्र भी चार महीनों से अधिक नहीं हो सकता। अल्लाह तआला ने सूरह अन-निसा में कहा है: ﴿وَٱهۡجُرُوهُنَّ فِي ٱلۡمَضَاجِعِ﴾ "और उन्हें बिस्तरों में छोड़ो"। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने महिलाओं के एक समूह को बुलाया और उनसे पूछा। उन्होंने चार महीने का उल्लेख किया, तो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने युद्ध में पुरुषों की अवधि को चार महीने कर दिया, और यदि अवधि समाप्त हो जाती, तो उन्होंने योद्धाओं को वापस बुला लिया और दूसरों को भेज दिया।[1] मुसलमान को सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु का अल्लाह की सीमाओं के प्रति सावधानी और लोगों की स्थितियों की देखभाल करनी चाहिए, ताकि उन्हें खुद और उनके सम्मान की सुरक्षा मिल सके, और संगठनात्मक विधि और उसके लिए सबूत का तरीका देखना चाहिए।

फिर इस महान आयत का समापन इस वाक्यांश के साथ होता है जो स्थिति के अनुरूप है: ﴿وَإِنۡ عَزَمُواْ ٱلطَّلَٰقَ فَإِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٞ ٢٢٧﴾ "और यदि वे तलाक का इरादा करें, तो अल्लाह सुनने

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 72)।

और जानने वाला है"। और यदि वे तलाक का इरादा करें, और उस पर दृढ़ रहें, तो अल्लाह तआला सुनता है, और आपकी स्थिति, नियत और इस मामले के इरादे को जानता है, चाहे हानि पहुंचाने, कठिनाई उत्पन्न करने, या दूसरे पक्ष को चोट पहुंचाने, या अन्यथा। इससे यह सुनिश्चित होता है कि ज्ञानी और सुनने वाले की निगरानी की जाए। और यह पति-पत्नी के बीच हानि को रोकता है, और यदि हानि होती है, तो अधिकारों के दरवाजे नियंत्रित होते हैं, जो उसे रोकते हैं। फिर अल्लाह तआला का धन्यवाद और प्रशंसा, जिसने अपने बंदों पर इस महान शरीअत का आशीर्वाद प्रदान किया।

﴿ وَٱلْمُطَلَّقَٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ ثَلَٰثَةَ قُرُوٓءٍ ۚ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَن يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ ٱللَّهُ فِىٓ أَرْحَامِهِنَّ إِن كُنَّ يُؤْمِنَّ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْـَٔاخِرِ ۚ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِى ذَٰلِكَ إِنْ أَرَادُوٓا۟ إِصْلَٰحًا ۚ وَلَهُنَّ مِثْلُ ٱلَّذِى عَلَيْهِنَّ بِٱلْمَعْرُوفِ ۚ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۗ وَٱللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٨﴾ ﴾ [سورة البقرة:٢٢٨]

(तथा जिन स्त्रियों को तलाक़ दी गयी हो, वे तीन बार रजवती होने तक अपने आपको विवाह से रोके रखें। उनके लिए ह़लाल (वैध) नहीं है कि अल्लाह ने जो उनके गर्भाशयों में पैदा किया है, उसे छुपायें, यदि वे अल्लाह तथा आख़िरत (परलोक) पर ईमान रखती हों तथा उनके पति इस अवधि में अपनी पत्नियों को लौटा लेने के अधिकारी हैं, यदि वे मिलाप चाहते हों तथा सामान्य नियमानुसार स्त्रियों के लिए वैसे ही अधिकार हैं, जैसे पुरुषों के उनके ऊपर हैं। फिर भी पुरुषों को स्त्रियों पर एक प्रधानता प्राप्त है और अल्लाह अति प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है)।

फिर संदर्भ तलाकशुदा महिलाओं से संबंधित एक अन्य पहलू की ओर बढ़ता है: ﴿ وَٱلْمُطَلَّقَٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ ثَلَٰثَةَ قُرُوٓءٍ ۚ ﴾ "और तलाकशुदा महिलाएं तीन कुरुअ तक प्रतीक्षा करेंगी", तलाकशुदा महिला की इद्दत तीन पवित्रताओं (कुरुआ) की होती है, वे इस अवधि की प्रतीक्षा करेंगी, जो अल्लाह तआला का कथन है: "يَتَرَبَّصْنَ वे प्रतीक्षा करेंगी"।

"قُرُوٓءٍ कुरुअ" शब्द ने पवित्रता और मासिक धर्म दोनों को समाहित किया है, और यह साहित्यिक चमत्कार है, कि एक शब्द दो स्थितियों को समाहित कर सकता है। इमाम क़ुर्तबी रह़िमहुल्लाह ने "तीन कुरुअ" के बारे में कहा: अर्थात तीन अवधि, या तीन चक्र, और तलाकशुदा महिला केवल दो स्थितियों से युक्त होती है, कभी पवित्रता से मासिक धर्म की ओर जाती है, और कभी मासिक धर्म से पवित्रता की ओर, इस प्रकार, शब्द का अर्थ स्पष्ट हो जाता है और वह पवित्रता और मासिक धर्म दोनों को व्यक्त करता है।[1] न्याय और अधिकारों की सुरक्षा के लिए, तलाकशुदा महिला को इस अवधि की प्रतीक्षा करनी होती है, ताकि गर्भ न

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 76)।

होने की पुष्टि हो सके, जिससे रिश्तों के अतिक्रमण को रोका जा सके, और तलाकशुदा पति का अधिकार सुरक्षित रह सके अगर उसके पास संतान है। और अन्य पति का अधिकार सुरक्षित रह सके कि उसकी संतान में ऐसा कुछ न हो जो उसका न हो। यह संकेत करता है कि रिश्तों और संतानों की पवित्रता और सुरक्षा का महत्व है, और शरीअत का न्याय और उसके महान उच्च आदेशों की सटीकता।

तलाकशुदा महिला को अपने गर्भ के बारे में खुलासा करना चाहिए, अगर गर्भ में तलाकशुदा पति की संतान है तो: ﴿وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَن يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ﴾ (उनके लिए ह़लाल (वैध) नहीं है कि अल्लाह ने जो उनके गर्भाशयों में पैदा किया है, उसे छुपायें) और निषेध यह आवश्यक बनाता है कि गर्भ में जो संतान है उसे छुपाना ह़राम है, क्योंकि इसमें तलाकशुदा पति का अधिकार है, बच्चे की पिता होने का। और उसी तरह बच्चे का यह अधिकार है कि उसे उसके पिता से संबंधित किया जाए। लाभों में से एक है अल्लाह का तौह़ीद ए रुबूबियत की पुष्टि, कि वह इस संतान का सृजनहार है, इसलिए अल्लाह ने सृजन के बारे में पुष्टि की: ﴿وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَن يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ﴾ (उनके लिए ह़लाल (वैध) नहीं है कि अल्लाह ने जो उनके गर्भाशयों में पैदा किया है, उसे छुपायें, क्योंकि वह वही है जिसने महिला के गर्भ में जो है उसे पैदा किया है, ताकि सृजन पति और पत्नी से संबंधित न हो। वह सृजनहार और ज्ञानी है, और जो संबंधित है उसे स्पष्ट करना या छुपाना उसका मामला है।

फिर अल्लाह तआला ने उस गर्भ को छुपाने से चेतावनी दी, उसके ईमान का उपयोग करते हुए यदि वह अल्लाह और अंतिम दिन पर विश्वास करती है, जो इस विशेषता का शैक्षिक और दावती रूप से उपयोग करने का महत्व बताता है, और न्यायालय में भी, क्योंकि इससे अल्लाह का डर उत्पन्न होता है, और सच्चाई की अमानत को निभाने का उत्साह आता है, अल्लाह का डर जो उसे सच बताने के लिए मजबूर करता है, भले ही यह उसके लिए अप्रिय हो। उसी समय यह सच को नहीं बताने की चेतावनी देता है, यदि वह अल्लाह और अंतिम दिन पर विश्वास करती है, जिसमें हिसाब और इनाम होता है: ﴿وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَن يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِن كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ﴾ "और उन्हें यह बताना अनिवार्य है कि उनके गर्भ में अल्लाह ने जो रखा है उसे छुपाना ह़राम है, अगर वे अल्लाह और अंतिम दिन पर विश्वास करती हैं"। मोमिन महिलाओं का रास्ता उन्हें छुपाने से रोकता है, क्योंकि उन्होंने अल्लाह पर विश्वास किया है, और अल्लाह पर विश्वास के परिणामस्वरूप जो ज्ञान प्राप्त होता है वह उन्हें सच को छुपाने से दूर रखता है, और उनके अंतिम दिन पर विश्वास भी, जो उन्होंने जाना है कि यह हिसाब और इनाम का दिन है। और इसके लाभों में से एक है: अच्छे

कार्यों को करने और बुराई को त्यागने की ओर प्रेरित करने वाले गुणों और विशेषताओं का सदुपयोग करने का महत्व।

फिर अल्लाह तआला स्पष्ट करता है कि पति अपनी पत्नी को उसके निकाह में वापस ला सकता है: ﴿وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَٰلِكَ﴾ "और उनके पति उन्हें उनके इद्दत की अवधि में वापस लेने का अधिक अधिकार रखते हैं।" इससे यह पता चलता है कि इस्लामी शरीअत की सहजता और अल्लाह रहमान और रहीम की रहमत यह है कि उसने पति को यह अधिकार दिया कि वह इद्दत की अवधि के दौरान अपनी पत्नी को वापस ले सके। इसका उद्देश्य परिवार को एकजुट रखना और रिश्तों को बचाए रखना है। शरीअत की सरलता और अल्लाह की दया यह है कि अल्लाह तबारक व तआला ने पति को यह अनुमति दी है कि वह अपनी पत्नी को इद्दत के दौरान निकाह में वापस ले सकता है, और शरीअत के उद्देश्यों में से एक है परिवार को एकजुट करना और इसे प्राप्त करने का प्रयास करना। इसके लाभों में से एक यह है कि अल्लाह तआला ने यहां पति को "बअल" कहा है: "وَبُعُولَتُهُنَّ" उसे "बअल" कहा गया है, क्योंकि वह पत्नी पर उच्च स्थान रखता है, जैसे कि अल्लाह ने उसे उसकी पत्नी का मालिक बनाया है। एक स्थान पर अल्लाह तआला का कथन है: (أتدعون بعلاً) "क्या तुम बअल को पुकारते हो" अर्थात रब, उसकी उच्चता के कारण उस को "बअल" कहा गया है।(1) महान आयत यह बताती है कि पुनः मिलाने और पुनः स्थापित करने की नीयत सुधार पर आधारित होनी चाहिए, न कि उसे नुकसान पहुंचाने के लिए: ﴿وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَٰلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا﴾ "और उनके पति उन्हें वापस लेने के अधिक हकदार हैं, यदि वे सुधार चाहते हैं"। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस्लाम का मार्ग अच्छे इरादों पर आधारित है, और बुरे इरादों को समाप्त करता है, ताकि दूसरे पक्ष को नुकसान न पहुंचे। इसलिए उसे उसे नुकसान पहुंचाने के लिए वापस लेना उचित नहीं है। यह उसकी नीयत के माध्यम से है जिसे कोई नहीं जानता सिवाय उसके खुद के, और उससे पहले अल्लाह तआला, जो सब कुछ जानने वाला और बुद्धिमान है। यह किसी भी मार्ग में नहीं हो सकता, जिसके अनुयायी अल्लाह तआला और अंतिम दिन पर विश्वास करते हैं। मोमिन को शरीअत की कृपा का ज्ञान होना चाहिए, साथ ही ईमान की कृपा का, जिसका प्रभाव उसके व्यवहार और संबंधों पर दिखाई देता है, और इसे उस पद्धति से सुरक्षित रखा जाता है जिसे बिना किसी अन्य तरीके से प्राप्त नहीं किया जा सकता। अल्लाह तआला का धन्यवाद और प्रशंसा। आयतों के संकेतों के लाभों में से एक: इस्लामी फिकह में इस विषय और अन्य सूक्ष्म आदेशों में विद्वानों ने महान फिकही आदेशों को निकाला है, जो पति-पत्नी के जीवन में

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 79)।

महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं, और यह इन आयतों और अन्य से है, जो इसे फिकह और तफसीर की पुस्तकों में देख सकते हैं।

फिर पति-पत्नी के बीच अधिकारों की समतुल्यता आती है, अल्लाह तआला के इस कथन में: ﴿وَلَهُنَّ مِثْلُ ٱلَّذِى عَلَيْهِنَّ بِٱلْمَعْرُوفِ﴾ "और उनके लिए भी उसी तरह के अधिकार हैं जैसे उनके ऊपर हैं, भले तरीके से"। जैसे कि पति के अधिकार होते हैं, उसी तरह पत्नी के भी अपने पति पर अधिकार होते हैं, और इसलिए प्रत्येक को दूसरे के प्रति अपनी जिम्मेदारी पूरी करनी होती है, और भले तरीके से अपने ऊपर अधिकार को पूरा करना होता है।

फिर अल्लाह तआला ने बताया कि पति की एक अधिक स्थिति है: ﴿وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ﴾ "और पुरुषों का महिलाओं पर एक दर्जा अधिक है"। पुरुष का एक दर्जा अधिक है, क्योंकि इसमें आर्थिक ख़र्च शामिल है, और पुरुष में नेतृत्व की विशेषता होती है। इसलिए एक को दूसरे के ऊपर नेतृत्व और मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है, बिना दूसरे के अधिकारों को कम किए। अल्लाह तआला ने यह अधिकार पुरुष को दिया, क्योंकि मानव स्वभाव इसकी मांग करता है, और लोगों के मामले बिना नेतृत्व के ठीक नहीं हो सकते। जैसे अल्लाह तआला ने सूरत अन-निसा में कहा है: ﴿ٱلرِّجَالُ قَوَّٰمُونَ عَلَى ٱلنِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ ٱللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَبِمَآ أَنفَقُوا۟ مِنْ أَمْوَٰلِهِمْ﴾ "पुरुष महिलाओं पर प्रभुत्व रखते हैं क्योंकि अल्लाह ने एक को दूसरे पर श्रेष्ठता दी है और जो उन्होंने अपने धन से खर्च किया है"। यह श्रेष्ठता और अधिक स्थिति का निर्णय अल्लाह की कृपा है, जिससे घर के मामले और परिवार की संरचना सही हो सके, जो संतान और देखभाल, मार्गदर्शन और जिम्मेदारी की ओर ले जाएगी।

फिर अल्लाह तआला ने इस महान आयत का समापन अपने कथन से किया: ﴿وَٱللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ﴾ "और अल्लाह सर्वशक्तिमान, बुद्धिमान है"। यह स्पष्ट और पुष्टि है कि अल्लाह सर्वशक्तिमान है, उसके पास संपूर्ण शक्ति और क्षमता है, जिससे उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने वालों और विरोध करने वालों के प्रति डर उत्पन्न होता है, और अपने आदेश और निर्णय में बुद्धिमान है। इन ईश्वरीय गुणों की जानकारी, और उनके महान आयत के विषय से संबंध, यह आवश्यक बनाते हैं कि उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने या किसी भी चीज़ पर आपत्ति करने से बचना चाहिए, क्योंकि वह अपने आदेशों में बुद्धिमान है, और इंसान के बारे में वह जानता है जो इंसान खुद के बारे में नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे बनाया है, और वह खुद के मुकाबले उससे अधिक नज़दीक है।

﴿ٱلطَّلَٰقُ مَرَّتَانِۖ فَإِمۡسَاكُۢ بِمَعۡرُوفٍ أَوۡ تَسۡرِيحُۢ بِإِحۡسَٰنٖۗ وَلَا يَحِلُّ لَكُمۡ أَن تَأۡخُذُواْ مِمَّآ ءَاتَيۡتُمُوهُنَّ شَيۡـًٔا إِلَّآ أَن يَخَافَآ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ ٱللَّهِۖ فَإِنۡ خِفۡتُمۡ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ ٱللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِمَا فِيمَا ٱفۡتَدَتۡ بِهِۦۗ تِلۡكَ حُدُودُ ٱللَّهِ فَلَا تَعۡتَدُوهَاۚ وَمَن يَتَعَدَّ حُدُودَ ٱللَّهِ فَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ٢٢٩ فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُۥ مِنۢ بَعۡدُ حَتَّىٰ تَنكِحَ زَوۡجًا غَيۡرَهُۥۗ فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِمَآ أَن يَتَرَاجَعَآ إِن ظَنَّآ أَن يُقِيمَا حُدُودَ ٱللَّهِۗ وَتِلۡكَ حُدُودُ ٱللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوۡمٖ يَعۡلَمُونَ ٢٣٠﴾ [سورة البقرة:٢٢٩-٢٣٠].

(तलाक़ दो बार है; फिर नियमानुसार स्त्री को रोक लिया जाये या भली-भाँति विदा कर दिया जाये और तुम्हारे लिए ये ह़लाल (वैध) नहीं है कि उन्हें जो कुछ तुमने दिया है, उसमें से कुछ वापिस लो। फिर यदि तुम्हें ये भय हो कि पति पत्नी अल्लाह की निर्धारित सीमाओं को स्थापित न रख सकेंगे, तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि पत्नि अपने पति को कुछ देकर मुक्ति करा ले। ये अल्लाह की सीमायें हैं, इनका उल्लंघन न करो और जो अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करेंगे, वही अत्याचारी हैं। फिर यदि उसे (तीसरी बार) तलाक़ दे दी, तो वह स्त्री उसके लिए ह़लाल (वैध) नहीं होगी, जब तक दूसरे पति से विवाह न कर ले। अब यदि दूसरा पति (संभोग के पश्चात्) उसे तलाक दे दे, तब प्रथम पति से (निर्धारित अवधि पूरी करके) फिर विवाह कर सकती है, यदि वे दोनों समझते हों कि अल्लाह की सीमाओं को स्थापित रख सकेंगे और ये अल्लाह की सीमायें हैं, जिन्हें उन लोगों के लिए उजागर कर रहा है, जो ज्ञान रखते हैं)।

फिर संदर्भ तलाक और उसके आदाब को स्पष्ट करने की ओर जाता है: ﴿ٱلطَّلَٰقُ مَرَّتَانِۖ﴾ "तलाक दो बार है"। अल्लाह तबारक व तआला ने पहली और दूसरी बार तलाक के बाद पुनः मिलाने की अनुमति दी है, जब तक कि इद्दत की अवधि हो। और तीसरी बार को स्पष्ट किया, जो है: ﴿فَإِمۡسَاكُۢ بِمَعۡرُوفٍ أَوۡ تَسۡرِيحُۢ بِإِحۡسَٰنٖۗ﴾ "या तो भले तरीके से उसे रोको या अच्छे तरीके से उसे छोड़ दो"। यह पुनः मिलाने और अंतिम अलगाव का नियम है। इसके फायदों में से एक यह है कि पहली बार तलाक के बाद विचार करने का अवसर प्रदान किया गया, फिर दूसरी बार का अवसर दिया, ताकि तीसरी बार तलाक से पहले वह दो बार के अनुभव से गुजरे। और उसी तरह उन्होंने उन लोगों के लिए भी अवसर प्रदान किया जो सहमत नहीं होते कि वह संबंध अच्छे तरीके से समाप्त हो, अलगाव अच्छा व्यवहार दिखाने के साथ। यह उच्च अदब और महान दया से भरा होता है, जो सात आसमानों से ऊपर से पति पर अनिवार्य किया गया है, ताकि वह अपनी तलाकशुदा पत्नी का अधिकार सुरक्षित रखे। तो या तो वह उसे भले तरीके से रोके, और उसकी संगति और सहवास को सुधार दे, जो अधिकार से संबंधित है, और अच्छे सहवास से संबंधित है, या अच्छे तरीके से उसे छोड़ दे। "بِإِحۡسَٰنٖۗ अच्छे तरीके से" शब्द हर सुंदरता को समाहित करता है जो उसे अत्याचार से परे ले जाती है, और उसे केवल अत्याचार से रोके नहीं, बल्कि उसे अच्छे स्तर तक ले जाती है। जहां "بِإِحۡسَٰنٖۗ अच्छे तरीके से" शब्द में

तीन उच्च नैतिक और दार्शनिक घटक शामिल होते हैं: अत्याचार को रोकना क्योंकि यह अच्छे के खिलाफ है, उसे उसके सभी भौतिक और मानसिक अधिकार देना, क्योंकि यह अच्छे का हिस्सा है, और उसे भौतिक और मानसिक अधिकारों में वृद्धि देना, जो अच्छे की पूर्णता है। यह दर्शाता है कि अल्लाह की शरीअत अच्छे और दया पर आधारित है, और सत्य और बिना नुकसान के काम करने पर। यह अनिवार्य बनाता है कि पति और पत्नी इस तरह का व्यवहार करें जिससे यह प्राप्त हो, क्योंकि इसका प्रभाव बच्चों के मानसिक, व्यवहारिक और नैतिक स्थिरता पर पड़ता है, जो परिवार का विस्तार होते हैं, और वे इस पद्धति पर बढ़ते और परिपक्व होते हैं, जो आगे चलकर उनके पारिवारिक संरचना पर असर डालेगी, जहां से यह मूल परिवार से कई परिवार निकलेगी।

साहित्यिक संकेतों में से एक यह भी है कि अल्लाह तआला ने पत्नी को रोकने के सभी भलाई के गुणों को एक शब्द में समाहित किया: " بِمَعْرُوفٍ भले तरीके से", और उसी तरह पत्नी को अच्छे तरीके से छोड़ने के सभी भलाई के गुणों को एक शब्द में: "بِإِحْسَٰنٍ अच्छे तरीके से"। दोनों शब्दों ने पूरे नैतिक उद्देश्य को, उसकी विस्तृत और महान संरचना के साथ, समाहित कर लिया। यह क़ुरआन के साहित्यिक चमत्कारों में से एक है, और इसकी उच्च नैतिक सामग्री का हिस्सा है।

फिर अल्लाह तआला पति को आदेश देते हैं कि वह पत्नी के अधिकारों का अतिक्रमण न करे: ﴿وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَأْخُذُوا۟ مِمَّآ ءَاتَيْتُمُوهُنَّ شَيْـًٔا﴾ "तुम्हारे लिए यह वैध नहीं कि तुम जो उन्हें दिया है उसमें से कुछ भी वापस लो"। इसलिए वह उसके महर से कुछ भी नहीं ले सकता है। और " وَلَا يَحِلُّ यह वैध नहीं" शब्द का मतलब है कि यह उसका अधिकार हो गया है, और इसका अतिक्रमण नहीं किया जा सकता है। और इसे लेना अत्याचार और अतिक्रमण है, और यह ह़राम है। यह शरीअत द्वारा अधिकारों की सुरक्षा के सबसे सूक्ष्म मामलों में से एक है। फिर अल्लाह तबारक व तआला ने यह सुनिश्चित किया, कि उन्हें बिना हानि और नुकसान के अलग होने की अनुमति मिल सकती है: ﴿إِلَّآ أَن يَخَافَآ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ ٱللَّهِ﴾ "जब तक उन्हें डर न हो कि वे अल्लाह की सीमाओं का पालन नहीं करेंगे"। यह अल्लाह का पति और पत्नी के लिए संदेश है। यदि पति और पत्नी को डर हो, कि वे मानते हैं, कि वे एक-दूसरे के अधिकारों का पालन नहीं करेंगे, तो अल्लाह तबारक व तआला इस मामले का समाधान अपने कथन से करते हैं: ﴿فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ ٱللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا ٱفْتَدَتْ بِهِۦ﴾ "अगर तुम्हें डर हो कि वे अल्लाह की सीमाओं का पालन नहीं करेंगे, तो उन्हें यह अनुमति है कि वह बदले में कुछ दें"। यह शासकों, सुधारकों और अच्छे मध्यस्थों के लिए एक संदेश है, अल्लाह तआला ने उन्हें बताया, कि पत्नी को अपने मामले को सुलझाने के लिए अपने पति को कुछ देना चाहिए, और उसने उसे

इसे लेने की अनुमति दी, तथा यह खुलअ कहलाता है। इससे यह महत्वपूर्ण है कि अल्लाह की सीमाओं को स्थापित किया जाए, और पति-पत्नी के संबंध इन सीमाओं को स्थापित करने पर आधारित होते हैं, और इनका पालन करना ही संबंध के जारी रहने या रुकने का उपाय है। इसलिए इसका पालन नहीं करने पर, किसी और कारण से संबंध जारी नहीं रह सकता, क्योंकि यह अल्लाह की सीमाओं का पालन नहीं कर सकता। अल्लाह की सीमाएं वह हैं जिन्हें व्यक्ति को अंततः पालन करना होता है, और इससे आगे नहीं जाना चाहिए। ये आदेशों, निषेधों, फरायज, अधिकारों, कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को समाहित करती हैं। इसका मतलब है कि परिवार का निर्माण और उसकी स्थिरता अल्लाह की देखभाल के तहत है, उसके निर्माण और निरंतरता के सभी आवश्यकताओं के विवरण में। इससे मुसलमान को यह सुनिश्चित करना होता है कि वह इस महान इकाई का निर्माण करे।

शब्दों के अर्थों के लाभों में से एक यह है कि संदेश पति और पत्नी से संबंधित है: ﴿إِلَّآ أَن يَخَافَآ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ ٱللَّهِ﴾ "जब तक उन्हें डर न हो कि वे अल्लाह की सीमाओं का पालन नहीं करेंगे"। यह उन दोनों के सबसे सूक्ष्म व्यक्तिगत मामलों से संबंधित है जिसे केवल वे ही जानते हैं। मामला उनके बीच जटिल है। इसका मतलब है, यदि वे मानते हैं, कि उनके जीवन के हालात से, कि वे अल्लाह की सीमाओं का पालन नहीं कर सकते, और वे एक-दूसरे के बीच अप्रिय चीजों के होने से डरते हैं, तो उन्हें अलग होने की अनुमति है।

फिर अल्लाह तबारक व तआला पति और पत्नी को अपने सीमाओं का अतिक्रमण न करने की चेतावनी देते हैं: ﴿تِلْكَ حُدُودُ ٱللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا﴾ "ये अल्लाह की सीमाएं हैं, तो उन्हें अतिक्रमण न करो"। महान आयत पहले यह बताती है कि अल्लाह तआला ने उन सीमाओं को स्पष्ट किया है: ﴿تِلْكَ حُدُودُ ٱللَّهِ﴾ "ये अल्लाह की सीमाएं हैं"। फिर उनके अतिक्रमण से निषेध करती है: ﴿فَلَا تَعْتَدُوهَا﴾ "तो उन्हें अतिक्रमण न करो"। इसने साहित्यिक और फार्मूले की दृष्टिकोण को समाहित किया है, और उन सीमाओं को स्पष्ट करने की ओर इशारा किया है, फिर उनके अतिक्रमण से चेतावनी दी है।

अल्लाह की सीमाएं (हुदूद) : उसकी पवित्र शरीअत हैं, जिसमें आदेश, निषेध, कर्तव्य, अधिकार और जिम्मेदारियां शामिल हैं। अल्लाह तआला ने अपनी सीमाओं को स्पष्ट करने के बाद, पति और पत्नी को उनकी सीमाओं के प्रति उनकी जिम्मेदारियों के बारे में निर्देश दिया है, कि वे इन सीमाओं का पालन करें, और उनकी अवज्ञा, कोताही और अतिक्रमण न करें। जो इन सीमाओं का अतिक्रमण करता है वह अपने आप पर और दूसरे पक्ष पर अन्याय करता है: ﴿وَمَن يَتَعَدَّ حُدُودَ ٱللَّهِ فَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ﴾ "और जो अल्लाह की सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं, वही

अत्याचारी होते हैं"। जो हलाल से ह़राम की ओर बढ़ता है, और जो उसके कर्तव्यों का पालन नहीं करता है, और भलाई से बुराई की ओर बढ़ता है वह अत्याचारी है। वह सजा का हकदार है। यह अन्याय की मना करने का प्रमाण है, क्योंकि अल्लाह तआला ने उन लोगों को जो उसकी सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं, "ظالم अत्याचारी" कहा है। हम अल्लाह तआला से सलामती और सफलता की प्रार्थना करते हैं।

फिर अल्लाह तआला उस स्थिति को स्पष्ट करते हैं जिसमें तलाकशुदा महिला तलाक के बाद अपने पहले पति के पास वापस आ सकती है। सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह फ़रमाता है: ﴿فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُۥ﴾ "यदि उसने उसे तलाक दे दिया है, तो वह उसके लिए हलाल नहीं है"।

यदि तलाक -ए- बाइन हो गया है, तो वह उसके लिए ह़राम हो जाती है, जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा है: ﴿فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُۥ مِنۢ بَعۡدُ حَتَّىٰ تَنكِحَ زَوۡجًا غَيۡرَهُۥ﴾ "यदि उसने उसे तलाक दे दिया है, तो वह उसके लिए तब तक हलाल नहीं है जब तक कि वह किसी अन्य व्यक्ति से विवाह न कर ले"। यदि उसने किसी अन्य व्यक्ति से विवाह किया, फिर उसने उसे तलाक दिया, या उसकी मृत्यु हो गई, तो वे फिर से विवाह कर सकते हैं: ﴿فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِمَآ أَن يَتَرَاجَعَآ﴾ "यदि उसने उसे तलाक दे दिया है, तो उन दोनों के लिए कोई हर्ज नहीं है कि वे फिर से विवाह करें"। इस महान आयत से यह समझ में आता है कि यदि दूसरे पति ने उसे तलाक दिया है, तो पहले पति और तलाकशुदा पत्नी के लिए कोई हर्ज नहीं है कि वे फिर से मिल जाएं। "फिर से मिल जाएं" शब्द दोनों पक्षों की साझा इच्छा को दर्शाता है, और इसके लिए एक शर्त का उल्लेख करता है, जिसे वे अपनी समझ से पूरा करते हैं, और वह है अल्लाह की सीमाओं का पालन: "यदि उन्हें विश्वास हो कि वे अल्लाह की सीमाओं का पालन करेंगे"। इसका मतलब है कि उन्हें अल्लाह की सीमाओं का पालन करने का दृढ़ संकल्प होना चाहिए। इस शर्त से यह भी स्पष्ट होता है कि संबंध केवल इच्छा पर नहीं, बल्कि अल्लाह की सीमाओं का पालन करने की क्षमता पर भी आधारित है, जिसमें पति-पत्नी के अधिकार शामिल हैं। क्योंकि पति-पत्नी के अधिकारों का पालन एक सम्मानित जीवन का मार्ग है, और एक मजबूत परिवार का स्तंभ है, जो उन संतान की देखभाल करने में सक्षम है जो अल्लाह तआला उन्हें प्रदान करता है। यह भी महत्वपूर्ण है कि पति-पत्नी के अधिकारों का सम्मान किया जाए, क्योंकि वे उन दोनों पर अनिवार्य हैं, और यह कोई उपकार नहीं है कि एक दूसरे पर करता है, बल्कि यह अल्लाह तआला का उपकार है, जिसने इन आदेशों और शरीअत के सीमाओं को स्थापित किया है। यदि उन्हें लगता है कि वे अल्लाह की सीमाओं का पालन नहीं कर सकते, तो उन्हें फिर से

मिलना हलाल नहीं है, ताकि उनके बीच बुरी संगति वापस न आए, जिससे बुराइयां उत्पन्न हो सकती हैं।

﴿فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ أَن يَتَرَاجَعَآ إِن ظَنَّآ أَن يُقِيمَا حُدُودَ ٱللَّهِ﴾ "यदि उन्हें विश्वास हो कि वे अल्लाह की सीमाओं का पालन करेंगे" कथन का एक और लाभ यह है कि किसी मामले में जो उसके विश्वास पर आधारित हो, उसे उसी पर लेना चाहिए। यदि व्यक्ति किसी मामले में संदेह करता है, और वहां विश्वास के अलावा कोई अन्य मार्ग नहीं है, तो वह उसी को अपनाए जिसे वह विश्वास करता है। यह ताक्वा और अल्लाह पर भरोसा करने का मार्ग हो। क्योंकि इस्लाम का मार्ग संदेह का मुकाबला करता है, क्योंकि इससे चिंताएं उत्पन्न होती हैं, जो मुसलमान के लिए दर्दनाक होती हैं, और बुराई को उत्पन्न करती हैं। इसका एक उदाहरण यह है: यदि मुसलमान वुज़ू करता है, और वुज़ू के टूटने के बारे में संदेह करता है, तो वह संदेह को मूल से समाप्त करता है, ताकि संदेह का नाश हो।

फिर आयत का समापन अल्लाह तआला के इस कथन से होता है: ﴿وَتِلْكَ حُدُودُ ٱللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ﴾ "और ये अल्लाह की सीमाएं हैं, जिन्हें वह जानने वालों के लिए स्पष्ट करता है"। यह अल्लाह की शरीअत है जो विवाह, संगति और तलाक के मामलों में है, जिसे हमारे रब तबारक व तआला ने स्पष्ट किया है, जो यह सुनिश्चित करता है कि इसका ज्ञान होना और उसका पालन करना कितना महत्वपूर्ण है, और इसका अतिक्रमण न करना। क्योंकि अल्लाह तबारक व तआला ने इसे स्पष्ट और स्पष्ट रूप से बताया है: ﴿لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ﴾ "जानने वालों के लिए"। जिन्होंने अपने ऊपर ज्ञान और समझ की सुविधाओं को लागू किया है। जब अल्लाह तआला ने इंसान को समझ और ज्ञान की क्षमता प्रदान की है, जिससे अज्ञान को दूर किया जा सके, जो उसने अपने ऊपर फर्ज किया और पति-पत्नी के लिए स्पष्ट किया। वे अब इसके अज्ञानी नहीं रहे, और इसलिए इसका पालन करना अनिवार्य हो गया है। यह इंगित करता है कि पति-पत्नी को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जानना चाहिए, क्योंकि इसे जानने के बिना उनका पालन करना संभव नहीं है, बल्कि उन्हें इसे जानना चाहिए ताकि वे इसे अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार पालन कर सकें। यह वैज्ञानिक रूप से भी इंगित करता है कि पति-पत्नी को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जानना अनिवार्य है, और उनके प्रति अपनी प्रतिबद्धता और पालन की आवश्यकता को जानना चाहिए, ताकि वे ज़ालिम न हों। क्योंकि अल्लाह तआला ने पिछली आयत के अंत में स्पष्ट किया है कि जो उसकी सीमाओं का अतिक्रमण करता है वह अत्याचारी है: ﴿وَمَن يَتَعَدَّ حُدُودَ ٱللَّهِ فَأُولَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّـٰلِمُونَ﴾ "और जो अल्लाह की सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं, वही अत्याचारी होते हैं"।

अल्लाह तआला के इस कथन: ﴿وَتِلْكَ حُدُودُ ٱللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ﴾ "और ये अल्लाह की सीमाएं हैं, जिन्हें वह जानने वालों के लिए स्पष्ट करता है" में यह भी संकेत है कि पति-पत्नी के लिए उन सीमाओं का ज्ञान होना अनिवार्य है।

﴿وَإِذَا طَلَّقْتُمُ ٱلنِّسَآءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوا۟ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُۥ ۚ وَلَا تَتَّخِذُوٓا۟ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ هُزُوًا ۚ وَٱذْكُرُوا۟ نِعْمَتَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّنَ ٱلْكِتَٰبِ وَٱلْحِكْمَةِ يَعِظُكُم بِهِۦ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٣١﴾﴾ [سورة البقرة: ٢٣١]

(और यदि स्त्रियों को (एक या दो) तलाक़ दे दो और उनकी निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी होने लगे, तो नियमानुसार उन्हें रोक लो अथवा नियमानुसार विदा कर दो। उन्हें हानि पहुँचाने के लिए न रोको, ताकि उनपर अत्याचार करो और जो कोई ऐसा करेगा, वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करेगा तथा अल्लाह की आयतों (आदेशों) को उपहास न बनाओ और अपने ऊपर अल्लाह के उपकार तथा पुस्तक (क़ुर्आन) एवं हिक्मत (सुन्नत) को याद करो, जिन्हें उसने तुमपर उतारा है और उनके द्वारा तुम्हें शिक्षा दे रहा है तथा अल्लाह से डरो और विश्वास रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है)।

अल्लाह तआला तलाक की विधि और अदब (शिष्टाचार) को स्पष्ट कर करहा है, जैसा कि अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है: ﴿وَإِذَا طَلَّقْتُمُ ٱلنِّسَآءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ﴾ (और यदि स्त्रियों को (एक या दो) तलाक़ दे दो और उनकी निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी होने लगे) ﴿فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ﴾ " उनकी इद्दत पूरी होने लगे" वाक्य में यह बताया गया है कि तलाकशुदा महिलाओं के लिए एक समय सीमा होती है, और यह पहले और दूसरे तलाक में होती है, क्योंकि उनके पास एक निर्धारित समय होता है, जो इद्दत होती है। यहां दो विकल्प होते हैं, या तो तलाकशुदा महिला को वापस लेना, या उसे छोड़ देना, और इन दोनों विकल्पों के लिए अनिवार्य अदब होते हैं, जो वैकल्पिक नहीं होते: ﴿فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ﴾ "या तो भले तरीके से उसे रोको या अच्छे तरीके से उसे छोड़ दो"। यह अल्लाह तआला का आदेश है कि पुनः मिलाने का उद्देश्य और नीयत पत्नी के अधिकारों और कर्तव्यों के अनुसार संबंध को स्थापित करने का हो, और उसे भले तरीके से रोको, या उसे बिना किसी हानि के अच्छे तरीके से छोड़ दो। दोनों ही मामलों में हिंसा और हानि नहीं होनी चाहिए। पुनः मिलाने की स्थिति में, उद्देश्य हानि पहुंचाना नहीं होना चाहिए: ﴿وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوا۟ ۚ﴾ "और उन्हें नुकसान पहुंचाने के इरादे से न रोको"। फिर अल्लाह तबारक व तआला ने उन लोगों के लिए स्पष्ट किया जो ऐसा करते हैं, कि वह अपने आप पर अत्याचार करते हैं: ﴿وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُۥ ۚ﴾ "और जो ऐसा करता है,

उसने अपने आप पर अत्याचार किया"। अतः यह अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन करने वालों पर अत्याचार करने वाले हैं, अपनी पत्नी पर अत्याचार करते हैं, और वह दो अत्याचारों में पड़ जाते हैं, अपनी पत्नी पर अत्याचार करना और अपने आप पर अत्याचार करना, क्योंकि उस पर अल्लाह की सजा गिरती है। यह उसके अपने आप पर अत्याचार की ओर इशारा करता है, क्योंकि उसने अपनी पत्नी पर अत्याचार का एहसास किया है। लेकिन वह भूल गया या अनदेखा किया कि यह उसके अपने आप पर अत्याचार है, जो उसे अल्लाह के अज़ाब की ओर ले जाएगा।

जो इस आयत के संदेश पर ध्यान देगा है, वह पाएगा कि यह आयत पति को संबोधित कर रही है, क्योंकि उसके पास अधिकार और जिम्मेदारी है, और क्योंकि उसकी नीयत छिपी होती है जिसे कोई और नहीं जानता, उसकी पत्नी को रोकने या छोड़ने में, और अल्लाह तआला उसकी नीयत से पहले से अवगत हैं, तो संदेश और चेतावनी उसी को संबोधित है, और सजा भी उसी को दी जाती है। अल्लाह तबारक व तआला ने इस मामले को उस व्यक्ति को संबोधित करके हल किया जिसे अधिकार दिया गया है। और अगर व्यक्ति इस पर ध्यान दे, तो वह उस व्यक्ति से शर्मिंदा होगा जिसने उसे संबोधित किया और उसकी नीयत को जाना, और उसे यह पत्नी, उसकी रहने की जगह, दी। उसे इस कृपा और पद के बारे में सिर्फ उस पर कृपादृष्टि के रूप में ही नहीं, बल्कि उस व्यक्ति के रूप में प्रतिक्रिया करनी चाहिए जिसने उसे यह सम्मान दिया। इस के फायदे में से एक यह है कि संक्षिप्त संदेश की दो विपरीत पंक्तियाँ: ﴿فَأَمۡسِكُوهُنَّ بِمَعۡرُوفٍ﴾ "भले तरीके से उसे रोको" और ﴿سَرِّحُوهُنَّ بِمَعۡرُوفٖۚ﴾ "अच्छे तरीके से उसे छोड़ दो"। ये दोनों विपरीत पंक्तियाँ हैं: रोकना या छोड़ना, लेकिन वे भले तरीके पर सहमत हैं, और दोनों में भले तरीके को सम्मिलित करती हैं। जैसे शब्द ﴿بِمَعۡرُوفٍ﴾ "भले तरीके से" सभी भले गुणों को सम्मिलित करता है, जो अनिवार्य और पसंदीदा हैं, और आवश्यक भले पर लाभ की वृद्धि करता है। साहित्यिक दृष्टिकोण से भी, शब्द "﴿ضِرَارٗا﴾ हानि" कोई विशेष प्रकार की हानि या उसके स्तर को निर्दिष्ट नहीं करता है, जिससे यह शब्द सभी प्रकार की हानि और उसके स्तरों को समेटता है, ताकि पति किसी भी प्रकार की नीयत से अल्लाह से डरकर काम करें। महान है वह अल्लाह जो अपने शब्दों में सभी उद्देश्यों को समाहित करता है। जैसे अल्लाह तआला ने पुरुष के अधिकार को नेतृत्व में सुरक्षित रखा है, वैसे ही अल्लाह तआला ने महिला के अधिकारों को उसके पति के घर में सभी परिस्थितियों में सुरक्षित रखा है।

फिर अल्लाह तआला ने अपनी आयतों के साथ खिलवाड़ करने से मना किया है: ﴿وَلَا تَتَّخِذُوٓاْ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ هُزُوٗاۚ﴾ "और अल्लाह की आयतों को मजाक मत बनाओ"। यह निषेध आदेश अनिवार्य है, और इसमें सतर्कता और ध्यान रखने की आवश्यकता है, ताकि कोई व्यक्ति

अल्लाह की आयतों का उल्लंघन न करे, और जो कुछ भी उसमें से आदेश और व्यवस्था हैं, उनका पालन न करे। जो व्यक्ति इन आदेशों का पालन नहीं करता, वह उन लोगों की तरह हो जाता है जो उन आयतों का मजाक उड़ा रहे हैं और उनके साथ खेल रहे हैं, जैसे कि वह उनके लिए कोई महत्व नहीं रखतीं। यह एक चेतावनी है, जो बताती है कि जो इन आयतों का मजाक उड़ाता है, वह निषेध के खिलाफ जाता है और अल्लाह के आदेश की अवहेलना करता है, जिससे उसे सजा मिलनी चाहिए। आयत में "मजाक" शब्द का उपयोग यह दर्शाता है कि जो व्यक्ति अल्लाह की आयतों का पालन नहीं करता, वह गंभीर रूप से गलत है, और इसे दिल से सम्मान देना चाहिए, और उन आदेशों का पालन करना चाहिए। इसके बाद, चेतावनी के बाद, एक महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षण आता है जो ईश्वर की कृपा और उसकी ऊंचाई को दिखाता है ﴿وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ﴾, चाहे वह इस्लाम की कृपा हो, पतिव्रता महिलाओं का आशीर्वाद हो, या शासकों की कृपा हो, और इसमें जो दया और करुणा शामिल है। इस आयत में एक अनुस्मारक है, और उन आशीर्वादों को याद करने का आदेश है, जो शुक्र अदा करने का कारण बनते हैं। शुक्र का मतलब है धन्यवाद और आज्ञापालन, और उस आशीर्वाद को संरक्षित रखना, जो अल्लाह की رضا (प्रसनन्नता) को प्राप्त करता है, और उस व्यक्ति के लिए जो उसे याद करता है और उसका आभार व्यक्त करता है।

और अल्लाह तआला के कथन ﴿وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ﴾ "और अल्लाह का आशीर्वाद तुम्हारे ऊपर याद करो" में समग्र आशीर्वादों का उल्लेख किया गया है, और फिर कुछ विशेष आशीर्वादों का उल्लेख किया गया है जो परिस्थिति के अनुसार उपयुक्त हैं: ﴿وَمَا أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ﴾ "और वह जो किताब और हिकमत तुम पर उतारी", जो कि क़ुरआन -ए- करीम और हमारे प्यारे पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसें हैं। इनमें जीवन के सभी पहलुओं का व्यवस्थित रूप से निर्देश और स्पष्टता है, जैसे पूजा, विश्वास, और दीन-दुनिया के क़ानून, परिवार और संपत्ति से संबंधित मुद्दे, और हर वह चीज़ जिसे इंसान जीवन में उपयोग करता है। यह एक उपदेश है, जिससे मुख़ातब (सुनने वाला) शिक्षा ग्रहण करता है ﴿يَعِظُكُم بِهِۦ﴾, क्योंकि इसमें भविष्य और बीते समय की कहानियाँ, आदेश और निषेध, प्रेरणा, और बुद्धिमत्ता का विवरण है। यह शिक्षा और प्रचार के दृष्टिकोण से यह सिद्ध करता है कि उपदेश का महत्व बयान और शिक्षा के बाद है, ताकि शैक्षिक और दैवी संदेश उपदेश के रूप में दिलों तक पहुंचे और व्यक्ति की भावना को जागृत करे। और सबसे अच्छा उपदेश जिसे लोग ग्रहण करते हैं, वह अल्लाह का किताब (क़ुरआन) और हमारे नबी की हदीसें हैं, क्योंकि इनमें उपदेश देने वाली बातें पूरी और स्पष्ट होती हैं। यह इस बात को भी स्पष्ट करता है कि भविष्य और बीते समय की घटनाएँ कैसे व्यवहार को नियंत्रित करती हैं, और आशीर्वादों की याद दिलाने की आवश्यकता, क्योंकि यह व्यक्ति के घमंड को तोड़ देती है, जो अनदेखी करता है

उन आशीर्वादों को जो उसे दिए गए हैं, क्योंकि वह उन्हें आदत के कारण भूल जाता है, और उसे किसी याद दिलाने वाले की जरूरत होती है।

फिर अल्लाह तआला इस पवित्र आयत का समापन तक़वा की ओर मार्गदर्शन करके करता है: ﴿وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ﴾ "और अल्लाह से डरते रहो," क्योंकि जो इस पर टिके रहते हैं, अल्लाह तआला उन्हें बचाता है और मदद करता है। फिर वह हमें अपनी जानकारी की याद दिलाते हैं, जो हर चीज़ से घिरी हुई है: ﴿وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٞ﴾ "और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ से पूरी तरह अवगत है।" जिसने हर चीज़ से पूरी जानकारी रखी है, उससे न तो इरादे छिप सकते हैं, चाहे वह नुकसान पहुँचाने का हो या सुधार करने का, और न ही बाहरी कार्य। यह हमें अल्लाह तआला से डर और सम्मान की ओर प्रेरित करता है, जो उसे आज्ञा मानने और नाफरमानी से बचने की आवश्यकता की ओर इशारा करता है।

﴿وَإِذَا طَلَّقۡتُمُ ٱلنِّسَآءَ فَبَلَغۡنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعۡضُلُوهُنَّ أَن يَنكِحۡنَ أَزۡوَٰجَهُنَّ إِذَا تَرَٰضَوۡاْ بَيۡنَهُم بِٱلۡمَعۡرُوفِۗ ذَٰلِكَ يُوعَظُ بِهِۦ مَن كَانَ مِنكُمۡ يُؤۡمِنُ بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِۗ ذَٰلِكُمۡ أَزۡكَىٰ لَكُمۡ وَأَطۡهَرُۚ وَٱللَّهُ يَعۡلَمُ وَأَنتُمۡ لَا تَعۡلَمُونَ ٢٣٢﴾ [سورة البقرة:٢٣٢]

(और जब तुम अपनी पत्नियों को (तीन से कम) तलाक़ दो और वे अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) पूरी कर लें, तो (स्त्रियों के संरक्षको!) उन्हें अपने पतियों से विवाह करने से न रोको, जबकि सामान्य नियमानुसार वे आपस में विवाह करने पर सहमत हों, ये तुममें से उसे निर्देश दिया जा रहा है, जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखता है, यही तुम्हारे लिए अधिक स्वच्छ तथा पवित्र है और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते)।

संदर्भ अब भी तलाक और पुनः मिलाने के बारे में है, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَإِذَا طَلَّقۡتُمُ ٱلنِّسَآءَ فَبَلَغۡنَ أَجَلَهُنَّ﴾ (और जब तुम अपनी पत्नियों को तलाक़ दो और वे अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) पूरी कर लें) इससे यह स्पष्ट होता है कि जब महिला को तलाक दिया जाता है, एक या दो बार, जो पहली या दूसरी बार है, और उसकी इद्दत पूरी हो जाती है: "तो वह अपनी इद्दत पूरी कर लेती है", यह पति और पत्नी के बारे में है, ताकि इसके बाद का संदेश अल्लाह तबारक व तआला से महिला के अभिभावकों की ओर हो, कि वे पति-पत्नी के पुनर्मिलन के बीच में न आएं। ﴿فَلَا تَعۡضُلُوهُنَّ أَن يَنكِحۡنَ أَزۡوَٰجَهُنَّ إِذَا تَرَٰضَوۡاْ بَيۡنَهُم بِٱلۡمَعۡرُوفِۗ﴾ (और जब तुम अपनी पत्नियों को तलाक़ दो और वे अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) पूरी कर लें, तो (स्त्रियों के संरक्षको!) उन्हें अपने पतियों से विवाह करने से न रोको, जबकि सामान्य नियमानुसार वे आपस में विवाह करने पर सहमत हों) अल्लाह तबारक व तआला ने अभिभावकों को आदेश दिया है कि वे उन्हें न रोकें, उन पर दबाव न डालें, और उन्हें उनके पतियों से अलग न

करें, अगर वे भले तरीके से और अधिकारों के पालन के साथ पुनः मिलना चाहते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस्लाम का मार्ग, परिवार को स्थापित करने और उसके साथ रहने में सहायता करने वाला मार्ग है, और जब उसमें कोई समस्या आती है, तो धर्म का उद्देश्य इसे बनाए रखना और उसके अस्तित्व की रक्षा करना है। इसलिए यह आवश्यक है कि अभिभावक निर्माण में सहायता करें, जैसा कि मेरा रब चाहता है और पसंद करता है।

इसी प्रकार यह बयान और आदेश ﴿ذَٰلِكَ يُوعَظُ بِهِۦ﴾, अल्लाह तआला की ओर से महिलाओं के अभिभावकों के लिए एक उपदेश है, जिसका पालन करना आवश्यक है, तथा उनका पालन करना ईमान का प्रमाण है ﴿ذَٰلِكَ يُوعَظُ بِهِۦ مَن كَانَ مِنكُمۡ يُؤۡمِنُ بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِۗ﴾ "यह उपदेश उन लोगों को दिया जाता है जो अल्लाह और आख़िरत पर विश्वास करते हैं"। इस पर विश्वास करना, आज्ञाकारिता की आवश्यकता को दर्शाता है, और आख़िरत को विशिष्ट रूप से उल्लेख किया गया है क्योंकि इसमें हिसाब और पुरस्कार है। तो यह उपदेश, आदेश और मार्गदर्शन, विश्वास और धन के संदर्भ में पुनः विवाह के सिद्धांत और प्रणाली को स्पष्ट करता है, जो न केवल कानूनी व्याख्या, बल्कि ईमान के प्रेरक तत्व से भी सुसज्जित है। यह संकेत करता है कि सुधार, शिक्षा और दावत में ज्ञान का स्पष्ट विवरण तभी पूरा होता है जब वह ईमानिक प्रेरणा से संप्रेरित किया जाता है, जो कार्रवाई के लिए प्रेरित करता है।

इसी प्रकार उसी तरह है जैसे कि अबू अल-बद्दाह़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तलाकशुदा पत्नी का मामला था, जिसे इस आयत के अवतरण (नुज़ूल) का कारण बताया गया है, कि मअक़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु की बहन, जो अबू अल- बद्दाह़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास थी, को तलाक दे दिया गया था और उनकी इद्दत खत्म हो गई थी, फिर वह पछताए और उनसे विवाह करने की इच्छा की, लेकिन उनके भाई ने विरोध किया और कहा: "तुम्हारा चेहरा उसके चेहरे पर ह़राम है यदि तुम उसे फिर से शादी करो।" इस पर यह आयत नाज़िल हुई। फिर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मअक़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और उनसे कहा: "अगर तुम ईमान वाले हो, तो अपनी बहन को अबू अल- बद्दाह़ से शादी करने से मत रोकना।" तो उन्होंने कहा: "मैंने अल्लाह पर ईमान लाया है", और उससे उन की शादी करा दी।[1]

फिर अल्लाह तआला ने जो आदेश दिया, उसके फायदों को स्पष्ट किया है, कहा: ﴿ذَٰلِكُمۡ أَزۡكَىٰ لَكُمۡ وَأَطۡهَرُۚ﴾ "यह आपके लिए सबसे अच्छा और शुद्ध है।" तो जो आदेश दिया गया है, वह सबसे बेहतर और सबसे शुद्ध है, और इसमें किसी भी प्रकार के झगड़े या व्यक्तिगत

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 104)।

इच्छाओं का समावेश नहीं है, बल्कि यह कानून और वास्तविकता के अनुसार सर्वश्रेष्ठ समाधान है, जो आपके लिए सबसे उपयुक्त और सबसे साफ है।

आगे, आयत के वाक्य ﴿ذَٰلِكُمْ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَأَطْهَرُ﴾ (यह तुम्हारे लिए अधिक शुद्ध और पवित्र है) में यह संकेत मिलता है कि अल्लाह तआला के तरीके और आदेश में किसी प्रकार की कमी या दोष नहीं है, जो पत्नी के अधिकारों के संबंध में आपके निर्णयों में उत्पन्न हो सकता है। यह वाक्य स्वयं आपकी आत्मा के लिए भी शुद्धिकरण और पवित्रता लाता है, क्योंकि पत्नी की अपने पति के पास लौटने से रोकने पर आप पर जो पाप आ सकता था, उससे आपको बचाता है। साथ ही, इसमें पति-पत्नी के जीवन के लिए सबसे अच्छे तरीके को अपनाने की प्रेरणा है, बशर्ते वे दोनों "बिल-मअ'रूफ़" (भलाई और अच्छाई) के साथ जीवन को व्यवस्थित करें और जो भी विभाजन हुआ है, उसके कारणों से दूर रहें। यह उनके बच्चों के लिए भी अधिक शुद्ध और पवित्र है, क्योंकि माता-पिता का घर में साथ रहना बच्चों की बेहतर परवरिश और मनोवैज्ञानिक स्थिरता के लिए जरूरी है। साथ ही, पूरे परिवार के लिए यह स्थिति हर प्रकार के दोष और कमी से बचाती है, जो उनके लिए विवाह के पुनः स्थापित न होने से उत्पन्न हो सकती है। इसके अलावा, इस आयत में यह स्पष्ट है कि 'कमतर विकल्प' (मफ़ज़ूल) का उल्लेख न करना, पाठ की व्यापकता को बढ़ाता है। यह आयत कई पहलुओं को अपने अंदर समेटे हुए है, जो अल्लाह तआला की अनंत कृपा, उदारता और भलाई का प्रमाण है।

फिर अल्लाह तआला ने यह बड़ी हिकमत बयान की कि जो आदेश और विवरण उसने दिया है, उसे इंसानी बुद्धि के प्रयासों पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए। आयत ﴿وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٢﴾﴾ (अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते) से यह पता चलता है कि दैवीय आदेश को मानव बुद्धि के मुकाबले में प्राथमिकता देना आवश्यक है। क्योंकि दैवीय आदेश उस ज्ञान से निकला है जिसने हर चीज़ को अपने घेरे में ले रखा है, जबकि मानव बुद्धि बहुत सारी चीज़ों की सच्चाई और परिणाम से अनभिज्ञ रहती है। इसके अलावा, वह दिलों में छिपे इरादों को नहीं जान सकती, जबकि अल्लामुल-ग़ुयूब (हर छुपी चीज़ का जानने वाला) अल्लाह तआला से कुछ भी छिपा नहीं है। यही कारण है कि दैवीय आदेश को समझने और उसे मानने में, ईमान वालों के लिए यह आवश्यक है कि वे कहें: "ربنا سمعنا وأطعنا" (हे हमारे रब, हमने सुना और आज्ञा का पालन किया)।

क़ुरआन की आयतों में अल्लाह तआला ने परिवार की बुनियाद और उसके मसलों को सुलझाने की विशेष रुचि दिखाई है। यह भी बताया कि कभी-कभी अलगाव के बाद ऐसा मिलन होता है जो पहले के मुकाबले गहरा और मजबूत होता है। क्योंकि तलाकशुदा जोड़ों की वापसी की इच्छा इस बात का प्रमाण है कि वे जो हुआ, उस पर खेद और सुधार की तीव्र इच्छा

रखते हैं। इसके अलावा, यह भी स्पष्ट किया गया है कि इंसान गलती और जल्दबाजी का शिकार हो सकता है, इसलिए इस्लामी शरीअत ने दूसरे मौके की गुंजाइश दी है। दूसरी ओर, यदि पति-पत्नी को एक-दूसरे के साथ अनुकूलता और सामंजस्य की कमी महसूस होती है, तो उनके लिए यह विकल्प दिया गया है कि वे भलाई और अच्छाई के साथ अलग हो जाएं। चाहे उनका साथ अल्पकालिक ही क्यों न रहा हो। यह अच्छाई उनके संबंध को भी पुनर्जीवित करती है।

जो कोई अल्लाह तआला की शरीअत पर विचार करता है, उसे इसके अनेक चमत्कारी फायदे मिलते हैं। उनमें से एक यह है कि शरीअत की आयतों और हदीसों का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने इस्लामी ज्ञान की अनेक महान शाखाओं का विकास किया। उनकी फिकह, तफसीर, ह़दीस़ और अक़ीदा की गहरी समझ, क़ुरआन और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के अध्ययन से प्रेरित है।

﴿ ۞ وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ ۖ لِمَنْ أَرَادَ أَن يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۚ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ
بِالْمَعْرُوفِ ۚ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَّهُ بِوَلَدِهِ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَٰلِكَ ۗ فَإِنْ أَرَادَا
فِصَالًا عَن تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدتُّمْ أَن تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُم مَّا آتَيْتُم
بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٣﴾ ﴾[سورة البقرة:٢٣٣]

(और मातायें अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष दूध पिलायें और पिता को नियमानुसार उन्हें खाना-कपड़ा देना है, किसी पर उसकी सकत से अधिक भार नहीं डाला जायेगा; न माता को उसके बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये और न पिता को उसके बच्चे के कारण। और इसी प्रकार उस (पिता) के वारिस (उत्तराधिकारी) पर (खाना कपड़ा देने का) भार है। फिर यदि दोनों आपस की सहमति तथा प्रामर्श से (दो वर्ष से पहले) दूध छुड़ाना चाहें, तो दोनों पर कोई दोष नहीं और यदि (तुम्हारा विचार किसी अन्य स्त्री से) दूध पिलवाने का हो, तो इसमें भी तुमपर कोई दोष नहीं, जबकि जो कुछ नियमानुसार उसे देना है, उसे चुका दो तथा अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि तुम जो कुछ करते हो, उसे अल्लाह देख रहा है)।

फिर क़ुरआन का संदर्भ उस बच्चे की ओर जाता है, जो विवाह का फल है, और जिसका प्रेम माता-पिता के दिल से जुड़ा होता है, तो रहमान रहीम, ज्ञानी, और कृपालु अल्लाह ने इसे अपनी महान किताब में स्पष्ट किया, जैसा कि अल्लाह तआला कहता है: ﴿وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ ۖ﴾ "माताएँ अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष तक दूध पिलाएंगी"। तो यह आदेश के रूप में आया, खबर या सूचना की शैली में, जो अनिवार्यता का संकेत देता है। आदेश की शैली में, यह अनिवार्यता को शामिल करता है कि माँ अपने शिशु की दो पूर्ण वर्षों की अवधि में देखभाल करेगी, और यह अनिवार्यता है कि पति उसे ऐसा करने की अनुमति देगा, और यह

अनिवार्यता है कि अगर वह तलाकशुदा है तो पत्नी के अभिभावक अपनी बेटी को उसके बच्चे को दूध पिलाने की अनुमति देंगे। तो क़ुरआन के आदेश की शैली ने अद्भुत साहित्यिक कुशलता को शामिल किया, जिसमें अल्लाह के आदेश ने अपने सभी उद्देश्यों को शामिल किया, इसके साथ बहुत से अर्थों और शिक्षाओं को संक्षिप्त शब्दों में समाहित किया। ताकि यह इस मामले में एक निर्णायक कथन हो, और हर पक्ष के लिए, जिसका इस मामले से संबंध है, और सभी संभावित स्थितियों में। तो महान है वह जिसने अपने शब्दों से सभी वक्ताओं को चमत्कृत कर दिया।

फिर उसने स्तनपान की अवधि को निर्धारित और निश्चित किया, ताकि विवाद और हानि को समाप्त किया जा सके: ﴿وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ﴾ "माताएँ अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष तक दूध पिलाएंगी"। "كَامِلَيْنِ" शब्द ने सभी व्याख्याओं और संभावनाओं को समाप्त कर दिया। क्योंकि साल का आधा हिस्सा पूर्ण नहीं माना जा सकता है। यह बच्चे के अधिकार की सुरक्षा है, विवाद या तलाक के परिणामस्वरूप किसी भी लापरवाही या हानि से, या दो वर्षों के पूर्ण होने के अर्थ में कमी के कारण किसी भी कारण से। माँ को स्तनपान कराना अनिवार्य किया गया है, क्योंकि वह बच्चे के प्रति अधिक दयालु, देखभाल करने वाली और सक्षम होती है।

इस समय की सीमा से यह समझा जा सकता है कि दो वर्षों के बाद स्तनपान की कोई आवश्यकता नहीं है, और बच्चे को इसकी आवश्यकता नहीं होती है। फिर अल्लाह तआला कहते हैं: ﴿لِمَنْ أَرَادَ أَن يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ﴾, इसका मतलब है कि दो वर्ष स्तनपान का पूरा समय होता है, और जो अल्लाह तआला के आदेश का पूरा पालन करना चाहता है, उसके लिए यह मूल है। और तफसीर के विद्वानों ने अपने व्याख्या में संकेत दिया है कि अल्लाह तआला के इस कथन का अर्थ यह है कि दो वर्षों का स्तनपान अनिवार्य नहीं है, क्योंकि दो वर्ष से पहले बच्चे को दूध छुड़ाया जा सकता है। विद्वानों ने यह भी निष्कर्ष निकाला कि दो वर्षों के बाद स्तनपान करने से दूध के माध्यम से भाईचारे की स्थिति नहीं बनती है। लेकिन दो वर्ष बच्चे का अधिकार हैं, और माँ का अधिकार है, और इस क़ुरआन के आदेश के अनुसार इसमें कोई विरोध नहीं हो सकता है, किसी भी व्याख्या के लिए।

लाभ के दृष्टिकोण से: यह कहा जा सकता है: अल्लाह तआला के इस कथन ﴿لِمَنْ أَرَادَ أَن يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ﴾ "जो स्तनपान को पूरा करना चाहता है" का अर्थ क्या है? क्या यह पुष्टि है या विकल्प? क्योंकि अल्लाह तबारक व तआला ने दो वर्षों तक स्तनपान का आदेश दिया है, और इसकी पूर्णता का उल्लेख किया है, यह पुष्टि के लिए है। अगर आप अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार पूर्ण स्तनपान चाहते हैं, तो बच्चे को दो पूरे वर्ष दूध पिलाएं। इसमें दोनों

दृष्टिकोण शामिल हो सकते हैं, पुष्टि के लिए मूल रूप से और विकल्प के रूप में, अगर दो वर्ष पूरे करने में कोई अवरोध हो, तो बोझ को उठाने के लिए। यह उस आयत की पुष्टि करता है जो इसे स्पष्ट करती है, और वह है अल्लाह तआला का यह कथन ﴿فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَن تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا﴾ (फिर यदि दोनों आपस की सहमति तथा प्रामर्श से (दो वर्ष से पहले) दूध छुड़ाना चाहें) यह सब उसके शब्दों के चमत्कारों में से एक है, जो अल्लाह तबारक व तआला ने निर्धारित किया है, क्योंकि आयत के शब्दों ने सभी संभावित मामलों को शामिल किया है, साथ ही न्याय के सत्ताधिकार की रक्षा की है।

फिर अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट किया कि पिता के लिए क्या अनिवार्य है, जैसा कि अल्लाह तआला कहते हैं: ﴿وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ﴾ "और उस पर है, जिसके लिए बच्चा पैदा हुआ है, उनकी जीविका और उनके कपड़े भले तरीके से"। शब्दों के अर्थों के लाभ में से एक यह है कि अल्लाह तआला का यह कथन: ﴿وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ﴾ "और उस पर है, जिसके लिए बच्चा पैदा हुआ है" यानी कि: पिता पर है।[1] इस का अर्थ यह है कि: जिस के लिए बच्चा पैदा हुआ है, उस पर उसका खर्च और कपड़े का दायित्व है: " بِالْمَعْرُوفِ भले तरीके से" उसके सामर्थ्य के अनुसार। इसमें यह लाभ है कि पिता, जिसकी क्षमता कठिनाई और काम करने की है, उस पर उसका दायित्व है कि वह स्तनपान कराने वाली का खर्च वहन करे। इस महान आदेश के साथ महत्वपूर्ण कानूनी आदेश और महान संकेत जुड़े हैं, जिसमें नवजात और स्तनपान कराने वाली के मामलों को शामिल किया गया है, और उनकी विभिन्न स्थितियों में: जैसे कि वह तलाकशुदा हो, या उसके पति की मृत्यु हो गई हो, और स्तनपान कराने वाली के वेतन के संबंध में भी। शब्द " بِالْمَعْرُوفِ भले तरीके से" ने लोगों में आय के विभिन्न स्तरों को शामिल किया है, जो संपन्न है, जो अपनी जीविका को पर्याप्त मानता है, और जिसकी आय में विभिन्न स्तर होते हैं, तो " بِالْمَعْرُوفِ भले तरीके से" ने सभी आय स्तरों को शामिल किया है। यह चमत्कारिक भाषण की साहित्यिक प्रतिभा में से एक है, जिसने अपने शब्दों में विभिन्न और अनेक स्थितियों को समाहित किया है, एक ही शब्द के साथ, और साथ ही इसने पिता, जो कि पिता है, से कठिनाई को समाप्त किया है। यह अल्लाह तबारक व तआला की दया में से है, जिसने इसे अपने कथन से पुष्टि की है: ﴿لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا﴾ "कोई भी आत्मा उससे अधिक भार नहीं दी जाती जितनी उसकी सामर्थ्य हो", सामर्थ्य लोगों के बीच अलग-अलग होती है, तो सामर्थ्य दायित्व की मात्रा और गुण को निर्धारित करती है।

(1)अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 108)।

फिर आयत के संदर्भ ने नुकसान को रोकने के पहलू को लिया: ﴿لَا تُضَآرَّ وَٰلِدَةُۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوۡلُودٞ لَّهُۥ بِوَلَدِهِۦۚ﴾ "माँ को उसके बच्चे के कारण नुकसान न पहुँचाया जाए, और न ही पिता को उसके बच्चे के कारण"। क्योंकि नुकसान के विभिन्न प्रकार और स्तर होते हैं, बुद्धिमान शारियाह ने सभी को मना किया, अपने विभिन्न प्रकार और स्तरों के साथ, एक ही शब्द में: ﴿لَا تُضَآرَّ﴾ "नुकसान न पहुँचाओ"। अतः माँ को उसके बच्चे के कारण नुकसान नहीं पहुँचाया जाए, और इसी तरह पिता को उसके बच्चे के कारण नुकसान नहीं पहुँचाया जाए। किसी भी पक्ष द्वारा किसी भी पक्ष को नुकसान नहीं पहुँचाया जाए। और अगर माँ और पिता के बीच नुकसान समाप्त हो जाता है, तो बच्चे की स्थिति सुरक्षित हो जाती है, इसलिए आयत के शब्दों में बच्चे को नुकसान होने का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं थी, और यह उत्कृष्ट साहित्यिक शैली का प्रमाण है, जो अनावश्यक शब्दों से बचती है। आप अल्लाह की किताब में कोई भी अनावश्यक शब्द नहीं पाएंगे, जो दूसरे शब्द द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सके। आप अल्लाह की किताब में कोई भी अनावश्यक शब्द नहीं पाएंगे, जो दूसरे शब्द द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सके।

और "تُضَآرَّ नुकसान न पहुँचाया जाए" शब्द, अज्ञात व्यक्तियों के लिए (मजहूल) है, जो सभी को शामिल करने के लिए है, चाहे वह पिता हो, या माँ, या पत्नी के अभिभावक, या मृतक पति के अभिभावक, या जो सुधार करता हो, या जो उनके बीच न्याय करता हो।

नुकसान के मामलों में से एक यह है कि माँ को उसके बच्चे को दूध पिलाने से रोका जाए, किसी भी अवरोध के कारण, या उसे जो खर्च और कपड़े मिलना चाहिए, उससे वंचित किया जाए, या नुकसान माँ से पिता की ओर हो, जैसे कि वह शिशु को दूध पिलाने से मना कर दे, ताकि पिता को हानि पहुंचे, या खर्च, वेतन, या कपड़े में आवश्यक से अधिक बढ़ा दे, या अन्य किसी प्रकार के नुकसान की स्थिति हो।

फिर अल्लाह तआला ने वह संभावनाएं बताई, जो परिवार के लिए हो सकती हैं, जैसे पिता की मृत्यु, तो अल्लाह तआला ने इस बारे में कहा: ﴿وَعَلَى ٱلۡوَارِثِ مِثۡلُ ذَٰلِكَۗ﴾ "और वारिस के लिए भी ऐसा ही", अर्थात बच्चे का वारिस, अगर पिता नहीं है तो, और बच्चे के पास कोई संपत्ति नहीं है, तो वारिस पर वही दायित्व है, जो पिता पर था, दूध पिलाने वाली के अधिकारों के लिए। अल्लाह तआला ने दूध पिलाने वाली के अधिकार को सुरक्षित रखा, और जिम्मेदारी को क्रमबद्ध किया, बच्चे की सुरक्षा के साथ, इन महान और महत्वपूर्ण आदेशों के साथ। यह इस महान शारियाह की विस्तृत समझ का प्रमाण है, जिसमें बच्चे का अधिकार और दूध पिलाने वाली का अधिकार शामिल है।

फिर क़ुरआन के उत्कृष्ट आदेश के बारे में अधिक विवरण आता है, जो बच्चे के माता-पिता से संबंधित है, जैसा कि अल्लाह तबारक व तआला कहता है: ﴿فَإِنۡ أَرَادَا فِصَالًا﴾ अलग होने का अर्थ है अलगाव, जो बच्चे और स्तन के बीच अलगाव है।[1] अगर माता-पिता चाहते हैं कि बच्चे को दूध छुड़ाया जाए, दो वर्षों के पूरा होने से पहले, तो अल्लाह तआला ने इसके लिए माता-पिता के समझौते और सहमति की शर्त रखी है: ﴿وَعَلَى ٱلۡوَارِثِ مِثۡلُ ذَٰلِكَۗ فَإِنۡ أَرَادَا فِصَالًا عَن تَرَاضٖ مِّنۡهُمَا وَتَشَاوُرٖ﴾ "अगर वे दोनों सहमति और परामर्श से दूध छुड़ाना चाहते हैं"। तो इस अलगाव के लिए शर्त रखी गई है कि कोई भी माता-पिता अपने निर्णय में अकेला न हो, बल्कि इसमें दो महत्वपूर्ण बातें शामिल होनी चाहिए: पहला: ﴿تَرَاضٖ مِّنۡهُمَا﴾ "उन दोनों की सहमति", और दूसरा: ﴿وَتَشَاوُرٖ﴾ "परामर्श", क्योंकि परामर्श और सहमति से निर्णय लेने में माता-पिता और बच्चे दोनों का लाभ होता है, और उनसे नुकसान जो हो सकता है, उसे रोका जा सकता है। अल्लाह के इस आदेश में परिवार के मामलों की एक महत्वपूर्ण समस्या के प्रबंधन की विधि का वर्णन और सत्यापन शामिल है, जिसे ध्यानपूर्वक देखने वाले के लिए यह संभव है कि वह इसे कई समस्याओं और कठिनाइयों के लिए एक विधि के रूप में अपनाए, जो व्यक्ति या समाज का सामना करती हैं। इन तथ्यों के अनुसार, सही उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आधारित, और इसका मतलब है: सही उद्देश्यों से शुरूआत करने वाला व्यवस्थापक और संयोजक, अपने लिए सफल प्रशासनिक और व्यवस्थित विधियों के चयन और निर्धारण में सफलता प्राप्त करता है, जीवन के कई मामलों में, घर और व्यवसाय में, सामाजिक संबंधों में, और जीवन के अन्य विभिन्न और जुड़े हुए क्षेत्रों में।

अल्लाह तआला ने इस मामले को स्पष्टता और स्थान देकर, बच्चे के दूध छुड़ाने का संदर्भ दिया जब उपरोक्त दो शर्तें पूरी हो जाएं: ﴿فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِمَا﴾ "तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं"। अल्लाह तबारक व तआला ने माता-पिता से पाप को दूर किया, अगर वे इस पर सहमति और परामर्श करते हैं। और यह क़ुरआन का महान पाठ दर्शाता है कि अगर किसी एक माता-पिता ने दूसरे से परामर्श किए बिना निर्णय लिया, तो बच्चे का दूध छुड़ाना उचित नहीं है, क्योंकि वे इस बच्चे के साझेदार हैं, और उसकी भलाई को सुनिश्चित करने के साझेदार हैं, और एक दूसरे को और बच्चे को नुकसान से बचने के लिए। इस विधि में बच्चे की भलाई के लिए सावधानी बरतने की आवश्यकता और अल्लाह की दया और देखभाल को दर्शाया गया है, जो उसके आदेश और व्यवस्था में है, और जिस पर उसे नुकसान पहुँचाने का पाप का निर्धारण है।

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 113)।

यह इस बात की भी पुष्टि करता है कि बच्चे को पूर्ण दो वर्षों तक दूध पिलाना मौलिक है, और इसे केवल उन शर्तों के तहत माफ किया गया है जो पहले उल्लिखित हैं, और यह ध्यान रखते हुए कि प्रत्येक मामले के साथ क्या हो सकता है, ताकि माता-पिता उस पर विचार कर सकें जो बच्चे की भलाई को सुनिश्चित करता है। इसका एक लाभ यह है कि शरीअत ने उन स्थितियों और नवीनता को समाहित किया है जो उत्पन्न हो सकती हैं, और बच्चे की दूध छुड़ाने की क्षमता से संबंधित होती हैं, और अन्य खाद्य पदार्थों से प्रतिस्थापन। और यह भी कि समय की नवीनता से क्या हो सकता है, जिसमें भलाई प्राप्त होती है। यह सब इस बात का प्रमाण है कि यह एक दिव्य पथ है, जो सच्चाई के बिना आता है और जो उसके पीछे से आता है, वह सत्यता से सुरक्षित है। और यह एक महान, बुद्धिमान, और दयालु से प्रकट हुआ है।

और सहाबा ने स्पष्ट किया कि वे क़ुरआन के नाजिल होने के समय, मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में किस स्थिति में थे। क़तादा कहते हैं: दो वर्षों तक दूध पिलाना अनिवार्य था, और उसके पहले दूध छुड़ाना ह़राम था, फिर इसे शिथिल किया गया, और अल्लाह तआला के कथन: ﴿فَإِنۡ أَرَادَا فِصَالًا﴾ "तो अगर वे अलग होना चाहते हैं" के अनुसार दो वर्षों से कम दूध पिलाने की अनुमति दी गई।[1]

इससे यह सामान्य मामलों में लाभ होता है कि साझेदारों को किसी भी मामले में, जो उनके संबंधित लाभ या नुकसान का कारण बनता है, बिना परामर्श के अकेले निर्णय नहीं लेना चाहिए, जो द्वेष और दूरी को दूर करता है, और मैत्री को लाता है, क्योंकि शरीअत के उद्देश्यों में से एक व्यक्तियों का एकत्रित होना है, और यह इस महान धर्म के उद्देश्यों में से एक महान उद्देश्य है। और यह विधि शिक्षात्मक और शैक्षिक रूप से विस्तृत होती है, ताकि बच्चे इस उद्देश्य को अपने पारिवारिक जीवन में व्यावहारिक रूप से सीख सकें, और शैक्षिक और शिक्षण संस्थान इसे प्राप्त करने का प्रयास करें, ताकि इसे अपने शैक्षिक समाज में पूरा किया जा सके।

इमाम कुरतुबी रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं: "इसमें यह प्रमाण है कि अल्लाह तआला ने माता-पिता को बच्चे की भलाई के लिए परामर्श करने की अनुमति देकर आदेशों में व्याख्या की अनुमति दी है, और यह उनकी धारणाओं पर आधारित है, न कि वास्तविकता और निश्चितता पर"।[2]

फिर क़ुरआन का महान संदर्भ स्तनपान की दूसरी स्थिति में जाता है: ﴿وَإِنۡ أَرَدتُّمۡ أَن تَسۡتَرۡضِعُوٓاْ أَوۡلَٰدَكُمۡ فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡكُمۡ﴾ "और अगर तुम चाहते हो कि अपने बच्चों को किसी और से

(2) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 113)।

(1) पिछला संदर्भ।

दूध पिलवाओ तो तुम पर कोई दोष नहीं"। यह स्तनपान का दूसरा प्रकार या दूसरा क्षेत्र है, अर्थात कि अगर तुम चाहते हो कि अपने बच्चों के लिए किसी और से दूध पिलवाओ। अरबी में इसका अर्थ है कि अपने बच्चों के लिए किसी बाहरी व्यक्ति से दूध पिलवाओ। उसने इस मामले में अनुमति की स्पष्टता के साथ दोष को मना किया, और फिर भुगतान के विवरण को दिया: ﴿إِذَا سَلَّمْتُم مَّآ ءَاتَيْتُم بِٱلْمَعْرُوفِ﴾ " जबकि जो कुछ नियमानुसार उसे देना है, उसे चुका दो "। शब्द: ﴿إِذَا سَلَّمْتُم﴾ में दो संकेत शामिल हैं: पहला: आपने दूध पिलाने वाली बाहरी व्यक्ति को भुगतान दे दिया, और दूसरा: आपने दूध पिलवाने की इच्छा को प्रदान कर दिया, अर्थात कि प्रत्येक माता-पिता ने स्वीकार किया और सहमति दी, और यह उनके बीच एक समझौते पर था, और अच्छे इरादे और अच्छे उद्देश्य के साथ था।(1)

और ध्यान देने वाला देखेगा कि दोनों अर्थ उद्देश्यपूर्ण हैं, तो वाक्य ने एक ही शैली में दो महत्वपूर्ण संकेतों को समाहित किया। यह क़ुरआन के अद्वितीय भाषा शैली का हिस्सा है। फिर आयत उस उपदेश के साथ समाप्त होती है जो उसे संबोधित करता है: ﴿وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ وَٱعْلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ﴾ "और अल्लाह से डरते रहो, और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे सभी कार्यों को देख रहा है", जो भलाई से भरा हुआ उपदेश है, कि तुम सभी परिस्थितियों में अल्लाह से डरते रहो। फिर समाचार और अनुस्मारक जो आस्तिक जानते हैं, कि अल्लाह तआला से कोई भी परिस्थिति और शब्द छिपी नहीं है, जिससे सभी परिस्थितियों में इसे याद रखना अनिवार्य है। यह शिक्षा और पढ़ाई, सलाह और मार्गदर्शन, और स्पष्टीकरण के अंत में उपदेश के महत्व को इंगित करता है। क्योंकि उपदेश आस्तिक को सत्य की ओर पुनः लाता है, और उसे याद दिलाता है जो उसने भुला दिया था।

﴿وَٱلَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَٰجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۖ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِىٓ أَنفُسِهِنَّ بِٱلْمَعْرُوفِ ۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٣٤﴾﴾ [سورة البقرة:٢٣٤]

(और तुममें से जो मर जायें और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जायें, तो वे स्वयं को चार महीने दस दिन रोके रखें। फिर जब उनकी अवधि पूरी हो जाये, तो वे सामान्य नियमानुसार अपने विषय में जो भी करें, उसमें तुमपर कोई दोष नहीं तथा अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है)।

फिर क़ुरआन का संदर्भ एक अन्य पारिवारिक मामले में जाता है, जो पति की मृत्यु से संबंधित है: ﴿وَٱلَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَٰجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا﴾ (और तुममें से

(1) यह संदर्भ पूर्व उल्लेखित है, जो इमाम क़ुर्तुबी रहिमहुल्लाह तआला की व्याख्या और उनके व्याख्यात्मक विवरण से लिया गया है। अल्लाह तआला की दया उन पर, हम पर, और सभी मुसलमानों पर बनी रहे।

जो मर जायें और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जायें, तो वे स्वयं को चार महीने दस दिन रोके रखें) अल्लाह तआला ने स्पष्ट किया है कि पति की मृत्यु पर उसकी पत्नी की इद्दत तलाकशुदा महिला की इद्दत से अलग होती है, उसकी इद्दत चार महीने और दस दिन होती है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि वह गर्भवती है या नहीं। अल्लाह तआला ने महिला के लिए विवाह से बचने और इसके संबंध में प्रतीक्षा की अवधि को एक शब्द "يَتَرَبَّصْنَ" में संक्षेपित किया, जो धैर्य और किसी अन्य पुरुष से विवाह से बचने को दर्शाता है, जब तक कि आवश्यक इद्दत समाप्त नहीं हो जाती। इस संदर्भ में, मुस्लिम महिला की भावनाओं का संरक्षण है, जो शर्मिंदा होती है और अधिक बात करने की सहनशीलता नहीं रखती है, ताकि पाठक पढ़ सके बिना यह कि महिला को जो वह सुनती है उससे प्रभावित हो। इस अवधि में, मृत पति के अधिकार की सुरक्षा है, और गर्भ और वंश की सुरक्षा है, अगर वह गर्भवती है, और यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई वंश मिश्रण न हो, और विवाह करने वाले को यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसका वंश सत्य है। अल्लाह तआला ने इस आदेश के साथ सभी के अधिकारों की रक्षा की है। वहाँ विस्तृत आदेश हैं जो मृत पति की पत्नी से संबंधित हैं, जो विस्तार से सुन्नत में निहित हैं, ताकि मुसलमान समझ सकें कि इस्लाम का विधि क़ुरआन और सुन्नत दोनों में संपूर्ण और एकीकृत है। इस के लाभों में से एक यह है कि विद्वानों ने जो कानूनी आदेश संकलित और संपादित किए हैं, उन्हें उन्होंने आम और विशेष, प्रतिबंधित और अनियंत्रित के आधार पर व्याख्या से निकालने का प्रयास किया है, और इसमें सुन्नत में निहित आदेश भी शामिल हैं, जैसे गर्भवती और गैर-गर्भवती, और दास महिला की इद्दत। दोनो स्रोतों: क़ुरआन और सुन्नत से महान ज्ञान उभरा, और समझ और बुद्धिमानी को बढ़ाया।

फिर अल्लाह तआला ने बताया कि मृत पति की पत्नी की स्थिति इद्दत समाप्त होने के बाद क्या होती है: ﴿فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ﴾ "तो जब वे अपनी अवधि समाप्त कर लें", यानी इद्दत समाप्त हो जाती है, ﴿فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ﴾ "तो उन पर कोई दोष नहीं है जो वे अपने लिए भले तरीके से करती हैं"। यह उन सभी को संबोधित करता है जिनका मृत पति की पत्नी से संबंध है, जैसे अभिभावक, और उन सभी को जिनका इसमें कोई भूमिका है, जैसे न्यायाधीश और मृत पति के अभिभावक। अगर वह विवाह करना चाहती है या साज-सज्जा के मामले में, और यह "بِالْمَعْرُوفِ भले तरीके" से किया जाना चाहिए, जो शरीअत के आदेशों से संबंधित है, तो यह उन मामलों में शामिल हो जाता है जिनकी अनुमति शरीअत देती है, न तो ह़राम और न ही मकरूह। क़ुरआन के निर्देश से यह समझ में आता है कि अभिभावक अपनी वारिस को शरीअत से परे किसी भी चीज़ से रोकता है, क्योंकि उसे ﴿فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ﴾ "जो वे अपने लिए भले तरीके से करती हैं" से मना किया गया है। इसलिए, जो

महिलाएं उस भले तरीके से अधिक कर रही हैं, उन्हें अपनी वारिस को उस भले तरीके से आगे बढ़ने से रोकने का दायित्व होता है। इसलिए यह उसका दायित्व है, और उसे अपनी वारिस के अधिकार में इसको बनाए रखने और उसकी सुरक्षा की मांग की जाती है। यह इस्लामी विधि का लाभ है कि यह महिला को इस मामले में स्वतंत्रता देता है, उसकी व्यक्तिगत सुरक्षा की सीमा के भीतर, उसे किसी हानि से बचाने के लिए, या उसे और अन्य को किसी हानि से बचाने के लिए। यह इस्लाम के बुद्धिमान विधान का एक उपहार है, अपने निर्देश की सटीकता, और उसकी देखभाल और उसकी सुरक्षा में। और इसमें उसका ध्यान उसकी स्थिति और इस्लाम में उसकी जगह का प्रमाण है। फिर यह आयत सभी को उपदेश देती है: ﴿وَٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ خَبِيرٞ﴾ "और अल्लाह तुम्हारे सभी कार्यों को जानता है", अल्लाह तुम्हारे कार्यों को जानता है, जिससे यह आवश्यक है कि कार्य और नीयत जो अल्लाह तआला के आदेशों का विरोध करती हैं उनसे बचा जाए। यह उपदेश की याद दिलाने के महत्व को भी बताता है, सलाह और निर्देश और शिक्षा के अंत में। क्योंकि उपदेश आत्मा पर एक महान प्रभाव डालता है, और यह कोई हानि नहीं है इसे दोहराने में, जैसा कि क़ुरआन की आयतों में दोहराया जाता है।

﴿وَلَا جُنَاحَ عَلَيۡكُمۡ فِيمَا عَرَّضۡتُم بِهِۦ مِنۡ خِطۡبَةِ ٱلنِّسَآءِ أَوۡ أَكۡنَنتُمۡ فِيٓ أَنفُسِكُمۡۚ عَلِمَ ٱللَّهُ أَنَّكُمۡ سَتَذۡكُرُونَهُنَّ وَلَٰكِن لَّا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّآ أَن تَقُولُواْ قَوۡلٗا مَّعۡرُوفٗاۚ وَلَا تَعۡزِمُواْ عُقۡدَةَ ٱلنِّكَاحِ حَتَّىٰ يَبۡلُغَ ٱلۡكِتَٰبُ أَجَلَهُۥۚ وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ يَعۡلَمُ مَا فِيٓ أَنفُسِكُمۡ فَٱحۡذَرُوهُۚ وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٞ ٢٣٥﴾ [سورة البقرة:٢٣٥]

(इस अवधि में यदि तुम (उन) स्त्रियों को विवाह का संकेत दो अथवा अपने मन में छुपाये रखो, तो तुमपर कोई दोष नहीं। अल्लाह जानता है कि उनका विचार तुम्हारे मन में आयेगा, परन्तु उन्हें गुप्त रूप से विवाह का वचन न दो। परन्तु ये कि नियमानुसार कोई बात कहो तथा विवाह के बंधन का निश्चय उस समय तक न करो, जब तक निर्धारित अवधि पूरी न हो जाये तथा जान लो कि जो कुछ तुम्हारे मन में है, उसे अल्लाह जानता है। अतः उससे डरते रहो और जान लो कि अल्लाह क्षमाशील, सहनशील है)।

फिर क़ुरआन का महान निर्देश विधवा महिला के इद्दत से संबंधित मामले को स्पष्ट करता है: ﴿وَلَا جُنَاحَ عَلَيۡكُمۡ فِيمَا عَرَّضۡتُم بِهِۦ مِنۡ خِطۡبَةِ ٱلنِّسَآءِ﴾ "और अगर तुम महिलाओं को संकेत रूप में विवाह का प्रस्ताव दो तो तुम पर कोई दोष नहीं"। इस दिव्य निर्देश के साथ, अल्लाह तबारक व तआला विधवा महिला के इद्दत की सबसे संवेदनशील मामलों में निर्देश देते हैं, उन सभी को संबोधित करके जिनकी उस महिला से शादी की इच्छा हो सकती है, कि अगर एक व्यक्ति विधवा महिला से शादी करना चाहता है, तो उस पर कोई दोष नहीं है, अगर वह उस पर विवाह का संकेत देता है, स्पष्टता के बिना, इद्दत की अवधि के दौरान। इस महान निर्देश में, कई

लाभ हैं: समाज में शर्म और भय का पोषण, मृत पति की विधवा की भावनाओं का सम्मान, और मृत पति के सम्मान की अवधि का सम्मान, उसके पति के प्रति उसकी निष्ठा के साथ। यह भी महिला की इच्छाओं को संकेत रूप में प्रकट करने की अनुमति है, बिना स्पष्टता के, ताकि उसकी इच्छा छिपी हुई समझी जाए, बिना स्पष्ट घोषणा के। शब्द "عَرَّضۡتُم" का अर्थ है छिपी हुई इच्छा, बिना स्पष्टता के, किसी चीज़ और उसके उद्देश्य का संकेत। इससे यह स्पष्ट होता है कि विधवा महिला के लिए स्पष्टता की अनुमति नहीं है, क्योंकि बुद्धिमान शारियाह ने केवल संकेत की अनुमति दी है, और इससे यह समझा जाता है कि विधवा महिला के लिए स्पष्टता की मनाही है। यह भी बताता है कि इस्लाम की विधि में उच्च अर्थ और संकेत देने वाले शब्दों में विनम्रता है, और उन शब्दों से बचने की प्राथमिकता है जो वास्तविक स्थिति का ध्यान नहीं रखते, और विभिन्न शर्म के पहलुओं को ध्यान में रखते हैं। इस्लाम शालीनता, अदब, और नैतिकता का धर्म है।

लाभों में से एक यह है कि इस्लामी विधि ने मानसिक पहलुओं का ध्यान रखा है, संकेत की अनुमति देकर पुरुषों की इच्छा रखने वाले, और मृत पति की विधवा की भावनाओं का सम्मान किया है, और मृत पति के परिवार की भावनाओं का, और उसके बच्चों की, अगर उसके बच्चे हैं, और उसके आसपास के लोगों की भावनाओं का। इसलिए अल्लाह तआला के आदेशों ने मनुष्य के मामलों के सबसे सूक्ष्म पहलुओं को ध्यान में रखा है। विद्वानों ने तलाकशुदा महिला के लिए संकेत के बारे में स्पष्ट किया है, जिसे संक्षेप में कहा जा सकता है: यह अनुमति नहीं है, क्योंकि उसका स्थान अब भी पत्नी का स्थान है।

और अल्लाह ने उस पाप को भी मना किया जो दिल में छिपी हुई और गोपनीय इच्छा है, जिसे प्रकट नहीं किया गया, और जिसने इसे प्रकट नहीं किया कि वह विधवा महिला से विवाह करना चाहता है, तो अल्लाह देखेगा इच्छा को: ﴿أَوۡ أَكۡنَنتُمۡ فِيٓ أَنفُسِكُمۡۚ﴾ "या जो तुम अपने दिलों में छिपाए रखते हो"। अल्लाह तआला ने पाप को मना किया, जिसने मृत पति की पत्नी से विवाह करना चाहा, चाहे संकेत से, या छिपाने से। फिर अल्लाह तआला ने उन पुरुषों को बताया जिनका इस मामले में कोई संबंध है, अपने छिपे और प्रकट को जानने वाले के रूप में ﴿عَلِمَ ٱللَّهُ أَنَّكُمۡ سَتَذۡكُرُونَهُنَّ﴾ अल्लाह तआला ने इसे अनुमति दी है, यह ध्यान रखते हुए कि तुम विधवा महिला को याद करोगे, या तो अपने दिलों में गुप्त रूप से, या अपनी ज़बानों से स्पष्ट रूप से, अपनी विवाह की इच्छा के कारण, तो अल्लाह ने तुम्हें संकेत की अनुमति दी है तुम्हारी दया में। क्योंकि पाठ का अर्थ यह है कि उसकी दया तुम्हारे साथ है, पाप को उठाते हुए क्योंकि वह तुम्हारी प्राकृतिक स्थिति को जानता है, और तुम्हें संकेत और छिपाने की अनुमति देता है। यह बताता है कि मनुष्य के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह अपनी इच्छा को मजबूत करे, यह जानते हुए कि अल्लाह दिल की हलचल को जानता है, और उसकी शुभ शरीअत ने इन

पहलुओं को ध्यान में रखा है, और उन्हें सभी लाभों के साथ संतुलित किया है, और उन्हें उत्तम विनम्रता और सम्मान की सिखाई है।

फिर, शरीअत के संगठन और शालीनता के पहलुओं को पूरा करने के लिए, अल्लाह तआला ने गुप्त वादे को मना किया है: ﴿لَّا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا﴾ "और उन्हें गुप्त रूप से वादे मत करो"। तो उसे वादा नहीं करना चाहिए और स्पष्ट रूप से विवाह का प्रस्ताव नहीं देना चाहिए, जो संकेत से परे हो, या उससे वादा और संधि लेना कि वह किसी और से शादी नहीं करेगी और इसी तरह का कुछ, यह मना है। इमाम कुरतुबी रहमतुल्लाह अलैह ने कुछ सहाबा और विद्वानों के बारे में कहा है: "अर्थ: पुरुष को इस विधवा महिला से यह नहीं कहना चाहिए: मुझसे शादी करो, बल्कि संकेत दे अगर वह चाहता है, और उससे संधि और वादा नहीं लेना चाहिए कि वह किसी और से शादी नहीं करेगी, गुप्त और छिपकर"।[1] उन्होंने यह भी कहा है: "उम्मत की सर्वसम्मति है कि इद्दत के दौरान महिला से वादा करना मकरूह (नापसंद) है, और पिता को अपनी कुँवारी बेटी के लिए, और स्वामी को अपनी दासी के लिए"।[2] इससे केवल यह: ﴿إِلَّآ أَن تَقُولُواْ قَوۡلٗا مَّعۡرُوفٗاۚ﴾ को अपवाद के रूप में लिया गया है, जो संकेत की अनुमति है। इन निर्देशों और आदेशों में महान और बुद्धिमान अल्लाह से, जो विधवा महिला के मामले को नियमित और सुधारता है। यह पुष्टि करता है और विवाह की संधि के मामले में, जैसा कि अल्लाह तआला कहते हैं: ﴿وَلَا تَعۡزِمُواْ عُقۡدَةَ ٱلنِّكَاحِ حَتَّىٰ يَبۡلُغَ ٱلۡكِتَٰبُ أَجَلَهُۥۚ﴾ "और विवाह संधि का इरादा न करो जब तक कि पुस्तक अपनी अवधि पूरी न कर ले", तो इद्दत की अवधि समाप्त होने तक विवाह संधि न करो। विद्वानों का सर्वसम्मति है कि इद्दत की अवधि के दौरान संधि सही नहीं है।[3] ﴿حَتَّىٰ يَبۡلُغَ ٱلۡكِتَٰبُ أَجَلَهُۥۚ﴾ "जब तक कि पुस्तक अपनी अवधि पूरी न कर ले" का अर्थ है इद्दत की पूर्णता, और पुस्तक अवधि है, इद्दत के लिए निर्धारित समय सीमा। अल्लाह तआला ने इसे पुस्तक कहा, यह मानते हुए कि जिसने इसे निर्धारित किया और लागू किया, वह अल्लाह तआला की किताब है। जैसा कि अल्लाह तआला कहता है: ﴿كِتَٰبَ ٱللَّهِ عَلَيۡكُمۡۚ﴾ "अल्लाह की किताब तुम्हारे ऊपर है", अर्थात् जब तक कि निर्धारित अवधि समाप्त नहीं हो जाती।[4]

(2) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 125)।

(3) पिछला संदर्भ (3/ 126)।

(4) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 294)।

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 127)।

फिर यह महान आयत उन लोगों को उपदेश के साथ समाप्त होती है: ﴿وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ يَعۡلَمُ مَا فِيٓ أَنفُسِكُمۡ فَٱحۡذَرُوهُۚ﴾ "और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे दिलों की बात जानता है, इसलिए उससे डरो", आस्तिकों को याद दिलाते हुए कि वे जानते हैं कि अल्लाह तआला उनके दिलों की बातें जानता है, इसलिए यह उनके कार्यों को भी जानता है, जिससे यह आवश्यक हो जाता है कि वे सावधान रहें। ﴿فَٱحۡذَرُوهُۚ﴾ "तो उससे डरो" का मतलब है, उसके सजा से डरो, जो उसकी सीमाओं के पालन की मांग करता है, इसलिए उसे पार न करें। इस आयत में विशिष्ट रूप से उपदेश है, जिसमें अल्लाह तआला के दिल की बातों को जानने की बात है, ताकि इसे सामान्य रूप से समझा जाए, जो उसके कार्यों के बाहरी ज्ञान को दर्शाता है। शब्द ﴿فَٱحۡذَرُوهُۚ﴾ "तो उससे डरो" में उसकी सजा से डरने की आवश्यकता है, उसके विभिन्न स्तरों और प्रकारों में, जो यह बताता है कि कोई उसकी सीमाओं को पार न करने का साहस न करे। फिर उपदेश अल्लाह तआला के इस कथन के साथ समाप्त होती है: ﴿وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٞ﴾ "और जान लो कि अल्लाह क्षमाशील और धैर्यवान है", तो अल्लाह तआला ने स्पष्टीकरण और चेतावनी के बीच संतुलन बनाया, और उसकी माफी और धैर्य से निराश न होने के बीच संतुलन बनाया, जो उसकी सजा को नहीं जल्दी करता, ताकि गलती और पाप से माफी और तौबा की जाए, और उसकी माफी और क्षमा से निराश न हो। और उसकी सजा को जल्दी न करने का कारण उसकी महान धैर्य है, यह उसकी दया में से है, उसने अपने बंदों को सिखाया, चेताया, और डराया अपनी सीमाओं को पार करने से, और इसके साथ उसकी माफी और दया से निराशा से भी बचाया। इससे अधिक कुछ नहीं है, उसकी माफी और दया की आशा में, और इस स्पष्टीकरण और उसके जैसे में उसकी धैर्य का उपयोग। तो, अल्हम्दुलिल्लाह, संसारों के रब के लिए। यह शिक्षात्मक रूप से यह बताता है कि प्रलोभन और भय के बीच संतुलन कितना महत्वपूर्ण है, और यह कितना महत्वपूर्ण है कि दावत देने वाला और शिक्षक अल्लाह तआला की दया और माफी से अन्य लोगों को निराश न करें, और उसकी धैर्य एक उपहार है पापी और अवज्ञाकारी और कमी करने वाले के लिए, ताकि वे अपने पाप से माफी मांगें और तौबा करें।

﴿لَّا جُنَاحَ عَلَيۡكُمۡ إِن طَلَّقۡتُمُ ٱلنِّسَآءَ مَا لَمۡ تَمَسُّوهُنَّ أَوۡ تَفۡرِضُواْ لَهُنَّ فَرِيضَةٗۚ وَمَتِّعُوهُنَّ عَلَى ٱلۡمُوسِعِ قَدَرُهُۥ وَعَلَى ٱلۡمُقۡتِرِ قَدَرُهُۥ مَتَٰعَۢا بِٱلۡمَعۡرُوفِۖ حَقًّا عَلَى ٱلۡمُحۡسِنِينَ ٢٣٦﴾ [سورة البقرة:٢٣٦]

(और तुमपर कोई दोष नहीं, यदि तुम स्त्रियों को संभोग करने तथा महर (विवाह उपहार) निर्धारित करने से पहले तलाक़ दे दो, (अल्बत्ता) उन्हें नियमानुसार कुछ दो; धनी पर अपनी शक्ति के अनुसार तथा निर्धन पर अपनी शक्ति के अनुसार देना है। ये उपकारियों पर आवश्यक है)।

फिर क़ुरआन का संदर्भ एक अन्य वास्तविकता और तलाक के एक अन्य मामले की ओर बढ़ता है: ﴿لَّا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِن طَلَّقْتُمُ ٱلنِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا۟ لَهُنَّ فَرِيضَةً﴾ अल्लाह तबारक व तआला ने उस व्यक्ति से गुनाह को समाप्त कर दिया, जिसने निकाह के बाद, लेकिन मिलने (रिश्ते) और सहवास से पहले अपनी पत्नी को तलाक दिया।

इसमें कई लाभ हैं, जैसे कि उन लोगों को अवसर प्रदान करना, जिनकी इच्छाएं निर्माण और सहवास से पहले निकाह जारी रखने के बारे में बदल गई हों। यह आयत के "﴿مَا لَمْ تَمَسُّوهُنَّ﴾ (जब तक कि तुमने उन्हें छुआ न हो) वाक्यांश का अर्थ है। यह निकाह को जारी न रखने के लिए अनगिनत कारण हो सकते हैं। यह स्थिति दोनों पक्षों के लिए, सहवास के बाद तलाक की तुलना में, बेहतर और अधिक उपयुक्त हो सकती है। और चूंकि इस स्थिति में तलाकशुदा महिला के दिल को चोट पहुंचती है, अल्लाह ने आदेश दिया कि उसे कुछ लाभ प्रदान किया जाए, यदि उसे महर नहीं दिया गया हो। ﴿أَوْ تَفْرِضُوا۟ لَهُنَّ فَرِيضَةً﴾ और यह उसे उसके पति की ओर से उसकी स्थिति के अनुसार कोई चीज़ देने का मुआवजा है। तो संपन्न व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार देना चाहिए, और तंगहाली में रहने वाले व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार। ﴿وَمَتِّعُوهُنَّ عَلَى ٱلْمُوسِعِ قَدَرُهُۥ وَعَلَى ٱلْمُقْتِرِ قَدَرُهُۥ﴾ (संपन्न व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार दे और गरीब व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार)।(1)

यहाँ अल्लाह तआला की कृपा और दयालुता स्पष्ट होती है, जो कठिन परिस्थितियों और उनके समान अन्य हालात में इंसान के दिलों को सहलाता है। शरीअत ने अपने अहकाम में मानसिक और भावनात्मक पहलुओं को नजरअंदाज नहीं किया है, बल्कि उन्हें बहुत ही कोमलता और सावधानी से संभाला है। यह हर स्थिति में उसकी उपयुक्तता से स्पष्ट होता है।

यह भी अल्लाह तआला की कृपा है कि उसने मुआवजे की मात्रा को पति की आर्थिक स्थिति पर छोड़ दिया, ताकि वह अपनी क्षमता के अनुसार दे सके। यहाँ दो मुख्य वर्गों का उल्लेख है: ﴿الْمُوسِعُ﴾ (वह व्यक्ति जो संपन्न है और जिसकी स्थिति व्यापक है)। ﴿الْمُقْتِرُ﴾ (वह व्यक्ति जो कम संसाधन वाला, अर्थात गरीब है)। इनके बीच आर्थिक स्थिति के विस्तार और कमी की कई अलग-अलग श्रेणियाँ हो सकती हैं, जो आयत के शब्द ﴿قَدَرُهُ﴾ (उसकी क्षमता के अनुसार) से व्यक्त होती हैं। यह शरीअत के निर्देशों और नियमों की गहराई को दर्शाता है, जहाँ इंसान की भिन्न वित्तीय क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए शब्दों और अर्थों को बड़े ही सटीक और व्यापक तरीके से रखा गया है। यह क़ुरआन मजीद के महान वर्णन का हिस्सा है, जिससे

(1) अधिक जानकारी के लिए देखें, तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 295)।

इंसान सीखता है कि अपने शब्दों और उनके अर्थों को कैसे सटीक और व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जाए।

फिर अल्लाह तआला ने आयत में यह कहा, पुष्टि और स्पष्टीकरण के लिए: ﴿مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ﴾ अर्थातः जितनी क्षमता हो और जितना हक आवश्यक हो, उतना मुआवजा देना चाहिए।[1] यहाँ ﴿بِالْمَعْرُوفِ﴾ (उचित तरीके से) का मतलब है नैतिकता, उदारता और न्याय के सभी पहलुओं को समाहित करना। यह शब्द मानवों के बीच की विभिन्न क्षमताओं और स्थिति के बीच अंतर को दर्शाता है, ताकि हर व्यक्ति अपनी स्थिति के अनुसार योगदान कर सके। फिर अल्लाह तआला ने आगे कहा: ﴿حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ﴾ (यह भलाई करने वालों पर अनिवार्य है)। यह आयत एक ऐसा प्रेरक संदेश देती है जो हर मुसलमान को भलाई की भावना से प्रेरित करती है। हर व्यक्ति भलाई की विशेषता से सुशोभित होना चाहता है और कोई नहीं चाहता कि वह इस विशेषता से वंचित हो। इसका तात्पर्य यह है कि यह गुण भलाई करने और उसमें रुचि लेने की प्रेरणा देता है। यह संदेश शिक्षण, दावत, प्रबंधन और मानव प्रयास के हर पहलू में महत्व रखता है। क़ुरआन मजीद की शैली, जो मानवता को भलाई के विविध रूपों की ओर आकर्षित करती है, एक ऐसा मार्गदर्शन प्रदान करती है जो हर क्षेत्र में सफलता सुनिश्चित करता है।

ज़ुबैर बिन मुत़इम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बनी नसर कबीले की एक महिला से निकाह किया, लेकिन उनसे मिलने और सहवास से पहले ही तलाक दे दिया। उन्होंने महिला को पूरा महर भेज दिया और कहा: "मुझे उससे अधिक क्षमा का अधिकारी होना चाहिए।"[2] इस आयत के प्रभाव को सहाबा-ए-किराम के आचरण पर गौर किया जा सकता है, विशेष रूप से जब हम ज़ुबैर बिन मुतअम रज़ियल्लाहु अन्हु के इस व्यवहार को देखते हैं। उनके यह कहने से कि "मुझे उससे अधिक क्षमा का अधिकारी होना चाहिए," इस से पता चलता है कि तलाकशुदा महिला भी अपने अधिकार को माफ करने में पहल कर सकती है।

इसके लाभों में से एक यह भी है कि सहवास (जिमाअ) के लिए ﴿تمسوهن﴾ (उन्हें छूने) का उपयोग किया गया है, जो उद्देश्य को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है। साथ ही, यह महिलाओं के सम्मान और शर्मिंदगी से बचने के लिए एक उपयुक्त शब्द का चयन है। यह दिखाता है कि शब्दों के चयन और भाषा के उपयोग में कितनी सावधानी बरतनी चाहिए, ताकि वह परिस्थिति और श्रोताओं के अनुकूल हो। बातचीत में ऐसे शब्दों से बचना चाहिए जो उत्तेजक हों या जिनसे शर्मिंदगी हो। यह हर प्रकार के सामाजिक संपर्क और व्यवहार में अन्य लोगों की भावनाओं

(2) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़्सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 247)।

(1) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़्सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (31/ 136)।

और मर्यादा का ध्यान रखने की शिक्षा देता है। क़ुरआन मजीद की इस शैली से हम सीखते हैं कि अपने शब्दों में शालीनता, सम्मान और संवेदनशीलता का समावेश कैसे करें, ताकि समाज में सौहार्द और नैतिकता को बढ़ावा दिया जा सके।

﴿وَإِن طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِن قَبْلِ أَن تَمَسُّوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّآ أَن يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوَا۟ ٱلَّذِى بِيَدِهِۦ عُقْدَةُ ٱلنِّكَاحِ ۚ وَأَن تَعْفُوٓا۟ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَلَا تَنسَوُا۟ ٱلْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٧﴾﴾ [سورة البقرة:٢٣٧]

(और यदि तुम उनहें, उनसे संभोग करने से पहले तलाक़ दो, इस स्थिति में कि तुमने उनके लिए महर (विवाह उपहार) निर्धारित किया है, तो निर्धारित महर का आधा देना अनिवार्य है। ये और बात है कि वे क्षमा कर दें अथवा वे क्षमा कर दें जिनके हाथ में विवाह का बंधन है और क्षमा कर देना संयम से अधिक समीप है और आपस में उपकार को न भूलो। तुम जो कुछ कर रहे हो, अल्लाह सब देख रहा है)।

फिर संदर्भ तलाक के दूसरे प्रकार की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए बदलता है: ﴿وَإِن طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِن قَبْلِ أَن تَمَسُّوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ﴾ (और यदि तुम उनहें, उनसे संभोग करने से पहले तलाक़ दो, इस स्थिति में कि तुमने उनके लिए महर (विवाह उपहार) निर्धारित किया है, तो निर्धारित महर का आधा देना अनिवार्य है) यह पत्नी के महर के निर्धारण में भिन्नता है।

अगर पति ने अनुबंध (महर) के बाद, और प्रवेश और संभोग से पहले तलाक दिया, और उसने महर निर्धारित किया है, तो तलाक देने की इच्छा होने पर उसे आधा दहेज देना होगा। विद्वानों ने इस मामले में कानूनी व्याख्याएँ और व्याख्यान किए हैं। यहाँ इस आयत और पिछली आयत के बीच के अंतर से एक और बात स्पष्ट होती है। पिछली आयत में महर का निर्धारण नहीं किया गया था, इसलिए पत्नी को उसके दिल को प्रसन्न करने के लिए कुछ देने का आदेश था ﴿فَمَتِّعُوهُنَّ﴾। लेकिन इस आयत में महर का निर्धारण किया गया है, और उसे आधा महर देने का आदेश है, ताकि उसका दिल प्रसन्न हो। ﴿إِلَّآ أَنْ يَعْفُونَ﴾ (मगर यह कि वे स्वयं माफ कर दें) अर्थात पत्नी को यह अधिकार दिया गया है कि वह अपने हिस्से को माफ कर दे। ﴿أَوْ يَعْفُوَا الَّذِى بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ﴾ (या वह व्यक्ति माफ कर दे जिसके हाथ में निकाह की गांठ है)। अर्थात पति को भी यह अनुमति है कि वह पत्नी को पूरा महर दे और आधा माफ न करे।

और इस आयत में महर निर्धारित किया गया था, तो उसे मन की शांति के लिए आधा दहेज दिया गया।

जब तक वह इसे माफ न कर दे और "या जो अधिकार प्राप्त करे वह माफ कर दे", तो उसने पति को अपने अधिकार से सम्मानित करने की अनुमति दी।

यह पति-पत्नी के बीच दया के अवसर प्रदान करने का हिस्सा है, क्योंकि शायद पति की वास्तविक स्थिति की आवश्यकता हो सकती है, तो कानून ने उसे अपने अधिकार को छोड़ने का अधिकार दिया "या वह माफ कर दे जो विवाह की संधि का अधिकारी है", और वह पति है।

विद्वानों ने इसमें व्याख्या की है, लेकिन इससे यह भी पता चलता है कि पति भी पत्नी के दूसरे हिस्से को माफ कर सकता है, उसे पूरा दहेज दे सकता है, और पत्नी को अपने हिस्से को माफ करने का अधिकार है। और फुक़हा ने इस पर विस्तार से चर्चा की है, लेकिन यह भी समझा जाता है कि पति भी पत्नी के दूसरे आधे हिस्से को माफ कर सकता है और उसे पूरा महर दे सकता है। पत्नी को भी अपने हिस्से का आधा माफ करने का अधिकार है। फिर हमारे रब तबारक व तआला ने दोनों को माफ करने को प्राथमिकता दी है: ﴿وَأَن تَعۡفُوٓاْ أَقۡرَبُ لِلتَّقۡوَىٰۚ﴾ (और यदि तुम माफ कर दो तो यह तक़वा के अधिक करीब है)। इसमें दोनों को यह प्रोत्साहन दिया गया है कि वे अपने अधिकारों को माफ कर एक-दूसरे के प्रति उदारता और त्याग का रवैया अपनाएं। इस प्रकार वे अपने अच्छे आचरण का सवाब अर्जित करेंगे, भलाई और दानशीलता को बढ़ावा देंगे, और अपने अधिकारों को दूसरों के लिए छोड़ने की कृपा दिखाएंगे। यह उनके बीच नैतिकता को बनाए रखेगा और उनके अलगाव में भी अच्छा व्यवहार सुनिश्चित करेगा। यह दूसरों पर भी प्रभाव छोड़ेगा, जो इस आचरण का अनुसरण करेंगे। अल्लाह तआला ने कहा: ﴿وَأَن تَعۡفُوٓاْ أَقۡرَبُ لِلتَّقۡوَىٰۚ﴾ (और यदि तुम माफ कर दो तो यह तक़वा के अधिक करीब है)। मुत्तकी (धर्मपरायण) व्यक्तियों का यह व्यवहार उच्च स्तर की ओर ले जाता है, जो तक़वा (अल्लाह का डर और उसके आदेशों का पालन) को प्राप्त करने में सहायक है। यह तक़वा हर मोमिन की चाहत होती है। इससे यह शिक्षा मिलती है कि नैतिक प्रेरणा और भलाई के आचरण का महत्व है। इसके अलावा, दूसरों के अधिकारों को छोड़कर माफी और त्याग के माध्यम से तक़वा को प्राप्त करना अल्लाह तआला की ओर निकटता का एक मार्ग है। आयत के अंत में अल्लाह तआला का यह कहना: ﴿وَلَا تَنسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ﴾ (और आपस में उदारता को न भूलो)। इसमें यह निर्देश है कि पति पूरा महर अदा करके और पत्नी अपने हिस्से को छोड़कर एक-दूसरे के प्रति भलाई दिखाएं। यह रब तबारक व तआला के मार्गदर्शन की खूबसूरती और गहराई को दर्शाता है। यह भी समझा गया है कि भलाई को न भूलने का यह निर्देश अतीत में किए गए उपकारों को याद रखने का महत्व बताता है। यह मतभेद को दरकिनार करने और अच्छे इरादे से उदारता दिखाने का कारण बनता है।

﴿حَٰفِظُواْ عَلَى ٱلصَّلَوَٰتِ وَٱلصَّلَوٰةِ ٱلۡوُسۡطَىٰ وَقُومُواْ لِلَّهِ قَٰنِتِينَ ۝٢٣٨ فَإِنۡ خِفۡتُمۡ فَرِجَالًا أَوۡ رُكۡبَانٗاۖ فَإِذَآ أَمِنتُمۡ فَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُم مَّا لَمۡ تَكُونُواْ تَعۡلَمُونَ ۝٢٣٩﴾ [سورة البقرة:٢٣٨-٢٣٩].

(नमाज़ों का, विशेष रूप से माध्यमिक नमाज़ (अस्र) का ध्यान रखो तथा अल्लाह के लिए विनय पूर्वक खड़े रहो। और यदि तुम्हें भय हो, तो पैदल या सवार (जैसे सम्भव हो) नमाज़ पढ़ो, फिर जब निश्चिंत हो जाओ, तो अल्लाह ने तुम्हें जैसे सिखाया है, जिसे पहले तुम नहीं जानते थे, वैसे अल्लाह को याद करो)।

फिर क़ुरआन का संदर्भ नमाज़ के विषय की ओर बढ़ता है, जो तलाकशुदा महिला के अधिकारों के विषय के बाद आता है। इस आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿حَٰفِظُواْ عَلَى ٱلصَّلَوَٰتِ وَٱلصَّلَوٰةِ ٱلۡوُسۡطَىٰ وَقُومُواْ لِلَّهِ قَٰنِتِينَ ۝٢٣٨﴾ (नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो, खासकर मध्य की नमाज़ की, और अल्लाह के लिए आज्ञाकारी बनकर खड़े रहो) यहाँ नमाज़ पढ़ने का प्रोत्साहन अम्र के स़ेग़ा (आदेशात्मक वचन) के द्वारा हुआ है।

इस आयत में नमाज़ को उसकी समय पर अदायगी और लगातार पढ़ने का आदेश दिया गया है। "मुहाफ़ज़त (सुरक्षा)" का अर्थ है नमाज़ों की नियमितता बनाए रखना और इसमें सुस्ती न करना। यह इस बात का प्रमाण है कि नमाज़ का स्थान अत्यधिक ऊँचा है और उसकी नियमितता की बहुत बड़ी अहमियत है। जो व्यक्ति इस आदेश का पालन करता है, वह निश्चित रूप से अल्लाह के फज़्ल और करम से सम्मानित होता है। फिर "मध्य की नमाज़" (अल-वुस्ता) का विशेष रूप से उल्लेख किया गया, हालांकि वह सामान्य नमाज़ों में शामिल है। इसे खास तौर पर महत्त्व देने के लिए अलग से ज़िक्र किया गया। विद्वानों ने इसे "अस्र की नमाज़" माना है, लेकिन इसके बारे में दस अलग-अलग मत हैं। कुछ ने इसे अस्पष्ट (मुबहम) माना है, जैसे शबे-क़द्र, ताकि मोमिन इसे ढूंढने और सभी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने में प्रयासरत रहे। इमाम क़ुर्तुबी रहमतुल्लाहि अलैह ने इसे मुबहम मानने को सही ठहराया और कहा कि इसके लिए स्पष्ट साक्ष्य नहीं है, इसलिए मोमिन को सभी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करनी चाहिए, ताकि वह "मध्य की नमाज़" का भी ध्यान रख सके।(1) इससे यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह तआला ने नमाज़ों में से किसी एक को विशेष सम्मान दिया है, और मोमिन को सभी नमाज़ों में कोशिश करनी चाहिए, ताकि उस विशेष नमाज़ का लाभ प्राप्त हो सके।

फिर अल्लाह तआला ने नमाज़ में खड़े होने के तरीके को बताया: ﴿وَقُومُواْ لِلَّهِ قَٰنِتِينَ﴾ (और अल्लाह के लिए आज्ञाकारी बनकर खड़े रहो) यह आदेश देता है कि नमाज़ी अल्लाह

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 140)।

के सामने विनम्र, शांत और आज्ञाकारी होकर खड़ा हो। इसमें यह भी शामिल है कि नमाज़ के दौरान बातचीत को छोड़ दिया जाए।

ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहते हैं: "हम नमाज़ में बात किया करते थे। आदमी अपने साथी से बात करता था, जो उसके पास खड़ा होता था, यहाँ तक कि यह आयत नाज़िल हुई: ﴿وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ﴾ तब हमें चुप रहने का आदेश दिया गया और बात करने से रोका गया"।(1)

" قَانِتِينَ क़ानितीन" शब्द के विभिन्न अर्थ हैं, जो नमाज़ में नमाज़ी की स्थिति के लिए आवश्यक हैं। इसके अर्थ में विनम्रता, आज्ञाकारिता और अल्लाह के प्रति पूरी निष्ठा शामिल है।

जब अल्लाह तआला ने नमाज़ में खड़े होने का आदेश दिया, जिसमें विनम्रता और शांति होनी चाहिए, जो सामान्य स्थिति में नमाज़ियों के लिए होती है, तो उन्होंने अगली आयत में उस स्थिति का वर्णन किया जिसमें नमाज़ी को भय का सामना करना पड़े। अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا﴾ (तो अगर तुम्हें डर हो, तो पैदल चलते हुए या सवारी पर ही नमाज़ अदा करो), ख़ौफ़ का अर्थ है: डर एवं भय, जो किसी भी आतंकित करने वाली चीज़ से हो सकता है। यहाँ ख़ौफ़ को आम तौर पर लिया गया है, किसी विशेष प्रकार के भय तक सीमित नहीं किया गया। यह बताया गया कि यह इबादत (नमाज़) बंदे से उस समय भी नहीं छूटती जब वह डर के हालात में हो। भयभीत व्यक्ति को इस इबादत के लिए रियायत दी गई है कि वह इसे अपने सामर्थ्य के अनुसार पैदल चलते हुए या किसी सवारी (जैसे वाहन, घोड़ा, या बाइक) पर अदा कर सकता है, और वह जिस दिशा में सक्षम हो, उसी दिशा में कर सकता है।

यह इस बात को दर्शाता है कि नमाज़ को उसके समय में ही अदा करना कितना महत्वपूर्ण है और इसे किसी भी कारण से देर नहीं करनी चाहिए, चाहे भय और घबराहट ही क्यों न हो। इसलिए, एक मुसलमान को इसे किसी वैध और अपरिहार्य कारण के बिना समय से टालने से बचना चाहिए। अगर भयभीत व्यक्ति को नमाज़ टालने की अनुमति नहीं है, तो फिर सामान्य स्थिति में किसी और को कैसे दी जा सकती है?

अल्लाह तआला ने इस बात को आयत के अंत में स्पष्ट किया: ﴿فَإِذَا أَمِنتُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ﴾ (तो जब तुम सुरक्षित हो जाओ, तो अल्लाह को उसी तरह याद करो जैसे उसने तुम्हें वह सिखाया जिसे तुम पहले नहीं जानते थे) इसमें यह आदेश

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 140)।

दिया गया कि जब व्यक्ति सामान्य स्थिति में लौट आए, तो वह नमाज़ को उसकी पूर्णता के साथ अदा करे, जैसे कि रुकू, सज्दा, खड़े होना, बैठना और विनम्रता के साथ। अल्लाह तआला ने अपने बंदों पर अपने उपकार को याद दिलाया कि उन्होंने उन्हें ईमान, इबादत, और अच्छे आचरण का ज्ञान दिया, और वह सब सिखाया जो वे पहले नहीं जानते थे।

﴿فَإِذَآ أَمِنتُمۡ فَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ﴾ (तो जब तुम सुरक्षित हो जाओ, तो अल्लाह को याद करो।) यह आदेश केवल नमाज़ तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें शुक्र, तस्बीह (सुब्हानल्लाह), तहलील (ला इलाहा इल्लल्लाह कहना), तकबीर (अल्लाहु अकबर कहना), और हम्द (अल्हम्दुलिल्लाह कहना) जैसे सभी प्रकार के अल्लाह के ज़िक्र को शामिल किया गया है। और इसके बारे में दो मत हैं[1], अतः जैसे उसने तुम्हें धर्म के भले पहलुओं का वह ज्ञान दिया जिसे तुम नहीं जानते थे, उसी तरह उसे हर प्रकार के ज़िक्र और उसके सभी रूपों के साथ याद करो।

इस आयत से यह भी पता चलता है कि इस्लाम के आदेश कठिनाई और असंभवता से मुक्त हैं। अल्लाह तआला ने कठिनाइयों के कारण इबादत के पूर्ण रूप से अदा न कर पाने की स्थिति में इसे सरल और व्यावहारिक बना दिया। उन्होंने भय की स्थिति में नमाज़ अदा करने के तरीके की शिक्षा दी, ताकि उनके बंदे इस बात पर अल्लाह का शुक्र अदा करें और उसे हर प्रकार के ज़िक्र के साथ याद करें। यह भी स्पष्ट होता है कि नमाज़ भयभीत व्यक्ति पर से भी नहीं हटाई गई, और सामान्य परिस्थितियों में भी यह नहीं हटाई जा सकती। बंदे को इसे अपनी सामर्थ्य के अनुसार अवश्य अदा करना चाहिए। अल्लाह तआला और उनके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसकी शिक्षा दी है। यह इस बात का एक बड़ा और ठोस प्रमाण है कि नमाज़ का इस्लाम में एक ऊँचा और सम्मानित स्थान है। इसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए, इसकी सुरक्षा की जानी चाहिए, और इसे पूर्णता और विनम्रता के साथ अदा करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

﴿وَٱلَّذِينَ يُتَوَفَّوۡنَ مِنكُمۡ وَيَذَرُونَ أَزۡوَٰجٗا وَصِيَّةٗ لِّأَزۡوَٰجِهِم مَّتَٰعًا إِلَى ٱلۡحَوۡلِ غَيۡرَ إِخۡرَاجٖۚ فَإِنۡ خَرَجۡنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡكُمۡ فِي مَا فَعَلۡنَ فِيٓ أَنفُسِهِنَّ مِن مَّعۡرُوفٖۗ وَٱللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٞ ٢٤٠ وَلِلۡمُطَلَّقَٰتِ مَتَٰعُۢ بِٱلۡمَعۡرُوفِۖ حَقًّا عَلَى ٱلۡمُتَّقِينَ ٢٤١﴾ [سورة البقرة: ٢٤٠-٢٤١].

(और जो तुममें से मर जायें तथा पत्नियाँ छोड़ जायें, वे अपनी पत्नियों के लिए एक वर्ष तक, उनहें खर्च देने तथा (घर से) न निकालने की वसिय्यत कर जायें, यदि वे स्वयं निकल जायें

(1) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 251)।

तथा सामान्य नियमानुसार अपने विषय में कुछ भी करें, तो तुमपर कोई दोष नहीं। अल्लाह प्रभावशाली तत्वज्ञ है। तथा जिन स्त्रियों को तलाक़ दी गयी हो, तो उन्हें भी उचित रूप से सामग्री मिलनी चाहिए। ये आज्ञाकारियों पर आवश्यक है)।

जब तलाकशुदा और जिनके पति का निधन हो गया हो, उनके मामलों की चर्चा को रोककर, नमाज़ की अनिवार्यता और उसके पालन की बात की गई, तब फिर से प्रसंग विधवा और तलाकशुदा महिलाओं पर लौटता है और उनके प्रति भलाई का आदेश दिया जाता है। यह शैली शायद इस उद्देश्य से अपनाई गई है कि एक महत्वपूर्ण विषय की ओर ध्यान आकर्षित किया जाए, जिसे समझाने के दौरान रोका गया था। क्योंकि किसी विषय पर चर्चा करने वाला व्यक्ति इसे केवल तब ही रोकता है, जब कोई अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बीच में आ जाए, जिसे स्पष्ट करना आवश्यक हो। और यहाँ यह महत्वपूर्ण विषय नमाज़ है, जो धर्म का स्तंभ है।

अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है: ﴿وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا وَصِيَّةً لِّأَزْوَاجِهِم مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ﴾ (और जो तुममें से मर जायें तथा पत्नियाँ छोड़ जायें, वे अपनी पत्नियों के लिए एक वर्ष तक, उनहें खर्च देने तथा (घर से) न निकालने की वसिय्यत कर जायें) इस महान आयत में अल्लाह तआला ने बताया कि पति की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए, अल्लाह तबारक व तआला की वसीयत के साथ, कि वह एक पूरा वर्ष आनंद, सम्मान, और खर्च के साथ रहे, और जो कुछ भी उसे चाहिए, यह उसे सम्मान देने और उसके पति के प्रति भलाई के लिए है, तो अल्लाह तआला ने उसे चार महीने और दस दिनों की इद्दत के साथ, और पूरा वर्ष के आनंद के साथ संयोजित किया। यह इस्लामी विधि के नैतिक और आध्यात्मिक पहलुओं पर ध्यान देने की बताता है, और मृत के प्रति भलाई, उसे सम्मान देकर, और उसकी दिल की टूटी स्थिति को ठीक करके, जो मौत की घटना से प्रभावित होती है। यह नैतिक और मानसिक पहलुओं पर ध्यान देने की महत्वपूर्णता को बताता है, और केवल संबंध के समाप्त होने को नहीं देखना चाहिए, बल्कि उस भलाई को देखना चाहिए जो थी, जब तक कि यह भलाई से समाप्त नहीं हो जाती।

अल्लाह तआला ने उस स्थिति से अपवाद किया जब वह पूरा वर्ष पूरा न करना चाहे: ﴿فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ مِن مَّعْرُوفٍ﴾ (यदि वे स्वयं निकल जायें तथा सामान्य नियमानुसार अपने विषय में कुछ भी करें, तो तुमपर कोई दोष नहीं) तो अगर वह अपनी इद्दत के बाद बाहर निकलना चाहती है तो उसके पास इसकी पूरी स्वतंत्रता है, और मृत पति के अभिभावकों पर कोई पाप नहीं है जो उसने अपने लिए किया, साज-सज्जा और भले तरीके से सजावट की सीमा में, जैसा कि शरीअत में जाना जाता है: ﴿فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ مِن مَّعْرُوفٍ﴾ (यदि वे सामान्य नियमानुसार अपने विषय में कुछ भी करें,

तो तुमपर कोई दोष नहीं) यह इस्लाम की विधि को बताता है कि स्वतंत्रता के क्षेत्र को निर्धारित करने में, यह शरीअत की सीमाओं को पार नहीं करती, क्योंकि व्यक्तिगत स्वतंत्रता अल्लाह तआला की सीमाओं पर समाप्त हो जाती है। यह इस्लाम के अधिकारों की सुरक्षा की बताता है, और दूसरों के अधिकारों की सुरक्षा की भी, जो उनके पास पहुंच सकते हैं, और समाज पर उनके प्रभाव की विभिन्न डिग्रियों के साथ। अल्लाह तबारक व तआला ने व्यक्ति के विशेष अधिकारों की सुरक्षा की, और व्यक्तिगत और उनके समाज के बीच के अधिकारों की भी, उनके संबंधों और प्रभाव की विभिन्न डिग्रियों के अनुसार।

फिर यह महान आयत उन लोगों के लिए विशेष उपदेश के साथ समाप्त होती है, और सभी के लिए सामान्य उपदेश: ﴿وَٱللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ﴾ (अल्लाह प्रभावशाली तत्वज्ञ है), ताकि उन्हें सिखाए और याद दिलाए कि वह महान है, उसके पास सभी शक्ति है, जो पूरी क्षमता और व्यापक प्रभुत्व को दर्शाती है, और वह बुद्धिमान है इन आदेशों के साथ, जो उसकी महान बुद्धिमानी को दर्शाती है, जो अपने स्थानों पर रखी गई है।

और उसके बाद, अल्लाह तआला ने पति की मृत्यु पर उसकी पत्नी के आनंद की बात की, उसने तलाकशुदा महिला के आनंद की बात की: ﴿وَلِلْمُطَلَّقَٰتِ مَتَٰعٌۢ بِٱلْمَعْرُوفِ﴾ (तथा जिन स्त्रियों को तलाक़ दी गयी हो, तो उन्हें भी उचित रूप से सामग्री मिलनी चाहिए) तो हर तलाकशुदा महिला को अपने पति से आनंद मिलना चाहिए, जो उसकी स्थिति और उसकी स्थिति के अनुसार है, फिर अल्लाह तआला ने इसके आदेश को स्पष्ट किया, अपने कथन के साथ: ﴿حَقًّا عَلَى ٱلْمُتَّقِينَ﴾ (ये आज्ञाकारियों पर आवश्यक है), यह एक अधिकार है, और शब्द अधिकार अनिवार्यता को दर्शाता है, यह एक अनिवार्य अधिकार है, जिसे नेक लोग पालन करते हैं। यह बताता है कि जो अल्लाह तआला से डरते हैं, वे जो अधिकार है उसका पालन करते हैं, और अधिकार का पालन करना, ईमानदारी का प्रमाण है। फिर अल्लाह तबारक व तआला कहते हैं:

﴿وَٱلَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَٰجًا وَصِيَّةً لِّأَزْوَٰجِهِم مَّتَٰعًا إِلَى ٱلْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِى مَا فَعَلْنَ فِىٓ أَنفُسِهِنَّ مِن مَّعْرُوفٍ ۗ وَٱللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٤٠﴾ وَلِلْمُطَلَّقَٰتِ مَتَٰعٌۢ بِٱلْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى ٱلْمُتَّقِينَ ﴿٢٤١﴾ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمْ ءَايَٰتِهِۦ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٤٢﴾﴾ [سورة البقرة:٢٤٠-٢٤٢].

(और जो तुममें से मर जायें तथा पत्नियाँ छोड़ जायें, वे अपनी पत्नियों के लिए एक वर्ष तक, उनहें खर्च देने तथा (घर से) न निकालने की वसिय्यत कर जायें, यदि वे स्वयं निकल जायें तथा सामान्य नियमानुसार अपने विषय में कुछ भी करें, तो तुमपर कोई दोष नहीं। अल्लाह

प्रभावशाली तत्वज्ञ है। तथा जिन स्त्रियों को तलाक़ दी गयी हो, तो उन्हें भी उचित रूप से सामग्री मिलनी चाहिए। ये आज्ञाकारियों पर आवश्यक है। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों को उजागर कर देता है, ताकि तुम समझो।) ﴿كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمْ ءَايَٰتِهِۦ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٤٢﴾﴾ "इस तरह, अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों को स्पष्ट करता है ताकि तुम समझ सको", अल्लाह तआला अपने विश्वासियों को महान आयतों के साथ अनुग्रहित करते हैं, जो आदेशों को लेती हैं जिनमें अनिवार्य, पसंदीदा और मकरूह शामिल होते हैं, और उनके साथ संबंधित शिष्टाचार और नैतिकता। ताकि तुम उन्हें प्रदर्शन करके पूरी समझ तक पहुंच सको।

इससे यह बात स्पष्ट होती है कि अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करना इंसानी बौद्धिकता (अकल) की परिपूर्णता को सिद्ध करता है। जो व्यक्ति इन आदेशों का पालन करता है, उसे समझदार और विवेकशील माना जाता है। लेकिन जो इनसे लापरवाही बरतता है, वह इस गुण से वंचित होता है। यहाँ समझदारी (अकल) के दो प्रकारों की चर्चा है: समझ का सामान्य स्तर (अकल-ए-इदराक): यह वह बुद्धि है जो इंसान को पागलपन और नासमझी (जैसे कम उम्र की अवस्था) से अलग करती है। इसमें इंसान चीज़ों को पहचानने और समझने में सक्षम होता है। परिपक्व समझ (अकल-ए-रुश्द): यह समझ सामान्य समझ से परे होती है। इसमें इंसान न केवल चीज़ों को समझता है, बल्कि भलाई को अपनाता है और बुराई से बचता है। जो व्यक्ति सच्चाई को समझकर भी उसे नहीं अपनाता और झूठ को पहचानकर भी उसका अनुसरण करता है, उसे "परिपक्व समझदार" नहीं कहा जा सकता। क्योंकि बुद्धि का असली फल यही है कि इंसान सही और लाभकारी काम करे। इसीलिए लोग उन व्यक्तियों के बारे में, जो भलाई के रास्ते पर चलने से इनकार करते हैं, मजाज़ी तौर पर कहते हैं: "क्या तुम पागल हो?" या "यह व्यक्ति पागल है।" यह बयान वास्तव में उनके व्यवहार को नकारने का तरीका होता है, न कि उनकी असली मानसिक स्थिति का बयान।

﴿ ۞ أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلَّذِينَ خَرَجُوا۟ مِن دِيَٰرِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ ٱلْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ ٱللَّهُ مُوتُوا۟ ثُمَّ أَحْيَٰهُمْ إِنَّ ٱللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى ٱلنَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَٰتِلُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَّن ذَا ٱلَّذِى يُقْرِضُ ٱللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَٰعِفَهُۥ لَهُۥٓ أَضْعَافًا كَثِيرَةً ۚ وَٱللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٤٥﴾﴾ [سورة البقرة:٢٤٣-٢٤٥].

(क्या आपने उनकी दशा पर विचार नहीं किया, जो अपने घरों से मौत के भय से निकल गये, जबकि उनकी संख्या हज़ारों में थी, तो अल्लाह ने उनसे कहा कि मर जाओ, फिर उन्हें जीवित कर दिया। वास्तव में, अल्लाह लोगों के लिए बड़ा उपकारी है, परन्तु अधिकांश लोग

कृतज्ञता नहीं करते। और तुम अल्लाह (के धर्म के समर्थन) के लिए युध्द करो और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनता-जानता है। कौन है, जो अल्लाह को अच्छा उधार देता है, ताकि अल्लाह उसे उसके लिए कई गुना अधिक कर दे? और अल्लाह ही थोड़ा और अधिक करता है और उसी की ओर तुम सब फेरे जाओगे)।

अल्लाह तआला अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से संबोधित करते हुए बनी इसराईल के एक विशेष हालात का वर्णन करर रहा है: ﴿أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ﴾ "क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो मौत के डर से अपने घरों से निकल गए थे जबकि वे हजारों थे"।

यह संबोधन विशेष रूप से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किया गया है, लेकिन इसके साथ-साथ यह ईमान वालों और उन सभी लोगों के लिए भी है जो अल्लाह का यह कलाम सुनते हैं। यदि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कोई बात कही जाती है, तो सामान्यतः उसका अर्थ उनके साथ मौजूद सभी लोगों को शामिल करना होता है, सिवाय उन विशेष मामलों के जो केवल उनके लिए हों।

वाक्य ﴿أَلَمْ تَرَ﴾ "क्या तुमने नहीं देखा" अल्लाह तबारक व तआला की ओर से एक समाचार संबंधी प्रश्न है, जिसमें उन लोगों की स्थिति को स्पष्ट किया गया है जो मौत के डर से अपने घरों से निकल गए थे, महामारी के कारण जो उनमें से कुछ को लगी, और उनके बीच फैल गई, या उनके दुश्मनों के आक्रमण के कारण। इस के लाभों में से एक यह है कि ﴿أَلَمْ تَرَ﴾ "क्या तुमने नहीं देखा" का मतलब है "क्या तुम्हें उन लोगों की खबर नहीं मिली"।

﴿أَلَمْ تَرَ﴾ "अलम तर" का अर्थ है "क्या आपने उन लोगों की खबर नहीं सुनी?" जब अल्लाह तआला अपने बंदे या अपने बंदों से "अलम तर" कहकर सवाल करता है, तो उसका समाचार सच्चाई के आधार पर वैसा ही होता है जैसे कि संबोधित व्यक्ति ने उसे अपनी आँखों से देखा हो।

﴿وَهُمْ أُلُوفٌ﴾ "वे हजारों की संख्या में थे" का अर्थ है कि उनकी संख्या हजारों की गुणक संख्या में थी, जिस का मतलब यह है कि एक बहुत बड़ी भीड़ थी।

यह लोग बनी इस्राईल के थे, जो अपनी बस्ती को छोड़कर भाग गए थे क्योंकि वहां एक घातक महामारी फैल गई थी। वे मौत से डरकर भागे थे, जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿حَذَرَ ٱلۡمَوۡتِ﴾ "मौत के डर से", अर्थात मौत से बचने की कोशिश में।[1] लेकिन अल्लाह तआला ने अपनी मर्जी से उन्हें उस मौत का शिकार बना दिया, जिससे वे बचने की कोशिश कर रहे थे। इससे यह साबित होता है कि "सावधानी, तक़दीर को बदल नहीं सकती"। चाहे इंसान कितनी भी कोशिश कर ले, अगर अल्लाह ने किसी के बारे में कोई फैसला कर लिया है, तो वह उससे बच नहीं सकता। जो व्यक्ति इस बात को समझता है, उसके दिल में सुकून और इत्मीनान आ जाता है। उसे यकीन हो जाता है कि सब कुछ अल्लाह की मर्जी और हुक्म से होता है। वह यह जान लेता है कि साधन और उपाय सिर्फ अल्लाह की इजाज़त से ही काम करते हैं। यह सभी परिस्थितियों और हालात में लागू होता है, चाहे वह बीमारी का इलाज हो, गरीबी हो या अमीरी। इंसान का अमीर होना उसकी गरीबी को नहीं रोक सकता और उसकी गरीबी, अमीरी में बदल सकती है, यदि अल्लाह तआला ऐसा चाहता है।

﴿فَقَالَ لَهُمُ ٱللَّهُ مُوتُواْ﴾ "फिर अल्लाह ने उनसे फ़रमाया: मर जाओ", और वे सभी मर गए। जब अल्लाह ने उन्हें फिर से जीवित करना चाहा, तो उन्हें जीवित कर दिया, जैसा कि फ़रमाया: ﴿ثُمَّ أَحۡيَٰهُمۡۚ﴾ "फिर उन्हें जीवित किया" अतः प्रत्येक मामला अल्लाह ही के हाथ में है।

यह घटना यह सिखाने के लिए नहीं है कि इंसान अपनी तरफ से किसी समस्या से बचने के उपाय छोड़ दे। अल्लाह का तरीका यह है कि वह बुराई और नुकसान से बचने के लिए एहतियात बरतने का हुक्म देता है। उदाहरण के तौर पर, जिहाद करना एक जरूरी उपाय है। लेकिन इस घटना से यह संदेश दिया गया है कि अल्लाह जो चाहे वही होता है। इंसान को यह यकीन होना चाहिए कि अल्लाह के फैसले के आगे कोई उपाय कारगर नहीं हो सकता। इससे एक मोमिन को मानसिक शांति और दिली इत्मीनान मिलता है। वह सही साधनों का उपयोग करता है, लेकिन यह जानता है कि वास्तविक प्रभाव केवल अल्लाह की मर्जी से ही होता है। यह विश्वास उसकी आस्था को मजबूत करता है और उसे हर स्थिति में सुकून और संतोष प्रदान करता है।

और अल्लाह के रास्ते में लड़ाई करना, यह कारणों को अपनाने में से है, चाहे वह आक्रमण के लिए हो या रक्षा के लिए। और विजय केवल कारणों से नहीं होती, बल्कि अल्लाह की शक्ति, उसकी इच्छा और उसकी मदद से होती है। चाहे कारण कुछ भी हो, वे अल्लाह की इच्छा को नहीं बदल सकते।

---

(1) तफ़सीर की किताबों में उल्लेख किया गया है कि महामारी के डर ने उन्हें (उनकी बस्तियों से) बाहर निकलने पर मजबूर किया। यह व्याख्या इब्न -ए- कसीर की "तफ़सीर अल-क़ुरआन अल-अज़ीम" और क़ुर्तुबी की "अल-जामेउ लि-अहकामिल-क़ुरआन" में आयत के संदर्भ में पाई जाती है।

फिर अल्लाह ने उन पर और अपने अन्य प्राणियों पर अपनी कृपा का वर्णन किया, जैसा कि उसने कहा: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَذُو فَضۡلٍ عَلَى﴾ "निस्संदेह, अल्लाह लोगों पर बड़ा अनुग्रह करने वाला है।" अल्लाह ने उन्हें मौत के बाद जीवित किया ताकि वह उन्हें अपनी कृपा दिखा सके, और उन्हें बुराई से बचा सके। अगर कोई व्यक्ति अपने जीवन की यात्रा पर ध्यान दे, तो वह देखेगा कि अल्लाह ने उसे कई बुराइयों से बचाया है, चाहे वह किसी कारण से हो या अचानक से, या उसे बाद में पता चला हो। और कई बार ऐसा होता है कि विपत्ति उसके पास से गुजर जाती है या वह उसे बिना किसी नुकसान के पार कर लेता है, या वह उसे महसूस नहीं करता। और कई बार वह किसी बीमार व्यक्ति के संपर्क में आता है और उसे कुछ नहीं होता। और कई बार उसके सामने या उसके बाद कोई घातक चीज गिरती है और अल्लाह उसे बचा लेता है। यह सब अल्लाह की कृपा और अनुग्रह है, लेकिन अधिकांश लोग इसके लिए कृतज्ञ नहीं होते, जैसा कि अल्लाह ने कहा: ﴿وَلَٰكِنَّ أَكۡثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَشۡكُرُونَ﴾ "लेकिन अधिकांश लोग कृतज्ञ नहीं होते।" इससे यह पता चलता है कि बहुत कम लोग अपने रब के प्रति कृतज्ञ होते हैं। यह विश्वासियों को अल्लाह की अनगिनत कृपाओं के लिए कृतज्ञता और प्रशंसा करने के लिए प्रेरित करता है, चाहे वे उन्हें जानते हों या न जानते हों।

इस घटना से मिलने वाले लाभों में से एक यह है कि यह ईमान वाले के दिल में विपत्तियों और कठिनाइयों के सामने दिलेरी और साहस का बीज बोता है। इसके परिणामस्वरूप, वह इन परिस्थितियों का सामना डर और घबराहट के बिना करता है, जो उसकी ताकत और दृढ़ता को कमज़ोर कर सकती है। न ही वह इतनी बेचैनी में पड़ता है कि उसे गुस्से में ऐसी चीज़ों तक ले जाए जो अल्लाह तआला को नाराज़ कर सकती हैं।

सहाबी और "अल्लाह की तलवार," ख़ालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हु), ने युद्धों में अग्रिम पंक्ति में हिस्सा लिया। लेकिन वह किसी भाले की चोट या तलवार की वार से नहीं मरे। वह कहते थे: "मैंने इतने युद्ध लड़े हैं, और मेरे शरीर का कोई हिस्सा ऐसा नहीं है जहां तलवार का वार या तीर की चोट न हो, और देखो, मैं अपने बिस्तर पर मर रहा हूं, जैसे ऊंट मरता है, तो कायरों की आँखें न सोएं"।[1] यह घटना ईमान वाले को युद्धभूमि में स्थिरता और विश्वास प्रदान करती है, जहाँ वह इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ आने वाले हर बुराई को रोकने के लिए खड़ा होता है। यह अल्लाह की राह में जिहाद की हौसला-अफ़ज़ाई (प्रोत्साहन) करता है।

(1) सियरु आलाम अन् नुबला, लेखकः ज़हबी (1/ 382)।

इसीलिए इस आयत के बाद आने वाली आयत में अल्लाह तआला ने अपने रास्ते में लड़ने का आदेश दिया: ﴿وَقَٰتِلُواْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ﴾ "और अल्लाह की राह में युद्ध करो"। इस आदेश का उद्देश्य ईमान वाले के दिल में साहस का संचार करना है और यह समझाना है कि अल्लाह की राह में जिहाद और संघर्ष से भागना और मौत के डर से पीछे हटना किसी भी तरह उचित नहीं है। जैसा कि उन लोगों के साथ हुआ जो मौत से बचने के लिए भागे, लेकिन फिर भी मौत ने उन्हें आ दबोचा, जैसा कि पिछले किस्से में बताया गया है।

हिंदी अनुवाद:

अल्लाह तआला के इस कथन ﴿فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ﴾ (अल्लाह की राह में) से तौह़ीद (एकेश्वरवाद) और केवल अल्लाह के लिए इखलास (निष्ठा) का पक्ष स्पष्ट होता है। इसका अर्थ है कि जिहाद केवल अल्लाह की राह में ही होना चाहिए, न कि किसी अन्य उद्देश्य के लिए। इमाम मालिक रह़िमहुल्लाह ने फ़रमाया: "अल्लाह की राहें अनेक हैं, और हर वह राह, जिस पर, जिसके लिए या जिसमें युद्ध किया जाए, वह अल्लाह की राह है। सबसे महान राह इस्लाम का धर्म है"।[1] ﴿فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ﴾ का अर्थ है वह मार्ग जो अल्लाह की प्रसन्नता तक ले जाए, जिनमें से एक मार्ग उसकी राह में जिहाद भी है।

इसके बाद आयत का समापन एक महान निर्देश और महत्वपूर्ण बयान के साथ होता है: ﴿وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ "और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला है।" इसमें अल्लाह तआला ने अपने बंदों को यह बताया कि वह उनकी हर बात, चाहे वह जिहाद से संबंधित हो या किसी अन्य मामले से, सुनता और जानता है। इस कुरआनी संदर्भ में यह चेतावनी भी शामिल है कि अल्लाह की व्यापक निगरानी और ज्ञान से कोई भी बच नहीं सकता। साथ ही, यह आदेश भी दिया गया है कि जो ज्ञान उन्हें प्रदान किया गया है, उसके अनुसार कार्य करें। ﴿وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ "और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला है"। इससे अल्लाह की सुंदर नामों और गुणों का ज्ञान प्राप्त करने और उनके महत्व को समझने का निर्देश मिलता है, जो व्यक्ति को उसकी दुनिया और धर्म दोनों में भलाई की ओर ले जाता है।

चूंकि अल्लाह की राह में जिहाद के लिए धन की आवश्यकता होती है, जैसे हथियार, सैनिकों का भोजन, पानी, वस्त्र और अन्य अनिवार्य संसाधन, अतः अल्लाह तआला ने इनफाक (दान) के लिए प्रोत्साहित किया। सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है: ﴿مَّن ذَا ٱلَّذِي

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 154)।

﴿يُقْرِضُ ٱللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا﴾ "जो अल्लाह को अच्छा उधार देता है?" यह शैली दान देने के लिए उत्साह और प्रोत्साहन की है। इसका मतलब यह है कि दानकर्ता खुद बंदा है और इस दान का प्रतिफल देने वाला अल्लाह तआला है। अल्लाह ने इस दान को "قَرْضًا حَسَنًا अच्छा कर्ज" कहा। इसका मतलब है कि यह दान सच्चे इरादे और निष्ठा से किया गया हो। "حَسَنًا अच्छा" शब्द में अच्छाई की हर विशेषता समाहित है, जैसे निय्यत, इखलास, मात्रा, प्रकार, और दिल की पवित्रता। यह हर उस चीज़ के विपरीत है जो अच्छे के खिलाफ हो।

फिर अल्लाह तआला दान देने वाले को पुरस्कृत करने की मात्रा को स्पष्ट करता है: ﴿فَيُضَٰعِفَهُۥ لَهُۥٓ أَضْعَافًا كَثِيرَةً﴾ "तो उसे कई गुना बढ़ा देगा", इसे एक गुना, दो गुना, या तीन गुना में सीमित नहीं किया, बल्कि कई बार, जिसे केवल अल्लाह तबारक व तआला ही गिन सकते हैं। इससे यह शिक्षा मिलती है कि इंसान को दान करते समय उदारता और दिल खोलकर देना चाहिए। साथ ही, दानकर्ता को यह भी चाहिए कि वह जिसने उससे कर्ज मांगा हो, उसके साथ भी भलाई और सदाचार का व्यवहार करे। यह अल्लाह तआला की दया और कृपा का तरीका है।

इसके बाद अल्लाह तआला आयत के समापन में कुछ महान विश्वास (अकीदा) से संबंधित बातें और उनके प्रभाव को जीवन में शांति और स्थिरता के रूप में स्पष्ट करता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَٱللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ﴾ (और अल्लाह ही तंगी करता है और फैलाता है, और उसी की ओर लौटकर जाना है) इससे स्पष्ट होता है कि रोज़ी केवल अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है, उसके लिए तंगी करता है और जिसे चाहता है, उसे विस्तारित करता है। ऐसा वह परीक्षा और परीक्षा के रूप में करता है। यह अवधारणा ईमान वाले व्यक्ति को अपने विश्वास में मज़बूती देती है। वह अपने रब पर भरोसा करता है, उसी से रोज़ी की वृद्धि और बरकत की दुआ करता है, और अल्लाह से प्रार्थना करता है कि वह उसे दी गई तंगी या फैलाव पर संतुष्टि प्रदान करे। इस बात का ज्ञान कि अल्लाह जो चाहता है, वही करता है और जो भलाई होती है, वह अल्लाह के हुक्म से होती है, इंसान को आत्मिक शांति और अल्लाह के फैसलों पर संतोष प्रदान करता है। इस विश्वास का असर व्यक्ति के आचरण में भी दिखता है: यदि अल्लाह उसकी रोज़ी को विस्तारित कर दे, तो वह विनम्रता और दानशीलता अपनाता है। यदि रोज़ी तंगी में हो, तो वह धैर्य रखता है और शिकायत से बचता है। आयत का समापन एक प्रेरणादायक नसीहत के साथ होता है: ﴿وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ﴾ (और उसी की ओर लौटकर जाना है) यह दुनिया के अंत और मृत्यु के बाद अल्लाह की ओर लौटने की पुष्टि करता है। उस समय अल्लाह हर व्यक्ति का हिसाब लेगा और उसे उसके कर्मों के आधार पर बदला देगा। इस नसीहत से यह शिक्षा मिलती है कि ईमान वाला व्यक्ति अच्छे कर्मों

की ओर प्रवृत्त होता है और बुरे कामों से बचता है। यह उसे भलाई के रास्ते पर आगे बढ़ने और बुराई से दूर रहने के लिए प्रेरित करता है।

इससे यह भी स्पष्ट होता है कि किसी भी उपदेशक, मार्गदर्शक या शिक्षक को क़ुरआन के उन संकेतों को लोगों के सामने लाना चाहिए जो उन्हें भलाई की ओर ले जाएं, बुराई से बचाएं, और उनमें अच्छे गुण और नैतिकता विकसित करें। और अंततः हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह, सारे जहानों के रब के लिए है।

﴿أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلْمَلَإِ مِنۢ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ مِنۢ بَعْدِ مُوسَىٰٓ إِذْ قَالُوا۟ لِنَبِىٍّ لَّهُمُ ٱبْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَٰتِلْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۖ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِن كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلْقِتَالُ أَلَّا تُقَٰتِلُوا۟ ۖ قَالُوا۟ وَمَا لَنَآ أَلَّا نُقَٰتِلَ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِن دِيَٰرِنَا وَأَبْنَآئِنَا ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ ٱلْقِتَالُ تَوَلَّوْا۟ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌۢ بِٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٢٤٦﴾﴾

[سورة البقرة:٢٤٦]

((हे नबी!) क्या आपने बनी इस्राईल के प्रमुखों के विषय पर विचार नहीं किया, जो मूसा के बाद सामने आया? जब उसने अपने नबी से कहाः हमारे लिए एक राजा बना दो। हम अल्लाह की राह में युध्द करेंगे, (नबी ने) कहाः ऐसा तो नहीं होगा कि तुम्हें युध्द का आदेश दे दिया जाये तो अवज्ञा कर जाओ? उन्होंने कहाः ऐसा नहीं हो सकता कि हम अल्लाह की राह में युध्द न करें। जबकि हम अपने घरों और अपने पुत्रों से निकाल दिये गये हैं। परन्तु, जब उन्हें युध्द का आदेश दे दिया गया, तो उनमें से थोड़े के सिवा सब फिर गये। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँति जानता है)।

और यह एक अन्य कहानी है, जो आस्तिकों के हौसले को उनके दुश्मनों का सामना करने के लिए बुलंद करती है।

अल्लाह तआला कहता है: ﴿أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلْمَلَإِ مِنۢ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ مِنۢ بَعْدِ مُوسَىٰٓ إِذْ قَالُوا۟ لِنَبِىٍّ لَّهُمُ ٱبْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَٰتِلْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۖ﴾ ((हे नबी!) क्या आपने बनी इस्राईल के प्रमुखों के विषय पर विचार नहीं किया, जो मूसा के बाद सामने आया? जब उसने अपने नबी से कहाः हमारे लिए एक राजा बना दो। हम अल्लाह की राह में युध्द करेंगे) अल्लाह तबारक व तआला अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को और आस्तिकों को और जो भी क़ुरआन सुनता है तथा उस की आयतों उस तक पहुँचती है, बनू इस्राइल के एक समूह की कहानी बताता है, जो मूसा अलैहिस्सलाम के बाद के समय की है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह तआला ने मूसा और ईसा अलैहिमस्सलाम के बीच अन्य नबियों को भी भेजा।।

उन्होंने अपने नबी से अनुरोध किया कि उनके लिए एक नेता नियुक्त करें, ताकि वे उसके आदेश के अनुसार सेना का नेतृत्व कर सकें, अल्लाह तआला के रास्ते में लड़ने के उद्देश्य से। क़ुरआन के महान पाठ ने ध्यान आकर्षित करने और उसे केंद्रित करने के शैली में इस बात का वर्णन किया, एक सवाल के रूप में कि इस्राइल के लोगों की स्थिति क्या थी, जिसने आपको बताया कि आपने उसे देखा था, जिसने हर चीज़ के निर्माता और स्वामी ने बताया, तो उसकी खबर एक सच्चाई है जिसमें कोई संदेह नहीं है। यह ऐसा है जैसे किसी ने उसे स्वयं देखा हो।

इस के लाभों में से एक यह है कि इसका मतलब "क्या तुम्हें उन लोगों की खबर नहीं मिली" है।

और उनके कथन में ﴿ٱبۡعَثۡ لَنَا مَلِكٗا نُّقَٰتِلۡ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِۖ﴾ "हमारे लिए एक राजा नियुक्त करो ताकि हम अल्लाह के रास्ते में लड़ सकें", उद्देश्य और अनुरोध का उद्देश्य स्पष्ट होता है। उद्देश्य उनके लिए एक नेता नियुक्त करना है, अल्लाह तआला के रास्ते में लड़ने के उद्देश्य से, जो युद्ध में नेता और नेता की महत्वपूर्णता को स्पष्ट करता है, क्योंकि नेतृत्व की महत्वपूर्णता है, जिसका अनुसरण अनुयायी करते हैं। और एक नेता के चारों ओर एकता की महत्वपूर्णता, और यह कि वह इस मामले में विशेषज्ञ हो, ताकि उद्देश्य पूरा हो सके। और यह युद्ध के मामले में और अन्य पेशेवर, सामाजिक, और प्रशासनिक समूहों में प्राथमिकताओं में से एक है। फिर उन्होंने भी उद्देश्य और मार्ग को स्पष्ट किया जिस पर वे एकत्र होते हैं और वह है ﴿نُّقَٰتِلۡ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ﴾ "हम अल्लाह के रास्ते में लड़ें"। उद्देश्य को निर्धारित करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह कार्य दल के लिए संलग्न होता है, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, और चाहे वह समूह छोटा हो या बड़ा। लेकिन उनके नबी अलैहिस्सलाम ने इस अनुरोध के लिए उनसे पुष्टि करना चाहा, ताकि वे कुछ निर्धारित न करें और फिर वे उससे मुंह मोड़ लें: ﴿قَالَ هَلۡ عَسَيۡتُمۡ إِن كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلۡقِتَالُ أَلَّا تُقَٰتِلُواْ﴾ "क्या ऐसा हो सकता है कि अगर तुम्हें लड़ाई लिखी गई हो तो तुम लड़ाई न करो?"। इससे पता चलता है और यह बताता है कि मामले की पुष्टि करना महत्वपूर्ण है, और समूह के सामने संभावना को रखना, ताकि सही जानकारी के आधार पर निर्णय लिया जा सके। शब्द ﴿هَلۡ عَسَيۡتُمۡ﴾ "क्या ऐसा हो सकता है" संभावना का एक सवाल है, जिससे पुष्टि की जाती है कि अगर अल्लाह तआला की ओर से उन पर लड़ाई लिखी गई हो, तो इसमें यह अर्थ है कि उनके लिए चिंता है कि अगर लड़ाई उन पर अनिवार्य की गई हो तो वे लड़ाई नहीं करेंगे: ﴿هَلۡ عَسَيۡتُمۡ إِن كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلۡقِتَالُ أَلَّا تُقَٰتِلُواْ﴾ (ऐसा तो नहीं होगा कि तुम्हें युध्द का आदेश दे दिया जाये तो अवज्ञा कर जाओ?)

वे अल्लाह तआला के आदेश से पीछे हट सकते हैं: ﴿أَلَّا تُقَٰتِلُواْ﴾ "तुम लड़ाई न करो"।

और उनके नबी के कथन में ﴿إِن كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلْقِتَالُ﴾ "अगर तुम्हारे ऊपर लड़ाई लिखी गई हो" इसका प्रमाण है कि वह स्वयं से उन्हें लड़ाई की अनुमति नहीं देते, बल्कि अल्लाह तआला की ओर से जिहाद की अनुमति लेते हैं: ﴿إِن كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلْقِتَالُ﴾ "अगर तुम्हारे ऊपर लड़ाई लिखी गई हो"। जो इसे अनिवार्य करता है वह अल्लाह तआला है, क्योंकि ﴿كُتِبَ﴾ "लिखा गया" का अर्थ है अनिवार्य। उन्होंने अल्लाह तआला के रास्ते में लड़ाई न करने का कारण नकारा, और लड़ाई की इच्छा का कारण प्रस्तुत किया: ﴿قَالُوا۟ وَمَا لَنَآ أَلَّا نُقَـٰتِلَ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ﴾ (उन्होंने कहाः ऐसा नहीं हो सकता कि हम अल्लाह की राह में युध्द न करें) उन्होंने अल्लाह तआला के रास्ते में लड़ाई न करने के कारण को नकारा, फिर उन्होंने एक मजबूत कारण प्रस्तुत किया जो लड़ाई की ओर प्रेरित करता है, और वह है: ﴿وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِن دِيَـٰرِنَا وَأَبْنَآئِنَا﴾ (जबकि हम अपने घरों और अपने पुत्रों से निकाल दिये गये हैं) उन्हें उनके घरों और उनके बच्चों से निकाल दिया गया था, जो लड़ाई के लिए मजबूत कारणों को दर्शाता है। इससे यह रुकावट दूर हो जाती है कि उनके लिए एक राजा नियुक्त किया जाए, जिसके अधीन वे लड़ सकें और जिसकी अगुवाई में उनकी बातें और सलाह एकजुट हो जाएं। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि निर्णय के लिए उन कारणों की जांच और पुष्टि करना कितनी महत्वपूर्ण है, जिन पर यह आधारित होता है, ताकि वह निर्णय प्रभावी और उचित हो। इसके अलावा, एक नेता के अस्तित्व में विचारों और शब्दों की एकता की महत्वपूर्णता भी स्पष्ट होती है, जिसे वे स्वीकार करें और जिसके चारों ओर एकजुट हों।

और फायदों में से एक यह भी है: बात को इस प्रकार क्रमबद्ध करना कि मना करने को नकार कर इसके कारणों या आवश्यक कारकों को स्पष्ट किया जाए। यह शैली बयान की सटीकता और शब्दों के अनुक्रम की अत्यधिक सुंदरता को दर्शाती है।

फिर जब उन के ऊपर युद्ध अनिवार्य किया गया तो ﴿فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ ٱلْقِتَالُ تَوَلَّوْا۟ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ﴾

(परन्तु, जब उन्हें युध्द का आदेश दे दिया गया, तो उनमें से थोड़े के सिवा सब फिर गये) इसका परिणाम यह हुआ कि उनके नबी अलैहिस्सलाम ने उनसे जो पुष्टि ली थी, उसके विपरीत आचरण किया। अधिकांश ने मुँह मोड़ लिया, और थोड़े लोग ही बचे, जिन्होंने आदेश को सही रूप में पहचाना, जैसा कि आगे उल्लेख किया जाएगा, इन शा अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा)। यह संभव है कि इस घटना ने कमजोर और भयभीत लोगों को अलग कर दिया हो, जिससे बचे हुए थोड़े लोगों की ईमानदारी और ताकत स्पष्ट हो गई हो। इसमें आस्तिकों के लिए

यह सबक है कि वे उन लोगों की तरह न बनें जिन्होंने पीठ फेर ली, बल्कि उन लोगों की तरह बनें जिन्होंने डटे रहे, और उनसे प्रेरणा लें।

इससे यह भी स्पष्ट होता है कि सच्चाई का माप संख्या नहीं है, बल्कि सत्य का अनुसरण है, चाहे संख्या कम ही क्यों न हो। जैसे अल्लाह तआला का फरमान है: ﴿وَٱللَّهُ عَلِيمُۢ بِٱلظَّٰلِمِينَ﴾ (और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँति जानता है) यह इस बात को स्पष्ट करता है कि अल्लाह ज़ालिमों के द्वारा किए गए ज़ुल्म से अवगत है, जो उनके लिए एक चेतावनी है। इसके साथ-साथ यह भी शिक्षा दी जाती है कि इस उम्मत को अपने नबी के साथ एकजुट होकर खड़ा होना चाहिए और उन ज़ालिमों की तरह नहीं होना चाहिए जिन्होंने लड़ाई से मुँह मोड़ लिया, जबकि उन्होंने खुद उसे मांगा और उसकी इच्छा जताई थी। यह इस बात को भी बताता है कि जो व्यक्ति अल्लाह तआला के द्वारा लगाए गए फराइज़ से मुँह मोड़ लेता है, वह ज़ालिम है और अल्लाह तआला की सज़ा का हकदार है।

﴿وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ ٱللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًاۚ قَالُوٓاْ أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ ٱلْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِٱلْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ ٱلْمَالِۚ قَالَ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُۥ بَسْطَةً فِى ٱلْعِلْمِ وَٱلْجِسْمِۖ وَٱللَّهُ يُؤْتِى مُلْكَهُۥ مَن يَشَآءُۚ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾﴾ [سورة البقرة:٢٤٧]

(तथा उनके नबी ने कहाः अल्लाह ने 'तालूत' को तुम्हारा राजा बना दिया है। वे कहने लगेः 'तालूत' हमारा राजा कैसे हो सकता है? हम उससे अधिक राज्य का अधिकार रखते हैं, वह तो बड़ा धनी भी नहीं है। (नबी ने) कहाः अल्लाह ने उसे तुमपर निर्वाचित किया है और उसे अधिक ज्ञान तथा शारीरिक बल प्रदान किया है और अल्लाह जिसे चाहे, अपना राज्य प्रदान करे तथा अल्लाह ही विशाल, अति ज्ञानी है)।

फिर एक और दृश्य सामने आता है जो उनकी हठधर्मिता को दिखाता है: ﴿وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ ٱللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًاۚ﴾ (तथा उनके नबी ने कहाः अल्लाह ने 'तालूत' को तुम्हारा राजा बना दिया है) अर्थात, अल्लाह ने तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर दिया और तालूत को तुम्हारे लिए राजा नियुक्त किया है। लेकिन यहाँ एक और हठधर्मिता प्रकट होती है, जिसमें अक्ल को वह्य (ईश्वरीय आदेश) से ऊपर रखा जाता है, सीमित सोच, और बिना ज्ञान के निर्णय करना। ﴿قَالُوٓاْ أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ ٱلْمُلْكُ عَلَيْنَا﴾ "उन्होंने कहा: हम पर उसका शासन कैसे हो सकता है?" यह प्रश्न आपत्ति का रूप है, जो इस नियुक्ति और चुनाव पर आश्चर्य और असहमति व्यक्त करता है।

फिर उनकी आपत्ति के कारण प्रस्तुत किए जाते हैं: ﴿وَنَحۡنُ أَحَقُّ بِٱلۡمُلۡكِ مِنۡهُ﴾ "और हम उससे अधिक शासन के योग्य हैं, और उसे धन की प्रचुरता नहीं दी गई है।"

पहली आपत्ति: ﴿وَنَحۡنُ أَحَقُّ بِٱلۡمُلۡكِ مِنۡهُ﴾ "और हम उससे अधिक शासन के योग्य हैं।" यह 'अधिकार' से संबंधित है, अर्थात उनका मानना था कि शासन उनके समूह के बाहर नहीं जा सकता। शब्द " أَحَقُّ अधिक योग्य" में कई संकेत निहित हैं। उनका तात्पर्य था कि वे राजकीय अधिकार, वंश, धन, प्रतिष्ठा और उन सभी कारणों के आधार पर अधिक योग्य हैं जो किसी को यह विश्वास दिलाते हैं कि वह दूसरों की तुलना में अधिक योग्य है। यह सोच मनुष्य को अल्लाह के फैसले, हुक्म और चयन से अंधा कर देती है, यहाँ तक कि वह अच्छाई और योग्यता को भी देखने में असमर्थ हो जाता है। यह सोच क्षमता को खत्म कर देती है, इच्छाओं को कमजोर कर देती है, और संकट पैदा करती है।

दूसरी आपत्ति: ﴿وَلَمۡ يُؤۡتَ سَعَةٗ مِّنَ ٱلۡمَالِۚ﴾ "और उसे धन की प्रचुरता नहीं दी गई है।" यह इस बात को दर्शाता है कि तालूत धनवान नहीं थे और उनके अनुसार राजा के लिए धन का होना सबसे बड़ा मापदंड था। यह इस बात को दर्शाता है कि मनुष्यों के मानदंड अक्सर त्रुटिपूर्ण होते हैं, क्योंकि वे बाहरी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं और पूर्णता और संतुलन को नजरअंदाज कर देते हैं। शब्द " أَحَقُّ अधिकार" का अत्याचारपूर्ण उपयोग यह दिखाता है कि व्यक्ति अपनी संपत्तियों और अपनी सोच को ही सत्य मानने की प्रवृत्ति रखता है, चाहे वह वास्तविकता के विपरीत ही क्यों न हो। यह भी दिखाता है कि अत्याचारी लोग अपने अनुचित 'अधिकार' का दावा करके उन लोगों को दरकिनार कर देते हैं जो वास्तव में काबिल, प्रतिभाशाली, और अल्लाह तआला द्वारा विशेष क्षमताओं से संपन्न होते हैं। यह हर प्रकार के प्रशासनिक और अन्य कार्यक्षेत्रों में लागू होता है, जहाँ सही क्षमताओं और योग्यताओं के आधार पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

उनके नबी की जुबान से, अल्लाह तआला उनके आपत्ति का उत्तर देता है: ﴿قَالَ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصۡطَفَىٰهُ عَلَيۡكُمۡ وَزَادَهُۥ بَسۡطَةٗ فِي ٱلۡعِلۡمِ وَٱلۡجِسۡمِۖ وَٱللَّهُ يُؤۡتِي مُلۡكَهُۥ مَن يَشَآءُۚ﴾

((नबी ने) कहाः अल्लाह ने उसे तुमपर निर्वाचित किया है और उसे अधिक ज्ञान तथा शारीरिक बल प्रदान किया है और अल्लाह जिसे चाहे, अपना राज्य प्रदान करे) तालूत के चुनाव के पहले आधार को स्पष्ट किया गया: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ ٱصۡطَفَىٰهُ عَلَيۡكُمۡ﴾ "निस्संदेह, अल्लाह ने तुम्हें उनके ऊपर चुना है।" इसका मतलब है कि अल्लाह ने उन्हें तुममें से चुना। शब्द "चुनना" का मतलब विशेष चयन होता है, जो किसी विशेष उद्देश्य या योग्यता के आधार पर होता है, जिसे शायद मख़लूक़ नहीं समझ पाते क्योंकि उनकी सोच पर 'अधिकार' की गलत धारणा का

प्रभाव होता है। "ٱصۡطَفَىٰهُ चुनाव" का यह अल्लाह का फैसला पर्याप्त प्रमाण है, जो किसी भी आपत्ति को समाप्त कर देता है।

फिर अल्लाह तआला चुनाव के अन्य आधारों को स्पष्ट करता है: ﴿وَزَادَهُۥ بَسۡطَةٗ فِي ٱلۡعِلۡمِ﴾ (और उसे अधिक ज्ञान प्रदान किया है) ज्ञान का आधार: यह बताता है कि ज्ञान एक महत्वपूर्ण योग्यता है, विशेष रूप से ऐसे महत्वपूर्ण और बड़े मुद्दों में। ज्ञान के बिना, न तो नेतृत्व और न ही कोई बड़ा कार्य सुचारू रूप से किया जा सकता है। शारीरिक शक्ति का आधार: युद्ध और संघर्ष में शारीरिक शक्ति और मजबूती आवश्यक है। अल्लाह ने कहा: ﴿وَزَادَهُۥ بَسۡطَةٗ فِي ٱلۡعِلۡمِ وَٱلۡجِسۡمِۖ﴾ "ज्ञान और शरीर में अधिकता प्रदान की है।" यह बताता है कि उनकी शारीरिक शक्ति उनके कार्यों को प्रभावी ढंग से पूरा करने में सहायक है।

फिर, अल्लाह तआला इस मुद्दे को निर्णायक रूप से हल करता है: ﴿وَٱللَّهُ يُؤۡتِي مُلۡكَهُۥ مَن يَشَآءُۚ﴾ "और अल्लाह अपना शासन जिसे चाहता है, उसे देता है।" जैसे कि उन्होंने फ़रमाया: ﴿قُلِ ٱللَّهُمَّ مَٰلِكَ ٱلۡمُلۡكِ تُؤۡتِي ٱلۡمُلۡكَ مَن تَشَآءُ وَتَنزِعُ ٱلۡمُلۡكَ مِمَّن تَشَآءُ﴾ "कह दो: ऐ अल्लाह, राज्य के मालिक! तू जिसे चाहता है, राज्य देता है और जिससे चाहता है, छीन लेता है।"

यह स्पष्ट करता है कि अल्लाह का फैसला अंतिम है और कोई भी उसे चुनौती नहीं दे सकता। इससे यह शिक्षा मिलती है कि: जो अल्लाह द्वारा चुना गया है, उसके खिलाफ कोई विरोध नहीं होना चाहिए। आज्ञा पालन और नेतृत्व का समर्थन आवश्यक है, बशर्ते कि वह नेतृत्व अल्लाह की प्रसन्नता के अनुसार हो। प्रशासन और नेतृत्व में वंश या संपत्ति के बजाय योग्यता और काबिलियत को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। अज्ञानता के आधार पर कोई भी नेतृत्व, प्रशासन, या समाज का कार्य नहीं किया जा सकता। युद्ध और सैन्य मामलों में शारीरिक शक्ति और पूर्णता अनिवार्य होती है। अंत में, आयत इन शब्दों के साथ समाप्त होती है: ﴿وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٞ﴾ (अल्लाह ही विशाल, अति ज्ञानी है) इसका मतलब है कि अल्लाह का ज्ञान, शक्ति और अनुग्रह अनंत है। यह सिखाता है कि: अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखते हैं और अपनी असीम बुद्धिमानी से निर्णय लेते हैं। अल्लाह ने तालूत को तुम में से चुना और उन्हें राज्य प्रदान किया। किसी को भी अल्लाह के फैसले पर आपत्ति करने का अधिकार नहीं है।

﴿وَقَالَ لَهُمۡ نَبِيُّهُمۡ إِنَّ ءَايَةَ مُلۡكِهِۦٓ أَن يَأۡتِيَكُمُ ٱلتَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٞ مِّن رَّبِّكُمۡ وَبَقِيَّةٞ مِّمَّا تَرَكَ ءَالُ مُوسَىٰ وَءَالُ هَٰرُونَ تَحۡمِلُهُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَأٓيَةٗ لَّكُمۡ إِن كُنتُم مُّؤۡمِنِينَ ٢٤٨﴾ [سورة البقرة:٢٤٨]

(तथा उनके नबी ने उनसे कहाः उसके राज्य का लक्षण ये है कि वह ताबूत तुम्हारे पास आयेगा, जिसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे लिए संतोष तथा मूसा और हारून के घराने के छोड़े हुए अवशेष हैं, उसे फ़रिश्ते उठाये हुए होंगे। निश्चय यदि तुम ईमान वाले हो, तो इसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी (लक्षण) है)।

फिर उनके नबी ने उनके लिए उनके राजा के संकेत स्पष्ट किए। सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह फ़रमाता है: ﴿وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ ءَايَةَ مُلْكِهِۦٓ أَن يَأْتِيَكُمُ ٱلتَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ ءَالُ مُوسَىٰ وَءَالُ هَٰرُونَ تَحْمِلُهُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ﴾ (तथा उनके नबी ने उनसे कहाः उसके राज्य का लक्षण ये है कि वह ताबूत तुम्हारे पास आयेगा, जिसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे लिए संतोष तथा मूसा और हारून के घराने के छोड़े हुए अवशेष हैं, उसे फ़रिश्ते उठाये हुए होंगे) यह तर्क के महत्व को स्पष्ट करता है ताकि सच्चाइयों की पुष्टि की जा सके और विशेष रूप से हठधर्मियों के लिए प्रमाण स्थापित किया जा सके, ताकि उन्हें तर्क से समर्पित किया जा सके, जो स्थिरता को मजबूत करने का एक साधन है। इसी तरह, यह शब्दों को एकत्र करने और सामाजिक निर्माण को एकजुट करने में एक साधन है, और यह सकारात्मक प्रभाव और दावत में भी एक साधन है, प्रशासनिक और नेतृत्व कार्यों के निष्पादन के दौरान और इसे सत्यापित करने के लिए तर्क की आवश्यकता हो सकती है, या सर्वोत्तम विकल्पों को चुनने में।

फिर पवित्र क़ुरआनी संदर्भ ने सच्चाई और प्रमाण की पुष्टि के लिए एक तर्क और संकेत को शामिल किया।

अल्लाह तआला कहता है: ﴿وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ ءَايَةَ مُلْكِهِۦٓ أَن يَأْتِيَكُمُ ٱلتَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ ءَالُ مُوسَىٰ وَءَالُ هَٰرُونَ تَحْمِلُهُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ﴾ (तथा उनके नबी ने उनसे कहाः उसके राज्य का लक्षण ये है कि वह ताबूत तुम्हारे पास आयेगा, जिसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे लिए संतोष तथा मूसा और हारून के घराने के छोड़े हुए अवशेष हैं, उसे फ़रिश्ते उठाये हुए होंगे)

पहला संकेत: तुम्हारे पास वह ताबूत वापस आएगा जो तुमसे लिया गया था ﴿أَن يَأْتِيَكُمُ ٱلتَّابُوتُ﴾ "तुम्हारे पास ताबूत आएगा"। दूसरा संकेत: ﴿فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ﴾ उसमें सुकून और रहमत तथा शांति होगी। सुकून के आशीर्वाद के गुणों में, जो दिल में शक्ति, संतोष और खुशी पैदा करता है, स्थिरता को बढ़ाता है, और ईमान और निडरता को बढ़ाता है।

अल्लाह तआला ने अपने रसूल और मोमिनों (आस्तिकों) पर जो सुकून उतारा, जैसे कि सूरह अल-फत्ह में है: ﴿هُوَ الَّذِي أَنزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَّعَ إِيمَانِهِمْ﴾ "वही है जिसने आस्तिकों के दिलों में सुकून उतारा ताकि वे अपने ईमान के साथ ईमान में वृद्धि करें"। तथा सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है: ﴿فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ﴾ "फिर अल्लाह ने अपने रसूल और आस्तिकों पर सुकून उतारा और उन्हें संयम की बात दी"। यह एक महान आशीर्वाद है। शब्द ﴿سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ﴾ "तुम्हारे रब की ओर से सुकून" में अल्लाह तआला द्वारा उन्हें यह सुकून देने का प्रारंभिक आशीर्वाद है।

तीसरा संकेत: ﴿وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ﴾ "और मूसा और हारून के परिवार द्वारा छोड़ी गई चीजें"। मूसा की लाठी, हारून की लाठी, तोरात, मूसा और हारून के वस्त्र। चौथा संकेत: ﴿تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ﴾ "जिसे फ़रिश्ते उठाये हुए होंगे"। इब्न -ए- अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं: फ़रिश्ते ताबूत को आकाश और पृथ्वी के बीच उठाए हुए आए, यहां तक कि उसे तालूत और लोगों के सामने रखा। अल-सुद्दी कहते हैं: ताबूत तालूत के घर में प्रकट हुआ, तो उन्होंने शमऊन की नुबुव्वत और तालूत की आज्ञा को माना।[1]

यह अल्लाह तआला की महान शक्ति का संकेत देता है, और यह कि उनकी आयतें और प्रमाण हर समय स्पष्ट और शानदार होते हैं। उनके नबी ने उन्हें इस शानदार आयत की ओर निर्देशित किया, जो उन्हें उस पर और तालूत को उनके राजा के रूप में मानने का कारण बनती है। अल्लाह तआला कहते हैं: ﴿إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ﴾ (निश्चय यदि तुम ईमान वाले हो, तो इसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी (लक्षण) है) इससे यह स्पष्ट होता है कि आयतें विश्वास का कारण बनती हैं, और जो आयतों के बाद विश्वास से मुंह मोड़ता है, वह जिद्दी नकारने वाला होता है।

﴿فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُم بِنَهَرٍ فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَن لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ ۚ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۚ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ ۚ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَاقُو اللَّهِ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٢٤٩﴾﴾ [سورة البقرة:٢٤٩]

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 309)।

(फिर जब तालूत सेना लेकर चला, तो उसने कहाः निश्चय अल्लाह एक नहर द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है। जो उसमें से पियेगा वह मेरा साथ नहीं देगा और जो उसे नहीं चखेगा, वह मेरा साथ देगा, परन्तु जो अपने हाथ से चुल्लू भर पी ले, (तो कोई दोष नहीं)। तो थोड़े के सिवा सबने उसमें से पी लिया। फिर जब उस (तालूत) ने और जो उसके साथ ईमान लाये, उसे (नहर को) पार किया, तो कहाः आज हममें (शत्रु) जालूत और उसकी सेना से युध्द करने की शक्ति नहीं। (परन्तु) जो समझ रहे थे कि उन्हें अल्लाह से मिलना है, उन्होंने कहाः बहुत-से छोटे दल, अल्लाह की अनुमति से, भारी दलों पर विजय प्राप्त कर चुके हैं और अल्लाह सहनशीलों के साथ है)।

फिर यह महान आयत तालूत और उसकी सेना के एक और दृश्य की ओर बढ़ती है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُم بِنَهَرٍ﴾ (फिर जब तालूत सेना लेकर चला, तो उसने कहाः निश्चय अल्लाह एक नहर द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है) यह आयत सेना के पहले मार्ग और उनके घरों से प्रस्थान को स्पष्ट करती है, दुश्मन की दिशा में, उनके राजा तालूत के नेतृत्व में। उन्होंने उन्हें बताया कि उन्हें क्या सामना करना होगा और एक नदी के पानी के परीक्षण और परीक्षा का सामना करना होगा।

उन्होंने उन्हें बताया कि उन्हें क्या करना चाहिए: ﴿فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَن لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي﴾ (जो उसमें से पियेगा वह मेरा साथ नहीं देगा और जो उसे नहीं चखेगा, वह मेरा साथ देगा) यह बताता है कि यह एक परीक्षण है, और इच्छा शक्ति, धैर्य और सहनशीलता की परीक्षा है। जो पानी पीता है, उसकी इच्छा शक्ति पानी के सामने कमजोर हो जाती है, वह कठिनाइयों में अवज्ञा के करीब होता है। जो पानी नहीं पीता, वह आत्म-नियंत्रण और कठिनाइयों के धैर्य और सहनशीलता में सक्षम होता है। परिणामस्वरूप: जो पीता है और मेरे साथी में से नहीं है, वह मेरा हिस्सा नहीं है। यह बताता है कि साथ का समूह एक पूरी इकाई का गठन करता है, जैसे वे एक शरीर हैं।

﴿فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَن لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي﴾ "तो जिसने उससे पिया, वह मेरा नहीं और जिसने उसे नहीं चखा, वह मेरा है", और जिसने उसे नहीं चखा, उसने आदेश का पालन किया, वह मेरे साथियों में से है, वह इस संगति का हिस्सा था। शब्द "يَطْعَمْهُ चखा" का मतलब है उसे स्वाद लेना। अल्लाह तबारक व तआला ने जो लोगों को अपने हाथ से थोड़ा सा लेने की अनुमति दी थी उसे अपवाद किया: ﴿إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ﴾ (परन्तु जो अपने हाथ से चुल्लू भर पी ले, (तो कोई दोष नहीं)), और "اغْتَرَفَ मुट्ठी भर" का मतलब है हाथ से थोड़ा सा लेना, तथा इसी अरबी भाषा का शब्द "المغرفة मिग़रिफ़ा" बना है जिसका अर्थ चमचा होता

है।[1] इससे यह लाभ है कि अल्लाह जो चाहता है वह तय करता है, और मोमिन (आस्तिक) के लिए अल्लाह तआला की आज्ञा का पालन करना जरूरी है। यह परीक्षा की देखभाल के महत्व को दिखाता है। इसके महत्व का महत्व कार्य और कार्यों के अनुसार है, क्योंकि परीक्षा में जो योग्य है और जो योग्य नहीं है उसे स्पष्ट किया जाता है, और क्षमताओं में भिन्नता को स्पष्ट किया जाता है जो कुछ को अन्य लोगों की तुलना में योग्य बनाती है। नेता के लिए महत्वपूर्ण है कि वह परीक्षा में सतर्क और निगरानी करे, और यह एक प्रशासन की ताकत को हर स्थान और स्तर पर मजबूत करती है, बल्कि इससे सार्वजनिक और निजी हित भी मजबूत होते हैं, और यह हर लोगों की श्रेणी में है जिसमें दिल, दिमाग और विश्वास की भिन्नता होती है। इसी तरह आज्ञाकारिता और आदेशों और निषेधों का पालन भी इसमें शामिल है।

अल्लाह तआला का कथन: ﴿فَمَن شَرِبَ مِنۡهُ فَلَيۡسَ مِنِّي وَمَن لَّمۡ يَطۡعَمۡهُ فَإِنَّهُۥ مِنِّيٓ﴾ (जो उसमें से पियेगा वह मेरा साथ नहीं देगा और जो उसे नहीं चखेगा, वह मेरा साथ देगा), इसमें निर्णायकता का आदेश और आवश्यक जानकारी शामिल है, और जो निर्णयों पर आधारित होती है, इसी तरह स्थिति और मामले के अनुसार प्रोत्साहन भी शामिल है। शब्द "فَلَيۡسَ مِنِّي मेरा नहीं" और "مِنِّيٓ मेरा" में सच्चाई के साथियों के साथ शामिल होने का प्रोत्साहन शामिल है, और उनसे अलग होने की चेतावनी शामिल है, जो व्यक्ति को इच्छाओं का सामना करने में होता है। इसमें धैर्य और इच्छाओं से परे जाने का प्रोत्साहन भी शामिल है, और विश्वास मानव व्यवहार को नियंत्रित करता है, और उसे कठिन मामलों में सच्चाई की ओर ले जाता है, जिसमें इच्छाओं का सामना करना भी शामिल है।

यह दर्शाता है कि आस्थावान शिक्षा का महत्व है, ताकि राष्ट्र की ताकत, राज्यों की ताकत, समाज की और अधिकारों के संरक्षण के साथ व्यवस्थित प्रदर्शन हासिल हो सके। इससे यह स्पष्ट होता है कि परीक्षा और परीक्षा का पक्ष इस इंसान के साथ जुड़ा हुआ है, और अल्लाह तआला उसे परीक्षा में डालते हैं, भले ही वह आज्ञाकारिता में हो। वे कुछ लोग थे जिन्होंने लड़ाई को स्वीकार किया, और इसके साथ ही पहला कदम परीक्षा था, ताकि मुसलमान समझ सके कि परीक्षा का मतलब यह नहीं है कि अल्लाह तआला बंदे से नाराज हैं, बल्कि यह अल्लाह तआला का एक सिद्धांत है इस दुनिया के जीवन में लोगों के लिए। यह भी समझना चाहिए कि जिसे परीक्षा में डाला गया है उसे दंडित नहीं किया जा रहा है, या अल्लाह तआला से नफरत नहीं है, और आस्तिक को खुद को तैयार करना चाहिए कि अल्लाह तआला उसे परीक्षा में डाल सकते हैं, और वह अल्लाह तआला से स्वस्थ्य की प्रार्थना करता है।

---

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 165)।

फिर जब वे नदी तक पहुंचे, तो छंटनी की घटना सामने आई। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿فَشَرِبُواْ مِنۡهُ إِلَّا قَلِيلٗا مِّنۡهُمۡۚ﴾ (तो थोड़े के सिवा सबने उसमें से पी लिया) जो लोग पिए, वे अधिक थे, और यह यह दर्शाता है कि हमेशा अधिक संख्या सही नहीं होती, सही रास्ता उस पर होता है जो मार्गदर्शन का अनुसरण करता है, चाहे वे थोड़े ही क्यों न हों। बहुत कम लोग थे जिन्होंने नहीं पिया।

फिर जब वे नदी पर पहुँचे, तो फ़र्ज़ करने की स्थिति सामने आई। अल्लाह तआला कहते हैं: ﴿فَلَمَّا جَاوَزَهُۥ هُوَ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ مَعَهُۥ﴾ "तो उनमें से केवल थोड़े ही लोगों ने उससे पिया"। यह बताता और स्पष्ट करता है कि अधिकता सही नहीं हो सकती, सत्य उन्हीं के साथ है जिन्होंने मार्गदर्शन का अनुसरण किया भले ही वे कम हों। जो लोग नहीं पिए, वे कम थे।

फिर अल्लाह तआला ने उन्हें नदी पार करने और छोड़ने के बारे में बताया। अल्लाह तआला कहते हैं: ﴿فَلَمَّا جَاوَزَهُۥ هُوَ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ مَعَهُۥ﴾ "जब वह और उसके साथ आस्तिकों ने उसे पार कर लिया"। फिर दूसरी स्थिति आती है, जो और अधिक परीक्षण और जांच को प्रकट करती है, और सेना की ईमान की शक्ति का परीक्षण है, जब उन्होंने अपने दुश्मन जालूत को देखा। अल्लाह तआला कहता है: ﴿قَالُواْ لَا طَاقَةَ لَنَا ٱلۡيَوۡمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِۦۚ﴾ (तो कहाः आज हममें (शत्रु) जालूत और उसकी सेना से युध्द करने की शक्ति नहीं) यह बताता है कि उनके दुश्मनों की संख्या बहुत अधिक थी, जिसने तालूत की सेना को चौंका दिया।

इब्न -ए- अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कहा: नदी पार करने वालों में चार हजार लोग थे, जिनमें से कुछ ने पिया। जब उन्होंने जालूत और उसकी सेना को देखा, जोकि एक लाख थे, तो उनमें से तीन हजार छह सौ तथा अस्सी से कुछ ऊपर लोग वापस चले गए।[1]

इस स्थिति के सामने सेना दो हिस्सों में बंट गई: पहला हिस्सा ने कहा: ﴿لَا طَاقَةَ لَنَا ٱلۡيَوۡمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِۦۚ﴾ "आज हम जालूत और उसकी सेना के सामने कोई ताकत नहीं रखते"।

दूसरा हिस्सा: ﴿قَالَ ٱلَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَٰقُواْ ٱللَّهِ كَم مِّن فِئَةٖ قَلِيلَةٍ غَلَبَتۡ فِئَةٗ كَثِيرَةَۢ بِإِذۡنِ ٱللَّهِۗ﴾ "जो लोग मानते थे कि वे अल्लाह से मिलेंगे, उन्होंने कहा: कितनी ही छोटी संख्या वाली सेना ने अल्लाह के आदेश से बड़ी संख्या वाली सेना पर विजय प्राप्त की है"। दूसरा हिस्सा ईमान में इतना ऊपर पहुँचा कि उन्हें यकीन था कि नुसरत अल्लाह तआला की ओर से है, और यदि वे मारे गए तो वे शहीद होकर अल्लाह तआला से मिलेंगे। क्योंकि यहाँ

(2) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (1/ 166)।

यकीन का मतलब विश्वास है, यानी वे निश्चित होते हैं।[1] इससे यह स्पष्ट होता है कि ईमान स्थिरता का स्रोत है, और ईमान की कमी संदेह का स्रोत है, जो डर का कारण बनता है, अधिकता के डर के परिणामस्वरूप, मृत्यु का डर, असफलता का डर, और साहस का डर। जबकि ईमान स्थिरता की शक्ति, साहस की शक्ति, भलाई करने की शक्ति, दान देने की शक्ति, और साहस की शक्ति है। उनके कथन में: ﴿يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَٰقُوا۟ ٱللَّهِ﴾ "वे मानते थे कि वे अल्लाह से मिलेंगे", इसका मतलब है कि वे मृत्यु के बाद पुनर्जीवन में विश्वास करते थे, और वे मानते थे कि वे अल्लाह तआला से मिलेंगे, और वे मानते थे कि अल्लाह तआला उन्हें उनके रास्ते में लड़ाई के लिए पुरस्कृत करेगा। यह सामरिक, शैक्षिक, दावती, और प्रायोगिक, तथा प्रशासनिक तौर पर महत्वपूर्ण है। ईमान की शिक्षा का महत्व जो आस्तिक को ऐसी शक्ति बनाती है जो गिर नहीं सकती, टूट नहीं सकती, झुक नहीं सकती, बल्कि डर और लुभावनाओं के सामने एक स्थिर शक्ति होती है।

उनकी समझ और ईमान के विश्वास की ताकत से, उन्होंने अधिकता के साथ विजय को नहीं जोड़ा, बल्कि उन्हें यकीन था कि विजय अल्लाह तआला की मदद से होती है।

अल्लाह तआला ने उनके बारे में कहा: ﴿قَالَ ٱلَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَٰقُوا۟ ٱللَّهِ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةًۢ بِإِذْنِ ٱللَّهِ﴾ "जो लोग मानते थे कि वे अल्लाह से मिलेंगे, उन्होंने कहा: 'कितनी ही छोटी संख्या वाली सेना ने अल्लाह के आदेश से बड़ी संख्या वाली सेना पर विजय प्राप्त की है'"। उन्होंने अल्लाह तआला से संबंध बनाए रखा और उनकी ताकतवर नुसरत पर यकीन किया, जैसा कि मोमिन (आस्तिक) का विश्वास है, कि विजय और नुसरत (सहायता) अल्लाह तआला की मदद से है।

शब्द ﴿كَم مِّن فِئَةٍ﴾ "कितनी ही छोटी संख्या" का मतलब है कि छोटे संख्या वाली सेनाओं की विजय कितनी बार हुई है, यानी एक बार या दो बार नहीं, बल्कि कई बार, जिसमें छोटी संख्या वाली सेना बड़ी संख्या वाली सेना पर विजय प्राप्त करती है, और यह ﴿بِإِذْنِ ٱللَّهِ﴾ "अल्लाह के आदेश से"। यहाँ उन्होंने नुसरत को ﴿بِإِذْنِ ٱللَّهِ﴾ "अल्लाह के आदेश से" जोड़ा, जो सही समझ और विश्वास की पुष्टि करता है कि हर चीज अल्लाह तआला के आदेश से होती है।

और वाक्य ﴿بِإِذْنِ ٱللَّهِ﴾ (अल्लाह के आदेश से) एक महान विश्वास और कार्यात्मक शक्ति है, क्योंकि इसके माध्यम से मोमिन (विश्वासी) अल्लाह तआला पर भरोसा करता है,

(1) फ़त्हुल क़दीर, लेखकः शौकानी (1/ 265)।

और इसके द्वारा वह अल्लाह तआला के आदेश के परिणाम को स्वीकार करता है। जब वह कारणों को अपनाता है, तो उसे विश्वास होता है कि वह अल्लाह के आदेश से सक्षम होगा, और यदि वह कुछ ऐसा पाता है जो वह नहीं चाहता था, तो वह कहेगा कि अल्लाह तआला ने इसे अनुमति नहीं दी। अगर वह किसी चीज़ में संकोच करता है, तो वह ﴿بِإِذۡنِ ٱللَّهِۗ﴾ (अल्लाह के आदेश से) के साथ ताकत पाता है। यदि उसे किसी चीज़ से डर लगता है, तो वह अपने डर को ﴿بِإِذۡنِ ٱللَّهِۗ﴾ के साथ जीत सकता है। और यदि वह अपनी राय में पराजय महसूस करता है, तो वह यह कहकर शांति पाता है: "हर चीज़ ﴿بِإِذۡنِ ٱللَّهِۗ﴾ (अल्लाह के आदेश से) है।" और यदि वह उस चीज़ को देखता है जिसे वह पसंद करता है, तो वह ﴿بِإِذۡنِ ٱللَّهِۗ﴾ (अल्लाह के आदेश से) कहता है, और यदि उसे वह पसंदीदा चीज़ प्राप्त होती है, तो वह कहता है: " الحمد لله (अल्लाह के लिए प्रशंसा है), यह ﴿بِإِذۡنِ ٱللَّهِۗ﴾ (अल्लाह के आदेश से) प्राप्त हुआ।" तो ﴿بِإِذۡنِ ٱللَّهِۗ﴾ (अल्लाह के आदेश से) वह शक्ति बन जाती है जिससे उसका दिल हर समय और हर मामले में भर जाता है, चाहे वह जीवन के किसी भी पहलू से संबंधित हो।

फिर उन्होंने कहा: ﴿ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ﴾ (अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है)। यह उनके द्वारा सीखी गई बात का प्रमाण है, कि अल्लाह तआला धैर्य रखने वालों के लिए मददगार और सहायक हैं। वह उन्हें अपने समर्थन, सहायता, सफलता, और ताकत से साथ देते हैं। इससे यह साबित होता है कि धैर्य एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा मोमिन (विश्वासी) अल्लाह तआला की मदद प्राप्त करता है, अपनी ज़रूरतों को पूरा करने, अपने कष्टों को हल करने, और जीवन में जो भी समस्याएं आ रही हों, उनसे पार पाने के लिए।

यह साबित करता है कि वाक्य ﴿ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ﴾ (अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है) एक सिद्धांत है, जिसे विश्वासी अपनी समस्याओं के समाधान के लिए अपनाते हैं। जब उन्हें कठिनाई का सामना करना पड़े, तो वे इस वाक्य को लागू करके उस कठिनाई का सामना करते हैं: ﴿ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ﴾ (अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है)। यदि वह किसी कार्य की शुरुआत कर रहे हैं, तो वे उसे "﴿ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ﴾ के साथ आरंभ करते हैं, क्योंकि हर कार्य के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। अगर उनकी आत्मा किसी आज्ञा का पालन करने में सुस्त हो, तो वह ﴿ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ﴾ (अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है) का ध्यान करके प्रेरित होते हैं। और यदि वह कोई गलत इच्छा महसूस करते हैं, तो वह उसे रोकने के लिए ﴿ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ﴾ (अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है) का सहारा लेते हैं। यह वह शक्ति है जो उन्हें मिलती है जब वह इस वाक्य को याद करते हैं और इसके अनुसार कार्य करते हैं,

ताकि अल्लाह तआला उनके साथ हो, चाहे वह बुराई से बचने, अच्छाई को प्राप्त करने, दुख को हल करने, या आलस्य और असमर्थता को दूर करने का काम हो।

﴿وَلَمَّا بَرَزُواْ لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِۦ قَالُواْ رَبَّنَآ أَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرٗا وَثَبِّتۡ أَقۡدَامَنَا وَٱنصُرۡنَا عَلَى ٱلۡقَوۡمِ ٱلۡكَٰفِرِينَ ٢٥٠﴾ [سورة البقرة: ٢٥٠].

(और जब वे, जालूत और उसकी सेना के सम्मुख हुए, तो प्रार्थना कीः हे हमारे पालनहार! हमें धैर्य प्रदान कर तथा हमारे चरणों को (रणक्षेत्र में) स्थिर कर दे और काफ़िरों पर हमारी सहायता कर)।

फिर कुरआनी दृश्य तालूत और जालूत के बीच मुकाबले को स्पष्ट करने की ओर बढ़ता है: ﴿وَلَمَّا بَرَزُواْ لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِۦ﴾ "जब वे जालूत और उसके सैनिकों के सामने आ गए"। यह पहली बार था जब तालूत की सेनाएं युद्ध भूमि में जालूत, जो कि विशाल सैनिकों का नेता था, और उनके सैनिकों के सामने आई। उन्होंने अल्लाह तआला से मदद ली, जिसने अपनी कृपा से उन्हें अपने सामने जालूत और उसके सैनिकों के विशाल हुजूम के सामने अपने नाम का उल्लेख करने का अनुग्रह प्रदान किया: ﴿رَبَّنَآ أَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرٗا وَثَبِّتۡ أَقۡدَامَنَا وَٱنصُرۡنَا عَلَى ٱلۡقَوۡمِ ٱلۡكَٰفِرِينَ﴾ "कहने लगे, हमारे रब! हम पर सब्र की वर्षा कर और हमारे कदम स्थिर रख, और काफिरों के खिलाफ हमें जीत दे"।

उनकी प्रार्थना का पहला हिस्सा था: ﴿رَبَّنَآ أَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرٗا﴾ "हमारे रब, हम पर सब्र उंडेल दे", क्योंकि दुश्मन से सामना करने के लिए सब्र की आवश्यकता होती है, और इसी तरह हर मुश्किल का सामना करने के लिए। इस दुआ में यह संकेत है कि एक मोमिन अल्लाह तआला से सब्र की मांग करता है। उन्होंने अल्लाह तआला से सब्र मांगा, इससे यह स्पष्ट होता है कि मोमिन सब्र करता है और अल्लाह से मदद मांगता है, न कि अपनी क्षमता पर भरोसा करता है, बल्कि सीधे अल्लाह की ओर रुख करता है। इसके बाद उन्होंने अल्लाह तआला से पाँव स्थिर रखने की दुआ की: ﴿وَثَبِّتۡ أَقۡدَامَنَا﴾ "और हमारे कदम स्थिर रख"। मुश्किलों के सामने स्थिरता प्राप्त करना अत्यंत कठिन है, और यह केवल अल्लाह की मदद से ही संभव है। फिर उन्होंने अल्लाह तआला से जीत की दुआ की: ﴿وَٱنصُرۡنَا عَلَى ٱلۡقَوۡمِ ٱلۡكَٰفِرِينَ﴾ "और काफिरों के खिलाफ हमें जीत दे"। वे अल्लाह तआला से काफिरों पर विजय की प्रार्थना कर रहे थे, जिससे मु´मिन को यह सिखाया जाता है कि विजय केवल अल्लाह से ही मिलती है, हर क्षेत्र में, जिसमें युद्ध के मैदान में काफिरों पर जीत भी शामिल है। इसलिए मु´मिन को

विजय की तलाश में अपनी ताकत और क्षमता पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसे केवल अल्लाह की मदद और उसकी शक्ति पर विश्वास करना चाहिए।

यह दुआ की महत्वता को दर्शाता है, हर हालत में और हर समय। कोई भी विजय अल्लाह के बिना संभव नहीं है, कोई भी स्थिरता अल्लाह के बिना नहीं मिलती, और कोई भी सब्र अल्लाह के बिना नहीं हो सकता, न ही कोई भला अल्लाह के बिना प्राप्त किया जा सकता है, और न ही कोई बुरा अल्लाह के बिना टाला जा सकता है।

﴿ فَهَزَمُوهُم بِإِذْنِ ٱللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُۥدُ جَالُوتَ وَءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ ٱلْمُلْكَ وَٱلْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُۥ مِمَّا يَشَآءُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ ٱللَّهِ ٱلنَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ ٱلْأَرْضُ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٢٥١﴾ تِلْكَ ءَايَٰتُ ٱللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِٱلْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٢﴾ ﴾ [سورة البقرة:٢٥١-٢٥٢].

(तो उन्होंने अल्लाह की अनुमति से उन्हें पराजित कर दिया और दावूद ने जालूत का वध कर दिया तथा अल्लाह ने उसे (दावूद को) राज्य और ह़िक्मत (नुबुव्वत) प्रदान की तथा उसे जो ज्ञान चाहा, दिया और यदि अल्लाह कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा रक्षा न करता, तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती, परन्तु संसार वासियों पर अल्लाह बड़ा दयाशील है। (हे नबी!) ये अल्लाह की आयतें हैं, जो हम आपको सुना रहे हैं तथा वास्तव में, आप रसूलों में से हैं)।

फिर दृश्य क़ुरआन की आयत में ईमान वालों और काफ़िरों के बीच की लड़ाई के परिणाम की ओर बढ़ता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿ فَهَزَمُوهُم بِإِذْنِ ٱللَّهِ ﴾ (तो उन्होंने अल्लाह की अनुमति से उन्हें पराजित कर दिया), तो क़ुरआन में परिणाम की घोषणा काफ़िरों की हार के रूप में की गई है। लेकिन उनकी हार, तालूत की फौज की ताक़त की वजह से नहीं थी, क्योंकि उनकी ताक़त जालूत की फौज से न तो संख्या में, न ही साजो-सामान में समान थी, बल्कि उनकी हार ﴿ بِإِذْنِ ٱللَّهِ ﴾ थी, जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा: ﴿ فَهَزَمُوهُم بِإِذْنِ ٱللَّهِ ﴾ (तो उन्होंने अल्लाह की अनुमति से उन्हें पराजित कर दिया), क्योंकि उन्होंने अपने दुश्मन को हराने में अल्लाह तआला पर भरोसा किया था, और यह अल्लाह तआला की ताक़त और शक्ति से था, जैसा कि पिछली आयत में कहा: ﴿ قَالَ ٱلَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَٰقُوا۟ ٱللَّهِ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةًۢ بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۗ ﴾ "जो लोग मानते थे कि वे अल्लाह से मिलेंगे, उन्होंने कहा: कितनी ही छोटी संख्या वाली सेना ने अल्लाह के आदेश से बड़ी संख्या वाली सेना पर विजय प्राप्त की है"। तो नुसरत (सहायता) भेजना वाला अल्लाह ही जो सबसे ताकतवर, सबसे प्रभुत्वशाली है।

फिर अल्लाह तआला उस व्यक्ति का नाम बताते हैं जिसने जालूत को मारा: ﴿وَقَتَلَ دَاوُۥدُ جَالُوتَ﴾ "और दाऊद ने जालूत को मार डाला"। दाऊद तालूत की सेना से निकले और जालूत को मार डाला। फिर अल्लाह तआला दाऊद पर अपनी कृपा की घोषणा करता है: ﴿وَءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ ٱلۡمُلۡكَ وَٱلۡحِكۡمَةَ﴾ "और अल्लाह ने उसे राज्य और ज्ञान दिया"। अल्लाह तआला ने दाऊद को तालूत के बाद राज्य दिया और "وَٱلۡحِكۡمَةَ ज्ञान", अर्थात नबी शमवील के बाद नबी की पदवी दी।[1] अल्लाह तआला ने दाऊद को राज और नबी दोनों पदों पर नियुक्त किया। और अपनी कृपा से कहा: ﴿وَعَلَّمَهُۥ مِمَّا يَشَآءُ﴾ "और उसे वह ज्ञान दिया जो वह चाहता था"। इसका मतलब यह है कि अल्लाह ने दाऊद को वह विशेष ज्ञान दिया जो केवल उसने चाहा था। यह स्पष्ट करता है कि अल्लाह तआला ही राज्य और ज्ञान देता है, जैसा कि उसने दाऊद को राज्य और नबी का पद दिया और विशेष ज्ञान दिया।

फिर अल्लाह तआला अपनी हिकमत (तत्ज्ञान) को बयान करता है: ﴿وَلَوۡلَا دَفۡعُ ٱللَّهِ ٱلنَّاسَ بَعۡضَهُم بِبَعۡضٖ لَّفَسَدَتِ ٱلۡأَرۡضُ﴾ (और यदि अल्लाह कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा रक्षा न करता, तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती)। जैसा कि अल्लाह ने बनी इस्राइल को तालूत के साथ लड़ाई और दाऊद की बहादुरी के माध्यम से बचाया, वरना वे नष्ट हो जाते।[2] इस आयत में यह संकेत दिया गया है कि अल्लाह तआला ने किसी एक क़ौम को दूसरी क़ौम से टकराया कर उनके ज़रिए दूसरे लोगों से बुराई को दूर किया। इस से यह साबित होता है कि अल्लाह तआला की हिकमत ऐसी है कि वह किसी एक क़ौम को दूसरी क़ौम से भिड़ा कर बुराई को दूर कर देता है। हो सकता है कि लोग इस नेमत को समझें या न समझें, लेकिन मुसलमानों को चाहिए कि वह जो भी घटनाएं देख रहे हैं, उन्हें समझें, ताकि अल्लाह तआला उनके ज़रिए दूसरों से बड़ा बुरा हटाएं।

आख़िरकार आयत की तफसीर इस हिकमत की ओर इशारा करती है, जैसे कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿لَّفَسَدَتِ ٱلۡأَرۡضُ﴾ (तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती)। इस टकराव से अच्छाई का अस्तित्व बना रहता है और बुराई और भ्रष्टाचार को नष्ट किया जाता है, ताकि धरती पर अच्छाई और अच्छे लोग बरक़रार रहें। यह भी साफ़ तौर पर दिखाता है कि धरती पर बुराई उन्हीं के कारण है जो उस पर रहते हैं, और उनका सुधार उनके नेक कामों से संभव है। इस महान आयत से यह भी स्पष्ट होता है कि सत्य और असत्य के बीच का संघर्ष जारी रहता है, ताकि धर्मनिष्ठ की शक्ति और दुष्ट की बुराई से अधर्मी को नष्ट न किया जा सके।

---

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 310)।

(1) पिछला संदर्भ (1/ 310)।

अतः समस्त प्रकार की प्रशंसा तथा शुक्र (धन्यवाद) अल्लाह के लिए है जो धर्मनिष्ठों को अपने संघर्ष के तरीके बचाता हैं।

यदि मनुष्य इस अल्लाह की हिकमत को सामान्य जीवन में अपना ले, तो उसे विभिन्न जीवन की परिस्थितियों और घटनाओं में इसके रूप और सच्चाइयाँ सामने दिखाई देंगी। जो लाभ उत्पन्न करती हैं और विभिन्न जीवन क्षेत्रों में हानियों और समस्याओं को दूर करती हैं: जैसे व्यापार, चिकित्सा और इलाज, आजीविका आदि में। यह ऐसा है कि एक के द्वारा दूसरे की भलाई हो जाती है, और एक को दूसरे के द्वारा अप्रत्याशित भलाई मिलती है, और उसे ऐसी चीज़ें मिलती हैं जिनकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी। इसी तरह, अल्लाह तआला एक के द्वारा दूसरे को हानि से बचाते हैं। यह अल्लाह की असीम हिकमत है और उसकी महान योजना और चुनाव है। यह सब अल्लाह तआला की कृपा और दया से है, जैसा कि इस महान आयत में आया है: ﴿وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ ذُو فَضۡلٍ عَلَى ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾ "लेकिन अल्लाह का संसार पर महान अनुग्रह है"। अल्लाह तआला का संसार पर अनुग्रह महान और विशाल है, यदि इंसान इसे सोचता है। इससे कुछ बातें आवश्यक होती हैं: उनमें से एक अल्लाह तआला पर विश्वास और हर मामले में उसकी सहायता प्राप्त करना है। वह अपनी महान हिकमत, सर्वोच्च इच्छा, महान प्रभुत्व और अपरिहार्य शक्ति से हर चीज़ को नियंत्रित करता है। यह आस्तिक से भी अपेक्षा करता है कि वह अपने और समाजों के मामलों में विचार करे, और कैसे अल्लाह तआला संसार के मामलों को नियंत्रित करते हैं, लोगों को एक-दूसरे के द्वारा रोककर, ताकि धरती भ्रष्ट न हो जाए, दुष्टों की बुराई और धार्मिकों की क्षति से।

इस को लाभों में से एक यह है कि: इस महान आयत ने यह स्थापित किया कि अल्लाह तआला का अनुग्रह उसकी समस्त सृष्टि पर आम है: ﴿وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ ذُو فَضۡلٍ عَلَى ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾ "लेकिन अल्लाह का संसार पर महान अनुग्रह है"।

फिर अल्लाह तआला इन घटनाओं के वर्णन का उद्देश्य बताते हैं: ﴿تِلۡكَ ءَايَٰتُ ٱللَّهِ نَتۡلُوهَا عَلَيۡكَ بِٱلۡحَقِّ﴾ "ये अल्लाह की आयतें हैं, जिन्हें हम तुम्हें सत्य के साथ सुनाते हैं"।

ये आयतें जो हम तुम्हें सुनाते हैं, हे मुहम्मद, सत्य के साथ हैं, इनमें तुम्हारी नबूवत को साबित करने के लिए है: ﴿وَإِنَّكَ لَمِنَ ٱلۡمُرۡسَلِينَ﴾ "और तुम निश्चित रूप से मुरसलीन (संदेशवाहक) में से हो"। उन लोगों का उत्तर देने के लिए जो नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहते हैं: तुम संदेशवाहक नहीं हो। ये ऐसी घटनाएँ हैं जिन्हें केवल वे जानते हैं जिन्होंने उन्हें अनुभव किया है, और अल्लाह तआला के बाद नबी अज्ञानी, जो न पढ़ते थे, न लिखते थे, उन्हें बताते हैं।

इस कहानियों से स्पष्ट होता है कि यह एक दावत और शिक्षा का माध्यम है, और अपने शब्दों और सामग्री में मार्गदर्शन और चमत्कार है, जिसमें सबक और शिक्षा हैं, और अल्लाह तआला की हिकमत और महान शक्ति का वर्णन है, और उसकी रचनाओं को नियंत्रित करने के उसके तरीके। वह अपने सेवकों पर सर्वोच्च है। इससे आस्तिकों की आवश्यकता होती है कि वे क़ुरआन करीम की सामग्री को एक शिक्षा और दावत के मार्ग में उपयोग करें, और साथ ही संगठित और योजना बनाएं और विधान करें, क्योंकि इसमें महान सामग्री है, जो जीवन के हर क्षेत्र में सबसे अच्छे मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है।

﴿تِلْكَ ٱلرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ مِّنْهُم مَّن كَلَّمَ ٱللَّهُ ۖ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَٰتٍ ۚ وَءَاتَيْنَا عِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ٱلْبَيِّنَٰتِ وَأَيَّدْنَٰهُ بِرُوحِ ٱلْقُدُسِ ۗ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقْتَتَلَ ٱلَّذِينَ مِنۢ بَعْدِهِم مِّنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ ٱلْبَيِّنَٰتُ وَلَٰكِنِ ٱخْتَلَفُوا۟ فَمِنْهُم مَّنْ ءَامَنَ وَمِنْهُم مَّن كَفَرَ ۚ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقْتَتَلُوا۟ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٣﴾﴾ [سورة البقرة:٢٥٣].

(वो रसूल हैं। उनहें हमने एक-दूसरे पर प्रधानता दी है। उनमें से कुछ ने अल्लाह से बात की और कुछ को कई श्रेणियाँ ऊँचा किया तथा मर्यम के पुत्र ईसा को खुली निशानियाँ दीं और रूहुलक़ुदुस द्वारा उसे समर्थन दिया और यदि अल्लाह चाहता, तो इन रसूलों के पश्चात् खुली निशानियाँ आ जाने पर लोग आपस में न लड़ते, परन्तु उन्होंने विभेद किया, तो उनमें से कोई ईमान लाया और किसी ने कुफ़्र किया और यदि अल्लाह चाहता, तो वे नहीं लड़ते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है, करता है)।

क़ुरआन का संदर्भ अब रसूलों के एक-दूसरे से श्रेष्ठ होने के वर्णन की ओर बढ़ता है: ﴿تِلْكَ ٱلرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ مِّنْهُم مَّن كَلَّمَ ٱللَّهُ ۖ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَٰتٍ ۚ﴾ (यह रसूल हैं, हमने उनमें से कुछ को दूसरों से श्रेष्ठ बनाया है। उनमें से कुछ ऐसे हैं जिनसे अल्लाह ने बात की, और कुछ को ऊँचे दर्जे पर पहुँचाया)। अल्लाह तआला के रसूलों के बीच श्रेष्ठता (तफ़ज़ील) है, जो अल्लाह ने अपनी इच्छा और हिकमत के अनुसार प्रदान की है। यह श्रेष्ठता स्वयं रसूलों की ओर से नहीं, बल्कि अल्लाह तआला की ओर से है, जैसा कि उसने फ़रमाया: ﴿تِلْكَ ٱلرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ﴾ (हमने उनमें से कुछ को दूसरों से श्रेष्ठ बनाया) यह इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह तआला ही अपने रसूलों को विशेषताओं, क्षमताओं और चमत्कारों के साथ विशिष्ट करते हैं और उनमें से कुछ को दूसरों से श्रेष्ठता प्रदान करते हैं। इस आयत से यह भी स्पष्ट होता है कि यह श्रेष्ठता केवल अल्लाह तआला की ओर से है और इंसानों के लिए यह उचित नहीं कि वे रसूलों के बीच स्वयं तुलना या प्राथमिकता स्थापित करें। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

ने भी फ़रमाया: “नबियों के बीच तुलना न करो”(1), और “अल्लाह के नबियों के बीच किसी को प्राथमिकता न दो”।(2) अल्लाह तआला ने अपने बंदों को अपने नबियों के बीच तुलना करके इबादत करने का आदेश नहीं दिया, बल्कि यह कहा है कि उन सभी पर ईमान लाएं और यह मानें कि अल्लाह तआला ही अपनी हिकमत से उनमें से किसी को श्रेष्ठ बनाता है। यह तफ़ज़ील (श्रेष्ठता) केवल अल्लाह तआला का अधिकार है।

इस तफ़ज़ील का वर्णन आयत में इस प्रकार है: ﴿مِّنْهُم مَّن كَلَّمَ ٱللَّهُ﴾ (उनमें से कुछ से अल्लाह ने बात की)। अल्लाह तआला का किसी नबी से बात करना एक विशेषता और श्रेष्ठता है, जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, जिन्हें "कलीमुल्लाह" कहा गया। अल्लाह ने यह भी फ़रमाया: ﴿وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَٰتٍ﴾ (और कुछ को ऊँचे दर्जे पर पहुँचाया)। जैसे कि इसरा के समय, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अलग-अलग आसमानों में नबियों को उनके दर्जों के अनुसार देखा।(3) तथा अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए फ़रमाया: ﴿وَءَاتَيْنَا عِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ٱلْبَيِّنَٰتِ وَأَيَّدْنَٰهُ بِرُوحِ ٱلْقُدُسِ﴾ (और हमने मरयम के बेटे ईसा को स्पष्ट चमत्कार दिए और उन्हें रूहुल-क़ुदुस (जिब्रील) से समर्थन प्रदान किया)। अल्लाह तआला ने उन्हें उनकी नबूवत की सच्चाई प्रमाणित करने के लिए स्पष्ट चमत्कार (बय्यिनात) दिए और उन्हें रूहुल-क़ुदुस अर्थात जिब्रील अलैहिस्सलाम से समर्थन दिया।

और उन श्रेष्ठताओं में से कुछ यह हैं: हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह का ख़लील (अत्यंत प्रिय) बनाया गया, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कलीमुल्लाह (अल्लाह से बात करने वाला) का दर्जा मिला। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने बादशाहत और हिकमत (बुद्धिमत्ता) दी, उन्हें कवच बनाने का ज्ञान सिखाया। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को पक्षियों की भाषा सिखाई, जिन्नात को उनके अधीन कर दिया। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अंधों और कोढ़ियों को ठीक करने की शक्ति दी गई और उन्होंने लोगों को यह बताया कि वे क्या खाते हैं और क्या संचित करते हैं। हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मेअराज का चमत्कार दिया गया, और उन्हें इंसानों और जिन्न दोनों के लिए भेजा गया। अल्लाह ने उनकी उम्मत को श्रेष्ठता प्रदान की, उन्हें ख़ातमुन्नबीयीन (सभी नबियों को समाप्त करने वाले) बनाया, उनके हाथों से खाना बढ़ाने और उंगलियों के नीचे से पानी निकलने का चमत्कार दिया, और उनकी सहायता दुश्मनों के दिलों में भय उत्पन्न करके की।

(2) बुख़ारी (4/ 277) हदीस़ संख्या (6916)।

(3) मुस्लिम (4/ 1843-1844)।

(1) बुख़ारी (1/ 132) हदीस़ संख्या (349)।

यह सब अल्लाह तआला की ओर से है, अल्लाह तआला की ओर से यह उल्लेख और स्पष्टता यह भी सिखाती है कि अल्लाह अपने बंदों के बीच तफ़ज़ील (श्रेष्ठता) का नियम लागू करता है। जब अल्लाह तआला इंसानों में से कुछ को दूसरों पर विशेषताओं के साथ श्रेष्ठता प्रदान करते हैं, तो यह केवल अल्लाह ही का विशेष अनुग्रह है। कोई व्यक्ति अपने आप को अपनी विशेषताओं के कारण दूसरों से श्रेष्ठ नहीं मान सकता, क्योंकि यह विशेषताएं उसे स्वयं नहीं दी गईं, बल्कि अल्लाह ने उसे अपने करम से यह अनुग्रह प्रदान किया। इससे यह शिक्षा मिलती है कि सभी नेमतें केवल अल्लाह तआला की ओर से हैं और उन्हें उसी की ओर से मानना चाहिए।

और जब भी अल्लाह तआला ने अपनी ओर से कोई रसूल किसी क़ौम के पास भेजा, तो यह अनिवार्य हो गया कि वे उस पर ईमान लाएं और उसका पालन करें। यह इस कारण से था कि अल्लाह तआला ने अपने नबियों पर स्पष्ट चमत्कार और दलीलें प्रकट कीं। लेकिन अधिकांश क़ौमों ने इनकार किया और भटक गए। इस भटकाव के परिणामस्वरूप, उनके बीच मतभेद उत्पन्न हुआ, और फिर उनमें से कुछ ईमान लाए और कुछ ने कुफ्र किया। इसके कारण उनके बीच लड़ाई-झगड़े हुए।

अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقْتَتَلَ ٱلَّذِينَ مِنۢ بَعْدِهِم مِّنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ ٱلْبَيِّنَٰتُ﴾ (और यदि अल्लाह चाहता, तो वे आपस में न लड़ते, इसके पश्चात कि उनके पास स्पष्ट प्रमाण आ चुके थे)। यदि अल्लाह तआला चाहता कि वे स्पष्ट प्रमाण आने के बाद आपस में न लड़ें, तो ऐसा ही होता। क्योंकि अल्लाह की इच्छा, शक्ति और सामर्थ्य पूर्ण है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह सब कुछ उसकी सत्ता और अधिकार से बाहर नहीं है। इस प्रकार अल्लाह तआला ने अपनी पवित्र जात से हर प्रकार की कमी को दूर किया है और अपनी शक्ति और इच्छा को प्रमाणित किया है। अल्लाह तआला का फरमान है: ﴿وَلَٰكِنِ ٱخْتَلَفُوا۟ فَمِنْهُم مَّنْ ءَامَنَ وَمِنْهُم مَّن كَفَرَ﴾ (लेकिन उन्होंने मतभेद किया। अतः उनमें से कुछ ईमान लाए और कुछ ने इनकार किया)। इससे यह पता चलता है कि धर्म के मामले में मतभेद एक बुराई है, जो वैर और लड़ाई-झगड़े को जन्म देती है। यह भी स्पष्ट होता है कि धर्म में विभाजन की वजह से जो टकराव और आरोप-प्रत्यारोप होते हैं, वे कितने घातक हैं। फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقْتَتَلُوا۟﴾ (और यदि अल्लाह चाहता, तो वे आपस में न लड़ते)। और यदि अल्लाह तआला चाहते कि उनके बीच लड़ाई न हो, तो ऐसा ही होता। अल्लाह तआला ने अपनी इच्छा को प्रमाणित किया कि यदि वह चाहते कि लड़ाई-झगड़ा न हो, तो ऐसा हो सकता था। अल्लाह तआला का फरमान है: ﴿وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ﴾ (लेकिन अल्लाह वही करता है, जो वह चाहता है)। यह सब इस बात की ओर इशारा करता है कि अल्लाह तआला वही करता है जो

वह चाहता है। इस प्रकार उसने अपनी पवित्र जात से हर प्रकार की कमी को दूर कर दिया और अपनी इच्छा और पूर्ण सामर्थ्य को प्रमाणित किया। कोई भी चीज़ उसकी इच्छा के बिना नहीं होती। यदि अल्लाह तआला चाहता कि कोई चीज़ उस रूप में न हो, जिस रूप में वह है, तो वह वैसी न होती, और वैसी होती जैसी अल्लाह चाहता।

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَنفِقُواْ مِمَّا رَزَقۡنَٰكُم مِّن قَبۡلِ أَن يَأۡتِيَ يَوۡمٞ لَّا بَيۡعٞ فِيهِ وَلَا خُلَّةٞ وَلَا شَفَٰعَةٞۗ وَٱلۡكَٰفِرُونَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ٢٥٤ ﴾ [سورة البقرة:٢٥٤].

(हे ईमान वालो! हमने तुम्हें जो कुछ दिया है, उसमें से दान करो, उस दिन (अर्थातः प्रलय) के आने से पहले, जिसमें न कोई सौदा होगा, न कोई मैत्री और न ही कोई अनुशंसा (सिफ़ारिश) काम आएगी तथा काफ़िर लोग ही अत्याचारी हैं)।

फिर क़ुरआन मजीद का संदर्भ इनफ़ाक़ (दान) की प्रेरणा की ओर बढ़ता है: ﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَنفِقُواْ مِمَّا رَزَقۡنَٰكُم ﴾ ((हे ईमान वालो! हमने तुम्हें जो कुछ दिया है, उसमें से दान करो) आयत ए करीमा का प्रारंभ उस शैली के साथ होता है जिसमें नज़रें आकर्षित करने का गुण है, ताकि उस विषय को ध्यान से सुना जाए, जो उनकी आख़िरत से संबंधित है।

उनसे मुख़ातिब होते समय और उन्हें पुकारते हुए अल्लाह तआला उनके लिए महान दर्जे का वर्णन करता है और यह जताता है कि यह दर्जा अल्लाह तआला की ओर से है: ﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ ﴾ "ऐ ईमान वालों!" तो इससे बढ़कर सम्मानजनक नेमत और क्या हो सकती है? यह सब इस उद्देश्य से है कि उनका ध्यान खींचा जाए और उन्हें वह सिखाया जाए जो उनके लिए लाभकारी है। इससे शैक्षिक दृष्टि से यह भी पता चलता है कि शिक्षार्थी और संबोधित व्यक्ति को सर्वश्रेष्ठ तरीके से पुकारना चाहिए। जब अल्लाह तआला अपने बंदों को इतनी महान उपाधि के साथ बुलाते हैं, तो एक इंसान को अपने साथी इंसान के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

इसके बाद अल्लाह तआला उन्हें इनफ़ाक़ (दान) के लिए तीन प्रकार की प्रेरणा के माध्यम से प्रोत्साहित करते हैं: प्रोत्साहन - जब उन्हें ﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ ﴾ "ऐ ईमान वालों" कहकर पुकारा गया। आदेश - जब कहा गया: ﴿أَنفِقُواْ﴾ "खर्च करो"। चेतावनी - ﴿مِّن قَبۡلِ أَن يَأۡتِيَ يَوۡمٞ لَّا بَيۡعٞ فِيهِ وَلَا خُلَّةٞ وَلَا شَفَٰعَةٞ ﴾ "उस दिन (अर्थातः प्रलय) के आने से पहले, जिसमें न कोई सौदा होगा, न कोई मैत्री और न ही कोई अनुशंसा (सिफ़ारिश) काम आएगी"।

आदेश यह नहीं है कि अपने पास जो कुछ है, सब खर्च कर दिया जाए, बल्कि उस माल का एक हिस्सा खर्च करना है, जो अल्लाह तआला ने प्रदान किया है। ﴿أَنفِقُواْ مِمَّا رَزَقْنَٰكُم﴾ "उसमें से इनफ़ाक़ करो जो हमने तुम्हें दिया है।" यह अल्लाह तआला की दयालुता, उनके बेहतरीन तरीकों और उनकी हिकमत को दर्शाता है। इसमें यह भी सिद्ध होता है कि जो भी माल इंसान के पास है, वह अल्लाह तआला की कृपा और इनायत से है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿مِمَّا رَزَقْنَٰكُم﴾ "उस माल में से जो हमने तुम्हें दिया है," इस प्रकार अल्लाह तआला ने बख़्शी हुई नेमतों को अपनी ओर मंसूब किया।

और शब्द ﴿مِمَّا رَزَقْنَٰكُم﴾ से यह संकेत मिलता है कि जो कुछ भी हमने तुम्हें दिया है, वह तुम्हारा नहीं है, बल्कि उसमें से कुछ हिस्सा खर्च करना है। जैसे कि अल्लाह तआला की दया है कि उन्होंने रकम और मात्रा को निर्दिष्ट नहीं किया, बल्कि इसे खर्च करने वाले की स्थिति, उदारता, और जरूरत के अनुसार निर्धारित किया। और शब्द ﴿مِمَّا رَزَقْنَٰكُم﴾ ने सभी प्रकार के आर्थिक संसाधनों को समाहित किया है, न कि किसी एक विशेष प्रकार को। इसमें अल्लाह तआला के सभी प्रकार के आशीर्वाद और رزق को समाहित किया गया है, जैसे धन, खाना, कपड़े, जानवर, शारीरिक श्रम, या प्रतिष्ठा, सभी कुछ अल्लाह तआला की बख्शी हुई नेमतें हैं।

पवित्र है वह अल्लाह जिसने अपनी मर्जी को सबसे प्रभावी तरीके से व्यक्त किया, क्योंकि कैसे शब्द ﴿مِمَّا رَزَقْنَٰكُم﴾ ने कई फायदों और संकेतों को समाहित किया, विविधता और मात्रा में, और खर्च करने वाले की स्थिति और उस पर खर्च किए जाने वाले के हिसाब से। पवित्र है वह अल्लाह जिसने शब्दों को संक्षिप्त रूप से, महत्वपूर्ण विमर्श, सुंदर बयान, और महान रचनात्मक और उपदेशात्मक शैलियों में समेटा।

यह पवित्र आयत ईमान वाले को उदारता से खर्च करने की प्रेरणा देती है, और उसे अंतिम दिन (आखिरत) की याद दिलाती है: ﴿مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَٰعَةٌ﴾ "उस दिन (अर्थातः प्रलय) के आने से पहले, जिसमें न कोई सौदा होगा, न कोई मैत्री और न ही कोई अनुशंसा (सिफ़ारिश) काम आएगी"। यह वह दिन होगा, जब जो कुछ भी अल्लाह तआला ने इस दुनिया में अपने बंदे को दिया है, उसे खरीदने के लिए कोई भी साधन नहीं रहेगा, ताकि वे अपने लिए अच्छे कर्म, ऊँचे दर्जे, और जन्नत हासिल कर सकें, और दंड से बच सकें, और नरक से दूर हो सकें। कोई व्यापार नहीं होगा: ﴿لَّا بَيْعٌ فِيهِ﴾ "न कोई व्यापार होगा"। इसके अलावा: ﴿وَلَا خُلَّةٌ﴾ "न कोई दोस्ती" होगी, जो किसी काम की हो। यहाँ दोस्ती खत्म हो जाएगी। और: ﴿وَلَا شَفَٰعَةٌ﴾ "न कोई सिफारिश" होगी, कोई भी किसी के लिए सिफारिश नहीं

करेगा, सिवाय इसके कि अल्लाह तआला की अनुमति हो। आखिरत में इस दुनिया की वस्तुओं से लाभ उठाने के सभी तरीके समाप्त हो जाएंगे, सिवाय उस सामान के जो ईमान वाला इस दुनिया में अपनी आख़िरत के लिए जमा करेगा। यह जीवन का अवसर और व्यापार का मौका है, जिसे याद दिलाने और चेतावनी देने के रूप में प्रस्तुत किया गया है, ताकि ईमान वाला इसे अपने जीवन में संजीदगी से समझे और अपनी जिंदगी में लाभ उठाए। अल्लाह तआला इसके बदले उसे अपनी ऊँची दरजों में ले जाएगा और उसके गुनाह माफ़ कर देगा। इस आदेश में, अल्लाह तआला के क़ुदरत और हिकमत का इशारा है कि इनफ़ाक़ (दान) का कितना महत्व है, और यह कैसे दान करने वाले के लिए आख़िरत में लाभकारी है। साथ ही इस्लाम के मार्गदर्शन का यह भी इशारा है कि समाज में सहानुभूति और परस्पर सहायता के लिए इनफ़ाक़ का कितना बड़ा महत्व है, और यह दूसरों की मदद करने के लिए उत्साहवर्धक है।

फिर पवित्र आयत काफ़िरों के हालात को बयान करती है: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَٱلۡكَٰفِرُونَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ﴾ "तथा काफ़िर लोग ही अत्याचारी हैं।" यह काफ़िरों के अत्यधिक ज़ुल्म की ओर इशारा है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति अल्लाह तआला से काफ़िर होकर मिलने से बड़ा ज़ालिम नहीं हो सकता, क्योंकि उन्होंने अल्लाह तआला की नेमतों का नाश किया। वे खुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे हैं, कुफ़्र और अत्याचार करके। यह ईमान वालों को काफ़िरों के रास्ते पर चलने से सचेत करता है।

﴿ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡحَيُّ ٱلۡقَيُّومُۚ لَا تَأۡخُذُهُۥ سِنَةٞ وَلَا نَوۡمٞۚ لَّهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۗ مَن ذَا ٱلَّذِي يَشۡفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦۚ يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ أَيۡدِيهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيۡءٖ مِّنۡ عِلۡمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَۚ وَسِعَ كُرۡسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفۡظُهُمَاۚ وَهُوَ ٱلۡعَلِيُّ ٱلۡعَظِيمُ ٢٥٥﴾ [سورة البقرة: ٢٥٥].

(अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित तथा नित्य स्थायी है, उसे ऊँघ तथा निद्रा नहीं आती। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का है। कौन है, जो उसके पास उसकी अनुमति के बिना अनुशंसा (सिफ़ारिश) कर सके? जो कुछ उनके समक्ष और जो कुछ उनसे ओझल है, सब जानता है। उसके ज्ञान में से वही जान सकते हैं, जिसे वह चाहे। उसकी कुर्सी आकाश तथा धरती को समोये हुए है। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च महान है)।

फिर आती है आयतुल कुर्सी, जो अल्लाह तआला की किताब की सबसे श्रेष्ठ आयत है, जैसा कि ह़दीस़ में आया है, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उबैइ बिन कअब से पूछा: "अल्लाह की किताब में सबसे बड़ी आयत कौन सी है?" उन्होंने कहा: "अल्लाह और

उसके रसूल ही ज्यादा जानते हैं।" आपने इसे कई बार दोहराया, तो उन्होंने कहा: "आयतुल कुर्सी।" तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: "अल्लाह की क़स्म! तुम्हें यह ज्ञान मुबारक हो, हे अबु अल-मुंजिर"।[1]

आयतुल कुर्सी की शुरुआत अल्लाह तआला के इस फरमान से होती है: ﴿ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡحَيُّ ٱلۡقَيُّومُۚ﴾ इसे "अल्लाह" के नाम से शुरू किया गया, फिर उसकी तौह़ीद (एकता) को स्पष्ट किया गया, कि अल्लाह ही वह इकलौता पूज्य है, उसके सिवा कोई भी पूज्य नहीं है। शब्द "لَآ إِلَٰهَ" यह बताता है कि अल्लाह तआला के अलावा कोई भी योग्य पूजा का हक़दार नहीं है। इसका मतलब यह है कि जिसने अल्लाह तआला के अलावा किसी और की पूजा की, वह अपने रब और सृष्टिकर्ता के साथ क़ुफ़्र किया।

वाक्य ﴿لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ﴾ में केवल अल्लाह की इबादत की दिशा को निर्धारित किया गया है, और यह कहा गया है कि न धरती पर, न आसमान में कोई और पूजा के योग्य नहीं है सिवाय अल्लाह के। और वह "ٱلۡحَيُّ" है, इसका मतलब है कि बाकी सभी जीव मरने वाले हैं। उसकी जीवन की विशेषता उसे ही हासिल है, और यही कारण है कि जो भी अल्लाह तआला के अलावा पूजा जाता है, वह मर जाएगा अगर वह जीवित है, या समाप्त हो जाएगा और नष्ट हो जाएगा अगर वह निर्जीव है। कोई भी जीवन मृत्यु के बिना नहीं हो सकता, और कोई भी अस्तित्व नष्ट होने से मुक्त नहीं है, सिवाय अल्लाह तआला के।

और वह तबारक और तआला "ٱلۡقَيُّومُۚ" है, जो अपनी ओर से क़ायम है, और उसे किसी और की जरूरत नहीं है, जिसका अर्थ यह है कि हर चीज़ अल्लाह तआला पर निर्भर है, उसकी सृष्टि, विकास, गति, जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान, रोज़ी, और हर चीज़ की देखभाल उसके हाथ में है। वह सृष्टि का उत्पत्ति कर्ता है और हर प्राणी को अपनी क़ायम रखने के लिए उसकी मदद से समर्थ बनाता है।

और अल्लाह तबारक और तआला ﴿لَا تَأۡخُذُهُۥ سِنَةٞ وَلَا نَوۡمٞۚ﴾ है, अर्थात वह न तो ऊँघता होता है और न ही सोता है। यह विशेषता उसकी शक्ति, महानता, और सम्पूर्णता को दर्शाती है, क्योंकि जो सोता है या सुस्त होता है, वह कमजोरी, थकान और दबाव का शिकार होता है। यह उसकी सृष्टि की कमी को दर्शाता है। इसका मतलब है कि सृष्टि को अपने सृष्टिकर्ता की ज़रूरत है, जो अपनी महानता और भव्यता के कारण कभी भी सुस्ती या नींद का शिकार नहीं होता। अल्लाह की महानता की जय हो! और सृष्टि, सृष्टि की पूजा क्यों करेगा जो अपनी

(1) मुस्लिम (1/ 556) ह़दीस़ संख्या (810)।

इच्छाओं में कमज़ोर है और जिसे अनेक नाकामियां और कमजोरियाँ होती हैं, जबकि वह सर्वोत्तम इच्छाशक्ति वाले सृष्टिकर्ता की पूजा छोड़कर?

फिर इस महान आयत में अल्लाह तआला की विशाल सत्ता को स्पष्ट किया गया: ﴿لَّهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۗ﴾ अर्थात, जो कुछ आकाशों और धरती में है, सब अल्लाह का है। यह दर्शाता है कि सभी चीज़ें उसकी बंदगी में हैं, और बंदों को अपने मालिक के आदेश का पालन करना अनिवार्य है। इसलिए, किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह मालिकुल मुल्क, अल्लाह तआला की इच्छा के विरुद्ध कुछ करे। वह अपने साम्राज्य का मालिक है, और उसमें अपनी इच्छा के अनुसार काम करता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि मख़लूक़ अपने हर मामले में अपने मालिक पर निर्भर है—उसके अस्तित्व, भोजन, पेय, स्वास्थ्य, रोज़ी, जीवन, मृत्यु, पुनर्जीवन, और अन्य सभी चीजों में।

फिर आयत अल्लाह तआला के अपने बंदों पर महान शक्ति को दर्शाती है: ﴿مَن ذَا ٱلَّذِي يَشۡفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦۚ﴾ यह एक नकारात्मक प्रश्न है, जो अल्लाह तआला की महिमा और गौरव का बयान करता है। इसका मतलब यह है कि कौन ऐसा है जो उसकी अनुमति के बिना किसी के लिए सिफारिश कर सके? यह अल्लाह तआला के रुतबे और अधिकार की महानता का संकेत है। किसी की सिफारिश या स्थान अल्लाह तआला के समक्ष बिना उसकी अनुमति के स्वीकार्य नहीं हो सकती। यह भी स्पष्ट करता है कि उसके बंदों की कोई स्थिति या स्थान उसकी अनुमति के बिना कुछ नहीं कर सकती।

इसके बाद आयत अल्लाह तआला के ज्ञान की व्यापकता को बयान करती है: ﴿يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ أَيۡدِيهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡۖ﴾ अर्थात, अल्लाह तआला को अपनी मख़लूक़ के भविष्य और अतीत का पूर्ण ज्ञान है। मख़लूक़ को अपने भविष्य का ज्ञान नहीं होता, लेकिन अल्लाह तआला उसके हर पहलू को जानता है। इसी तरह, अल्लाह तआला ने उनके अतीत के सभी पहलुओं को भी जान रखा है, जबकि मख़लूक़ अपने अतीत के बहुत से हिस्से को भूल जाती है। और अल्लाह तआला के ज्ञान का वह हिस्सा जो वह चाहे, वही उसकी मख़लूक़ को ज्ञात होता है: ﴿وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيۡءٖ مِّنۡ عِلۡمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَۚ﴾ यह संकेत करता है कि इंसान का ज्ञान अल्लाह तआला के ज्ञान के मुकाबले बहुत सीमित है, और यह भी अल्लाह की इच्छा पर निर्भर करता है। जो भी ज्ञान मख़लूक़ को प्राप्त है, वह केवल उस ज्ञान का छोटा सा हिस्सा है जिसे अल्लाह तआला ने उन्हें जानने की अनुमति दी है। यह दर्शाता है कि बंदा अल्लाह तआला के ज्ञान का मोहताज है, चाहे वह उसकी सुरक्षा हो, उसकी समझ, उसका चिंतन, उसका सीखना, या किसी ज्ञान को सिखाना। इससे यह आवश्यक हो जाता है कि बंदा अल्लाह तआला से ही ज्ञान और समझ की

याचना करे और हर विषय में उसी की ओर रुख करे। जब वह कुछ सीखे, तो उसे यह स्वीकार करना चाहिए कि यह अल्लाह तआला के अनुग्रह और मार्गदर्शन का परिणाम है। उसे यह कहना चाहिए: "अल्लाह ने मुझे इसे समझने, इसका अर्थ निकालने, इसे याद रखने और इसका निष्कर्ष निकालने की तौफीक दी।" अगर अल्लाह तआला की कृपा और अनुग्रह न होते, तो बंदा किसी भी प्रकार के ज्ञान को प्राप्त न कर पाता—चाहे वह शरीअत का ज्ञान हो, कोई पेशा हो, व्यापार हो, या विज्ञान और ज्ञान के अन्य क्षेत्र।

आयत इस बात को संकेत प्रमाणित करती है कि मानव ज्ञान सीमित है, जितना अल्लाह ने उसे सिखाया है, जैसा कि फ़रिश्तों (स्वर्गदूतों) ने इस सूरा की शुरुआत में कहा था: ﴿قَالُوا۟ سُبْحَـٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٣٢﴾﴾ "महान है तू, हमें केवल वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है, निश्चय ही तू सर्वज्ञ और बुद्धिमान है"। और अल्लाह के कथन में: ﴿إِلَّا بِمَا شَآءَ﴾ "केवल वह जो उसने चाहा", यह बताता है कि उसके बंदों के बीच ज्ञान की मात्रा में भिन्नता है, अल्लाह तआला इस व्यक्ति के लिए एक मात्रा और प्रकार का निर्णय करता है, और दूसरों के लिए अपनी इच्छा के अनुसार निर्णय करता है। इसलिए लोग एक-दूसरे से भिन्न होते हैं, यहाँ तक कि वे एक-दूसरे की सलाह और परामर्श की आवश्यकता महसूस करते हैं, इस से सुनते हैं जो इस से भिन्न है, और एक से अधिक जो दूसरों से श्रेष्ठ होता है, जबकि मामला एक ही होता है। कभी-कभी आप छोटे व्यक्ति में वह चीज़ पा सकते हैं जो बड़े व्यक्ति में नहीं होती, और प्रारंभिक व्यक्ति में वह चीज़ पा सकते हैं जो उन्नत व्यक्ति में नहीं होती। यहां तक कि यह कहा जाता है कि: "आप नदी में वह पा सकते हैं जो समुद्र में नहीं है"। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा से सलाह ली और सहाबा ने एक-दूसरे से सलाह ली। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने कुछ सहाबा की सलाह ली, जैसे कि उहुद के दिन दुश्मनों से बाहर निकल कर युद्ध लड़ा जाए अथवा मदीना में ही रह कर।

फिर आयत अल्लाह तआला के अर्श (सिंहासन) की महानता को उजागर करती है: ﴿وَسِعَ كُرْسِيُّهُ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ ۖ﴾ (उसकी कुर्सी आकाश तथा धरती को समोये हुए है) अल्लाह का सिंहासन आकाशों और धरती पर फैला हुआ है, और वह उन्हें सुरक्षित रखता है: ﴿وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفْظُهُمَا ۚ﴾ अर्थात, उनका संरक्षण उसे थकाता या परेशान नहीं करता। यह उसकी शक्ति, सामर्थ्य और परिपूर्णता को दर्शाता है। जिसने अपनी रचना को इतनी सटीकता से सुरक्षित रखा है, उसके लिए किसी चीज़ का संरक्षण कठिन नहीं है। इससे यह पता चलता है कि मख़लूक़ को अपने हर समय और हर स्थिति में अल्लाह के संरक्षण की ज़रूरत है।

आयत के अंत में अल्लाह तआला की महानता को इस वाक्य में बयान किया गया: ﴿وَهُوَ ٱلۡعَلِيُّ ٱلۡعَظِيمُ﴾ अर्थात, अल्लाह तआला अपनी सभी मख़लूक़ पर ऊंचा और महान है। वह अपनी जगह, गुण, शक्ति और ज्ञान में उच्चतम स्थान पर है। वह "ٱلۡعَظِيمُ" है, अर्थात, सभी महानता, शक्ति और सामर्थ्य का स्वामी। यह स्पष्ट करता है कि बंदा अल्लाह तआला की महानता और शक्ति का मोहताज है, और उसे अपने हर मामले में उसी पर भरोसा करना चाहिए। बंदा अल्लाह तआला की महानता और गौरव के समक्ष अपनी कमजोरी को समझे और अपनी सीमाओं को स्वीकार करे।

﴿لَآ إِكۡرَاهَ فِي ٱلدِّينِۖ قَد تَّبَيَّنَ ٱلرُّشۡدُ مِنَ ٱلۡغَيِّۚ فَمَن يَكۡفُرۡ بِٱلطَّٰغُوتِ وَيُؤۡمِنۢ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱسۡتَمۡسَكَ بِٱلۡعُرۡوَةِ ٱلۡوُثۡقَىٰ لَا ٱنفِصَامَ لَهَاۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝٢٥٦ ٱللَّهُ وَلِيُّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ يُخۡرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِۖ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوٓاْ أَوۡلِيَآؤُهُمُ ٱلطَّٰغُوتُ يُخۡرِجُونَهُم مِّنَ ٱلنُّورِ إِلَى ٱلظُّلُمَٰتِۗ أُوْلَٰٓئِكَ أَصۡحَٰبُ ٱلنَّارِۖ هُمۡ فِيهَا خَٰلِدُونَ ۝٢٥٧﴾ [سورة البقرة:٢٥٦-٢٥٧].

(धर्म में बल प्रयोग नहीं। सुपथ, कुपथ से अलग हो चुका है। अतः, अब जो ताग़ूत (अर्थात अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे तथा अल्लाह पर ईमान लाये, तो उसने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया, जो कभी खण्डित नहीं हो सकता तथा अल्लाह सब कुछ सुनता-जानता है। अल्लाह उनका सहायक है, जो ईमान लाये। वह उनहें अंधेरों से निकालता है और प्रकाश में लाता है और जो काफ़िर (विश्वासहीन) हैं, उनके सहायक ताग़ूत (उनके मिथ्या पूज्य) हैं। जो उन्हें प्रकाश से अंधेरों की और ले जाते हैं। यही नारकी हैं, जो उसमें सदावासी होंगे)।

क़ुरआन का यह पवित्र संदर्भ इस्लाम को स्वीकार करने और उसमें प्रवेश करने की परमपावन पद्धति का वर्णन करता है, जिसे ईमान वालों को समझना आवश्यक है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿لَآ إِكۡرَاهَ فِي ٱلدِّينِۖ﴾ "धर्म में कोई बाध्यता नहीं है।" इस आयत का आरंभ उस निर्देश से हुआ है जो धर्म में किसी को जबरन लाने के मना करता है। इसके पीछे कारण यह है कि इस्लाम को अपनाने के लिए हर किसी के पास पर्याप्त कारण हैं और कोई भी इसे स्वेच्छा से अपना सकता है, क्योंकि ﴿قَد تَّبَيَّنَ ٱلرُّشۡدُ مِنَ ٱلۡغَيِّۚ﴾ "सही मार्ग गुमराही से स्पष्ट हो चुका है।"

अल-राग़िब अल-अस्फहानी ने कहा है: "रुश्द (सही मार्ग) गुमराही का विलोम है, और यही हिदायत है"।(1) और अज्ञान एक भ्रष्ट विश्वास से उत्पन्न अज्ञानता है।(2)

---

(2) अल् मुफरदात फ़ी ग़रीबिल् क़ुरआन, लेखकः अल् राग़िब अल् अस़्फ़हानी (196)।

(1) पिछला संदर्भ (369)।

इस महान आयत ने स्पष्ट किया कि इस्लाम में प्रवेश करने में बाधा डालने वाली अज्ञानता समाप्त हो गई है, क्योंकि अल्लाह का धर्म अब हर किसी के लिए स्पष्ट और स्पष्ट हो गया है कि यह अल्लाह तआला द्वारा भेजा गया धर्म है, इसमें शामिल दलीलों और प्रमाणों की वजह से, जो इसमें संदेह, अज्ञानता, और शिरक और कफ्र के विरुद्ध अज्ञानता को समाप्त करती हैं। ﴿قَد تَّبَيَّنَ ٱلرُّشۡدُ مِنَ ٱلۡغَيِّۚ﴾ सही मार्ग गलत से स्पष्ट हो गया है।

और अल्लाह तआला के कथन में: ﴿قَد تَّبَيَّنَ ٱلرُّشۡدُ مِنَ ٱلۡغَيِّۚ﴾ "सही मार्ग गलत से स्पष्ट हो गया है", यह बताता है कि जब सच्चाई प्रकट होती है, तो भ्रष्टता का विवरण सामने आता है। अन्य लोगों के लिए सत्य प्रकट होता है, और यह भी बताता है कि अच्छा उदाहरण, जो इस्लाम के मार्ग और आदर्शों का पालन करता है, भ्रष्टों को उनकी भ्रष्टता का एहसास कराता है, और वास्तविक स्थिति बात से अधिक प्रभावी होती है। और अल्लाह तआला के कथन में: ﴿لَآ إِكۡرَاهَ فِي ٱلدِّينِ﴾ "धर्म में कोई ज़बरदस्ती नहीं है", यह बताता है कि यह एक दावत की बुनियाद है, जिससे मुसलमान को इस्लाम की वास्तविकता को बात और काम में स्पष्ट करना चाहिए, बिना किसी को मजबूर किए। इस्लाम का मूल, अपने पूर्ण मार्ग और दलीलों के साथ, यह दिखाता है कि यह अल्लाह का धर्म है, इसमें शामिल प्रमाणों, दलीलों और प्रमाणों की वजह से, साथ ही इसके नैतिक और सामाजिक मार्ग, उपासना और आस्था और व्यापार के विधानों में। इसलिए इस धर्म की दावत स्पष्टीकरण और विवरण के साथ, इसमें प्रवेश करने के लिए स्वैच्छिकता, रुचि और प्रेम के लिए पर्याप्त है।

फिर अल्लाह तआला मुक्ति का रास्ता बताते हैं: ﴿فَمَن يَكۡفُرۡ بِٱلطَّٰغُوتِ وَيُؤۡمِنۢ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱسۡتَمۡسَكَ بِٱلۡعُرۡوَةِ ٱلۡوُثۡقَىٰ لَا ٱنفِصَامَ لَهَاۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ (अब जो ताग़ूत (अर्थात अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे तथा अल्लाह पर ईमान लाये, तो उसने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया, जो कभी खण्डित नहीं हो सकता तथा अल्लाह सब कुछ सुनता-जानता है)। निजात (मुक्ति) का पहला रास्ता है हर वह चीज़ का इंकार करना जिसे अल्लाह तआला के सिवा पूजा जाता है: ﴿فَمَن يَكۡفُرۡ بِٱلطَّٰغُوتِ﴾"जो कोई झूठे देवताओं का इंकार करता है"। और हर उपास्य जो अल्लाह तआला के सिवा है, वह झूठा देवता है। दूसरा है: अल्लाह तआला पर विश्वास: ﴿وَيُؤۡمِنۢ بِٱللَّهِ﴾ "और अल्लाह पर विश्वास करता है"। और उस पर विश्वास एक महान पकड़ है, जो उसके शरीअत का पालन करने की अनिवार्यता है, और इसके परिणामस्वरूप जो विश्वास प्राप्त करता है, उसने एक दृढ़ पकड़ पकड़ ली है: ﴿فَقَدِ ٱسۡتَمۡسَكَ بِٱلۡعُرۡوَةِ ٱلۡوُثۡقَىٰ لَا ٱنفِصَامَ لَهَاۗ﴾ "उसने एक दृढ़ कड़ा थाम लिया है, जिसका कभी टूटना नहीं है"। इब्न -ए- कसीर रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं: मतलब उसने धर्म को एक मजबूत कारण से पकड़ा है, और इसे एक दृढ़ पकड़

के रूप में समझाया है, जो खुद में नहीं टूटती, सशक्त रूप से बंधी होती है। इसकी पकड़ मजबूत और शक्तिशाली होती है। मुजाहिद ने कहा: दृढ़ पकड़ का मतलब है, विश्वास, और सुद्द ने कहा: यह इस्लाम है, और सईद बिन जुबैर और ज़ह्हाक ने कहा: इस का अर्थ है "ला इलाहा इल्लल्लाह"। और अनस बिन मालिक ने कहा: दृढ़ पकड़, क़ुरआन है। और सालिम बिन अबी अल-जद ने कहा: यह अल्लाह की खातिर प्रेम करना है, और अल्लाह के लिए नफरत करना है। ये सभी बातें सही हैं और इनमें कोई विरोध नहीं है।[1] यह अल्लाह के शब्दों की महानता को दर्शाता है, कैसे अल्लाह तआला के शब्दों ने अर्थों को समाहित किया है, और उसके सभी उद्देश्य को पूरा किया है, इसलिए " بِٱلۡعُرۡوَةِ ٱلۡوُثۡقَىٰ दृढ़ पकड़" के वाक्य ने सभी अर्थों और संकेतों को समाहित किया है। महान है वह जिसने अपने शब्दों में सबसे स्पष्ट बयान को समाहित किया, और महान शब्दों में, जो अल्लाह के शब्दों को समाहित करते हैं, इसलिए सभी प्रशंसा और धन्यवाद अल्लाह के लिए है। फिर इस महान आयत का समापन एक महान बयान और एक महान उपदेश से होता है, जो अल्लाह तआला का कथन है: ﴿وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ "और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है"। वह बंदों की बातों को सुनता है, और उनके कामों को जानता है, जो बंदे को उसकी वास्तविकताओं को समझने में मदद करता है, अल्लाह तआला की विशेषताओं को समझने के लिए प्रेरित करता है, जो उसकी निगरानी और उसके अपराध से बचने के लिए अनिवार्य है, और उसकी आज्ञा का पालन करना है, क्योंकि वह उसे कहीं भी हो, सुनता है, और जानता है कि वह क्या बुरा या अच्छा करता है, जो उसे सही रास्ते पर स्थिरता प्रदान करता है, जो उसकी दया, कृपा, भलाई और परोपकार को अनिवार्य करता है।

फिर अल्लाह तआला अपने वफादार विश्वासियों और झूठे देवताओं के साथ उनके वफादार काफिरों के लिए अपने मार्ग और देखभाल को बताते हैं, ताकि इंसान रास्तों के भेद और हर रास्ते की दिशा को समझ सके: ﴿ٱللَّهُ وَلِيُّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ يُخۡرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِۖ﴾ "अल्लाह उन लोगों का दोस्त है जो ईमान रखते हैं, वह उन्हें अंधेरे से निकालकर प्रकाश में लाता है"। अल्लाह तआला ने बताया कि वह मिमिनों का दोस्त है, उन्हें मार्गदर्शन, समर्थन और सफलता देता है, उन्हें कफ्र, शिर्क, अज्ञानता और बुराई के अंधेरे से निकालकर इस्लाम के प्रकाश में लाता है, उसके मार्गदर्शन, आस्था, नैतिकता और विधानों में, ताकि उन्हें स्वर्ग के बागों तक पहुंचा सके। और जो काफिर होते हैं, उनके उपास्य उनके मित्र होते हैं, जैसा कि अल्लाह ने कहा: ﴿وَٱلَّذِينَ كَفَرُوٓاْ أَوۡلِيَآؤُهُمُ ٱلطَّٰغُوتُ يُخۡرِجُونَهُم مِّنَ ٱلنُّورِ إِلَى ٱلظُّلُمَٰتِۗ﴾ "और जो काफिर होते हैं, उनके मित्र झूठे देवता होते हैं, जो उन्हें प्रकाश से निकालकर अंधेरे में ले जाते

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखक: इब्न -ए- कसीर (1/ 319)।

हैं"। अल्लाह तआला ने विपरीत तरीके से काफिरों और उनके दोस्तों के बारे में स्पष्ट किया, जो अल्लाह तआला के सिवा उपास्य किए जाते हैं, कि वे विश्वासियों के विपरीत हैं, क्योंकि उनके झूठे देवता उन्हें इस्लाम के प्रकाश, मार्गदर्शन और शांति से दूर ले जाते हैं, कफ्र और दुख के अंधेरे में, जो और अधिक दुख और कयामत के दिन की यातना की ओर ले जाता है, उनका गंतव्य नरक है: ﴿أُوْلَٰٓئِكَ أَصۡحَٰبُ ٱلنَّارِۖ هُمۡ فِيهَا خَٰلِدُونَ﴾ "ये लोग नरक के साथी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे"। यह बताता है कि काफिर का गंतव्य नरक में हमेशा रहना है, और केवल अल्लाह का धर्म ही बचाता है।

यह आयत यह भी बताती है कि अल्लाह का धर्म प्रकाश है, अपने पूर्ण विधानों के साथ, और यह आख़िरत के प्रकाश और सुख की ओर ले जाता है, और कफ्र अंधेरा है, और यह अंधेरे और दर्दनाक यातना की ओर ले जाता है। और विश्वासियों को महान प्रकाश में हैं, और काफिर काले अंधकार में हैं, विचार, आत्मा और जीवन में, यहां तक कि अगर उनके बीच और उन पर दुनिया की आनंद दिखाई देती है, तो उनकी आत्माओं का दुख और उदासी है।

आयत के संदर्भ, इसके मार्ग और संकेतों से यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षा, समझाने, दावत, और मार्गदर्शन की महत्वता है, विरोधाभासों की तुलना के माध्यम से, क्योंकि इसमें स्पष्ट बयान की तुलना होती है, जो मामलों की वास्तविकता को स्पष्ट करती है, और मामलों को उनकी दृष्टि के सामने रखती है, विचार, प्रतिबिंब और चिंतन की दिशा में, जो ज्ञान द्वारा संवाददाता को वास्तविक तथ्यों की ओर ले जाती है, जो अज्ञानता को समाप्त करती है, और उसे स्पष्ट मामले का ज्ञान प्राप्त करती है।

आयत के संदर्भ, उसके तरीके और संकेतों से शिक्षा, समझाने, आमंत्रण और मार्गदर्शन की महत्ता स्पष्ट होती है, विशेष रूप से विरोधाभासों की तुलना के माध्यम से। क्योंकि इस प्रकार की तुलना से बातें स्पष्ट होती हैं और वास्तविकताओं का सटीक वर्णन किया जा सकता है। यह लोगों के सामने सच्चाई रखती है, जिससे वे चिंतन, मनन और विचार-विमर्श के लिए प्रेरित होते हैं। यह ज्ञान प्राप्तकर्ता को सच्चाइयों की वास्तविकता तक ले जाती है, अज्ञान को दूर करती है और उसे सटीक ज्ञान प्रदान करती है जो सभी भ्रमों को समाप्त कर देता है।

﴿ٱللَّهُ وَلِيُّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ﴾ "अल्लाह ईमान वालों का संरक्षक है" इस कथन में प्रोत्साहन और प्रेरणा निहित है, जिसमें अल्लाह तआला के अनुग्रह और सम्मानजनक स्थान को दर्शाया गया है। यह स्थान यह है कि अल्लाह तआला अपनी शक्ति, सुरक्षा, मार्गदर्शन, प्रभुत्व, दया और कृपा के साथ ईमान वाले का संरक्षक बनता है। व्यावहारिक रूप से, यह सहारे और समर्थन की आवश्यकता को उजागर करता है, क्योंकि सहायता मानव को प्रोत्साहित करती है और उसे निष्क्रियता व पराजय से दूर ले जाती है। यह चाहे बुराई को दूर करने में हो या लाभ प्राप्त करने

में, व्यक्तियों और संगठनों के प्रबंधन में हो या अन्य किसी क्षेत्र में। सहयोग और सहायता वह साधन है जिसके माध्यम से अल्लाह तआला की अनुमति से भलाई प्राप्त होती है।

﴿أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلَّذِى حَآجَّ إِبْرَٰهِـۧمَ فِى رَبِّهِۦٓ أَنْ ءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ ٱلْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ رَبِّىَ ٱلَّذِى يُحْىِۦ وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا۠ أُحْىِۦ وَأُمِيتُ ۖ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَأْتِى بِٱلشَّمْسِ مِنَ ٱلْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ ٱلْمَغْرِبِ فَبُهِتَ ٱلَّذِى كَفَرَ ۗ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّـٰلِمِينَ ﴿٢٥٨﴾﴾ [سورة البقرة:٢٥٨].

((हे नबी!) क्या आपने उस व्यक्ति की दशा पर विचार नहीं किया, जिसने इब्राहीम से उसके पालनहार के विषय में विवाद किया, इसलिए कि अल्लाह ने उसे राज्य दिया था? जब इब्राहीम ने कहाः मेरा पालनहार वो है, जो जीवित करता तथा मारता है, तो उसने कहाः मैं भी जीवित करता तथा मारता हूँ। इब्राहीम ने कहाः अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता है, तू उसे पश्चिम से ले आ! (ये सुनकर) काफ़िर चकित रह गया और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता)।

क़ुरआन का परिप्रेक्ष्य हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की एक घटना का उल्लेख करता है, जिसमें उनका सामना एक घमंडी और उद्दंड राजा से हुआ। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلَّذِى حَآجَّ إِبْرَٰهِـۧمَ فِى رَبِّهِۦٓ أَنْ ءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ ٱلْمُلْكَ﴾ ((हे नबी!) क्या आपने उस व्यक्ति की दशा पर विचार नहीं किया, जिसने इब्राहीम से उसके पालनहार के विषय में विवाद किया, इसलिए कि अल्लाह ने उसे राज्य दिया था?) इस आयत में क़ुरआन ने एक प्रश्न शैली का उपयोग किया है, जो ध्यान आकर्षित करता है और पाठक को उस घटना के प्रति जागरूक करता है। इस घटना का वर्णन इस प्रकार किया गया है मानो इसे देख लिया गया हो। अल्लाह का बयान सच्चाई पर आधारित है और किसी भी संदेह से परे है। इस आयत के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि ज्ञान और सूचना का यह स्वरूप ऐसा है जैसे इसे स्वयं देखा गया हो। ﴿أَلَمْ تَرَ﴾ (क्या तुमने नहीं देखा)" का अर्थ है "क्या तुम्हें यह जानकारी नहीं मिली।" यह शैली ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रयुक्त की गई है, ताकि हर वह व्यक्ति जो क़ुरआन सुनता है, अल्लाह के महान संदेशों और खबरों को समझ सके। इसका उद्देश्य यह है कि सुनने वाले पर इन संवादात्मक तर्कों के माध्यम से हुज्जत (प्रमाण) स्थापित हो जाए, जो हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम और उस घमंडी शासक के बीच हुई थी।

अल्लाह ने उस राजा को राज्य देने की बात की है: ﴿أَنْ ءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ ٱلْمُلْكَ﴾ (अल्लाह ने उसे राज्य दिया था) इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि किसी भी इंसान को जो कुछ भी प्राप्त होता है, वह अल्लाह के दिए हुए इनाम के कारण है। यह इनाम अल्लाह की हिकमत और ज्ञान पर आधारित है। यह भी स्पष्ट होता है कि अल्लाह कभी-कभी अपने इनाम काफिरों और

पापियों को भी देता है, लेकिन यह उनकी रज़ा (संतोष) का संकेत नहीं है। इसी प्रकार, किसी से इनाम को रोकना अल्लाह की नाराज़गी का प्रतीक नहीं होता, बल्कि यह सब उसकी हिकमत पर निर्भर करता है।

अल्लाह तआला ने ध्यान आकर्षित किया कि यह वह व्यक्ति है जिसे अल्लाह ने राज्य दिया था, जैसा कि तफ़सीर की पुस्तकों में आया है कि वह बाबिल का राजा था, नमरूद बिन कनआन। मुजाहिद ने कहा: पूरब और पश्चिम समस्त दुनिया के शासक, चार थे: दो मोमिन (आस्तिक) और दो काफिर। मोमिन (आस्तिक): सुलैमान बिन दाऊद और ज़ुलक़रनैन, और काफिर: नमरुद और बुख्तनसर। वल्लाहु आलम (बाकी अल्लाह बेहतर जानता है)।[1] यह राजा केवल अल्लाह का काफिर नहीं था, बल्कि उसकी महानता और राज्य की शक्ति के कारण उसने यह दावा किया कि वह खुद रब है, और उसके सिवा कोई रब नहीं है। यह बताता है कि अल्लाह तआला के उदार उपहार से प्राप्त अभिमान कितना खतरनाक हो सकता है, जो व्यक्ति को धोखा दे सकता है और उसे ऊँचाई और झूठे दावों की ओर ले जा सकता है, जिसे इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने नकार दिया: ﴿إِذۡ قَالَ إِبۡرَٰهِـۧمُ رَبِّيَ ٱلَّذِي يُحۡيِۦ وَيُمِيتُ﴾ "जब इब्राहीम ने कहा: मेरा रब वह है जो जीवन देता है और मारता है"।

तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने नमरूद के रब (पालनहार) होने का खंडन किया, और यह साबित किया कि उसका रब ही वह (अल्लाह) एकमात्र रचयिता है जो जीवन और मौत देता है। राजा ने कहा: ﴿قَالَ أَنَا۠ أُحۡيِۦ وَأُمِيتُۖ﴾ "मैं भी जीवन देता हूँ और मारता हूँ"। उसका मतलब था कि वह जिसे चाहता है उसे मारता है और जिसे चाहता है उसे छोड़ देता है। यह उसकी चालाकी थी, जो असली जवाब से अलग थी, शायद उसकी जिद और विरोध के कारण। यह बताता है कि कुछ लोग इतनी चालाकी और भ्रम के साथ होते हैं कि वे कमजोर दिमाग और विचारों को भ्रमित कर देते हैं, जो चर्चा के समय सतर्कता की आवश्यकता होती है, और अल्लाह की सहायता की आवश्यकता होती है। अल्लाह तआला ने अपने ख़लील (परम मित्र) इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मदद की और उसे दूसरी चर्चा की ओर ले गए, एक ऐसी शैली में जिसे राजा भ्रमित नहीं कर सकता था। अल्लाह तआला इब्राहीम के बारे में कहता है: ﴿قَالَ إِبۡرَٰهِـۧمُ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَأۡتِي بِٱلشَّمۡسِ مِنَ ٱلۡمَشۡرِقِ فَأۡتِ بِهَا مِنَ ٱلۡمَغۡرِبِ﴾ "इब्राहीम ने कहा: अल्लाह सूरज को पूरब से लाता है, तो तुम उसे पश्चिम से लाओ"। यह एक परीक्षण और स्थिति थी जिसमें वह भ्रमित नहीं कर सकता था। ﴿فَبُهِتَ ٱلَّذِي كَفَرَ﴾ "तो वह काफिर हैरान हो गया"। उसकी दलीलें

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 320)।

समाप्त हो गई, और वह कुछ नहीं कह सका, क्योंकि वह सूरज के उदय और अस्त के स्थान को बदल नहीं सकता, जिसे सभी लोग देखते हैं।

फिर आयत हर अत्याचारी के लिए परिणाम को स्पष्ट करती है: ﴿وَٱللَّهُ لَا يَهۡدِي ٱلۡقَوۡمَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾ "और अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्गदर्शन नहीं देता"। अल्लाह तआला अत्याचारी को प्रमाण और तर्क नहीं देता, क्योंकि उसने इसे मूल रूप से खो दिया है, और उसे मार्गदर्शन और सफलता की सहायता नहीं मिलती। अल्लाह तआला की हिदायत के अभाव में हर प्रकार के ज़ुल्म से चेतावनी निहित है, भले ही वह अपने ज़ुल्म और शक्ति के साथ जीत क्यों न जाए, क्योंकि अल्लाह तआला उसे मार्गदर्शन नहीं देता है, और उसे ऐसी स्थितियों में छोड़ देता है जो जीत की मिठास की तुलना में अधिक कठिन और कष्टदायक होती हैं, ताकि यह उस पर अधिक भारी और हिंसात्मक हो। जो व्यक्ति अत्याचारियों के सभी स्तरों के घटनाओं का ध्यानपूर्वक अध्ययन करता है, वह इसे अपने सामने स्पष्ट देखता है। हम अल्लाह से उसकी दया की याचना करते हैं कि हमें ज़ुल्म से दूर रखे और ज़ुल्म को हमसे दूर रखे।

﴿أَوۡ كَٱلَّذِي مَرَّ عَلَىٰ قَرۡيَةٖ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحۡيِۦ هَٰذِهِ ٱللَّهُ بَعۡدَ مَوۡتِهَاۖ فَأَمَاتَهُ ٱللَّهُ مِاْئَةَ عَامٖ ثُمَّ بَعَثَهُۥۖ قَالَ كَمۡ لَبِثۡتَۖ قَالَ لَبِثۡتُ يَوۡمًا أَوۡ بَعۡضَ يَوۡمٖۖ قَالَ بَل لَّبِثۡتَ مِاْئَةَ عَامٖ فَٱنظُرۡ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمۡ يَتَسَنَّهۡۖ وَٱنظُرۡ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَلِنَجۡعَلَكَ ءَايَةٗ لِّلنَّاسِۖ وَٱنظُرۡ إِلَى ٱلۡعِظَامِ كَيۡفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ نَكۡسُوهَا لَحۡمٗاۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُۥ قَالَ أَعۡلَمُ أَنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ۝٢٥٩﴾ [سورة البقرة:٢٥٩].

(अथवा उस व्यक्ति के प्रकार, जो एक ऐसी नगरी से गुज़रा, जो अपनी छतों सहित ध्वस्त पड़ी थी? उसने कहाः अल्लाह इसके ध्वस्त हो जाने के पश्चात् इसे कैसे जीवित (आबाद) करेगा? फिर अल्लाह ने उसे सौ वर्ष तक मौत दे दी। फिर उसे जीवित किया और कहाः तुम कितनी अवधि तक मुर्दा पड़े रहे? उसने कहाः एक दिन अथवा दिन के कुछ क्षण। (अल्लाह ने) कहाः बल्कि तुम सौ वर्ष तक पड़े रहे। अपने खाने पीने को देखो कि तनिक परिवर्तन नहीं हुआ है तथा अपने गधे की ओर देखो, ताकी हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी (चिन्ह) बना दें तथा (गधे की) अस्थियों को देखो कि हम उन्हें कैसे खड़ा करते हैं और उनपर कैसे माँस चढ़ाते हैं? इस प्रकार जब उसके समक्ष बातें उजागर हो गयीं, तो वह पुकार उठा कि मझे (प्रत्यक्ष) ज्ञान हो गया कि अल्लाह जो चाहे, कर सकता है)।

फिर यह एक और उदाहरण है, जो पिछले उदाहरण से जुड़ा हुआ है, उसमें अल्लाह ने उस घमंडी शासक को अपमानित किया और अपने खलील (प्रिय) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सहायता ठोस तर्कों और निर्णायक प्रमाणों के साथ की। अल्लाह तआला

इस उदाहरण में फ़रमाता है: ﴿أَوۡ كَٱلَّذِي مَرَّ عَلَىٰ قَرۡيَةٖ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا﴾ (अथवा उस व्यक्ति के प्रकार, जो एक ऐसी नगरी से गुज़रा, जो अपनी छतों सहित ध्वस्त पड़ी थी?) क्या तुमने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के रब के बारे में झगड़ने वाले के समान, इस व्यक्ति को देखा, जो एक ऐसी बस्ती पर गुजरा जो अपने निवासियों से खाली हो चुकी थी और बर्बाद हो गई थी।

"خَاوِيَةٌ ख़ावियतुन" अर्थात खाली, और "عُرُوشِهَا उरूशिहा" अर्थात उसकी छतों पर गिरी हुई। उसकी छतें और दीवारें ढह चुकी थीं। वह व्यक्ति उस बस्ती की स्थिति देखकर हैरान और विचारमग्न हो गया। उसने देखा कि वह बस्ती, जो कभी आबाद थी, जिसमें लोग रहते थे, निर्माण कार्य, व्यापार और खरीद-फरोख्त होती थी, अब खंडहर बन चुकी थी। फिर उसके विचार उसे इस पर संदेह करने की ओर ले गए कि इसे पुनः जीवन कैसे दिया जाएगा। उसने कहा: ﴿قَالَ أَنَّىٰ يُحۡيِۦ هَٰذِهِ ٱللَّهُ بَعۡدَ مَوۡتِهَاۖ﴾ "अल्लाह इसे मौत के बाद कैसे ज़िंदा करेगा?" उसके इस कथन से यह पता चलता है कि वह अल्लाह पर ईमान रखने वाला था, लेकिन नबूवत के दौर की तरह, क़यामत के बाद पुनःजीवन देने की ताकत पर शंका कर बैठा। उसने यह सवाल शक और असंभवता की भावना से किया।

﴿فَأَمَاتَهُ ٱللَّهُ مِاْئَةَ عَامٖ ثُمَّ بَعَثَهُۥۖ﴾ "फिर अल्लाह ने उसे सौ साल के लिए मौत दे दी और फिर उसे जीवित किया।" जब वह ठीक होकर खड़ा हुआ, तो अल्लाह तआला ने उससे एक फ़रिश्ते[1] के माध्यम से पूछा: ﴿قَالَ بَل لَّبِثۡتَ﴾ "तुमने कितना समय यहाँ बिताया?" इस सवाल में कई लाभ छिपे हैं: उसे अपने अतीत और वर्तमान पर विचार करने के लिए प्रेरित करना। सीधे सूचना देने के बजाय, सवाल पूछकर उसका ध्यान खींचना। उसके अपनी स्थिति और ज्ञान की सीमाओं को स्पष्ट करना। यह दिखाना कि मनुष्य अपनी शक्ति और ज्ञान में कितना असहाय है। यह सवाल अल्लाह की पुनःजीवन देने की शक्ति और उसके लिए इस कार्य की सरलता को समझाने के लिए था। यह दर्शाने के लिए कि सृष्टि (मख़लूक़) की असहायता और निर्माता (खालिक) की शक्ति की तुलना नहीं की जा सकती। सृष्टि हर मामले में और हर रूप में कमजोर और असमर्थ है, सिवाय इसके कि अल्लाह तआला उसे समर्थ बनाएं। इसलिए उसने फ़रिश्ते के सवाल का जवाब अपनी सीमित समझ के अनुसार दिया: ﴿قَالَ لَبِثۡتُ يَوۡمًا أَوۡ بَعۡضَ يَوۡمٖۖ﴾ "मैंने एक दिन या उससे कम समय तक ठहरा।" उसके विचार में, उसकी मृत्यु का समय एक दिन या उसके कुछ हिस्से से अधिक नहीं था। अल्लाह ने उसे वास्तविकता बताई, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि यह अल्लाह की शक्ति का एक महान प्रदर्शन था। ﴿قَالَ بَل لَّبِثۡتَ مِاْئَةَ عَامٖ﴾

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखक: इब्न -ए- कसीर (1/ 322)।

"बल्कि, तुमने यहाँ सौ साल बिताए।" यह उत्तर निश्चित रूप से उस व्यक्ति के दिल और मन पर गहरा प्रभाव डालेगा। इसके बाद, अल्लाह ने उसे और स्पष्टता से समझाने के लिए कहा: ﴿فَانظُرْ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ﴾ "अपने खाने और पीने की ओर देखो, जो खराब नहीं हुआ।" अल्लाह ने उसके ध्यान को उस खाने की ओर आकर्षित किया, जो लंबे समय के बावजूद खराब नहीं हुआ था। यह दिखाने के लिए कि चीजों में परिवर्तन की प्रकृति अल्लाह के अधीन है।

फिर अल्लाह ने उन्हें उनके गधे की ओर देखने का निर्देश दिया: ﴿وَانظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ﴾ "और अपने गधे की ओर देखो।" गधा सड़ चुका था और उसकी केवल हड्डियाँ बची थीं। यह नष्ट होने और मृत्यु का स्पष्ट प्रमाण था। फिर, उन्होंने अपनी आंखों के सामने गधे को पुनः जीवन मिलता हुआ देखा। ﴿وَانظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ﴾ "अपने गधे की ओर देखो।" खाना, जो समय के साथ खराब हो जाता है, वह वैसा ही रहा। और गधा, जो आमतौर पर लंबे समय तक जीवित रह सकता है, वह मरकर नष्ट हो गया। यह अल्लाह की योजना का एक महान उदाहरण था, जिसने सामान्य प्राकृतिक नियमों को उलट दिया। इस घटना ने अल्लाह की महान शक्ति, उसके बनाए हुए नियमों में परिवर्तन करने की क्षमता, और इस पूरे ब्रह्मांड के प्रबंधन के तरीकों को स्पष्ट किया।

फिर अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट किया कि जो कुछ तुम्हारे साथ और तुम्हारे द्वारा हुआ, वह दूसरों के लिए नसीहत और निशानी बने। ﴿وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِّلنَّاسِ﴾ "ताकि हम इसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएं।" यह अल्लाह की क़ुदरत पर यक़ीन दिलाने के लिए है कि वह मौत के बाद जीवन देने और पुनर्जीवन का सामर्थ्य रखता है।

इसके बाद अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति का ध्यान उसके गधे की पुनर्जीवन प्रक्रिया की ओर खींचा। उसने देखा कि गधा, जो सड़ चुका था और केवल उसकी हड्डियाँ बची थीं, कैसे पुनर्जीवित किया गया। ﴿وَانظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنشِزُهَا﴾ "और इन हड्डियों को देखो, हम उन्हें कैसे जोड़ते हैं।" अर्थात, अल्लाह हड्डियों को फिर से व्यवस्थित करता है, उन्हें उनकी सही जगहों पर उठाता और जोड़ता है, जैसा पहले था। अर्थात, हम पुनर्जीवन की प्रक्रिया में उनके कुछ हिस्सों को कैसे एकत्रित करते हैं, क्योंकि जीवन की उत्पत्ति में उन्नति शामिल है।(1) तो उनके कुछ हिस्सों को एकत्रित किया जाता है, और उन्हें उनके अलग-अलग स्थानों से एकत्रित करने के बाद आपस में जोड़ा जाता है, और उन्हें फिर से उसी क्रम में व्यवस्थित

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 192)।

किया जाता है जैसे वे पहले थे। ﴿ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا﴾ "फिर हम उन्हें माँस पहनाते हैं।" फिर उन हड्डियों पर मांस चढ़ाया जाता है, और इस प्रकार अल्लाह उसमें जीवन डालता है। ﴿فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُۥ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ﴾ "जब यह स्पष्ट हो गया, तो उसने कहा, मैं जान गया कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।" उसने मौत की स्थिति और पुनर्जीवन की प्रक्रिया का मुआयना किया, जिससे उसका यक़ीन और मज़बूत हो गया। उसने यह नहीं कहा, "मैंने अल्लाह की क़ुदरत केवल पुनर्जीवन में देखी," बल्कि उसका यक़ीन इस बात पर विस्तृत हो गया कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ाबू रखता है। यह दिखाता है कि किसी एक मामले में अल्लाह की क़ुदरत को समझना, उसकी शक्ति को दूसरे मामलों तक भी विस्तार देता है। उदाहरण के तौर पर, जिस प्रकार अल्लाह बारिश और पानी के ज़रिए बंजर ज़मीन को ज़िंदा करता है, यह उसके मौत के बाद पुनर्जीवन देने की क़ुदरत को भी प्रमाणित करता है। इससे शिक्षा और दावत के क्षेत्र में यह बात निकलती है कि लोगों का ध्यान अल्लाह की आयतों की ओर खींचना बेहद महत्वपूर्ण है। क्योंकि ये आयतें इंसान को इस यक़ीन तक पहुँचाती हैं कि अल्लाह ही हर चीज़ का ख़ालिक (स्रष्टा), मुदब्बिर (प्रबंधक), और मालिक है। और यह कि उसकी क़ुरआनी आयतें और उसकी कायनाती (सृष्टि) निशानियाँ आपस में तालमेल रखती हैं।

﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ رَبِّ أَرِنِى كَيْفَ تُحْىِ ٱلْمَوْتَىٰ ۖ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِن ۖ قَالَ بَلَىٰ وَلَـٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِى ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ ٱلطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ ٱجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ٱدْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَٱعْلَمْ أَنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝٢٦٠﴾ [سورة البقرة: ٢٦٠].

(तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने कहाः हे मेरे पालनहार! मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को कैसे जीवित कर देता है? (अल्लाह ने) कहाः क्या तुम ईमान नहीं लाये? उसने कहाः क्यों नहीं? परन्तु ताकि मेरे दिल को संतोष हो जाये। अल्लाह ने कहाः चार पक्षी ले आओ और उनहें अपने से परचा लो। (फिर उन्हें वध करके) उनका एक-एक अंश (भाग) पर्वत पर रख दो। फिर उन्हें पुकारो। वे तुम्हारे पास दौड़े चले आयेंगे और ये जान ले कि अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है)।

फिर संदर्भ एक अन्य पुनर्जीवन की प्रक्रिया की ओर बढ़ता है, इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ رَبِّ أَرِنِى كَيْفَ تُحْىِ ٱلْمَوْتَىٰ﴾ "और जब इब्राहीम ने कहा: हे मेरे रब, मुझे दिखा कि तू मृतकों को कैसे जीवन देता है," तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अनुरोध किया कि वह उन्हें दिखाए कि कैसे मृतकों को पुनर्जीवित किया जाता है। अल्लाह तआला ने उनसे कहा: ﴿أَوَلَمْ تُؤْمِن﴾ "क्या तुमने विश्वास

नहीं किया?" यह अल्लाह तआला का इब्राहीम से सवाल था। उन्होंने कहा: " بَلَىٰ हाँ," जिससे इब्राहीम के इस सवाल का यह हिस्सा दूर हो गया, ताकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ईमान की शक्ति और सवाल की वजह के बारे में कोई संदेह न हो। अगर अल्लाह तआला ने इब्राहीम के सवाल का उत्तर दिए बिना पुनर्जीवन की प्रक्रिया को स्पष्ट कर दिया होता, तो सवाल की वजह और इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ईमान की शक्ति के बारे में अलग-अलग धारणाएँ हो सकती थीं। और उन्होंने कहा: " بَلَىٰ हाँ," मतलब मैंने जाना और विश्वास किया कि आप ऐसा कर सकते हैं, ﴿وَلَٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي﴾ "लेकिन मेरा दिल संतुष्ट हो जाए," लेकिन मैंने यह पूछा ताकि मेरा दिल संतुष्ट हो जाए, देखने के प्रमाणों को विश्वास के प्रमाणों से जोड़ते हुए।(1) अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की प्रार्थना को स्वीकार किया, और कहा: ﴿قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ﴾ "चार पक्षियों को लो," और उन्होंने पक्षियों की कोई विशिष्ट प्रकार नहीं बताई, बल्कि किसी भी उपलब्ध प्रकार से लेने के लिए कहा। ﴿فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ﴾ " और उनहें अपने से परचा लो" मतलब उन्हें अपने पास ले आओ, उन्हें मारो और काट दो, ﴿ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا﴾ "फिर उनका एक-एक हिस्सा प्रत्येक पर्वत पर रख दो"।

यह इलाही (ईश्वरीय) निर्देश में चमत्कार और आश्वासन की निशानी है। फिर यह निर्देश दिया गया: ﴿ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا﴾ "फिर उन्हें बुलाओ, वे तुम्हारे पास जल्दी-जल्दी आएँगे,"।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उन पक्षियों को बुलाया, और वे जल्दी से उनके पास आ गए। उनकी गति अल्लाह की शक्ति की वृद्धि में थी, क्योंकि पुनर्जीवन की प्रक्रिया केवल हिस्सों को इकट्ठा करने और जीवन को बहाल करने में नहीं थी, बल्कि उनकी तेज़ गति में भी थी, जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बुलावे के साथ आई। तफ़सीर में इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बारे में आया है कि उन्होंने कहा: और उन्होंने उनके सिर अपने हाथों में लिए, मतलब इब्राहीम ने उन्हें अपने हाथों में लिया, फिर अल्लाह तआला ने उन्हें उन्हें बुलाने का आदेश दिया, इसलिए उन्होंने अल्लाह के आदेश के अनुसार उन्हें बुलाया। उन्होंने देखा कि पंख पंख की ओर, रक्त रक्त की ओर, और मांस मांस की ओर गया। हर पक्षी का हिस्सा एक-दूसरे से मिल गया, और हर पक्षी अपनी जगह पर खड़ा हो गया और इब्राहीम अलैहिस्सलाम के हाथ में अपना सिर लेने के लिए आया।(2)

---

(2) फ़त्हुल क़दीर, लेखकः शौकानी (1/ 281)।

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 323)।

फिर आयत अल्लाह की विशेषता को स्पष्ट करते हुए समाप्त होती है: ﴿وَٱعۡلَمۡ أَنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ﴾ "और जान लो कि अल्लाह सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी है"। और शब्द "وَٱعۡلَمۡ जान लो," का मतलब यह है कि इस ज्ञान को जानना आवश्यक है। यह यह बताता है कि मुसलमान के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी हैं। यह अल्लाह के नामों और उनकी विशेषताओं को जानने के महत्व को बताता है। इनके ज्ञान में ईमान की शक्ति बढ़ती है, जो हर भलाई की प्रेरणा और हर बुराई से दूरी का कारण है। यह यह भी बताता है कि यह महत्वपूर्ण और आवश्यक है कि व्यक्ति यह जाने कि अल्लाह सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी हैं, और यह अल्लाह की ब्रह्मांडीय और शरीअत आयतों पर ध्यान और चिंतन द्वारा प्राप्त होता है।

अल्लाह सर्वशक्तिमान को कोई नहीं पराजित कर सकता, और कुछ भी उसके लिए कठिन नहीं है, इसलिए हर चीज़ उसकी स्वेच्छा से होती है। जो वह चाहता है वह बिना किसी रोक के होता है, क्योंकि वह हर चीज़ पर विजेता है। वह अपने कथनों, कर्मों, शरीअत और निर्णय में सर्वज्ञानी है।(1) अज़ीज़ (सर्वशक्तिमान) का मतलब पूर्ण शक्ति और अपराजेय सामर्थ्य है। वह हर चीज़ पर विजय पाने वाला है और उसकी इच्छाओं को कोई रोक नहीं सकता। हकीम (तत्वज्ञानी) का मतलब है कि वह हर चीज़ को पूरी तरह से सही और उचित तरीके से अंजाम देने वाला है।(2)

हिकमत (तत्वज्ञान) का अर्थ है किसी चीज़ को उसके उपयुक्त स्थान पर रखना। वह अपने क़ानून और अपने आदेशों में हकीम (तत्वज्ञानी) है। यह आवश्यक करता है कि एक ईमान वाला इन गुणों और अल्लाह की महानता की इन विशेषताओं को महसूस करे, क्योंकि ये विशेषताएँ दिल में सम्मान, भय, आज्ञाकारिता और मार्गदर्शन उत्पन्न करती हैं, जो अल्लाह की आज्ञापालन को सुनिश्चित करती हैं।

﴿مَّثَلُ ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمۡوَٰلَهُمۡ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنۢبَتَتۡ سَبۡعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنۢبُلَةٖ مِّاْئَةُ حَبَّةٖۗ وَٱللَّهُ يُضَٰعِفُ لِمَن يَشَآءُۚ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ٢٦١﴾ [سورة البقرة: ٢٦١].

(जो अल्लाह की राह में अपना धन दान करते हैं, उस (दान) की दशा उस एक दाने जैसी है, जिसने सात बालियाँ उगायी हों। (उसकी) प्रत्येक बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिसे चाहे और भी अधिक देता है तथा अल्लाह विशाल, ज्ञानी है)।

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 323)।

(1) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 50)।

फिर कुरआनी संदर्भ अल्लाह की राह में दान करने के प्रोत्साहन की ओर बढ़ता है: ﴿مَّثَلُ ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِى كُلِّ سُنۢبُلَةٍ مِّا۟ئَةُ حَبَّةٍ ۗ وَٱللَّهُ يُضَٰعِفُ لِمَن يَشَآءُ ۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾﴾ (जो अल्लाह की राह में अपना धन दान करते हैं, उस (दान) की दशा उस एक दाने जैसी है, जिसने सात बालियाँ उगायी हों। (उसकी) प्रत्येक बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिसे चाहे और भी अधिक देता है तथा अल्लाह विशाल, ज्ञानी है)।

अल्लाह तआला ने इस महान आयत की शुरुआत एक उदाहरण के साथ की, जो क़ुरआन के श्रोताओं के लिए अर्थ को स्पष्ट करता है। यह संदर्भ विश्वासियों के लिए है, क्योंकि बिना ईमान के कोई भी दान का कार्य स्वीकार नहीं होता। अल्लाह तआला ने उसे जो अपने धन को उसकी राह में खर्च करता है, उसे एक बाली के साथ तुलना किया है, जिसमें अत्यधिक दान होता है। इब्न -ए- कसीर रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा है: यह उदाहरण आत्माओं में सात सौ संख्या की तुलना में अधिक प्रभावशाली है। यह इस ओर संकेत करता है कि अच्छे कार्यों को अल्लाह तआला उनके करने वालों के लिए बढ़ाता है, जैसे कि वह भूमि में बीज बोने वाले के लिए फसल को बढ़ाता है। सुनन (हदीस़ की पुस्तकों) में आया है कि एक अच्छे कार्य को सात सौ गुना तक बढ़ाया जाता है।(1)

इस आयत में यह भी है कि ईमानदारी आवश्यक है ताकि दान का लाभ प्राप्त हो सके, क्योंकि अल्लाह तआला ने कहा: ﴿يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ﴾ "वे अपना धन अल्लाह की राह में खर्च करते हैं"। इसे अल्लाह की राह में खर्च करने को समर्पित किया, जिससे दो पहलुओं को शामिल किया गया: पहला, कि इसकी खर्च अल्लाह की आज्ञा में होनी चाहिए; और दूसरा, कि यह अल्लाह के लिए होनी चाहिए, क्योंकि अल्लाह की राह में खर्च वह है जो ईमानदारी के बिना, बिना रियासत (दिखावे) के, और बिना निजी लाभ के हो।

इब्न -ए- सअदी रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं: इसमें उनके खर्च को शामिल किया गया है जो लाभकारी विज्ञान की उन्नति में योगदान करते हैं, जिहाद की तैयारी और योद्धाओं को तैयार करने में, और मुसलमानों के लिए लाभकारी सभी धर्मार्थ परियोजनाओं में, तथा इसी में शामिल है गरीबों और असहायों पर खर्च।(2)

(2) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 324)।

(3) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 209)

यह अल्लाह की राह में दान करने के महत्व और उसके महान इनाम को दर्शाता है। इसके लाभों में से एक है: इसका गुणा, महान इनाम के साथ, जिसे कोई गिन नहीं सकता और कोई उसकी सीमा नहीं जान सकता, जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा: ﴿وَٱللَّهُ يُضَٰعِفُ لِمَن يَشَآءُ﴾ "और अल्लाह जिसे चाहता है उसे कई गुणा बढ़ा देता है"। गुणा को निर्दिष्ट नहीं किया गया, ताकि यह सात सौ गुना से अधिक हो सके[1], जो अल्लाह तआला की उदारता को दर्शाता है। कुछ विद्वानों ने कहा है: बल्कि यह सूचित करता है कि अल्लाह तआला जिसे चाहता है उसे सात सौ गुना से अधिक गुणा देता है। इस महान आयत ने अल्लाह तआला की उदारता को स्पष्ट किया, वह जिसे चाहता है उसे गुणा देता है। यह अल्लाह की राह में दान करने वाले के लिए एक प्रोत्साहन और प्रशंसा है, क्योंकि इनाम और गुणा दान करने वाले के लिए प्रशंसा और उसका सम्मान है, और भलाई करने के लिए प्रोत्साहन है।

फिर अल्लाह तआला ने इसे उसकी विशेषताओं में से एक के साथ समर्थन किया: ﴿وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ﴾ (तथा अल्लाह विशाल, ज्ञानी है) वह अपनी हिबतों, दान और ज्ञान और शक्ति में असीम है। उसकी असीमता को उसकी सृष्टि में कोई नहीं माप सकता, और उसके महान असीमता की वास्तविकता को केवल वह ही जानता है।

यह शैक्षिक और प्रबंधकीय दृष्टिकोण से यह बात स्पष्ट करता है कि अच्छे कार्यों को प्रोत्साहित करना, परोपकार में प्रयास करना और हर प्रकार के भलाई के कामों में पूरी क्षमता लगाना कितना महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार, व्यावसायिक और प्रशासनिक कार्यक्षेत्रों में प्रोत्साहन की आवश्यकता है, क्योंकि प्रोत्साहन उन तरीकों में से एक है जो लोगों के भीतर छिपी अच्छाइयों को बाहर लाने में सबसे अधिक प्रभावी होता है। यह इसलिए भी है क्योंकि इंसानी फितरत प्रशंसा और पुरस्कृत किए जाने की इच्छा रखती है।

संुबुलह (बालियों) के उदाहरण से यह भी सिद्ध होता है कि कृषि का बड़ा महत्व है, क्योंकि इससे अल्लाह की मख़लूक़ (सृष्टि) को फायदा पहुँचता है और उनकी भोजन की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। इमाम कुरतबी रहिमहुल्लाह ने कहा: इस आयत में यह प्रमाण है कि खेती उन सबसे उत्तम पेशों में से है जिन्हें इंसान अपनाते हैं और जिनसे लोग अपनी जीविका चलाते हैं। इसलिए अल्लाह ने इसे उदाहरण के रूप में पेश किया।[2] और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "कोई मुसलमान ऐसा नहीं है जो कोई पौधा

(2) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 98)।

(3) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 98)।

लगाए या खेती करे और उससे कोई पक्षी, इंसान, या जानवर खाए, तो यह उसके लिए सदक़ा होगा"।(1)

संबुलह (बालियों) के उदाहरण से यह भी पता चलता है कि किसी अवधारणा या विचार को समझाने और उसके अर्थ को स्पष्ट करने के लिए किस प्रकार उदाहरण का उपयोग किया जाए। इसमें यह भी बताया गया है कि कैसे एक उपयुक्त, प्रकार, मात्रा और अर्थ में सामंजस्यपूर्ण उदाहरण का चयन किया जाए। यह विधि न केवल उद्देश्य को समझने में मदद करती है, बल्कि अच्छाई और सफलता की ओर ध्यान आकर्षित करने और प्रेरित करने का भी साधन बनती है।

﴿ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَآ أَنفَقُوا۟ مَنًّا وَلَآ أَذًى ۙ لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾ ۞ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّن صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَآ أَذًى ۗ وَٱللَّهُ غَنِىٌّ حَلِيمٌ ﴿٢٦٣﴾﴾ [سورة البقرة:٢٦٢-٢٦٣].

(जो अपना धन अल्लाह की राह में दान करते हैं, फिर दान करने के पश्चात् उपकार नहीं जताते और न (जिसे दिया हो उसे) दुःख देते हैं, उन्हीं के लिए उनके पालनहार के पास उनका प्रतिकार (बदला) है और उनपर कोई डर नहीं होगा और न ही वे उदासीन होंगे। भली बात बोलना तथा क्षमा, उस दान से उत्तम है, जिसके पश्चात् दुःख दिया जाये तथा अल्लाह निस्पृह, सहनशील है)।

फिर अगली आयत आती है, जो दान के शिष्टाचार को स्पष्ट करती है। अल्लाह तआला कहता है: ﴿ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَآ أَنفَقُوا۟ مَنًّا وَلَآ أَذًى﴾ "जो लोग अल्लाह की राह में अपने धन का दान करते हैं, फिर अपने दान को किसी एहसान जताने या कष्ट पहुँचाने से नहीं करते"। इसमें अल्लाह तआला की राह में दान करने की पुष्टि की गई है, इसे इस आयत में दूसरी बार लाया गया है, और साथ ही दान के शिष्टाचार का वर्णन किया गया है, कि दान के बाद उसे कोई एहसान या कष्ट पहुँचाने से नहीं करना चाहिए। एहसान जताना (مَنًّا मन्न) का मतलब है कि जिस पर दान किया गया है, उसके सामने अपनी दान की गई चीज़ों का उल्लेख करना, गिनती करना, और उसे गर्व और अहंकार से कहना। यह उस पर मानसिक और शारीरिक कष्ट डालता है, उसकी आत्मसम्मान को तोड़ता है, और उसे गरीबी, विवशता और आवश्यकता की गर्मी का एहसास कराता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस धर्म का नैतिक मार्ग, शिष्टाचार, दया और दूसरों का सम्मान करने का मार्ग है। और मन (एहसान जताना) का

(2) बुख़ारी (2/ 152) हदीस़ संख्या (2320)।

इतना प्रभाव है कि यह नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस़ में आया है कि: "तीन लोग हैं जिन पर क़यामत के दिन अल्लाह (दया की) दृष्टि नहीं डालेगा, और न उन्हें पवित्र करेगा, और उनके लिए दुखद यातना होगी: वे हैं, जो दान करके एहसान जताते हैं, जो अपने कपड़ों को घसीटते हैं (अहंकार से), और जो झूठी कसम खाकर अपना सामान बेचते हैं"।(1) यह यातना का वादा है। यह बताता है कि कष्ट के साथ दान करने से बेहतर है कि कष्ट से दान न करें। इस गणना में बहुत सारे लाभ हैं जो इसे समझने वाले के लिए हैं।

फिर अल्लाह तआला ने दूसरे शिष्टाचार का उल्लेख किया: जो एहसान जताने से व्यापक है, इसमें शामिल और उसके बाहर भी, और वह है कष्ट: ﴿ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَآ أَنفَقُواْ مَنًّا وَلَآ أَذًى﴾ "फिर अपने दान को किसी एहसान जताने या कष्ट पहुँचाने से नहीं करते"। कष्ट हर वह चीज़ है जिससे दान प्राप्तकर्ता को कष्ट पहुँचता है, चाहे किसी भी रूप में हो। इसमें एहसान जताना भी शामिल है, क्योंकि यह कष्ट का एक हिस्सा है, और इसे विशेष रूप से उल्लेखित किया गया है क्योंकि यह सबसे अधिक कष्ट और नुकसानकारी होता है। यह शाब्दिक शैली से यह भी बताता है कि एक स्पष्ट कारण है जो विशेष उल्लेख की आवश्यकता है, साथ ही यह सामान्य शब्द और अर्थ में शामिल है, जो विशेष शब्द की एक महत्वपूर्ण और स्पष्ट दृष्टि और इसका उद्देश्य प्रदान करता है।

जो इस शिष्टाचार और इस्लामिक आदर्शों के साथ दान करता है, जैसा कि अल्लाह तआला ने चाहा है, उनके लिए अल्लाह तआला की खुशखबरी है: ﴿لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ﴾ "उनके लिए उनके रब के पास उनका इनाम है"।

यह वह इनाम है जिसका आकार और मात्रा किसी को नहीं पता, केवल अल्लाह तआला जानते हैं। अल्लाह का इनाम महान है, विशेष रूप से जब यह अल्लाह तआला के शब्द ﴿عِندَ رَبِّهِمْ﴾ "उनके रब के पास" के साथ सीमित है। वह इसका उत्तरदायी है, और यह एक महान गारंटी है। उनके लिए एक और खुशखबरी है, जहां अल्लाह तआला कहते हैं: "उन पर कोई डर नहीं होगा"। अल्लाह तआला ने उन पर डर को नकार दिया, क्योंकि यह उनके आने वाले मामलों से संबंधित है। और तीसरी खुशखबरी: ﴿وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾ "और वे दुखी नहीं होंगे"। और अल्लाह तआला ने उनसे दुख और शोक को दूर कर दिया, क्योंकि शोक हमेशा अतीत से जुड़ा होता है, जिस पर व्यक्ति अफसोस करता है। इस प्रकार, उनके लिए खुशी का वादा किया गया है, क्योंकि उनके पास न तो कोई चिंता होगी और न ही कोई दुख, और साथ ही उन्हें अल्लाह तआला की ओर से बहुत बड़ा पुरस्कार मिलेगा। इसका मतलब यह है

(1) तिर्मिज़ी (3/ 516) ह़दीस़ संख्या (1211)।

कि चिंता और दुख, दोनों ही मानव जीवन के मुख्य कारण होते हैं जो उसकी दुर्बलता और दुख का कारण बनते हैं। हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह हमें और सभी मुसलमानों को इनसे सुरक्षित रखे।

फिर अल्लाह तआला यह स्पष्ट करते हैं कि अच्छे शब्दों और माफ़ी का दान के साथ तुलना करते हुए कौन सा श्रेष्ठ है: ﴿قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّن صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَآ أَذًى ۗ وَٱللَّهُ غَنِىٌّ حَلِيمٌ﴾ "एक अच्छा शब्द और माफ़ी, उस दान से बेहतर है जिसे कष्ट के साथ दिया जाए"। इससे यह सिद्ध होता है कि एक अच्छा शब्द, एक मुसलमान के प्रति दावत, और ज़ुल्म को माफ़ करना, उस दान से बेहतर और उत्तम है जिसे कष्ट के साथ दिया जाए, चाहे वह किसी भी प्रकार का हो। यह तुलना सही नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करती है, और आत्मा को दूसरों के साथ इस्लाम के शिष्टाचार के साथ प्रशिक्षित करती है। यह दिखाता है कि एक अच्छा शब्द, बिना किसी दान के, उस दान से बेहतर है जिसे कष्ट के साथ दिया जाए। इस तुलना में यह भी सिखाया जाता है कि अच्छे कार्यों की प्राथमिकता की पद्धति और शिष्टाचार और नैतिकता की स्थिति कैसे कार्यों की महत्ता को बढ़ाती है। साथ ही यह अच्छे शब्द की स्थिति, माफी (وَمَغْفِرَةٌ मग़फिरत) की स्थिति, और कष्ट की खतरनाकता को बताती है, भले ही यह दान के साथ हो, जो मुसलमान अपनी संपत्ति से निकालता है। हालांकि, इसका व्यक्तिगत संघर्ष है, क्योंकि संपत्ति से निकालना आत्मा के लिए कठिन होता है, सिवाय उन लोगों के जिन्हें अल्लाह तआला ने उदारता और दानशीलता की प्राकृतिक प्रवृत्ति दी है।

फिर यह महान आयत एक उपदेश के साथ समाप्त होती है, जो अल्लाह की दो विशेषताओं को स्पष्ट करती है: ﴿وَٱللَّهُ غَنِىٌّ حَلِيمٌ﴾ "और अल्लाह आत्मनिर्भर और सहनशील है"। वह अपनी सृष्टि से आत्मनिर्भर है, किसी भी सृष्टि की आवश्यकता नहीं है। और वह अपनी कृपा और पूर्ण शक्ति में आत्मनिर्भर है। और वह तआला अपने बंदों के प्रति सहनशील है, उन्हें तुरंत सज़ा नहीं देता, बल्कि माफ़ करता है, और उन्हें माफ़ कर देता है, और उन्हें अपने व्यापक और उदार सहनशीलता के कारण माफ़ कर देता है। जब एक आस्तिक इन ईश्वरीय विशेषताओं पर विचार करता है, तो यह उसके दिल को अल्लाह तआला के प्रति अधीनता की ओर निर्देशित करता है, उसकी महान विशेषताओं और महान नामों के अनुसार। यह ज्ञान उसे उदारता से दान करने की आवश्यकता बताता है, क्योंकि जो अल्लाह की राह में दान करता है, वह एक उदार दाता के लिए करता है, और अल्लाह उदारता से दान करने वाले को पुरस्कृत करता है। यह ज्ञान उसे उदारता से दान करने की आवश्यकता बताता है, क्योंकि जो अल्लाह की राह में दान करता है, वह एक सहनशील, उदार दाता के लिए करता है। यह ज्ञान उसे तात्कालिकता से दान करने की आवश्यकता बताता है, क्योंकि जो अल्लाह की राह में दान करता है, वह एक सहनशील, उदार, महान दाता के लिए करता है। यह ज्ञान उसे कमी और गरीबी से डरने की

आवश्यकता नहीं बताता है, क्योंकि जो अल्लाह की राह में दान करता है, वह एक उदार, महान दाता के लिए करता है।

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تُبۡطِلُواْ صَدَقَٰتِكُم بِٱلۡمَنِّ وَٱلۡأَذَىٰ كَٱلَّذِي يُنفِقُ مَالَهُۥ رِئَآءَ ٱلنَّاسِ وَلَا يُؤۡمِنُ بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِۖ فَمَثَلُهُۥ كَمَثَلِ صَفۡوَانٍ عَلَيۡهِ تُرَابٞ فَأَصَابَهُۥ وَابِلٞ فَتَرَكَهُۥ صَلۡدٗاۖ لَّا يَقۡدِرُونَ عَلَىٰ شَيۡءٖ مِّمَّا كَسَبُواْۗ وَٱللَّهُ لَا يَهۡدِي ٱلۡقَوۡمَ ٱلۡكَٰفِرِينَ ٢٦٤ وَمَثَلُ ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمۡوَٰلَهُمُ ٱبۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ ٱللَّهِ وَتَثۡبِيتٗا مِّنۡ أَنفُسِهِمۡ كَمَثَلِ جَنَّةِۭ بِرَبۡوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٞ فَـَٔاتَتۡ أُكُلَهَا ضِعۡفَيۡنِ فَإِن لَّمۡ يُصِبۡهَا وَابِلٞ فَطَلّٞۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ بَصِيرٌ ٢٦٥ أَيَوَدُّ أَحَدُكُمۡ أَن تَكُونَ لَهُۥ جَنَّةٞ مِّن نَّخِيلٖ وَأَعۡنَابٖ تَجۡرِي مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ لَهُۥ فِيهَا مِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِ وَأَصَابَهُ ٱلۡكِبَرُ وَلَهُۥ ذُرِّيَّةٞ ضُعَفَآءُ فَأَصَابَهَآ إِعۡصَارٞ فِيهِ نَارٞ فَٱحۡتَرَقَتۡۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمُ ٱلۡأٓيَٰتِ لَعَلَّكُمۡ تَتَفَكَّرُونَ ٢٦٦ ﴾ [سورة البقرة:٢٦٤-٢٦٦].

(हे ईमान वालो! उस व्यक्ति के समान उपकार जताकर तथा दुःख देकर, अपने दानों को व्यर्थ न करो, जो लोगों को दिखाने के लिए दान करता है और अल्लाह तथा अन्तिम दिन (परलोक) पर ईमान नहीं रखता। उसका उदाहरण उस चटेल पत्थर जैसा है, जिसपर मिट्टी पड़ी हो और उसपर घोर वर्षा हो जाये और उस (पत्थर) को चटेल छोड़ दे। वे अपनी कमाई का कुछ भी न पा सकेंगे और अल्लाह काफ़िरों को सीधी डगर नहीं दिखाता। तथा उनकी उपमा, जो अपना धन अल्लाह की प्रसन्नता की इच्छा में अपने मन की स्थिरता के साथ दान करते हैं, उस बाग़ (उद्यान) जैसी है, जो पृथ्वी तल के किसी ऊँचे भाग पर हो, उसपर घोर वर्षा हुई, तो दोगुना फल लाया और यदि घोर वर्षा नहीं हुई, तो (उसके लिए) फुहार ही बस हो तथा तुम जो कुछ कर रहे हो, उसे अल्लाह देख रहा है। क्या तुममें से कोई चाहेगा कि उसके खजूर तथा अँगूरों के बाग़ हों, जिनमें नहरें बह रही हों, उनमें उसके लिए प्रत्येक प्रकार के फल हों तथा वह बूढ़ा हो गया हो और उसके निर्बल बच्चे हों, फिर वह बगोल के आघात से जिसमें आग हो, झुलस जाये, इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें उजागर करता है, ताकि तुम सोच विचार करो)।

फिर कुरआनी संदर्भ, दान और अल्लाह की राह में खर्च करने के शिष्टाचार, महत्व और उसका महान इनाम बताने के लिए जारी रहता है, और यह कि क्या चीज़ इसे भ्रष्ट और निरर्थक करती है। अल्लाह तआला कहते हैं: ﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تُبۡطِلُواْ صَدَقَٰتِكُم بِٱلۡمَنِّ وَٱلۡأَذَىٰ ﴾ (हे ईमान वालो! उस व्यक्ति के समान उपकार जताकर तथा दुःख देकर, अपने दानों को व्यर्थ न करो) आयत की शुरुआत में अल्लाह तआला ने ईमान वालों को पुकारा है। यह पुकार अल्लाह तआला की ओर से ईमान वालों को उनके ईमान की पुष्टि और उसके महत्व को दर्शाने के लिए एक बड़ा सम्मान है। यह ऐसी नेमत है जो उनके दिलों पर गहरा प्रभाव छोड़ती है, जब वे इसके अर्थ और संकेत को समझते हैं। यह सब इसलिए है ताकि उनका ध्यान आकर्षित किया जा

सके और उन्हें वह सिखाया जा सके जो उनके लिए लाभदायक है। इससे एक शैक्षिक शिक्षा यह भी मिलती है कि सीखने वाले और बुलाए गए व्यक्ति को सबसे अच्छे संबोधन से पुकारा जाना चाहिए। जब खुद अल्लाह तआला अपने बंदों को इतने ऊँचे दर्जे से पुकारते हैं, तो एक इंसान को दूसरे इंसान के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

फिर अल्लाह तआला ने ईमान वालों को तीसरी बार इस बात से मना किया कि वे अपने दानों को ऐसे कार्यों से नष्ट करें जो उन्हें बर्बाद कर दें। ऐसा इसलिए ताकि उनका परिश्रम उन कार्यों में व्यर्थ न जाए जो उन्हें नुकसान पहुँचाएँ और उनका महान इनाम छीन लें। इस मनाही को बार-बार दोहराने से यह स्पष्ट होता है कि यह मामला कितना गंभीर है। यह एक सख्त चेतावनी और हर ईमान वाले के लिए एक शिक्षा है। यह अल्लाह तआला की दया है कि वह अपने बंदों को यह सिखाता है, चाहे वह देने वाला हो या लेने वाला। ताकि न तो देने वाला अपने दान के इनाम से वंचित हो और न ही लेने वाला अपने प्राप्त किए हुए से किसी प्रकार की चोट महसूस करे। इससे मुसलमानों के बीच भाईचारे और स्नेह की रक्षा होती है।

फिर अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति की उपमा दी जिसने अपने दान को उपकार जताकर और चोट पहुँचाकर नष्ट कर दिया, उस व्यक्ति से जो दिखावे के लिए अपना धन खर्च करता है: ﴿كَٱلَّذِى يُنفِقُ مَالَهُۥ رِئَآءَ ٱلنَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ﴾ (जैसे वह व्यक्ति जो दिखावे के लिए अपना धन खर्च करता है और अल्लाह और अंतिम दिन पर विश्वास नहीं करता) जो व्यक्ति अपने दान को उपकार जताने और चोट पहुँचाने से बर्बाद करता है, वह उस व्यक्ति जैसा है जिसने अपनी कृपा को दिखावे और परलोक के इनकार के माध्यम से नष्ट कर दिया। एक दोष दुनिया से संबंधित है, जो दिखावा है, और दूसरा दोष परलोक से संबंधित है, जो उस पर विश्वास की कमी है। इससे यह समझ आता है कि जो व्यक्ति इन दोनों दोषों का शिकार है, उसका कार्य व्यर्थ हो जाता है। उसका कार्य दिखावे के कारण ऐसा होता है जिसमें अल्लाह तआला के लिए कोई ईमानदारी नहीं होती और परलोक पर विश्वास न करने के कारण वह अपने कार्य का उद्देश्य केवल लोगों के बीच प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त करना बनाता है। जबकि परलोक पर विश्वास अल्लाह तआला के भय को जन्म देता है, जो इंसान को केवल अल्लाह के लिए कार्य करने की प्रेरणा देता है।

यह पाठ शिक्षण, प्रशिक्षण, और मार्गदर्शन के लिए यह समझाने में सहायक है कि उपमा (तुलना) कैसे संदेश को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से समझाने का एक सरल और उपयोगी माध्यम है। अल्लाह तआला ने दान में उपकार जताने और चोट पहुँचाने की गंभीरता को और स्पष्ट करने के लिए एक अन्य उपमा दी: ﴿فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا﴾ (तो उसकी मिसाल उस चिकनी चट्टान जैसी है जिस पर मिट्टी हो, फिर उस पर मूसलधार बारिश गिरे और उसे बिलकुल साफ कर दे)

अल्लाह तआला ने ऐसे दान की तुलना उस चिकनी चट्टान (صَفْوَانٍ) से की है, जिस पर मिट्टी पड़ी हो। उस पर तेज बारिश (وَابِلٌ) होती है और वह चट्टान साफ और चिकनी रह जाती है, जैसे उस पर कभी मिट्टी थी ही नहीं। उसी प्रकार, उपकार जताने और चोट पहुँचाने से जुड़ी हुई दान की क्रियाएँ अल्लाह के यहाँ बर्बाद हो जाती हैं। यह दान दिखावे, घमंड और अन्य प्रकार की चोट के कारण नष्ट हो जाती है और अल्लाह के यहाँ उनका कोई मूल्य नहीं रहता।

फिर अल्लाह तआला ने दानकर्ता का परिणाम बताया: ﴿لَا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا﴾ (वे अपनी कमाई में से किसी चीज़ पर अधिकार नहीं पा सकते) अर्थात उन्होंने जो दान किया था, उसका कोई लाभ नहीं होगा। ﴿وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ﴾ (और अल्लाह काफिरों को राह नहीं दिखाता) यह उनके कुफ़्र की वजह से होता है कि उन्हें भलाई की ओर मार्गदर्शन नहीं मिलता।

इसके विपरीत, अल्लाह तआला ने दूसरे प्रकार के लोगों का उल्लेख किया, जो अल्लाह की खुशी के लिए दान करते हैं और अपने नफ्स को इस कार्य में सुदृढ़ रखते हैं। ﴿وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَثْبِيتًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَآتَتْ أُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ﴾ (उनकी मिसाल उस बाग जैसी है जो ऊँचाई पर हो, उस पर भारी बारिश हो और वह दोगुना फल दे)

यह आयत उपमा के माध्यम से प्रारंभ होती है, जो श्रोता का ध्यान इस उपमा, इसके उद्देश्य, और इसके विषयवस्तु की ओर खींचती है। यह उपमा अल्लाह तआला की इच्छा को समझाने और श्रोता को उसके करीब लाने के लिए दी गई है।

जो लोग अल्लाह की प्रसन्नता के लिए अपने धन का व्यय करते हैं, अर्थात "ابتغاء مرضات الله" अल्लाह की खुशी की तलाश में, और साथ ही "وتثبيتاً من أنفسهم" अपने मन को स्थिर और सुनिश्चित करते हुए कि अल्लाह उन्हें इस कार्य के लिए भरपूर प्रतिफल देगा[1], उनके कार्य में केवल यही उद्देश्य और भावनाएँ होती हैं। उनकी दानशीलता में किसी प्रकार का दिखावा, चोट पहुँचाना, या घमंड नहीं होता। इस तरह की शुद्ध नीयत और निस्वार्थ भाव से वे मन और हृदय को उपकार जताने, चोट पहुँचाने, और दिखावे जैसे दोषों से मुक्त रखते हैं, जैसे बगीचा एक ऊँचे स्थान पर है, अर्थात यह दान का कार्य, उसकी उन्नति और महत्वपूर्ण स्थिति के साथ, उस बगीचे के समान है जो ऊँचे स्थान पर स्थित है: ﴿كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 326)।

﴿فَـَٔاتَتۡ أُكُلَهَا ضِعۡفَيۡنِ﴾ "जैसे एक बगीचा जो ऊँचे स्थान पर है, जिसे भारी वर्षा मिलती है और वह अपने फल को दोगुना देता है"। यह बाग वर्षा से सींचा जाता है, और उसके फल दुगने होते हैं। और अगर उसे बारिश नहीं मिलती, तो उसे ओस मिलती है, जो उसकी आवश्यकता को पूरा करती है: ﴿فَإِن لَّمۡ يُصِبۡهَا وَابِلٞ فَطَلّٞ﴾ "अगर उसे भारी वर्षा नहीं मिलती, तो उसे ओस मिल जाती है"। और यह ओस उसे सींचने की आवश्यकता को पूरा करती है जो उसे फल और उत्पादन करने में सक्षम बनाती है। इसी प्रकार, विश्वासियों का कार्य कभी विफल नहीं होता, बल्कि अल्लाह तआला उसे स्वीकार करता है और उसे बढ़ाता और विकसित करता है, हर करने वाले के अनुसार ﴿وَٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ بَصِيرٌ﴾ "और अल्लाह तुम्हारे कामों को देखता है", मतलब उसके बंदों के कोई कार्य उससे छिपा नहीं है।[1]

अल्लाह तआला के कथनः ﴿كَمَثَلِ جَنَّةِۭ بِرَبۡوَةٍ﴾ "जैसे बगीचा एक ऊँचे स्थान पर है," मतलब यह है कि यह कार्य दान का, उसकी उन्नति और महत्वपूर्ण स्थिति के साथ, उस बगीचे के समान है जो ऊँचे स्थान पर स्थित है। यह कार्य उच्च स्थिति पर है, जो किसी भी प्रकार के कष्ट से मुक्त है। यह बताता है कि उस दान का महत्व और श्रेष्ठता जो एहसान जताने और कष्ट से मुक्त है। बगीचे के दृश्य की सुंदरता, सुगंध की सुंदरता, और हरीतिमा की सुंदरता, यह दान की सुंदरता की तरह है। और जब बगीचा भलाई से भरपूर होता है: फलों और विविध खाद्य पदार्थों से, तो इसी प्रकार, दान के विभिन्न रूप भी भलाई की ओर ले जाते हैं, और इसके विविध इनाम होते हैं, जो दान करने वाले के लिए नुकसान को दूर करते हैं, पापों की माफी, और उच्च दर्जे और महान इनाम प्रदान करते हैं। और जब बगीचा दूसरों को भलाई देता है, तो दान करने वाला भी दूसरों को भलाई देता है: लोगों और जानवरों को, और सभी भलाई के रास्तों में।

उदाहरण की विशेषता यह बताती है कि इस्लाम का मार्गदर्शन शैक्षिक और नैतिक तरीकों को लागू करने में कितना ध्यान देता है। यह श्रोताओं के लिए आवश्यक ज्ञान को सर्वोत्तम और सबसे सटीक शैक्षिक और नैतिक तरीकों में पहुँचाता है। यह मोमिनों को इस शैली के उपयोग की पद्धति सिखाता है: इसकी सामग्री और छवि, और इसका उद्देश्य क्या है। यह उच्च अर्थों को श्रोताओं के मन में स्थापित करता है, और इसमें निहित नैतिकता और शिष्टाचार, और मानसिक छवियाँ, जो शिक्षार्थी की कल्पना को विस्तारित करती हैं, अतः क़ुरआन एक पूर्ण स्कूल है।

(1) पिछला संदर्भ।

फिर कुरआनी संदर्भ विभिन्न शिक्षा और अर्थ को निकट लाने के साधनों के साथ मोमिनों को इन ईमान की अवधारणाओं को उनके दिलों में मजबूत करने के लिए शिक्षित और निर्देशित करता रहता है। उनके कार्यों की सुरक्षा के लिए, ताकि वे सही दिशा में हों, और अल्लाह तआला के सीधे मार्ग पर हों।

अल्लाह तआला अपने मोमिन बंदों से कहता है: ﴿ أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَن تَكُونَ لَهُۥ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ لَهُۥ فِيهَا مِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِ وَأَصَابَهُ ٱلْكِبَرُ وَلَهُۥ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ فَأَصَابَهَآ إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَٱحْتَرَقَتْ ﴾ (क्या तुममें से कोई चाहेगा कि उसके खजूर तथा अँगूरों के बाग़ हों, जिनमें नहरें बह रही हों, उनमें उसके लिए प्रत्येक प्रकार के फल हों तथा वह बूढ़ा हो गया हो और उसके निर्बल बच्चे हों, फिर वह बगोल के आघात से जिसमें आग हो, झुलस जाये) इसमें एक दिव्य मार्गदर्शन और शिक्षा है प्रत्येक विश्वास करने वाले दान करने वाले के लिए, जिसमें इस महान आयत के महत्वपूर्ण संकेत शामिल हैं।

शिक्षा के उद्देश्य से इस आयत की शुरुआत एक ऐसे प्रश्न से की गई है, जो सोच और विचार को प्रेरित करता है। यह प्रश्न एक स्वस्थ मस्तिष्क को इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बाध्य करता है कि एक दानी का हाल इस उपमा के समान नहीं होना चाहिए। इस उपमा की शुरुआत प्रश्न से हुई: ﴿أَيَوَدُّ﴾ "क्या तुममें से कोई यह पसंद करेगा?" यह इस बात की ओर संकेत करता है कि क्या कोई चाहता है कि उसके पास ऐसा बाग हो, जिसमें खजूर और अंगूर के साथ-साथ हर प्रकार के फल हों, और उसके बीच नहरें बहती हों। लेकिन उस व्यक्ति की स्थिति यह हो कि वह स्वयं बूढ़ा हो ﴿وَلَهُۥ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ﴾ और उसकी संतान कमजोर हो। इस अवस्था में उस बाग पर एक ऐसा प्रचंड तूफान आए, जिसमें आग हो, और वह बाग पूरी तरह जलकर नष्ट हो जाए ﴿فَأَصَابَهَآ إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَٱحْتَرَقَتْ﴾ यह स्थिति अत्यधिक पीड़ा और दुख को दर्शाती है। अल्लामा शौकानी ने इसे इस प्रकार वर्णित किया: "यह उन लोगों की स्थिति का उदाहरण है, जो अच्छे कार्य करते हैं, लेकिन उन कार्यों के साथ ऐसे कर्म मिलाते हैं, जो उन्हें नष्ट कर देते हैं। परिणामस्वरूप, उनके कर्म प्रलय के दिन उनके किसी काम नहीं आते, जब उन्हें उनकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है"।[1]

इससे यह स्पष्ट होता है कि कार्य की गुणवत्ता उसकी मात्रा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि वह अल्लाह के आदेश और इच्छाओं के अनुसार है या नहीं। जो अपने दान या व्यय में अल्लाह की निर्धारित शर्तों का पालन नहीं करता, उसका कार्य उस

(1) फ़त्हुल क़दीर, लेखकः शौकानी (1/ 288)।

दिन उसके लिए एक दुखदायी बोझ बन जाएगा, जब उसे स्वीकार्य कार्यों की अत्यधिक आवश्यकता होगी।

इस आयत से यह शिक्षा मिलती है कि कार्य को केवल अल्लाह के लिए किया जाना चाहिए, और इसे दिखावे, अहंकार, या किसी भी प्रकार की स्वार्थपरकता से मुक्त रखना चाहिए, क्योंकि ये सभी कार्यों को निष्फल कर देते हैं। इस प्रकार, अल्लाह तआला ने बार-बार निर्देश देकर और उदाहरण देकर इस बात पर जोर दिया है कि दान के इस पहलू पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। क्योंकि ऐसा नुकसान, जैसा कि इस उपमा में दिखाया गया है, अत्यधिक कष्टदायक और अनर्थकारी हो सकता है।

फिर अल्लाह तआला अपने बंदों पर पूरी स्पष्टता के साथ अपनी आयतों का वर्णन करता है: ﴿كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمُ ٱلْأَيَٰتِ﴾ इस प्रकार अल्लाह तआला की आयतों और उनके उद्देश्य को पूरी तरह से स्पष्ट किया गया है, जो वह अपने बंदों से चाहते हैं, और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग को बताया गया है। इसके बाद, अल्लाह तआला अपने बंदों को निर्देश देते हैं कि वे सोच-विचार करें, जैसे कि वह कहते हैं: ﴿لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ﴾ यह निर्देश उन्हें चिंतन और ध्यान करने की ओर प्रेरित करता है, ताकि वे अल्लाह के आदेशों और निवारणों को समझकर, उसी अनुसार कार्य करें। इस निर्देश में अल्लाह तआला का आदेश और निषेध दोनों शामिल हैं, और यह बताया गया है कि उनके आदेशों के अनुसार कार्य करने के लिए यह ज़रूरी है कि इंसान पूरी तरह से समझे और उस पर विचार करे। यह स्पष्ट करता है कि अल्लाह तआला की आयतों पर विचार करना और उन पर ग़ौर करना कितना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही विचार उनके नियमों और शरीअत को समझने का मार्ग है, जिससे इंसान अल्लाह की इच्छाओं के अनुसार अपने कार्यों को अंजाम दे सके।

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَنفِقُواْ مِن طَيِّبَٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ ٱلْأَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُواْ ٱلْخَبِيثَ مِنْهُ تُنفِقُونَ وَلَسْتُم بِـَٔاخِذِيهِ إِلَّآ أَن تُغْمِضُواْ فِيهِ ۚ وَٱعْلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ غَنِىٌّ حَمِيدٌ ﴿٢٦٧﴾﴾[سورة البقرة:٢٦٧]

(हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीजों में से, जो तुमने कमाई हैं तथा उन चीज़ों में से, जो हमने तुम्हारे लिए धरती से उपजायी हैं, दान करो तथा उसमें से उस चीज़ को दान करने का निश्चय न करो, जिसे तुम स्वयं न ले सको, परन्तु ये कि अनदेखी कर जाओ तथा जान लो कि अल्लाह निःस्पृह, प्रशंसित है)।

संदेश का यह सिलसिला जारी रखते हुए, क़ुरआनी संदर्भ में अल्लाह तआला अपने बंदों को दान देने, इसके तरीके और नैतिकता को सिखाते हैं, ताकि उनके कर्मों और जीवन में

सुधार हो सके, जो उन्हें इस दुनिया और आख़िरत में भलाई प्रदान करें। वह कहते हैं: ﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَنفِقُواْ مِن طَيِّبَٰتِ مَا كَسَبۡتُمۡ وَمِمَّآ أَخۡرَجۡنَا لَكُم مِّنَ ٱلۡأَرۡضِۖ ﴾ (हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीजों में से, जो तुमने कमाई हैं तथा उन चीज़ों में से, जो हमने तुम्हारे लिए धरती से उपजायी हैं) यह ईश्वर का मार्गदर्शन है जो विश्वासियों को उनके उच्चतम दर्जे के साथ संबोधित करता है, जो अपने साथ प्रोत्साहन और प्रेरणा की गहरी अर्थवत्ता को समेटे हुए है। इस उच्च स्थान के योग्य केवल वही कार्य हैं जो उचित और उत्तम होते हैं। इस्लाम में यह संदेश है कि विश्वासियों का दान उसी तरह से होना चाहिए जैसा इस आदेश में बताया गया है, जो सीधे तौर पर अल्लाह तआला की ओर से है।

अल्लाह तआला अपने बंदों को यह आदेश देते हैं कि वे अपनी कमाई में से सबसे उत्तम चीज़ों का दान करें और निम्न गुणवत्ता वाली चीज़ों से दूर रहें: "أَنفِقُوا مِن طَيِّبَٰتِ مَا كَسَبۡتُمۡ" यहाँ पर आदेश की विशेषता इस प्रकार है कि यह विश्वासियों को अपने दान में श्रेष्ठता का चयन करने के लिए प्रेरित करता है। यह आदेश केवल अच्छी चीज़ों को दान करने की अनिवार्यता को दर्शाता है। आयत में "مِن طَيِّبَٰتِ مَا كَسَبۡتُمۡ" में "طيبات" (श्रेष्ठता) का शब्द पूरी तरह से व्यापक है, जिसका अर्थ है कि दान में किसी भी प्रकार की अच्छी और श्रेष्ठ चीज़ों को शामिल किया जाए, चाहे वह कुल मिलाकर हो या विशेष रूप से। इसमें न केवल चीज़ों की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है, बल्कि उन चीज़ों के प्रकार और मात्रा का भी विचार किया गया है। इसका तात्पर्य यह है कि दान में कोई भी उत्तम चीज़ शामिल होनी चाहिए, और खराब चीज़ों को इससे बाहर रखा जाए। आयत में "مِمَّا أَخۡرَجۡنَا لَكُم مِّنَ الۡأَرۡضِ" का तात्पर्य यह है कि इसमें न केवल मनुष्य द्वारा अर्जित धन शामिल है, बल्कि वह भी जो पृथ्वी से निकाला जाता है, जैसे कि कृषि, खनिज और अन्य प्राकृतिक संसाधन। साथ ही, व्यापार, उत्पादन और निर्माण के माध्यम से अर्जित संपत्ति भी इस आदेश में सम्मिलित है। इस प्रकार, यह निर्देश सभी प्रकार की कमाई और संपत्ति को समाहित करता है, जो या तो मेहनत से होती है या प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त होती है।

इस महान निर्देश का एक लाभ यह है कि इसमें निर्देश की सटीकता और व्यापकता है, जो सभी प्रकार की कमाई और जो धरती से निकलता है, चाहे प्रयास से हो या बिना प्रयास के, जैसे कि जो अल्लाह तआला की बारिश से उत्पन्न होता है, को शामिल करता है। अल्लाह तआला ने अपने बंदों पर कृपा की है कि उस ने दान की मात्रा को उस पर छोड़ दिया है जो आत्मा को अच्छा लगे, क्योंकि (مِن) "से" शब्द " طَيِّبَٰتِ अच्छे हिस्से" से पहले आया है, जिससे हिस्से का अर्थ निकलता है: " مِن طَيِّبَٰتِ مَا كَسَبۡتُمۡ अपने कमाई के अच्छे हिस्से से"। लेकिन ज़कात को शरीअत की स्पष्ट पुस्तकों द्वारा निर्दिष्ट किया गया है।

और अल्लाह तआला के कथन ﴿وَمِمَّآ أَخۡرَجۡنَا لَكُم مِّنَ ٱلۡأَرۡضِۖ﴾ "और जो हमने तुम्हारे लिए धरती से निकाला है" में, अल्लाह तआला ने फसल के निकालने और उगाने को अपने लिए विशेष किया है, क्योंकि किसान भूमि जोतता है और बीज बोता है, और फिर इंतजार करता है। अल्लाह तआला वह हैं जो इस बीज को अपनी शक्ति और उत्कृष्ट निर्माण के साथ विभिन्न विकास चरणों में परिवर्तित करते हैं, ताकि यह भूमि के भीतर से निकलता है, फिर भूमि पर बढ़ता है, फिर बड़ा होता है और फलता है। इसमें ध्यान आकर्षित किया जाता है कि अल्लाह तआला पौधों और फसलों के रचयिता हैं, और उन्हें अपनी कृपा और उदारता के रूप में भूमि से निकालते हैं। अल्लाह की कृपा हर जगह है, जैसा कि उन्होंने सूरे वाकिया में स्पष्ट किया है: ﴿أَفَرَءَيۡتُم مَّا تَحۡرُثُونَ ٦٣ ءَأَنتُمۡ تَزۡرَعُونَهُۥٓ أَمۡ نَحۡنُ ٱلزَّٰرِعُونَ ٦٤﴾ "क्या तुमने देखा जो तुम जोतते हो? क्या तुम उसे उगाते हो या हम ही उगाने वाले हैं?"। अल्लाह ने कमाई को बंदों के लिए विशेष किया है: ﴿مِن طَيِّبَٰتِ مَا كَسَبۡتُمۡ﴾ "जो हमने तुम्हारे लिए धरती से निकाला है", तथा अल्लाह तआला ने जो धरती से निकलता है, उसे अपने लिए विशेष किया है: ﴿وَمِمَّآ أَخۡرَجۡنَا لَكُم مِّنَ ٱلۡأَرۡضِ﴾ "जो हमने तुम्हारे लिए धरती से निकाला है"। यह उनकी कृपा और उत्कृष्टता को दर्शाता है, और यह बताता है कि उनकी बिना मदद के इन फसलों और अन्य चीजों को निकालने और बनाने में इंसानों की असमर्थता को दर्शाता है। यह बयान की सटीकता और हमारे परमेश्वर के वचन की महानता को दर्शाता है। (سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ) **सुब्हान अल्लाहि अल-अज़ीम व बिहम्दिह** (महान और प्रशंसा के योग्य अल्लाह की महिमा हो)।

फिर अल्लाह तआला दान के चयन के शिष्टाचार और नैतिकता को स्पष्ट करता है: ﴿وَلَا تَيَمَّمُواْ ٱلۡخَبِيثَ مِنۡهُ تُنفِقُونَ﴾ "खराब (और घटिया चीज़ में) से दान न करो"। इसका मतलब है कि अपनी कमाई से खराब और घटिया चीज़ों को चुनने और दान करने का इरादा न करो। अल्लाह तआला ने यह आदेश दिया कि खराब और घटिया चीज़ों को चुनकर खर्च न करें। शब्द "تَيَمَّمُواْ" का अर्थ है खोजबीन, चयन, और जानबूझकर खराब चीज़ों को चुनने का प्रयास। वहीं, शब्द "ٱلۡخَبِيثَ" हर उस चीज़ को सम्मिलित करता है जो खराब और अनावश्यक हो। इस महान बयान ने खराब और घटिया क़िस्म के किसी भी प्रकार, स्थिति, या स्तर की संपत्ति या उत्पादन को खर्च करने से मना किया। यह एक विस्तृत और गहरी शिक्षा है जो खर्च के मामले में उत्कृष्टता और पूर्णता को अनिवार्य ठहराती है। फिर अल्लाह तआला ने कहा: ﴿وَلَسۡتُم بِـَٔاخِذِيهِ إِلَّآ أَن تُغۡمِضُواْ فِيهِ﴾ इस आदेश में अल्लाह तआला ने खर्च करने वाले को उसकी अपनी स्थिति पर लौटाया है, ताकि वह इस बात को महसूस करे और कल्पना करे कि अगर उसे वही घटिया चीज़ दी जाए, जिसे उसने दूसरों को दिया है, तो वह उसे स्वीकार नहीं करेगा, सिवाय इसके कि

वह उसकी घटिया स्थिति पर नज़रअंदाज़ कर दे। इस तरह, अल्लाह तआला ने खर्च करने वाले को स्वयं के अंतर्मन में लौटाया, ताकि यह एक प्रेरणा बने कि वह खर्च के हर पहलू को समझ सके और खर्च में चयन की महत्वता और प्रभाव को महसूस कर सके। यदि आप अपने लिए ऐसी चीज़ स्वीकार नहीं करेंगे, तो इसे दूसरों के लिए स्वीकार न करें। यह शिक्षण और प्रशिक्षण की दृष्टि से यह लाभ देता है कि वह शिक्षक, मार्गदर्शक, उपदेशक, प्रशिक्षक, और सामान्यतः प्रत्येक संबोधित व्यक्ति को वास्तविकता की ओर लौटाए, उसे उस स्थिति में रखकर जिसे निर्देशित किया जा रहा है। ताकि वह पूरे परिप्रेक्ष्य और सभी कोणों से तस्वीर को स्पष्ट रूप से देख सके। यह बिल्कुल उस ह़दीस़ के समान है जिसमें मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है: "तुममें से कोई तब तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिए वही न चाहे जो वह अपने लिए चाहता है"।[1]

इस आदर्श मार्गदर्शन में, उत्तम, शुद्ध और पवित्र वस्तुओं को खर्च करने के लिए चुनने का निर्देश दिया गया है, जो अल्लाह की इस विशेषता के अनुरूप है कि "अल्लाह तआला केवल शुद्ध चीज़ ही स्वीकार करता है।" यह ईमानदार को उदारता, आत्म-त्याग, और आत्मा के स्वार्थपूर्ण प्रवृत्तियों पर विजय पाने की शिक्षा देता है। जब आत्मा इस आदत और प्रशिक्षण को अपनाती है, तो यह उसका स्वाभाविक गुण बन जाता है। इसके अतिरिक्त, इस निर्देश में यह लाभ भी है कि अच्छे और सुंदर दान से प्राप्तकर्ता के हृदय को प्रसन्नता मिलती है, और वह इसे संतोषपूर्वक स्वीकार करता है तथा दाता के लिए प्रार्थना करता है। इसके परिणामस्वरूप, समाज में परस्पर भाईचारा और एकजुटता बढ़ती है। चाहे यह जकात हो या साधारण दान, यह दान दयालुता, नेकी, और परस्पर जुड़ाव का कारण बनता है, और अल्लाह की आज्ञा का पालन करने की इच्छा को प्रोत्साहित करता है।

इस आयत में आदेश और निषेध दोनों दिए गए हैं। आदेश वह है जो अल्लाह तआला ने कहा: ﴿أَنفِقُواْ مِن طَيِّبَٰتِ﴾ (अच्छी चीज़ों से खर्च करो) और निषेध यह है जो अल्लाह ने कहा: ﴿وَلَا تَيَمَّمُواْ ٱلۡخَبِيثَ مِنۡهُ﴾ "और खराब (खबीस) चीज़ को न चुनो"। यह स्पष्टता इस बात का प्रमाण है कि स्पष्ट रूप से समझाना कितना महत्वपूर्ण है, ताकि संबोधित व्यक्ति इस आदेश की अहमियत को समझे और इसे लागू करने में प्रयास करे।

इसके बाद, यह महान आयत एक सम्मानजनक निर्देश के साथ समाप्त होती है, जिसमें अल्लाह तआला ने कहा: ﴿وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ﴾ "और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़ (स्वतंत्र) और प्रशंसनीय है"। इस दिव्य निर्देश की शुरुआत "जान लो" के आदेश के साथ होती

(1) बुख़ारी (1/ 21) ह़दीस़ संख्या (13), मज्मउज़्ज़वाइद (1/ 100)।

है, यह बताने के लिए कि अल्लाह तआला स्वयं पूर्ण रूप से अपने बंदों से, उनके द्वारा कमाए गए धन से, और उनके द्वारा खर्च की जाने वाली चीज़ों से मुक्त है। यह समझाता है कि यह खर्च करना वास्तव में तुम्हारे लिए है, क्योंकि इसका सवाब अल्लाह तआला से मिलेगा। अन्यथा, अल्लाह तआला किसी चीज़ का मुहताज नहीं है। वह हर चीज़ में पूर्ण और सक्षम है, चाहे गरीब और जरूरतमंद को अमीर बनाने की बात हो या समाज में विभिन्न वर्गों के बीच विभाजन को खत्म करने की। साथ ही, अल्लाह तआला ﴿حَمِيدٌ﴾ "प्रशंसनीय (हमीद)" है। वह आकाश और पृथ्वी, पहले और अंत में, अपने कार्यों और अपने आदेशों में प्रशंसनीय है। वह अपनी हर चीज़ में प्रशंसनीय है: अपने निर्देशों में, अपने गुणों में, और अपने सभी कार्यों में। जब बंदा अल्लाह तआला की सुंदर नामों और विशेषताओं को समझता है, तो यह उसे आज्ञाकारिता, भरोसा और अल्लाह तआला पर पूरी तरह निर्भर होने की प्रेरणा देता है। इस आयत के शब्द ﴿وَٱعۡلَمُوٓاْ﴾ "और जान लो" में यह लाभ निहित है कि अल्लाह तआला के नामों और गुणों को जानना अनिवार्य है। इन नामों और गुणों में से कुछ इस महान आयत में उल्लिखित हैं: ﴿وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ﴾ "और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़ और प्रशंसनीय है"।

﴿ٱلشَّيۡطَٰنُ يَعِدُكُمُ ٱلۡفَقۡرَ وَيَأۡمُرُكُم بِٱلۡفَحۡشَآءِۖ وَٱللَّهُ يَعِدُكُم مَّغۡفِرَةٗ مِّنۡهُ وَفَضۡلٗاۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٞ ٢٦٨﴾ [سورة البقرة:٢٦٨].

(शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है तथा निर्लज्जा की प्रेरणा देता है तथा अल्लाह तुम्हें अपनी क्षमा और अधिक देने का वचन देता है तथा अल्लाह विशाल ज्ञानी है)।

फिर क़ुरआन का यह मार्गदर्शन लालच, स्वार्थ, और खर्च से भय जैसी मानसिकताओं की ओर ध्यान केंद्रित करता है। अल्लाह तआला इस आयत में उन कारणों को स्पष्ट करता है जो इंसान को लालच और कंजूसी की ओर ले जाते हैं और साथ ही उन्हें इन बुरी आदतों से छुटकारा पाने का उपाय भी प्रदान करता है। अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿ٱلشَّيۡطَٰنُ يَعِدُكُمُ ٱلۡفَقۡرَ وَيَأۡمُرُكُم بِٱلۡفَحۡشَآءِۖ وَٱللَّهُ يَعِدُكُم مَّغۡفِرَةٗ مِّنۡهُ وَفَضۡلٗاۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٞ ٢٦٨﴾ (शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है तथा निर्लज्जा की प्रेरणा देता है तथा अल्लाह तुम्हें अपनी क्षमा और अधिक देने का वचन देता है तथा अल्लाह विशाल ज्ञानी है)।

यह आयत उन डर और वजहों को बताती है जो इंसान को अल्लाह की राह में खर्च करने और दान करने से रोकते हैं। शैतान इंसान को गरीबी का डर दिखाकर उसे फुसलाता है। वह दिल में यह वहम डालता है कि यदि वह अल्लाह की राह में खर्च करेगा, तो उसका माल खत्म हो जाएगा। ﴿ٱلشَّيۡطَٰنُ يَعِدُكُمُ ٱلۡفَقۡرَ وَيَأۡمُرُكُم بِٱلۡفَحۡشَآءِۖ﴾, शैतान इंसान को दान से रोकने

के लिए उसके दिल में कमी और घाटे का डर पैदा करता है। वह उसे इस बात पर उकसाता है कि वह अपनी अच्छी चीजों को बचाकर रखे और खराब चीजों को ही दान करे। यह सोच इंसान को लालची और कंजूस बना देती है।

साथ ही, शैतान इंसान को अश्लीलता और अनैतिकता की ओर उकसाता है। ﴿وَيَأۡمُرُكُم بِٱلۡفَحۡشَآءِۖ وَٱللَّهُ﴾ "और वह तुम्हें अश्लीलता का हुक्म देता है", यहाँ अश्लीलता (फहश) का व्यापक अर्थ है, जिसमें हर तरह की अनैतिकता और बुराई शामिल है। इसमें कंजूसी, धन का अनुचित उपयोग, और इसे गलत राहों में खर्च करना शामिल है। शैतान इन चीज़ों को आकर्षक बनाकर इंसान को उनकी ओर खींचता है। इस आयत में ﴿وَيَأۡمُرُكُم بِٱلۡفَحۡشَآءِۖ وَٱللَّهُ﴾ "और वह तुम्हें अश्लीलता का हुक्म देता है" शब्दों से यह पता चलता है कि शैतान अपने प्रभाव को आदेश तक बढ़ा लेता है, यानी वह बुराई का प्रचारक बनता है। यह इंसानों के लिए चेतावनी और सतर्कता है कि शैतान का प्रभाव कितना गहरा हो सकता है। इसलिए, मुसलमानों को शैतान के इस प्रभाव से बचने और उससे हर समय अल्लाह की पनाह मांगने की आवश्यकता है, विशेष रूप से उन अवसरों पर जब वह अपने प्रभाव को प्रबल करने की कोशिश करता है।

और अल्लाह तआला अपने वादे में माफी और फ़ज़्ल (अति कृपा) का ज़िक्र करता है: ﴿وَٱللَّهُ يَعِدُكُم مَّغۡفِرَةً مِّنۡهُ وَفَضۡلًاۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ﴾ (तथा अल्लाह तुम्हें अपनी क्षमा और अधिक देने का वचन देता है तथा अल्लाह विशाल ज्ञानी है) अल्लाह तआला माफी और अनुग्रह (फ़ज़्ल) का वादा करते हैं, और उनका वादा सच्चा है। यह वादा इस बात को स्पष्ट करता है कि जो व्यक्ति उनकी राह में खर्च करेगा, अल्लाह उसकी गलती और पापों को माफ करेंगे। साथ ही, उसे उनके फ़ज़्ल (दया और अनुग्रह) से नवाजा जाएगा। फ़ज़्ल का अर्थ, जैसा कि इमाम शौकानी रहमतुल्लाह अलैह ने कहा है, यह है कि अल्लाह उस पर अधिक इनाम करेगा, जो उसने खर्च किया है। वह उसकी रोज़ी को बढ़ा देगा और आख़िरत (परलोक) में उसे उससे भी बढ़कर, बेहतर, और अधिक महान इनाम देगा।[1] अल्लाह का यह वादा एक मोमिन (विश्वासी) को उदारता और खुलकर खर्च करने के लिए प्रेरित करता है। वह गरीबी से नहीं डरता, बल्कि अल्लाह की ओर से समृद्धि और कृपा की आशा करता है। इसी कारण, वह अपने खर्च के लिए सबसे अच्छी और स्वच्छ चीज़ों का चयन करता है, क्योंकि वह उनका इनाम कृपालु और दयालु अल्लाह से चाहता है।

(1) फ़त्हुल क़दीर, लेखकः शौकानी (1/ 289)।

फिर इस आयत का समापन उन शब्दों से होता है जो इस संदर्भ के लिए उपयुक्त हैं: ﴿وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ﴾ "और अल्लाह व्यापक (कृपालु) और सब कुछ जानने वाला है"। अल्लाह अपनी कृपा और दानशीलता में व्यापक है। उसकी क्षमता और ज्ञान असीम है। उसके उपहारों और दान की कोई सीमा नहीं, और उसकी महानता का वास्तविक अर्थ केवल वही जानता है। वह इस बात को जानते हैं कि मोमिन क्या खर्च करता है, कैसे खर्च करता है, किस चीज़ से खर्च करता है, और क्यों खर्च करता है। उनकी जानकारी में कुछ भी छिपा नहीं है। यह आयत इस ओर इंगित करती है कि अल्लाह की महानता और उनके गुणों को जानने से मोमिन को हर भलाई करने और हर बुराई से बचने की प्रेरणा मिलती है।

﴿يُؤْتِي ٱلْحِكْمَةَ مَن يَشَآءُ ۚ وَمَن يُؤْتَ ٱلْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ ﴿٢٦٩﴾﴾ [سورة البقرة:٢٦٩].

(वह जिसे चाहे, प्रबोध (धर्म की समझ) प्रदान करता है और जिसे प्रबोध प्रदान कर दिया गया, उसे बड़ा कल्याण मिल गया और समझ वाले ही शिक्षा ग्रहण करते हैं)।

फिर अल्लाह तआला हिकमत (ज्ञान और विवेक) की फज़ीलत (महानता) और उसे प्राप्त करने वाले की विशिष्टता को स्पष्ट करता है, और यह भी बताता है कि केवल वही इसे प्रदान करने वाला है:

﴿يُؤْتِي ٱلْحِكْمَةَ مَن يَشَآءُ ۚ وَمَن يُؤْتَ ٱلْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ﴾ "वह (अल्लाह) हिकमत प्रदान करता है जिसे वह चाहता है। और जिसे हिकमत दी गई, उसे बहुत बड़ी भलाई दी गई।" इस आयत के आरंभ में, यह स्पष्ट किया गया है कि हिकमत का दान केवल अल्लाह तआला द्वारा होता है ﴿يُؤْتِي ٱلْحِكْمَةَ﴾। कोई भी प्राणी इसे स्वयं प्राप्त नहीं कर सकता, न ही किसी अन्य को प्रदान कर सकता है। यह केवल अल्लाह ही हैं जो इसे अपनी इच्छा से प्रदान करते हैं। "ٱلْحِكْمَةَ हिकमत" का अर्थ और उसकी व्याख्या व्यापक है। इसमें अनेक पहलू शामिल हैं, जैसे: नुबुव्वत (पैग़ंबरी), क़ुरआन का सही समझ, इल्म (ज्ञान) और फिक़्ह (धार्मिक समझ),सही निर्णय लेना, अल्लाह से डरना और धर्म में संयम बरतना, समझ और विवेक[1], इमाम इब्न -ए- कसीर रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं: हिकमत केवल नुबुव्वत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उससे अधिक व्यापक है। हालांकि नुबुव्वत इसका उच्चतम स्तर है।[2] यह विस्तृत

(2) ज़ाद उल मसीर फ़ी इल्म अत् तफ़्सीर, लेखकः इब्नुल जौज़ी (1/ 280), तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 329)।

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 329)।

व्याख्या इस बात की ओर संकेत करती है कि हिकमत में भलाई और विशिष्टताओं के अनेक पहलू समाहित हैं। यह क़ुरआन के बयान की महानता को दर्शाता है, जिसने "हिकमत" के शब्द में भलाई के सभी प्रकारों को समेट लिया है।

फिर अल्लाह तआला हिकमत प्राप्त करने वाले की श्रेष्ठता का उल्लेख करते हुए कहता है: ﴿وَمَن يُؤْتَ ٱلْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِىَ خَيْرًا كَثِيرًا﴾ "और जिसे हिकमत दी गई, उसे बहुत बड़ी भलाई दी गई।" यह दर्शाता है कि हिकमत प्राप्त करने वाला व्यक्ति महान नेमतों का अधिकारी है, क्योंकि हिकमत अल्लाह की इबादत (आराधना) और उसके आदेशों पर अमल की राह दिखाती है। हिकमत के माध्यम से: समझ और विवेक उजागर होते हैं, मनुष्य की बुद्धि और हिम्मत बढ़ती है, सत्य को सही स्थान पर रखा जाता है, नैतिकता और आचरण बेहतर होते हैं, ऐसा व्यक्ति समाज में सम्मान और प्रेम पाता है, इसलिए, हिकमत प्राप्त करने के लिए प्रयास करना चाहिए। इसे प्राप्त करने का सबसे महत्वपूर्ण तरीका है: अल्लाह से दुआ (प्रार्थना) करना, उसकी आज्ञाकारिता में प्रयास करना तथा इल्म (ज्ञान) प्राप्त करना, विशेषकर क़ुरआन और सुन्नत के माध्यम से।

फिर इस आयत का समापन एक महत्वपूर्ण नसीहत (उपदेश) के साथ होता है: ﴿وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ﴾"और इसे केवल वे लोग ही समझते हैं, जो बुद्धि वाले हैं।" यह दर्शाता है कि केवल वही लोग हिकमत और मसीहत की इस शिक्षा का लाभ उठा सकते हैं, जो बुद्धिमान और विवेकशील हैं। वे अल्लाह की बातों को समझते और उनसे लाभ प्राप्त करते हैं।

﴿وَمَآ أَنفَقْتُم مِّن نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُم مِّن نَّذْرٍ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُهُۥ ۗ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿٢٧٠﴾ إِن تُبْدُوا۟ ٱلصَّدَقَٰتِ فَنِعِمَّا هِىَ ۖ وَإِن تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا ٱلْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَيُكَفِّرُ عَنكُم مِّن سَيِّـَٔاتِكُمْ ۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٧١﴾﴾ [سورة البقرة:٢٧٠-٢٧١].

(तथा तुम जो भी दान करो अथवा मनौती मानो, अल्लाह उसे जानता है तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा। यदि तुम खुले दान करो, तो वह भी अच्छा है तथा यदी छुपाकर करो और कंगालों को दो, तो वह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। ये तुमसे तुम्हारे पापों को दूर कर देगा तथा तुम जो कुछ कर रहे हो, उससे अल्लाह सूचित है)।

फिर इन आयतों के बाद, यह आयत आती है जो संबोधित लोगों को अल्लाह तआला के व्यापक और पूर्ण ज्ञान को स्पष्ट करती है, जो वे इनफाक (दान) के रूप में करते हैं: ﴿وَمَآ أَنفَقْتُم مِّن نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُم مِّن نَّذْرٍ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُهُۥ﴾ यह आयत स्पष्ट करती है कि अल्लाह

तआला को यह ज्ञान है कि उसका बंदा कितनी भी छोटी या बड़ी, अच्छी या खराब, और कीमती या सामान्य कोई भी चीज़ खर्च करता है। यह ज्ञान इस बात का एहसास दिलाता है कि अल्लाह तआला की निगरानी बंदे को उसकी हर स्थिति में सही मार्ग पर रहने के लिए प्रेरित करती है।

आयत यह भी बताती है कि अल्लाह तआला को वह भी ज्ञान है जो बंदा अपनी मर्ज़ी से किसी इबादत (नज़र) के रूप में खुद पर लादता है, जो उस पर अनिवार्य नहीं थी: ﴿أَوْ نَذَرْتُم مِّن نَّذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ﴾ यह चेतावनी देता है कि बंदा अल्लाह तआला की मर्ज़ी के खिलाफ, खराब या अनुचित चीज़ खर्च करने से बचे, क्योंकि यह उसे नुकसान पहुंचा सकता है। फिर अल्लाह तआला ने ज़ालिमों को चेताया: ﴿وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ﴾। ज़ालिमों के लिए कोई सहायक नहीं होगा जो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा सके। यह अत्याचारियों के लिए एक गंभीर चेतावनी है।

इसके विपरीत, अल्लाह के लिए ईमानदारी से, बिना किसी दिखावे या कष्ट के अच्छा दान करना दानकर्ता के लिए एक महान भलाई है। क्योंकि यह अल्लाह तआला द्वारा स्वीकार किया जाता है, उसके इनाम को गुणा किया जाता है, और लोगों के बीच प्रिय होता है, जिन पर दान किया गया है। यह उनके दिलों को प्रसन्न करता है, उनका सम्मान करता है, और वे दानकर्ता के लिए दुआ और प्यार करते हैं। यह सामाजिक बंधन को मजबूत करता है।

फिर अल्लाह तआला ने सदक़े के प्रकट करने या छुपाने के हुक्म को स्पष्ट किया: ﴿إِن تُبْدُوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ﴾ प्रकट करना भी प्रशंसनीय है, लेकिन: ﴿وَإِن تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ﴾ छुपाकर देना अधिक उत्तम है।

और अल्लामा इब्न -ए- सअदी रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं: "शरीअत के नियम इस बात पर आधारित हैं कि भलाई को प्राथमिकता दी जाए। कभी-कभी सदक़े को प्रकट करना बेहतर हो सकता है, ताकि दूसरों को प्रेरणा मिले और वे भी भलाई के कामों में हिस्सा लें"।[1] इसलिए अल्लाह तआला ने दोनों तरीकों, प्रकट करने और छुपाने, की प्रशंसा की है। साथ ही, अल्लाह तआला ने यह भी स्पष्ट किया है कि जो सदक़ा प्रकट किया गया है, यदि उसकी नियत अच्छी हो, जैसे कि दूसरों को प्रेरित करना, तो यह और भी अधिक भलाई का कारण बन सकता है।

(1) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 215)

इस आयत से ये लाभ स्पष्ट होते हैं: अल्लाह तआला का सदक़े पर प्रशंसा करना: ﴿فَنِعِمَّا هِيَ﴾। दान करने वाले के लिए भलाई: ﴿فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ﴾। पापों का क्षमादान: ﴿وَيُكَفِّرُ عَنكُم مِّن سَيِّئَاتِكُمْ﴾। आयत का समापन एक महान नसीहत के साथ होता है: ﴿وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ﴾। अल्लाह तआला जानता है कि आपने क्या खर्च किया, कैसे किया, कितना किया, उसकी गुणवत्ता और नियत क्या थी। इस ज्ञान के साथ, अगर इंसान इनफाक के दौरान अल्लाह पर विश्वास बनाए रखे, तो वह उस पूर्णता को प्राप्त करता है जिसे अल्लाह तआला चाहता है।

﴿ ۞ لَّيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۗ وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنفُسِكُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٢﴾ ﴾ [سورة البقرة:٢٧٢]

(उन्हें सीधी डगर पर लगा देना, आपका दायित्व नहीं, परन्तु अल्लाह जिसे चाहे, सीधी डगर पर लगा देता है तथा तुम जो भी दान देते हो, तो अपने लाभ के लिए देते हो तथा तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ही देते हो तथा तुम जो भी दान दोगे, तुम्हें उसका भर पूर प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा और तुमपर अत्याचार नहीं किया जायेगा)।

फिर कुरआनी संदर्भ दान के संदर्भ में गैर-मुसलमानों के साथ व्यवहार करने पर ध्यान देता है। आयत यह स्पष्ट करती है कि मार्गदर्शन किसी सृष्टि के हाथ में नहीं है: ﴿لَّيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ﴾ "उनका मार्गदर्शन तुम्हारी जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है, उसे मार्गदर्शन करता है"। यह संबोधन नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर है, कि मार्गदर्शन की सफलता आपके हाथ में नहीं है, ताकि यह आपके ऊपर अनिवार्य हो जाए। आपका कर्तव्य मार्गदर्शन, बयान और निर्देशन है, और मार्गदर्शन की सफलता अल्लाह के हाथ में है। इसमें यह समझाने का उद्देश्य है कि तुम्हारी जिम्मेदारी उन्हें मार्गदर्शन करने की नहीं है। यह संबोधन पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर है, जिसमें यह बताया गया है कि मार्गदर्शन देने का अंतिम अधिकार (हिदायत तौफीक़ी) आपका कर्तव्य नहीं है। आपका काम केवल मार्गदर्शन का संदेश पहुँचाना, स्पष्ट करना और समझाना है। लेकिन हिदायत तौफीक़ी (जिससे कोई वास्तव में सही मार्ग पर आ जाए) केवल अल्लाह तआला की शक्ति में है।

इस आयत के माध्यम से, पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह चिंता और बोझ दूर कर दिया गया कि हर किसी को मार्गदर्शन देना उनकी ज़िम्मेदारी है। हालांकि, वह हिदायत के प्रति अत्यधिक चिंतित थे, जैसा कि एक अन्य आयत में कहा गया है: ﴿حَرِيصٌ عَلَيْكُم

﴿بِٱلۡمُؤۡمِنِينَ رَءُوفٞ رَّحِيمٞ﴾"वह तुम पर अत्यधिक दया करने वाले हैं और ईमान वालों के लिए बहुत ही सहृदय और दयालु हैं"। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि किसी भी इंसान को दूसरों को ज़बरदस्ती हिदायत पर लाने का अधिकार नहीं है। हिदायत केवल अच्छे आचरण, दुआ और प्रेरणादायक उदाहरण के माध्यम से दी जा सकती है। यह दावत (प्रचार) के क्षेत्र में एक बहुत महत्वपूर्ण सबक है। यह भी समझा जा सकता है कि दूसरों के लिए अल्लाह से हिदायत की दुआ करना कितना महत्वपूर्ण है, साथ ही इस्लाम के मार्ग, उसकी अच्छाइयों और उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना भी। पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ की थी: "ऐ अल्लाह, इस्लाम को अबू जहल इब्न हिशाम या उमर (इब्न खत्ताब) में से किसी एक के माध्यम से शक्ति प्रदान कर। इस दुआ का नतीजा यह हुआ कि अगले ही दिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम कबूल कर लिया"।[1] तथा पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी दुआ की थी: "ऐ अल्लाह, दोस (क़बीले) को हिदायत दे और उन्हें (इस्लाम की ओर) ले आ"।[2]

तफ़सीर में यह उल्लेख मिलता है कि जब पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्लाम स्वीकार करने के उद्देश्य से मुशरिकों (अल्लाह का इंकार करने वालों) पर सदक़ा करने से मना किया, तो यह आयत नाज़िल हुई।[3] चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह आदेश देते थे कि सदक़ा केवल मुसलमानों को ही दिया जाए। फिर यह आयत नाज़िल हुई, तो उसके बाद पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर धर्म के ज़रूरतमंद को सदक़ा देने का हुक्म दिया।[4] यह स्पष्ट करता है कि इस्लाम का मार्ग अल्लाह तआला द्वारा निर्धारित मार्ग है। जब अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस विषय में राय को सही नहीं ठहराया, तो यह दर्शाता है कि यह धर्म केवल मानव प्रयास का परिणाम नहीं है, बल्कि यह अल्लाह के द्वारा भेजा गया है। इस्लाम का मार्ग मुसलमानों और गैर-मुसलमानों दोनों के लिए रहमत है। इस्लाम की शिक्षाओं और उसकी दानशीलता की सहिष्णुता को देखकर, गैर-मुसलमान भी इसकी ओर आकर्षित होते हैं। यह दया और सत्यता केवल वही प्रदान कर सकता है जो इस ब्रह्मांड का रचयिता और मालिक है।

आगे, यह आयत मानव मन की उन चिंताओं को संबोधित करती है जो खर्च और दान के परिणामों को लेकर हो सकती हैं। आयत सिखाती है कि जो कुछ तुम खर्च करते हो, उसका लाभ तुम्हारे लिए ही है: ﴿وَمَا تُنفِقُواْ مِنۡ خَيۡرٖ فَلِأَنفُسِكُمۡۚ﴾ "जो कुछ भी तुम भलाई में से खर्च

(2) तिर्मिज़ी (5/ 577) ह़दीस़ संख्या (3638) एवं (3681)।

(3) बुख़ारी (2/ 341) ह़दीस़ संख्या (2937)।

(4) तफ़्सीरुल् जलालैन, पृष्ठ (46)।

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 331)।

करते हो, तो वह तुम्हारे ही लिए है"। अर्थात, तुम्हारी दुनिया और आख़िरत दोनों में उसका प्रतिफल तुम्हें मिलेगा। दुनिया में इसे बरकत, बुराइयों को दूर करने और रिज़्क़ में वृद्धि के रूप में प्राप्त होगा। आख़िरत में इसे अल्लाह की माफी, ऊंचे दर्जे, और उसके असीम अनुग्रह के रूप में दिया जाएगा। आगे, आयत स्पष्ट करती है कि खर्च केवल अच्छे और शुद्ध साधनों से होना चाहिए: ﴿مِّنۡ خَيۡرٍ﴾ "भलाई में से"। यह खराब और घटिया चीजों को बाहर करता है, जिससे व्यक्ति अपने बेहतरीन साधनों से खर्च करने के लिए प्रेरित होता है। फिर अल्लाह तआला यह समझाते हैं कि खर्च केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिए होना चाहिए: ﴿وَمَا تُنفِقُونَ إِلَّا ٱبۡتِغَآءَ وَجۡهِ ٱللَّهِ﴾ "तुम केवल अल्लाह के चेहरे (उसकी प्रसन्नता) की प्राप्ति के लिए खर्च करते हो"। इसका अर्थ है कि खर्च में दिखावा, नाम कमाने की चाह, या दूसरों के लिए किसी प्रकार की संतुष्टि का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। इमाम इब्न -ए- कसीर रहिमहुल्लाह कहते हैं: "जब तुम अल्लाह की प्रसन्नता के लिए देते हो, तो इस बात की परवाह मत करो कि वह (दान) किसके पास जाता है"(1)। दान का प्रतिफल अल्लाह तआला के पास सुरक्षित है। यह नियम दान देने वालों को मानसिक शांति प्रदान करता है और इस्लाम की शिक्षाओं की गहराई को दर्शाता है। अंत में, अल्लाह तआला यह स्पष्ट करता है कि जो कुछ भी खर्च किया जाता है, वह अल्लाह के पास संरक्षित है और उसमें किसी प्रकार का अन्याय नहीं होगा: ﴿وَمَا تُنفِقُواْ مِنۡ خَيۡرٍ يُوَفَّ إِلَيۡكُمۡ وَأَنتُمۡ لَا تُظۡلَمُونَ﴾ "जो कुछ भी तुम भलाई में से खर्च करते हो, वह तुम्हें पूरी तरह लौटाया जाएगा और तुम्हारे साथ अन्याय नहीं किया जाएगा।" यह आयत दान देने वाले के लिए आश्वासन और प्रोत्साहन का स्रोत है।

﴿لِلۡفُقَرَآءِ ٱلَّذِينَ أُحۡصِرُواْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ لَا يَسۡتَطِيعُونَ ضَرۡبٗا فِي ٱلۡأَرۡضِ يَحۡسَبُهُمُ ٱلۡجَاهِلُ أَغۡنِيَآءَ مِنَ ٱلتَّعَفُّفِ تَعۡرِفُهُم بِسِيمَٰهُمۡ لَا يَسۡـَٔلُونَ ٱلنَّاسَ إِلۡحَافٗاۗ وَمَا تُنفِقُواْ مِنۡ خَيۡرٖ فَإِنَّ ٱللَّهَ بِهِۦ عَلِيمٌ ٢٧٣﴾ [سورة البقرة:٢٧٣]

(दान उन निर्धनों (कंगालों) के लिए है, जो अल्लाह की राह में ऐसे घिर गये हों कि धरती में दौड़-भाग न कर सकते हों, उन्हें अज्ञान लोग न माँगने के कारण धनी समझते हैं, वे लोगों के पीछे पड़ कर नहीं माँगते। तुम उन्हें उनके लक्षणों से पहचान लोगे तथा जो भी धन तुम दान करोगे, निःसंदेह अल्लाह उसे भलि-भाँति जानने वाला है)।

फिर अल्लाह तआला सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) के जीवन में पाई जाने वाली स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता की सुंदरता को बयान करते हैं ताकि यह हर युग

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 331)।

और समाज के लिए मार्गदर्शक बन सके। अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿لِلْفُقَرَآءِ ٱلَّذِينَ أُحْصِرُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ﴾ "उन गरीबों के लिए जो अल्लाह की राह में रोक दिए गए हैं।" इस आयत में उन महान व्यक्तियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन्होंने अपने आपको अल्लाह की राह में लगा दिया और अपनी जीविका के लिए वह साधन नहीं जुटा सके जो उनकी आवश्यकताओं को पूरा कर सके। ﴿لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِى ٱلْأَرْضِ﴾ "वे धरती पर यात्रा करने में सक्षम नहीं।" यह वाक्य यह स्पष्ट करता है कि वे व्यापार या किसी अन्य काम के लिए सफर करने में असमर्थ हैं, क्योंकि उन्होंने अपने आपको अल्लाह की राह में समर्पित कर दिया है। इससे यह शिक्षा मिलती है कि हमें उन लोगों की ओर ध्यान दिलाना चाहिए जो अपनी हालत को छुपाए रखते हैं और मदद के लिए किसी से कुछ नहीं कहते। आयत यह भी बताती है कि ऐसे गरीबों की मदद करना जरूरी है जिनकी गरीबी उनकी खुद की गलती नहीं है। हो सकता है कि वे मानसिक, वैचारिक, या ज्ञान की कमी के कारण काम करने का साधन न खोज पाएं।

इस आयत का एक और संदेश यह है कि अमीरों को चाहिए कि वे ऐसे गरीबों की मदद करें और उनकी स्थिति को समझें। अमीरों को यह नहीं समझना चाहिए कि हर गरीब आलसी होता है। इसके बजाय, अगर कोई गरीब काम के योग्य है, तो उसे सही मार्गदर्शन देकर आत्मनिर्भर बनने में सहायता करनी चाहिए। अल्लाह तआला ने इन गरीबों की हालत को उनकी स्वाभिमान के कारण और स्पष्ट किया: ﴿يَحْسَبُهُمُ ٱلْجَاهِلُ أَغْنِيَآءَ مِنَ ٱلتَّعَفُّفِ﴾ "जो उनकी स्थिति नहीं जानते, वे उन्हें उनके स्वाभिमान के कारण अमीर समझते हैं।" जो उनकी वास्तविक स्थिति से अनजान होता है, वह उन्हें उनके स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता के कारण संपन्न और किसी भी प्रकार की सहायता से मुक्त समझता है। यह उनकी स्वाभिमान और अपनी जरूरतों को छुपाने की प्रवृत्ति के कारण होता है। वे न तो किसी से कुछ मांगते हैं और न ही अपनी आवश्यकता या गरीबी को प्रकट करते हैं। यह उनके व्यक्तित्व का एक उत्कृष्ट पहलू है। उनकी वास्तविक स्थिति को केवल वही व्यक्ति समझ सकता है जो उन्हें गहराई से जानता हो। यह गुण उन गरीब और जरूरतमंद लोगों को सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए प्रेरित करता है। यह इस्लामी समाज के लिए एक ऐसा मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है जिसे हर युग और समाज में अपनाया जा सकता है।

उनके गुणों में से, जिनकी पहचान अल्लाह तआला ने स्पष्ट की है, यह है कि ﴿تَعْرِفُهُم بِسِيمَٰهُمْ﴾ "तुम उन्हें उनकी पहचान से जान सकते हो"। उनकी गरीबी और आवश्यकता के लक्षण उनके शरीर पर स्पष्ट होते हैं। ऐसे में, हे दानदाता और खर्च करने वाले, इन लोगों को उनके चेहरों के लक्षणों से पहचानो। ये लक्षण उनके शारीरिक संघर्ष, उनकी विनम्रता, और उनकी दीनता से प्रकट होते हैं। लेकिन उनकी आत्मा और स्वाभिमान इस बात को नहीं दर्शाते।

जैसा कि पहले वर्णन किया गया, ﴿يَحْسَبُهُمُ ٱلْجَاهِلُ أَغْنِيَآءَ مِنَ ٱلتَّعَفُّفِ﴾ "अनजान व्यक्ति उन्हें उनके आत्म-सम्मान के कारण संपन्न समझता है"। इस प्रकार, उनकी दो विशेष स्थितियां हैं। पहली स्थिति ﴿ٱلتَّعَفُّفِ﴾ ऐसी है जिसे कोई नहीं पहचान सकता सिवाय उनके जो उनकी स्थिति को भली-भांति जानते हों। और दूसरी स्थिति वह है ﴿تَعْرِفُهُم بِسِيمَٰهُمْ﴾ जिसमें उनके चेहरों की पहचान से उनके हालात का पता चलता है। यह एक गहरी व्याख्या है जो अल्लाह रब्बुल आलमीन ने इन महान व्यक्तित्वों और उन लोगों के लिए दी है जिन्होंने अपने आपको अल्लाह की राह में समर्पित कर दिया।

अल्लाह तआला आगे कहता है: ﴿لَا يَسْـَٔلُونَ ٱلنَّاسَ إِلْحَافًا﴾ "वे लोगों के पीछे पड़ कर नहीं माँगते"। वे किसी भी प्रकार से लोगों से भीख नहीं मांगते, न ही कभी हठ करते हैं। ऐसा उनके स्वाभिमान और आत्म-संयम के कारण है। वे अपनी जरूरतों और कठिनाइयों को दूसरों पर प्रकट नहीं करते। इससे यह स्पष्ट होता है कि उनकी ये खूबियां सम्मान और प्रशंसा की पात्र हैं। शब्द 'إِلْحَافًا इलहाफ़' का अर्थ हठ करना है। भले ही उनकी जरूरतें कितनी भी बढ़ जाएं, वे दूसरों से मांगने का रास्ता नहीं अपनाते। अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न हो।

क़ुरआन की शब्दावली का सौंदर्य: अल्लाह के किताब में मौजूद शब्दों के सौंदर्य को समझा जा सकता है। जैसे: ﴿لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِى ٱلْأَرْضِ﴾ "वे धरती पर चलने-फिरने में असमर्थ हैं"। ﴿يَحْسَبُهُمُ ٱلْجَاهِلُ أَغْنِيَآءَ مِنَ ٱلتَّعَفُّفِ﴾ "अनजान व्यक्ति उन्हें आत्म-सम्मान के कारण संपन्न समझता है"। ﴿تَعْرِفُهُم بِسِيمَٰهُمْ﴾ "तुम उन्हें उनके चेहरे की पहचान से जान सकते हो"। हर शब्द अपने स्थान पर इतना उपयुक्त है कि वह सोचने वालों को चकित कर देता है। बल्कि हर शब्द अपने स्थान पर ऐसा बयान है जो दिलों को झकझोर देता है, और हर वाक्य ऐसा है कि बुद्धि उसके सामने खड़ी होकर उसके सौंदर्य और निर्माण की गहराई पर चकित रह जाती है। हर आयत ऐसी है कि उसके जैसी कोई चीज़ लिखने की जुर्रत नहीं की जा सकती। हर अर्थ पर विद्वान और फकीह रुककर सोचते हैं और उसमें से अधिक से अधिक ज्ञान और मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। क़ुरआन की आयतें, चाहे वह किसी आम व्यक्ति द्वारा पढ़ी जाएं या किसी विद्वान द्वारा सुनी जाएं, उसमें सब के लिए अल्लाह के प्रिय उद्देश्य की व्यापकता स्पष्ट होती है। तो पवित्र है वह जिसने अपनी किताब को हर चमत्कार से भर दिया।

फिर आयत का समापन उस व्यक्ति के लिए अधिक संतोष प्रदान करता है जो अल्लाह की राह में खर्च करता है: ﴿وَمَا تُنفِقُوا۟ مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ ٱللَّهَ بِهِۦ عَلِيمٌ﴾ "तुम जो भी भलाई में खर्च करते हो, तो निश्चय ही अल्लाह उससे भली-भांति अवगत है"। यह स्पष्ट करता है कि अल्लाह

तआला ने खर्च को भलाई के रूप में सीमित कर दिया है। इसका मतलब यह है कि हर वह खर्च जो भलाई से रहित है, इसमें शामिल नहीं है। अल्लाह, जो प्रत्येक छोटी और बड़ी चीज़ से परिचित है, जानता है कि यह खर्च किससे लिया गया है, कितना लिया गया है, और किस उद्देश्य से किया गया है, चाहे वह अल्लाह की प्रसन्नता के लिए हो या दिखावे और प्रशंसा के लिए, अतः, जो इस ज्ञान को अपनाएगा, अल्लाह तआला उसे उसके खर्च और पेश किए गए हर कार्य के लिए अवश्य इनाम देगा।

﴿ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُم بِٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٤﴾﴾ [سورة البقرة:٢٧٤]

(जो लोग अपना धन रात-दिन खुले-छुपे दान करते हैं, तो उन्हीं के लिए उनके पालनहार के पास, उनका प्रतिफल (बदला) है और उन्हें कोई डर नहीं होगा और न वे उदासीन होंगे)।

फिर अल्लाह तआला खर्च करने वालों को उनके बदले, इनाम और महान पुण्य का वादा करके उनकी पुष्टि करता है, और उनके लिए भय और शोक को दूर करता है: ﴿ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُم بِٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٤﴾﴾ "जो लोग अपने धन रात और दिन में, छुपकर और खुले तौर पर खर्च करते हैं, उनके लिए उनका इनाम उनके रब के पास है। और न उन पर कोई डर होगा और न वे उदास होंगे।" यह उन लोगों की प्रशंसा है जो अल्लाह की राह में और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए खर्च करते हैं, चाहे वह रात हो या दिन, और चाहे छिपे तौर पर हो या खुले तौर पर। यहाँ तक कि अपने परिवार पर खर्च करना भी इसमें शामिल है, जैसा कि सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम में प्रमाणित है: "नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम जो भी खर्च अल्लाह की प्रसन्नता के लिए करते हो, उसका तुम्हें इनाम मिलेगा, यहाँ तक कि वह (लुक़्मा) भी जो तुम अपने पत्नी के मुँह में डालते हो"।[1]

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह के कथनः ﴿ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُم بِٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ﴾ "जो लोग अपने धन रात और दिन में खर्च करते हैं।" इस कथन में खर्च की विविधता और समय की विविधता का संकेत है।

तथा अल्लाह तआला के कथनः ﴿سِرًّا وَعَلَانِيَةً﴾ "छुपकर और खुले तौर पर" में इस बात की पुष्टि होती है कि खर्च कभी गुप्त रूप से किया जाता है और कभी सार्वजनिक रूप

(1) त

से। इससे यह स्पष्ट होता है कि खुले तौर पर खर्च करना निंदनीय नहीं है, जब तक कि उसका उद्देश्य दिखावा और प्रसिद्धि न हो।

फिर आयत में अल्लाह तआला कहता है: ﴿فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾ "तो उनके लिए उनका इनाम उनके रब के पास है। और न उन पर कोई डर होगा और न वे उदास होंगे"। इससे पता चलता है कि खर्च करने वालों के लिए अल्लाह तआला के पास ﴿عِندَ رَبِّهِمْ﴾ ऊँची प्रतिष्ठा और सम्मान है। उनके लिए अल्लाह तआला की ओर से सुरक्षा और शांति है।

और यह भी: ﴿وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ﴾ "और उनके लिए न कोई डर है," इसलिए उनके पास अल्लाह तआला के पास सुरक्षा और शांति होगी, क्योंकि यह उनके मामलों का परिणाम है, और यह भी: ﴿وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾ "और न वे उदास होंगे," यह इस बात की ओर संकेत करता है कि अल्लाह के पास उनके लिए उदासी और शोक को दूर करने की कृपा है, चाहे वह अतीत की चिंता हो या वर्तमान की।

क्योंकि क़यामत के दिन कुछ लोग हानि उठाएंगे, जैसा कि अल्लाह ने सूरह मर्यम में कहा है: ﴿وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٩﴾﴾ "और उन्हें याद दिलाओ उस पश्चाताप के दिन के बारे में, जब मामला तय हो जाएगा और वे अज्ञान में होंगे और विश्वास नहीं करेंगे"।

इससे यह स्पष्ट होता है कि अच्छे कार्यों को करने वालों के लिए प्रोत्साहन और इनाम कितना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह व्यक्ति को बुरी सोच और बुरे विचारों से दूर रखता है, और उसे सबसे अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। यह भी बताता है कि दान की सुंदरता और उत्कृष्टता पर ध्यान देना, और दूसरों की स्थिति, विशेष रूप से संकोची गरीबों की देखभाल करना कितना महत्वपूर्ण है।

﴿الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَن جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّهِ فَانتَهَىٰ فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧٥﴾ يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُرْبِي الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ﴿٢٧٦﴾﴾ [سورة البقرة:٢٧٥-٢٧٦].

(जो लोग ब्याज खाते हैं, ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है, जिसे शैतान ने छूकर उनमत्त कर दिया हो। उनकी ये दशा इस कारण होगी कि उन्होंने कहा कि व्यापार भी तो ब्याज ही जैसा है, जबकि अल्लाह ने व्यापार को ह़लाल (वैध) , तथा ब्याज को ह़राम (अवैध) कर दिया है। अब जिसके पास उसके पालनहार की ओर से निर्देश आ गया और इस कारण उससे रुक गया, तो जो कुछ पहले लिया, वह उसी का हो गया तथा उसका मामला अल्लाह के ह़वाले है और जो (लोग) फिर वही करें, तो वही नारकी हैं, जो उसमें सदावासी होंगे। अल्लाह ब्याज को मिटाता है और दानों को बढ़ाता है और अल्लाह किसी कृतघ्न, घोर पापी से प्रेम नहीं करता)।

क़ुरआन का संदर्भ यहाँ सूद (रिबा, ब्याज) के मसले पर आ जाता है, जबकि इससे पहले अल्लाह के रास्ते में खर्च करने के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट किया गया था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿ٱلَّذِينَ يَأۡكُلُونَ ٱلرِّبَوٰاْ لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ ٱلَّذِي يَتَخَبَّطُهُ ٱلشَّيۡطَٰنُ مِنَ ٱلۡمَسِّۚ﴾ (जो लोग ब्याज खाते हैं, ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है, जिसे शैतान ने छूकर उनमत्त कर दिया हो) यह आयत सूद की प्रक्रिया को सबसे घिनौने रूप में प्रस्तुत करती है, उसके स्वभाव और सूदखोर के क़यामत के दिन की स्थिति के कारण। आयत बताती है कि वे क़ब्रों से उस तरह उठेंगे जैसे मिर्गी के दौरे से पीड़ित कोई व्यक्ति, जिसे शैतान ने अपनी पकड़ से विक्षिप्त कर दिया हो। उनकी यह स्थिति "अजीब और डरावनी" होगी।[1] यह हालत केवल क़यामत तक सीमित नहीं है, बल्कि दुनिया में भी सूदखोर का यही हाल रहता है। उसका लालच, स्वार्थ और लालसा उसे जल्दी से धन कमाने और लाभ पाने के प्रयास में पागल बना देती है। वह इस तरह काम करता है जैसे कोई पागलपन का शिकार हो। उसका लालच और भय उसकी शारीरिक और मानसिक स्थिति पर प्रभाव डालते हैं, जो उसे अव्यवस्थित और बेचैन बना देते हैं।

इस भयावह स्थिति का वर्णन मुसलमानों को चेतावनी देने के लिए किया गया है ताकि वे सूद के कारण ऐसी हालत में न फंसें। यह स्पष्ट करता है कि मुसलमान को अल्लाह द्वारा वैध ठहराए गए तरीकों से अपनी आजीविका कमानी चाहिए और सूद और ह़राम लेन-देन से दूर रहना चाहिए। सूद की भयानकता को स्पष्ट करने के लिए आयत ने इसे सबसे घृणित रूप में वर्णित किया है। इसकी शुरुआत ही इस घृणित कृत्य को "खाने" की क्रिया से जोड़ते हुए हुई, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿يَأۡكُلُونَ ٱلرِّبَوٰاْ﴾ "जो सूद खाते हैं।" यहां "يَأۡكُلُونَ खाने" का अर्थ है सूद कमाना और उसका उपयोग करना। खाने का उल्लेख विशेष रूप से इसलिए किया गया है क्योंकि यह इंसान के धन उपयोग का सबसे सामान्य उद्देश्य है और लालच और अत्यधिक इच्छा का प्रतीक है।[2]

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 334)।

(3) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 229)।

सूद का अर्थ: सूद का अर्थ है: लेन-देन में धन या खाद्य सामग्री पर अनुचित वृद्धि लेना, चाहे वह मात्रा में हो या समय अवधि में। ।[1] "يَأۡكُلُونَ खाने" शब्द का चयन यह दर्शाने के लिए किया गया है कि सूद कितना भयानक है। यह बताता है कि किसी मसले को बयान करने के लिए सही और उपयुक्त शब्द का चयन कितना महत्वपूर्ण है ताकि उसका प्रभाव गहरा और सटीक हो।

फिर अल्लाह तआला ने सूद को वैध ठहराने वालों का तर्क स्पष्ट किया: ﴿ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمۡ قَالُوٓاْ إِنَّمَا ٱلۡبَيۡعُ مِثۡلُ ٱلرِّبَوٰاْۗ﴾ (यह इसलिए कि उन्होंने कहा कि व्यापार भी सूद जैसा है) उन्होंने सूद को व्यापार के समान ठहराया है, न कि उसका तुलना या उदाहरण दिया। यदि यह तुलना होती, तो वे कहते, (إنما الربا مثل البيع) "सूद व्यापार जैसा है।" लेकिन उन्होंने कहा, ﴿قَالُوٓاْ إِنَّمَا ٱلۡبَيۡعُ مِثۡلُ ٱلرِّبَوٰاْۗ﴾ "व्यापार सूद जैसा है," ताकि वे अपने उद्देश्य को सही ठहराने के लिए यह कह सकें कि जब व्यापार वैध है तो सूद क्यों ह़राम है? यह अल्लाह के आदेशों पर उनकी आपत्ति और विद्रोह को दर्शाता है।[2] अल्लाह के आदेशों पर अपनी आपत्तियों के माध्यम से उन्होंने इसे वैध ठहराया। यह बताता है कि जो सही मार्ग से भटक जाते हैं, वे अपने विचलन को वैध ठहराते हैं, ताकि वे अपने लिए बहाने ढूंढ सकें, जो पहले उन्हें आत्म-आलोचना से बचाते हैं। फिर वे शरीअत के निष्पक्ष नियमों से दूसरों को मूर्ख बनाते हैं, और आखिरकार दूसरों को अपने साथ ले जाते हैं। विचलन में भटकने वालों का यही तरीका होता है, क्योंकि वे अपनी इच्छाओं और उद्देश्यों के साथ मेल खाने वाले बहाने और वैधता ढूंढते हैं। मुसलमान को अल्लाह के मार्ग पर चलना चाहिए, उस पर आपत्ति नहीं करनी चाहिए, और उस पर विचार नहीं करना चाहिए। अल्लाह से कोई सवाल नहीं कर सकता कि वह क्या करता है, और कोई भी उसके आदेश को चुनौती नहीं दे सकता है।

मुसलमान का फर्ज़ यह है कि वह अल्लाह के आदेशों को पूरी तरह से स्वीकार करे और उन पर कोई आपत्ति न करे। न ही शैतान और इच्छाओं को अपने ऊपर हावी होने दे। क्योंकि अल्लाह जो करता है, उससे किसी को सवाल करने का हक़ नहीं। जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿وَأَحَلَّ ٱللَّهُ ٱلۡبَيۡعَ وَحَرَّمَ ٱلرِّبَوٰاْۚ﴾ (और अल्लाह ने व्यापार को हलाल किया और सूद को ह़राम ठहराया)।

(2) तफ़्सीरुल जलालैन, सुयूती, पृष्ठ (47)।

(3) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखक: इब्न -ए- कसीर (1/ 334)।

फिर इस आयत ने सूद से बचने का रास्ता बताया और उसमें उलझे लोगों को इससे निकलने का अवसर दिया। अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿فَمَن جَآءَهُۥ مَوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّهِۦ فَٱنتَهَىٰ فَلَهُۥ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُۥٓ إِلَى ٱللَّهِ﴾ (जो व्यक्ति अपने रब की ओर से नसीहत मिलने पर सूद से रुक गया, उसके लिए उसके पहले का मामला है[1], और उसका मामला अल्लाह के हवाले है, इसका मतलब यह है कि जिसने अल्लाह के मना करने पर सूद से तुरंत तौबा कर ली, उसके पिछले लेन-देन के लिए अल्लाह निर्णय करेगा। और 'उसका मामला अल्लाह के पास है' ﴿وَأَمْرُهُۥٓ إِلَى ٱللَّهِ﴾ के विभिन्न अर्थों के फायदों में से एक यह है कि इसमें कई पहलुओं को समाहित किया गया है, जो 'उसका' (ضمير الهاء) के लिए उपयोग किए गए सर्वनाम के आधार पर अलग-अलग हो सकते हैं। पहला: यह सर्वनाम 'सूद' (الربا) की ओर इशारा करता है, जिसका अर्थ है कि सूद का मामला अल्लाह के पास है, चाहे वह उसके ह़राम होने के आदेश को स्थायी बनाए रखने के लिए हो या किसी अन्य संदर्भ में। दूसरा: यह सर्वनाम 'जो पहले हो चुका' (ما سلف) की ओर हो सकता है, जिसका मतलब है कि जो पहले हुआ उसका मामला अल्लाह के पास है, चाहे वह उसे क्षमा कर दे या उसका बोझ खत्म कर दे। तीसरा: यह सर्वनाम सूद लेने वाले व्यक्ति (ذی الربا) की ओर हो सकता है, जिसका अर्थ है कि उसका मामला अल्लाह के पास है, चाहे अल्लाह उसे सूद से दूर रहने पर स्थिर रखे या उसे फिर से सूद में लिप्त कर दे।[2]

इन विभिन्न अर्थों के फायदों में से एक यह है कि क़ुरआन के अर्थ को समझाने का काम केवल उन विद्वानों को करना चाहिए जो ज्ञान में गहराई रखते हैं। वे लोग, जो भाषा में निपुण हैं, मजबूत और कमजोर तर्कों को पहचानते हैं, और जिनकी जानकारी नासिख और मंसूख (निरस्त और लागू), आम और खास आयतों के संदर्भ में प्रबल है। अतः कोई भी व्यक्ति अल्लाह की किताब या उसके किसी हिस्से की व्याख्या बिना ज्ञान के करने का दुस्साहस न करे।

लेकिन जो इस नसीहत के बाद भी सूद लेता है और उसे अपने लिए वैध ठहराने की कोशिश करता है, उसके बारे में अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿وَمَنْ عَادَ فَأُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ﴾ (और जो फिर लौटे, तो ऐसे लोग आग के साथी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे) फिर जो व्यक्ति (सूद की ओर) लौटे, वह दंड का अधिकारी बनता है, क्योंकि उस पर दलील स्पष्ट हो चुकी है। इसमें सूद के लेन-देन से एक बड़ी चेतावनी, भय उत्पन्न करने वाला संदेश, और गंभीर धमकी दी गई है। यह सावधानी बरतने और सूद से दूर रहने की आवश्यकता को स्पष्ट करता है। और मृत्यु से पहले और अल्लाह से मिलने से पहले सूद से तौबा करना अनिवार्य है, क्योंकि

(2) पिछला संदर्भ (3/ 234)।

(1) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 234)।

सूद की बुराई अत्यधिक है। ऐ अल्लाह! हमें और सभी मुसलमानों को सूद से और हर उस चीज़ से जो तुझे नापसंद है, बचा।

फिर अल्लाह तआला ने सूद के साथ अपने व्यवहार को बयान किया: ﴿يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا﴾ 'अल्लाह सूद को मिटा देता है।' यानी, अल्लाह इसकी बरकत खत्म कर देता है और इसे घटा देता है। जब इससे बरकत समाप्त हो जाती है, तो इसका कोई वास्तविक मूल्य नहीं रहता और इसके मालिक को इससे कोई खुशी नहीं मिलती, चाहे लोगों की नजर में यह कितना ही बड़ा लाभ क्यों न दिखे। यह दरअसल थकावट और परेशानी का कारण बनता है। इसके विपरीत, ﴿وَيُرْبِي الصَّدَقَاتِ﴾ 'अल्लाह सदकात (दान) को बढ़ा देता है।' अर्थात, यह दुनिया में बढ़ती है और आख़िरत में इसका सवाब कई गुना बढ़ाया जाता है। यहां दो विरोधाभासी चीजों की तुलना की गई है। एक तरफ सूद है, जो देखने में बढ़ोतरी का कारण लगता है, लेकिन हकीकत में यह घटाव का माध्यम है। दूसरी तरफ सदकात हैं, जो देखने में धन की कमी दिखाती हैं, लेकिन असल में उनकी बरकत बढ़ती है और आखिरत में उनका सवाब कई गुना होता है। सूद लालचियों का प्रतीक है, जबकि सदकात दरियादिल लोगों का। ये दोनों न तो स्वरूप में समान हैं और न ही प्रभाव और परिणाम में। यह एक परीक्षा है, जिसमें ईमानदार व्यक्ति को सदकात को अपनाना चाहिए और सूद से बचना चाहिए।

यह विरोधाभास समझाने वाली तुलना, स्पष्टता पैदा करती है, विचार को उत्तेजित करती है, और लाभ व शिक्षा के तत्वों को बढ़ाती है। यह बीमार और स्वस्थ, सही और गलत, सत्य और असत्य, भलाई और बुराई में अंतर को स्पष्ट करती है और समझदार व्यक्ति को बताती है कि उसे क्या चुनना चाहिए।

"यह तुलना क़ुरआन करीम की महान शैली को दिखाती है, जो सोच-विचार और तुलना के जरिए दिमाग को प्रेरित करती है, ताकि सर्वोत्तम और स्पष्ट स्वरूप में श्रेष्ठता और अंतर को समझा जा सके। यह वह क़ुरआन है, जिसे अल्लाह तआला ने अपने रसूल, हमारे पैग़ंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल किया।

"फिर आयत का समापन एक ऐसी नसीहत पर होता है, जो दिलों को हिला देती है: ﴿وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ﴾ 'अल्लाह किसी भी नाशुक्रे और पापी को पसंद नहीं करता।' अल्लाह तआला अपनी मोहब्बत को हर ऐसे व्यक्ति से नकारता है, जो नाशुक्रा और पाप में लिप्त हो। "أَثِيمٍ अस़ीम" (पापी) का वर्णन इसके पाप और बुराई में गहनता को व्यक्त करने के लिए किया गया है, जबकि ' كَفَّارٍ कफ़्फ़ार' शब्द में हर प्रकार के पापों की व्यापकता समाहित है।

अल्लामा इब्न -ए- सअदी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं: 'यह वह व्यक्ति है जिसने अल्लाह की नेमत का इंकार किया, अपने परवरदिगार की इनायतों का इनकार किया, और अपने गुनाहों पर डटा रहा।'(1)

अल्लाह की मोहब्बत का इनकार एक मोमिन के दिल को झकझोर देता है, उसे अल्लाह की मोहब्बत पाने की तमन्ना और लालसा पैदा करता है, साथ ही हर उस गुण से बचने का खौफ पैदा करता है, जो ' كَفَّارٍ कफ़्फ़ार' (नाशुक्रा) और " أَثِيمٍ असीम" (पापी) से जुड़ा हो। इब्न -ए- कसीर रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं: 'अर्थात अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसंद नहीं करता, जिसका दिल नाशुक्रा हो, जिसका कथन और कर्म पापपूर्ण हो। सूदखोर उस हलाल चीज़ पर राज़ी नहीं होता जो अल्लाह ने उसके लिए मुकर्रर की है, और न ही उस वैध कमाई पर संतुष्ट होता है जिसे अल्लाह ने जायज़ ठहराया है। बल्कि वह नाजायज़ तरीकों से लोगों की संपत्ति को खाने की कोशिश करता है। वह अल्लाह की दी हुई नेमतों का इनकार करने वाला, जालिम और पापी है, जो लोगों की संपत्ति को नाजायज़ तरीके से खाता है।'(2) यह हृदय-उत्तेजना एक मोमिन को सूद से और हर उस चीज़ से दूर रहने के लिए प्रेरित करती है, जो उसे इस वर्ग में डाल सकती है, जिनके लिए अल्लाह ने अपनी मोहब्बत का इनकार किया है।

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَأَقَامُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُاْ ٱلزَّكَوٰةَ لَهُمۡ أَجۡرُهُمۡ عِندَ رَبِّهِمۡ وَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُونَ ٢٧٧﴾ [سورة البقرة:٢٧٧]

(वास्तव में, जो ईमान लाये, सदाचार किये, नमाज़ की स्थाप्ना करते रहे और ज़कात देते रहे, उन्हीं के लिए उनके पालनहार के पास उनका प्रतिफल है और उन्हें कोई डर नहीं होगा और न वे उदासीन होंगे)।

फिर क़ुरआन का संदर्भ उन अल्लाह के बंदों की प्रशंसा की ओर बढ़ता है, जिन्होंने उनकी आज्ञा का पालन किया। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि जो अल्लाह की आज्ञा का पालन करता है और जो उसका उल्लंघन करता है, उनके बीच क्या अंतर है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَأَقَامُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُاْ ٱلزَّكَوٰةَ لَهُمۡ أَجۡرُهُمۡ عِندَ رَبِّهِمۡ وَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُونَ ٢٧٧﴾ (वास्तव में, जो ईमान लाये, सदाचार किये, नमाज़ की स्थाप्ना करते रहे और ज़कात देते रहे, उन्हीं के लिए उनके पालनहार के पास उनका प्रतिफल है और उन्हें कोई डर नहीं होगा और न वे उदासीन होंगे)।

(2) तैसीरुल करीमिर्रहमान फ़ी तफ़्सीरि कलामिल् मन्नान, लेखकः इब्न -ए- सअदी (1/ 218)

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 338)।

अल्लाह तआला ने अपने उन बंदों की प्रशंसा की, जो ईमान लाए। उसने ईमान से शुरुआत की, क्योंकि यह हर इबादत की नींव है। यह इस्लाम और अल्लाह के प्रति आत्मसमर्पण की शुरुआत है और उन सभी चीजों से बचने का आधार है, जिन्हें अल्लाह तआला ने ह़राम ठहराया है, जैसे कि सूद। इसके बाद उस ने उन लोगों का उल्लेख किया जो "नेक कार्य" (الصالحات) करते हैं। यह शब्द उन सभी कार्यों को शामिल है, जिन्हें अल्लाह तआला पसंद करता है और जिनसे वह संतुष्ट होता है। यह उन सभी बुराइयों का विरोध करता है, जो अल्लाह तआला को नाराज़ करती हैं, जिनमें सूद भी शामिल है। फिर अल्लाह तआला ने विशेष रूप से नमाज़ और ज़कात का उल्लेख किया, हालांकि ये दोनों नेक कार्यों (الصالحات) में ही सम्मिलित हैं। इसका उद्देश्य इन दोनों इबादतों के महत्व और उनकी प्रतिष्ठा को उजागर करना है।

तीसरे, अल्लाह ने नमाज़ का उल्लेख किया: "और उन्होंने नमाज़ क़ायम की" (وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ)। नमाज़ इंसान को अश्लीलता और बुराई से रोकती है, जिनमें सबसे प्रमुख बुराई सूद है।

चौथे, उसने कहा: "और ज़कात अदा की" (وَآتَوُا الزَّكَاةَ)। ज़कात एक प्रकार की उदारता और परोपकार है। यह सूद के विपरीत है, जो लालच और स्वार्थ का प्रतीक है।

इन बंदों का इनाम, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "उनके लिए उनके इनाम उनके परवरदिगार के पास है। और न उनके ऊपर कोई भय होगा और न वे उदास होंगे" (لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ) वे पुरस्कृत और सम्मानित होंगे, और अल्लाह तआला से सुरक्षा में रहेंगे। क़यामत के दिन न तो उन्हें किसी चीज़ का भय होगा और न ही वे किसी कमी या नुकसान को लेकर दुःखी होंगे।

क़यामत के दिन ऐसा कोई दुःख और खेद नहीं होगा, जो बंदे को शोक में डाल दे, क्योंकि वह अपनी गलतियों को सुधारने और अपने मार्ग को सही करने में असमर्थ होगा। लेकिन वे लोग, जिनका वर्णन इस आयत में किया गया है, इन परिस्थितियों से मुक्त रहेंगे, क्योंकि उन्होंने अल्लाह, सारे जहानों के रब की आज्ञाकारिता की।

अल्लाह का यह वर्णन, सूद और सूदखोर के मामलों को प्रस्तुत करने के बाद आता है, ताकि समझदार और विवेकशील व्यक्ति दो परिणामों की तुलना कर सके: पहला परिणाम: "और अल्लाह हर बड़े कृतघ्न, पापी से प्रेम नहीं करता" (وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ)। दूसरा परिणाम: "उनके लिए उनका इनाम उनके परवरदिगार के पास है और न उनके ऊपर कोई भय होगा और न वे उदास होंगे" (لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

(يَحْزَنُونَ)। इससे यह लाभ होता है कि तुलना करने की शैली का प्रभाव और सुधार में बड़ा महत्व है। यह विचारधारा के विकार को ठीक करने में सहायक है, जो ईमान और इबादत के मूल सिद्धांत पर आधारित है, जैसा कि क़ुरआन मजीद की पिछली आयतों में भी दर्शाया गया है।

﴿يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَذَرُوا۟ مَا بَقِىَ مِنَ ٱلرِّبَوٰٓا۟ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٧٨﴾ فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا۟ فَأْذَنُوا۟ بِحَرْبٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ۖ وَإِن تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوسُ أَمْوَٰلِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٩﴾ وَإِن كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَن تَصَدَّقُوا۟ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٨٠﴾ وَٱتَّقُوا۟ يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى ٱللَّهِ ۖ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٨١﴾﴾ [سورة البقرة:٢٧٨-٢٨١].

(हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो और जो ब्याज शेष रह गया है, उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमान रखने वाले हो तो। और यदि तुमने ऐसा नहीं किया, तो अल्लाह तथा उसके रसूल से युध्द के लिए तैयार हो जाओ और यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो, तो तुम्हारे लिए तुम्हारा मूलधन है। न तुम अत्याचार करो, न तुमपर अत्याचार किया जाये। और यदि तुम्हारा ऋणि असुविधा में हो, तो उसे सुविधा तक अवसर दो और अगर क्षमा कर दो, (अर्थात दान कर दो) तो ये तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है, यदि तुम समझो तो। तथा उस दिन से डरो, जिसमें तुम अल्लाह की ओर फेरे जाओगे, फिर प्रत्येक प्राणी को उसकी कमाई का भरपूर प्रतिकार दिया जायेगा तथा किसी पर अत्याचार न होगा)।

फिर कुरआनी संदर्भ फिर से हिदायत के उपाय की ओर बढ़ता है, सलाह और सही विकल्प प्रस्तुत करके। अल्लाह तआला कहता है: ﴿يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَذَرُوا۟ مَا بَقِىَ مِنَ ٱلرِّبَوٰٓا۟ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٧٨﴾﴾ (हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो और जो ब्याज शेष रह गया है, उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमान रखने वाले हो तो)

इस आयत की शुरुआत संबोधन शैली "يَـٰٓأَيُّهَا हे लोगो" से होती है, जो ध्यान आकर्षित करने और सुनने वाले को इस बात के लिए सतर्क करने के लिए है कि उसके लिए क्या कहा जाने वाला है। इस संबोधन से यह संकेत मिलता है कि आगे की बात अत्यंत महत्वपूर्ण है। अल्लाह तआला ने ईमान की महान विशेषता के साथ लोगों को संबोधित किया है, और जिसे इस विशेषता के साथ संबोधित किया जाता है, उस पर यह आवश्यक हो जाता है कि वह दिए गए संदेश को पूरा ध्यान और समर्पण के साथ सुने। जब ख़ुद अल्लाह तआला, जो सारी सृष्टि का रचयिता है, इस तरह संबोधित करता है, तो सुनने वाले को उससे विचलित होने की कोई गुंजाइश नहीं रहती।

फिर अल्लाह तआला ने आदेश दिया: ﴿اتَّقُوا اللَّهَ﴾ "अल्लाह से डरो", इन महान शब्दों का मतलब है: अल्लाह से डरो, उसकी शक्ति, उसके दंड और उसकी कुदरत से डरो, उसकी रह़मत और इनाम की उम्मीद रखो तथा उसकी आज्ञाओं का पालन करने और उसके निषेध से बचने के लिए तत्पर रहो।

अल्लाह तआला के ये दो कथनः ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا﴾ "अल्लाह से डरो" और "जो सूद बाकी है, उसे छोड़ दो" अल्लाह की ओर से बहुत बड़ी नसीहत को अपने अंदर समेटे हुए हैं। ﴿وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا﴾ "जो सूद बाकी है, उसे छोड़ दो": इसमें हर प्रकार के सूद को समाप्त करने का आदेश शामिल है। चाहे वह वह वादा की गई अतिरिक्त राशि हो, जो लेने की संभावना थी, या वह राशि हो, जिसे लेने का इरादा किया गया हो एवं उसमें से कुछ भी न लो। यह एक स्पष्ट और अंतिम निषेध है। ﴿إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ﴾ "यदि तुम ईमान वाले हो": यह वाक्य ईमान की सच्चाई की पुष्टि करता है। सूद से रुक जाना और पूरी तरह इसे छोड़ देना सच्चे ईमान का प्रमाण है।

इसके विपरीत, जो लोग इस आदेश का पालन नहीं करते, उनके बारे में यह बताता है कि वे उन लोगों में शामिल हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया: (والله لا يحب كل كفار أثيم) "और अल्लाह हर बड़े कृतघ्न, पापी से प्रेम नहीं करता"।

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह के कथनः ﴿إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ﴾ "और यदि तुम ईमान वाले हो": इसमें यह संकेत मिलता है कि ईमान व्यक्ति को गुनाहों से रोकने वाला होता है। जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "व्यभिचारी जब व्यभिचार करता है, तो वह उस समय ईमान वाला नहीं होता"।[1] इससे यह समझ में आता है कि ईमान की कमजोरी, व्यक्ति को गुनाहों से बचने में असमर्थ बना देती है, विशेष रूप से बड़े गुनाहों से। कमजोर ईमान वाला व्यक्ति, अपनी इच्छाओं और गुनाह की प्रवृत्ति के सामने झुक जाता है, और उसे केवल ईमान ही रोक सकता है। इससे ईमान की अहमियत और ईमान को मजबूत करने की आवश्यकता स्पष्ट होती है, और यह भी कि उन सभी साधनों को अपनाना चाहिए जो ईमान को बढ़ाते हैं।

फिर कुरआनी संदर्भ उन लोगों की स्थिति को स्पष्ट करने की ओर बढ़ता है जो इन नसीहतों और दिव्य निर्देशों से सबक नहीं लेते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا

(1) त

﴿فَأۡذَنُواْ بِحَرۡبٖ مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦۖ﴾ (और यदि तुमने ऐसा नहीं किया, तो अल्लाह तथा उसके रसूल से युध्द के लिए तैयार हो जाओ) यह उन लोगों के लिए एक कड़ी चेतावनी है जो अल्लाह के आदेश को मानने के बजाय उसका उल्लंघन करते हैं, खासकर ब्याज के मामले में। यह युद्ध की चेतावनी अल्लाह और उसके रसूल की ओर से आती है, जिसमें बड़े स्तर की विपत्तियाँ, सजा, और बरकत की कमी शामिल है। कौन है जो अल्लाह और उसके रसूल से युद्ध का सामना कर सकता है? यह ब्याज की भयानकता और इसकी अल्लाह के प्रति नफरत को दर्शाता है। "بِحَرۡبٖ युद्ध" शब्द व्यापक है, जो हर प्रकार की युद्ध की स्थिति को शामिल करता है, जिसे मानव की सोच में नहीं भी आ सकता।

यदि वह तौबा कर ले तो मामला ऐसा हो जाता है जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा है: ﴿وَإِن تُبۡتُمۡ فَلَكُمۡ رُءُوسُ أَمۡوَٰلِكُمۡ﴾ "और अगर तुम तौबा करते हो, तो तुम्हारे लिए तुम्हारी मुख्य धनराशि होगी।" तौबा ब्याज से मुक्ति का पहला कदम है, जो इसके महत्व को दर्शाता है। यह अफसोस और पश्चाताप को शामिल करता है, और पाप की ओर वापसी न करने का संकल्प, और ब्याज से मुक्ति, और केवल मुख्य धनराशि को रखने का आदेश है, जैसाकि सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है: ﴿وَإِن تُبۡتُمۡ فَلَكُمۡ رُءُوسُ أَمۡوَٰلِكُمۡ﴾ "और अगर तुम तौबा करते हो, तो तुम्हारे लिए तुम्हारी मुख्य धनराशि होगी।" शरिअत के अनुसार, तुम्हारे लिए केवल तुम्हारी मुख्य धनराशि होगी, और ब्याज की अतिरिक्त धनराशि तुम्हारे लिए नहीं है। ﴿لَا تَظۡلِمُونَ وَلَا تُظۡلَمُونَ﴾ "ना तुम अन्याय करो और ना तुम पर अन्याय किया जाए।"

और यदि कर्ज़दार तंगी में हो, तो उसके साथ व्यवहार का नियम अल्लाह तआला के इस कथन के अनुसार है: ﴿وَإِن كَانَ ذُو عُسۡرَةٖ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيۡسَرَةٖۚ﴾ "और अगर वह कठिनाई में है, तो उसे सुविधा तक राहत दो।" अल्लाह तआला ने ऋणदाता को कर्ज़दार के साथ नरमी बरतने का आदेश दिया, यानी कर्ज़दार को तब तक इंतजार करने का निर्देश दिया जब तक कि मामला आसान न हो जाए। अल्लाह, जो अत्यंत कृपालु है, ने उनके बीच दया का मार्गदर्शन किया और फिर ऋणदाता के लिए सबसे बेहतर कार्य की ओर इशारा किया: ﴿وَأَن تَصَدَّقُواْ خَيۡرٞ لَّكُمۡۖ﴾ "और यदि तुम दान कर दो, तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है।" ऋणदाता के पास यह विकल्प है कि वह कर्ज़दार का इंतजार करे जब तक कि उसे राहत न मिल जाए, या कर्ज़ को माफ कर दे। यह ऋणदाता के लिए बेहतर है। भले ही बाहरी रूप से यह पूंजी की कमी लगे, लेकिन अल्लाह के पास यह अधिक अच्छा है। जब अल्लाह तआला फरमाते हैं ﴿خَيۡرٞ لَّكُمۡۖ﴾ "यह तुम्हारे लिए बेहतर है," तो इसका अर्थ यह है कि यह वास्तविक और स्थायी भलाई है, जिसमें किसी भी प्रकार का संदेह नहीं। यह भलाई आशीर्वाद में है, अल्लाह तआला से बदले के रूप में है,

कर्ज़दार की ऋणदाता के प्रति प्रेम में है, उसकी दुआओं में है, और उसकी कठिनाई को दूर करने में है। इसलिए, जो व्यक्ति कर्ज़ को माफ करता है, उसे अल्लाह तआला से बड़ी और अपार भलाई प्राप्त होती है, जिसे केवल अल्लाह ही जानता है, जिसने इस मार्ग का मार्गदर्शन किया और इस भलाई को स्पष्ट किया: ﴿وَأَن تَصَدَّقُواْ خَيۡرٞ لَّكُمۡۖ﴾ "और यदि तुम दान कर दो, तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है।"

इससे यह स्पष्ट होता है कि ऋणदाता और कर्ज़दार दोनों के लिए समाधान की यह प्रक्रिया अपनी सभी दिशाओं, संबंधित बातों, तरीकों और लक्ष्यों में संपूर्ण है, जिससे एक महान भलाई प्राप्त होती है।

फिर सूद (उधारी) का विषय एक महान और गहन उपदेश पर समाप्त होता है: ﴿وَٱتَّقُواْ يَوۡمٗا تُرۡجَعُونَ فِيهِ إِلَى ٱللَّهِۖ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفۡسٖ مَّا كَسَبَتۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُونَ ٢٨١﴾ (तथा उस दिन से डरो, जिसमें तुम अल्लाह की ओर फेरे जाओगे, फिर प्रत्येक प्राणी को उसकी कमाई का भरपूर प्रतिकार दिया जायेगा तथा किसी पर अत्याचार न होगा) यह आयत पवित्र निर्देश और स्मरण के साथ शुरू होती है, जो बुद्धिमानों के लिए प्रेरणा देती है और ईमान वालों के दिलों को झकझोरती है। इसमें अल्लाह तआला की ओर वापसी और हिसाब-किताब के दिन को याद करने की प्रेरणा दी गई है, जब हर व्यक्ति को उसका पूरा हक मिलेगा और उस पर कोई अत्याचार नहीं होगा। न्याय होगा, और हर कर्म का पूरा बदला मिलेगा। ऐ अल्लाह, हमें अपने अनुग्रह और दया से व्यवहार कर, ऐ सबसे दयालु और कृपालु। यह आयत अल्लाह की ओर लौटने, हिसाब और बदले की गंभीरता को समझने और तक़वा (परहेज़गारी) की अहमियत को दर्शाती है। ये उपदेश अत्यंत मूल्यवान हैं और दिलों पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا تَدَايَنتُم بِدَيۡنٍ إِلَىٰٓ أَجَلٖ مُّسَمّٗى فَٱكۡتُبُوهُۚ وَلۡيَكۡتُب بَّيۡنَكُمۡ كَاتِبُۢ بِٱلۡعَدۡلِۚ وَلَا يَأۡبَ كَاتِبٌ أَن يَكۡتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ ٱللَّهُۚ فَلۡيَكۡتُبۡ وَلۡيُمۡلِلِ ٱلَّذِي عَلَيۡهِ ٱلۡحَقُّ وَلۡيَتَّقِ ٱللَّهَ رَبَّهُۥ وَلَا يَبۡخَسۡ مِنۡهُ شَيۡـٔٗاۚ فَإِن كَانَ ٱلَّذِي عَلَيۡهِ ٱلۡحَقُّ سَفِيهًا أَوۡ ضَعِيفًا أَوۡ لَا يَسۡتَطِيعُ أَن يُمِلَّ هُوَ فَلۡيُمۡلِلۡ وَلِيُّهُۥ بِٱلۡعَدۡلِۚ وَٱسۡتَشۡهِدُواْ شَهِيدَيۡنِ مِن رِّجَالِكُمۡۖ فَإِن لَّمۡ يَكُونَا رَجُلَيۡنِ فَرَجُلٞ وَٱمۡرَأَتَانِ مِمَّن تَرۡضَوۡنَ مِنَ ٱلشُّهَدَآءِ أَن تَضِلَّ إِحۡدَىٰهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحۡدَىٰهُمَا ٱلۡأُخۡرَىٰۚ وَلَا يَأۡبَ ٱلشُّهَدَآءُ إِذَا مَا دُعُواْۚ وَلَا تَسۡـَٔمُوٓاْ أَن تَكۡتُبُوهُ صَغِيرًا أَوۡ كَبِيرًا إِلَىٰٓ أَجَلِهِۦۚ ذَٰلِكُمۡ أَقۡسَطُ عِندَ ٱللَّهِ وَأَقۡوَمُ لِلشَّهَٰدَةِ وَأَدۡنَىٰٓ أَلَّا تَرۡتَابُوٓاْ إِلَّآ أَن تَكُونَ تِجَٰرَةً حَاضِرَةٗ تُدِيرُونَهَا بَيۡنَكُمۡ فَلَيۡسَ عَلَيۡكُمۡ جُنَاحٌ أَلَّا تَكۡتُبُوهَاۗ وَأَشۡهِدُوٓاْ إِذَا تَبَايَعۡتُمۡۚ وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٞ وَلَا شَهِيدٞۚ وَإِن تَفۡعَلُواْ فَإِنَّهُۥ فُسُوقُۢ بِكُمۡۗ وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَۖ وَيُعَلِّمُكُمُ ٱللَّهُۗ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٞ ٢٨٢﴾ [سورة البقرة:٢٨٢]

(हे ईमान वालो! जब तुम आपस में किसी निश्चित अवधि तक के लिए उधार लेन-देन करो, तो उसे लिख लिया करो, तुम्हारे बीच न्याय के साथ कोई लेखक लिखे, जिसे अल्लाह ने लिखने की योग्यता दी है, वह लिखने से इन्कार न करे तथा वह लिखवाये, जिसपर उधार है और अपने पालनहार अल्लाह से डरे और उसमें से कुछ कम न करे। यदि जिसपर उधार है, वह निर्बोध अथवा निर्बल हो अथवा लिखवा न सकता हो, तो उसका संरक्षक न्याय के साथ लिखवाये तथा अपने में से दो पुरुषों को साक्षी (गवाह) बना लो। यदि दो पुरुष न हों, तो एक पुरुष तथा दो स्त्रियों को, उन साक्षियों में से, जिन्हें साक्षी बनाना पसन्द करो। ताकि दोनों (स्त्रियों) में से एक भूल जाये, तो दूसरी याद दिला दे तथा जब साक्षी बुलाये जायें, तो इन्कार न करें तथा विषय छोटा हो या बड़ा, उसकी अवधि सहित लिखवाने में आलस्य न करो, ये अल्लाह के समीप अधिक न्याय है तथा साक्ष्य के लिए अधिक सहायक और इससे अधिक समीप है कि संदेह न करो। परन्तु यदि तुम व्यापारिक लेन-देन हाथों-हाथ (नगद करते हो), तो तुमपर कोई दोष नहीं कि उसे न लिखो तथा जब आपस में लेन-देन करो, तो साक्षी बना लो और लेखक तथा साक्षी को हानि न पहुँचाई जाये और यदि ऐसा करोगे, तो तुम्हारी अवज्ञा ही होगी तथा अल्लाह से डरो और अल्लाह तुम्हें सिखा रहा है और निःसंदेह अल्लाह सब कुछ जानता है)।

इसके बाद, अल्लाह तआला ने कई आयतों में उच्च और प्रभावशाली उपदेश दिए, जो सद्क़ा और अल्लाह की राह में खर्च करने से संबंधित हैं। फिर सूद के लेन-देन की स्पष्ट मनाही और उसके डरावने परिणामों का वर्णन किया गया। इसी के साथ, सबसे लंबी आयत के माध्यम से, अल्लाह तआला ने कर्ज़ के लेन-देन और उससे जुड़े अनुबंधों और व्यापारिक लेन-देन के नियमों को स्पष्ट किया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا تَدَايَنتُم بِدَيۡنٍ إِلَىٰٓ أَجَلٖ مُّسَمّٗى فَٱكۡتُبُوهُۚ﴾ (हे ईमान वालो! जब तुम आपस में किसी निश्चित अवधि तक के लिए उधार लेन-देन करो, तो उसे लिख लिया करो) यह आयत पवित्र संबोधन ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ﴾ "ऐ ईमान लाने वालों" के साथ शुरू होती है। यह अल्लाह तआला की ओर से अपने ईमान वाले बंदों को एक विशेष संबोधन है। अल्लाह का अपने बंदों को संबोधित करना, इंसानों के आपसी संबोधन जैसा नहीं होता। यह ऐसा पुकार है जो ध्यान आकर्षित करता है, चिंतन और विचार के लिए प्रेरित करता है, और रहमान के कथन पर कान लगाने और उसे समझने का आग्रह करता है। साथ ही, "ईमान लाने वालों" कहकर उन्हें संबोधित करना, उनके लिए एक प्रशंसा और सम्मान है, और यह उनके ईमान की पुष्टि है। यह एक महान और सम्मानित स्थिति है, जो कृतज्ञता, प्रशंसा और विनम्रता के साथ इस पुकार को सुनने और इसका पालन करने की मांग करती है।

इसके बाद, अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿إِذَا تَدَايَنتُم بِدَيْنٍ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَٱكْتُبُوهُ﴾ (जब तुम आपस में किसी निश्चित अवधि तक के लिए उधार लेन-देन करो, तो उसे लिख लिया करो) यह आदेश इस बात का निर्देश देता है कि कर्ज़ के लेन-देन की प्रक्रिया को लिखा और प्रमाणित किया जाए, जिसमें कर्ज़ की मात्रा, चुकाने का समय और उससे संबंधित सभी विवरण शामिल हों।

अल्लाह तआला ने इसे एक सामान्य नियम के रूप में पेश किया, ताकि यह हर प्रकार के कर्ज़ को शामिल कर सके: ﴿إِذَا تَدَايَنتُم﴾ "जब तुम कर्ज़ का लेन-देन करो।" इसमें उधार देना, सामान का मूल्य, संपत्तियां, चाहे पूरी हो या आंशिक, और अन्य सभी प्रकार के लेन-देन शामिल हैं। इसी तरह, ﴿فَٱكْتُبُوهُ﴾ "तो इसे लिख लो" का आदेश लेन-देन की हर चीज़ को शामिल है जो समयावधि, प्रकार, संख्या, मात्रा, विवरण आदि से संबंधित है। यह क़ुरआन की महान स्पष्टता और संपूर्णता का हिस्सा है। यह क़ुरआन मजीद की महान विशेषताओं में से एक है कि उसकी शब्दावली अल्लाह तआला के सभी उद्देश्यों को समाहित करती है। इसमें अल्लाह तआला ने अपने बंदों को उन बातों का निर्देश दिया है जो उनकी भलाई को सुरक्षित रखती हैं और उन्हें ऐसे हालात से बचाती हैं जो आपसी रिश्तों में कटुता और झगड़े का कारण बन सकते हैं। यह समस्याएं भूलने, भय, मृत्यु और अन्य कारणों से उत्पन्न हो सकती हैं, जो कर्ज़ के लेन-देन के कारण संबंधों को नष्ट कर देती हैं। यह अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत है कि उन्होंने अपने बंदों को उनकी सामूहिक भलाई के मार्गदर्शन के लिए इस तरह का निर्देश दिया।

फिर अल्लाह तआला ने कर्ज लिखने की प्रक्रिया और इसके तत्वों को स्पष्ट किया। अल्लाह तआला कहता है: ﴿وَلْيَكْتُب بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِٱلْعَدْلِ﴾ "और तुम्हारे बीच कोई कातिब न्याय के साथ इसे लिखे"। अल्लाह तआला ने हिदायत दी कि कर्ज के दस्तावेज़ को लिखने वाला कातिब न्याय के साथ लिखे, यानी कि वह धनराशि में कोई बढ़ोतरी या कमी न करे, और समयावधि को सही से दर्ज करे।

﴿كَاتِبٌۢ بِٱلْعَدْلِ﴾ "न्याय के साथ कोई लेखक लिखे " से यह पता चलता है कि न्याय की विशेषता कितनी महत्वपूर्ण है, और इसमें ईमानदारी शामिल है। यह भी महत्वपूर्ण है कि ऐसे कर्मचारियों का चयन किया जाए जो न्याय की विशेषता रखते हों, क्योंकि उनके प्रदर्शन पर दूसरों के अधिकारों की रक्षा होती है। न्याय का विशेषण होने वाले को चुनना अनिवार्य है। लेखन एक विद्या है, इसलिए यह दर्शाता है कि विद्या की महत्वता और इसका महत्व कितना है, और जो इसे रखता है उसके लिए यह जिम्मेदारी है कि वह इसे कुशलता और विशेषज्ञता के साथ निभाए।

तथा माकातिब से संबंधित तत्वों में से एक, अल्लाह तआला का कथन है: ﴿وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَن يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ ٱللَّهُ﴾ "और कोई कातिब इंकार न करे कि वह जैसे अल्लाह ने उसे सिखाया है वैसा लिखे।" यह आयत यह स्पष्ट करती है कि लेखक को जब लिखने के लिए कहा जाए, तो उसे इससे मना नहीं करना चाहिए। जैसे अल्लाह तआला ने उसे यह विशेष ज्ञान और शिक्षा दी है, उसी तरह उसे इसे दूसरों के साथ साझा करना चाहिए और इससे कोई भी कंजूसी नहीं करनी चाहिए। यह एक ऐसी नेमत (अल्लाह की कृपा) है, जिसे अल्लाह तआला ने अपने बंदे को दी है, और इसे दूसरों से न छुपाते हुए उसे सच्चाई से कार्य करना चाहिए। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि जिस व्यक्ति को अल्लाह तआला ने कोई विशेष योग्यता या ज्ञान दिया है ﴿كَمَا عَلَّمَهُ ٱللَّهُ﴾, उसका कर्तव्य है कि वह इसे दूसरों के साथ साझा करें और इसे ज़रूरतमंदों की सेवा में लगाए। जैसे अल्लाह तआला ने उसे यह कृपा दी है, वैसे ही उसे इसे साझा करके दूसरों की मदद करनी चाहिए, न कि इसे संकोच के साथ छिपाना चाहिए। इसके अलावा, अल्लाह तआला ने इस बात पर भी जोर दिया है कि जब किसी से कोई अच्छा और उपयोगी कार्य करने के लिए कहा जाए, तो उसे निष्कलंक तरीके से स्वीकार करना चाहिए, जैसा कि अल्लाह ने उस व्यक्ति को शिक्षा दी है। इसलिए, जो ज्ञान और शिक्षा अल्लाह तआला ने दी है, उसे नकारा नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे अपना कर्तव्य समझते हुए उसे पूर्ण ईमानदारी से निभाना चाहिए। अल्लाह तआला ने इस पर ज़ोर दिया है कि लेखक को यह कार्य करने का आदेश दिया गया है, और यह आदेश ﴿فَلْيَكْتُبْ﴾ एक प्रकार से उस पर कर्तव्य की पुष्टि है, ताकि वह इसे सही तरीके से निभाए और अपना काम ईमानदारी से पूरा करे।

फिर अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट किया कि कर्ज लिखने वाले लेखक को कौन सामग्री प्रदान करेगा। आयत में कहा गया है: ﴿وَلْيُمْلِلِ ٱلَّذِى عَلَيْهِ ٱلْحَقُّ﴾ अर्थात, वह व्यक्ति जिसे कर्ज देना है, उसे दस्तावेज़ की सामग्री को कातिब को लिखाना चाहिए, धनराशि, भुगतान की समयावधि आदि के संदर्भ में। इससे उसकी स्वयं की पुष्टि होती है कि उसने कातिब द्वारा लिखी हुई बातों को स्वीकार किया है, और गवाहों ने इसे देखा है। क्योंकि वह गवाह है, और दस्तावेज़ की सामग्री का पालन करने वाला है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि कौन कातिब को लिखाएगा, और यह जिम्मेदारी को निर्धारित करता है, जो प्रशासनिक रूप से महत्वपूर्ण है। यह कर्मचारियों की जिम्मेदारी और प्राधिकरण को निर्दिष्ट करने की महत्वपूर्णता को दर्शाता है, ताकि अधिकारों के संघर्ष को रोका जा सके, और इसे पेशेवर हितों के दृष्टिकोण से देखा जाए, व्यक्तिगत शक्ति के नहीं। देनदार को लाभ है कि उधारकर्ता द्वारा स्वीकार किया गया है, क्योंकि यह कर्ज की पुष्टि करता है। उधारकर्ता द्वारा कर्ज की पुष्टि किए बिना उधारकर्ता को लाभ नहीं मिल सकता, क्योंकि यह इनकार या कारण के कारण उसे नकार सकता है।

फिर रब की ओर से दिया गया मार्गदर्शन उस व्यक्ति को अल्लाह का भय रखने का आदेश देता है, जिसके ऊपर हक (ऋण) है। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَلْيُمْلِلِ ٱلَّذِى عَلَيْهِ ٱلْحَقُّ وَلْيَتَّقِ ٱللَّهَ رَبَّهُۥ﴾ अर्थात ऋणी को चाहिए कि वह अल्लाह से डरे जब वह ऋण की अवधि, मात्रा, प्रकार, संख्या, या किसी अन्य चीज़ से संबंधित विवरण प्रस्तुत कर रहा हो। अतः उसे अल्लाह का भय दिलाना, उसके लिए और उसके जैसे अन्य व्यक्तियों के लिए, तथा सभी मुसलमानों के लिए सबसे बेहतर और व्यापक नसीहत है। फिर इस नसीहत के साथ यह भी मना किया गया है कि कुछ भी घटाए नहीं जाए। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا﴾ अर्थात हक से कुछ भी कम न करे। यह आदेश दाता के हक को किसी भी कमी या अन्याय से बचाने के लिए है। इससे पता चलता है कि लेन-देन में तक़्वा (ईश्वर का भय) रखने और हकों में धोखा देने, दस्तावेज़ों के साथ छेड़छाड़ करने, और लोगों के अधिकारों में कमी करने से बचना कितना महत्वपूर्ण है। यह दिव्य मार्गदर्शन अपने व्यापक प्रभाव के साथ व्यवस्थाओं, रोजगार, और प्रशासनिक कार्यों में भी लागू होता है। इसका उद्देश्य संबंधित पक्षों—चाहे वे लाभार्थी हों या लाभ प्रदान करने वाले की भलाई सुनिश्चित करना है। यह यह भी बताता है कि नसीहत का महत्व और उसकी गहरी प्रभावशीलता, प्रशासनिक दिशानिर्देशों में कितनी आवश्यक है। नसीहत के महत्व को उन लोगों के लिए याद रखना चाहिए, जो निर्णय लेते हैं या जिम्मेदारी संभालते हैं, क्योंकि यह एक बड़ी जिम्मेदारी है।

फिर क़ुरआन की यह महान आयत अनुबंध के दोनों पक्षों में संभावित स्थितियों पर विचार करती है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿فَإِن كَانَ ٱلَّذِى عَلَيْهِ ٱلْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَن يُمِلَّ هُوَ﴾ फिर यह महान आयत उस स्थिति की संभावनाओं को प्रस्तुत करती है, जिसमें ऋणी (जिस पर हक है) हो सकता है। वह (سَفِيهًا सफीह) अर्थात ऐसा अपव्ययी हो सकता है, जो धन को संभालने और उसे व्यवस्थित करने में सक्षम न हो। या (ضَعِيفًا कमजोर) यानी लिखवाने में कमजोर हो सकता है, चाहे उसकी उम्र कम हो या अत्यधिक वृद्ध हो। (أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَن يُمِلَّ هُوَ या वह लिखवाने में असमर्थ हो), यह वाक्य उन सभी बाधाओं को समेटता है, जो लिखवाने में रुकावट डाल सकती हैं। दो बाधाओं (सफीह और कमजोर) का विशेष उल्लेख उनके महत्व और स्पष्टता के लिए किया गया है। इसके अलावा, यह वाक्य व्यापक रूप से अन्य बाधाओं को भी कवर करता है, जैसे कि गूंगापन, भाषा का अज्ञान, प्रशासनिक समझ का अभाव, या सही और गलत के बीच भेद करने में असमर्थता। इन पहलुओं का ध्यान रखना व्यवस्थाओं और नियमों के निर्माण में बहुत उपयोगी है, क्योंकि संभावित परिस्थितियों और उनके परिणामों पर ध्यान देना आवश्यक है। इन्हें समझदारी से ध्यान में रखकर व्यवस्थाओं को इस तरह बनाया जाए कि वे अपेक्षित संभावनाओं को शामिल करें और किसी भी पक्ष के लिए

कोई खामी न छोड़ें, ताकि कोई कमी न रह जाए, जिस पर व्यक्तियों और संस्थाओं के हितधारकों में मतभेद हो। यह इस्लामी पद्धति की गहराई को दर्शाता है, जो बंदों के हितों की जांच-पड़ताल में अत्यंत सूक्ष्म है और सभी लोगों के हितों को अपने भीतर समेटे हुए है। यह विधि-निर्माण की उन बारीकियों को भी शामिल करता है, जिन्हें केवल अल्लाह की तौफीक से ही समझा जा सकता है। इस मार्गदर्शन का एक लाभ यह है कि अल्लाह तआला ने अपने बंदों को कानून और व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी से राहत दी है। उन्होंने इनकी सारी रूपरेखा और बुनियादें निर्धारित कर दी हैं, ताकि वे व्यक्तियों, समूहों, पेशे, परिवार, व्यापार, किराए और जीवन के अन्य सभी पहलुओं की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें, अतः तमाम प्रशंसा अल्लाह, सब संसारों के पालनहार, के लिए है।

फिर अल्लाह तबारक व तआला ने इन संभावनाओं का समाधान अनुबंध की लेखनी के विषय में प्रस्तुत किया। यदि ऋणी (मदयून) में ऐसी कोई बाधा हो, तो अल्लाह तआला ने प्रतिनिधित्व का निर्देश दिया। जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया: ﴿فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُۥ بِٱلْعَدْلِ﴾ अर्थात उसके स्थान पर उसका अभिभावक, चाहे वह पिता हो, वसी हो, या संरक्षक हो, न्याय के साथ लिखवाए। यह अभिभावक उसकी कमियों को पूरा करे और उसे किसी भी संभावित नुकसान से बचाए। यह दर्शाता है कि शरीअत ने बंदों और उनके मामलों की देखभाल की है, उनके अधिकारों की सुरक्षा की है, और किसी भी ऐसी स्थिति को रोका है, जो अन्याय, शोषण, या कमजोरियों के आधार पर उनके अधिकारों को प्रभावित कर सकती है। यह उन गाफिल, मूर्ख और कमजोर व्यक्तियों का शोषण करने से स्पष्ट रूप से मना करता है, जिनसे उन्हें किसी भी प्रकार का नुकसान हो सकता है। यह आयत नाबालिगों के लिए अभिभावकत्व की पुष्टि करती है। इससे यह जिम्मेदारी होती है कि अभिभावक नाबालिगों के अधिकारों की रक्षा में पूरी कोशिश करे और उनके अधिकारों में लापरवाही न बरते। वह इसके लिए दुनिया में न्यायालय और आखिरत में अल्लाह के समक्ष उत्तरदायी होगा। अल्लाह तआला ने निर्देश दिया कि अभिभावक न्याय के साथ लिखवाए। जैसा कि फ़रमाया: ﴿فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُۥ بِٱلْعَدْلِ﴾ अर्थात न्याय ऐसा हो कि इससे न तो अभिभावक को और न ही ऋणदाता को किसी प्रकार का नुकसान पहुंचे। न्याय की मांग यह है कि दोनों पक्षों को नुकसान से बचाया जाए।

फिर अल्लाह तआला ने और अधिक पुष्टि के लिए गवाही का निर्देश दिया। जैसा कि फ़रमाया: ﴿وَٱسْتَشْهِدُوا۟ شَهِيدَيْنِ مِن رِّجَالِكُمْ﴾ अर्थात अपने पुरुषों में से दो गवाह रखो। वाक्यांश (مِن رِّجَالِكُمْ) यह दर्शाता है कि वे वयस्क, स्वतंत्र और मुसलमान हों। यह भी बताया गया कि गवाह ऐसे हों जिन्हें जाना जाता हो, ताकि आवश्यकता पड़ने पर उन्हें गवाही के लिए बुलाया जा सके। यह शरीअत की सटीकता और अधिकारों के संरक्षण की गहराई को दर्शाता है। यह

बताता है कि व्यवस्थाओं और नियमों को लिखने में इसी विधि को अपनाना चाहिए, ताकि अधिकारों में किसी भी प्रकार की कमी, अन्याय, या गलती से बचा जा सके। यह एक महत्वपूर्ण आधार है, जो उन सभी नियमों और प्रक्रियाओं पर लागू होता है, जो सार्वजनिक हितों के दायरे में आती हैं।

फिर गवाहों के प्रकार में और अधिक सटीकता और विस्तार किया गया। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿فَإِن لَّمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَٱمْرَأَتَانِ مِمَّن تَرْضَوْنَ مِنَ ٱلشُّهَدَآءِ﴾ अर्थात यदि दो पुरुष न मिल सकें, तो एक पुरुष और दो महिलाएं हों, जिनकी गवाही को आप स्वीकार करते हैं। यह संभावनाओं को समाहित करने और गवाही में सहूलियत देने के लिए है, ताकि यदि दो पुरुष उपलब्ध न हों, तो इस प्रकार से गवाह चुने जा सकें, जिन पर आपसी सहमति और विश्वास हो। यह मनमुटाव या गवाहों के प्रति किसी प्रकार के संदेह से बचने का माध्यम है। ऐसा इसलिए है ताकि किसी भी दोष या विवाद के कारण गवाही में बाधा न आए। इससे लेखन प्रक्रिया में न्याय सुनिश्चित होता है, चाहे वह ऋणदाता हो या ऋणी। अल्लाह तआला ने उन सभी संभावनाओं को स्पष्ट किया, जिन्हें सामान्यतः मनुष्य तभी समझ पाता है, जब वह स्थिति उत्पन्न हो। अल्लाह ने इन मामलों को अत्यंत सटीकता से व्यवस्थित किया। यह शरीअत की नीति का महत्वपूर्ण पहलू है, जो लोगों के हितों को ध्यान में रखती है, न्याय की स्थापना करती है, और गलतियों या अन्याय को रोकने के लिए उपाय सुनिश्चित करती है।

अल्लाह तआला ने इस बात का कारण बताया कि दो महिलाओं की गवाही एक पुरुष के बराबर क्यों है। जैसा कि फ़रमाया: ﴿أَن تَضِلَّ إِحْدَىٰهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَىٰهُمَا ٱلْأُخْرَىٰ﴾ अर्थात यदि उनमें से एक भूल जाए, तो दूसरी उसे याद दिलाए। यह भूल गवाही को भुलाने के कारण हो सकती है या उसके कुछ हिस्सों को। अल्लाह ने यह जिम्मेदारी एक महिला पर ही डाली कि वह दूसरी महिला को याद दिलाए। यह पुरुष द्वारा महिला को याद दिलाने के विपरीत है। क्योंकि महिलाओं के बीच सामान्य जीवनशैली और समानता के कारण विचार-विमर्श और संवाद में कोई बाधा नहीं होती, जबकि पुरुषों के साथ यह सहजता नहीं हो सकती। इसके अलावा, आमतौर पर महिलाएं लेन-देन, व्यापार और खरीद-फरोख्त में उतनी सक्रिय नहीं होतीं, जितने पुरुष होते हैं, जिससे उनके लिए इन मामलों की गहरी समझ विकसित हो जाती है। इस प्रकार, दूसरी महिला का होना भूल-सुधार के लिए एक सहायक उपाय है, न कि महिलाओं की बुद्धिमत्ता या उनके विश्वास को कमतर आंकने का।

फिर अल्लाह तआला ने गवाहों की जिम्मेदारी स्पष्ट की। जैसा कि फ़रमाया: ﴿وَلَا يَأْبَ ٱلشُّهَدَآءُ إِذَا مَا دُعُوا۟﴾ अर्थात गवाहों को बुलाए जाने पर इंकार नहीं करना चाहिए। हसन रहिमहुल्लाह ने कहा है कि इस आयत में दो बातें सम्मिलित हैं: गवाही देने के लिए बुलाए जाने

पर इंकार न करना, और विवाद के समय गवाही को प्रस्तुत करने में भी मना न करना।[1] अतः गवाह न तो गवाही के लिए बुलाए जाने से इंकार करे, और न ही गवाही प्रस्तुत करने से। यह लेखन और लेन-देन में सटीकता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

फिर क़ुरआन की शैली अनुबंध के विषय की ओर स्थानांतरित होती है, चाहे वह छोटा हो या बड़ा। अल्लाह तआला फरमाते हैं: ﴿وَلَا تَسْـَٔمُوٓاْ أَن تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰٓ أَجَلِهِۦ﴾ इसमें अल्लाह तआला लिखने और लेन-देन को दर्ज करने से ऊबने या उदासीनता बरतने से मना करते हैं। छोटे को बड़े से पहले उल्लेख करना ﴿صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا﴾ इस ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए है कि हर लेन-देन, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, दर्ज किया जाए। अक्सर छोटे लेन-देन को तुच्छ समझा जाता है, लेकिन छोटे मामलों में भी विवाद हो सकता है। भले ही लेन-देन छोटा हो, इसमें भूल-चूक या अन्य संभावनाएँ विवाद का कारण बन सकती हैं। इसमें क़ुरआन की गहनता और सटीकता दिखती है। अल्लाह, जो हर चीज़ का ज्ञान रखते हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि हर बात समय पर और सही ढंग से लिखी जाए। अल्लाह तआला ने समय सीमा का उल्लेख किया: ﴿إِلَىٰٓ أَجَلِهِۦ﴾ यह दिखाता है कि अनुबंधों और ज़िम्मेदारियों को स्पष्ट रूप से और समय सीमा सहित दर्ज किया जाना चाहिए। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी पक्षों के अधिकार सुरक्षित रहें और सामाजिक विवादों को रोका जा सके। यह मार्गदर्शन लिखित रूप में अनुबंध और उत्तरदायित्वों को दर्ज करने की आवश्यकता पर जोर देता है, ताकि विवादों से बचा जा सके और अधिकारों की रक्षा हो। इस्लामी शरीअत का उद्देश्य सामाजिक समरसता सुनिश्चित करना है।

फिर अल्लाह तआला ने लेखन की आवश्यकता का कारण बताया: ﴿ذَٰلِكُمْ أَقْسَطُ عِندَ ٱللَّهِ﴾ अर्थात, छोटे और बड़े लेन-देन को लिखना अल्लाह के निकट अधिक न्यायसंगत है।

इसमें लाभ केवल लेन-देन करने वालों के लिए ही नहीं है, बल्कि गवाहों के लिए भी है। ﴿وَأَقْوَمُ لِلشَّهَٰدَةِ﴾ अर्थात यह गवाही के लिए अधिक उचित और सुरक्षित है। यह लिखित रूप में संदेह और विवाद को दूर करता है और गवाहों को न्यायसंगत बनाता है।

अल्लाह तआला फरमाते हैं: ﴿وَأَدْنَىٰٓ أَلَّا تَرْتَابُوٓاْ﴾ अर्थात लिखित रूप में दर्ज करना संदेह और भ्रम को कम करता है। यह सामाजिक विवादों को रोकने का एक तरीका है। इस्लामी शरीअत विवादों को समाप्त करने और सामाजिक समरसता सुनिश्चित करने पर विशेष जोर देती

(1) अल् जामेअ लि अहकामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 257)।

है। इस आयत का अंतिम भाग, ﴿ذَٰلِكُمْ أَقْسَطُ عِندَ ٱللَّهِ﴾ मुसलमानों को इस्लामी विधि का पालन करने के लिए प्रेरित करता है। यह दिखाता है कि अल्लाह का तरीका अधिक न्यायपूर्ण और विवादों से बचने का बेहतर उपाय है।

कभी-कभी व्यापार में तेजी के कारण अनुबंध की लिखावट करना मुश्किल हो सकता है, इसलिए अल्लाह तआला ने इसका अपवाद स्पष्ट किया है अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿إِلَّآ أَن تَكُونَ تِجَـٰرَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ﴾ "परंतु यदि यह एक तात्कालिक व्यापार हो जिसे तुम हाथों-हाथ कर रहे हो, तो इसे न लिखने में कोई हानि नहीं है।" अर्थात, यदि व्यापार तत्काल हो और हाथों-हाथ लेन-देन हो रहा हो, तो इसे लिखने की कोई बाध्यता नहीं है।[1] आयत में फ़रमाया गया: ﴿فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا﴾ यहाँ अल्लाह तआला ने स्पष्ट किया कि ऐसी स्थिति में इसे लिखने का पाप नहीं है क्योंकि यह नकद लेन-देन है और इसमें कोई उधार या स्थगन शामिल नहीं है। ﴿تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ﴾ "तुदीरूनहा बैनकुम" का अर्थ है कि यह लेन-देन हाथों-हाथ और तत्काल हो रहा हो।

फिर आयत व्यापार और उस पर गवाही के आदेश की ओर बढ़ती है: ﴿وَأَشْهِدُوٓا۟ إِذَا تَبَايَعْتُمْ﴾ "और जब आपस में व्यापार करो, तो गवाह बना लो।" अल्लाह तआला ने व्यापार पर गवाही बनाने का आदेश दिया। इमाम इब्न -ए- क़सीर रह़िमहुल्लाह कहते हैं: यह आदेश मार्गदर्शन और सलाह के लिए है, न कि अनिवार्यता के लिए।[2]

यहाँ इस्लामी विद्वानों द्वारा किए गए फिक्ही प्रयासों का महत्वपूर्ण लाभ सामने आता है। उन्होंने क़ुरआन और ह़दीस़ के पाठों को मिलाकर यह निर्णय निकाला कि यह आदेश अनिवार्यता के लिए नहीं बल्कि सलाह के लिए है। यहां पर यह बताया गया है कि इस आयत का फिकही विवेचन विद्वानों द्वारा किया गया है, जिन्होंने क़ुरआन और ह़दीस़ के बीच सामंजस्य स्थापित किया। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि यह आदेश अनिवार्य (वाजिब) नहीं है, बल्कि एक सुझाव (नसीहत) है। यह निष्कर्ष ह़दीस़ के आधार पर लिया गया, जिसमें यह बताया गया कि जब तक लेखन या गवाही से संबंधित किसी प्रावधान का स्पष्ट आदेश नहीं है, तब तक उसे अनिवार्य नहीं माना जा सकता। यह फिकही विश्लेषण, जो आमतौर पर सोचने से गहरे चिंतन की ओर अग्रसर करता है, यह दर्शाता है कि क़ुरआन और ह़दीस़ के प्रत्येक शब्द और वाक्य का गहराई से विश्लेषण करना जरूरी है। इसके जरिए हम धार्मिक आदेशों और हुक्मों के सही अर्थ और उद्देश्य को समझ सकते हैं। विद्वानों ने, इस आयत और ह़दीस़ के अध्ययन के द्वारा,

---

(2) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 344)।
(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 344)।

धार्मिक शिक्षाओं को व्यावहारिक जीवन में लागू करने का तरीका ढूंढा, जो धार्मिक और कानूनी दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन और विवेचन हमें यह समझने में मदद करता है कि कैसे क़ुरआन और ह़दीस़ के संदेशों को सही रूप में समझा और लागू किया जा सकता है। जो भी इस आयत के फिक्ही निष्कर्ष और निर्णय को समझने की कोशिश करेगा, वह क़ुरआन और ह़दीस़ के शब्दों की सटीक समझ और व्याख्या से मुग्ध हो जाएगा। ﴿وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ﴾ "न तो लेखक और न गवाह को हानि पहुँचाई जाए," इस आयत के कई संभावित अर्थ हैं। पहला अर्थ: लेखक वही लिखे जो उसे बताया जाए, और गवाह अपनी गवाही में कुछ न बढ़ाए और न घटाए। दूसरा अर्थ: लेखक लिखने से इंकार न करे और गवाह गवाही देने से इंकार न करे। तीसरा अर्थ: यह कि गवाह को गवाही देने के लिए बुलाया जाए, और लेखक को लेखन के लिए, जबकि वे दोनों व्यस्त हों, तो अगर वे मना कर दें, तो उन्हें निकाल दिया जाए और उन्हें कष्ट पहुँचाया जाए, यह कहते हुए: "तुमने अल्लाह के आदेश का उल्लंघन किया है", और इस तरह की बातें, जिस से दोनों को हानि पहुँचे।(1) इसमें एक लाभ है, कि यह सभी संभावनाओं के विभिन्न रूपों और अर्थों को समझने का तरीका बताता है। यह इस बात का संकेत है कि कुरआनी आयत एक शब्द या वाक्य में कई मुरादें समाहित कर सकती है, उसकी अत्यधिक स्पष्टता और श्रेष्ठता के कारण। और सभी मुरादें सटीक और समान रूप से करीब होती हैं, और इस तरह के उदाहरण बहुत होते हैं।

फिर यह महान और बुद्धिमान आयत एक महान उपदेश के साथ समाप्त होती है, जैसा कि अल्लाह तआला फरमाते हैं: ﴿وَإِن تَفْعَلُوا۟ فَإِنَّهُۥ فُسُوقٌۢ بِكُمْ﴾ अर्थात: अगर तुमने उन बातों का पालन नहीं किया, जिनका तुमसे आदेश दिया गया था, या तुमने उन बातों को किया, जिनसे तुम्हें मना किया गया था, तो यह तुम्हारे लिए फुसूक (अल्लाह के आदेश से बाहर निकलना) होगा, यह तुम्हारे लिए अनिवार्य होगा, तुम इससे न तो हट सकते हो, न इससे छुटकारा पा सकते हो।(2) फुसूक का मतलब है, आज्ञा का उल्लंघन। यह निःसंदेह अल्लाह के आदेश और निषेध का उल्लंघन करने के खिलाफ एक चेतावनी है, और इसे गंभीरता से और पूरी तवज्जो से लिया जाना चाहिए। ﴿وَاتَّقُوا۟ ٱللَّهَ﴾ अल्लाह से डरें और उसकी निगरानी रखें, उसके आदेश का पालन करें, और उन चीजों से दूर रहें जिनसे उसने मना किया है। फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَيُعَلِّمُكُمُ ٱللَّهُ﴾ यानि: वह तुम्हें तुम्हारे मामलों की भलाई सिखाता है। यह इस बात को दर्शाता है कि अल्लाह तआला वह है जिसने अपने बंदों को यह निर्धारित ज्ञान दिया है, और वह ही उन सभी उपयोगी और लाभकारी ज्ञान को सिखाता है, वह ही अपने बंदों को वह ज्ञान

(2) अल् जामेअ लि अह़कामिल् क़ुरआन, लेखकः क़ुर्तुबी (3/ 261-262)।

(1) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 344)।

सिखाता है जिसकी उन्हें उसकी ओर मार्गदर्शन और पहुंचने के लिए जरूरत है। इस ज्ञान का आभार और अल्लाह की तरफ से मिलने वाले अतिरिक्त कृपा के कारण, हमें उसकी डर और सम्मान की जरूरत है। अल्लाह के ज्ञान और कृपा की प्राप्ति में डर (तकवा) एक कारण और माध्यम है। फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٌ﴾ वह अपने बंदों के बारे में और हर चीज़ के बारे में जानता है, उस पर कुछ भी छिपा नहीं है, और यही बात इस महान आयत का अंतिम बयान है: ﴿وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٌ﴾ (और निःसंदेह अल्लाह सब कुछ जानता है)।

﴿۞ وَإِن كُنتُمۡ عَلَىٰ سَفَرٖ وَلَمۡ تَجِدُواْ كَاتِبٗا فَرِهَٰنٞ مَّقۡبُوضَةٞۖ فَإِنۡ أَمِنَ بَعۡضُكُم بَعۡضٗا فَلۡيُؤَدِّ ٱلَّذِي ٱؤۡتُمِنَ أَمَٰنَتَهُۥ وَلۡيَتَّقِ ٱللَّهَ رَبَّهُۥۗ وَلَا تَكۡتُمُواْ ٱلشَّهَٰدَةَۚ وَمَن يَكۡتُمۡهَا فَإِنَّهُۥٓ ءَاثِمٞ قَلۡبُهُۥۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ عَلِيمٞ ٢٨٣﴾

[سورة البقرة:٢٨٣].

(और यदि तुम यात्रा में रहो तथा लिखने के लिए किसी को न पाओ, तो धरोहर रख दो और यदि तुममें परस्पर एक-दूसरे पर भरोसा हो, (तो धरोहर की भी आवश्यक्ता नहीं,) जिसपर अमानत (उधार) है, वह उसे चुका दे तथा अल्लाह (अपने पालनहार) से डरे और साक्ष्य न छुपाओ और जो उसे छुपायेगा, उसका दिल पापी है तथा तुम जो करते हो, अल्लाह सब जानता है)।

फिर रब अल्लाह की ओर से दिया गया यह महान मार्गदर्शन एक अन्य स्थिति की ओर बढ़ता है, जो व्यापारी और खरीदार की हो सकती है। अल्लाह तआला कहता है: ﴿وَإِن كُنتُمۡ عَلَىٰ سَفَرٖ﴾ "और यदि तुम सफर में हो", यह उन स्थितियों में से एक है जो व्यापारियों और खरीदारों के लिए हो सकती हैं, जो है यात्रा। इसमें कई लाभ हैं, जिनमें से एक है कि क़ुरआन और दिव्य हिदायतें व्यापारियों और खरीदारों की संभावित परिस्थितियों और मामलों को संपूर्ण रूप से कवर करती हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि यह केवल अल्लाह रब की ओर से दी गई वहि हो सकती है, जो इतनी सटीकता के साथ हो। अल्लाह तआला ने उन सभी संभावित परिस्थितियों को शामिल किया है, जिनमें व्यापारी और खरीदार हो सकते हैं, और जिनमें उन्हें कठिनाई हो सकती है। अल्लाह तआला कहते हैं: ﴿وَإِن كُنتُمۡ عَلَىٰ سَفَرٖ وَلَمۡ تَجِدُواْ كَاتِبٗا﴾ "और यदि तुम सफर में हो और कोई कातिब न पाओ", यह एक संभावना हो सकती है, और क़ुरआन ने इसे अल्लाह की हिदायत के साथ संपूर्ण रूप से शामिल किया है। चाहे व्यापार पूरी तरह से हो या आंशिक रूप से, कातिब या लेखन के उपकरणों के अभाव में, जैसे कि कागज और कलम।

फिर अल्लाह तआला ने अपने बंदों को गिरवी रखने की ओर मार्गदर्शन दिया, जैसा कि फरमाते हैं: ﴿فَرِهَٰنٌ مَّقْبُوضَةٌ﴾ लेखन के बजाय, गिरवी रखने का तरीका बताया गया, कि अधिकारधारी को वह चीज़ दी जाए जिसे वह गिरवी में रख सकता है। यह विक्रयकर्ता (ऋणदाता या उधारी लेने वाला) के लिए एक सुरक्षा और गारंटी है। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यापार संबंधी मामलों में अल्लाह तआला का विधान कितना सटीक और व्यवस्थित है, क्योंकि यह जीवन के सामान्य पहलुओं जैसे बस्तियों और यात्राओं की स्थितियों, और साथ ही पूरी कीमत या कुछ कीमत के अनुपलब्ध होने, या लिखित दस्तावेज़ की अनुपस्थिति जैसी समस्याओं को ध्यान में रखता है। इस प्रकार, व्यापारी और खरीदार की रक्षा के लिए मुनाफा और अधिकारों की गारंटी दी जाती है।

फिर अल्लाह तआला ने इसका अपवाद बताया, सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है: ﴿فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُم بَعْضًا﴾ यह वह स्थिति है जब दोनों पक्षों के बीच विश्वास और भरोसा हो। ऐसी स्थिति में, व्यापारी और खरीदार के बीच न तो कोई दस्तावेज़ लिखा जाता है और न ही कोई गिरवी रखी जाती है, क्योंकि उनके बीच परस्पर विश्वास और ईमानदारी है। फिर अल्लाह तआला निर्देश देते हैं कि जिस पर विश्वास किया गया है, वह अपना कर्तव्य निभाए: ﴿فَلْيُؤَدِّ ٱلَّذِى ٱؤْتُمِنَ أَمَٰنَتَهُۥ﴾ यह आदेश करता है कि उधारी या ऋण पर विश्वास करने वाले को अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। अल्लाह तआला ने इसे "अमानत" (धरोहर) के रूप में नामित किया, जो एक बहुत महत्वपूर्ण शब्द है, क्योंकि इसका अर्थ है कि जो कुछ भी किसी पर विश्वास किया गया है, उसे पूरी ईमानदारी से लौटाना। अल्लाह तआला ने इसे आदेश देने के साथ-साथ "वह अल्लाह से डरें" कहा, ताकि वे अपने दायित्वों को सही तरीके से पूरा करें। फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَلَا تَكْتُمُوا۟ ٱلشَّهَٰدَةَ﴾ यह आयत गवाहों से जुड़ी है, और उन्हें गवाही देने से मना करने या उसे छिपाने का निषेध करती है। जो व्यक्ति गवाही छिपाता है, उसके बारे में अल्लाह तआला ने कहा है: ﴿وَمَن يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُۥٓ ءَاثِمٌ قَلْبُهُۥ ۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ﴾ सुद्दी कहते हैं कि इसका मतलब है "उसका दिल भ्रष्ट है"।[1] इस वाक्य में यह बताया गया है कि गवाही छिपाना या न देना दिल की भ्रष्टता और पाप को दर्शाता है। इस प्रकार, गवाही देने की ईमानदारी और सत्यता का पालन करना, दिल की पवित्रता और अल्लाह से डर के लक्षण हैं। फिर अल्लाह तआला ने इस आयत में कहा: ﴿وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ﴾ यह वाक्य एक चेतावनी है कि अल्लाह तआला आपके द्वारा किए गए हर काम को जानते हैं, चाहे वह छुपा हुआ हो या प्रकट। यह आयत जीवन में सही मार्गदर्शन देने के लिए एक ठोस सिद्धांत प्रस्तुत

(1) तफ़सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कसीर (1/ 345)।

करती है, जिससे किसी को भी गलत काम करने से रोकने की कोशिश की जाती है, क्योंकि अल्लाह तआला हमेशा हमारे साथ हैं और हमारे हर कार्य से पूरी तरह वाकिफ हैं।

और अल्लाह तआला का फरमान: ﴿وَٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ عَلِيمٞ﴾ यह आयत एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है जो हमारे आचरण और व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए है। जब किसी को पाप करने का विचार आता है, तो उसे अपने दिल से यह याद दिलाना चाहिए: ﴿وَٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ عَلِيمٞ﴾ अगर कोई व्यक्ति किसी अच्छे काम को करने के लिए ठानता है, तो उसे अपनी आत्मा को यह कहकर प्रोत्साहित करना चाहिए: ﴿وَٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ عَلِيمٞ﴾ वह अल्लाह तआला हर कार्य से पूरी तरह अवगत हैं। इस प्रकार, यह आयत एक दिशा-निर्देश के रूप में कार्य करती है, जो अच्छे कामों को करने के लिए प्रेरित करती है और पाप से बचने के लिए रोकती है।

अल्लाह तआला के इस दिव्य मार्गदर्शन में व्यापार और कर्ज की समस्याओं पर ध्यान दिया गया है, जो व्यापार और खरीदारी के महत्व को दर्शाता है। इसमें यह भी दिखाया गया है कि पृथ्वी पर चलने-फिरने और व्यापार करने की प्रेरणा दी गई है, क्योंकि इसमें लोगों के बीच के लाभ और हित शामिल होते हैं। लोग एक-दूसरे से लाभान्वित होते हैं, और यह आपसी परिचय, मित्रता और दान के अवसर प्रदान करता है, जिन्हें अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पसंद करते हैं। यह कार्य की महत्वता और बेरोजगारी के निंदा को भी दर्शाता है। इस्लामी दृष्टिकोण मानव क्षमताओं का उपयोग करने और उन्हें उद्देश्यपूर्ण तरीके से निर्देशित करने पर आधारित है, जो कि विस्तृत और सूक्ष्म प्रावधानों के माध्यम से किया गया है। सबसे लंबी आयत, जो सबसे लंबे सूरा में है, व्यापार, कर्ज, गिरवी रखने, और यात्रा में भी इन मामलों को शामिल करती है। संसारों के पालनहार अल्लाह की सारी प्रशंसा है।

﴿لِّلَّهِ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۗ وَإِن تُبۡدُواْ مَا فِيٓ أَنفُسِكُمۡ أَوۡ تُخۡفُوهُ يُحَاسِبۡكُم بِهِ ٱللَّهُۖ فَيَغۡفِرُ لِمَن
يَشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَآءُۗ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٌ ٢٨٤ ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلۡمُؤۡمِنُونَۚ كُلٌّ ءَامَنَ
بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ أَحَدٖ مِّن رُّسُلِهِۦۚ وَقَالُواْ سَمِعۡنَا وَأَطَعۡنَاۖ غُفۡرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيۡكَ ٱلۡمَصِيرُ
٢٨٥ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفۡسًا إِلَّا وُسۡعَهَاۚ لَهَا مَا كَسَبَتۡ وَعَلَيۡهَا مَا ٱكۡتَسَبَتۡۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذۡنَآ إِن نَّسِينَآ أَوۡ أَخۡطَأۡنَاۚ
رَبَّنَا وَلَا تَحۡمِلۡ عَلَيۡنَآ إِصۡرٗا كَمَا حَمَلۡتَهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِنَاۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلۡنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِۦۖ وَٱعۡفُ عَنَّا
وَٱغۡفِرۡ لَنَا وَٱرۡحَمۡنَآۚ أَنتَ مَوۡلَىٰنَا فَٱنصُرۡنَا عَلَى ٱلۡقَوۡمِ ٱلۡكَٰفِرِينَ ٢٨٦﴾

(आकाशों तथा धरती में जो कुछ है, सब अल्लाह का है और जो तुम्हारे मन में है, उसे बोलो अथवा मन ही में रखो, अल्लाह तुमसे उसका ह़िसाब लेगा। फिर जिसे चाहे, क्षमा कर देगा और जिसे चाहे, दण्ड देगा और अल्लाह जो चाहे, कर सकता है। रसूल उस चीज़ पर ईमान

लाया, जो उसके लिए अल्लाह की ओर से उतारी गई तथा सब ईमान वाले उसपर ईमान लाये। वे सब अल्लाह तथा उसके फ़रिश्तों और उसकी सब पुस्तकों एवं रसूलों पर ईमान लाये। (वे कहते हैः) हम उसके रसूलों में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते। हमने सुना और हम आज्ञाकारी हो गये। हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे और हमें तेरे ही पास आना है। अल्लाह किसी प्राणी पर उसकी सकत से अधिक (दायित्व का) भार नहीं रखता। जो सदाचार करेगा, उसका लाभ उसी को मिलेगा और जो दुराचार करेगा, उसकी हानि भी उसी को होगी। हे हमारे पालनहार! यदि हम भूल चूक जायें, तो हमें न पकड़। हे हमारे पालनहार! हमारे ऊपर इतना बोझ न डाल, जितना हमसे पहले के लोगों पर डाला गया। हे हमारे पालनहार! हमारे पापों की अनदेखी कर दे, हमें क्षमा कर दे तथा हमपर दया कर। तू ही हमारा स्वामी है तथा काफ़िरों के विरुध्द हमारी सहायता कर)।

इस मुबारक सूरह में संदर्भ अल्लाह के मालिक होने, ईमान, माफी और इनाम से संबंधित मामलों की ओर बढ़ता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿لِّلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ﴾ (जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, वह सब अल्लाह का है) यह अल्लाह तआला का मालिकाना हक़ और बयान है कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ भी है, वह सब अल्लाह का है, चाहे वह उनकी तख़लीक़ (सृजन), मालिकाना हक़, संचालन, ज्ञान, या उनकी संपूर्ण जानकारी के तहत हो। यहाँ तक कि इंसान जो अपने दिल में छुपाता है, या लोगों से छुपा कर रखता है, या उसे ज़ाहिर करता है, वह सब अल्लाह जानता है। ﴿وَإِن تُبْدُوا مَا فِي أَنفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُم بِهِ اللَّهُ﴾ (और यदि तुम अपने दिलों में छुपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा) इस हिस्से में अल्लाह तआला के ज्ञान, हिसाब-किताब, आखिरत के दिन और उनके मालिकाना हक़ को साबित किया गया है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि वह सब कुछ जानते हैं, चाहे इंसान अपने दिल में छुपाए या ज़ाहिर करे। यह अल्लाह के संपूर्ण ज्ञान और उनके हर चीज़ पर नियंत्रण का प्रमाण है। अल्लाह तआला जानता है कि कौन ऐसा मुनाफ़िक़ (दिखावा करने वाला) है जो ईमान का प्रदर्शन करता है लेकिन अपने दिल में कुफ़्र को छुपाए हुए है। वह यह भी जानते हैं कि कौन नेक काम करता है लेकिन उसकी नीयत दिखावा और शोहरत पाने की होती है। इसी तरह, वह उस इंसान के दिल की नीयत से भी वाक़िफ़ हैं, जो किसी इबादत (उपासना) का इरादा करता है लेकिन उसे अंजाम नहीं दे पाता, या जो जानबूझकर किसी फर्ज़ (दायित्व) को अदा करने का इरादा नहीं करता और उसे बहाने बनाकर टाल देता है, जैसे वह व्यक्ति जो सोते समय पहले से तय कर ले कि वह नमाज़ के लिए नहीं उठेगा। इससे यह साबित होता है कि अल्लाह तआला से कोई भी अच्छी या बुरी नीयत छुपी नहीं रह सकती। यह एहसास एक ईमान वाले को यह यकीन दिलाता है कि वह खुद भी अल्लाह का एक बंदा और उसकी मिल्कियत (मालिकाना हक़) में है। इंसान को यह समझना चाहिए कि जो कुछ भी

वह रखता है, वह केवल अल्लाह के इख़्तियार से मिला हुआ है। यह सब कुछ, चाहे संपत्ति हो, ताक़त हो, या अन्य कोई चीज़, असल में अल्लाह की दी हुई है और वह इसे छीन भी सकते हैं। जब इंसान इस हक़ीक़त को समझ लेता है, तो वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करता है, उसकी नाफ़रमानी से बचता है, और हर चीज़ के लिए अल्लाह पर निर्भर होकर उसकी मदद मांगता है। इस एहसास से इंसान का ईमान मज़बूत होता है, और वह अल्लाह के आदेशों का पालन करने, उससे मदद मांगने, और केवल उसी पर भरोसा रखने की ओर प्रेरित होता है।

इस आयत में अल्लाह तआला की माफ़ी और रह़मत को बयान किया गया है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ﴿فَيَغْفِرُ لِمَن يَشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَآءُ﴾ "वह जिसे चाहे माफ़ करें और जिसे चाहे सज़ा दें।" यह अधिकार सिर्फ़ अल्लाह के पास है कि वह अपने बंदों में से जिसे चाहे, माफ़ करें, और जिसे चाहे, सज़ा दें। कोई भी उनके फ़ैसले में बदलाव नहीं कर सकता।

और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ﴿وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٌ﴾ यह अल्लाह की शक्ति को दर्शाता है कि वह हर चीज़ पर काबू पाने में सक्षम है। इसका मतलब यह है कि बंदा चाहे कितना भी गुनाहगार हो, अगर अल्लाह चाहें तो उसे माफ़ कर सकता है, क्योंकि उनकी क़ुदरत हर चीज़ पर हावी है।

इससे ईमान वाले को यह सबक मिलता है कि उसे हमेशा अल्लाह से माफ़ी मांगनी चाहिए और उसकी रह़मत की उम्मीद करनी चाहिए। इंसान को अपने गुनाहों की वजह से मायूस नहीं होना चाहिए, चाहे उसकी ग़लतियाँ कितनी भी बड़ी क्यों न हों, क्योंकि अल्लाह तआला जिसे चाहे, माफ़ कर सकता है। अल्लाह तआला का कथन ﴿لِمَن يَشَآءُ﴾ "जिसे वह चाहे", यह शब्द यह दर्शाता है कि माफ़ी और अज़ाब का फ़ैसला अल्लाह की मर्ज़ी पर निर्भर करता है। यह बात बंदे को हमेशा नेक कामों की तरफ़ ले जाती है, क्योंकि उसे नहीं पता कि वह अल्लाह की माफ़ी पाने वालों में से है या नहीं। इसलिए, वह अल्लाह की आज्ञाओं का पालन करता है, उससे माफ़ी मांगता है और बुरे कर्मों से दूर रहने की कोशिश करता है। हालाँकि, बंदे को अल्लाह की माफ़ी और रह़मत पर अधिक भरोसा करना चाहिए, क्योंकि इस्लामी शिक्षाओं में रह़मत को ग़ज़ब (क्रोध) पर प्राथमिकता दी गई है। जैसा कि कुदसी ह़दीस़ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "मैं अपने बंदे के गुमान के अनुसार हूँ, और मैं उसके साथ हूँ जब वह मुझे याद करता है"।[1]

इस आयत के नुज़ूल का सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम पर गहरा असर हुआ, क्योंकि इसमें अल्लाह तआला द्वारा इंसान के दिल की बातों और इरादों का हिसाब लेने का उल्लेख है। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं: जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

(1) बुख़ारी (4/ 384) ह़दीस़ संख्या (7405)।

व सल्लम पर यह आयत नाज़िल हुई: ﴿لِّلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَإِن تُبْدُوا مَا فِي أَنفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُم بِهِ اللَّهُ ۖ فَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٨٤﴾﴾ (आकाशों तथा धरती में जो कुछ है, सब अल्लाह का है और जो तुम्हारे मन में है, उसे बोलो अथवा मन ही में रखो, अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहे, क्षमा कर देगा और जिसे चाहे, दण्ड देगा और अल्लाह जो चाहे, कर सकता है) तो यह आयत सहाबा पर भारी गुज़री। वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपने घुटनों के बल बैठ गए। उन्होंने कहा: "हमें उन अमल का हुक्म दिया गया है, जिन्हें हम अदा कर सकते हैं, जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात, जिहाद और सदक़ा। लेकिन यह आयत हम पर नाज़िल हुई है और हम इसे अदा करने की ताक़त नहीं रखते।" इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या तुम लोग वही कहना चाहते हो, जो तुमसे पहले की किताबों वालों ने कहा: हमने सुना और इंकार किया? बल्कि तुम यह कहो: हमने सुना और मान लिया। ऐ हमारे रब, हमें माफ़ कर दे और तेरी ही तरफ़ लौटकर जाना है।" जब सहाबा ने इस बात को मान लिया और अपनी ज़बानों से इसे दोहराया, तो अल्लाह तआला ने इसके बाद ये आयतें नाज़िल कीं: ﴿آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِن رَّبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ --﴾ "रसूल ईमान लाया जो कुछ उसके रब की तरफ़ से उस पर नाज़िल किया गया, और मोमिन भी ..." और आगे फ़रमाया: ﴿لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ﴾ "अल्लाह किसी जान पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालता। उसके लिए वही है जो उसने कमाया और उसी पर है जो उसने किया।"

तो ये दोनों आयतें सहाबा के लिए दिल को सुकून देने वाली बनीं, क्योंकि अल्लाह तआला ने इसमें फ़रमाया: ﴿آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِن رَّبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ﴾ "रसूल ईमान लाए जो कुछ उनके रब की तरफ़ से उन पर नाज़िल किया गया, और मोमिन भी।" इस आयत में अल्लाह तआला ने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ईमान और उनकी तस्दीक़ में मोमिनों को भी शरीक कर दिया। यह मोमिनों के लिए एक बड़ा सम्मान है कि उन्हें उनके नबी के साथ उस चीज़ में शामिल किया गया, जिस पर उन्होंने ईमान लाया और उसे सच माना। साथ ही, इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने मोमिन बंदों पर खास रहमत और अनुकंपा दिखाते हुए उनकी वह चिंता दूर कर दी, जो उनके दिलों में थी। वे हर उस चीज़ पर ईमान लाए जो अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल की ﴿كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِ ۚ﴾ "सब ईमान लाए अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर। हम उसके रसूलों में से किसी में फ़र्क नहीं करते।" यह मोमिनों के ईमान का इज़हार है और इस बात का सबूत है कि हर मुसलमान को उन चीज़ों पर ईमान

लाना चाहिए जो ईमान की बुनियादी शर्तें हैं। ﴿وَقَالُواْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا﴾ "और उन्होंने कहा: हमने सुना और हमने मान लिया।"

यह मोमिन की स्थिति होती है कि वह अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेशों और निषेधों के सामने पूर्ण रूप से ﴿سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا﴾ "हमने सुना और आज्ञा का पालन किया" (समिअना व अतिअना) कहता है।

यह मुसलमान के लिए एक मूलभूत सिद्धांत है: ﴿سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا﴾ "समिअना व अतिअना (हमने सुना और आज्ञा का पालन किया)", यह वाक्यांश हर स्थिति में उपयोग किया जा सकता है जब अल्लाह तआला के आदेशों के बारे में किसी भी प्रकार की शंका या सवाल उठे। जब भी उसके मन में कोई शंका हो, तो वह कहे: ﴿سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا﴾ "समिअना व अतिअना (हमने सुना और आज्ञा का पालन किया)", और जब उसे इंसानों और जिन्न की ओर से कोई शंका हो, तो वह कहे: ﴿سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا﴾ "समिअना व अतिअना (हमने सुना और आज्ञा का पालन किया)", और जब वह कुछ ऐसा सुने जो अल्लाह की किताब और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सुन्नत के खिलाफ हो, तो वह सुरक्षा मांगे और कहे: ﴿سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا﴾ "समिअना व अतिअना (हमने सुना और आज्ञा का पालन किया)", और जब लोग अल्लाह की शरीअत के बारे में विवाद करें, तो वह अल्लाह की ओर से समर्थन पाए और कहे: ﴿سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا﴾ "समिअना व अतिअना (हमने सुना और आज्ञा का पालन किया)", यह वाक्यांश उसे अल्लाह की शरीअत के खिलाफ हर चीज़ पर मजबूत बनाएगा। और इसी तरह, ईमान वाला कहता है: ﴿غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ﴾ "ग़ुफ़रानका रब्बना व इलैका अल-मसीर, (हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे और हमें तेरे ही पास आना है)", यह वाक्यांश हर उस समय उपयोग किया जा सकता है जब वह अपनी कमी या पाप महसूस करता है, जब भी उसे अपनी गलती या पाप याद आए, वह कहे: "﴿غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ﴾ "ग़ुफ़रानका रब्बना व इलैका अल-मसीर, (हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे और हमें तेरे ही पास आना है)", यह वाक्यांश उसे अल्लाह से माफी मांगने और यह याद दिलाने की शक्ति देता है कि अंततः हमें अल्लाह के सामने हाजिर होना है।

फिर अल्लाह तआला कहता है: ﴿لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا﴾ "अल्लाह किसी आत्मा को उसकी शक्ति से अधिक नहीं आजमाता", अल्लाह तआला की रहमत यह है कि उसने शरीअत में कोई ऐसा आदेश नहीं दिया जो आत्मा के लिए कठिन हो, या इंसानी क्षमताओं से बाहर हो। उसकी रहमत यह है कि उसने हर हालत के अनुसार सहूलियत दी है। उदाहरण के

लिए, बीमार को रमजान में रोज़ा छोड़ने और बाद में क़जा करने की अनुमति, और जो खड़े होकर नमाज़ नहीं पढ़ सकते, उन्हें बैठकर पढ़ने की अनुमति, और ज़कात के लिए एक चौथाई का निर्धारण। नमाज़ में भूलने पर सवाब का सजदा। अल्लाह तआला ने किसी को भी उसकी क्षमता से अधिक नहीं आजमाया। वह हर इंसान की क्षमता और कमजोरी को जानता है, और इस ज्ञान के आधार पर आदेश देता है। फिर अल्लाह तआला कहता है: ﴿لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ﴾ "उसके लिए वह है जो उसने कमाया, और उसके खिलाफ वह है जो उसने कमाया" इसका मतलब है कि इंसान को उसके अच्छे कर्मों का इनाम मिलेगा, और उसके पापों का हिसाब लिया जाएगा। अल्लाह तआला से किसी प्रकार का अन्याय नहीं होता। इससे इंसान को पाप से बचने और अच्छे कर्मों में मेहनत करने की प्रेरणा मिलती है।

इस के लाभों में से यह है कि अल्लाह तआला ने 'कस्ब' के साथ 'ख़ैर' या 'गुनाह' का उल्लेख नहीं किया है: ﴿لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ﴾ "उसके लिए वही है जो उसने कमाया, और उसके खिलाफ वही है जो उसने कमाया", क्योंकि 'कस्ब' का अर्थ है जो व्यक्ति अपने लिए कमाता है, वह या तो उसके लिए अच्छा हो सकता है, जिससे उसका परिणाम उसे मिलेगा, या वह पाप हो सकता है, जिससे उसका परिणाम उसके खिलाफ होगा, इसलिए, 'ख़ैर' और 'गुनाह' का उल्लेख आवश्यक नहीं था। यह क़ुरआन की बयानबाजी की सटीकता और सुंदरता का हिस्सा है।

फिर अल्लाह तआला ने ईमान वालों को एक व्यापक दुआ सिखाई: ﴿رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِن نَّسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا﴾ "हमारे रब, अगर हम भूल जाएं या गलती करें तो हमें पकड़ न लेना", यह भूल और गलती के कारण होने वाले पाप के लिए माफी मांगने की एक दुआ है, जो अल्लाह की कृपा है, क्योंकि इंसान भूल और गलती से मुक्त नहीं होता। फिर अल्लाह तआला से बोझ के भार को कम करने की दुआ: ﴿رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِنَا﴾ "हमारे रब, हम पर वह बोझ न डाल जो तूने हमसे पहले के लोगों पर डाला था", यानि हम पर ऐसे बोझ न डाल जो हमें भारी और कठिन हों। ﴿وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ﴾ "हमारे रब, और हम पर वह बोझ न डाल जो हमारी क्षमता से परे हो", अर्थात हमें ऐसे कठिन आदेश और विपत्तियों में न डाल जो हमारी क्षमता से अधिक हों। यह एक महान दुआ है, जिससे अल्लाह तआला हर विपत्ति और मुसीबत को दूर कर सकते हैं।

इस दुआ को सिखाने से यह सिद्ध होता है कि अल्लाह तआला अपने बंदों से कठिनाई, विपत्ति, और दुख नहीं चाहता, और वह अपने बंदों से दुआ मांगने और विनम्रता से बात करने को पसंद करता है। ﴿وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا﴾ "और हमें माफ कर, हमें क्षमा कर, और हम

पर रहम कर", ﴿وَٱعۡفُ عَنَّا﴾ "और हमें माफ कर," अर्थात हमारे पापों को माफ कर और हमें उन पर सजा न दे[1], ﴿وَٱغۡفِرۡ لَنَا﴾ "और हमें क्षमा कर", तथा मग़्फ़िरतः पापों को छिपाने को कहते हैं[2], और अल्लाह तआला की ओर से क्षमा यह है कि वह अपने बंदों को हर प्रकार की सजा से बचाए[3] तथा यह पाप को मिटाना और उसे माफ करना है। ﴿وَٱرۡحَمۡنَآ﴾ "और हम पर रहम कर", अर्थात हमें अच्छा कर और कृपा कर, और हमें किसी अन्य पाप में पड़ने से बचा। ﴿أَنتَ مَوۡلَىٰنَا﴾ "तू हमारा मालिक है", यानि तू हमारा संरक्षक और मददगार है, और हम तुझ पर भरोसा करते हैं। ﴿فَٱنصُرۡنَا عَلَى ٱلۡقَوۡمِ ٱلۡكَٰفِرِينَ﴾ "और हमें काफिरों के खिलाफ मदद कर", अर्थात जिन लोगों ने तेरे दीन का इंकार किया और तेरी तौह़ीद (एकता) का इंकार किया, तेरे रसूल मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क इनकार किया, उनके विरुद्ध हमारी सहायता कर, और हमारे लिए दुनिया और आख़िरत में उनका अंत (अंतिम परिणाम) हमारे पक्ष में कर दे।[4] इस से यह सिद्ध होता है कि अल्लाह तआला ही वह 'अफ़ुव्व' (माफी देने वाला) है, जो माफी देता है, और वही वह है जिससे माफी की उम्मीद की जाती है, न कि किसी और से। वह 'ग़फ़ूर' (क्षमा करने वाला) है, जिससे क्षमा की माँग की जाती है, वह 'रहमान' (दया करने वाला) है, जिससे दया की माँग की जाती है, और वही 'नास़िर' (सहायता देने वाला) है, जिससे मदद की माँग की जाती है, और हर काम में उसकी मदद माँगी जाती है।

इससे यह लाभ मिलता है कि अल्लाह तआला ने अपने बंदों को संक्षिप्त और सबसे अच्छी दुआएं सिखाई हैं, जो दुनिया और आख़िरत के लिए लाभकारी हैं। यह अल्लाह की रह़मत का प्रमाण है कि उसने अपने बंदों को सिखाया कि कैसे दुआएं की जाएं। और इन दो आयतों का लाभ यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: "जो व्यक्ति रात में सूरह बकरह की अंतिम दो आयतें पढ़ता है, यह उसके लिए पर्याप्त होगी"[5], तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मुझे अर्श के नीचे के खजाने से सूरह बकरह की अंतिम आयतें दी गईं, जिन्हें मुझसे पहले किसी नबी को नहीं दिया गया"[6], और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने का कथन है: "यदि ये आयतें किसी घर में तीन रातों तक पढ़ी जाती हैं, तो शैतान उस घर के निकट नहीं आता"[7], हे हमारे रब, हमारी दुआ स्वीकार कर,

(2) फ़त्हुल क़दीर, लेखकः शौकानी (1/ 308)।

(3) पिछला संदर्भ।

(4) अल् मुफ़रदात फ़ी ग़रीबिल क़ुरआन, अल् अस़बहानी (362)।

(5) तफ़्सीरुल क़ुर्आनिल अज़ीम, लेखकः इब्न -ए- कस़ीर (1/ 351)।

(6) बुख़ारी (3/ 93) ह़दीस़ संख्या (4008)।

(7) मुसनद अह़मद (35/ 274-275) ह़दीस़ संख्या (21345)।

(8) तिर्मिज़ी (5/ 147) ह़दीस़ संख्या (2882)।

निस्संदेह तू सुनने वाला, जानने वाला है। और हमें माफ कर, निस्संदेह तू माफी देने वाला, रहमत करने वाला है।

और अल्लाह की कृपा से, पहला भाग पूरा हुआ।

और इन शा अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा तो) दूसरा भाग जल्द ही आएगा।

सूत्र एवं संदर्भ सूची

- अल-क़ुरआन अल-करीम।
- इब्राहिम मुस्तफा और अन्य, अल-मुअजम अल-वसीत, मकतबा अल-शुरूक अल-दौलिया, काहिरा, चौथा संस्करण, 1429 हिजरी - 2008 ईस्वी।
- इब्न -ए- कस़ीर, इमाद अल-दीन अबू अल-फिदा इस्माईल: तफसीर अल-क़ुरआन अल-अज़ीम, 2, बैरूत: दार अल-मआरिफ, 1407 हिजरी - 1987 ईस्वी।
- अल-असफ़हानी, अबू अल-कासिम अल-हुसैन बिन मुहम्मद: अल-मुफरदात फी ग़रीब अल-क़ुरआन, अन्वेषणः मुहम्मद सैय्यद कीलानी, बैरूत: दार अल-मआरिफ (दिनांक अनिर्दिष्ट)।
- अल-बुखारी, मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहिम, स़ही़ह़ अल-बुखारी, दार अल-सलाम, रियाद, पहला संस्करण, 1417 हिजरी।
- अल-बैज़ावी, नासिर अल-दीन अबू सईद अब्दुल्लाह बिन उमर अल-शीराज़ी, अनवार अल-तनज़ील वा असरार अल-तावील, बैरूत: दार अल-कुतुब अल-इलमिय्या, 1408 हिजरी - 1988 ईस्वी।
- अल-तिर्मिज़ी, अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा बिन सूरह: अल-जामिअ अल-सहीह, अन्वेषणः अहमद मुहम्मद शाकिर, मक्का मुकर्रमा: दार अल-बार्र (दिनांक अनिर्दिष्ट)।
- इब्न अल-जौज़ी, ज़ाद अल-मसीर फी इल्म अल-तफसीर, अन्वेषणः मुहम्मद अब्दुलरहमान अब्दुल्लाह, बैरूत: दार अल-फ़िक्र, 1407 हिजरी।
- अल-जुर्जानी, अली बिन मुहम्मद, अल-तअरीफात, दार अल-कुतुब अल-इलमिय्या, बैरूत, पहला संस्करण, 1403 हिजरी - 1983 ईस्वी।
- जलाल अल-दीन अल-मह़ल्ली और जलाल अल-दीन अल-सुयूती, तफसीर अल-जलालैन, संरक्षणः मुहम्मद नईम अरकसूसी एवं मुहम्मद रिजवान अरकसूसी, बैरूत, मुअस्सिसा अल-रसाला, 3, 1421 हिजरी - 2000 ईस्वी।
- अल-हाकिम, अबू अब्दुल्लाह अल-हाकिम अल-नीशापूरी, अल-मुस्तदरक अल-सहीहैन, और इसके साथ तख्लीस अल-हाफिज़ अल-ज़हबी, देखरेखः यूसुफ अब्दुल रहमान अल-मरअशली, बैरूत: दार अल-मआरिफ, 1406 हिजरी - 1986 ईस्वी।
- इब्न -ए- हंबल, अहमद अल-शैबानी, अल-मुसनद, अन्वेषमः शुऐब अल-अरनाऊत एवं अन्य, मुस्ससा अल-रिसाला, बैरूत, पहला संस्करण, 1421 हिजरी - 2001 ईस्वी।

- अबू दाऊद, सुलेमान बिन अल-अश'अस़, अल-सुनन, देखरेखः सालेह अब्दुलअज़ीज़ आल अल-शैख, दार अल-सलाम, रियाद, पहला संस्करण, 1420 हिजरी - 1999 ईस्वी।
- अल-राग़िब अल-असफ़हानी, अल-मुफरदात फी ग़रीब अल-क़ुरआन, संपादन और समीक्षा: मुहम्मद खलील ऐतानी, दार अल-मआरिफ, बैरूत, पहला संस्करण, 1418 हिजरी - 1998 ईस्वी।
- अल-ज़मख़शरी, अबू अल-कासिम जारुल्लाह मुहम्मद बिन उमर अल-ज़मख़शरी अल-ख्वारिज़्मी, अल-कश्शाफ, दार अल-मआरिफ, बैरूत, (दिनांक अनिर्दिष्ट)।
- अल-सअदी, अब्दुर्रहमान बिन नासिर अल-सअदी: तैसीर अल-करीम अल-रहमान फी तफसीरि कलाम अल-मनान, जेद्दा: दार अल-मदनी, 1408 हिजरी - 1988 ईस्वी।
- अल-शौकानी, मुहम्मद बिन अली, फत्ह अल-कदीर, बैरूत: दार अल-फ़िक्र, 1409 हिजरी - 1989 ईस्वी।
- अल-तबरी, अबू जाफर मुहम्मद बिन जरीर अल-तबरी, जामिअ अल-बयान अन तावील आय अल-क़ुरआन, अन्वेषणः अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुहसिन अत् तुर्की, रियाद, दार आलम अल-कुतुब (दिनांक अनिर्दिष्ट)।
- अल-कुर्तुबी, अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद अल-अन्सारी: अल-जामिअ लि-अहकाम अल-क़ुरआन, 1, बैरूत: दार अल-कुतुब अल-इलमिय्या, 1408 हिजरी - 1988 ईस्वी।
- इब्न -ए- क़ैयिम अल-जौज़िय्या, अल-फ़वाइद, अन्वेषण: अल-हुसैन आयत सईद, दार अल-मआरिफ, अल-दार अल-बैज़ा (दिनांक अनिर्दिष्ट)।
- इब्न -ए- कस़ीर, इस्माईल बिन उमर बिन कस़ीर अल-कुरैशी अल-दिमश्क़ी, तफसीर अल-क़ुरआन अल-अज़ीम, देखरेखः महमूद अल-अर्नाऊत, मकतबा अल-रुशद, रियाद, पहला संस्करण, 1422 हिजरी।
- इब्न -ए- माजह, अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन यजीद अल-क़जवीनी: सुनन इब्न -ए- माजह, अन्वेषणः मुहम्मद फूआद अब्दुल बाकी, (स्थान अनिर्दिष्ट), दार अहिया अल-तुरात अल-अरबी (दिनांक अनिर्दिष्ट)।
- मालिक बिन अनस, अल-मुवत्ता, अन्वेषणः मुहम्मद फुआद अब्दुल बाकी, बैरूत: दार इहया अल-तुरास़ अल-अरबी, 1406 हिजरी - 1986 ईस्वी।

- मुस्लिम, अबू अल-हुसैन मुस्लिम बिन अल-हज्जाज अल-नीशापूरी, सहीह मुस्लिम, अन्वेषणः मुहम्मद फूआद अब्दुल बाकी, काहिरा, दार अल-हदीस़, (दिनांक अनिर्दिष्ट)।
- इब्न मंज़ूर, अबू अल-फ़ज़ल जमाल अल-दीन मुहम्मद बिन मुकर्रम, लिसान अल-अरब, दार सादिर, बैरूत, (दिनांक अनिर्दिष्ट)।
- अल-नववी, मुह्यिद्दीन अबू ज़करिया यह्या बिन शरफ़, शर्ह सहीह मुस्लिम, दार अल-किताब अल-अरबी, बैरूत, (संस्करण अनिर्दिष्ट), 1407 हिजरी - 1987 ईस्वी।
- अल-नसई, अबू अब्दुर्रहमान अहमद बिन शुऐब, सुनन अल-नसई, अल-हाफ़िज़ जलाल अल-दीन अल-सुयूती की व्याख्या के साथ, और अल-इमाम अल-सिन्दी की टिप्पणी के साथ, अब्दुल फत्ताह अबू गुद्दह द्वारा संख्या निर्धारण, 1, बेरूत: मकतबा अल-मुतबुआत अल-इस्लामिया बि-हलब, 1406 हिजरी - 1986 ईस्वी।

فوائد القرآن الزكية

سورة الفاتحة
سورة البقرة

أ. د. خالد بن حامد الحازمي

أستاذ الدراسات العليا بالجامعة الإسلامية سابقا